रुद्रयामलतन्त्रोक्तं
श्रीदेवीरहस्यम्
भाषाटीकासमन्वितम्
हिन्दी टीकाकार
श्रीकपिलदेव नारायण

॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
456

रुद्रयामलतन्त्रोक्तं

श्रीदेवीरहस्यम्

भाषाटीकासमन्वितम्

(प्रथमो भागः * षष्टिपटलात्मकः)

व्याख्याकारः
श्रीकपिलदेव नारायण
स्वरूपावस्थित

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

प्रकाशक

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)
के. 37/117 गोपालमन्दिर लेन
पो. बा. नं. 1129, वाराणसी 221001
दूरभाष : 0542-2335263
ई-मेल : csp_naveen@yahoo.co.in

प्रथम संस्करण 2009 ई.
मूल्य : 1200.00 (1-2 भाग सम्पूर्ण)

अन्य प्राप्तिस्थान

चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस

4697/2, भू-तल (ग्राउण्ड फ्लोर)
गली नं. 21-ए, अंसारी रोड
दरियागंज, नई दिल्ली 110002
दूरभाष : 011-23286537
ई-मेल : chaukhamba_neeraj@yahoo.com

चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान

38 यू. ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर
पो. बा. नं. 2113
दिल्ली 110007

चौखम्बा विद्याभवन

चौक (बैंक ऑफ बड़ोदा भवन के पीछे)
पो. बा. नं. 1069,
वाराणसी 221001

प्राक्कथन

तन्त्रशास्त्र मनुष्य को सुख की प्राप्ति और दुःख की निवृत्ति का मार्ग दिखाता है। भारतीय दर्शन के सभी विषय तन्त्रशास्त्र में वर्णित हैं। यह गम्भीर, स्पष्ट तथा उच्च चिन्तन का भण्डार है। मनुष्य के मनोभाव और आत्मकल्याण के सभी क्षेत्रों से सम्बन्धित व्यावहारिक प्रयोगों के साधन इसमें वर्णित हैं। महर्षि अरविन्द के अनुसार—'तन्त्र व्यक्तित्व के विकास में निहित विभिन्न प्रकार के वैशिष्ट्य तथा पद्धतियों का एकीभाव है।' यह तन्त्रशास्त्र आगम, यामल एवं तन्त्र के रूप में तीन भागों में विभक्त है, जैसा कि कहा भी गया है—

तन्त्रशास्त्रं प्रधानं त्रिधा विभक्तं आगमयामलतन्त्रभेदतः।

आगम के सम्बन्ध में कहा गया है कि—

आगतं पञ्चवक्त्रात्तु गतं च गिरिजानने।
मतं च वासुदेवस्य तस्मादागममुच्यते।।

आशय यह है कि आगमशास्त्र शिव के मुख से आगत, गिरिजा के मुख में गत एवं विष्णु द्वारा समर्थित होने के कारण ही 'आगम' नाम से अभिहित किया जाता है।

तन्त्रशास्त्र में यामल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माने गये हैं। यह स्वयं शिव-शिवारूप युगल देवताओं द्वारा कथित होने के अधिक उपादेय माना जाता है। यामल साहित्य की शृङ्खला अत्यन्त विशाल है। उसमें भी रुद्रयामल की विशिष्टता सर्वोपरि है। ब्रह्मयामल और विष्णुयामल के बाद उपदिष्ट होने के कारण इसे 'उत्तरतन्त्र' नाम से अभिहित किया जाता है। रुद्रयामल के नाम से उद्धृत ग्रन्थों और ग्रन्थांशों की संख्या अगणित है। उन्हीं में से संगृहीत यह 'देवीरहस्य' नामक एक अद्भुत ग्रन्थरत्न भी है।

एसियाटिक सोसाइटी बंगाल के सूचीपत्र के अनुसार देवीरहस्य रुद्रयामल के अन्तर्गत ६० पटलों में वर्णित है। यह कौल सम्प्रदाय का ग्रन्थ है। पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध के रूप में इसके दो भाग हैं। पूर्वार्द्ध के पच्चीस पटलों में शाक्त मत के मुख्य-मुख्य तत्त्वों पर प्रकाश डाला गया है एवं उत्तरार्द्ध के पैंतीस पटलों में विभिन्न देवियों की पूजाविधियों का सविधि वर्णन है। देवीरहस्य में नित्य कृत्य-प्रदीपन और क्रमसूत्र—दोनों का वर्णन यामलीय उपासना की सर्वांगीण दृष्टि से किया गया है। नित्य कृत्य में ब्राह्म मुहूर्त में शय्यात्याग के पश्चात् करणीय सभी कर्मों का वर्णन व्यवस्थित रूप में किया

गया है। शय्या-त्याग के पश्चात् से लेकर शयनकाल तक की पूरी प्रक्रिया एवं दिनचर्याओं का क्रम निर्दिष्ट करते हुये उनका साङ्गोपाङ्ग विवेचन इसमें किया गया है। उपासना की विविधता को ध्यान में रखकर क्रमसूत्रों में पञ्चाङ्ग का कथन अति महत्त्वपूर्ण है।

पञ्चाङ्ग में उपासना के पाँच अङ्गों का वर्णन होता है। उनमें पटल, पद्धति, कवच, सहस्रनाम और स्तोत्र का सङ्कलन होता है। प्राचीन ग्रन्थों में इन पाँच अङ्गों को देवता का प्रमुख अङ्ग माना गया है। कहा भी है—

पटलं देवतागात्रं पद्धतिर्देवताशिरः।
कवचं देवतानेत्रे सहस्रारं मुखं स्मृतम्।
स्तोत्रं देवीरसा प्रोक्ता पञ्चाङ्गमिदमीरितम्ते।।

अर्थात् पटल देवता का शरीर है, पद्धति शिर है, कवच नेत्र है, सहस्रनाम मुख है एवं स्तोत्र जिह्वा है। इस ग्रन्थ के पूर्वार्द्ध के पच्चीस पटलों में दीक्षा, देवीमन्त्र, शिवमन्त्र, विष्णुमन्त्र, उत्कीलन, सञ्जीवन, शापमोचन, पारायण, सम्पुट, प्रारम्भिक मन्त्राभ्यास, बलिदान, यन्त्र, यन्त्र-धारणविधि, मन्त्र के ऋषि, श्मशान-साधना, मद्यपान की प्रक्रिया, शक्तिवन्दना, मद्य का शुद्धीकरण, शक्तिशोधन, विविध प्रकार की माला, यन्त्र-शुद्धिकरण विषयों का विस्तृत विवेचन किया गया है।

उत्तरार्द्ध के पैंतीस पटलों में गणेश, सूर्य, लक्ष्मी, नारायण, दुर्गा के पञ्चाङ्ग अर्थात् पटल, पद्धति, कवच, सहस्रनाम एवं स्तोत्र का नियपण किया गया है।

ग्रन्थभाग के पश्चात् परिशिष्ट भाग में ज्वालामुखी, शारिका, महाराज्ञी और बाला त्रिपुरा के पञ्चाङ्गों का निरूपण किया गया है।

ग्रन्थान्त में 'उद्धारकोश' में दक्षिणामूर्ति के मुख से निःसृत सात कल्प निरूपित किये गये हैं। प्रथम कल्प में त्रिपुरा, लक्ष्मी, सरस्वती, तारा, भुवनेश्वरी, मातङ्गी, शारिका, राज्ञी, भीडा देवी और ज्वालामुखी—इन दश देवियों के मन्त्र स्पष्ट किये गये हैं।

द्वितीय कल्प में भद्रकाली, तुरी, छिन्नमस्ता, दक्षिणा कालिका, श्यामा और कालरात्रि—इन छः देवियों के मन्त्र कहे गये हैं।

तृतीय कल्प में वज्रयोगिनी, वाराही, शारदा, कामेश्वरी, गौरी, अन्नपूर्णा, कुलवागीश्वरी—इन सात देवियों के मन्त्र पठित हैं। साथ ही सात कुमारों—गणेश, वटुक, कुमार, मृत्युञ्जय, कार्तवीर्यार्जुन, सुग्रीव और हनुमान के मन्त्र कथित हैं।

चतुर्थ कल्प में सूर्यादि नव ग्रहों के मन्त्र कहे गये हैं।

पञ्चम कल्प में संस्कृत के इक्यावन वर्णों के साङ्केतिक नामों का विस्तृत विवेचन किया गया है।

छठे कल्प में भवानी, बगलामुखी, इन्द्राक्षी और खेचरी के मन्त्रों का सविधि निरूपण किया गया है।

सातवें कल्प में ऊपर वर्णित सभी देवियों, कुमारों और ग्रहों के ध्यान का क्रमशः निरूपण किया गया है।

इस ग्रन्थ में मन्त्रसिद्धि के उपायों का विस्तृत विवेचन किया गया है। साधकों को साधना में सिद्धि कर प्राप्ति के लिये यह सर्वोत्तम मार्गदर्शक ग्रन्थ है। पाठकों के करकञ्जों में इस ग्रन्थ की हिन्दी व्याख्या को समर्पित करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है; क्योंकि मैं इसे लोकसेवा के साथ-साथ राष्ट्रभाषा की सेवा, देवभाषा की सेवा और देव-देवियों की सेवा मानता हूँ। आशा है, पाठक साधक इससे अवश्य लाभान्वित होंगे।

इस ग्रन्थ को वर्तमान स्वरूप में प्रकाशित कर पाठकों एवं उपासकों के समक्ष प्रस्तुत करने के लिये चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी के सञ्चालक श्री नवनीतदासजी गुप्त अतिशय धन्यवाद के पात्र हैं। आशा है कि वे इसी प्रकार सुरभारती की सेवा में अहर्निश तत्पर रहकर पाठक-जगत् को सदा-सर्वदा आह्लादित करते रहेंगे।

स्वरूपावस्थित

श्री कपिलदेव नारायण

विषयानुक्रमणी

विषयाः	पृष्ठाङ्काः

पञ्चमः पटलः

(मन्त्रोत्कीलनविधिः)

अष्टमः पटलः

(पारायण-जपविधिः)

नवमः पटलः

(सम्पुटविधिः)

दशमः पटलः

(पुरश्चरणविधिः)

विषयाः	पृष्ठाङ्काः

षड्विंशः पटलः

(महागणपति-मन्त्रोद्धारः)

सप्तविंशः पटलः

(वरदगणेश-पूजापद्धतिः)

विषयाः	पृष्ठाङ्काः

अष्टाविंशः पटलः

(महागणपति-कवचम्)

एकोनत्रिंशः पटलः

(गणपतिसहस्रनाम)

त्रिंशः पटलः

(गणपतिमूलमन्त्रस्तोत्रम्)

एकत्रिंशः पटलः

(सूर्यपटलम्)

परिशिष्टम्

चित्रानुक्रमणी

॥ श्रीः ॥

रुद्रयामलतन्त्रोक्तं

श्रीदेवीरहस्यम्

भाषाटीकासमन्वितम्

अथ प्रथमः पटलः

दीक्षाविधिः

तन्त्रप्रस्तावः

श्रीभैरव उवाच

अधुना देवि वक्ष्यामि रहस्यं परमाद्भुतम्।
यन्न सर्वेषु तन्त्रेषु यामलादिषु भाषितम् ॥१॥
परादेवीरहस्याख्यं तन्त्रं मन्त्रोच्चविग्रहम्।
तत्त्वं श्रीषोडशाक्षर्याः सर्वस्वं मम पार्वति ॥२॥
अप्रकाश्यमदातव्यं परमोच्चफलप्रदम्।
भोगापवर्गदं लोके साधकानां सुखावहम् ॥३॥

तन्त्र-प्रस्ताव—श्री भैरव ने कहा—हे देवि! मैं अब परम अद्भुत रहस्य को बतलाता हूँ। इस रहस्य का वर्णन किसी तन्त्र-यामल आदि में नहीं है। यह परा देवीरहस्य तन्त्र-मन्त्र का सर्वोत्तम विग्रह है। हे पार्वति! इस परा देवी का षोडशाक्षरी मन्त्र मेरा सर्वस्व है। इसका तत्त्व सर्वोच्च है। यह तत्त्व प्रकाशित करने के योग्य नहीं है, न ही किसी को देने के योग्य है। यह परम उच्च फलप्रदायक है। इससे साधकों को भोग के साथ-साथ धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की प्राप्ति तो होती ही है, इस लोक में परमानन्द भी प्राप्त होता है।।१-३।।

श्रीदेव्युवाच

भगवन् सर्वतन्त्रज्ञ कौलिकेश्वर शङ्कर।
त्वत्प्रसादान्मया ज्ञातं तत्त्वं देव्याः सुदुर्लभम् ॥४॥
तन्त्रं मन्त्रात्मकं गुह्यं सूचितं भवता स्वयम्।
परादेवीरहस्याख्यं दीक्षापूर्वं वदस्व मे ॥५॥

श्रीदेवी ने कहा—हे कौलिकों के ईश्वर भगवन् शंकर! आप सभी तन्त्रों के ज्ञाता हैं। आपकी कृपा से मुझे देवी के दुर्लभ तत्त्वों का ज्ञान हो पाया है। आपने स्वयं मुझे गुह्य तन्त्र-मन्त्रों को बतलाया है, जो परा देवी के रहस्य से पूर्ण हैं। अब इनकी दीक्षा-विधि का वर्णन कीजिये।।४-५।।

गुरु-शिष्यनिर्णयः

श्रीभैरव उवाच

देवीरहस्यमीशानि शृणु त्वं भक्तिपूर्वकम्।
येन श्रवणमात्रेण कोटिपूजाफलं लभेत्॥६॥
अथाहं निर्णयं वक्ष्ये परमं गुरुशिष्ययोः।
विचार्य विधिवद्धीमान् दीक्षाकर्म समाचरेत्॥७॥

गुरु-शिष्य-निर्णय—श्री भैरव ने कहा कि हे ईशानि! तुम भक्तिपूर्वक देवी- रहस्य को सुनो। इसके श्रवणमात्र से ही करोड़ों पूजनों का फल मिलता है। अब मैं गुरु-शिष्य के श्रेष्ठ निर्णय को बतलाता हूँ। ज्ञानी गुरु खूब सोच-विचार कर शिष्य की परीक्षा करने के बाद दीक्षाकर्म को विधिवत् करे।।६-७।।

दीक्षाग्रहणस्यावश्यकत्वम्

ब्रह्मादिकीटपर्यन्तं जगत् स्थावरजङ्गमम्।
परादेव्या पशुत्वेन मोहितं विगतस्पृहम्॥८॥
तथापि तत्प्रसादेन सेवया तत्पदाब्जयोः।
कौलिकः पशुभावेन मुक्तो ज्ञानं भजेत्ततः॥९॥
दीक्षां तस्याः शिवे मन्त्री लब्ध्वा गुरुपदार्चनात्।
दीक्षितः स भवेज्ज्ञानी दीक्षाहीनो भवेत् पशुः॥१०॥
यस्य दीक्षा शिवे नास्ति जीवनं तस्य निष्फलम्।
स जातु नोत्तरेद् देवि निरयाम्बुनिधेः क्वचित्॥११॥

दीक्षा-ग्रहण की आवश्यकता—इस संसार में ब्रह्मा से लेकर कीड़ों तक सभी स्थावर-जंगम चराचर परा देवी के द्वारा मोहित होकर पशुभाव में इच्छारहित रहते हैं; परन्तु उसकी कृपा से उसके पादपद्मों की सेवा से कौलिक लोग पशुभाव से मुक्त होकर ज्ञानी होकर मुक्त हो जाते हैं। गुरुदेव के पदकमलों का अर्चन करके जो साधक परादेवी के मन्त्र की दीक्षा प्राप्त करता है, वह दीक्षित ज्ञानी हो जाता है। दीक्षा-विहीन मनुष्य पाशों में बन्धे पशुवत् होते हैं। हे पार्वति! जिस मनुष्य ने दीक्षा नहीं ग्रहण की है, उसका जीवन निष्फल होता है। वह कभी भी नरक, भवसागर से पार नहीं होता है।।८-११।।

दीक्षाहीनस्य देवेशि पशोः कुत्सितजन्मनः।
पापौघोऽन्तिकमायाति पुण्यं दूरं पलायते ॥१२॥
तस्माद् यत्नेन दीक्षैषा ग्राह्या कृतिभिरुत्तमा।
बाल्ये वा यौवने वापि वार्धक्येऽपि सुरेश्वरि ॥१३॥
अन्यथा निरयी पापी पितॄन् श्वान् निरयं नयेत्।
अतः पशुर्मनुष्यः सन् पशुयोनिं व्रजेच्छिवे ॥१४॥

हे देवेशि! अदीक्षित का जन्म घृणित पशु के समान होता है। वह पापसमूह से घिर जाता है। पुण्य उससे दूर भाग जाते हैं। ऐसी परिस्थिति में यत्नपूर्वक दीक्षा ग्रहण करना उत्तम कार्य है। यह दीक्षा बालपन, युवावस्था या वृद्धावस्था में से किसी भी अवस्था में ग्रहणीय है। अन्यथा मनुष्य स्वयं तो नरकगामी होता ही है; अपने पितरों को भी कुत्तों के नरक में गिरा देता है। उसके बाद अगले जन्म में वह पशुयोनि में जन्म पाकर दुःख भोगता है।।८-१४।।

गुरुपरीक्षणम्

पूर्वजन्मार्जितां प्राप्य वासनां परमार्थदाम्।
गुरुमन्वेषयेद् देवि कौलिकाचारदीक्षितम् ॥१५॥
गुरुं कुलीनं तन्त्रज्ञं सर्वाङ्गैः सुमनोहरम्।
निरामयं च निर्लोभं निःशेषागमपारगम् ॥१६॥
लब्ध्वा भक्त्या प्रणम्यादौ तोषयित्वा विशेषतः।
सिद्धसाध्यारिनिर्णीतां दीक्षां देव्या यथाविधि ॥१७॥

गुरुपरीक्षा—पूर्वजन्मार्जित परमार्थदात्री वासना के उत्पन्न होने पर कौलिकाचार में दीक्षित गुरु का अन्वेषण करना चाहिये। वह गुरु कुलीन तन्त्रों का ज्ञाता और सर्वाङ्ग सुन्दर होना चाहिये। वह निरोग और लोभरहित हो। सभी आगमों का पारगामी विद्वान् हो। ऐसे गुरु के दर्शन होने पर शिष्य उसे प्रणाम करे और विशेष रूप से उसे सन्तुष्ट करे। सन्तुष्ट होकर गुरु मन्त्र का सिद्ध-साध्य-अरि होने का निर्णय करके यथाविधि दीक्षा प्रदान करे।।१५-१७।।

शिष्यपरीक्षणम्

गृह्णीयात् परया भक्त्या साधको येन जायते।
गुरुश्च शिष्यं रम्याङ्गं कुलीनं गर्भदीक्षितम् ॥१८॥
गुरुभक्तिरतं बालं युवानं धिषणायुतम्।
देवीभक्तिरतं भक्तं पापभीतं कृतात्मकम् ॥१९॥
दृष्ट्वा दीक्षां परां दद्यात् कृतभागी भवेत्ततः।

शिष्य-परीक्षा—जिस साधक में परा देवी की भक्ति हो, जो सर्वाङ्ग सुन्दर हो और जो कुलवान हो, उसी को गुरु दीक्षा प्रदान करे। साधक बालक हो या युवक हो, उसमें गुरु की भक्ति के साथ बुद्धि भी होनी चाहिये। वह देवीभक्ति में निरत हो और पाप से भय-भीत हो तथा पुनीत कर्म करने वाला हो। इस प्रकार के लक्षणों से युक्त साधक शिष्य को देखकर गुरु उसे परादेवी की दीक्षा प्रदान करे; इसी से वह कृतभागी होता है।।१८-१९।।

गुर्वभावे गुरुविषयकप्रश्नः

श्रीदेव्युवाच

भगवन् करुणाम्भोधे संशयोऽयं महान् मम।
यस्य चित्ते परा भक्तिर्गुरुर्नास्ति तथाविधः ॥२०॥
कुलीनः सर्वतन्त्रज्ञो मन्त्रसाधनकक्षमः।
भक्त्या परमया युक्तः स किं देव करिष्यति ॥२१॥

गुरु के अभाव में पुस्तक ही गुरु—श्रीदेवी ने कहा कि हे करुणा के सागर भगवन्! मेरे मन में महान् संशय है। जिसके चित्त में परा भक्ति हो, जो कुलवान सभी तन्त्रों का ज्ञाता हो, मन्त्रसाधना की क्षमता वाला हो, उसे यदि योग्य गुरु न मिले तो वह क्या करे?।।२०-२१।।

गुरोरभावे पुस्तकस्य गुरुत्वम्

श्रीभैरव उवाच

अदीक्षित उपाध्यायविहीनः शक्तिभक्तिमान्।
गुरोरभावे देवेशि! पुस्तकं गुरुमाचरेत् ॥२२॥

श्री भैरव ने कहा कि हे देवेशि! जो अदीक्षित हो, जिसका कोई गुरु न हो, जिसमें शक्ति एवं भक्ति हो; उसे पुस्तक को ही गुरु मानकर साधना करनी चाहिये।।२।।

गुरुसद्भावे पुस्तकगुरुर्दोषाय

यदि कश्चिद् भवेद् देवि गुरुस्तन्त्रविचक्षणः।
दीक्षितः शिवमन्त्रेण वैष्णवः शुभलक्षणः ॥२३॥
तं परित्यज्य यो देवि पराभक्तोऽपि भक्तिमान्।
पुस्तकं तु गुरुं कुर्यात् स भवेच्छिवघातकः ॥२४॥
गुरुं कुलीनं तन्त्रज्ञं भजेन्मन्त्रस्य सिद्धये।
मूर्खं लोभात्मकं देवि कुलीनं च परित्यजेत् ॥२५॥

सद्गुरु के रहने पर पुस्तक को गुरु मानने में दोष—हे देवि! यदि कोई तन्त्र में निष्णात गुरु शैव-वैष्णव मन्त्र में दीक्षित हो और शुभ लक्षणों से युक्त हो तो उसे

छोड़कर पुस्तक को गुरु मानकर परा देवी की भक्ति में निरत भक्त शिवघातक होता है। मन्त्र की सिद्धि के लिये कुलीन तन्त्रज्ञ को ही गुरु बनाना चाहिये। कुलीन होने पर भी यदि वह लोभी और मूर्ख हो तो ऐसा गुरु त्याज्य होता है।।२३-२५।।

पित्रादीनां दीक्षाऽग्राह्या

पितुर्दीक्षां न गृह्णीयात् तथा मातामहस्य च।
सोदरस्य कनिष्ठस्य मातुलस्य विशेषतः ।।२६।।
दम्भं वित्तेच्छया लौल्यं न कुर्यान्मनसापि वा।
परलोकेच्छया कुर्यात् परलोकभयाय वा ।।२७।।

पिता आदि से दीक्षा अग्राह्य—पिता, नाना, सहोदर भ्राता, अपने से छोटे और मामा से दीक्षा नहीं लेनी चाहिये। दम्भ, धन की इच्छा और लालच मन से भी कदापि नहीं करना चाहिये। परलोक पाने की इच्छा से या परलोक नारकीय जीवन के भय से सभी आचार करना चाहिये।।२६-२७।।

दीक्षाग्रहणसमयविषयकप्रश्नः

श्रीदेव्युवाच

भगवन् परमेशान साधकानां हितेच्छया।
कदा दीक्षा परा ग्राह्या साधकैस्तद्वदस्व मे ।।२८।।

दीक्षाग्रहण का समय—श्रीदेवी ने कहा कि हे भगवन् परमेशान! साधकों के हित की कामना से मैं पूछती हूँ कि साधकों को परा दीक्षा कब ग्रहण करनी चाहिये। यह सब मुझे बताने की कृपा करें।।२८।।

दीक्षाग्रहणसमयः स्थानञ्च

श्रीभैरव उवाच

सुदिने शुभनक्षत्रे संक्रान्तावयनद्वये।
नवरात्रिदिने पित्रोः श्राद्धे स्वजनिवासरे ।।२९।।
नववर्षदिने देवि चन्द्रसूर्योपरागके।
तिष्ये स्वजन्मनक्षत्रे दीक्षां दद्याद्विचक्षणः ।।३०।।
तत्रादौ शुभनक्षत्रे स्नात्वा सम्पूज्य भैरवम्।
गत्वा नदीतटं दिव्यं लताकुसुमसुन्दरम् ।।३१।।
द्वीपं वा परमं पुण्यं देवानामपि दुर्लभम्।
देवतायतनं वापि प्राप्याशु प्रणमेत्ततः ।।३२।।

दीक्षा का समय तथा स्थान—श्री भैरव ने कहा कि शुभ दिन, शुभ नक्षत्र, संक्रान्ति, दोनों अयनारम्भ, नवरात्र, पिता के श्राद्ध-दिवस, अपने जन्मदिन, नववर्ष के प्रथम दिन, चन्द्र, सूर्यग्रहण काल में, अपने जन्मनक्षत्र में ज्ञानी गुरु शिष्य को दीक्षा प्रदान करे। सबसे पहले शुभ नक्षत्र में स्नान करके भैरव का पूजन करे। लता-पुष्पों से युक्त सुन्दर दिव्य नदीतट पर जाये अथवा टापू पर जाये अथवा देवताओं को भी दुर्लभ देवालय में जाकर प्रणाम करे।।२९-३२।।

श्रीचक्रविभावना

विलिप्य विधिवद् देवि गुरुः कुर्यात् कृताह्निकः।
वेदीमीशानदिग्भागे चतुष्कोणं मनोहराम् ।।३३।।
तत्र देवि परादेव्याः श्रीचक्रं तु विभावयेत्।
सिन्दूरेण शिवे यन्त्रं मूलमन्त्रं समुच्चरन् ।।३४।।
त्रिकोणं बिन्दुसंयुक्तं षट्कोणं वृत्तमण्डलम्।
वसुपत्रं त्रिवृत्ताङ्कं भूगृहेणोपशोभितम् ।।३५।।
दीक्षायन्त्रमिदं देवि दीक्षाकाले प्रपूजयेत्।

श्रीचक्र-विभावना—इच्छित स्थान में पहुँचकर स्थान को साफ-सुथरा करके लीप-पोतकर शुद्ध करके ईशान कोण की दिशा भाग में चौकोर सुन्दर वेदी बनावे। उस वेदी पर परा देवी के श्रीचक्र की विभावना करे। मूल मन्त्र का उच्चारण करते हुए सिन्दूर से बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, वृत्तमण्डल में अष्टदल, तीन वृत्त और भूपुर की संरचना करे। हे देवि इस दीक्षायन्त्र का दीक्षा के समय पूजन अवश्य करना चाहिये।।३३-३५।।

दीक्षायन्त्रे पूज्य देवताः तेषां पूजाक्रमश्च

गणेशधर्मवरुणाः कुबेरसहिताः शिवे ।।३६।।
विदिक्षु विदिगीशानाः पूजनीया यथाक्रमम्।
तारमायारमाबीजैर्धूपदीपप्रसूनकैः ।।३७।।
मायां च मोहिनीं मेनां मङ्गलां सर्वमङ्गलाम्।
महाविद्यां च देवशि षट्कोणेषु प्रपूजयेत् ।।३८।।
तारमायारमाबीजैर्गन्धाक्षतप्रसूनकैः ।
गङ्गां च यमुनां देवि तदग्रेऽपि सरस्वतीम् ।।३९।।
त्रिकोणे पूजयेद् धीमानीशानाग्नेयपूर्वकम्।

दीक्षायन्त्र के पूज्य देवता एवं उनका पूजन-क्रम—हे देवि! दीक्षायन्त्र में भूपुर के पूरब दिशा में गणेश, दक्षिण में यम, पश्चिम में वरुण और उत्तर में कुबेर का पूजन करे।

दीक्षायन्त्र
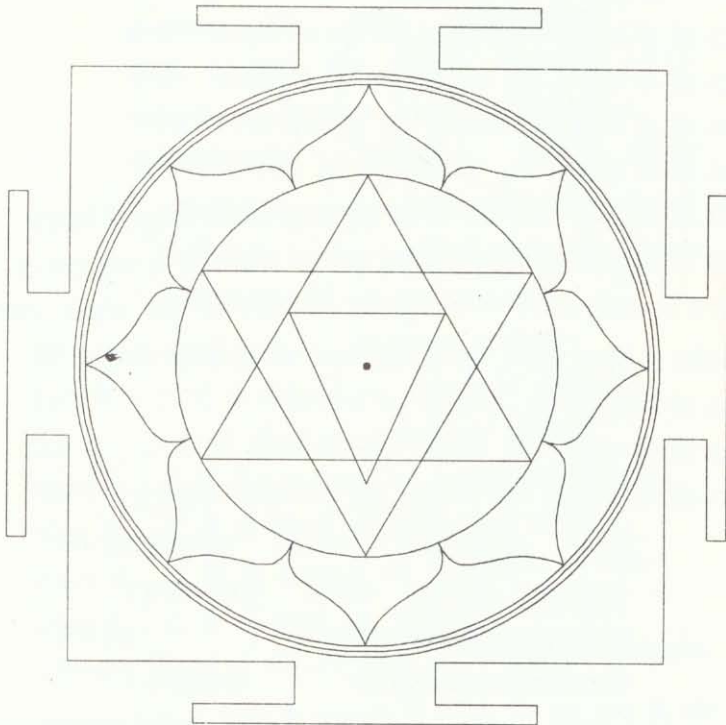
अग्नि-कोण में अग्नि, नैर्ऋत्य में निर्ऋति, वायव्य में वायु और ईशान में ईशान का पूजन करे। इनका पूजन इस प्रकार करे—

नाममन्त्र में ॐ ह्रीं श्रीं लगाकर पूजन करे; जैसे गणेश का पूजन—

ॐ ह्रीं श्रीं गणेशाय नमः, गन्धाक्षतं पुष्पं धूपं दीपं समर्पयामि।

ॐ ह्रीं श्रीं यमाय नमः, गन्धाक्षतं पुष्पं धूपं दीपं समर्पयामि।

ॐ ह्रीं श्रीं वरुणाय नमः, गन्धाक्षतं पुष्पं धूपं दीपं समर्पयामि।

ॐ ह्रीं श्रीं कुबेराय नमः, गन्धाक्षतं पुष्पं धूपं दीपं समर्पयामि।

ॐ ह्रीं श्रीं कुबेराय नमः, गन्धाक्षतं पुष्पं धूपं दीपं समर्पयामि।

ॐ ह्रीं श्रीं अग्नये नमः, गन्धाक्षतं पुष्पं धूपं दीपं समर्पयामि।

ॐ ह्रीं श्रीं निर्ऋतये नमः, गन्धाक्षतं पुष्पं धूपं दीपं समर्पयामि।

ॐ ह्रीं श्रीं वायवे नमः, गन्धाक्षतं पुष्पं धूपं दीपं समर्पयामि।

ॐ ह्रीं श्रीं ईशानाय नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूपं दीपं समर्पयामि।

षट्कोण के छः कोणों में माया, मोहिनी, मेना, मङ्गला, सर्वमंगला और महाविद्या का पूजन गन्ध-अक्षत-पुष्प से निम्नवत् करे—

ॐ ह्रीं श्रीं मायायै नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूपं समर्पयामि।

ॐ ह्रीं श्रीं मोहिन्यै नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूपं समर्पयामि।

ॐ ह्रीं श्रीं मेनायै नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूपं समर्पयामि।

ॐ ह्रीं श्रीं मंगलायै नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूपं समर्पयामि।

ॐ ह्रीं श्रीं सर्वमंगलायै नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूपं समर्पयामि।

ॐ ह्रीं श्रीं महाविद्यायै नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूपं समर्पयामि।

अन्त में—सर्वेभ्यो देवीभ्यो नमः धूपं दीपं नैवेद्यं समर्पयामि।

त्रिकोण में ईशान, अग्नि, पूर्व में गङ्गा यमुना और सरस्वती का पूजन करे—

ॐ ह्रीं श्रीं गंगायै नमः गन्धाक्षतं पुष्पं समर्पयामि।

ॐ ह्रीं श्रीं यमुनायै नमः गन्धाक्षतं पुष्पं समर्पयामि।

ॐ ह्रीं श्रीं सरस्वत्यै नमः गन्धाक्षतं पुष्पं समर्पयामि।।३६-३९।।

बिन्दौ श्रीमूलमन्त्रेण परादेवीं प्रपूजयेत् ॥४०॥
सदाशिवं महारौद्रं कामेशं कामनेश्वरम् ।
गन्धाक्षतप्रसूनाद्यैर्धूपदीपादितर्पणैः ॥४१॥
नैवेद्याचमनीयाद्यैस्ताम्बूलैश्च सुवासितैः ।

बिन्दु में मूल मन्त्र से परा देवी का पूजन करे। इनके साथ सदाशिव, महारुद्र, कामेश और कामेश्वर का पूजन करे—

ॐ ह्रीं श्रीं परादेव्यै नमः गन्धाक्षतं पुष्पं समर्पयामि।

ॐ ह्रीं श्रीं परादेव्यै नमः धूपं समर्पयामि।

ॐ ह्रीं श्रीं परादेव्यै नमः दीपं समर्पयामि।

ॐ ह्रीं श्रीं परादेव्यै नमः तर्पयामि।

ॐ ह्रीं श्रीं परादेव्यै नमः नैवेद्यं समर्पयामि।

ॐ ह्रीं श्रीं परादेव्यै नमः पानीयमाचमनीयं करोद्वर्तनीयं समर्पयामि।

ॐ ह्रीं श्रीं परादेव्यै नमः सुवासितताम्बूलं समर्पयामि।

इसी प्रकार ॐ ह्रीं श्रीं सदाशिवाय नमः से सदाशिव का, ॐ ह्रीं श्रीं महारुद्राय

नमः से महारुद्र का, ॐ ह्रीं श्रीं कामेशाय नमः से कामेश का और ॐ ह्रीं श्रीं कामेश्वराय नमः से कामेश्वर का गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य और ताम्बूलादि से पूजन करे।।४०-४१।।

अष्टपत्रेषु देवेशि सम्पूज्या अष्ट मातरः ।।४२।।
ब्राह्मयाद्या देवि मन्त्रेण अष्टभैरवपूर्वकम्।
ब्राह्मी नारायणी चैव कौमारी चापराजिता ।।४३।।
माहेश्वरी च चामुण्डा वाराही नारसिंहिका।
वामावर्तक्रमेणैवं पूजनीया विशेषतः ।।४४।।

अष्टपत्रों के मूल में ब्राह्मयादि अष्ट मातृकाओं का और पत्रों के अग्रभाग में अष्टभैरवों का वामावर्त क्रम से पूजन करे। वामावर्त क्रम में पूर्व, ईशान, उत्तर, वायव्य, पश्चिम, नैर्ऋत्य, दक्षिण, अग्निकोण होता है। पूजन इस प्रकार करे—

पूर्व में—ॐ ह्रीं श्रीं ब्राह्मयै नमः गन्धाक्षतपुष्पं समर्पयामि।
ईशान में—ॐ ह्रीं श्रीं नारायण्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पं समर्पयामि।
उत्तर में—ॐ ह्रीं श्रीं कौमार्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पं समर्पयामि।
वायव्य में—ॐह्रीं श्रीं अपराजितायै नमः गन्धाक्षतपुष्पं समर्पयामि।
पश्चिम में—ॐ ह्रीं श्रीं माहेश्वर्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पं समर्पयामि।
नैर्ऋत्य में—ॐ ह्रीं श्रीं चामुण्डायै नमः गन्धाक्षतपुष्पं समर्पयामि।
दक्षिण में—ॐ ह्रीं श्रीं वाराह्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पं समर्पयामि।
अग्निकोण में—ऊँ ह्रीं श्रीं नारसिंहिकायै नमः गन्धाक्षतपुष्पं समर्पयामि।

गन्धाक्षत-पुष्प से पूजन में अष्टगन्ध में अक्षत रंग कर पुष्प के साथ चढ़ाया जाता है।।४२-४४।।

तत्रैव पूजयेदष्ट भैरवान् भैरवेश्वरि।
महाकालं च कालाग्निं करालं विकरालकम् ।।४५।।
संहारं रुरुमीशानि सुप्तमुन्मत्तभैरवम्।
सम्पूज्य विधिवत्तत्र गन्धाक्षतप्रसूनकैः ।।४६।।
यन्त्रमभ्यर्च्य देवेशि गुरुं सम्पूजयेत्ततः।

पद्मपत्रों के अग्रभाग में इसी प्रकार अष्टभैरवों का पूजन करे—

१. ॐ ह्रीं श्रीं महाकालाय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्रीं कालाग्न्यै नमः।

३. ॐ ह्रीं श्रीं करालाय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्रीं विकरालाय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्रीं संहारभैरवाय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्रीं रुरुभैरवाय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्रीं ईशानभैरवाय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्रीं उन्मत्तभैरवाय नमः।

यन्त्रपूजन के बाद गुरु का पूजन भी यन्त्र में ही करे।।४५-४६।।

पूजाङ्गहोमनिरूपणम्

पूर्वे ततः खनेत् कुण्डं योनिरूपं त्रिकोणकम् ।।४७।।
तत्रारणिं प्रपूज्यादौ वह्निमावाहयेच्छिवे।
तारं वह्नित्रयं चाग्रे वैश्वानरपदं वदेत् ।।४८।।
प्रज्वलेति युगं प्रोच्येदिहागच्छेति संवदेत्।
इह सन्निधिमाधत्स्व वरं मे देहि-युग्मकम् ।।४९।।
फड्वह्निजायां प्रोच्चार्य गन्धेनाभ्यर्चयेत्ततः।
परादेव्यास्तु मन्त्रेण घृतमाज्यं चरेच्छिवे ।।५०।।
मूलेनाग्नौ शिवे दद्यादाहुतीनां शतं परम्।
घृतखण्डादिमृद्वीकाखर्जूराम्बुजपायसैः ।।५१।।

पूजांग हवन-निरूपण—वेदी के पूर्व भाग में योनिरूप त्रिकोण कुण्ड जमीन खोदकर बनावे। वहाँ दो लकड़ियों से बनी अरणी का पूजन करे। तब अग्नि का आवाहन करे। 'ॐ रं रं रं अग्ने वैश्वानर प्रज्ज्वल प्रज्ज्वल इहागच्छ इह सन्निधिमाधत्स्व वरं मे देहि देहि फट् स्वाहा' बोलकर गन्ध से अर्चन करे। इसके बाद परा देवी के मन्त्र से गोघृत को हिलाये। मूल मन्त्र से अग्नि को सौ आहुतियाँ प्रदान करे। इसके बाद घी में खजूर का चूर्ण, कमल और पायस मिलाकर हवन करे।।४७-५०।।

शिष्यसंस्कारक्रमः

तत्र देवीं समावाह्य परां ध्यात्वा विशेषतः।
प्राङ्मुखो गुरुरासीन उत्तराभिमुखं शिशुम् ।।५२।।
संस्थाप्य विधिवद् देवि कृत्वा विष्टरशोधनम्।
भूतशुद्धिक्रमोपेतं प्राणार्पणविधिं चरेत् ।।५३।।
प्राणायामत्रयं कृत्वा विधायाचमनत्रयम्।
तत्र मूलेन देवेशि दिशो बद्ध्वा परां स्मरेत् ।।५४।।

गुरुः शिष्याय शान्ताय पराप्रीत्यै महेश्वरि।
वह्नेः समक्षं यन्त्राग्रे दीक्षां परमदुर्लभाम् ॥५५॥
कर्णमूले महाविद्यां श्रीविद्यां साधकेश्वरः।
आनन्दासक्तहृदयः शनैस्त्रिस्त्रिः समर्पयेत् ॥५६॥
प्रथमं तु गणेशस्य मन्त्रं साङ्गं समर्पयेत्।
ततो देव्याश्च गायत्रीं ततो मूलं महेश्वरि ॥५७॥
एवं समर्प्य देवेशि कृत्वा होमं यथाविधि।

शिष्य का संस्कारक्रम—तब परा देवी का विशेष ध्यान करके देवी का आवाहन करे। गुरु स्वयं पूर्व की ओर मुख करके बैठे और शिष्य को उत्तर की ओर मुख करके बिठावे। शिष्य को बैठाने के पहले विधिवत् आसन का शोधन करे। भूत-शुद्धि के बाद प्राणप्रतिष्ठा करे। तीन प्राणायाम करके तीन आचमन करे। हे देवेशि! मूल मन्त्र से दिग्बन्ध करके परा देवी का स्मरण करे।

हे महेश्वरि! तब गुरु शिष्य की शान्ति के लिये, परा की प्रीति के लिये अग्नि के सामने यन्त्र के आगे परम दुर्लभ दीक्षा शिष्य के कान में महाविद्या श्रीविद्या को प्रदान करे। आनन्दपूर्ण हृदय से गुरु धीरे-धीरे शिष्य को तीन-तीन बार बोलकर श्रीविद्या समर्पित करे। शिष्य को पहले साङ्गोपाङ्ग गणेशमन्त्र प्रदान करे। तब देवीगायत्री का उपदेश करे। हे महेश्वरि! तब मूल मन्त्र प्रदान करे। हे देवेशि! इस प्रकार क्रम से मन्त्र समर्पित करके यथाविधि हवन करे।।५२-५७।।

शिष्यो दीक्षां तु सम्प्राप्य गुरुमभ्यर्च्य शक्तितः ॥५८॥
तोषयित्वा प्रणामैश्च दक्षिणाभिः शुभाम्बरैः।
तदाज्ञां सहसादाय जपाय परमेश्वरि ॥५९॥
यन्त्रं मन्त्रं च मालां च तन्त्रं वैकाङ्गमीश्वरि।
पुनर्जातु शिवे शिष्यो गुरवेऽपि न दर्शयेत् ॥६०॥
ततो होमं च सम्पाद्य वटुकं योगिनीगणम्।
भूतान् सन्तर्प्य बलिना देवीं देवं विसर्जयेत् ॥६१।

दीक्षाप्राप्ति के बाद शिष्य अपनी शक्ति के अनुसार गुरु का अभ्यर्चन करे। गुरु को प्रणाम करे। द्रव्य-दक्षिणा और वस्त्र समर्पित करे। तब गुरु की आज्ञा जप के लिये प्राप्त करे। यन्त्र-मन्त्र-माला और तन्त्र व्यक्तिगत होते हैं। इन्हें गुरु को भी नहीं दिखाना चाहिए; तब हवन करके बटुक योगिनीगण और भूतों के लिये तर्पण करे। उन्हें बलि प्रदान करे। तब विसर्जन करे।।५२-६१।।

मन्त्रसिद्ध्यर्थं सम्प्रदायानुगतविद्या-
ग्रहणविषयकप्रश्नः

श्रीदेव्युवाच

भगवन् देवदेवेश भक्तानुग्रहकारक ।
गणेशं चैव गायत्रीं मूलविद्यां जपेत् परम् ॥६२॥
शैवं मन्त्रं जपन्नो वा वैष्णवं साधकेश्वरः ।
कां कां विद्यां स गृह्णीयाच्छिन्ध्येतत् संशयं मम ॥६३॥

विद्याविशेष-ग्रहण का निर्णय—श्रीदेवी ने कहा—भक्तों पर कृपालु हे भगवन् देवदेवेश! मेरी इस शंका का समाधान करें कि गणेश के साथ गायत्री और मूल विद्या का जप साधक करता है। शैव और वैष्णव मन्त्रों की सिद्धि के लिये किन-किन विद्याओं को ग्रहण किया जाता है?॥६२-६३॥

विद्याविशेषग्रहणनिर्णयः

श्रीभैरव उवाच

प्रथमेऽहनि देवेशि साधको गुरुभक्तितः ।
गणेशं देवि गायत्रीं मूलविद्यां जपेत् परम् ॥६४॥
मुहूर्ते शुभदे देवि शैवं मन्त्रं जपेत्ततः ।
गुरोः पादप्रसादेन लब्ध्वा कतिपयैर्दिनैः ॥६५॥
ततो गुरुं शिवे भक्त्या वन्दनैः पूजनैः सदा ।
प्रार्थनाभिश्च सन्तोष्य श्रीविद्यां प्रार्थयेत्ततः ॥६६॥
विना श्रीविद्यया देवि साधकोऽदीक्षितः स्मृतः ।
अदीक्षितः पशुः प्रोक्तः पशुत्वान्निरयी भवेत् ॥६७॥
स्वजन्मनि शिवे तस्माद् गुरुमभ्यर्च्य भक्तितः ।
श्रीविद्यां प्रार्थयित्वादौ गृह्णीयात् सर्वसिद्धये ॥६८॥

श्री भैरव ने कहा कि हे देवेशि! प्रथम दिन साधक गुरुभक्ति के साथ गणेशमन्त्र, देवीगायत्री और मूल मन्त्र का जप करे। शुभ मुहूर्त में शैव मन्त्र को गुरुकृपा से प्राप्त करके कुछ दिनों के बाद जप करे। हे शिवे! तब गुरु को भक्ति से, वन्दन से, पूजन से सन्तुष्ट करके श्रीविद्या मन्त्र की दीक्षा-दान के लिये प्रार्थना करे। हे देवि! श्रीविद्या की दीक्षा के बिना साधक को अदीक्षित कहा जाता है और अदीक्षित पशु होता है। पशु नरकगामी होता है। अतएव अपने जन्मदिन में भक्ति से गुरु का अर्चन करके श्रीविद्या की दीक्षा के लिये प्रार्थना करे और सभी सिद्धियों की प्राप्ति के लिये उसे ग्रहण करे।।६४-६८।।

महात्रिपुरसुन्दर्या: श्रीविद्यां प्राप्य दुर्लभाम्।
सशिवां गिरजे साङ्गां प्रार्थयेद् दक्षिणां तत: ॥६९॥
विना श्यामां न सिद्धि: स्यान्ममापि परमेश्वरि।
द्वाविंशत्यक्षरीं विद्यां प्रजपेत् साधकोत्तम: ॥७०॥
श्यामाविद्याजपेनाशु श्रीविद्या सिद्धिमेष्यति।
तामसी कालिका प्रोक्ता राजसी षोडशाक्षरी ॥७१॥
सात्त्विकी च परादेवी महाश्रीषोडशाक्षरी।
राज्यं देयं शिरो देयं देया सन्ततिरर्थिने ॥७२॥
वसुपूर्णं गृहं देयं न देया षोडशाक्षरी।
विद्यां त्रिपुरसुन्दर्या लब्ध्वा गुरुप्रसादत: ॥७३॥
मनसापीति नो ब्रूयाच्छ्रीविद्योपासकोऽस्म्यहम्।

महात्रिपुरसुन्दरी की श्रीविद्या-प्राप्ति दुर्लभ है। हे गिरिजे! तब साधक शिव के साथ सांग दक्षिणकाली के मन्त्रदान के लिये प्रार्थना करे। बिना काली-मन्त्र के मुझे भी सिद्धि नहीं मिल सकती। इसलिये बाईस अक्षरों वाली श्यामा विद्या प्राप्त करके साधकोत्तम जप करे। श्यामाविद्या के जप से ही श्रीविद्या की सिद्धि होती है। कालिका को तामसी और षोड़शी को राजसी कहा जाता है। परा देवी महाषोडशाक्षरी को सात्विकी कहा जाता है। राज्य का दान कर दे, शिर दे दे, सन्तानों को दे दे, धन-धान्यपूर्ण गृह प्रदान कर दे; किन्तु षोड़शाक्षरी विद्या किसी को न दे। गुरुकृपा से त्रिपुरसुन्दरी की विद्या प्राप्त करके मन से भी न कहे कि मैं श्रीविद्या का उपासक हूँ।।६९-७३।।

श्यामां भजेत् पराविद्यां श्रीविद्याभेदरूपिणीम् ॥७४॥
तेन सिद्धिर्भवेदाशु देवानामपि दुर्लभा।
यत्र दृष्ट्यापि वै ब्रूयाद्गुरुस्तत्र समाचरेत् ॥७५॥
गुरुरेव परा देवी गुरुरेव परा गति:।
गुरुमुल्लङ्घ्य य: कुर्यात्किञ्चित्स निरयं व्रजेत् ॥७६॥
एवं देवि पराभक्तो दीक्षितो गुरुपूजक:।
गुरूपदेशत: कुर्याज्जपं पूजामहर्निशम् ॥७७॥

परा विद्या श्रीविद्या की भेदरूपिणी श्यामा विद्या के जप से देवदुर्लभ सिद्धि की प्राप्ति होती है। यदि कुछ दिखलायी न पड़े तो यह बात गुरु को बताना चाहिये। तब गुरु जैसा कहे वैसा ही करना चाहिये; क्योंकि गुरु ही परा देवी है, गुरु ही परा गति है। गुरु की आज्ञा का उल्लङ्घन करके जो कुछ भी किया जाता है, उससे नरकवास प्राप्त होता है।

इस प्रकार परा देवी का दीक्षित भक्त गुरुभक्ति में निरत गुरु के उपेदशानुसार अहर्निश पूजा और जप करता रहे।।७४-७७।।

शक्तिदीक्षानिरूपणम्

स्वयं दीक्षां गुरोर्लब्ध्वा दीक्षितः पुण्यभाजनम्।
गुरुमभ्यर्च्य सम्प्रार्थ्य शक्तिदीक्षार्थमीश्वरि ।।७८।।
दीक्षिता यस्य तो शक्तिस्तस्य दीक्षा तु निष्फला।
जन्मकोटिषु ज़प्तापि तस्य विद्या न सिध्यति ।।७९।।
ततः शिवे गुरुः शिष्यं सम्पूज्य परमार्थवित्।
शिष्यस्त्रियं परारूपां देवीरूपां विचिन्तयेत् ।।८०।।
अभ्यर्च्य परमां शक्तिं परावद् वन्दनैः स्तवैः।
आदृत्य मातृवद् देवि कन्यावद् दीक्षयेत् तदा ।।८१।।

शक्ति-दीक्षानिरूपण—गुरु से दीक्षा प्राप्त करके पुण्यात्मा दीक्षित साधक गुरु की पूजा करके उनसे शक्तिदीक्षा के लिये प्रार्थना करे। शक्तिदीक्षा के बिना दीक्षा निष्फल होती है। करोड़ों जन्मों तक जप करने पर भी विद्या सिद्ध नहीं होती। हे शिवे! इसलिये गुरु की सम्यक् रूप से पूजा करके शिष्य परमार्थ-प्राप्ति के लिये स्त्रियों को परारूपा और देवीरूपा चिन्तन करे। परमा शक्ति परा के समान स्त्रियों की पूजा वन्दन-स्तोत्र से करके शिष्य उन्हें माता के समान आदर करे और कन्या के समान दीक्षित करे।।७८-८१।।

परावत् पूजयित्वादौ ततो दीक्षां समर्पयेत्।
उपविश्य गुरुस्तत्र पश्चिमाभिमुखः शिवे ।।८२।।
दीक्षायै प्राङ्मुखीं कृत्वा पूजयेद् यन्त्रराजवत्।
ततः सम्पूज्य देवेशि यन्त्राग्रे देवतागृहे ।।८३।।
शिवो भूत्वा पराविद्यां कर्णमूले समर्पयेत्।
सम्प्राप्य सशिवां विद्यां गुरुं पितृवदर्चयेत् ।।८४।।
गन्धाक्षतप्रसूनाद्यैर्दक्षिणाम्बरपूर्वकैः ।
तदाज्ञां शिरसादाय जपं कुर्यात्तु सर्वदा ।।८५।।

पहले परा देवी के समान उनकी पूजा करे तब उसे दीक्षित करे। तब गुरु पश्चिम की ओर मुख करके बैठे। दीक्षार्थिनी स्त्री को पूर्वाभिमुख बैठाये। यन्त्रराज की पूजा के समान उसका पूजन करे। हे देवेशि! इसके बाद देवालय में यन्त्र के आगे पूजन करके स्वयं शिवस्वरूप होकर परा विद्या को शिष्या के कानों में कहे और समर्पित करे। दीक्षा के

बाद शिष्या गुरु की पूजा पिता के समान करे। गन्धाक्षत-पुष्प से पूजा करके दक्षिणा और वस्त्र प्रदान करे। गुरु की आज्ञा को शिर पर धारण करके सदैव जप करे।।८२-८५।।

शक्तिश्च दीक्षिता भूत्वा दीक्षितोऽपि स्वयं शिवे।
मर्त्योऽपि सच्छिवे जन्तुरमरत्वमवाप्नुयात् ॥८६॥
गुरोः पादप्रसादेन श्रीविद्या यदि लभ्यते।
स श्यामा स शिवा देवि वश्यं तस्य जगत्त्रयम् ॥८७॥

शक्ति में दीक्षित साधक स्वयं शिव-स्वरूप हो जाता है। मर्त्य होने पर भी सत्शिवा हो जाती है, अमरत्व प्राप्त करती है। गुरुपादप्रसाद से यदि श्रीविद्या प्राप्त हो जाय तो वह स्त्री स्वयं काली, पार्वती के समान हो जाती है और उसके वश में तीनों लोक हो जाते हैं।।८६-८७।।

पटलोपसंहारः

इदं रहस्यं परमं तव भक्त्या मयेरितम्।
दीक्षाविधेर्महादेवि गोपनीयं प्रयत्नतः ॥८८॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये दीक्षाविधिनिरूपणं नाम प्रथमः पटलः॥१॥

इस परम रहस्य को मैंने तुम्हारी भक्ति के कारण बतलाया है। हे महादेवि! दीक्षाविधि को यत्नपूर्वक गुप्त रखना चाहिये।।७८-८८।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा-टीका में दीक्षाविधिनिरूपण नामक प्रथम पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ द्वितीयः पटलः

शाक्तमन्त्रोद्धारः

देवी-वैष्णव-शाक्तमन्त्रनिरूपणप्रस्तावः

श्रीभैरव उवाच

अधुना कथयिष्यामि मन्त्रान् साङ्गान् महेश्वरि।
देवीनां वैष्णवाञ्छाक्ताञ्छैवांस्त्वं शृणु पार्वति ॥१॥

श्री भैरव ने कहा कि हे महेश्वरि! अब मैं देवियों के वैष्णव, शाक्त, शैव मन्त्रों का साङ्गोपाङ्ग वर्णन करता हूँ, उन्हें सुनो।।१।।

शाक्त मन्त्र-देवता

त्रिपुरा त्र्यक्षरी बाला तथा त्रिपुरभैरवी।
कालिका भद्रकाली च मातङ्गी भुवनेश्वरी ॥२॥
उग्रतारा छिन्नशीर्षा सुमुखी च सरस्वती।
अन्नपूर्णा महालक्ष्मीः शारिका शारदा ततः ॥३॥
इन्द्राक्षी बगला तुर्या राज्ञी ज्वालामुखी तथा।
भीडा च कालरात्रिश्च भवानी वज्रयोगिनी ॥४॥
वाराही सिद्धलक्ष्मीश्च कुलवागीश्वरी ततः।
पद्मावती कुब्जिका च गौरी श्रीखेचरी ततः ॥५॥
नीलसरस्वती देवि पराशक्तिस्ततः स्मृता।
एतासां देवि साङ्गानां शक्तीनां वच्म्यहं मनून् ॥६॥

शाक्त मन्त्र-देवता—जिन देवियों के मन्त्रों का वर्णन कर रहा हूँ, उनके नाम इस प्रकार हैं—त्रिपुरा बाला त्र्यक्षरी, त्रिपुरसुन्दरी, कालिका, भद्रकाली, मातंगी, भुवनेश्वरी, उग्रतारा, छिन्नशीर्षा, सुमुखी, सरस्वती, अन्नपूर्णा, महालक्ष्मी, शारिका, शारदा, इन्द्राक्षी, बगला, तुर्या, राज्ञी, ज्वालामुखी, भीड़ा, कालरात्रि, भवानी, वज्रयोगिनी, वाराही, सिद्धलक्ष्मी, कुलवागीश्वरी, पद्मावती, कुब्जिका, गौरी, खेचरी, नीलसरस्वती, पराशक्ति। इन शक्तियों के मन्त्रों का उनके अङ्गों सहित आगे वर्णन किया जायगा।।२-६।।

शैवमन्त्रदेवता

शैवान् मन्त्रांस्ततो वक्ष्ये यथावच्छृणु पार्वति।
मृत्युञ्जयोऽमृतेशानो वटुकोऽपि महेश्वरः ॥७॥
शिवः सदाशिवो रुद्रो महादेवः करालकः।
विकरालो नीलकण्ठः शर्वः पशुपतिर्मृडः ॥८॥
पिनाकी गिरिशो भीमो गणेशः प्रमथाधिपः।
कुमारः क्रोधनश्चेशः कपाली क्रूरभैरवः ॥९॥
संहार ईश्वरो भर्गो रुरुः कालाग्निरव्ययः।
अघोरश्च महाकालः कामेश्वर इति स्मृतः ॥१०॥

शैव मन्त्र-देवता—हे पार्वति! अब शैव मन्त्रों का विवरण देता हूँ, यथावत् सुनो। जिनके मन्त्रों का वर्णन आगे किया जायेगा, वे हैं—मृत्युञ्जय, अमृतेश, बटुक, महेश्वर, शिव, सदाशिव, रुद्र, महादेव, कराल, विकराल, नीलकण्ठ, शर्व, पशुपति, मृड, पिनाकी, गिरीश, भीम, गणेश, प्रमथाधिप, कुमार, क्रोधीश, कपाली, क्रूरभैरव, संहार, ईश्वर, भर्ग, रुरु, कालाग्नि, अघोर, महाकाल और कामेश्वर।।७-१०।।

वैष्णवमन्त्रदेवता

वैष्णवाञ्छृणु देवेशि मन्त्रांस्तन्त्रेषु गोपितान्।
येन श्रवणमात्रेण मन्त्री विष्णुपदं व्रजेत् ॥११॥
लक्ष्मीनारायणो राधाकृष्णो विष्णुर्नृसिंहकः।
वराहो जामदग्न्यश्च सीतारामो जनार्दनः ॥१२॥
विश्वक्सेनो वासुदेव इत्येवं दश वैष्णवाः।
मन्त्रा अत्युत्तमा देवि जप्याः साधकसत्तमैः ॥१३॥

वैष्णव मन्त्र-देवता—मन्त्र-तन्त्रों में गुप्त जिन वैष्णव मन्त्रों का वर्णन आगे किया जायगा, उनका नाम सुनो। इनके श्रवणमात्र से साधक वैष्णव पद को प्राप्त कर लेता है। लक्ष्मीनारायण, राधाकृष्ण, विष्णु, नृसिंह, वराह, जामदग्न्य, सीताराम, जर्नादन, विश्वक्सेन, वासुदेव—ये ही दश वैष्णव हैं। इनके मन्त्र अति उत्तम हैं। श्रेष्ठ साधक इनका जप करते हैं।।११-१३।।

शाक्तशैववैष्णवमन्त्रोद्धारः

एतेषां शाक्तशैवानां वैष्णवानां महेश्वरि।
उद्धारान् वच्मि मन्त्राणां श्रुत्वा गोपय यत्नतः ॥१४॥

शाक्त-शैव-वैष्णव मन्त्रों का उद्धार—हे महेश्वरि! अब मैं इन शाक्त-शैव-वैष्णव मन्त्रों के उद्धार का वर्णन करता हूँ। इसे सुनकर यत्नपूर्वक गुप्त रखना चाहिये। सर्वप्रथम शाक्त मन्त्रों के उद्धार का वर्णन करता हूँ।।१४।।

बालामन्त्रोद्धारः

वाग्भवं कामराजश्च शक्तिर्मध्येऽभिधं न्यसेत्।
नमोऽन्ते देवि बालाया मन्त्रोऽयं चाष्टवर्णकः ॥१५॥

प्रकाशम्—'ऐं क्लीं सौः बालायै नमः' इति बाला।

बाला त्रिपुरा का मन्त्र—इस श्लोक के उद्धार करने पर बाला त्रिपुरा का अष्टाक्षर मन्त्र बनता है—ऐं क्लीं सौः बालायै नमः।।१५।।

पञ्चदशाक्षरीमन्त्रोद्धारः

वेधोबीजमधोऽध्यर्णमधो जिष्णुस्तमः परा।
छविः शक्तिः शिरः कान्तिस्तमो माया शरत् शिरः ॥१६॥
तमो मायाञ्चले देव्या मन्त्रः पञ्चदशाक्षरः।

स्पष्टम्—'कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं' इति।

त्रिपुरा का पञ्चदशी मन्त्र—इस श्लोक के उद्धार करने पर ललिता महात्रिपुर-सुन्दरी का पंचदशी मन्त्र बनता है—क ए ई ल ह्रीं ह स क ल ह्रीं सकल ह्रीं।।१६।।

षोडशीमन्त्रोद्धारः

लक्ष्मीः परा मदनवाग्भवशक्तियुक्ता
तारं च भूतिकमले कथितापि विद्या।
शक्त्यादिकं तु विपरीततया च प्रोक्तः
श्रीषोडशाक्षरविधिः शिवमस्तु पूर्णः ॥१७॥

स्पष्टम्—'श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं' इति।

षोड़शी मन्त्र—इस श्लोक के उद्धार करने पर षोड़शी महात्रिपुरसुन्दरी का षोड़शाक्षर मन्त्र स्पष्ट होता है—श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं। इसमें कएईलह्रीं को एक अक्षर, हसकहलह्रीं को एक अक्षर और सकलह्रीं को एक अक्षर मानने पर सोलह अक्षर होते हैं।।१७।।

त्रिपुरामन्त्रोद्धारः

देवि वक्ष्याम्यहं गुह्यं त्रिपुराया रहस्यकम्।
नित्यायाः शक्तयः पूज्या वाग्भवीकामशक्तयः ॥१८॥
तारमायारमाबीजैर्नाम मध्येऽञ्चलेऽश्मरी।
मन्त्रोऽयं सर्वशक्तीनां सर्वसाधारणो मतः ॥१९॥
त्रिपुरापूजने देवि पृथग् जाप्ये मृथङ्मनुः।

हे देवि! मैं तुम्हें त्रिपुरसुन्दरी के एक गुप्त रहस्य को बतलाता हूँ। इनकी नित्या शक्तियों की पूजा होती है, जो वाग्भव कूट, काम कूट और शक्ति कूट के पन्द्रह अक्षरों की प्रतिनिधि हैं। इन नित्याओं की संख्या पन्द्रह है। सर्वसाधारण मत से सभी शक्तियों के मन्त्र ॐ ह्रीं श्रीं के बाद चतुर्थ्यन्त नाम और नम: से बनते हैं। जैसे—'ॐ ह्रीं श्रीं कामेश्वर्यै नम:' यह कामेश्वरी नित्या का मन्त्र है। त्रिपुरा-पूजन के मन्त्र अलग हैं और जप के मन्त्र अलग हैं।।१८-१९।।

दक्षिणकालिकामन्त्रोद्धारः

कालीत्रयं कूर्चयुग्मं लज्जायुग्मं समुच्चरेत् ॥२०॥
दक्षिणे कालिके चेति पुनर्बीजानि पूर्ववत्।
ठद्वयं स्यान्मनोरन्ते मन्त्रोऽयं भुवनेश्वरः ॥२१॥
द्वाविंशत्यक्षरी विद्या विद्याराज्ञी प्रकीर्तिता।

स्पष्टम्—'क्रींक्रींक्रीं हूंहूं ह्रींह्रीं दक्षिणे कालिके क्रींक्रींक्रीं हूंहूं ह्रींह्रीं स्वाहा' इति काली।

काली-मन्त्र (बाईस अक्षरों का विद्याराज्ञी)—मन्त्रश्लोक के उद्धार करने पर कालीत्रय = क्रींक्रींक्रीं, कूर्चयुग्मं = हूं हूं, लज्जायुग्मं = ह्रीं ह्रीं, दक्षिणे कालिके, तब क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं के बाद ठद्वयं स्वाहा से दक्षिणकाली का विद्याराज्ञी मन्त्र बनता है। वह बाईस अक्षर का मन्त्र है—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।।२०-२१।।

काल्याद्याः शक्तयः पूज्याः कालीबीजेन केवलम्।
अन्यथा सिद्धिहानिः स्यात् कालिकापूजने परम् ॥२२॥

काली आदि शक्तियों की पूजा केवल क्रीं बीज से होती है। काली-पूजन में ऐसा नहीं करने से हानि होने की सम्भावना रहती है।।२०-२२।।

भद्रकालीमन्त्रोद्धारः

कालीत्रयं कूर्चयुग्मं लज्जायुग्मं च भद्रिकाम्।
भद्रकालिपदं ब्रूयाद् बीजानि प्रतिलोमतः ॥२३॥
ठद्वयेन समायुक्तो भद्रकाली-महामनुः।

प्रकाशम्—'क्रींक्रींक्रीं हूंहूं ह्रींह्रीं भैं भद्रकालि भैं ह्रींह्रीं हूंहूं क्रींक्रींक्रीं स्वाहा' इति काली।

कालीकूर्चपराबीजैः परिवारादिशक्तयः।
पूजनीया महादेवि भद्रकालीसमर्चने ॥२४॥

भद्रकाली का मन्त्र—श्लोकों के उद्धार करने पर कालीत्रय = क्रीं क्रीं क्रीं, कूर्चयुग्म = हूं हूं, लज्जायुग्म = ह्रीं ह्रीं, भद्रिका = भैं, भद्रकालि के बाद बीजों को प्रतिलोम रूप में रखने से और ठद्वयं स्वाहा लगाने से भद्रकाली का महामन्त्र बनता है, जो निम्नवत् है—

क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं भैं भद्रकालि भैं ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा।

परिवारशक्तियों की पूजा 'क्रीं हूं ह्रीं' बीजों से होती है।।२३-२४।।

मातङ्गीमन्त्रोद्धारः

तारं परां समुद्धृत्य राजमातङ्गिनीति च।
मम सर्वार्थसिद्धिं च देहि-युग्मं समुद्धरेत् ॥२५॥
तुरगं ठद्वयं चान्ते मन्त्रोऽयं राजवल्लभः।

प्रकाशम्—'ॐ ह्रीं राजमातङ्गिनि मम सर्वार्थसिद्धिं देहि देहि फट् स्वाहा' इति मातङ्गी।

तारेण पूज्या देवेशि शक्तयः परिवारगाः ॥२६॥

मातंगी मन्त्र—श्लोकों के उद्धार करने पर तार = ॐ, परा = ह्रीं, राजमांतगिनी मम सर्वार्थसिद्धि, देहि देहि फट् स्वाहा को एक साथ करने से मातंगी का राजवल्लभ मन्त्र बनता है। मन्त्र है—

ॐ ह्रीं राजमातङ्गिनि मम सर्वार्थसिद्धि देहि देहि फट् स्वाहा।

इनकी आवरणशक्तियों की पूजा केवल ॐ से होती है।।२५-२६।।

भुवनेश्वरीमन्त्रोद्धारः

मायाबीजं नाम मध्ये नमो मन्त्राञ्चले वदेत्।
एकाक्षरीयं विदिता भुवने भुवनेश्वरी ॥२७॥

प्रकाशम्—'ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः' इति भुवनेश्वरी।

मायाबीजेन सम्पूज्याः पूजाकालेऽत्र शक्तयः ।

भुवनेश्वरी मन्त्र—श्लोक का उद्धार करने पर मायाबीज 'ह्रीं' के बाद 'भुवनेश्वर्यै' तब 'नमः' लगाने से भुवनेश्वरी का मन्त्र 'ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः' बनता है। इनका एकाक्षरी मन्त्र चौदहों भुवनों में सर्वविदित है। पूजा के समय इनकी शक्तियों का पूजन ह्रीं बीज से किया जाता है।।२७।।

उग्रतारामन्त्रोद्धारः

तारं परां वधूं कूर्चं तुरगं सकलाञ्चले ।।२८।।
सार्धपञ्चाक्षरी तारा भवसागरतारिणी ।

स्पष्टम्—'ओं ह्रीं स्त्री हूं फट्' इत्युग्रतारा।

तारकान्तातटैः पूज्याः शक्तयश्चक्रमध्यगाः ।।२९।।

तारा मन्त्रोद्धार—इस श्लोक के उद्धार करने पर तार = ॐ, परा = ह्रीं, वधू = स्त्रीं, कूर्च = हूं तुरगं फट् को एकत्र करने पर भवसागरतारिणी तारा का साढ़े पाँच अक्षरों का मन्त्र यह बनता है—ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट्।

चक्रगत आवरण शक्तियों की पूजा ॐ स्त्रीं बीज से होती है।।२८-२९।।

छिन्नमस्तामन्त्रोद्धारः

लक्ष्मीं लज्जां तथा मायां मात्रां द्वादशिकीमथ ।
वज्रवैरोचनीये द्वे माये फट्स्वाहया युते ।।३०।।

स्पष्टम्—'श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहां' इति छिन्नमस्ता।

मायायुग्मेन संपूज्याः शक्तयः परिवारगाः ।

छिन्नमस्तिका मन्त्रोद्धार—लक्ष्मी = श्रीं, लज्जा = ह्रीं, माया = ह्रीं, मात्रा द्वादशिकी = ऐं, वज्रवैरोचनीये, द्वे माये = ह्रीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा। छिन्नमस्ता के इस मन्त्र में सत्रह अक्षर हैं। आवरणशक्तियों की पूजा मायायुग्म = ह्रीं ह्रीं से होती है।।३०।।

सुमुखीमन्त्रोद्धारः

वाग्भवं कामराजं च तथोच्छिष्टपदं वदेत् ।।३१।।
चण्डालिनीति प्रोच्चार्य सुमुखीदेवि चोद्धरेत् ।
महापिशाचिनि चेति मायार्णं पङ्कजत्रयम् ।।३२।।
वह्निजायाञ्चलो मन्त्रो गोपनीयो महेश्वरि ।

स्पष्टाम्—'ऐं क्लीं उच्छिष्टचण्डालिनि सुमुखिदेवि महापिशाचिनि ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा' इति सुमुखी।

वाक्कामबीजैः सम्पूज्याः शक्तयोऽन्याः परस्परम् ॥३३॥

सुमखी मन्त्रोद्धार—वाग्भव = ऐं, कामराज = क्लीं, उच्छिष्टचण्डालिनि सुमुखी देवि महापिशाचिनि, मायार्ण = ह्रीं, पंकजत्रय = ठः ठः ठः और वह्निजाया = स्वाहा के संयोग से सुमुखी का मन्त्र जो बनता है, वह है—ऐं क्लीं उच्छिष्टचण्डालिनि सुमुखी देवि महापिशाचिनि ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा। आवरणशक्तियों का पूजन वाक् कामबीज ऐं क्लीं से होता है।।३१-३३।।

सरस्वतीमन्त्रोद्धारः

तारं माया च वाग्बीजं परा तारं महेश्वरि।
सरस्वत्यै जगन्मन्त्रः प्रसिद्धोऽयं शिवाक्षरः ॥३४॥

स्पष्टं यथा—'ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः' इति सरस्वती।

तारमायाक्षरैः पूज्या देव्यो देवीसमीपगाः।

सरस्वती मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, माया = ह्रीं, वाग्बीज = ऐं, परा = ह्रीं, तार = ॐ सरस्वत्यै, जगन्मन्त्र = नमः को मिलाने से सरस्वती के ग्यारह अक्षरों का यह मन्त्र बनता है—ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः। आवरण शक्तियों का पूजन तार मायाक्षर ॐ ह्रीं से होता है।।३४।।

अन्नपूर्णामन्त्रोद्धारः

तारं परापि कमला कामं विश्वं ततो वदेत् ॥३५॥
भगवति माहेश्वरि चान्नपूर्णे च ठद्वयम्।

स्पष्टम्—'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा' इति अन्नपूर्णा।

आदिबीजद्वयेनैव पूज्या देव्याः समीपगाः ॥३६॥

अन्नपूर्णा मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, परा = ह्रीं, कमला = श्रीं, काम = क्लीं, विश्व = नमः, भगवती माहेश्वरि अन्नपूर्णे और ठद्वय स्वाहा को एकत्र करने से अन्नपूर्णा का मन्त्र बनता है। इसमें बीस अक्षर हैं। मन्त्र स्पष्ट है—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा। आदि बीजद्वय ॐ ह्रीं से इनके आवरण देवताओं का पूजन होता है।।३५-३६।।

महालक्ष्मीमन्त्रोद्धार:

तारं परां रमां कामं वाग्भवं शक्तिबीजकम्।
महालक्ष्मि प्रसीदेति युग्मं मा पङ्कजत्रयम्॥३७॥
स्वाहान्तोऽयं महामन्त्रो महालक्ष्मीपदप्रद:।

प्रकाशम्—'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौ: महालक्ष्मि प्रसीद प्रसीद श्रीं ठ: ठ: ठ: स्वाहा' इति महालक्ष्मी।

आदिबीजत्रयेणैव पूज्या: परमशक्तय:॥३८॥

महालक्ष्मी मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, परा = ह्रीं, रमा = श्रीं, काम = क्लीं, वाग्भव = ऐं, शक्ति = सौ:, महालक्ष्मि, प्रसीदयुग्म = प्रसीद प्रसीद, पङ्कजत्रय = ठ: ठ: ठ: और स्वाहा के संयोग से महालक्ष्मी का वरप्रदायक महामन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौ: महालक्ष्मि प्रसीद प्रसीद श्रीं ठ: ठ: ठ: स्वाहा। आदि बीजत्रय ॐ ह्रीं श्रीं से आवरणशक्तियों का पूजन होता है।।३७-३८।।

शारिकामन्त्रोद्धार:

तारं मायां श्रियं कूर्चं सिन्धुरं शर्म प्रोच्चरेत्।
नामाश्मरीं मनोरन्ते मन्त्रोऽयं भुवि दुर्लभ:॥३९॥

स्पष्टम्—'ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं शां शारिकायै नम:' इति शारिका।

मायया पूजयेद् देवी: परिवारगता: शिवे।

शारिका मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, माया = ह्रीं, श्रियं = श्रीं, कूर्च = हूं, सिन्धुर = फ्रां, शर्म = आं, रेत = शां, नाम = शारिकायै, अश्मरी नम: के योग से शारिका देवी का यह मन्त्र बनता है—ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं शां शारिकायै नम:। यन्त्र आवरणों में देवी की पूजा माया = ह्रीं से होती है।।३९।।

शारदामन्त्रोद्धार:

तारं माया स्मर: शक्तिरश्मरी नाम संवदेत्॥४०॥
भगवत्यै शारदायै मनोरन्ते परा वनम्।

स्पष्टम्—'ॐ ह्रीं क्लीं स: नमो भगवत्यै शारदायै ह्रीं स्वाहा' इति शारदा।

तारकामै: शिवे पूज्या: शक्तय: परमार्थदा:॥४१॥

शारदा मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, माया = ह्रीं, स्मर: = क्लीं, शक्ति = स:,

अश्मरी नमः, भगवत्यै शारदायै, परा = ह्रीं, वनम् = स्वाहा के योग से शारदा का यह मन्त्र बनता है—ॐ ह्रीं क्लीं सः नमो भगवत्यै शारदायै ह्रीं स्वाहा। परमार्थप्रदा शक्तियों का पूजन ॐ क्लीं से होता है।।४०-४१।।

इन्द्राक्षीमन्त्रोद्धारः

प्रणवं कमलां मायां वाग्भवं शक्तिमन्मथौ।
इन्द्राक्षि वज्रहस्ते च हरमन्तेऽग्निवल्लभा ॥४२॥

मूलम्—'ॐ श्रीं ह्रीं ऐं सौः क्लीं इन्द्राक्षि वज्रहस्ते फट् स्वाहा' इति इन्द्राक्षी।

आदिबीजत्रयेणैताः पूज्याः श्रीचक्रदेवताः।

इन्द्राक्षी मन्त्रोद्धार—प्रणव = ॐ, कमला = श्रीं, माया = ह्रीं, वाग्भव = ऐं, शक्ति = सौः, मन्मथ = क्लीं, इन्द्रासि वज्रहस्ते, हर = फट्, अग्निवल्लभा स्वाहा के योग से इन्द्राक्षी का यह मन्त्र बनता है—ॐ श्रीं ह्रीं ऐं सौः क्लीं इन्द्राक्षि वज्रहस्ते फट् स्वाहा। इनकी आवरणशक्तियों का पूजन आदि बीजत्रय 'ॐ श्रीं ह्रीं' से होता है।।४२।।

बगलामुखीमन्त्रोद्धारः

तारं मृत्स्नां च देवेशि बगलामुखि सर्व च ॥४३॥
दुष्टानां वाचं मुखकं पदं स्तम्भय-युग्मकम्।
जिह्वां कीलय-युग्मं च मृत्तारं ठद्वयं मनुः ॥४४॥

प्रकाशम्—'ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय ह्लीं ॐ स्वाहा' इति बगलामुखी।

बीजद्वयेन सम्पूज्याः परिवारगताः पराः।

बगला मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, मृत्स्ना = ह्लीं, बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, मृत् = ह्लीं, तार ॐ, ठद्वयं स्वाहा के योग से बगलामुखी का मन्त्र बनता है। इसमें छत्तीस अक्षर होते हैं। ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय ह्लीं ॐ स्वाहा। आवरण शक्तियों का पूजन केवल 'ॐ ह्लीं' से यथाक्रम होता है।।४३-४४।।

महातुरीमन्त्रोद्धारः

प्रणवस्तारका ज्योतिस्तारा मध्येऽभिधं न्यसेत् ॥४५॥
अन्तेऽश्मरी महादेवि मन्त्रोऽयं शत्रुसूदनः।

प्रकाशम्—'ॐ त्रुं त्रौं त्रों महातुर्यै नमः' इति महातुरी।

प्रणवेनार्चयेद् देवि परिवारान् यथाक्रमम् ॥४६॥

महातुरी मन्त्रोद्धार—प्रणव = ॐ, तारका = त्रुं, ज्योति = त्रौं, तारा = त्रों, महातुर्यै, अश्मरी नम: के योग से महातुरी देवी का मन्त्र बनता है—ॐ त्रुं त्रौं त्रों महातुर्यै नम:। यह मन्त्र दशाक्षर है। यह शत्रुओं का विनाशक है। यन्त्रार्चन में आवरण देवियों का पूजन यथाक्रम केवल ॐ से होता है।।४५-४६।।

महाराज्ञीमन्त्रोद्धार:

तारं परा रमा वह्नि: काम: शक्ति: षडक्षर: ।
भगवत्यै च राज्यै च माया ठद्वयमञ्जले ॥४७॥

प्रकाशम्—'ॐ ह्रीं श्रीं रां क्लीं सौ: भगवत्यै राज्यै ह्रीं स्वाहा' इति महाराज्ञी।

ताराग्निभ्यां शिवे देवीपरिवारान् समर्चयेत् ।

महाराज्ञी मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, परा = ह्रीं, रमा = श्रीं, वह्नि = रां, काम = क्लीं, शक्ति = सौ:, षडक्षर = भगवत्यै राज्यै, माया = ह्रीं, ठद्वय स्वाहा के योग से महाराज्ञी का मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ह्रीं श्रीं रां क्लीं सौ: भगवत्यै राज्यै ह्रीं स्वाहा। यह पन्द्रह अक्षरों का मन्त्र है।

यन्त्रार्चन में आवरण देवियों का पूजन 'ॐ रां' से होता है।।४७।।

ज्वालामुखीमन्त्रोद्धार:

तारं लज्जां श्रियं चैव ज्वालामुखि ममेति च ॥४८॥
सर्वशत्रून् भक्षय द्विरन्ते कूर्चं हरं पय: ।

प्रकाशम्—'ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हूं फट् स्वाहा' इति ज्वालामुखी।

तारेण पूजयेद् देवि परिवारगता: परा: ॥४९॥

ज्वालामुखी मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, लज्जा = ह्रीं, श्रियं = श्रीं, ज्वालामुखि, मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय, कूर्चं हरं = हूं फट्, पय: = स्वाहा के योग से मन्त्र का स्वरूप यह बनता है—ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हूं फट् स्वाहा। यन्त्रार्चन में आवरणशक्तियों का पूजन केवल ॐ से होता है।।४८-४९।।

भीड़ामन्त्रोद्धार:

तारं परा रमा वेदी चन्द्रमन्मथशक्तय: ।
भीडाभगवतीत्येवं हंसरूपिणि ठद्वयम् ॥५०॥

स्पष्टं यथा—'ॐ ह्रीं श्रीं हस्त्रैं ऐं क्लीं सौः भीडाभगवति हंसरूपिणि स्वाहा' इति भीडा।

परारमार्णैर्देवेशि परिवारान् प्रपूजयेत्।

भीड़ा भगवती मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, परा = ह्रीं, रमा = श्रीं, वेदी = हस्त्रैं, चन्द्र = ऐं, मन्मथ = क्लीं, शक्ति = सौः, भीड़ा भगवति हंसरूपिणि ठद्वय स्वाहा के संयोग से यह मन्त्र बनता है—ॐ ह्रीं श्रीं हस्त्रैं ऐं क्लीं सौः भीड़ा भगवति हंसरूपिणि स्वाहा। यन्त्रार्चन में आवरण देवियों का पूजन परारमार्ण = 'ह्रीं श्रीं' से होता है।।५०।।

कालरात्रिमन्त्रोद्धारः

प्रणवं वासना माया मन्मथः कमला ततः ।।५१।।
मध्ये नामाञ्चले सर्वं वश्यं कुरुद्वयं वदेत्।
वीर्यं देहि पुनर्नाम गणेश्वर्याश्मरी स्मृता ।।५२।।

प्रकाशम्—'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं कालरात्रि सर्वं वश्यं कुरु कुरु वीर्यं देहि देहि गणेश्वर्यै नमः' इति कालरात्री।

तारचन्द्रेणं सम्पूज्य परिवारांस्ततो यजेत्।

कालरात्री मन्त्रोद्धार—प्रणव = ॐ, वासना = ऐं, माया = ह्रीं, मन्मथ = क्लीं, कमला = श्रीं, कालरात्रि सर्वं वश्यं कुरु कुरु वीर्यं देहि देहि, गणेश्वर्यै अश्मरी नमः के योग से यह मन्त्र बनता है—ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं कालरात्रि सर्वं वश्यं कुरु कुरु वीर्यं देहि देहि गणेश्वर्यै नमः। यह उन्नीस अक्षरों का मन्त्र हैं। यन्त्रार्चन में आवरण देवियों का पूजन तार चन्द्र = ॐ ऐं से होता है।।५१-५२।।

भवानीमन्त्रोद्धारः

तारं रमा रमा तारं तारं माया रमा रमा ।।५३।।
हूंफडन्तः समाख्यातो मन्त्रः सर्वार्थसाधकः।

प्रकाशम्—'ॐ श्रीं श्रीं ॐ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं हूं फट्' इति भवानी।

माबीजैः पूजयेद् देवि परिवारगताः पराः ।।५४।।

भवानी मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, रमा रमा = श्रीं श्रीं, तारं तारं = ॐ ॐ, माया = ह्रीं, रमा रमा = श्रीं श्रीं, हूँ फट् के योग से भवानी का दशाक्षर मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ श्रीं श्रीं ॐ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं हूँ फट्। यन्त्रार्चन में आवरण शक्तियों की पूजा 'श्रीं' से होती है।।५३-५४।।

वज्रयोगिनीमन्त्रोद्धारः

परार्णं वज्रयोगिन्यै ठद्वयं प्रणवादितः ।
मन्त्रोऽयं सर्वसिद्धीशः साधकानां जयप्रदः ॥५५॥

मूलम्—'ॐ ह्रीं वज्रयोगिन्यै स्वाहा' इति वज्रयोगिनी।

मायाबीजेन देवेशि परिवारान् समर्चयेत् ।

वज्रयोगिनी मन्त्रोद्धार—प्रणवादि = ॐ, परार्ण = ह्रीं, वज्रयोगिन्यै, ठद्वय स्वाहा को मिलाकर वज्रयोगिनी का मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ह्रीं वज्रयोगिन्यै स्वाहा। यह मन्त्र सभी सिद्धियों का स्वामी है और साधकों को जयप्रदायक है।।५५।।

धूम्रवाराहीमन्त्रोद्धारः

चन्द्रवाह्लीकमोहार्णचन्द्रा मध्येऽभिधं न्यसेत् ॥५६॥
चन्द्रो मठं पद्मयुग्मं हरं नीरमयं मनुः ।
वासनामोहबीजेन पूजयेत् परिवारगान् ॥५७॥

मूलम्—'ऐं ग्लौं लं ऐं नमो भगवति वार्तालि वाराहि देवते वराहमुखि ऐं ग्लौं ठः ठः फट् स्वाहा' इति धूम्रवाराही।

धूम्रवाराही मन्त्रोद्धार—चन्द्र = ऐं, वाह्लीक = ग्लौं, मोहार्ण = लं, चन्द्र = ऐं, नमो भगवति वार्तालि वाराहि देवते वराहमुखी, चन्द्र = ऐं, मठ = ग्लौं, पद्मयुग्म = ठः ठः, हर = फट् नीरमयं स्वाहा के योग से मन्त्र का स्वरूप यह होता है—ऐं ग्लौं लं ऐं नमो भगवति वार्तालि वाराहि देवते वराहमुखि ऐं ग्लौं ठः ठः फट् स्वाहा। यन्त्रार्चन में आवरण देवियों का पूजन वासना ऐं और मोह लं=ऐं लं से होता है।।५६-५७।।

सिद्धलक्ष्मीमन्त्रोद्धारः

तारं रमायुगं माया हरितं चन्द्रमन्मथौ ।
शक्तिर्नामाश्मरीमन्त्रः सिद्धलक्ष्म्या उदाहृतः ॥५८॥

प्रकाशम्—'ॐ श्रीं श्रीं ह्रीं हसौः ऐं क्लीं सौः सिद्धलक्ष्म्यै नमः' इति सिद्धलक्ष्मी।

रमया पूजयेदन्याः परिवारगताः शिवे ।

सिद्धलक्ष्मी मन्त्रोद्धार—तार ॐ, रमायुगं श्रीं श्रीं, माया ह्रीं, हरितं ह्सौं, चन्द्र ऐं, मन्मथ क्लीं, शक्ति सौः, नाम सिद्धलक्ष्म्यै, अश्मरी नमः के योग से सिद्धलक्ष्मी का यह मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ श्रीं श्रीं ह्रीं ह्सौः ऐं क्लीं सौः सिद्धलक्ष्म्यै नमः। यन्त्रार्चन में आवरण शक्तियों का पूजन 'श्रीं' से होता है।।५८।।

कुलवागीश्वरीमन्त्रोद्धारः

तारं कामो डिम्बलक्ष्मीः कूर्चं कांक्षाभिधं ततः ।।५९।।
चन्द्रः पद्मः स्पृहा पद्मो वेश्या पद्मो वनं मनुः ।

प्रकाशम्—'ॐ क्लीं ह्रां श्रीं हूं झं झषहस्ते कुलवागीश्वरि ऐं ठः झं ठः स्त्रीं ठः स्वाहा' इति कुलवागीश्वरी।

कामेन पूजयेद् देवि परिवारान् यथाक्रमम् ।।६०।।

कुलवागीश्वरी मन्त्रोद्धार—तार ॐ, काम क्लीं, डिम्ब ह्रां, लक्ष्मी श्रीं, कूर्च हूँ, कांक्षा झं, अभिधं झष, हस्ते कुलवागीश्वरि चन्द्र ऐं, पद्म ठः, स्पृहा झं, पद्म ठः, वेश्या स्त्रीं, पद्म ठः, वनं स्वाहा के योग से यह मन्त्र ऐसा होता है—'ॐ क्लीं ह्रां श्रीं हूं झं झषहस्ते कुलवागीश्वरि ऐं ठः झं ठः स्त्रीं ठः स्वाहा।' आवरण देवियों का पूजन क्लीं से होता है।।५९-६०।।

पद्मावतीमन्त्रोद्धारः

तारं परा रमा कामा वीची पद्मावतीति च ।
मम वरं देहि-युग्मं हरं नीरमयं मनुः ।।६१।।
परया पूजयेद् देवीः परिवारगताः पराः ।

प्रकाशम्—'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं पद्मावति मम वरं देहि देहि फट् स्वाहा' इति पद्मावती।

पद्मावती मन्त्रोद्धार—तार ॐ, परा ह्रीं, रमा श्रीं, काम क्लीं, वीची ब्लूं, पद्मावति मम वरं देहि देहि हर फट् नीरमयं स्वाहा के योग से बना पद्मावती का मन्त्र यह है—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं पद्मावति मम वरं देहि देहि फट् स्वाहा यन्त्रार्चन में आवरण देवियों का पूजन ह्रीं बीज से होता है।।६१।।

कुब्जिकामन्त्रोद्धारः

तारं रमा वागुरार्णं नाम मध्ये ततः परा ।।६२।।
पद्मो वनमयं मन्त्रः सर्वसिद्धिफलप्रदः ।
वागुरार्णेन देवेशि पूजयेत् परिवारगाः ।।६३।।

प्रकाशम्—'ॐ श्रीं प्रीं कुब्जिके देवि ह्रीं ठः स्वाहा' इति कुब्जिका।

कुब्जिका मन्त्रोद्धार—तार ॐ, रमा श्रीं, वागुरार्ण प्रीं, कुब्जिके देवि, परा ह्रीं, पद्म ठः, वन स्वाहा के योग से कुब्जिका मन्त्र यह होता है—ॐ श्रीं प्रीं कुब्जिके देवि ह्रीं ठः स्वाहा। यन्त्रार्चन में वागुरार्ण 'प्रीं' बीज से आवरण शक्तियों की पूजा की जाती है।।६२-६३।।

गौरीमन्त्रोद्धारः

प्रणवं कमला माया वाह्लीकं च शिवं ततः।
गौरि शर्वो वनं देवि मन्त्रः सर्वार्थसिद्धिदः ॥६४॥

स्पष्टम्—'ॐ श्रीं ह्रीं ग्लौं गं गौरि गीं स्वाहा' इति गौरी।

रमया परिवाराश्च पूजयेत् साधकोत्तमः।

गौरी मन्त्रोद्धार—प्रणव ॐ, कमला श्रीं, माया ह्रीं, वाह्लीक ग्लौं, शिवं गं, शर्वो गीं, वनम् स्वाहा के योग से बना गौरी का मन्त्र यह है—ॐ श्रीं ह्रीं ग्लौं गं गौरि गीं स्वाहा। हे देवि! यह दशाक्षर मन्त्र सर्वसिद्धिप्रदायक हैं। साधक श्रेष्ठ को आवरण देवियों का पूजन 'श्री' बीज से करना चाहिये।।६४।।

खेचरीमन्त्रोद्धारः

भेकी तमः परा शक्तिः खेचर्यै चाश्मरी ततः ॥६५॥
मन्त्रोऽयं खेचरो नाम खेचरत्वप्रदायकः।
परया पूजयेद् देवीः परिवारगताः प्रिये ॥६६॥

स्पष्टम्—'मलह्रीं सौः खेचर्य्यै नमः' इति खेचरी।

खेचरी मन्त्रोद्धार—भेकी म, तमः ल, परा ह्रीं, शक्ति सौः, खेचर्यै, अश्मरी नमः के योग से खेचरी का मन्त्र बनता है। मन्त्र है—मलह्रीं सौः खेचर्यै नमः। यह मन्त्र आकाश-गमन की क्षमता प्रदान करता है। यन्त्रपूजन में आवरण शक्तियों का अर्चन ह्रीं बीज से होता है।।६५-६६।।

नीलसरस्वतीमन्त्रोद्धारः

तारं व्योषं वाग्भवं च कूर्चं नीलसरस्वति।
हरं नीरं मनोरन्ते मन्त्रोऽयं वाक्प्रदायकः ॥६७॥
व्योषेण पूजयेद् देवि परिवारा यथाविधि।

प्रकाशम्—'ॐ ह्रां ऐं हूं नीलसरस्वति फट् स्वाहा' इति नीलसरस्वती।

नील सरस्वती मन्त्रोद्धार—तार ॐ, व्योष ह्रां, वाग्भव ऐं, कूर्च हूं, नील सरस्वती फट् स्वाहा के योग से नील सरस्वती का मन्त्र बनता है।

मन्त्र है—ॐ ह्रां ऐं हूं नील सरस्वती फट् स्वाहा यन्त्रार्चन में आवरण शक्तियों का पूजन 'ह्रां' बीज से होता है।।६७।।

पराशक्तिमन्त्रोद्धारः

तारं रमा परा कामः शक्तिर्वस्त्रं ततोऽभिधम् ॥६८॥
वाग्भवं ठद्वयं देवि मन्त्रराजोऽयमीरितः।

प्रकाशम्—'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं सौः ह्सौः पराशक्त्यै ऐं स्वाहा' इति पराशक्तिः।

मूलेन पूजयेदन्या देवीस्तत्परिवारगाः ॥६९॥

परा शक्ति मन्त्रोद्धार—तार ॐ, रमा श्रीं, परा ह्रीं, काम क्लीं, शक्ति सौः, वस्त्र ह्सौः अभिधं पराशक्त्यै, वाग्भव ऐं, ठद्वय स्वाहा के योग से परा शक्ति का मन्त्र बनता है। हे देवि! यह मन्त्रराज है। यन्त्र-अर्चन में आवरण देवियों का पूजन पूरे मूल मन्त्र से होता है—'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं सौः ह्सौः पराशक्त्यै ऐं स्वाहा।।६८-६९।।

पटलोपसंहार

इत्येष शाक्तमन्त्राढ्यः पटलो देवदुर्लभः।
अधुना ते मनून् शैवान् वक्ष्यामि शृणु पार्वति ॥७०॥
इदं रहस्यं परमं तव भक्त्या प्रकाशितम्।
गुह्यातिगुह्यगुप्तं च गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥७१॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये शाक्तमन्त्रोद्धारनिरूपणं नाम द्वितीयः पटलः॥२॥

शाक्त मन्त्र से पूर्ण यह पटल देवताओं को भी दुर्लभ है। हे पार्वति! अब शैव मन्त्रों का वर्णन सुनो। तुम्हारी भक्ति के वश में होकर इस परम रहस्य को मैंने प्रकाशित किया है। यह गुह्य से गुह्य और गुप्त है। अपनी योनि के समान इसे गुप्त रखना चाहिये।।७०-७१।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्री देवीरहस्य की भाषाटीका में
शाक्तमन्त्रोद्धार नामक द्वितीय पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ तृतीयः पटलः

शिवमन्त्रोद्धार:

श्रीभैरव उवाच

यो देवदेवो देवेशि महामृत्युञ्जयः स्मृतः ।
मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि तस्याहं शृणु पार्वति ॥१॥

श्री भैरव ने कहा कि हे पार्वति। देवेशि! देवदेव महादेव का जो महामृत्युञ्जय मन्त्र है, मैं उसका वर्णन करता हूँ, सुनो।।१।।

मृत्युञ्जयमन्त्रोद्धारः

त्र्यक्षं हृज्जं शक्तिशोभेऽपि शङ्का
मां तस्माद्वै पालय द्विस्तथैव ।
तस्माच्छक्तिः खं शरद् हृज्जतारं
मन्त्रोद्धारो देवि मृत्युञ्जयस्य ॥२॥

मृत्युञ्जय मन्त्रोद्धार—त्र्यक्षं = ॐ, हृज्जं = जूं, शक्ति = स:, मां पालय पालय, शक्ति = स:, खं शरद जूं, ॐ के योग से जो मृत्युञ्जय मन्त्र बनता है, वह यह है— ॐ जूं स: मां पालय पालय स: जूं ॐ। रोग-कष्टनिवारण में इसका जप होता है।।२।।

अमृतेश्वरमन्त्रोद्धारः

अमृतेशस्य वक्ष्यामि मन्त्रोद्धारं महेश्वरि ।
येन विज्ञातमात्रेण दीक्षाफलमवाप्नुयात् ॥३॥
तारं हृज्जं शरन्नाम मध्ये विश्वं तथाञ्चले ।
मन्त्रोऽयं सर्वसिद्धीशः सुमुखीशिववल्लभः ॥४॥

अमृतेश्वर मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, हृज्ज = जूं, शर = फट्, अमृतेशाय नम: के योग से अमृत मृत्युञ्जय मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ जूं फट् अमृतेशाय नम:। यह मन्त्र सभी सिद्धियों का ईश्वर है। हे सुमुखि! यह मुझे बहुत प्रिय है।।३-४।।

वटुकभैरवमन्त्रोद्धारः

प्रणवं भूतिबीजं च वटुकाय समुद्धरेत् ।
आपदुद्धारणायेति कुरुयुग्मं समुच्चरेत् ॥५॥
वटुकाय पराबीजं मन्त्रोऽयं देवदुर्लभः ।

वटुक मन्त्रोद्धार—प्रणव ॐ, भूति ह्रीं, वटुकाय, आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं के योग से वटुकभैरव का यह द्वाविंशाक्षरी मन्त्र बना है। मन्त्र है—ॐ ह्रीं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं। यह मन्त्र देवदुर्लभ है।।५।।

महेश्वरमन्त्रोद्धारः

तारं व्योषं महादेवि ततो महेश्वराय च ॥६॥
विश्वमन्ते मनोर्दद्यान्मन्त्रोऽयं सर्वसिद्धिदः ।

महेश्वर मन्त्रोद्धार—तार ॐ, व्योष ह्रां, महेश्वराय, विश्व नमः के योग से महेश्वर का यह मन्त्र बना है। मन्त्र है—ॐ ह्रां महेश्वराय नमः। यह मन्त्र सभी सिद्धियों को प्रदान करने वाला है।।६।।

शिवमन्त्रोद्धारः

तारं विश्वं शिवायेति मन्त्रोऽयं भोगमोक्षदः ॥७॥

शिव मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, विश्व = नमः, शिवाय के योग से यह शिवमन्त्र बना है। यह मन्त्र भोग मोक्ष प्रदायक है। मन्त्र है—ॐ नमः शिवाय। यह शिव का पञ्चाक्षर मन्त्र है।।७।।

अपरशिवमन्त्रोद्धारः

तारं व्योषं शिवायेति नमोऽन्तेऽस्त्यपरो मनुः ।

इति शिवस्य मन्त्राः।

अपर शिव मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, व्योष = ह्रां, शिवाय नमः के योग से यह मन्त्र बना है। मन्त्र है—ॐ ह्रां शिवाय नमः।

सदाशिवमन्त्रोद्धारः

तारं वाणी शरत् कामः सदाशिवाय प्रोद्धरेत् ।
विश्वमन्ते स्मृतो मन्त्रो मन्त्रमौलिमणिः परः ॥८॥

इति सदाशिवस्य।

सदाशिव मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, वाणी = ऐं, शरत = सौः, काम = क्लीं, सदाशिवाय, विश्व = नमः के योग से यह मन्त्र बना है। मन्त्र है—ॐ ऐं सौः क्लीं सदाशिवाय नमः। यह मन्त्र समस्त मन्त्रों में मणि के समान है।।८।।

रुद्रमन्त्रोद्धारः

तारं व्योषं शिवो रुद्र प्रसीदेति युगं वदेत् ।

अन्ते ठद्वयमीशानि मन्त्रोऽयं देवदुर्लभः ॥९॥

इति रुद्रस्य।

रुद्र मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, व्योष = ह्रां, रुद्र, प्रसीद प्रसीद और अन्त में ठद्वय स्वाहा लगाने से यह मन्त्र बना है। मन्त्र है—ॐ ह्रां रुद्र प्रसीद प्रसीद नमः। यह देव-दुर्लभ मन्त्र है।।९।।

महादेवमन्त्रोद्धारः

तारं परा शिवो देवि महादेवाय ठद्वयम्।
मन्त्रः शिवप्रदो देवि शैवानां परमार्थदः ॥१०॥

इति महादेवस्य।

महादेव मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, परा = ह्रीं, महादेवाय, ठद्वय = स्वाहा के योग से यह महादेव-मन्त्र बना है। मन्त्र है—ॐ ह्रीं महादेवाय स्वाहा। यह मन्त्र कल्याणकारक है एवं शैवों का परमार्थ-प्रदायक है।।१०।।

करालमन्त्रोद्धारः

तारं काली शिवो नाम तुरीरूपं च ठद्वयम्।
मन्त्रो भैरवाख्यातः कलौ भोगापवर्गदः ॥११॥

इति करालस्य।

कराल मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, काली = क्रीं, शिव नाम तुरीरूप = शिवाय, ठद्वय = स्वाहा के योग से कराल भैरव का मन्त्र बना है। मन्त्र है—ॐ क्रीं शिवाय स्वाहा। यह विख्यात भैरवमन्त्र भोग और अपवर्ग को देने वाला है।।११।।

विकरालमन्त्रोद्धारः

तारं वाग्भवमायाया विकरालाय विन्यसेत्।
अन्ते ठद्वयमुच्चार्य मन्त्रराजोऽयमीरितः ॥१२॥

इति विकरालस्य।

विकराल मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, वाग्भव = ऐं, माया = ह्रीं, विकरालाय, ठद्वय के योग से यह मन्त्र बना है। मन्त्र है—ॐ ऐं ह्रीं विकरालाय स्वाहा। इसे मन्त्रराज कहा जाता है।।१२।।

नीलकण्ठमन्त्रोद्धारः

प्रणवं हरितं डिम्बं नीलकण्ठाय चाश्मरी।
दुर्गेशनीलकण्ठस्य मन्त्रोद्धारो दशाक्षरः ॥१३॥

नीलकण्ठ मन्त्रोद्धार—प्रणव = ॐ, हरित = ह्सौः, डिम्ब = ह्रां, नीलकण्ठाय, अश्मरी = नमः को एक साथ मिलाने पर नीलकण्ठ-मन्त्र बनता है। यह मन्त्र है—ॐ ह्सौः ह्रां नीलकण्ठाय नमः। यह मन्त्र दशाक्षर है।।१३।।

शर्वमन्त्रोद्धारः

तारं परा रमा-बीजं शर्वायेति पदं वदेत्।
अन्तेऽश्मरी मनोर्देवि मन्त्रोऽयं भोगदः स्मृतः ॥१४॥

शर्व मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, परा = ह्रीं, रमा = श्रीं, शर्वाय, अश्मरी नमः के योग से भोगप्रदायक शर्वमन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ह्रीं श्रीं शर्वाय नमः।।१४।।

पशुपतिमन्त्रोद्धारः

प्रणवो वाग्भवो मारः शक्तिः पशुपतेर्वनम्।
मन्त्रोऽयं देवदेवस्य वल्लभो मुक्तिसाधनम् ॥१५॥

पशुपति मन्त्रोद्धार—प्रणव = ॐ, वाग्भव = ऐं, मार = क्लीं, शक्ति = सौः, पशुपते, वनं = स्वाहा के योग से पशुपति मन्त्र बना है। मन्त्र है—ॐ ऐं क्लीं सौः पशुपते स्वाहा। देवदेव पशुपति का यह मन्त्र मन्त्रराज है और मोक्ष का साधन है।।१५।।

मृडमन्त्रोद्धारः

तारं परा मृडायेति विश्वमन्ते मनुः स्मृतः।

मृड मन्त्रोद्धार—तार ॐ, परा ह्रीं, मृडाय, विश्वम् नमः के योग से यह मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ह्रीं मृडाय नमः।

पिनाकीमन्त्रोद्धारः

तारं हृज्जं परा लक्ष्मीर्मध्ये ब्रूयात्पिनाकिने ॥१६॥
अन्तेऽश्मरी मनोर्देवि मन्त्रोऽयं वैरिसूदनः।

पिनाकी मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, हृज्जं = जूं, परा = ह्रीं, लक्ष्मी = श्रीं, पिनाकिने, अश्मरी नमः के योग से पिनाकी मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ जूं ह्रीं श्रीं पिनाकिने नमः। यह मन्त्र वैरी-विनाशक है।।१६।।

गिरीशमन्त्रोद्धारः

तारं शिवो मठं देवि गिरिशायाश्मरी मनुः ॥१७॥

गिरीश-मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, शिव = गं, मठं = ग्लौं, गिरीशाय, अश्मरी = नमः के योग से गिरीश-मन्त्र बनता है। वह है—ॐ गं ग्लौं गिरीशाय नमः।।१७।।

भीममन्त्रोद्धारः

तारं परा भद्रिका च भीमायान्तेऽश्मरी मनुः।

भीम मन्त्रोद्धार—तार ॐ, परा ह्रीं, भद्रिका भैं, भीमाय, अश्मरी नम: के योग से भीम शिव का मन्त्र बनता हैं। मन्त्र है—ॐ ह्रीं भैं भीमाय नम:।

महागणपतिमन्त्रोद्धारः

माया शिवाक्षरं माया महागणपमुद्धरेत् ॥१८॥
तयेऽश्मरी मनोरन्ते मन्त्रोऽयं विघ्नहारकः।

महागणपति मन्त्रोद्धार—माया = ह्रीं, शिवाक्षर = गं, माया = ह्रीं, महागणपतये, अश्मरी के योग से सम्पन्न महागणपति का मन्त्र होता है—ह्रीं गं ह्रीं महागणपतये नम:। यह मन्त्र विघ्न-विनाशक है।।१८।।

प्रमथाधिपमन्त्रोद्धारः

मारं परा च वाह्लीकं प्रमथाधिपमुद्धरेत् ॥१९॥
प्रसीद-द्वयमापोऽन्ते मन्त्रोऽयं देवदुर्लभः।

प्रमथाधिप मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, परा = ह्रीं, वाह्लीक = ग्लौं, प्रमथाधिप, प्रसीद प्रसीद, आपो = स्वाहा के योग से यह मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ह्रीं ग्लौं प्रमथाधिप प्रसीद प्रसीद स्वाहा। यह मन्त्र देवदुर्लभ है।।१९।।

कुमारमन्त्रोद्धारः

छविः कुमाराय मनोरन्ते विश्वं मनुः परः ॥२०॥
सर्वदेवेन्द्रपददो भोगदो मोक्षदः स्मृतः।

कुमार मन्त्रोद्धार—छवि = हां, कुमाराय, विश्वं = नम: के योग से कुमार का मन्त्र बनता है। मन्त्र है—हां कुमाराय नम:। यह मन्त्र सर्व देवेन्द्र पद-प्रदायक, भोगप्रद और मोक्षप्रद कहा जाता है।।२०।।

क्रोधनेशमन्त्रोद्धारः

तारं काली शिवो देवि क्रोधनेशाय चाश्मरी ॥२१॥
मन्त्रोऽयं सर्वसिद्धीशो वैरिवर्गनिवर्हणः।

क्रोधनेश मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, काली = क्रीं, शिवो = गं, क्रोधनेशाय, अश्मरी = नम: के योग से क्रोधनेश का मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ क्रीं गं क्रोधनेशाय नम:। यह मन्त्र सभी सिद्धियों का ईश्वर एवं वैरीवर्ग का विनाशक है।।२१।।

ईशमन्त्रोद्धारः

तारं परा रमा लक्ष्मीरीशायेति वनं मनुः ॥२२॥

ईश मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, परा = ह्रीं, रमा = श्रीं, लक्ष्मी = श्रीं, ईशाय, वनं = स्वाहा के योग से जो मन्त्र बनता है, वह मन्त्र है—ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं ईशाय स्वाहा।।२२।।

कपालीशमन्त्रोद्धारः

तारं शिवः कामराजः कपालीशाय संवदेत्।
अन्ते ठद्वयमुद्धृत्य मन्त्रोऽयं स्याद् दशाक्षरः ॥२३॥

कपालीश मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, शिव = गं, कामराज = क्लीं, कपालीशाय, ठद्वय = स्वाहा के योग से यह मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ गं क्लीं कपालीशाय स्वाहा। यह मन्त्र दशाक्षर है।।२३।।

क्रूरभैरवमन्त्रोद्धारः

तारं कालीयुगं माया क्रूरभैरव प्रोद्धरेत्।
प्रसीद-द्वयमापोऽन्ते मन्त्रोऽयं सर्वसिद्धिदः ॥२४॥

क्रूरभैरव मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, कालीयुग = क्रीं क्रीं, माया = ह्रीं, क्रूरभैरव, प्रसीद प्रसीद, आपः = स्वाहा के योग से क्रूरभैरव का मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ क्रीं क्रीं ह्रीं क्रूरभैरव प्रसीद प्रसीद स्वाहा। इस मन्त्र से साधक को सभी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।।२४।।

संहारभैरवमन्त्रोद्धारः

तारं वाणी शरत् कामः संहारायाञ्चले वनम्।
मन्त्रोऽयं देवदेवस्य वर्णितस्ते दशाक्षरः ॥२५॥

संहारभैरव मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, वाणी = ऐं, शरत् = सौः, काम = क्लीं, संहाराय, वनं = स्वाहा के योग से संहारभैरव का मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ऐं क्लीं सौः संहाराय स्वाहा। यह मन्त्र दशाक्षर है।।२५।।

ईश्वरमन्त्रोद्धारः

तारं मा भूतिर्मा लक्ष्मीरीश्वरायाश्मरी मनुः।

ईश्वर मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, मा = श्रीं, भूति = ह्रीं, मा = श्रीं, लक्ष्मी = श्रीं, ईश्वराय, अश्मरी = नमः के योग से ईश्वर का मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं ईश्वराय नमः।

भर्गमन्त्रोद्धारः

तारं च भास्वती माया भर्गायान्तेऽश्मरी मनुः॥२६॥

भर्ग मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, भास्वती = भैं, माया ह्रीं, भर्गाय, अश्मरी = नमः के योग से भर्ग का मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ भैं ह्रीं भर्गाय नमः।।२६।।

रुरुभैरवमन्त्रोद्धारः

तारं चाब्धिः परा बीजं रुरवे चाश्मरी मनुः।

रुरुभैरव मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, अब्धि = रूं, परा = ह्रीं, रुरवे, अश्मरी = नमः के योग से रुरु का मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ रूं ह्रीं रुरवे नमः।

कालाग्निभैरवमन्त्रोद्धारः

प्रणवं कमला माया कालाग्नये पदं ततः ॥२७॥
विश्वमन्ते मनोर्देवि मन्त्रराजोऽयमीरि।

कालाग्नि-भैरव मन्त्रोद्धार—प्रणव = ॐ, कमला = श्रीं, माया = ह्रीं, कालाग्नये, विश्वं = नमः के योग से कालाग्नि का मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ श्रीं ह्रीं कालाग्नये नमः। इसे मन्त्रराज कहा जाता है।।२७।।

सद्योजातमन्त्रोद्धारः

तारं व्योषं शिवो देवि सद्योजाताय चाश्मरी ॥२८॥
उग्रताराशिवस्यायमव्ययस्य मनुः स्मृतः।

सद्योजात मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, व्योष = ह्रां, शिव = गं, सद्योजाताय, अश्मरी = नमः के योग से सद्योजात मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ह्रां गं सद्योजाताय नमः। उग्रतारा के शिव का यह अव्यय मन्त्र माना जाता है।।२८।।

अघोरमन्त्रोद्धारः

मात्रादिः षडभिज्ञवह्निकुलिशास्तस्माद्विलं मारजि-
द्वह्नी वज्रकगौतमाग्नियुगलं रात्र्यग्निवज्राङ्कितम्।
शङ्कौ वौं च तमी शुभौ बकयुतौ शक्त्यौर्ववज्राश्मका
रात्र्यब्धीन्दुजसिन्दुमत्स्यकुलिशा मन्त्रोऽयमाघोरिकः ॥२९॥

अघोर मन्त्रोद्धार—इस श्लोक के उद्धार करने पर निम्नवत् अघोर मन्त्र निष्पन्न होता है—

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।

महाकालमन्त्रोद्धारः

कूर्चद्वन्द्वं महाकाल प्रसीदेति पदद्वयम्।
मायाद्वयं वह्निजाया राजराजेश्वरो मनुः ॥३०॥

महाकाल मन्त्रोद्धार—कूर्चद्वन्द्व = हूं हूं, महाकाल प्रसीद प्रसीद, मायाद्वय = ह्रीं ह्रीं, वह्निजाया = स्वाहा के योग से महाकाल का मन्त्र इस प्रकार होता है—हूं हूं महाकाल प्रसीद प्रसीद ह्रीं ह्रीं स्वाहा। यह मन्त्र राज-राजेश्वर है।।२०।।

कामेश्वरमन्त्रोद्धारः

वाग्भवं मदनशक्तितारका मा परा सकलविद्ययाञ्चिता।
तारयुक्तविपरीतबीजकः षोडशाक्षरविधिः शिवः स्मृतः ॥३१॥

कामेश्वर मन्त्रोद्धार—वाग्भव = ऐं, मदन = क्लीं, शक्ति = सौः, तार = ॐ, मा = श्रीं, परा = ह्रीं, कमेश्वर, तारयुक्त विपरीतबीजकः के योग से कामेश्वर का षोडशाक्षर मन्त्र बनता हैं। मन्त्र है—ऐं क्लीं सौः ॐ श्रीं ह्रीं कामेश्वर ह्रीं श्रीं ॐ सौः क्लीं ऐं।।३१।।

पटलोपसंहारः

इतीदं मन्त्रसर्वस्वं रहस्यं परमं परम्।
तव भक्त्या मयाख्यातं न चाख्येयं दुरात्मने ॥३२॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये शिवमन्त्रोद्धारनिरूपणं
नाम तृतीयः पटलः॥३॥

यह मन्त्र सर्वस्व है। उत्तमोत्तम रहस्य है। हे पार्वति! तुम्हारी भक्ति से विवश होकर मैंने इसे प्रकट किया है। दुरात्माओं को इसे नहीं बताना चाहिये।।३२।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
शिवमन्त्रोद्धार नामक तृतीय पटल पूर्ण हुआ।

अथ चतुर्थः पटलः

वैष्णवमन्त्रोद्धारः

श्रीभैरव उवाच

अधुना कथयिष्यामि वैष्णवांस्तत्त्वतो मनून्।
येषां स्मरणमात्रेण दीक्षितोऽदीक्षितो भवेत्॥१॥
मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि लक्ष्मीनारायणस्य ते।
अष्टसिद्धिप्रदं सद्यः साधकानां सुदुर्लभम्॥२॥

वैष्णव मन्त्रोद्धार—श्री भैरव ने कहा कि अब मैं वैष्णव मन्त्र के तत्त्वों का वर्णन करता हूँ, जिसके स्मरणमात्र से अदीक्षित भी दीक्षित हो जाता है। तुम्हारे समक्ष मैं लक्ष्मीनारायण मन्त्र का उद्धार करता हूँ, जिससे साधकों को दुर्लभ अष्टसिद्धियों की शीघ्र ही प्राप्ति हो जाती है।।१-२।।

लक्ष्मीनारायणमन्त्रोद्धारः

तारं परा च हरितं परा लक्ष्मीस्ततोऽभिधम्।
लक्ष्मीनारायणायेति विश्वमन्ते मनुः स्मृतः॥३॥

लक्ष्मीनारायण मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, परा = ह्रीं, हरित = ह्सौः, परा = ह्रीं, लक्ष्मी = श्रीं, लक्ष्मीनारायणाय, विश्व = नमः के योग से यह मन्त्र बनता है। मन्त्र यह है—ॐ ह्रीं ह्सौः ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नमः।।३।।

राधाकृष्णमन्त्रोद्धारः

तारं रमा वाग्भवकामशक्तिर्मायाग्निराधेति पदं वदेच्च।
कृष्णाय कूर्चं हरठद्वयं स्याच्छ्रीकृष्णमन्त्रो मनुराजमौलिः॥४॥

राधाकृष्ण मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, रमा = श्रीं, वाग्भव = ऐं, काम = क्लीं, शक्ति = सौः, माया = ह्रीं, अग्नि = रां, राधाकृष्णाय, कूर्च = हूं, हर = फट्, ठद्वय = स्वाहा के योग से यह मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ श्रीं ऐं क्लीं सौः ह्रीं रां राधाकृष्णाय हूं फट् स्वाहा। यह मन्त्र कृष्णमन्त्रराज की मौली है।।४।।

विष्णुमन्त्रोद्धारः

तारं परायुगं तारं विष्णवे विश्वमञ्चले।
देवदेवस्य मन्त्रोऽयं विष्णोस्तव समीरितः॥५॥

विष्णु मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, परायुग = ह्रीं ह्रीं, तार = ॐ, विष्णवे नमः के योग से विष्णुमन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ विष्णवे नमः। देवदेव का यह मन्त्र विष्णुस्तोत्र कहा जाता है।।५।।

लक्ष्मीनृसिंहमन्त्रोद्धारः

तारं रमा भूतिजवाक्स्मराश्च शक्तिर्नृबीजं नरसिंहदेवम्।
तुर्याङ्कितं वाक् तटफड्वनं ते प्रोक्तो हि लक्ष्मीनरसिंहमन्त्रः ॥६॥

लक्ष्मी नृसिंह मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, रमा = श्रीं, भूति = ह्रीं, वाक् = ऐं, स्मर = क्लीं, शक्ति = सौः, क्ष्रौं, नरसिंहदेवाय, वाक् = ऐं, तट = फट् के योग से निर्मित मन्त्र है—ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः क्ष्रौं नरसिंहदेवाय ऐं फट्।।६।।

लक्ष्मीवराहमन्त्रोद्धारः

तारं रमार्णं सकला स्मरश्च लक्ष्मीवराहायपदं वदेत् तु।
अन्तेऽश्मरी वैष्णवधामदायी लक्ष्मीवराहस्य मनुः स्मृतस्ते ॥७॥

लक्ष्मीवराह मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, रमार्ण = श्रीं, सकला = ह्रीं, स्मर क्लीं, लक्ष्मीवराह, अश्मरी = नमः के योग से लक्ष्मीवराह का मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं लक्ष्मीवराहाय नमः। यह मन्त्र वैकुण्ठ धाम में वास दिलाता है।।७।।

परशुराममन्त्रोद्धारः

तारं परा भूति रमा कुचार्णं श्रीजामदग्न्याय सरोजयुग्मम्।
आपस्तथान्ते गदितोऽयमीढ्यो यथेष्टदो भार्गवराममन्त्रः ॥८॥

परशुराम मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, परा = ह्रीं, भूति = ह्रीं, रमा = श्रीं, कुचार्ण = जं, श्रीजामदग्न्याय, आपः = स्वाहा के योग से परशुराम मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं जं श्रीजामदग्न्याय स्वाहा। यह मन्त्र सब तरह से स्तुत्य है और यथेष्ट को प्रदान करने वाला है।।८।।

सीताराममन्त्रोद्धारः

तारं परा रमा लक्ष्मीसीतारामेति संवदेत्।
प्रसीद-युगमापोऽन्ते मन्त्रोऽयं मुक्तिकारणम् ॥९॥

सीताराम मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, परा = ह्रीं, रमा = श्रीं, लक्ष्मी = श्रीं, सीताराम प्रसीद प्रसीद, आपः = स्वाहा के योग से मन्त्र बनता है—ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं सीताराम प्रसीद प्रसीद स्वाहा। यह मन्त्र मोक्षप्रद है।।९।।

जनार्दनमन्त्रोद्धारः

तारं मा भूतिमा माख्यां वदेज्जनार्दनाय च।
विश्वमन्ते मनोर्देवि मन्त्रोऽयं रिपुसूदनः ॥१०॥

जर्नादन मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, मा = श्रीं, भूति = ह्रीं, मा = श्रीं, जनार्दनाय, विश्वम् = नमः के योग से मन्त्र बनता है—ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं जनार्दनाय नमः। यह मन्त्र शत्रुसंहारक है।।१०।।

लक्ष्मीविश्वक्सेनमन्त्रोद्धारः

तारं परायुगं लक्ष्मीविश्वक्सेनाय संवदेत्।
कूर्चं पद्मत्रयं नीरं वैष्णवानां सुदुर्लभः ॥११॥

लक्ष्मीविश्वक्सेन मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, परायुग्म = ह्रीं ह्रीं, लक्ष्मी = श्रीं, विश्वक्सेनाय, कूर्च = हूं, पद्मत्रय = ठः ठः ठः, नीर = स्वाहा के योग से निर्मित मन्त्र यह है—ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं विश्वक्सेनाय हूं ठः ठः ठः स्वाहा। यह वैष्णवों का अत्यन्त दुर्लभ मन्त्र है।।११।।

लक्ष्मीवासुदेवमन्त्रोद्धारः

तारं परा रमा वाणी कामो लक्ष्मीपदं वदेत्।
वासुदेवाय विश्वं स्यान्मन्त्रोऽयं भोगमोक्षदः ॥१२॥

लक्ष्मीवासुदेव मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, परा = ह्रीं, रमा = श्रीं, वाणी = ऐं, काम = क्लीं, लक्ष्मीवासुदेवाय, विश्वम् = नमः के योग से बना मन्त्र है—ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं लक्ष्मी- वासुदेवाय नमः। यह मन्त्र भोग और मोक्षप्रदायक है।।१२।।

पटलोपसंहारः

इदं तत्त्वतमं गुह्यं रहस्यं परमाद्भुतम्।
वैष्णवानां च सर्वस्वं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥१३॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये वैष्णवमन्त्रोद्धारनिरूपणं नाम चतुर्थः पटलः।।४।।

श्री भैरव कहते हैं कि हे देवि! यह सर्वश्रेष्ठ तत्त्व गुह्य, रहस्यमय एवं अत्यन्त आश्चर्यजनक है। वैष्णवों का सर्वस्व है। अपनी योनि के समान इसे गुप्त रखना चाहिये।।१३।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में वैष्णव मन्त्रोद्धार नामक चतुर्थ पटल पूर्ण हुआ।

•

अथ पञ्चमः पटलः

मन्त्रोत्कीलनविधिः

मन्त्रोत्कीलनमहत्त्वम्

श्रीभैरव उवाच

अथ वक्ष्ये महत्तत्त्वं मन्त्राणां परमार्थदम्।
येन विज्ञातमात्रेण विद्या सिध्यति सत्त्वरम्॥१॥
उत्कीलनविधिं वक्ष्ये सर्वमन्त्ररहस्यकम्।
अदातव्यमभक्तेभ्यो नाख्येयं यस्य कस्यचित्॥२॥
शाक्तानां देवि मन्त्राणां शैवानां च विशेषतः।
वैष्णवानां मनूनां तु वक्ष्याम्युत्कीलनं परम्॥३॥

मन्त्रोत्कीलन का महत्त्व—श्री भैरव ने कहा कि अब मैं उस श्रेष्ठ तत्त्व का वर्णन करता हूँ, जो मन्त्रों के परमार्थ का दाता है। इस तत्त्व के ज्ञान से विद्या की सिद्धि सत्वर होती है। सभी मन्त्रों के रहस्य उत्कीलनविधि का वर्णन करता हूँ। इस विधि को अभक्तों को नहीं बतलाना चाहिये और न ही जिस-किसी को बतलाना चाहिये। शाक्त देवीमन्त्रों के, विशेष रूप से शैव मन्त्रों के, और वैष्णव मन्त्रों के उत्कीलन की विधि का निरूपण करता हूँ।।१-३।।

बालामन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

प्रथमं देवि बालायास्त्र्यक्षर्याः शृणु पार्वति।
वाणीमन्ते त्रिरुच्चार्य भवेदुत्कीलनं मनोः॥४॥

बाला मन्त्रोत्कीलन मन्त्र—हे पार्वति! सर्वप्रथम देवी बाला त्रिपुरा के त्र्यक्षर मन्त्र का उत्कीलन सुनो। बाला मन्त्र 'ऐं क्लीं सौं' के बाद तीन बार 'ऐं' के उच्चारण से इसका उत्कीलन होता है। मन्त्र है—ऐं क्लीं सौः ऐं ऐं ऐं।।४।।

त्रिपुरभैरवीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

अन्त्यकूटं वदेदादौ द्विर्देवि जपसिद्धये।
भवेत् त्रिपुरभैरव्या मनोरुत्कीलनं परम्॥५॥

त्रिपुरभैरवी मन्त्रोत्कीलन—त्रिपुरभैरवी के पञ्चदशी मन्त्र में तीन कूट हैं—वाग्भव

कूट = कएईलह्रीं, कामराजकूट = हसकहलह्रीं और शक्तिकूट = सकलह्रीं। इस मन्त्र के उत्कीलन के लिये अन्तिम कूट सकलह्रीं को पहले दो बार कहकर वाग्भव और कामराज कूट का उच्चारण करना चाहिये उत्कीलन मन्त्र होता है—सकलह्रीं सकलह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं। इस उत्कीलन से जप में सिद्धि होती है।।५।।

षोडशीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

कूटत्रयाणां प्रथमं वर्णं वर्णं समुद्धरेत्।
जपेच्छ्रीषोडशाक्षर्या भवेदुत्कीलनं मनोः ॥६॥

षोडशी मन्त्रोत्कीलन—षोडशी के तीनों कूटों में सें प्रथम कूट के पाँच अक्षरों के साथ अलग-अलग षोड़शी मन्त्र के जप से उत्कीलन होता है, जैसे—

क श्रीं क ए ई ल ह्रीं हसकहलह्रीं।
ए श्रीं क ए ई ल ह्रीं हसकहलह्रीं।
ई श्रीं क ए ई ल ह्रीं हसकहलह्रीं।
ल श्रीं क ए ई ल ह्रीं हसकहलह्रीं।
ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं हसकहलह्रीं।

कालिकामन्त्रस्य निष्कीलत्वकथनम्

अथ वक्ष्ये रहस्यं ते कालिकाया महेश्वरि।
निष्कीलिता स्याद्विद्येयं द्वाविंशत्यक्षरी परा ॥७॥

कालिका मन्त्रोत्कीलन—हे महेश्वरि! अब मैं कालिका के द्वाविंशाक्षर मन्त्र के रहस्य को बतलाता हूँ। इस मन्त्र को उत्कीलित करने की आवश्यकता नहीं है; क्योंकि यह स्वयं ही निष्कीलित है।।७।।

भद्रकालीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

भद्रिकां प्रथमं दद्यादन्ते कालीत्रयं वदेत्।
भद्रकालीमनोर्देवि भवेदुत्कीलनं तथा ॥८॥

भद्रकाली मन्त्रोत्कीलन—भद्रकाली का मन्त्र है—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं भैं भद्रकालि भैं ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा। इस मन्त्र को उत्कीलित करने के लिये मन्त्र के शुरु में भद्रिका 'भैं' लगाये और अन्त में 'क्रीं क्रीं क्रीं' जोड़े। उत्कीलन मन्त्र होगा—भैं क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं भैं भद्रकालि भैं ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं।।८।।

राजमातङ्गिनीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

ठद्वयान्ते परां दद्यात् जपेत् साधकसत्तमः।
भवेदुत्कीलनं देवि राजमातङ्गिनीमनोः ॥९॥

राजमातङ्गिनी मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ ह्रीं राजमातङ्गिनि मम सर्वार्थसिद्धिं देहि देहि फट् स्वाहा। इसके मन्त्रान्त में 'स्वाहा' के बाद ह्रीं जोड़कर जप करने से इसका उत्कीलन होता है।।९।।

भुवनेश्वरीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

विश्रान्ते सकलां दद्याज्जपेत् पार्वति जापकः।
मनोः श्रीभुवनेश्वर्याः स्यादुत्कीलनमुत्तमम् ॥१०॥

भुवनेश्वरी मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः। इस मन्त्र में 'नमः' के बाद 'ह्रीं' जोड़कर जप करने से इसका उत्कीलन होता है।।१०।।

तारामन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

वधूमादौ पठेदन्ते तारं जप्त्वा च पार्वति।
अयमुत्कीलनो मन्त्रस्तारायाः समुदाहृतः ॥११॥

तारा मन्त्रोत्कीलन—तारा का मन्त्र है—ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट्। इसे उत्कीलित करने के लिये इसके पहले 'स्त्रीं' लगाकर और अन्त 'ॐ' जोड़कर जप किया जाता है। जैसे—स्त्रीं ॐ ह्रीं स्त्री हूं फट् ॐ।।११।।

छिन्नमस्तामन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

मात्रां द्वादशिकीमादौ जपेन्मन्त्रस्य पार्वति।
छिन्नशीर्षामनोरेष स्यादुत्कीलनकः परः ॥१२॥

छिन्नशीर्षा मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा। इस मन्त्र को उत्कीलित करने के लिये इसके पहले 'ऐं' लगाकर जप करना चाहिये।।१२।।

सुमुखीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

मायामादौ वनान्ते च वाग्भवं साधको जपेत्।
सुमुख्या मन्त्रराजस्य भवेदुत्कीलनं तथा ॥१३॥

सुमुखी मन्त्रोत्कीलन—सुमुखी मन्त्र है—ऐं क्लीं उच्छिष्टचाण्डालिनि सुमुखि देवि महापिशाचिनि ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा। इस मन्त्र को उत्कीलित करने के लिये मन्त्र के पहले 'ह्रीं' और स्वाहा के बाद 'ऐं' जोड़कर जप करना चाहिये।।१३।।

सरस्वतीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

वाग्भवं प्रथमं दद्याद्विश्रान्ते प्रणवं जपेत्।
सरस्वतीमनोर्देवि मन्त्रोऽस्त्युत्कीलनाभिधः ॥१४॥

सरस्वती मन्त्रोत्कीलन—सरस्वती मन्त्र है—ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः। इस मन्त्र के पहले 'ऐं' और अन्त में 'ॐ' लगाकर जप करने से इसका उत्कीलन होता है; जैसे—ऐं ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः ॐ।।१४।।

अन्नपूर्णामन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

विश्वमादौ जपेद् देवि वनान्ते मदनं पठेत्।
अन्नपूर्णामनोरेष स्यादुत्कीलनको मनुः ॥१५॥

अन्नपूर्णा मन्त्रोद्धार—मन्त्र है—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति महेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा। इस मन्त्र के पहले 'नमः' और अन्त में 'क्लीं' लगाकर जप करने से उत्कीलन होता है।।१५।।

महालक्ष्मीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

रमामादौ मनोर्दद्यात् पद्मत्रयमथाञ्चले।
महालक्ष्मीमनोर्देवि मन्त्रोऽस्त्युत्कीलनाभिधः ॥१६॥

महालक्ष्मी मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः महालक्ष्मि प्रसीद प्रसीद श्रीं ठः ठः ठः स्वाहा। इस महालक्ष्मी मन्त्र के पहले 'श्रीं' और अन्त में 'स्वाहा' के बाद 'ठः ठः ठः' लगाकर जप करने से इसका उत्कीलन होता है।।१६।।

शारिकामन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

सिन्धुरं सञ्जपेदादौ मायामन्ते महेश्वरि।
शारिकामन्त्रराजस्य स्यादुत्कीलनको मनुः ॥१७॥

शारिका मन्त्रोत्कीलन—शारिकामन्त्र है—ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं शां शारिकायै नमः। इस मन्त्र के पहले 'फ्रां' और अन्त में नमः के बाद 'ह्रीं' लगाकर जप करने से इसका उत्कीलन होता है।।१७।।

शारदामन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

वनमादौ च नामाग्रे तारं दत्त्वा जपेच्छिवे।
शारदामन्त्रराजस्य मन्त्रोऽस्त्युत्कीलनाभिधः ॥१८॥

शारदा मन्त्रोत्कीलन—शारदामन्त्र है—ॐ ह्रीं क्लीं सः नमो भगवत्यै शारदायै ह्रीं स्वाहा। इसके पहले 'स्वाहा' और शारदायै के पहले 'ॐ' लगाकर जप करने से इसका उत्कीलन होता है।।१८।।

इन्द्राक्षीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

शक्तिबीजं पठेदादौ ठद्वयान्ते च मन्मथम्।
इन्द्राक्षीमन्त्रराजस्य स्यादुत्कीलनको मनुः ॥१९॥

इन्द्राक्षी मन्त्रोद्धार—इन्द्राक्षी मन्त्र है—ॐ श्रीं ह्रीं ऐं सौः क्लीं इन्द्राक्षि वज्रहस्ते फट् स्वाहा। इसके पहले 'सौः' और अन्त में 'क्लीं' लगाकर जप करने से इसका उत्कीलन होता है।।१९।।

बगलामुखीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

मृद्बीजं च मनोरादौ वनान्ते प्रणवं जपेत्।
मन्त्रोऽयं बगलामुख्या मन्त्रोत्कीलनसिद्धिदः ॥२०॥

बगला मन्त्रोद्धार—बगलामन्त्र है—ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय ह्लीं ॐ स्वाहा। इसके पहले 'ह्लीं' और अन्त में स्वाहा के बाद 'ॐ' लगाकर जप करने से उत्कीलन होता है।।२०।।

महातुरीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

त्रिः पठेदश्मरीप्रान्ते प्रणवं साधकोत्तमः।
तुरीमन्त्रस्य मन्त्रोऽयमुत्कीलनफलप्रदः ॥२१॥

महातुरी मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ त्रुं त्रौं त्रों महातुर्यै नमः। इस मन्त्र के अन्त में 'नमः' के बाद तीन ॐ अर्थात् 'ॐ ॐ ॐ' लगाकर जप करने से इसका उत्कीलन होता है।।२१।।

महाराज्ञीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

वह्निमादौ तथा चान्ते तारं दत्त्वा महेश्वरि।
जपेन्मन्त्रं महाराज्ञी मनूत्कीलनसिद्धये ॥२२॥

महाराज्ञी मन्त्रोत्कीलन—दक्षिण काली का महाराज्ञी मन्त्र है—ॐ ह्रीं श्रीं रां क्लीं सौः भगवत्यै राज्यै स्वाहा। इस मन्त्र के पहले 'रां' और अन्त में 'ॐ' लगाकर जप करने से उत्कीलन होता है।।२।।

ज्वालामुखीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

रमामादौ जपेद् देवि मन्त्रान्ते सकलां जपेत्।
ज्वालामुखीमनोरेष मन्त्रोऽस्त्युत्कीलनक्षमः ॥२३॥

ज्वालामुखी मन्त्रोद्धार—मन्त्र है—ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय

भक्षय हूं फट् स्वाहा। इस मन्त्र के पहले 'श्रीं' और अन्त में 'ह्रीं' लगाकर जप करने से इसका उत्कीलन होता है।।२३।।

भीड़ामन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

वेदीबीजं पठेदादौ नामान्ते प्रणवं जपेत्।
भीडामन्त्रस्य मन्त्रोऽयमुत्कीलनफलप्रदः ॥२४॥

भीड़ा मन्त्रोत्कीलन—भीड़ा भगवती का मन्त्र है—ॐ ह्रीं श्रीं ह्स्त्रैं ऐं क्लीं सौः भीड़ा भगवति हंसरूपिणि स्वाहा। इस मन्त्र के पहले 'ह्स्त्रैं' और भीड़ा भगवति नाम के बाद 'ॐ' लगाकर जप करने से इसका उत्कीलन होता है। उत्कीलन मन्त्र ऐसा होगा—ह्स्त्रैं ॐ श्रीं ह्स्त्रैं ऐं क्लीं सौः भीड़ा भगवति ॐ हंसरूपिणि स्वाहा।।२४।।

कालरात्रिमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

विश्वान्ते वाग्भवं दद्यात् काममादौ जपेत् प्रिये।
कालरात्रिमनोर्देवि स्यादुत्कीलनको मनुः ॥२५॥

कालरात्रि मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं कालरात्रि सर्वं वश्यं कुरु कुरु वीर्यं देहि देहि गणेश्वर्यै नमः। इस मन्त्र के पहले 'क्लीं' और अन्त में नमः के बाद 'ऐं' लगाकर जप करने से इसका उत्कीलन होता है।।२५।।

भवानीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

तारत्रयं पठेदन्ते मा–त्रयं प्रथमं जपेत्।
भवानीमन्त्रराजस्य मन्त्रोऽयं कीलदोषनुत् ॥२६॥

भवानी मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ श्रीं श्रीं ॐ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं हूं फट्। इस मन्त्र के पहले 'श्रीं श्रीं श्रीं' और अन्त में फट् के बाद 'ॐ ॐ ॐ' लगाकर जप करने से इसका उत्कीलन होता है।।२६।।

वज्रयोगिनीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

परामन्ते जपेद् देवि वज्रयोगेश्वरीमनोः।
उत्कीलनाख्यो मन्त्रोऽयं मन्त्रसिद्धिफलप्रदः ॥२७॥

वज्रयोगिनी मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ ह्रीं वज्रयोगिन्यै स्वाहा। इसके अन्त में स्वाहा के बाद 'ह्रीं' लगाकर जप करने से इसका उत्कीलन होता है। उत्कीलित होने के पश्चात् ही यह मन्त्र सिद्धिप्रद और फलप्रदायक होता है।।२७।।

धूम्रवाराहीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

मठमादौ जपेद् देवि ठद्वयान्ते हरं तथा।
वाराहीमन्त्रराजस्य मन्त्रोऽस्त्युत्कीलनाभिधः ॥२८॥

वाराही मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ऐं ग्लौं लं ऐं नमो भगवति वार्तालि वाराहि देवते वराहमुखि ऐं ग्लौं ठः ठः फट् स्वाहा। इस मन्त्र के पहले 'ग्लौं' और ठः ठः के बाद फट् लगाकर जप करने से इसका उत्कीलन होता है।।२८।।

सिद्धलक्ष्मीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

हरितं प्रथमं देवि विश्वान्ते वाग्भवं जपेत्।
सिद्धलक्ष्मीर्मनोर्देवि मन्त्रोऽस्त्युत्कीलनाभिधः ॥२९॥

सिद्धलक्ष्मी मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ श्रीं श्रीं ह्रीं ह्सौः ऐं क्लीं सौः सिद्धलक्ष्म्यै नमः। इस मन्त्र के पहले 'ह्सौ' और नमः के बाद 'ऐं' लगाकर जप करने से इसका उत्कीलन होता है।।२९।।

कुलवागीश्वरीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

वेश्यामादौ वनान्ते च डिम्बबीजं जपेच्छिवे।
उत्कीलनाख्यो मन्त्रोऽयं कुलवागीश्वरमनोः ॥३०॥

कुलवागीश्वरी मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ क्लीं ह्रां श्रीं हूं झं झषहस्ते कुलवागीश्वरि ऐं ठः झं ठः स्त्रीं ठः स्वाहा। इस मन्त्र के पहले 'हस्त्रैं' और स्वाहा के बाद 'ह्रां' लगाकर जप करने से इसका उत्कीलन होता है।।३०।।

पद्मावतीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

वीचिबीजं जपेदादौ ठद्वयान्ते च तारकम्।
पद्मावतीमनोर्देवि मन्त्रोऽस्त्युत्कीलनाभिधः ॥३१॥

पद्मावती मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं पद्मावति मम वरं देहि देहि फट् स्वाहा। इस मन्त्र के पहले 'ब्लूं' और अन्त में 'त्रों' लगाकर जप करने से इसका उत्कीलन होता है।।३१।।

कुब्जिकामन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

वागुरां सञ्जपेदादौ वनान्ते सकलां जपेत्।
कुब्जिकामन्त्रराजस्य मन्त्रोऽयं कीलदोषहृत् ॥३२॥

कुब्जिका मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ श्रीं प्रीं कुब्जिके देवि ह्रीं ठः स्वाहा। इस मन्त्र के पहले 'श्रीं' और अन्त में 'ह्रीं' लगाकर जप करने से इसका उत्कीलन होता है।।३२।।

गौरीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

मठमादौ मनोर्देवि प्रणवं ठद्वयाञ्चले।
मन्त्रं जपेदयं मन्त्रो गौरीमन्त्रस्य कीलहृत्॥३३॥

गौरी मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ श्रीं ह्रीं ग्लौं गं गौरि गीं स्वाहा। इस मन्त्र के पहले 'ग्लौं' और अन्त में 'ॐ' लगाकर जप करने से इसका उत्कीलन होता है।।३३।।

खेचरीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

शक्तिमन्ते जपेद्विश्वं प्रथमं पंरमेश्वरि।
खेचरीमन्त्रराजस्य स्यादुत्कीलनको मनुः॥३४॥

खेचरी मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—मलह्रीं सौः खेचर्यै नमः। इस मन्त्र के पहले 'नमः' और अन्त में 'सौः' लगाकर जप करने से इसका उत्कीलन होता है।।३४।।

नीलसरस्वतीमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

कूर्चमादौ मनोरन्ते व्योषं दत्त्वा जपेच्छिवे।
मनोर्नीलसरस्वत्याः स्यादुत्कीलनको मनुः॥३५॥

नीलसरस्वती मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ ह्रां ऐं हूं नीलसरस्वति फट् स्वाहा। इस मन्त्र के पहले 'हूं फट्' और अन्त में 'ह्रां' लगाकर जप करने से इसका उत्कीलन होता है।।३५।।

पराशक्तिमन्त्रोत्कीलनमन्त्रः

शक्तिमादौ मनोर्देवि वासनामञ्चले जपेत्।
पराशक्तेर्मनोर्देवि कीलदोषापहो मनुः॥३६॥

पराशक्ति मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं सौः ह्सौः पराशक्त्यै ऐं स्वाहा। इस मन्त्र के पहले 'सौः' और अन्त में 'ऐं' लगाकर जप करने से इसका उत्कीलन होता है।।३६।।

निष्कीलितशैवमन्त्राणां पुरश्चरणेनैव बीजमन्त्राणां त्रिरावृत्त्या वा सिद्धत्वम्

श्रीभैरव उवाच

अधुना शैवमन्त्राणां केचिद् देवि मनूत्तमाः।
निष्कीलिता मया ख्याताः केचित् पार्वति कीलिताः॥३७॥

निष्कीलित और कीलित शैव मन्त्र—श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! कतिपय शैव

मन्त्र कीलित नहीं हैं और कतिपय कीलित हैं, निष्कीलित मन्त्र पुरश्चरण से सिद्ध होते हैं। कीलित मन्त्रों को आदि बीज की तीन आवृत्ति जप करने से उत्कीलित करना पड़ता है।।३७।।

निष्कीलितशैवमन्त्राः

महेश्वरः शिवो रुद्रो महादेवः करालकः।
विकरालः शिवो शर्वो मृडः पशुपतिस्तथा ॥३८॥
पिनाकी गिरिशो भीमः कुमारः प्रमथाधिपः।
क्रोधेश ईश ईशानि कपाली क्रूरभैरवः ॥३९॥
संहार ईश्वरो भर्गो रुरुः कालाग्निभैरवः।
एते मन्त्रा महादेवि कीलदोषविवर्जिताः ॥४०॥
पुरश्चरणमात्रेण फलं दास्यन्ति सत्वरम्।
अथवा देवदेवेशि वक्ष्ये तत्त्वं परात् परम् ॥४१॥

निष्कीलित शैव मन्त्र—जिन देवताओं के मन्त्र कीलित नहीं है, वे है— महेश्वर, शिव, रुद्र, महादेव, कराल, विकराल, शिव, रुद्र, शर्व, मृड, पशुपति, पिनाकी, गिरीश, भीम, कुमार, प्रमथाधिप, क्रोधेश, ईश, ईशान, कपाली, क्रूर भैरव, संहार, ईश्वर, भर्ग, रुरु और कालाग्नि भैरव। इन मन्त्रों का वर्णन पहले किया जा चुका है। इनके हे देवताओं के पूर्व वर्णित मन्त्र पुरश्चरणमात्र से शीघ्र सिद्ध हो जाते हैं। देवदेवेशि! अब मैं परात्पर तत्त्व का वर्णन करता हूँ।।३८-४१।।

कीलितशैवमन्त्राः

एतेषां शैवमन्त्राणां श्रुत्वा गोप्यतमं कुरु।
मन्त्रादिबीजं देवेशि प्रतिमन्त्रं जपेत् सुधीः ॥४२॥
त्रिवारं साधको येन भवेदुत्कीलनं मनोः।
मृत्युञ्जयोऽमृतेशानो बटुको नीलकण्ठकः ॥४३॥
सद्योजातो गणेशश्च देवेशोऽघोरभैरवः।
महाकालो महादेवि कामेश्वर इति प्रिये ॥४४॥
एते मन्त्रा मया देवि कीलिता मन्त्रसिद्धये।
एतेषां शृणु मन्त्राणां देवेश्युत्कीलनं परम् ॥४५॥
येनोच्चारणमात्रेण मन्त्रसिद्धिः प्रजायते।

कीलित शैव मन्त्र—निम्नलिखित मन्त्रों को सुनने के पश्चात् अत्यन्त गुप्त रखना

चाहिये। इन मन्त्रों के आदि बीज का प्रति मन्त्र तीन बार जप करने से इनका उत्कीलन होता है। इन मन्त्रों में मृत्युञ्जय, अमृतेश, वटुक, नीलकण्ठ, सद्योजात, गणेश, देवेश, अघोर भैरव, महाकाल कामेश्वरमन्त्र आते हैं।

ये सभी शैव मन्त्र कीलित हैं। हे देवि! इनके उत्कीलन की विधि को सुनो। इनके उच्चारणमात्र से ही मन्त्रसिद्धि हो जाती है।।४२-४५।।

मृत्युञ्जयमन्त्रोत्कीलनम्

हृज्जबीजं जपेदादौ अन्ते शक्तिं जपेत् प्रिये ।।४६।।
श्रीमृत्युञ्जयमन्त्रस्य मन्त्रोऽस्त्युत्कीलनाभिधः ।

मृत्युञ्जय मन्त्रोत्कीलन—मृत्युञ्जय मन्त्र है—ॐ जूं सः मां पालय पालय सः जूं ॐ। इसके पहले जूं और अन्त में सौः लगाकर जप करने से यह उत्कीलित होता है।।४६।

अमृतेश्वरमन्त्रोत्कीलनम्

तारमन्ते जपेदादौ शक्तिं मन्त्रस्य पार्वति ।।४७।।
अमृतेश्वरमन्त्रस्य स्यादयं कीलदोषहृत् ।

अमृतेश्वर मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ जूं फट् अमृतेशाय नमः। इस मन्त्र के पहले 'सौः' और अन्त में 'ॐ' लगाकर जप करने से इसके कील दोष का नाश होता है।।४७।।

वटुकभैरवमन्त्रोत्कीलनम्

परमादौ जपेदन्ते प्रणवं साधकोत्तमः ।।४८।।
मन्त्रो वटुकमन्त्रस्य स्यादयं कीलनाशकः ।

वटुक मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ ह्रीं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं। इस मन्त्र के पहले 'ह्रीं' और अन्त में 'ॐ' लगाकर जप करने से यह उत्कीलित होता है।।४८।।

नीलकण्ठमन्त्रोत्कीलनम्

हरितं प्रथमं दत्त्वा मन्त्रान्ते च शिवं जपेत् ।।४९।।
दुर्गाशिवस्य मन्त्रोऽयं नीलकण्ठस्य कीलनुत् ।

नीलकण्ठ मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ ह्सौः ह्रां नीलकण्ठाय नमः। इस मन्त्र के पहले 'ह्सौः' और अन्त में 'गं' लगाकर जप करने से यह कील दोष से मुक्त हो जाता है।।४९।।

सद्योजातमन्त्रोत्कीलनम्

शिवमादौ जपेदन्ते तारं पार्वति साधकः ॥५०॥
उग्रताराशिवस्यायं मन्त्रो मन्त्रस्य कीलहृत् ।

सद्योजात मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ ह्रां गं सद्योजाताय नमः। इस मन्त्र के पहले 'गं' और अन्त में 'ॐ' लगाकर जप करने से यह कील दोष से विमुक्त होता है।।५०।।

महागणपतिमन्त्रोत्कीलनम्

मायामन्ते जपेद् देवि शिवमादौ च साधकः ॥५१॥
महागणपतेर्मन्त्रो मनोरुत्कीलनाभिधः ।

महागणपति मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ह्रीं गं ह्रीं गणपतये नमः। इसके पहले 'गं' और अन्त में 'ह्रीं' लगाकर जप करने से यह कील दोष से मुक्त होता है।।५१।।

अघोरभैरवमन्त्रोत्कीलनम्

विश्वमादौ मनोर्देवि मात्रादिं चाञ्चले जपेत् ॥५२॥
अघोरभैरवस्यायं मनोरुत्कीलनो मनुः ।

अघोर मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः।। इस मन्त्र के पहले 'नमः' और अन्त में 'अं' लगाकर जप करने से यह कील दोष से मुक्त होता है।।५२।।

महाकालमन्त्रस्य निष्कीलनत्वम्

एषामपि महाकालो निष्कीलित इति स्मृतः ॥५३॥
अस्य मन्त्रप्रसादेन सर्वे निष्कीलिताः शिवे ।

महाकाल मन्त्रोत्कीलन—महाकाल का मन्त्र भी कीलन दोष से रहित कहा गया है। हे शिवे! इस मन्त्र के प्रसाद से समस्त शैव मन्त्र निष्कीलित हो जाते हैं।।५३।।

कामेश्वरमन्त्रोत्कीलनम्

कामेशकूटत्रयतः प्रथमार्णत्रयं जपेत् ॥५४॥
श्रीवद्याशिवमन्त्रस्य स्यादुत्कीलनको मनुः ।

कामेश्वर मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ऐं क्लीं सौः ॐ श्रीं ह्रीं कामेश्वर ह्रीं श्रीं ॐ सौः क्लीं ऐं। कामेश मन्त्र के तीन कूटों में से प्रत्येक कूट के साथ 'ऐं क्लीं सौः' लगाकर जप करने से श्रीविद्या के शिव कामेश्वर के मन्त्र का उत्कीलन हो जाता है।।५४।।

वैष्णवमन्त्रोत्कीलनकथनम्

अथाहं वैष्णवानां ते मन्त्राणां वच्मि पार्वति ।।५५।।
उत्कीलनमनून् येषां जपमात्राच्छिवं भजेत् ।

वैष्णव मन्त्रों का उत्कीलन—श्री भैरव ने कहा कि हे पार्वति! अब मैं वैष्णव मन्त्रों के उत्कीलन मन्त्रों का वर्णन करता हूँ, जिसके जपमात्र से शिवत्व प्राप्त हो जाता है।।५५।।

लक्ष्मीनारायणमन्त्रोत्कीलनम्

हरितं प्रथमं दद्यादन्ते प्रणवमीश्वरि ।।५६।।
लक्ष्मीनारायणस्यायं स्यादुत्कीलनको मनुः ।

लक्ष्मीनारायण मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ ह्रीं ह्सौ: ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नम:। इस मन्त्र के पहले 'ह्सौ:' और अन्त में 'ॐ' लगाकर जप करने से यह कीलदोष से विमुक्त होता है।।५६।।

राधाकृष्णमन्त्रोत्कीलनम्

शक्तिमादौ मनोरन्ते वाग्भवं साधको जपेत् ।।५७।।
श्रीराधकृष्णमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं कीलदोषहृत् ।

राधाकृष्ण मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ श्रीं ऐं क्लीं सौ: रां राधाकृष्णाय हूं फट् स्वाहा। इसके पहले 'सौ:' और अन्त में 'ऐं' लगाकर जप करने से यह कील दोष से मुक्त होता है।।५७।।

विष्णुमन्त्रोत्कीलनम्

परायुगं जपेदन्ते विश्वमादौ जपेन्मनोः ।।५८।।
विष्णुमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं स्यादुत्कीलनकाभिधः ।

विष्णु मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ विष्णवे नम:। इस मन्त्र के पहले 'नम:' और अन्त में 'ह्रीं ह्रीं' लगाकर जप करने से यह कीलदोष से मुक्त होता है।।५८।।

लक्ष्मीनृसिंहमन्त्रोत्कीलनम्

स्मरमादौ जपेदन्ते नृबीजं साधकोत्तमः ।।५९।।
लक्ष्मीनृसिंहमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं कीलदोषहृत् ।

लक्ष्मीनृसिंह मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौ: क्ष्रौं नरसिंहदेवाय ऐं फट्। इस मन्त्र के पहले 'क्ली' और अन्त में 'क्ष्रौं' लगाकर साधकोत्तम जब जप करता है तब इसके कील दोष का परिहार होता है।।५९।।

लक्ष्मीवराहमन्त्रोत्कीलनम्

तारमन्ते रमामादौ जपेत् साधकसत्तमः ॥६०॥
लक्ष्मीवराहमन्त्रस्य भवेदुत्कीलनं परम्।

लक्ष्मीवराह मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं नमः लक्ष्मीवराहाय नमः। इस मन्त्र के पहले 'श्रीं' और अन्त में 'ॐ' लगाकर जप करने से इसका श्रेष्ठ उत्कीलन होता है।।६०।।

भार्गवराममन्त्रोत्कीलनम्

कूर्चबीजं जपेदादौ मन्त्रान्ते पद्मयुग्मकम् ॥६१॥
मनोर्भार्गवरामस्य भवेदुत्कीलनं शिवे।

भार्गव परशुराम मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं जं श्रीं जामदग्न्याय स्वाहा। इस मन्त्र के आदि में 'हूं' और अन्त में 'ठः ठः' लगाकर जप करने करने से यह कील दोष से रहित होता है।।६१।।

सीताराममन्त्रोत्कीलनम्

परामन्ते रमामादौ जपेत् पार्वति सिद्धये ॥६२॥
श्रीसीतारामभद्रस्य मनोर्मन्त्रोऽस्ति कीलहृत्।

सीताराम मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ ह्रीं श्रीं श्रीसीताराम प्रसीद प्रसीद स्वाहा। इस मन्त्र के आदि में 'श्रीं' और अन्त में 'ह्रीं' लगाकर जप करने से यह कील दोष से मुक्त होता है।।६२।।

जनार्दनमन्त्रोत्कीलनम्

मामन्ते प्रथमं मां च जपेत् पार्वति साधकः ॥६३॥
जनार्दनमनोर्मन्त्रः स्यादुत्कीलनकाभिधः।

जनार्दन मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं जनार्दनाय नमः। इस मन्त्र के आदि और अन्त में 'श्रीं' लगाकर जप करने से उत्कीलन होता है।।६३।।

विश्वक्सेनमन्त्रोत्कीलनम्

लक्ष्मीमादौ परामन्ते सकृदुच्चारयेत् सुधीः ॥६४॥
विश्वक्सेनमनोर्देवि स्यादुत्कीलनको मनुः।

विश्वक्सेन मन्त्रोद्धार—मन्त्र है—ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीविश्वक्सेनाय हूं ठः ठः ठः स्वाहा। इस मन्त्र के पहले 'श्रीं' और अन्त में 'ह्रीं' लगाकर जप करने से यह कील दोष से मुक्त होता है।।६४।।

वासुदेवमन्त्रोत्कीलनम्

काममादौ च मन्त्रान्ते तारं देवि जपेत् सुधीः ॥६५॥
वासुदेवमनोर्मन्त्रः स्यादुत्कीलनकाभिधः ।

वासुदेव मन्त्रोत्कीलन—मन्त्र है—ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं लक्ष्मीवासुदेवाय नमः। इस मन्त्र के पहले 'क्लीं' और अन्त में 'ॐ' लगाकर जप करने से यह कील दोष से मुक्त होता है।।६५।।

पटलोपसंहारः

इति तत्त्वं महादेवि मन्त्राणां परमार्थदम् ।
तव स्नेहेन कथितं नाख्येयं ब्रह्मवादिभिः ॥६६॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये मन्त्रोत्कीलनविधिनिरूपणं नाम पञ्चमः पटलः॥५॥

मन्त्रों के परमार्थप्रदायक तत्त्व का विवेचन हे महादेवि! पूर्ण हुआ। तुम्हारे स्नेह के कारण मैंने इसका वर्णन किया। इसे ब्रह्मवादियों को भी नहीं बतलाना चाहिये।।६६।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में मन्त्रोत्कीलनविधि नामक पञ्चम पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ षष्ठः पटलः

मन्त्रसञ्जीवनविधिः

श्रीभैरव उवाच

अथ ते वर्णयिष्यामि सञ्जीवनमनून् प्रिये।
एषामुच्चारमात्रेण मन्त्रः सिद्धिप्रदो भवेत् ॥१॥

भैरव ने कहा कि हे प्रिये! अब मैं सञ्जीवन मन्त्रों का वर्णन तुझसे करता हूँ। इनके उच्चारणमात्र से सभी मन्त्र सिद्धिप्रदायक हो जाते हैं।।१।।

बालामन्त्रसञ्जीवनम्

बालाया देवि त्र्यक्षर्याः शक्तिमादौ पठेत् सुधीः।
सञ्जीवनाख्यो मन्त्रोऽयं दिव्यो मन्त्रस्य सिद्धये ॥२॥

बाला मन्त्र-सञ्जीवन—बाला के त्र्यक्षरी मन्त्र 'ऐं क्लीं सौः' को 'सौः ऐं क्लीं' करके जप करने से सञ्जीवन होता है। मन्त्रसिद्धि के लिये यह दिव्य मन्त्र है।।२।।

त्रिपुरभैरवीमन्त्रसञ्जीवनम्

परात्रयं पठेदादौ जीवनं भैरवीमनोः।
कूटत्रयाणां देवेशि त्रिकूटाया जपेत् सुधीः ॥३॥

त्रिपुरसुन्दरी मन्त्र सञ्जीवन—त्रिपुरसुन्दरी के पञ्चदशी मन्त्र के तीनों कूटों के पहले 'ह्रीं' लगाकर जप करने से इसका सञ्जीवन होता है। मन्त्र का रूप होगा—ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ह्रीं हसकहलह्रीं ह्रीं सकलह्रीं। यह अष्टादशाक्षरी हो जाता है।।३।।

त्रिकूटा-(दक्षिणकाली)-मन्त्रसञ्जीवनम्

द्वितीयार्णत्रयं देवि भवेत् सञ्जीवनं मनोः।
सिद्धविद्या महाश्यामा सर्वदोषविवर्जिता ॥४॥
जप्या सिध्यै सदा सद्भिर्ब्रह्मविद्भिर्मुमुक्षुभिः।
भद्रिकायुगलं देवि दद्यादन्ते मनोः शिवे ॥५॥

दक्षिणकाली मन्त्रसञ्जीवन—काली मन्त्र का 'क्रीं क्रीं क्रीं' के दो बार जप से संजीवन होता है और मन्त्र सर्व दोषविवर्जित होता है। ब्रह्मवित् मुमुक्षुओं को सिद्धि के लिये मन्त्र के अन्त में 'भैं भैं' लगाकर जप करना चाहिये।।४-५।।

भद्रकालीमन्त्रसञ्जीवनम्

भद्रकालीमनोरेष स्यात् सञ्जीवनको मनुः।
तारं परां पठेदन्ते जपादौ साधकेश्वरि ॥६॥

भद्रकाली मन्त्रसञ्जीवन—भद्रकाली मन्त्र को सञ्जीवित करने के लिये मन्त्र के आदि और अन्त में 'ॐ ह्रीं' लगाकर जप करना चाहिये।।६।।

मातङ्गीमन्त्रसञ्जीवनम्

राजमातङ्गिनीदेव्या भवेत् सञ्जीवनं मनोः।
वारत्रयं पठेदादौ मूलमन्त्रस्य वै पराम् ॥७॥

राजमातङ्गिनी मन्त्र-सञ्जीवन—राजमातङ्गिनी मन्त्र के सञ्जीवन के लिये मन्त्र के पहले 'ह्रीं ह्रीं ह्रीं' कहना चाहिये।।७।।

भुवनेश्वरीमन्त्रसञ्जीवनम्

मन्त्रस्य भुवनेश्वर्या भवेत् सञ्जीवनं परम्।
कालीं तारं पठेदन्ते मन्त्रस्यास्य महेश्वरि ॥८॥

भुवनेश्वरी मन्त्र-सञ्जीवन—भुवनेश्वरी मन्त्र-सञ्जीवन के लिये भुवनेश्वरी मन्त्र के अन्त में क्रीं क्रीं क्रीं कहना चाहिये।।८।।

उग्रतारामन्त्रसञ्जजीवनम्

उग्रतारामनोरेष स्यात् सञ्जीवनको मनुः।
वासनां मूलमन्त्रस्य जपेदन्ते महेश्वरि ॥९॥

उग्रतारा मन्त्र-सञ्जीवन—उग्रतारा मन्त्र-सञ्जीवन के लिये मन्त्र के अन्त में ऐं का जप करना चाहिये।।९।।

छिन्नमस्तामन्त्रसञ्जीवनम्

छिन्नमस्तामनोरेष स्यात् सञ्जीवनको मनुः।
परमादौ जपेद् देवि काममन्ते तथैव च ॥१०॥

छिन्नमस्ता मन्त्र-सञ्जीवन—छिन्नमस्ता मन्त्र के सञ्जीवन के लिये मन्त्र के पहले ह्रीं और अन्त में क्लीं लगाकर जप होता है।।१०।।

सुमुखीमन्त्रसञ्जीवनम्

सुमुखीमन्त्रराजस्य भवेत् सञ्जीवनं प्रिये।
तारद्वयं जपेन्मन्त्री मन्त्रान्ते मान्त्रिकेश्वरि ॥११॥

सुमुखी मन्त्र-सञ्जीवन—सुमुखी मन्त्र के अन्त में दो बार ॐ के जप से सञ्जीवन होता है।।११।।

सरस्वतीमन्त्रसञ्जीवनम्

सरस्वतीमनोरेष स्यात् सञ्जीवनको मनुः।
विश्वमन्ते जपेदादौ ठद्वयं कालिकेश्वरि ॥१२॥

सरस्वती मन्त्र-सञ्जीवन—सरस्वती मन्त्र-सञ्जीवन के लिये मन्त्र के पहले स्वाहा और अन्त में नमः लगाकर जप करना चाहिये।।१२।।

अन्नपूर्णामन्त्रसञ्जीवनम्

अन्नपूर्णामनोर्येन भवेत् सञ्जीवनं परम्।
वाणीमन्ते जपेदादौ कामराजं च साधकः ॥१३॥

अन्नपूर्णा मन्त्र-सञ्जीवन—इस मन्त्र के सञ्जीवन के लिये मन्त्र के पहले क्लीं और अन्त में ऐं लगाकर जप करना चाहिये।।१३।।

महालक्ष्मीमन्त्रसञ्जीवनम्

महालक्ष्मीमनोर्देवि भवेत् सञ्जीवनं परम्।
कूर्चमादौ परामन्ते जपेत् साधकसत्तमः ॥१४॥

महालक्ष्मी मन्त्र-सञ्जीवन—महालक्ष्मी मन्त्र-सञ्जीवन के लिये मन्त्र के पहले 'हूं' और अन्त में 'ह्रीं' लगाकर जप करना होता है।।१४।।

शारिकामन्त्रसञ्जीवनम्

शारिकामूलमन्त्रस्य भवेत् सञ्जीवनं प्रिये।
कामराजं जपेदादौ मायाबीजं तथाञ्चले ॥१५॥

शारिका मन्त्र-सञ्जीवन—शारिका मन्त्र के पहले 'क्लीं' और अन्त में 'ह्रीं' लगाकर जप से इसका सञ्जीवन होता है।।१५।।

शारदामन्त्रसञ्जीवनम्

शारदामन्त्रराजस्य सञ्जीवनमनुः स्मृतः।
मन्मथं शक्तिबीजं च जपेदादौ च साधकः ॥१६॥

शारदा मन्त्र-सञ्जीवन—शारदा मन्त्र के सञ्जीवन के लिये मन्त्र के पहले 'क्लीं सौः' का जप करना चाहिये।।१६।।

इन्द्राक्षीमन्त्रसञ्जीवनम्

इन्द्राक्षीमूलमन्त्रस्य सञ्जीवनमनुः परः।
मृत्स्नाबीजं जपेद् देवि प्रणवं च वनाञ्चले ॥१७॥

इन्द्राक्षी मन्त्र-सञ्जीवन—इन्द्राक्षी मन्त्र के पहले 'ह्लीं' और अन्त में 'ॐ' लगाकर जप से संजीवन होता है।।१७।।

बगलामुखीमन्त्रसञ्जीवनम्

बगलामन्त्रराजस्य भवेत् सञ्जीवनं परम्।
तारकं मूलमन्त्रान्ते त्रिरुच्चार्य जपेत् प्रिये ॥१८॥

बगला मन्त्र-सञ्जीवन—बगला मन्त्र के अन्त में तीन बार 'त्रों' के जप से इस मन्त्र का संजीवन होता है।।१८।।

महातुरीमन्त्रसञ्जीवनम्

तुर्यामन्त्रस्य निर्णीतः सञ्जीवनमनुः परः।
वह्निबीजं जपेदन्ते शक्तिमादौ महेश्वरि ॥१९॥

महातुरी मन्त्र-सञ्जीवन—महातुरी मन्त्र को सञ्जीवित करने के लिये मन्त्र के पहले सौः और अन्त में रां लगाकर जप करना चाहिये।।१९।।

महाराज्ञीमन्त्रसञ्जीवनम्

राज्ञीमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं सञ्जीवनकरः स्मृतः।
कूर्चमादौ च तुरगं जपेदन्ते महेश्वरि ॥२०॥

महाराज्ञी मन्त्र-सञ्जीवन—महाराज्ञी मन्त्र के पहले हूं और अन्त में फट् लगाकर जप करने से इस मन्त्र का संजीवन होता है।।२०।।

ज्वालामुखीमन्त्रसञ्जीवनम्

ज्वालामुखीमनोरेष मन्त्रः सञ्जीवनाभिधः।
वाग्भवं प्रणवादौ च ठद्वयान्ते जपेत् पराम् ॥२१॥

ज्वालामुखी मन्त्र-सञ्जीवन—ज्वालामुखी मन्त्र के पहले 'ऐं ॐ' और अन्त में 'स्वाहा' लगाकर जप करने से संजीवन होता है।।२१।।

भीड़ामन्त्रसञ्जीवनम्

एष सञ्जीवनो मन्त्रो भीडाभगवतीमनोः।
तारमन्ते रमामादौ जपेत् साधकसत्तमः ॥२२॥

भीड़ा भगवती मन्त्र-सञ्जीवन—भीड़ा भगवती के मन्त्र के पहले श्रीं और अन्त में 'ॐ' लगाकर जप करने से संजीवन होता है।।२२।।

कालरात्रिमन्त्रसञ्जीवनम्

गणेश्वरीकालरात्र्याः स्यात् सञ्जीवनको मनुः।
कूर्चमादौ हरान्ते मां जपेत् साधकसत्तमः ॥२३॥

कालरात्री मन्त्र-सञ्जीवन—कालरात्रि के मन्त्र के पहले 'हूं' और 'फट् श्रीं' अन्त में लगा कर जप से संजीवन होता है।।२३।।

भवानीमन्त्रसञ्जीवनम्

भवानीमूलमन्त्रस्य भवेत् सञ्जीवनं परम्।
मायामुच्चार्य देवेशि त्रिरादौ त्रिस्तथाञ्चले ॥२४॥

भवानी मन्त्र-सञ्जीवन—भवानी मन्त्र के सञ्जीवन के लिये मन्त्र के पहले और बाद में तीन-तीन बार 'ह्रीं' का उच्चारण करके जप करना चाहिये।।२४।।

वज्रयोगिनीमन्त्रसञ्जीवनम्

सञ्जीवनमनुर्देवि स्याद्वज्रयोगिनीमनोः।
मठमन्ते मठं चादौ जपेत् पार्वति कौलिकः ॥२५॥

वज्रयोगिनी मन्त्र-सञ्जीवन—वज्रयोगिनी मन्त्र के पहले और बाद में 'ग्लौं' का जप करना चाहिये। इससे मन्त्र का सञ्जीवन होता है।।२५।।

धूम्रवाराहीमन्त्रसञ्जीवनम्

मन्त्रोऽयं धूम्रवाराह्या मनोः सञ्जीवनाभिधः।
हरितं मूलमन्त्रान्ते जपेदादौ च मन्मथम् ॥२६॥

धूम्रवाराही मन्त्र-सञ्जीवन—धूम्रवाराही मन्त्र के पहले 'क्लीं' और बाद में 'ह्सौं' लगाकर जप करने से इसका सञ्जीवन होता है।।२६।।

सिद्धलक्ष्मीमन्त्रसञ्जीवनम्

सिद्धलक्ष्मीमनोरेष स्यात् सञ्जीवनको मनुः।
काङ्क्षामादौ रमामन्ते जपेत् साधकसत्तमः ॥२७॥

सिद्धलक्ष्मी मन्त्र-सञ्जीवन—सिद्धलक्ष्मी मन्त्र के पहले 'झं' और बाद में 'श्रीं' लगाकर जप करने से सञ्जीवन होता है।।२७।।

कुलवागीश्वरीमन्त्रसञ्जीवनम्

भवेत् सञ्जीवनं देव कुलवागीश्वरीमनोः ।
काममादौ महादेवि जपेदन्ते रमां शिवे ॥२८॥

कुलवागीश्वरी मन्त्र-सञ्जीवन—कुलवागीश्वरी मन्त्र के पहले 'क्लीं' और बाद में 'श्रीं' लगाकर जप करने से इसका संजीवन होता है।।२८।।

पद्मावतीमन्त्रसञ्जीवनम्

पद्मावतीमनोरेष स्मृतः सञ्जीवनो मनुः ।
वागुरां पङ्कजान्ते च प्रणवादौ परां जपेत् ॥२९॥

पद्मावती मन्त्र-सञ्जीवन—पद्मावती मन्त्र-सञ्जीवन के लिये इसके मन्त्र के पहले 'ॐ ह्रीं' और बाद में 'प्रीं ठः' लगाकर जप करना चाहिये।।२९।।

कुब्जिकामन्त्रसञ्जीवनम्

कुब्जिकामूलमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं जीवनाभिधः ।
वाह्लीकं प्रणवादौ च मूलान्ते तु शिवं जपेत् ॥३०॥

कुब्जिका मन्त्र-सञ्जीवन—कुब्जिका मन्त्र-सञ्जीवन के लिये मन्त्र के पहले 'ॐ ग्लौं' और अन्त में 'गं' लगाकर जप करना चाहिये।।३०।।

गौरीमन्त्रसञ्जीवनम्

गौरीमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं स्यात् सञ्जीवनकाभिधः ।
कूटमन्ते विश्वमादौ जपेत् पार्वति साधकः ॥३१॥

गौरी मन्त्र-सञ्जीवन—गौरी मन्त्र के पहले 'नमः' और अन्त में 'वौषट्' लगाकर जप करने से मन्त्र का संजीवन होता है।।३१।।

खेचरीमन्त्रसञ्जीवनम्

खेचरीमन्त्रराजस्य भवेत् सञ्जीवनं शिवे ।
वाणीमादौ परामन्ते जपेन्मान्त्रिकसत्तमः ॥३२॥

खेचरी मन्त्र-सञ्जीवन—खेचरी मन्त्र के पहले 'ऐं' और अन्त में 'ह्रीं' लगाकर जप करने से सञ्जीवन होता है।।३२।।

नीलसरस्वतीमन्त्रसञ्जीवनम्

भवेत् सञ्जीवनं देवि नीलासरस्वतीमनोः ।
वाग्भवं प्रणवादौ च काममन्ते जपेत् शिवे ॥३३॥

नीलसरस्वती मन्त्र-सञ्जीवन—नीलसरस्वती मन्त्र के पहले 'ॐ ऐं' और अन्त में 'क्लीं' लगाकर जप करने से इसका सञ्जीवन होता है।।३३।।

पराशक्तिमन्त्रसञ्जीवनम्

एष सञ्जवनो मन्त्रः पराशक्तिमनोः स्मृतः।

पराशक्ति मन्त्र-सञ्जीवन—पराशक्ति मन्त्र स्वयं सञ्जीवित है। इसे सञ्जीवन की आवश्यकता नहीं है।

सर्वशैवमन्त्रसञ्जीवनमन्त्रः

अधुना शैवमन्त्राणां निष्कीलानां महेश्वरि ॥३४॥
वक्ष्ये तत्त्वं रहस्यं ते सञ्जीवनकरं परम्।
मूलमन्त्राञ्चले मन्त्री जपेत् तारं पृथक् पृथक् ॥३५॥
सर्वेषां शैवमन्त्राणां भवेत् सञ्जीवनं प्रिये।
तथापि कीलितानां ते सञ्जीवनमनून् ब्रुवे ॥३६॥
येषां साधनमात्रेण मूलविद्याशु सिध्यति।

शैवमन्त्र-सञ्जीवन—भैरव ने कहा कि हे महेश्वरि! अब मैं निष्कीलित शैव मन्त्रों के सञ्जीवन तत्त्व के रहस्य का वर्णन करता हूँ। सभी निष्कीलित शैव मन्त्रों के अन्त में 'ॐ' का जप पृथक्-पृथक् करने से उनका सञ्जीवन होता है, तथापि कीलित शैव मन्त्रों के सञ्जीवन का वर्णन करता हूँ, जिसके साधनमात्र से मूल मन्त्र सिद्ध होते हैं।।३४-३६।।

मृत्युञ्जयमन्त्रसञ्जीवनम्

सूर्यनामाक्षरद्वन्द्वं जपेदादौ च साधकः ॥३७॥
मृत्युञ्जयमनोरेष मन्त्रः सञ्जीवनाभिधः।

मृत्युञ्जय मन्त्र-सञ्जीवन—मृत्युञ्जय मन्त्र के प्रारम्भ में 'ह्रां ह्रां' के जप से सञ्जीवन होता है। 'ह्रां ह्रां' संजीवन मन्त्र है।।३७।।

अमृतेश्वरमन्त्रसञ्जीवनम्

विश्वमादौ विश्वमन्ते जपेन्मान्त्रिकनायकः ॥३८॥
अमृतेश्वरमन्त्रस्य भवेत् सञ्जीवनं परम्।

अमृतेश मन्त्र-सञ्जीवन—अमृतेश मन्त्र के पहले और अन्त में 'नमः' लगाकर जप करने से इसका सञ्जीवन होता है।।३८।।

वटुकभैरवमन्त्रसञ्जीवनम्

वटुकायेति तारादौ जपेत् पार्वति साधकः ।।३९।।
सञ्जीवनमनुः प्रोक्तो वटुकस्यैष दुर्लभः ।

वटुक मन्त्र-सञ्जीवन—बटुक मन्त्र के पहले 'ॐ' लगाकर जप करने से इसका सञ्जीवन होता है।।३९।।

नीलकण्ठमन्त्रसञ्जीवनम्

शिवं च प्रणवादौ तु जपेत् साधकवन्दिते ।।४०।।
श्रीनीलकण्ठमन्त्रस्य मन्त्रः सञ्जीवनाभिधः ।

नीलकण्ठ मन्त्र-सञ्जीवन—नीलकण्ठ मन्त्र के पहले 'ॐ गं' लगाकर जप करने से सञ्जीवन होता है।।४०।।

सद्योजातमन्त्रसञ्जीवनम्

परामादौ त्रिरुच्चार्य जपादौ सञ्जपेत् सुधीः ।।४१।।
सद्योजातमनोरेष स्मृतः सञ्जीवनो मनुः ।

सद्योजात मन्त्र-सञ्जीवन—सद्योजात मन्त्रजप के पहले तीन बार 'ह्रीं' का उच्चारण करके जप करने से सञ्जीवन होता है।।४१।।

महागणपतिमन्त्रसञ्जीवनम्

शिवमन्ते द्विरुच्चार्य जपेद् देवि जपादितः ।।४२।।
महागणपतेर्मन्त्रो मनोः सञ्जीवनाभिधः ।

महागणपति मन्त्र-सञ्जीवन—महागणपति मन्त्र के पहले 'गं गं' लगाकर जप करने से इसका सञ्जीवन होता है।।४२।।

अघोरमन्त्रसञ्जीवनम्

वज्रबीजानि मूलादौ जपेत् पार्वति साधकः ।।४३।।
अघोरदेवमन्त्रस्य मनुः सञ्जीवनः स्मृतः ।

अघोर मन्त्र-सञ्जीवन—अघोर मन्त्र के पहले 'भ्यों' लगाकर जप करने से इस मन्त्र का सञ्जीवन होता है।।४३।।

महाकालमन्त्रसञ्जीवनम्

निर्दोषो मन्त्रराजोऽयं महाकालस्य पार्वति ।।४४।।
अस्योच्चारणमात्रेण मन्त्राः सिध्यन्ति सर्वदा ।

महाकाल मन्त्र-सञ्जीवन—महाकाल का मन्त्र मन्त्रराज है, निर्दोष है। इसके उच्चारणमात्र से मन्त्र सिद्ध होते हैं।।४४।।

कामेश्वरमन्त्रसञ्जीवनम्

कूटत्रयेभ्यो देवेशि द्वितीयाक्षरमुच्चरेत् ॥४५॥
जपेत् कामेशमन्त्रस्य भवेत् सञ्जीवनं शिवे ।

कामेश्वर मन्त्र-सञ्जीवन—कामेश्वर मन्त्र है—ऐं क्लीं सौः ॐ श्रीं ह्रीं कामेश्वर ह्रीं श्रीं ॐ सौः क्लीं ऐं। तीनों कूटों के दूसरे अक्षर 'क्लीं श्रीं क्लीं' को मन्त्र के पहले लगाकर जप करने से इस मन्त्र का संजीवन होता है।।४५।।

वैष्णवमन्त्रसञ्जीवनमन्त्रः

अथाहं वैष्णवानां ते मनूनां वच्मि जीवनम् ॥४६॥
याञ्जप्त्वा साधको देवि भवेद्भैरवसन्निभः ।

वैष्णव मन्त्र-सञ्जीवन—अब मैं वैष्णवमन्त्रों के सञ्जीवन मन्त्रों का वर्णन करता हूँ, जिसे जानकर हे देवि! साधक भैरव के समान हो जाता है।।४६।।

लक्ष्मीनारायणमन्त्रसञ्जीवनम्

हरितं मूलमन्त्रान्ते जपेत् पार्वति साधकः ॥४७॥
लक्ष्मीनारायणमनोर्भवेत् सञ्जीवनं परम् ।

लक्ष्मीनारायण मन्त्र-सञ्जीवन—हे पार्वति! लक्ष्मीनारायण मन्त्र के सञ्जीवन के लिये साधक को मन्त्र के अन्त में 'ह्सौः' बीज लगाकर जप करना चाहिये।।४७।।

राधाकृष्णमन्त्रसञ्जीवनम्

शक्तिमन्ते मनोरादौ वाग्भवं साधको जपेत् ॥४८॥
श्रीराधाकृष्णमन्त्रस्य सञ्जीवनमनुः स्मृतः ।

राधाकृष्ण मन्त्र सञ्जीवन—राधाकृष्ण मन्त्र के पहले 'ऐं' और अन्त में 'सौः' लगाकर जप करने से इसका संजीवन होता है।।४८।।

विष्णुमन्त्रसञ्जीवनम्

विश्वान्ते प्रणवं देवि जपेत् साधकसत्तमः ॥४९॥
विष्णुमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं स्मृतः सञ्जीवनाभिधः ।

विष्णु मन्त्र-सञ्जीवन—विष्णु मन्त्र के अन्त में नमः के बाद 'ॐ' लगाकर जप करने से इसका सञ्जीवन होता है। ॐ इसका सञ्जीवन मन्त्र है।।४९।।

लक्ष्मीनृसिंहमन्त्रसञ्जीवनम्

नृबीजं प्रथमं देवि प्रणवं चाञ्चले जपेत् ॥५०॥
लक्ष्मीनृसिंहमन्त्रस्य मन्त्रः सञ्जीवनाभिधः ।

लक्ष्मीनृसिंह मन्त्र-सञ्जीवन—लक्ष्मीनृसिंह मन्त्र के पहले 'क्ष्रौं' और अन्त में 'ॐ' लगाकर जप करने से इस मन्त्र का सञ्जीवन होता है।।५०।।

लक्ष्मीवराहमन्त्रसञ्जीवनम्

रमामन्ते त्रिरुच्चार्य जपेदानन्दनिर्भरे ॥५१॥
लक्ष्मीवराहमन्त्रस्य सञ्जीवनमनुः स्मृतः ।

लक्ष्मीवराह मन्त्र-सञ्जीवन—लक्ष्मीवराह मन्त्र के अन्त में तीन बार 'श्रीं' का उच्चारण करके जप करने से इसका सञ्जीवन होता है।।५१।।

परायुगं जपेदादौ मन्त्रराजस्य पार्वति ॥५२॥
मन्त्रो भार्गवरामस्य मनोः सञ्जीवनः स्मृतः ।

भार्गव राम मन्त्र-सञ्जीवन—परशुराम मन्त्र के प्रारम्भ में दो बार 'ह्रीं' जप के साथ मन्त्रजप करने से इसका सञ्जीवन होता है।।५२।।

सीताराममन्त्रसञ्जीवनम्

मन्त्रान्ते प्रणवं देवि तारादौ सकलां जपेत् ॥५३॥
श्रीसीताराममन्त्रस्य मनोः सञ्जीवनो मनुः ।

सीताराम मन्त्र-सञ्जीवन—सीताराम मन्त्र के पहले 'ॐ ह्रीं' और अन्त में 'ॐ' लगाकर जप करने से इसका सञ्जीवन होता है।।५३।।

जनार्दनमन्त्रसञ्जीवनम्

विश्वमादौ परामन्ते जपेत् पार्वति मान्त्रिकः ॥५४॥
जनार्दनमनोरेष मन्त्रः सञ्जीवनः स्मृतः ।

जनार्दन मन्त्र-सञ्जीवन—जनार्दन मन्त्र के पहले 'नमः' और अन्त में 'ह्रीं' लगाकर जप करने से इस मन्त्र का सञ्जीवन होता है।।५४।।

विश्वक्सेनमन्त्रसञ्जीवनम्

परमादौ परामन्ते सतारां साधको जपेत् ॥५५॥
विश्वक्सेनमनोरेष स्यात् सञ्जीवनको मनुः ।

विश्वक्सेन मन्त्र-सञ्जीवन—विष्वक्सेन मन्त्र के पहले 'ॐ ह्रीं' और अन्त में 'ॐ ह्रीं' लगाकर जप करने से संजीवन होता है।।५५।।

लक्ष्मीवासुदेवमन्त्रसञ्जीवनम्

रमामादौ रमामन्ते जपादौ सञ्जपेत् सुधीः ॥५६॥
श्रीलक्ष्मीवासुदेवस्य मनोः सञ्जवनो मनुः ।

लक्ष्मी-वासुदेव मन्त्र-सञ्जीवन—श्री लक्ष्मीवासुदेव मन्त्र के आदि और अन्त में 'श्रीं' लगाकर जप करने से संजीवन होता है।।५६।।

पटलोपसंहार

इतीदं मन्त्रसर्वस्वं रहस्यं सारमद्भुतम् ।
तव भक्त्या मयाख्यातं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥५७॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये मन्त्रसञ्जीवनविधिनिरूपणं नाम षष्ठः पटलः॥६॥

यह मन्त्रसर्वस्व है, अद्भुत सार का रहस्य है। हे देवि! तुम्हारी भक्ति के वश में होकर मैंने इसका वर्णन किया है। इसे अपनी योनि के समान गुप्त रखना चाहिये।।५७।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में मन्त्रसञ्जीवनविधि नामक षष्ठ पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ सप्तमः पटलः

शापोद्धारविधिः

श्रीभैरव उवाच

अधुना कथयिष्यामि विद्यां शापहरीं शिवे।
सर्वेषामेव मन्त्राणां कलौ निस्तेज़सां शृणु ॥१॥

श्री भैरव ने कहा कि हे शिवे! कलियुग में सभी मन्त्र शाप से निस्तेज हो गये हैं। अब मैं उनके शापोद्धार के मन्त्रों का वर्णन करता हूँ, जिससे सभी मन्त्र शापमुक्त होते हैं और साधकों के अभीष्ट मनोरथ पूर्ण होते हैं।।१।।

बालामन्त्रशापमोचनम्

या बाला भैरवी सैव सैव त्रिपुरसुन्दरी।
त्रिपुरा यास्ति सा काली श्यामा सैव परा स्मृता ॥२॥
तारं परां रमां बाले शिवशापं विमोचय।
विमोचय हरं नीरं बालाशापहरी स्मृता ॥३॥

बाला मन्त्र-शापमोचन मन्त्र—जो बाला है, वही भैरवी है, वही त्रिपुरसुन्दरी है, वही त्रिपुरा है, वही काली श्यामा है, वही परा शक्ति है। इसके शापमोचन का मन्त्र है—ॐ ह्रीं श्रीं बाले शिवशापं विमोचय फट् स्वाहा।।२-३।।

भैरवीमन्त्रशापमोचनम्

वाणी शरत् स्मरो रुद्रशापं मोचय मोचय।
तुरगं ठद्वयं देवि भैरवीशापमोचनम् ॥४॥

भैरवी सुन्दरी-शापमोचन मन्त्र—वाणी = ऐं, शरत् = सौः, स्मर = क्लीं, रुद्रशापं मोचय मोचय, फट्, ठद्वय = स्वाहा के योग से भैरवी त्रिपुरसुन्दरी का शापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ऐं सौः क्लीं रुद्रशापं मोचय मोचय फट् स्वाहा।।४।।

सदाशिवमन्त्रशापमोचनम्

बालाबीजत्रयं कूटमाद्यं तारं परां रमाम्।
सदाशिवस्य शापं च मोचय-द्वयमुद्धरेत् ॥५॥

सदाशिव मन्त्र शापमोचन मन्त्र—बालाबीजत्रय = ऐं क्लीं सौः, सदाशिव मन्त्र

का आद्य कूट = ऐं सौः क्लीं, सतारं परां रमा = ॐ ह्रीं श्रीं सदाशिवस्य शापं माचय मोचय के योग से यह मन्त्र बनता है—ऐं क्लीं सौः ऐं सौः क्लीं ॐ ह्रीं श्रीं सदाशिवस्य शापं मोचय मोचय।।५।।

कालीमन्त्रशापमोचनम्

शरत् कूटं पठेदन्ते विद्येयं शापहारिणी।
श्यामा परमविद्येयं द्वाविंशत्यक्षरी परा॥६॥

काली मन्त्र-शापमोचन मन्त्र—काली के द्वाविंशाक्षर मन्त्र के अन्त में 'सौः क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं' लगाकर जप करने से शापमोचन होता है।।६।।

महाश्रीषोड़शीमन्त्रशापमोचनम्

महाश्रीषोडशीविद्या सर्वदोषविवर्जिता।
तथापि दुर्लभां विद्यां वक्ष्येऽहं शापहारिणीम्॥७॥
द्वाविंशत्यक्षरीदेव्या यथा मन्त्रो हि सिद्ध्यति।
कालीं कूर्चं परं नाम दक्षिणे कालिके तथा॥८॥
वसिष्ठशापं प्रोच्चार्य मोचय-द्वयमीश्वरि।
कालीं कूर्चं परां नीरमेषा स्याच्छापहारिणी॥९॥

महा श्रीषोड़शी विद्या-शापमोचन—महा श्रीषोड़शी विद्या में यद्यपि कोई दोष नहीं है, तथापि दुर्लभ शापविमोचनी विद्या को बतलाता हूँ। जैसे बाईस अक्षरों का काली-मन्त्र सिद्ध होता है, वैसे ही 'क्रीं हूं ह्रीं दक्षिणकालिके वशिष्ठशापं मोचय मोचय क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा' मन्त्र से शापमोचन होता है।।७-९।।

भद्रकालीमन्त्रशापमोचनम्

कालीं भीमां तटं भद्रकालि भीमां शिवस्य हि।
शापं मोचय-युग्मापो विद्येयं शापहारिणी॥१०॥

भद्रकाली-शापमोचन मन्त्र—काली = क्रीं, भीमा = भैं, तट = हूं, भद्रकालि = भैं, शिवस्य शापं मोचय मोचय से भद्रकाली-शापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—क्रीं भैं हूं भद्रकालि भैं शिवस्य शापं मोचय मोचय।।१०।।

मातङ्गीमन्त्रशापमोचनम्

तारं परां च मातङ्गि कालशापं विमोचय।
तुरगं नीरमन्ते तु विद्येयं शापहारिणी॥११॥

मातङ्गी मन्त्रशापमोचन मन्त्र—मातंगी मन्त्र के शापमोचन मन्त्र तार = ॐ, परा = ह्रीं, मातङ्गि कालशापं विमोचय, तुरग = फट्, नीर = स्वाहा के योग से बनता है। मन्त्र है—ॐ ह्रीं मातङ्गि कालशापं विमोचय फट् स्वाहा।।११।।

भुवनेश्वरीमन्त्रशापमोचनम्

मायां भैरवशापं च मोचय-द्वयमञ्चले।
मायां स्याद्भुवनेश्वर्या विद्येयं शापहारिणी ॥१२॥

भुवनेश्वरी-शापमोचन मन्त्र—माया = ह्रीं, भैरवशापं मोचय मोचय, माया = ह्रीं के योग से भुवनेश्वरी शापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ह्रीं भैरव शापं मोचय मोचय ह्रीं।।१२।।

उग्रतारामन्त्रशापमोचनम्

प्रणवं कामिनीं मायां ब्रह्मशापं विमोचय।
विमोचयापस्ताराया विद्येयं शापहारिणी ॥१३॥

तारा मन्त्रशापविमोचन मन्त्र—तारा मन्त्रशापमोचन मन्त्र प्रणव = ॐ, कामिनी = स्त्रीं, माया = ह्रीं, ब्रह्मशापं विमोचय विमोचय के योग से बनता है। मन्त्र है—ॐ स्त्रीं ह्रीं ब्रह्मशापं विमोचय विमोचय।।१३।।

छिन्नमस्तामन्त्रशापमोचनम्

वासनां कमलां मायां रुद्रशापं विमोचय।
मोचयापो मयाख्यातं छिन्नमस्ताङ्कमोचनम् ॥१४॥

छिन्नमस्ता मन्त्रशाप-मोचन—छिन्नमस्ता मन्त्रशाप मोचनमन्त्र वासना = ऐं, कमला = श्रीं, माया = ह्रीं, रुद्रशापं मोचय मोचय स्वाहा के योग से बनता है। मन्त्र है—ऐं श्रीं ह्रीं रुद्रशापं मोचय मोचय स्वाहा।।१४।।

सुमुखीमन्त्रशापमोचनम्

वाग्भवं कामराजं च शिवशापं विमोचय।
परां नीरमियं विद्या सुमुख्याः शापहारिणी ॥१५॥

सुमुखी विद्या शापमोचन मन्त्र—सुमुखी विद्या शापमोचन मन्त्र वाग्भव = ऐं, कामराज = क्लीं, शिवशापं विमोचय, परा = ह्रीं, नीरम् = स्वाहा के योग से बनता है। मन्त्र है—ऐं क्लीं शिवशापं विमोचय ह्रीं स्वाहा।।१५।।

सरस्वतीमन्त्रशापमोचनम्

प्रणवं वासनां तारं सरस्वति वदेत्ततः ।
दुर्वासःशापं मुञ्चाशु ठद्वयं शापमोचनम् ॥१६॥

सरस्वती मन्त्रशापमोचन—प्रणव = ॐ, वासना = ऐं, तारं = ॐ, सरस्वति दुर्वासः शापं मुञ्चाशु, ठद्वय = स्वाहा के योग से सरस्वती शापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ऐं ॐ सरस्वति दुर्वासः शापं मुञ्चाशु स्वाहा।।१६।।

अन्नपूर्णामन्त्रशापमोचनम्

तारं परामन्नपूर्णे शिवशापं विमोचय ।
कूर्चं हरं वनं देवि विद्येयं शापहारिणी ॥१७॥

अन्नपूर्णा मन्त्रशापमोचन—तार = प्रणव—ॐ, परा = ह्रीं, अन्नपूर्णे शिवशापं विमोचय, कूर्च = हूं, हरं = फट्, वनं = स्वाहा के योग से अन्नपूर्णा शाप-विमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ह्रीं अन्नपूर्णे शिवशापं विमोचय हूं फट् स्वाहा।।१७।।

महालक्ष्मीमन्त्रशापमोचनम्

तारं रमां महालक्ष्मि विष्णुशापं विमोचय ।
तुरगं नीरमीशानि विद्येयं शापहारिणी ॥१८॥

महालक्ष्मी मन्त्र-शापमोचन—तारं = ॐ, रमां = श्रीं, महालक्ष्मि विष्णुशापं विमोचय तुरगं = फट्, नीरम् = स्वाहा के योग से महालक्ष्मी शापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ श्रीं महालक्ष्मि विष्णुशापं विमोचय फट् स्वाहा।।१८।।

शारिकामन्त्रशापमोचनम्

तारं च सिन्धुरं देवि शारिके ब्रह्मलाञ्छनम् ।
मोचय-द्वयमापश्च विद्येयं शापहारिणी ॥१९॥

शारिका मन्त्र शापमोचन—तारं = ॐ, सिन्धुर = फ्रां, देवि शारिके ब्रह्मलाञ्छनम् मोचय मोचय के योग से शारिका मन्त्रशापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ फ्रां देवि शारिके ब्रह्मलाञ्छनम् मोचय मोचय।।१९।।

शारदामन्त्रशापमोचनम्

तारं मायां शारदे च विष्णुशापं विमोचय ।
शक्तिर्नीरं महादेवि विद्येयं शापहारिणी ॥२०॥

शारदा मन्त्रशापमोचन—तारं = ॐ, माया = ह्रीं, शारदे विष्णुशापं विमोचय

सौ: नीरं = स्वाहा के योग से शारदा मन्त्र शाप मोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ह्रीं शारदे विष्णुशापं विमोचय सौ: स्वाहा।।२०।।

इन्द्राक्षीमन्त्रशापमोचनम्

तारं वाणी शरत्काममिन्द्राक्षि ब्रह्मलाञ्छनम्।
मोचयद्वयमापश्च विद्येयं शापहारिणी ॥२१॥

इन्द्राक्षी मन्त्र शापमोचन—तारं = ॐ, वाणी = ऐं, शरत् = सौ:, काम = क्लीं, इन्द्राक्षि ब्रह्मलाञ्छनम् मोचय मोचय के योग से इन्दाक्षी मन्त्र शाप मोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ऐं सौ: क्लीं इन्द्राक्षि ब्रह्मलाञ्छनम् मोचय मोचय।।२१।।

बगलामुखीशापमोचनम्

तारं मृत्स्नां च बगले रुद्रशापं विमोचय।
तारं मृदं वनं देवि विद्येयं शापहारिणी ॥२२॥

बगला शापमोचन मन्त्र—तारं = ॐ, मृत्स्ना = ह्लीं, बगले रुद्रशापं विमोचय तार = ॐ, मृदं = ह्लीं, वनं = स्वाहा के योग से बगला मन्त्र शाप मोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ह्लीं बगले रुद्रशापं विमोचय ॐ ह्लीं स्वाहा।।२२।।

महातुरीमन्त्रशापमोचनम्

तारं तारां च तुर्ये तु शिवशापं विमोचय।
तारकं ठद्वयं देवि विद्येयं शापहारिणी ॥२३॥

महातुरी मन्त्र शापमोचन—तार = ॐ, तारा = त्रों, तुर्ये शिवशापं विमोचय तारक, ठद्वय = स्वाहा के योग से महातुरी मन्त्र शाप मोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ त्रों तुर्ये शिवशापं विमोचय त्रों स्वाहा।।२३।।

महाराज्ञीमन्त्रशापमोचनम्

तारं वह्निं शरद्राज्ञि ब्रह्मशापं विमोचय।
विमोचय वनं देवि विद्येयं शापहारिणी ॥२४॥

महाराज्ञी मन्त्र शापविमोचन—तार = ॐ, वह्नि = रां, सौ: राज्ञि ब्रह्मशापं विमोचय विमोचय, वनं = स्वाहा के योग से महाराज्ञी मन्त्र शापविमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ रां सौ: राज्ञि ब्रह्मशापं विमोचय विमोचय स्वाहा। इस मन्त्र के जप से शापविमोचन होता है।।२४।।

ज्वालामुखीमन्त्रशापमोचनम्

तारं रमां परां ज्वालामुखि भैरवलाञ्छनम्।
कूर्चं नीरं महादेवि विद्येयं शापहारिणी ॥२५॥

ज्वालामुखी मन्त्रशापविमोचन—तार = ॐ, रमा = श्रीं, परा = ह्रीं, ज्वालामुखि भैरवलाञ्छनम्, कूर्च = हूं, नीरं = स्वाहा के योग से ज्वालामुखी मन्त्र शापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ श्रीं ह्रीं ज्वालामुखि भैरवलाञ्छनं हूं स्वाहा।।२५।।

भीड़ामन्त्रशापमोचनम्

तारं परां रमां भीडे ध्रुवशापं विमोचय।
मोचयापो महादेवि विद्येयं शापहारिणी ॥२६॥

भीड़ा देवी मन्त्रशाप-विमोचन—तार = ॐ, ह्रीं श्रीं भीड़े ध्रुवशापं विमोचय विमोचय, आप: = स्वाहा। मन्त्र है—ॐ ह्रीं श्रीं भीड़े ध्रुवशापं विमोचय विमोचय स्वाहा।।२६।।

कालरात्रिमन्त्रशापमोचनम्

तारं वाणीं च डिम्बं च कालरात्रि शिवस्य च।
शाप मोचय नीरं च विद्येयं शापहारिणी ॥२७॥

कालरात्रि मन्त्रशाप-मोचन मन्त्र—तार = ॐ, वाणी = ऐं, डिम्ब = ह्रां, कालरात्रि शिवस्य शापं मोचय, नीरं = स्वाहा के योग से कालरात्रि मन्त्रशापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ऐं ह्रां कालरात्रि शिवस्य शापं मोचय स्वाहा।।२७।।

भवानीमन्त्रशापमोचनम्

तारं रमां रमां तारं रुद्रशापं विमोचय।
कूर्चं हरं वनं देवि विद्येयं शापहारिणी ॥२८॥

भवानी मन्त्रशापमोचन मन्त्र—तार = ॐ, रमा = श्रीं, रमा = श्रीं, तार = ॐ, रुद्रशापं विमोचय, कूर्च = हूं, हर = फट्, वनं = स्वाहा के योग से भवानी शापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ श्रीं श्रीं ॐ रुद्रशापं विमोचय हूं फट् स्वाहा।।२८।।

वज्रयोगिनीमन्त्रशापमोचनम्

तारं परां परां तारं वज्रयोगिनि प्रोद्धरेत्।
शिवशापं मोचयापो विद्येयं शापहारिणी ॥२९॥

वज्रयोगिनी मन्त्रशापमोचन मन्त्र—तारं = ॐ, परा = ह्रीं, परा = ह्रीं, तारं =

ॐ, वज्रयोगिनि शिवशापं विमोचय, आप: = स्वाहा के योग से वज्रयोगिनी मन्त्रशापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ वज्रयोगिनि शिवशापं विमोचय स्वाहा।।२९।।

वाराहीमन्त्रशापमोचनम्

तारं रमां च वाराहि नारदाङ्कं विमोचय।
मठं नीरं महादेवि विद्येयं शापहारिणी ॥३०॥

वाराही मन्त्रशापमोचन—तार = ॐ, रमा = श्रीं, वाराहि नारदांकं विमोचय, मठं = ग्लौं, नीर = स्वाहा के योग से वाराही मन्त्र शाप मोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ श्रीं वाराही नारदांकं विमोचय ग्लौं स्वाहा।।३०।।

सिद्धलक्ष्मीमन्त्रशापमोचनम्

तारं रमां सिद्धलक्ष्मि सिद्धशापं विमोचय।
वाणी शरत् स्मरो नीरं विद्येयं शापहारिणी ॥३१॥

सिद्धलक्ष्मी मन्त्रशापमोचन—तार = ॐ, रमा = श्रीं, सिद्धलक्ष्मि सिद्धशापं विमोचय, वाणी = ऐं, शरत् सौः, स्मर = क्लीं, नीरं = स्वाहा के योग से सिद्धलक्ष्मी मन्त्रशाप मोचनमन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ श्रीं सिद्धलक्ष्मि सिद्धशापं विमोचय ऐं सौं क्लीं स्वाहा।।३१।।

कुलवागीश्वरीमन्त्रशापमोचनम्

तारं व्योषं रमां काङ्क्षां कुलवागीश्वरि स्फुटम्।
शिवशापं च मुञ्चापो विद्येयं शापहारिणी ॥३२॥

कुलवागीश्वरी मन्त्रशापमोचन—तारं = ॐ, व्योष = ह्रां, रमा = श्रीं, कांक्षां = झं, कुलवागीश्वरि शिवशापं मुञ्च, आप: = स्वाहा के योग से कुलवागीश्वरी मन्त्रशापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ह्रां श्रीं झं कुलवागीश्वरि शिवशापं मुञ्च स्वाहा।।३२।।

पद्मावतीमन्त्रशापमोचनम्

तारं मायां च पद्मं च पद्मावति हरेस्तथा।
शापं मुञ्चयुगं नीरं विद्येयं शापहारिणी ॥३३॥

पद्मावती मन्त्रशापमोचन—तारं = ॐ, माया = ह्रीं, पद्मं = ठः, पद्मावति हरशापं मुञ्च मुञ्च, आप: = स्वाहा के योग से पद्मावती मन्त्रशापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ह्रीं ठ: पद्मावति हरशापं मुञ्च मुञ्च स्वाहा।।३३।।

कुब्जिकामन्त्रशापमोचनम्

तारं मायां कुब्जिके च जह्नुशापं विमोचय।
नीरमन्ते महादेवि विद्येयं शापहारिणी ॥३४॥

कुब्जिका मन्त्रशापमोचन—तार = ॐ, माया = ह्रीं, कुब्जिके जह्नुशापं विमोचय, नीरं = स्वाहा के योग से कुब्जिका मन्त्रशापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ह्रीं कुब्जिके जह्नुशापं विमोचय स्वाहा।।३४।।

गौरीमन्त्रशापमोचनम्

तारं शिवं गौरि भृगोः शापं मोचय मोचय।
नीरमन्ते मनोर्देवि विद्येयं शापहारिणी ॥३५॥

गौरी मन्त्रशापमोचन—तार = ॐ, शिव = ह्रां, गौरि भृगोः शापं मोचय मोचय, नीरं = स्वाहा के योग से गौरी मन्त्र शापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ह्रां गौरि भृगोः शापं मोचय मोचय स्वाहा।।३५।।

खेचरीमन्त्रशापमोचनम्

तारं खेचरि रुद्रस्य शापं मोचय मोचय।
परां नीरं महादेवि विद्येयं शापहारिणी ॥३६॥

खेचरी मन्त्रशापमोचन—तार = ॐ, खेचरि रुद्रस्य शापं मोचय मोचय ह्रीं स्वाहा के योग से खेचरी मन्त्र शाप मोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ खेचरी रुद्रस्य शाप मोचय मोचय ह्रीं स्वाहा।।३६।।

नीलसरस्वतीमन्त्रशापमोचनम्

तारं वाणी च नीलेति सरस्वति हरिच्छलम्।
मोचयापो मनोरन्ते विद्येयं शापहारिणी ॥३७॥

नीलसरस्वती मन्त्रशापमोचन—तार = ॐ, वाणी = ऐं, नीलसरस्वति हरिच्छलम् मोचय स्वाहा के योग से नीलसरस्वती मन्त्र शाप मोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ऐं नीलसरस्वती हरिच्छलं मोचय स्वाहा।।३७।।

पराशक्तिमन्त्रशापमोचनम्

तारं शक्तिः पराशक्ते शिवशापं विमोचय।
विमोचय शरन्नीरं विद्येयं शापहारिणी ॥३८॥

पराशक्ति मन्त्रशापमोचन—तार = ॐ, शक्ति = सौः, पराशक्ते शिवशापं

विमोचय, विमोचय, शरः = फट्, नीर = स्वाहा के योग से परा शक्ति शाप मोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ सौः पराशक्ते शिवशापं विमोचय विमोचय फट् स्वाहा।।३८।।

शैवमन्त्रशापमोचनमन्त्राः

अधुना शैवमन्त्राणां कीलितानां महेश्वरि।
सर्वसाधारणीं विद्यां वक्ष्येऽहं शापहारिणीम्।।३९।।
निष्कीलितानां मन्त्राणां विद्यां शापहरीं शृणु।
यस्या उच्चारमात्रेण दुष्टमन्त्रोऽपि सिध्यति।।४०।।

शैव मन्त्र-शापमोचन—श्री भैरव ने कहा कि हे महेश्वरि! अब मैं शैव मन्त्रों के साधारण शापविमोचन विद्या का वर्णन करता हूँ। निष्कीलित मन्त्रों की शापमोचनी विद्या सुनो, जिनके उच्चारणमात्र से दुष्ट मन्त्र भी सिद्ध हो जाते है।।३९-४०।।

सदाशिवमन्त्रशापमोचनम्

तारं परां रमां वाणीं कामं शक्तिं सदाशिव।
शिवशापं मोचयापो विद्येयं शापहारिणी।।४१।।

सदाशिव मन्त्रशापमोचन—तार = ॐ, परा = ह्रीं, रमा = श्रीं, वाणी = ऐं, काम = क्लीं, शक्ति = सौः, सदाशिव शिवशापं मोचय, आपः = स्वाहा के योग से सदाशिव मन्त्र शाप मोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सदाशिव शिवशापं मोचय स्वाहा।।४१।।

मृत्युञ्जयमन्त्रशापमोचनम्

तारं हृज्जं शरद्रुद्रशापं मोचय मोचय।
शरद्हृज्जं च तारं च विद्येयं शापहारिणी।।४२।।

मृत्युञ्जय शापमोचन मन्त्र—तार = ॐ, हृज्जं = जूं, शरत् = सः, रुद्रशापं मोचय मोचय, हृज्जं = सः, हृज्जं = जूं, तार = ॐ के योग से मृत्युंजय शापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ जूं सः रुद्र शापं मोचय मोचय सः जूं ॐ।।४२।।

अमृतेश्वरमन्त्रशापमोचनम्

तारं ततोऽमृतेशान शिवशापं विमोचय।
युग्ममन्ते तथा तारं विद्येयं शापहारिणी।।४३।।

अमृतेश मन्त्रशापमोचन—तार = ॐ, अमृतेशान शिवशापं विमोचय विमोचय तार = ॐ के योग से अमृतेश मन्त्र शापविमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ अमृतेश शिवशापं विमोचय विमोचय ॐ।।४३।।

वटुकभैरवमन्त्रशापमोचनम्

तारं परां च वटुक ब्रह्मशापं विमोचय।
द्वयं च देवीप्रणवो विद्येयं शापहारिणी ॥४४॥

वटुक मन्त्रशापमोचन—तार = ॐ, परा = ह्रीं, वटुक ब्रह्मशापं विमोचय विमोचय प्रणव = ॐ के योग से वटुक मन्त्रशाप मोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ह्रीं वटुक ब्रह्मशापं विमोचय विमोचय ॐ।।४४।।

नीलकण्ठमन्त्रशापमोचनम्

तारं च नीलकण्ठेति दुर्वासाङ्कं विमोचय।
मोचयापो महादेवि विद्येयं शापहारिणी ॥४५॥

नीलकण्ठ मन्त्रशापमोचन—तार = ॐ, नीलकण्ठ दुर्वासांकं विमोचय विमोचय, आप: = स्वाहा के योग से नीलकण्ठ मन्त्र का शापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ नीलकण्ठ दुर्वासांकं विमोचय विमोचय स्वाहा।।४५।।

सद्योजातमन्त्रशापमोचनम्

तारं छविः परा तारं सद्योजात रविच्छलम्।
मोचय ठद्वयं देवि विद्येयं शापहारिणी ॥४६॥

सद्योजात मन्त्रशापमोचन—तार = ॐ, छवि: = हां, परा = ह्रीं, तार = ॐ, सद्योजात रविच्छलम् मोचय, ठद्वय = स्वाहा के योग से सद्योजात मन्त्र शापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ हां ह्रीं ॐ सद्योजात रविच्छलम् मोचय मोचय स्वाहा।।४६।।

महागणपतिमन्त्रशापमोचनम्

तारं शिवं गणेशान रुद्रशापं विमोचय।
वनमन्ते महादेवि विद्येयं शापहारिणी ॥४७॥

गणेश मन्त्रशापमोचन—तार = ॐ, शिवं = गं, गणेशान रुद्रशापं विमोचय, वनं = स्वाहा के योग से गणेश मन्त्र शापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ गं गणेशान रुद्रशापं विमोचय स्वाहा।।४७।।

स्वच्छन्दनाथमन्त्रशापमोचनम्

तारमाद्यक्षरहविर्देव स्वच्छन्दनायक।
शिवशापं मोचयापो विद्येयं शापहारिणी ॥४८॥

स्वच्छन्दनायक मन्त्रशापमोचन मन्त्र—तार = ॐ, आद्यक्षर = अं, हविर्देव

स्वच्छन्द- नायक शिवशापं मोचय स्वाहा के योग से स्वच्छन्दनायक मन्त्रशापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ अं हविर्देव स्वच्छन्दनायक शिवशापं मोचय स्वाहा।।४८।।

महाकालभैरवमन्त्रशापमोचनम्

तारं कूर्चं परां देवि महाकाल विधिच्छलम्।
मोचय-द्वयमापश्च विद्येयं शापहारिणी ॥४९॥

महाकाल मन्त्रशापमोचन—तार = ॐ, कूर्च = हूं, परा = ह्रीं, महाकाल विधिच्छलम् मोचय मोचय, आपं = स्वाहा के योग से महाकाल मन्त्रशापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ हूं ह्रीं महाकाल विधिच्छलं मोचय मोचय स्वाहा।।४९।।

कामेश्वरमन्त्रशापमोचनम्

वाग्भवं कामशक्तिश्च भैरवाङ्कं विमोचय।
तारं परामाद्यबीजं विद्येयं शापहारिणी ॥५०॥

कामेश्वर मन्त्रशापमोचन—वाग्भव = ऐं, काम = क्लीं, शक्ति = सौः, कामेश्वर भैरवांकं विमोचय, तार = ॐ, परा ह्रीं के योग से कामेश्वर मन्त्रशापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ऐं क्लीं सौः कामेश्वर भैरवांकं विमोचय ॐ ह्रीं।।५०।।

वैष्णवमन्त्रशापमोचनमन्त्राः

अथ वैष्णवमन्त्राणां शृणु पार्वति सादरम्।
विद्यां शापहरीं सद्यो मन्त्रसिद्धिर्भवेद् यतः ॥५१॥

वैष्णव मन्त्रशापमोचन—हे पार्वति! अब वैष्णव मन्त्रों के शापमोचन मन्त्रों को सादर सुनो। ये शापहरी विद्यायें मन्त्रसिद्धि तुरन्त देती हैं।।५१।।

लक्ष्मीनारायणमन्त्रशापमोचनम्

तारं रमां च लक्ष्मीति नारायण शिवच्छलम्।
मोचय-द्वयमापश्च विद्येयं शापहारिणी ॥५२॥

लक्ष्मीनारायण मन्त्रशापमोचन—तार = ॐ, रमा = श्रीं, लक्ष्मीनारायण शिवच्छलम् मोचय मोचय, आपः = स्वाहा के योग से लक्ष्मीनारायण मन्त्र शापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ श्रीं लक्ष्मीनारायण शिवच्छलम् मोचय मोचय स्वाहा।।५२।।

राधाकृष्णमन्त्रशापमोचनम्

तारं शक्तिः परा तारं राधाकृष्ण विधिच्छलम्।
मोचयापो महादेवि विद्येयं शापहारिणी ॥५३॥

राधाकृष्ण मन्त्रशापमोचन—तार = ३ॐ, शक्ति = सौः, परा = ह्रीं, तार = ३ॐ, राधा-कृष्ण विधिच्छलम् मोचय, आपं = स्वाहा के योग से राधा-कृष्ण मन्त्रशापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—३ॐ सौः ह्रीं ३ॐ राधाकृष्ण विधिच्छलम् मोचय स्वाहा।।५३।।

विष्णुमन्त्रशापमोचनम्

तारं परां रमां विष्णो रुद्रशापं विमोचय।
तारं ठद्वयमन्ते च विद्येयं शापहारिणी ॥५४॥

विष्णु मन्त्र शापमोचन मन्त्र—तार = ३ॐ, परा = ह्रीं, रमा = श्रीं, विष्णो रुद्रशापं विमोचय, तार = ३ॐ, ठद्वय = स्वाहा के योग से विष्णु मन्त्र शाप मोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—३ॐ ह्रीं श्रीं विष्णोः रुद्रशापं विमोचय ३ॐ स्वाहा।।५४।।

लक्ष्मीनृसिंहमन्त्रशापमोचनम्

तारं परां नृबीजं च नरसिंह शिवच्छलम्।
मोचय-द्वयमापश्च विद्येयं शापहारिणी ॥५५॥

नृसिंह मन्त्रशापमोचन—तार = ३ॐ, परा = ह्रीं, नृं नरसिंह शिवच्छलम् मोचय मोचय, आपं = स्वाहा के योग से नृसिंह मन्त्र शापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—३ॐ ह्रीं नृं नरसिंहं शिवच्छलम् मोचय मोचय स्वाहा।।५५।।

लक्ष्मीवराहमन्त्रशापमोचनम्

तारं रमां च लक्ष्मीति वराह हरिलाञ्छनम्।
मोचय-द्वयमापोऽन्ते विद्येयं शापहारिणी ॥५६॥

लक्ष्मी वराह मन्त्रशापमोचन—तार = ३ॐ, रमा = श्रीं, लक्ष्मीवराह हरिलाञ्छनम् मोचय मोचय, आपः = स्वाहा के योग से लक्ष्मीवराह मन्त्र बनता है। मन्त्र है—३ॐ श्रीं लक्ष्मिवराह हरिलाञ्छनं मोचय मोचय स्वाहा।।५६।।

भार्गवराममन्त्रशापमोचनम्

तारं कूर्चं भार्गवेति शुक्रशापं विमोचय।
तुरगं ठद्वयं देवि विद्येयं शापहारिणी ॥५७॥

भार्गवराम मन्त्रशापमोचन—तार = ३ॐ, कूर्च = हूं, भार्गव शुक्रशापं विमोचय, तुरग = फट्, ठद्वय = स्वाहा के योग से भार्गव राम परशुराम का मन्त्रशापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—३ॐ हूँ भार्गव शुक्रशाप विमोचय फट् स्वाहा।।५७।।

रामभद्रमन्त्रशापमोचनम्

तारं रमां रामभद्र गुरुशापं विमोचय।
हरं ठद्वयमन्ते च विद्येयं शापहारिणी ॥५८॥

रामभद्र मन्त्रशापमोचन—तार = ॐ, रमा = श्रीं, रामभद्र, गुरुशापं विमोचय, हरं = फट्, ठद्वय = स्वाहा को मिलाने से रामभद्र मन्त्रशापमोचन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ श्रीं रामभद्र गुरुशापं विमोचय फट् स्वाहा।।५८।।

जनार्दनमन्त्रशापमोचनम्

तारं रमा रमा तारं जनार्दन विधिच्छलम्।
मोचयापो महादेवि विद्येयं शापहारिणी ॥५९॥

जनार्दन मन्त्रशापमोचन—तार = ॐ, रमा = श्रीं, रमा = श्रीं, तार = ॐ, जर्नादन विधिच्छलम् मोचय, आपः = स्वाहा के योग से जर्नादन मन्त्र शापमोचन मन्त्र बनता है।

मन्त्र है—ॐ श्रीं श्रीं ॐ जनार्दन विधिच्छलम् मोचय स्वाहा।।५९।।

विश्वक्सेनमन्त्रशापमोचनम्

तारं परां रमां तारं विश्वक्सेन मनुच्छलम्।
मोचय-द्वयमापश्च विद्येयं शापहारिणी ॥६०॥

विश्वक्सेन मन्त्र शापमोचन—तार = ॐ, रमा = श्रीं, रमा = श्रीं, तार = ॐ, विश्वक्सेन मनुच्छलम् मोचय मोचय, आपः = स्वाहा के योग से विश्वक्सेन मन्त्र शापमोचन मन्त्र बनता है।

मन्त्र है—ॐ श्रीं श्रीं ॐ विश्वक्सेन मनुच्छलम् मोचय मोचय स्वाहा।।६०।।

लक्ष्मीवासुदेवमन्त्रशापमोचनम्

तारं रमा रमा लक्ष्मीवासुदेव शिवच्छलम्।
मोचय-द्वयमापश्च विद्येयं शापहारिणी ॥६१॥

लक्ष्मी वासुदेव मन्त्र शापमोचन—तार = ॐ, रमा = श्रीं, रमा = श्रीं, लक्ष्मीवासुदेव शिवच्छलम् मोचय मोचय, आपः = स्वाहा के योग से लक्ष्मीवासुदेव मन्त्र शापमोचन मन्त्र बनता है।

मन्त्र है—ॐ श्रीं श्रीं लक्ष्मीवासुदेव शिवच्छलम् मोचय मोचय स्वाहा।।६१।।

पटलोपसंहारः

इतीदं परमं तत्त्वं रहस्यं सारमुत्तमम् ।
गुह्यं सर्वस्वमीशानि गोपनीयं विशेषतः ॥६२॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये शापहरीविद्योद्धारनिरूपणं नाम सप्तमः पटलः॥७॥

हे ईशानि! यह परम तत्त्व है, उत्तम सार का रहस्य है, गुह्य है, सर्वस्व है एवं विशेष रूप से गोपनीय है।।६२।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में शापहरीविद्योद्धारनिरूपण नामक सप्तम पटल पूर्ण हुआ।

●

अथाष्टमः पटलः

पारायण-जपविधिः

जपसाधनप्रकारः

श्रीभैरव उवाच

अधुना कथयिष्यामि जपसाधनमुत्तमम्।
येन साधितमात्रेण मन्त्रसिद्धिः प्रजायते ॥१॥
गुरुपादप्रसादेन श्रीविद्या यदि लभ्यते।
पुरस्क्रियाजपेनैव चेत्तां साधयितुं क्षमः ॥२॥
वाग्मी धनी जयी शूर इह भोगी स भूपतिः।
परत्र साधको देवि भवेद् भैरवसन्निभः ॥३॥
सुदिने शुभनक्षत्रे प्रातःकृत्यं विधाय च।
स्वगृहं स्वगुरुं नीत्वा नत्वा पादौ महेश्वरि ॥४॥
प्रक्षाल्य पूजायतने श्रीचक्रं पूजयेच्छिवे।
सिन्दूरेण लिखेत् त्र्यस्रं गुरुं तत्र निवेशयेत् ॥५॥

जप-साधन-प्रकार—श्री भैरव ने कहा कि हे पार्वति! अब मैं उत्तम जपसाधन का वर्णन करूँगा, जिसके साधन से ही मन्त्रसिद्धि मिलती है। गुरुपादप्रसाद से यदि श्रीविद्या मिलती है तो उसके पुरश्चरण से साधक वाग्मी, धनी, विजयी, शूरवीर, राजा के समान, ऐहिक सुख का भोग करता है। परलोक में साधक भैरव के समान होता है, शुभ दिन एवं शुभ नक्षत्र में प्रातः कृत्य करके अपने गुरु को अपने घर पर ले आये। गुरु के नख और पैरों को धोकर पूजागृह में लाकर श्रीचक्र में पूजन करे। सिन्दूर से त्रिकोण मण्डल बना कर उस पर गुरु को बैठाये।।१-५।।

गुरुपूजामन्त्रः

तारं शिवत्रयं देवि गुरवे पदमुच्चरेत्।
विश्वमन्ते महादेवि गुरुमन्त्रोऽयमुत्तमः ॥६॥
अनेन मूलमन्त्रेण गुरुं सम्पूजयेत् सुधीः।
मातृकाभिः समं देवि यथास्थानेषु पार्वति ॥७॥
गन्धाक्षतप्रसूनाद्यैर्द्रव्यैर्देवि शुभाम्बरैः।

गुरुं सन्तोषयेत्तत्र दक्षिणाभिः कुलामृतैः ॥८॥
तदाज्ञां शिरसादाय जपाय साधकोत्तमः ।
रवौ प्रातर्महादेवि गुरुं नत्वा च साधकः ॥९॥
प्राङ्मुखः प्रणतो भूत्वा जपेदष्टोत्तरं शतम् ।
शिवशक्त्योः पृथग् देवि जपं सम्पाद्य साधकः ॥१०॥
षडङ्गं मूलमन्त्रस्य दशांशेन जपेत्ततः ।
ततो देवि जपेन्मन्त्री छन्दोमुनिमनुं ततः ॥११॥
ततो देवि जयी जप्त्वा होमं कुर्याद् दशांशतः ।
तर्पयित्वा दशांशेन मार्जयेत् तद्दशांशतः ॥१२॥
भोजयित्वा दशांशेन जपसिद्धिर्भवेत्ततः ।
जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्महेश्वरि ॥१३॥
न स्तवान्नार्चनाद्ध्यानात् सिद्धिर्भवति तादृशी ।
पारायणजपेनास्ति यादृशी मन्त्रिणां शिवे ॥१४॥

गुरुपूजा-मन्त्रजप—तार = ॐ, शिवत्रय: = ह्रां ह्रां ह्रां, गुरवे, विश्वं = नमः के योग से बने 'ॐ ह्रां ह्रां गुरवे नमः' उत्तम मन्त्र से गुरु का पूजन करे। गुरुशरीर में यथा-स्थान मातृकाओं का पूजन करे। यह पूजन गन्धाक्षत-पुष्प आदि द्रव्य और शुभ्र वस्त्र से करे। कुलामृत, दक्षिणा आदि से गुरु को सन्तुष्ट करे। गुरु की आज्ञा शिरोधार्य करके रविवार के प्रातःकाल में साधकोत्तम गुरु को प्रणाम करके पूरब तरफ मुख करके प्रणत होकर एक सौ आठ बार मन्त्र का जप करे। शिव और शक्ति दोनों मन्त्रों का जप अलग-अलग करे। मूल मन्त्र का दशांश षड़गों का जप करे। इसके बाद साधक छन्द और ऋषि मन्त्र का जप करे। तब जयी का जप करके दशांश हवन करे। हवन का दशांश तर्पण और तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश ब्राह्मणभोजन करावे। इस प्रकार के पुरश्चरण से मन्त्र सिद्ध होता है। हे महेश्वरि! जप से सिद्धि होती है, जप से सिद्धि होती है, जप से सिद्धि होती है। इसके समान सिद्धि न, स्तोत्रपाठ से, न अर्चन से और न ही ध्यान से होती है। पारायण जप के समान किसी दूसरी विधि से सिद्धि नहीं होती है।।६-१४।।

पारायणजपविधिप्रश्नः

श्रीदेव्युवाच

भगवन् परमेशान साधकानां हितेच्छया ।
परायणजपं ब्रूहि यद्यहं तव वल्लभा ॥१५॥

पारायण जपविधिविषयक प्रश्न—श्रीदेवी ने कहा कि हे भगवन्! परमेशान

साधकों के हित के लिये पारायण जपविधि का वर्णन कीजिये, यदि आप मुझे अति प्रिय मानते हों।।१५।।

पारायणजपनिर्णयः

श्रीभैरव उवाच

देवि पारायणं वक्ष्ये विद्याजपफलाप्तये।
येन सिद्धियुतो मन्त्री भवेद्भैरवसन्निभः ॥१६॥
असंख्याताश्च विख्याताः पारायणजपाः प्रिये।
तेषां तत्त्वं परं वक्ष्ये येन ब्रह्ममयो भवेत् ॥१७॥
पारायणस्तु स जपः सम्यग् यद् ब्रह्मचिन्तनम्।
तस्यैव सगुणस्यात्र चिन्तनं घटिकाजपः ॥१८॥
द्विविधोऽयं जपो देवि सगुणो निर्गुणस्तथा।
सिद्धः साध्य इति स्मृत्वा जपेत् पारायणं मनुम् ।१९॥
कलेर्युगारम्भदिने दिनेशो हृल्लेखबीजेऽभ्युदितो बभूव।
तदादि नित्यं घटिकैकमानात् प्रत्यक्षरं याति दिने दिनेऽर्कः ॥२०॥
नवार्णमन्त्रावलिमेति सूर्यो मध्यन्दिने सायमथ प्रभाते।
त्रिभागमाद्यन्तरयोस्तथान्ते विधाय मन्त्रस्य जपेन्मुमुक्षुः ॥२१॥
एकादिपञ्चाशतिवर्णपङ्क्त्या संयोज्य मन्त्रस्य नवाक्षराणि।
घटीप्रमाणाः कुलमातृकाया भवन्ति वर्णा मनुराजसिद्धौ ॥२२॥
आई-विभूषितां कृत्वा मातृकां हंसभूषिताम्।
मूलविद्यां जपेन्मन्त्री शिवशक्तिमयीं शिवे ॥२३॥
पञ्चनादान् परित्यज्य यो जपेत् षोडशाक्षरम्।
पञ्चषष्ट्यक्षरीमूलान् पञ्चनादात्मको भवेत् ॥२४॥
आदितो देवि विद्यादौ विद्यामध्ये तदग्रतः।
विद्यान्तेऽपि त्यजेद्विद्यां शिवरूपां शिवो भवेत् ॥२५॥
शहके विश्वरूपोऽपि सूर्योऽकारे तदोदितः।
तदा प्रभृति लोकेऽस्मिन् मातृकासु चरेद्रविः ॥२६॥
वासनावशतस्त्र्यक्षो वह्नितेजोमयो भवेत्।
लक्ष्मीं प्राप्य शिवो मन्त्री सौभाग्यान्तां यथाक्रमम् ॥२७॥
पयोदविद्यया विद्यामाई-पल्लवितां क्रमात्।
हंसान्तां सञ्जपेद् देवि मन्त्री मातृकया सदा ॥२८॥
अयं पारायणो नाम जपः सिद्धिप्रदः कलौ।

महाश्रीषोडशीविद्यामष्टभूतिमयीं पराम् ॥२९॥
वेदादिभूतां प्रजपेन्मातृकाभिः कुलाश्रयः ।
इदं रहस्यं परमं पारायणजपात्मकम् ।
ब्रह्मविद्यालयोत्थानं नाख्येयं ब्रह्मवादिभिः ॥३०॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये पारायणजपविधि-
निरूपणं नामाष्टमः पटलः॥८॥

पारायण-जपनिरूपण—श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! विद्या जप-फलप्राप्ति के लिये मैं पारायण का वर्णन करता हूँ। पारायण जप से साधक सिद्धि प्राप्त करके भैरव-तुल्य हो जाता है। हे प्रिये! पारायण जप अगणित प्रकार के विख्यात हैं। अत: उनके उस परम तत्त्व का वर्णन करता हूँ, जिससे साधक ब्रह्ममय हो जाता है। जैसे सम्यक् ब्रह्म का चिन्तन होता है, वैसे ही पारायण जप होता है। इसमें सगुण ब्रह्म का चिन्तन प्रत्येक घटि के जप से होता है। पारायण जप दो प्रकार का होता है, एक सगुण और दूसरा निर्गुण। मन्त्र का सिद्ध, साध्य का निर्णय करके पारायण जप करना चाहिये, कलियुग के आरम्भ दिवस में 'ह्रीं' बीज में सूर्य का उदय हुआ। उस दिन से प्रारम्भ होकर एक-एक घटि के मान से प्रत्येक अक्षर व्यतीत होता है। इस क्रम से प्रत्येक अक्षर को सूर्य पार करता है। नवार्ण मन्त्रावलि में सूर्य मध्याह्न, तब सायं तब प्रभात काल में रहता है। मुमुक्षु इस प्रकार दिनों का तीन भाग करके अर्थात् मध्याह्न से शाम तक, शाम से प्रभात तक और प्रभात से मध्याह्न तक के तीन भागों में मन्त्रजप करे। इक्यावन वर्णों के साथ नवार्ण के नव अक्षरों को जोड़कर साठ घटि की प्रत्येक घटि में कुलमातृकाओं की स्थिति होने से मन्त्रराज सिद्ध होता है। मन्त्र के साथ 'आईं' लगाकर मातृका के साथ हंस जोड़कर शिव-शक्तिमयी विद्या का जप साधक करे। त्र्यक्षरी बाला मन्त्र 'ऐं क्लीं सौः' की जपविधि निम्न प्रकार की होगी; इसी प्रकार की विधि अन्य मन्त्रों की भी होगी—

१. ऐं क्लीं सौ अ आई हंस:
२. ऐं क्लीं सौ आ आई हंस:
३. ऐं क्लीं सौ इ आई हंस:
४. ऐं क्लीं सौ ई आई हंस:
५. ऐं क्लीं सौ उ आई हंस:
६. ऐं क्लीं सौ ऊ आई हंस:
७. ऐं क्लीं सौ ऋ आई हंस:
८. ऐं क्लीं सौ ॠ आई हंस:
९. ऐं क्लीं सौ ऌ आई हंस:
१०. ऐं क्लीं सौ ॡ आई हंस:
११. ऐं क्लीं सौ ए आई हंस:
१२. ऐं क्लीं सौ ऐं आई हंस:
१३. ऐं क्लीं सौ ओ आई हंस:
१४. ऐं क्लीं सौ औ आई हंस:
१५. ऐं क्लीं सौ अं आई हंस:
१६. ऐं क्लीं सौ अ: आई हंस:

१७. ऐं क्लीं सौ काई हंसः
१८. ऐं क्लीं सौ खाई हंसः
१९. ऐं क्लीं सौ गाई हंसः
२०. ऐं क्लीं सौ घाई हंसः
२१. ऐं क्लीं सौ ङाई हंसः
२२. ऐं क्लीं सौ चाई हंसः
२३. ऐं क्लीं सौ छाई हंसः
२४. ऐं क्लीं सौ जाई हंसः
२५. ऐं क्लीं सौ झाई हंसः
२६. ऐं क्लीं सौ ञाई हंसः
२७. ऐं क्लीं सौ टाई हंसः
२८. ऐं क्लीं सौ ठाई हंसः
२९. ऐं क्लीं सौ डाई हंसः
३०. ऐं क्लीं सौ ढाई हंसः
३१. ऐं क्लीं सौ णाई हंसः
३२. ऐं क्लीं सौ ताई हंसः
३३. ऐं क्लीं सौ थाई हंसः
३४. ऐं क्लीं सौ दाई हंसः
३५. ऐं क्लीं सौ धाई हंसः
३६. ऐं क्लीं सौ नाई हंसः
३७. ऐं क्लीं सौ पाई हंसः
३८. ऐं क्लीं सौ फाई हंसः
३९. ऐं क्लीं सौ बाई हंसः
४०. ऐं क्लीं सौ भाई हंसः
४१. ऐं क्लीं सौ माई हंसः
४२. ऐं क्लीं सौ याई हंसः
४३. ऐं क्लीं सौ राई हंसः
४४. ऐं क्लीं सौ लाई हंसः
४५. ऐं क्लीं सौ वाई हंसः
४६. ऐं क्लीं सौ शाई हंसः
४७. ऐं क्लीं सौ षाई हंसः
४८. ऐं क्लीं सौ साई हंसः
४९. ऐं क्लीं सौ हाई हंसः
५०. ऐं क्लीं सौ लाई हंसः
५१. ऐं क्लीं सौ क्षाई हंसः
५२. ऐं क्लीं सौ ऐं आई हंसः
५३. ऐं क्लीं सौ ह्रीं आई हंसः
५४. ऐं क्लीं सौ क्लीं आई हंसः
५५. ऐं क्लीं सौ चां आई हंसः
५६. ऐं क्लीं सौ मुं आई हंसः
५७. ऐं क्लीं सौ डां आई हंसः
५८. ऐं क्लीं सौ यैं आई हंसः
५९. ऐं क्लीं सौ विं आई हंसः
६०. ऐं क्लीं सौ च्चें आई हंसः

इस जप के लिये १२ बजे दिन से १२ बजकर २४ मिनट तक प्रथम घटि, १२.२४ से १२.४८ तक दूसरी घटी और दूसरे दिन के ११.३६ से १२ बजे तक साठवीं घटी होती हैं।

पञ्च नादों को छोड़कर जो षोडशाक्षरी विद्या का जप करता है, उसे पैंसठ अक्षरों के साथ मूल विद्या का जप करना चाहिये। इससे उसका जप पञ्चनादात्मक होता है। षोडशाक्षरी विद्या के सोलह वर्णो के साथ 'ल क्ष' को छोड़कर 'अ' से 'ह' तक के ४९ वर्णों को जोडने से पैंसठ अक्षर होते हैं। इसके जप के अक्षर होते हैं—अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ़ ण त

थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं सकल ह्रीं। इनमें आई हस: मिलाकर जप करना चाहिये।

प्रारम्भ से विद्या के पहले, विद्या के बीच में और विद्या के आगे एवं पूरी विद्या के अन्त में मातृकाओं को लगाकर जो जप करता है, वह शिवस्वरूप स्वयं शिव हो जाता है। श ह क के विश्वरूप होने पर भी सूर्य का उदय 'अ'कार में होता है। इसके बाद आ इ ई से ल क्ष तक की मातृकाओं में सूर्य विचरता है। वासनावश त्र्यक्ष शिव अग्नि तेजरूप हो जाते हैं। इससे शिव मन्त्र का साधक वैभव और सौभाग्य प्राप्त करता है। अं से लेकर हं तक की मातृकाओं को आई और हंस: से पल्लवित करके मन्त्रजप करना चाहिये। कलियुग में यह नाम पारायाण जप सिद्धिप्रदायक है। महा श्री षोड़शी विद्या अष्ट भूतिमयी परा विद्या है। वैदिक मन्त्रों का जप भी कुलाश्रय से मातृकाओं के साथ किया जा सकता है।

यह पारायण जपात्मक परम रहस्य ब्रह्मविद्या का लय और उत्थान है। ब्रह्मवादियों को भी इसे नहीं बताना चाहिये।।१६-३०।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
पारायणजपविधिनिरूपण नामक अष्टम पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ नवमः पटलः

सम्पुटविधिः

श्रीभैरव उवाच

अथाहं सर्वमन्त्राणां वक्ष्ये सम्पुटसङ्क्रमम्।
यं विज्ञाय भवेद् देवि सर्वसौख्यमयः सुधीः ॥१॥

श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! अब मैं सभी मन्त्रों को सम्पुटित करने की विधि का वर्णन करता हूँ, जिसकी जानकारी होने से साधक सभी सुखों को प्राप्त करता है।।१।।

बालामन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

बालायाः शक्तिबीजं तु दद्यादादौ महेश्वरि।
बालात्रिपुरसुन्दर्याः सम्पुटाख्योऽस्त्ययं मनुः ॥२॥

बाला मन्त्र का सम्पुट मन्त्र—बाला मन्त्र के शक्तिबीज सौः को मन्त्र के पहले लगाने से इसका सम्पुट होता है। मन्त्र होता है—सौः ऐं क्लीं सौः।।२।।

त्रिकूटामन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

मायात्रयं पठेदन्ते त्रिकूटाया महेश्वरि।
साध्यस्त्रिपुरभैरव्याः सम्पुटाख्योऽस्त्ययं मनुः ॥३॥

त्रिपुरसुन्दरी मन्त्र का सम्पुट मन्त्र—त्रिकूटा पंचदशी मन्त्र के तीनों ह्रीं को मन्त्र के अन्त में लगाने से सम्पुट होता है। मन्त्र का स्वरूप होगा—कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकल ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं।।३।।

त्रिपुरभैरवीमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

शक्त्यादिकूटं मन्त्रस्य दद्यादादौ जपेन्मनुम्।
महात्रिपुरसुन्दर्या मन्त्रोऽयं सम्पुटाभिधः ॥४॥

महात्रिपुरसुन्दरी मन्त्र-सम्पुटन—उपरि वर्णित पञ्चदशी मन्त्र के शक्तिकूट 'सकलह्रीं' को मन्त्र के पहले लगाकर जप करने से महात्रिपुरसुन्दरी मन्त्र का सम्पुट होता है। मन्त्र होगा—सकलह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं।।४।।

दक्षिणकालीमन्त्रसम्पुटमन्त्रः

श्यामास्ति दक्षिणाकाली द्वाविंशत्यक्षरी शिवे।

सर्वदोषविनिर्मुक्ता पुरापि कथितं मया ॥५॥

दक्षिणकाली मन्त्र-सम्पुटन—श्यामा काली के बाईस अक्षर का मन्त्र सर्व दोषविनिर्मुक्त है, ऐसा मैंने पहले ही कहा है।।५।।

भद्रकालीमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

भद्रिकामञ्चले दत्त्वा जपेन्मूलं महेश्वरि।
भद्रकाल्या अयं मन्त्रः सम्पुटाख्योऽस्ति सुन्दरि ॥६॥

भद्रकाली मन्त्र-सम्पुटन—भद्रकाली मन्त्र के अन्त में 'भैं' लगाकर जप करने से इसका सम्पुटन होता है।।६।।

राजमातङ्गिनीमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

तारमन्ते जपेद् देवि त्रिवारं प्रोच्चरेत् सुधीः।
राजमातङ्गिनीदेव्याः सम्पुटाख्योऽस्त्ययं मनुः ॥७॥

राजमातङ्गिनी मन्त्र-सम्पुटन—राजमातङ्गिनी मन्त्र के अन्त में तीन बार 'ॐ' का उच्चारण करने से इसका सम्पुट होता है।।७।।

भुवनेश्वरीमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

विश्वान्ते च पराबीजं दशवारं पठेच्छिवे।
मन्त्रोऽयं भुवनेश्वर्याः सम्पुटाख्यः सुसिद्धिदः ॥८॥

भुवनेश्वरी मन्त्र का सम्पुटन—मन्त्र ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः के बाद 'ह्रीं' का उच्चारण दश बार करने से इसका सम्पुट होता है। सम्पुटित मन्त्र सुसिद्धिप्रद होता है।।८।।

उग्रतारामन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

तुरगं मूलमन्त्रादौ जपेत् पार्वति साधकः।
उग्रतारामनोरेष मन्त्रः श्रीसम्पुटाभिधः ॥९॥

उग्रतारा मन्त्र-सम्पुटन—उग्रतारा मन्त्र के पहले 'फट्' लगाकर जप करने से इसका सम्पुटन होता है।।९।।

छिन्नमस्तामन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

मायाद्वयं जपेदन्ते साधकः साधकेश्वरि।
मन्त्रोऽयं छिन्नमस्तायाः सम्पुटाख्योऽतिदुर्लभः ॥१०॥

छिन्नमस्ता मन्त्र-सम्पुटन—छिन्नमस्ता मन्त्र के अन्त में 'ह्रीं ह्रीं' लगाकर जप करने से दुर्लभ मन्त्र बनता है।।१०।।

उच्छिष्टमातङ्गी (सुमुखी) मन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्र:

पद्मत्रयं पठेदादौ मायामन्ते महेश्वरि।
देव्या उच्छिष्टमातङ्ग्या: सम्पुटाख्योऽस्त्ययं मनु:॥११॥

उच्छिष्टमातङ्गी मन्त्र-सम्पुटन—उच्छिष्टमातङ्गी मन्त्र के पहले 'ठ: ठ: ठ:' और अन्त में 'ह्रीं' लगाकर जप करने से मन्त्र सम्पुटित होता है।।११।।

सरस्वतीमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्र:

वाग्भवं च मनोरन्ते पठेत् साधकसत्तम:।
सरस्वत्या मनोर्देवि मन्त्रोऽयं सम्पुटाभिध: ॥१२॥

सरस्वती मन्त्र-सम्पुटन—सरस्वती मन्त्र के अन्त में 'ऐं' लगाकर जप करने से यह सम्पुटित मन्त्र बनता है।।१२।।

अन्नपूर्णामन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्र:

तारं कामं मनोरन्ते दद्यात् पार्वति साधक:।
अन्नपूर्णामनोरेष मनु: स्यात् सम्पुटाभिध: ॥१३॥

अन्नपूर्णा मन्त्र-सम्पुटन—अन्नपूर्णा मन्त्र के अन्त में 'ॐ क्लीं' लगाकर जप करने से यह मन्त्र सम्पुटित होता है।।१३।।

महालक्ष्मीमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्र:

वाग्भवं प्रथमं दद्यादन्ते दद्याच्च मन्मथम्।
देवताया महालक्ष्म्या: सम्पुटाख्योऽस्त्ययं मनु: ॥१४॥

महालक्ष्मी मन्त्र-सम्पुटन—अन्नपूर्णा मन्त्र के पहले 'ऐं' और बाद में 'क्लीं' लगाने से यह मन्त्र सम्पुटित होता है।।१४।।

शारिकामन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्र:

सिन्धुरं साधको दद्यान्मनोरन्ते महेश्वरि।
शारिकामूलमन्त्रस्य मन्त्र: सम्मुटकाभिध: ॥१५॥

शारिका मन्त्र-सम्पुटन—शारिक मन्त्र के अन्त में 'फ्रां' जोड़कर जप करने से यह मन्त्र सम्पुटित होता है।।१५।।

शारदामन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्र:

तारं कामं मनोरन्ते पठेत् साधकसत्तम:।
शारदाया: सरस्वत्या मन्त्रोऽयं सम्पुटाभिध: ॥१६॥

शारदा मन्त्र-सम्पुटन—शारदा सरस्वती मन्त्र के पहले 'ह्रीं' और बाद में 'ऐं' लगाने से यह सम्पुटित होता है।।१६।।

इन्द्राक्षीमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

शक्तिमादौ पठेन्मन्त्री वाणीमन्ते महेश्वरि ।
इन्द्राक्ष्या वज्रहस्ताया मन्त्रोऽयं सम्पुटाभिधः ॥१७॥

इन्द्राक्षी मन्त्र-सम्पुटन—इन्द्राक्षी मन्त्र के पहले 'सौः' और अन्त में 'ऐं' लगाने से यह मन्त्र सम्पुटित होता है।।१७।।

बगलामुखीमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

रसनां मृत्तिकाबीजं मनोरन्ते पठेत् सुधीः ।
श्रीदेव्या बगलामुख्या मन्त्रः सम्पुटकाभिधः ॥१८॥

बगलामुखी मन्त्र-सम्पुटन—बगलामुखी मन्त्र के बाद 'क्रीं ह्लीं' जोड़कर जप करने से यह मन्त्र सम्पुटित होता है।।१८।।

महातुरीमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

तारं दद्यान्मनोरन्ते जपेत् पार्वति साधकः ।
महातुर्या मनोरेष सम्पुटाख्योऽस्ति सिद्धिदः ॥१९॥

महातुरी मन्त्र-सम्पुटन—महातुरी मन्त्र के अन्त में 'ॐ' जोड़कर जप करने से यह मन्त्र सम्पुटित होता है।।१९।।

महाराज्ञीमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

वह्निं वाणीं पठेदन्ते जपेत् पार्वति साधकः ।
महाराज्ञ्या मनोरेष मनुः स्यात् सम्पुटाभिधः ॥२०॥

महाराज्ञी मन्त्र-सम्पुटन—महाराज्ञी मन्त्र के अन्त में 'रां ऐं' जोड़कर जप करने से यह मन्त्र सम्पुटित होता है।।२०।।

ज्वालामुखीमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

कूर्चमादौ हरं चान्ते जपेन्मूलं महेश्वरि ।
ज्वालामुख्या अयं मन्त्रः सम्पुटाख्योऽस्ति पार्वति ॥२१॥

ज्वालामुखी मन्त्र-सम्पुटन—ज्वालामुखी मन्त्र के पहले 'हूं' और बाद में 'फट्' लगाने से यह सम्पुटित होता है।।२१।।

भीड़ामन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

तारं शक्तिं मनोरन्ते ठद्वयं प्रथमं पठेत्।
सम्पुटाख्योऽस्त्ययं मन्त्रो भीडाया देवदुर्लभः॥२२॥

भीड़ा देवी मन्त्र-सम्पुटन—भीड़ा देवी मन्त्र के पहले 'स्वाहा' और बाद में 'ॐ सौः' लगाने से मन्त्र सम्पुटित होता है।।२२।।

कालरात्रिमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

कुरु-बीजं जपेदादौ विश्वान्ते प्रणवं पठेत्।
कालरात्रिमनोरेष मन्त्रः सम्पुटकारणम्॥२३॥

कालरात्रि मन्त्र-सम्पुटन—कालरात्रि मन्त्र के पहले कुरुबीज 'ऐं' और अन्त में 'ॐ' लगाकर जप करने से इसका सम्पुटन होता है।।२३।।

भवानीमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

रमां तारं पठेदन्ते कूर्चमादौ महेश्वरि।
भवानीमूलमन्त्रस्य सम्पुटोऽयं मयेरितः॥२४॥

भवानी मन्त्र-सम्पुटन—भवानी मन्त्र के पहले 'हूं' और अन्त में 'श्रीं ॐ' लगाने से यह मन्त्र सम्पुटित होता है।।२४।।

वज्रयोगिनीमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

तारादौ सकलां दद्यादन्ते तारं जपेत् प्रिये।
सम्पुटो वर्णितो देवि श्रीवज्रयोगिनीमनोः॥२५॥

वज्रयोगिनी मन्त्र-सम्पुटन—वज्रयोगिनी मन्त्र के पहले 'ॐ ह्रीं' और बाद में 'ॐ' लगाने से यह मन्त्र सम्पुटित होता है।।२५।।

धूम्रवाराहीमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

मठबीजं जपेदादौ मन्त्रान्ते पङ्कजं जपेत्।
मन्त्रोऽयं धूम्रवाराह्याः सम्पुटाख्यो मयेरितः॥२६॥

धूम्रवाराही मन्त्र-सम्पुटन—धूम्रवाराही मन्त्र के पहले 'ग्लौं' और अन्त में 'ठः' लगाने से यह मन्त्र सम्पुटित होता है।।२६।।

सिद्धलक्ष्मीमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

कामराजं जपेदादौ विश्वान्ते वाग्भवं जपेत्।
सिद्धलक्ष्मीमनोरेष सम्पुटो वर्णितो मया॥२७॥

सिद्धलक्ष्मी मन्त्र-सम्पुटन—सिद्धलक्ष्मी मन्त्र के पहले 'क्लीं' और बाद में 'ऐं' लगाने से इसका सम्पुटन होता है।।२७।।

कुलवागीश्वरीमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

स्पृहामादौ जपेद् देवि वनान्ते पङ्कजं जपेत्।
मन्त्रोऽयं सम्पुटाख्योऽस्ति कुलवागीश्वरीमनोः ॥२८॥

कुलवागीश्वरी मन्त्र-सम्पुटन—कुलवागीश्वरी मन्त्र के पहले 'झं' और बाद में 'ठः' लगाकर जप से यह सम्पुटित होता है।।२८।।

पद्मावतीमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

कामराजं जपेदादौ वनान्ते सकलां जपेत्।
पद्मावतीमनोरेष मन्त्रः स्यात् सम्पुटाभिधः ॥२९॥

पद्मावती मन्त्र-सम्पुटन—पद्मावती मन्त्र के पहले 'क्लीं' और बाद में 'ह्रीं' लगाने से यह सम्पुटित होता है।।२९।।

कुब्जिकामन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

वागुरां प्रणवादौ च वनान्ते पङ्कजं जपेत्।
कुब्जिकामूलमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं सम्पुटाभिधः ॥३०॥

कुब्जिका मन्त्र-सम्पुटन—कुब्जिका मन्त्र के पहले 'प्रीं ॐ' और बाद में ठः लगाने से यह सम्पुटित होता है।।३०।।

गौरीमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

मठमादौ महादेवि ठद्वयान्ते शिवं जपेत्।
गौरीमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं सम्पुटो वर्णितो मया ॥३१॥

गौरी-मन्त्र का सम्पुटन—गौरी-मन्त्र के पहले 'ग्लौं' और अन्त में 'स्वाहा' लगाने से यह मन्त्र सम्पुटित होता है।।३१।।

खेचरीमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

विश्वान्ते सञ्जपेत् कूटं कूटादौ शरदं जपेत्।
खेचरीमूलमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं सम्पुटाभिधः ॥३२॥

खेचरी मन्त्र-सम्पुटन—खेचरी मन्त्र के अन्त में 'सौ क्लीं' लगाकर जप करने से यह मन्त्र सम्पुटित होता है।।३२।।

नीलसरस्वतीमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्र:

कूर्चं जपेन्मनोरादौ वनान्ते तुरगं जपेत्।
मनोर्नीलसरस्वत्या: सम्पुटो वर्णितो माया॥३३॥

नीलसरस्वती मन्त्र-सम्पुटन—नीलसरस्वती मन्त्र के पहले 'हू' और बाद में 'फट्' लगाने से यह मन्त्र सम्पुटित होता है॥३३॥

पराशक्तिमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्र:

वाग्भवं प्रथमं देवि प्रणवं ठद्वयाञ्चले।
पराशक्तिमनोरेष मन्त्र: सम्पुटकारणम्॥३४॥

पराशक्ति मन्त्र-सम्पुटन—परा शक्ति मन्त्र के पहले ऐं और स्वाहा के बाद ॐ लगाने से यह मन्त्र सम्पुटित होता है॥३४॥

शैवमन्त्रसम्पुटनप्रकारकथनम्

निष्कीलितानां मन्त्राणां शैवानां कुलपूजिते।
सर्वसाधारणं वक्ष्ये सम्पुटं सुरपूजिते॥३५॥

शैव मन्त्र—भैरव ने कहा कि हे सुरपूजिते! कुलपूजिते!! शैव मन्त्र कीलित नहीं हैं। सर्व साधारण के लिए उन मन्त्रों के सम्पुटन मन्त्र को कहता हूँ॥३५॥

सामान्यशैवमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्र:

तारद्वयं जपेदादौ मध्ये नामाञ्चले पराम्।
सर्वेषां शैवमन्त्राणां सम्पुटाख्योऽस्त्ययं मनु:॥३६॥

सामान्य शैव मन्त्र-सम्पुटन—सभी शैव मन्त्रों के प्रारम्भ में दो बार 'ॐ' का जप और मध्य में नाम के बाद 'ह्रीं' के जप से मन्त्र सम्पुटित होता है। जैसे—ॐ भैरवाय नम: का सम्पुटित रूप होगा—ॐ ॐ ॐ भैरवाय ह्रीं नम:॥३६॥

मृत्युञ्जयमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्र:

तारं हृज्जं पठेन्मध्ये पालय-द्वयमादित:।
मृत्युञ्जयमनोरेष सम्पुटो वर्णितो मया॥३७॥

मृत्युञ्जय मन्त्र-सम्पुटन—मृत्युजंय में 'पालय पालय' के पहले 'ॐ जूं' लगाने से मन्त्र होता है—ॐ जूं स: ॐ जूं पालय पालय स: ॐ। यही मृत्युञ्जय का सम्पुटित मन्त्र है॥३७॥

अमृतेश्वरमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

विश्वमादौ महादेवि शक्तिमन्ते जपेत् सुधीः ।
अमृतेश्वरमन्त्रस्य सम्पुटाख्योऽस्त्ययं मनुः ॥३८॥

अमृतेश्वर मन्त्र-सम्पुटन—अमृतेश्वर मन्त्र के पहले 'ऐं ऐं' और अन्त में 'सौः' लगाकर जप करने से इस मन्त्र का सम्पुटन होता है। मन्त्र इस प्रकार बनता है—ऐं ऐं ॐ जूं फट् अमृतेशाय नमः सौः।।३८।।

वटुकभैरवमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

कुरु-द्वयादौ प्रणवं परान्तेऽपि कुरु-द्वयम् ।
सम्पुटाख्यो मनुः प्रोक्तो वटुकस्य मया शिवे ॥३९॥

वटुक मन्त्र-सम्पुटन—वटुक मन्त्र में 'ॐ' के पहले 'कुरु कुरु' और अन्त में 'कुरु कुरु' लगाने से मन्त्र सम्पुटित होता है।।३९।।

नीलकण्ठमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

हरितं द्विः समुच्चार्य मध्ये नाम ततः पराम् ।
मन्त्रोऽयं नीलकण्ठस्य सम्पुटाख्यो मयेरितः ॥४०॥

नीलकण्ठ मन्त्र-सम्पुटन—नीलकण्ठ मन्त्र के पहले 'ह्सौः ह्सौः' लगाकर मध्य में चतुर्थ्यन्त नीलकण्ठ नाम के बाद 'ह्रीं' लगाने से यह मन्त्र सम्पुटित होता है। जैसे—ह्सौः ह्सौः ॐ ह्सौः ह्रां नीलकण्ठाय ह्रीं नमः।।४०।।

सद्योजातमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

तारमन्ते परामादौ जपेत् साधकसत्तमः ।
सद्योजातस्य मन्त्रस्य मन्त्रोऽयं सम्पुटाभिधः ॥४१॥

सद्योजात मन्त्र-सम्पुटन—सद्योजात मन्त्र के पहले 'ह्रीं' और अन्त में 'ॐ' लगाने से मन्त्र सम्पुटित होता है।।४१।।

महागणपतिमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

परात्रयं शिवान्ते च प्रणवान्ते शिवत्रयम् ।
महागणपतेरेष मन्त्रः सम्पुटकारकः ॥४२॥

महागणपति मन्त्र-सम्पुटन—मन्त्र है—ह्रीं गं ह्रीं गणपतये नमः। महागणपति मन्त्र में 'गं' के बाद तीन 'ह्रीं' और 'नमः' के बाद तीन 'गं' लगाने से मन्त्र सम्पुटित होता है। जैसे—ह्रीं गं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं गणपतये नमः ॐ गं गं गं।।४२।।

अघोरभैरवमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

विश्वबीजं जपेदादौ विश्वमन्ते जपेत् प्रिये।
मन्त्रोऽस्त्यघोरदेवस्य वर्णितः सम्पुटाभिधः ॥४३॥

अघोर मन्त्र-सम्पुटन—अघोर मन्त्र के पहले 'नम:' और अन्त में 'नम:' लगाकर जप करने से मन्त्र सम्पुटित होता है।।४३।।

कामेश्वरमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

कूटमादौ महादेवि कूटान्ते वाग्भवं जपेत्।
श्रीकामेश्वरमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं सम्पुटाभिधः ॥४४॥

कामेश्वर मन्त्र-सम्पुटन—कामेश्वर मन्त्र के कूटों के पहले और बाद में 'ऐं' लगाकर जप करने से मन्त्र सम्पुटित होता है। जैसे—ऐं ऐं क्लीं सौ: ऐं ऐं ॐ श्रीं ह्रीं कामेश्वर ह्रीं श्रीं ॐ ऐं ऐं सौ: क्लीं ऐं ऐं।।४४।।

एतेषामपि मन्त्राणां शैवानां कुलनायिके।
निष्कीलितो महाकालमन्त्रो दोषविवर्जितः ॥४५॥

हे कुलनायिके! इन समस्त शैव मन्त्रों में महाकाल का मन्त्र कीलित नहीं है; अत: वह दोषवर्जित है।।४५।।

वैष्णमन्त्रसम्पुटनप्रकारकथनम्

अधुना वैष्णवानां ते मन्त्राणां परमेश्वरि।
वक्ष्ये सम्पुटमन्त्रांश्च साधकानां हितेच्छया ॥४६॥

वैष्णव मन्त्र—हे परमेश्वरि! अब में साधकों के हित के लिये वैष्णव मन्त्रों के सम्पुटीकरण को बतलाता है।।४६।।

लक्ष्मीनारायणमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

नामान्ते कमलां देवि विश्वान्ते प्रणवं जपेत्।
लक्ष्मीनारायणमनोर्मन्त्रोऽयं सम्पुटाभिधः ॥४७॥

लक्ष्मीनारायण मन्त्र-सम्पुटन—लक्ष्मीनारायण-मन्त्र में नाम के अन्त में 'श्रीं' और 'नम:' के बाद 'ॐ' जोड़कर जप करने से मन्त्र सम्पुटित होता है। जैसे—ॐ ह्रीं ह्सौ: ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायण श्रीं नम: ॐ।।४७।।

राधाकृष्णमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

हरमादौ महादेवि ठद्वयान्ते रमां जपेत्।
श्रीराधाकृष्णमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं सम्पुटाभिधः ॥४८॥

राधाकृष्ण मन्त्र-सम्पुटन—राधाकृष्ण मन्त्र के पहले 'फट्' और अन्त में 'श्रीं' लगाकर जप करने से यह मन्त्र सम्पुटित होता है।।४८।।

विष्णुमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

तारमन्ते जपेदादौ विश्वं विश्वसमर्चिते।
श्रीविष्णुमूलमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं सम्पुटाभिधः ॥४९॥

विष्णु मन्त्र-सम्पुटन—श्रीविष्णु मन्त्र के पहले 'नमः' और अन्त में 'ॐ' लगाकर जप करने से इसका सम्पुटन होता है।।४९।।

लक्ष्मीनृसिंहमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

स्मरमादौ जपेद् देवि रमाबीजं तथाञ्चले।
लक्ष्मीनृसिंहमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं सम्पुटाभिधः ॥५०॥

लक्ष्मीनृसिंह मन्त्र-सम्पुटन—लक्ष्मीनृसिंह मन्त्र के पहले 'क्लीं' और अन्त में 'श्रीं' लगाकर जप करने से यह मन्त्र सम्पुटित होता है।।५०।।

लक्ष्मीवराहमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

विश्वमादौ मनोर्देवि नाम्नोऽग्रे सकलां जपेत्।
लक्ष्मीवराहमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं सम्पुटाभिधः ॥५१॥

लक्ष्मीवराह मन्त्र का सम्पुटन—लक्ष्मीवराह मन्त्र के पहले 'क्लीं' और अन्त में 'श्रीं' लगाने से यह मन्त्र सम्पुटित होता है।।५१।।

भार्गवराममन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

सरोजं प्रथमं देवि वनान्ते च रमां जपेत्।
जामदग्न्यमनोरेष मन्त्रः सम्पुटकारकः ॥५२॥

परशुराम मन्त्र-सम्पुटन—जामदग्न्य परशुराम मन्त्र के पहले 'ठः' और अन्त में 'श्रीं' लगाने से यह मन्त्र सम्पुटित होता है।।५२।।

सीताराममन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्रः

तारमन्ते वनं चादौ जपेत् साधकसत्तमः।
श्रीसीताराममन्त्रस्य मन्त्रोऽयं सम्पुटाभिधः ॥५३॥

सीताराम मन्त्र-सम्पुटन—सीताराम मन्त्र के पहले 'नमः' और अन्त में 'ॐ' लगाकर जप करने से यह मन्त्र सम्पुटित होता है।।५३।।

जनार्दनमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्र:

विश्वान्ते नाम देवेशि मायुगं प्रथमं जपेत्।
श्रीजनार्दनमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं सम्पुटाभिध: ॥५४॥

श्री जर्नादन मन्त्र-सम्पुटन—श्री जनार्दन मन्त्र के पहले 'श्रीं श्रीं' और अन्त में नाद 'ॐ' लगाकर जप करने से यह मन्त्र सम्पुटित होता है।।५४।।

विश्वक्सेनमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्र:

परमादौ परामन्ते जपेत् साधकनायक:।
विश्वक्सेनमनोरेष मन्त्र: सम्पुटकारक: ॥५५॥

विश्वक्सेन मन्त्र-सम्पुटन—विश्वक्सेन मन्त्र के पहले 'ह्रीं' और अन्त में 'ह्रीं' लगाकर जप करने से यह मन्त्र सम्पुटित होता है।।५५।।

वासुदेवमन्त्रसम्पुटीकरणमन्त्र:

वाणीमादौ जपेद् देवि लक्ष्मीमन्ते महेश्वरि।
श्रीवासुदेवमन्त्रस्य मन्त्रोऽयं सम्पुटाभिध: ॥५६॥

श्री वासुदेव मन्त्र-सम्पुटन—श्री वासुदेव मन्त्र के पहले 'ऐं' और अन्त में 'श्रीं' लगाकर जप करने से यह मन्त्र सम्पुटित होता है।।५६।।

इतीदं मन्त्रसर्वस्वं रहस्यं तत्त्वमुत्तमम्।
तव स्नेहेन निर्णीतं गोपनीयं मुमुक्षुभि: ॥५७॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये सम्पुटविधिनिरूपणं
नाम नवम: पटल:॥९॥

यह वर्णन मन्त्रसर्वस्व और उत्तम तत्त्व का रहस्य है। तुम्हारी भक्ति के वश में होकर मैंने इसका वर्णन किया है। मुमुक्षुओं के लिये भी यह गोपनीय है।।५७।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में
सम्पुटविधिनिरूपण नामक नवम पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ दशमः पटलः

पुरश्चरणविधिः

पुरश्चरणसाधनम्

श्रीभैरव उवाच

अधुना देवि वक्ष्येऽहं पुरश्चरणसाधनम्।
येन साधितमात्रेण मन्त्रः सिद्धिप्रदो भवेत्॥१॥
जीवहीनो यथा देही सर्वकर्मसु न क्षमः।
पुरश्चरणहीनो हि न मन्त्रः सिद्धिदायकः॥२॥
वर्णलक्षं जपेन्मन्त्रं तदर्धं वा महेश्वरि।
एकलक्षावधिं कुर्यान्नातो न्यूनं कदाचन॥३॥

पुरश्चरण-साधन—श्रीभैरव ने कहा कि हे देवि! अब मैं पुरश्चरण-साधन का वर्णन करता हूँ, जिसकी साधना करने से मन्त्र सिद्धिप्रदायक होते हैं। देहरहित जीव जैसे सभी कर्मों को करने में सक्षम नहीं होता, वैसे ही पुरश्चरण के बिना मन्त्र सिद्धिदायक नहीं होते हैं। मन्त्र के प्रत्येक वर्ण पर एक लाख जप अथवा उसका आधा पचास हजार जप तब तक करना चाहिये, जब तक एक लाख की संख्या पूर्ण न हो जाय। कभी भी इससे कम जप नहीं करना चाहिये।।१-३।।

पुरश्चरणस्थाननिर्णयः

वटेऽरण्ये श्मशाने च शून्यागारे चतुष्पथे।
अर्धरात्रेऽपि मध्याह्ने पुरश्चरणमारभेत्॥४॥
सुदिने शुभनक्षत्रे सुमुहूर्ते महेश्वरि।
स्वगुरुं पूजयित्वादौ पुरश्चर्यां समारभेत्॥५॥

पुरश्चरण-स्थान—जङ्गल में, वटवृक्ष के नीचे, श्मशान में, शून्य गृह में, चौराहे पर आधी रात में या मध्याह्न में पुरश्चरण का प्रारम्भ करना चाहिये। हे महेश्वरि! शुभ दिन, शुभ नक्षत्र, शुभ मुहूर्त में पहले गुरुपूजन करने के पश्चात् पुरश्चरण का प्रारम्भ करना चाहिये।।४-५।।

पुरश्चरणयन्त्रकथनम्

गुरोराज्ञां समादाय स्नात्वा वेदीं चरेत् सुधीः।
चतुष्कोणामीशदिशि स्वहस्तपरिविस्तृताम्॥६॥

तत्र लिप्त्वा महादेवि सिन्दूरेणाष्टगन्धकैः।
लिखेद् बिन्दुत्र्यस्रमादौ षडश्रं वृत्तमण्डलम् ॥७॥
वसुपत्रं रवृत्ताढ्यं भूगेहेनोपशोभितम्।
पुरश्चर्यायन्त्रमेतद्वदितं गिरिजे मया ॥८॥

पुरश्चरण-यन्त्र—पुरश्चरण के लिये गुरु की आज्ञा प्राप्त करके स्नान करे। तब वेदी बनावे। अपने हाथ के बराबर लम्बी-चौड़ी चौकोर वेदी पूजास्थल के ईशान कोण में बनावे। उस वेदी को लीप-पोत कर सिन्दूर या अष्टगन्ध से वेदी पर बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, अष्टदल वृत्त और भूपुर बनावे। हे गिरिजे! इस प्रकार यह पुरश्चरण-यन्त्र का वर्णन मेरे द्वारा किया गया।।६-८।।

पुरश्चरणयन्त्रम्
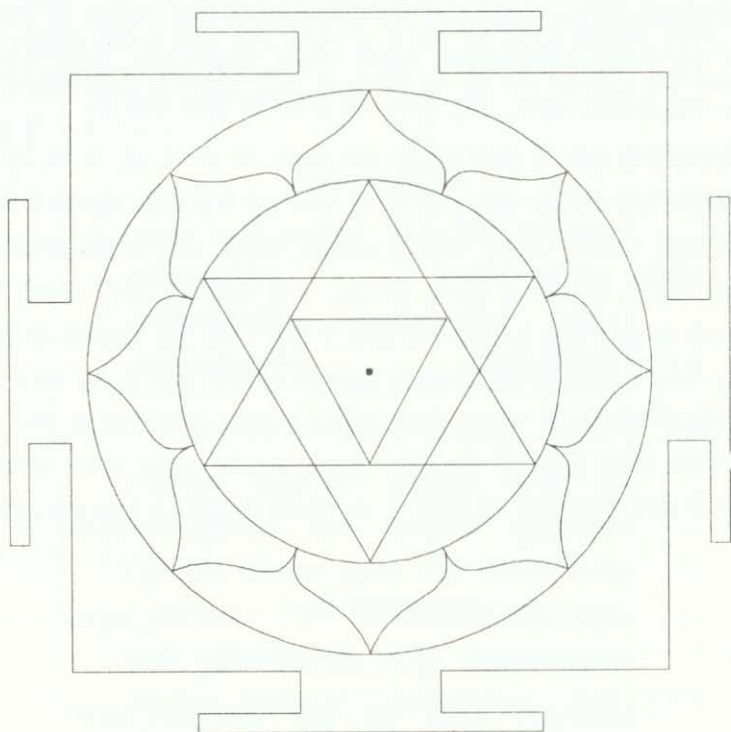
पुरश्चरणयन्त्रपूजाप्रकारः

सर्वसाधारणं पूज्यं साधकैस्तत्त्वदर्शिभिः।
इन्द्राग्नियममांसाद-वरुणानिलवित्तदाः ॥९॥

सेश्वरालरय(ट)क्षाभ्रयसहंबीजमण्डिताः ।
पूज्या सहेतयो देवि धराभवनमण्डले ॥१०॥
ब्राह्मी च वैष्णवी रौद्री कौमारी नारसिंहिका ।
वाराही चण्डिका देवि पूजनीयापराजिता ॥११॥
सभैरवा वसुदले वामावृत्त्या मुमुक्षुभिः ।
पार्वती कुब्जिका दुर्गा चामुण्डा नीलतारिणी ॥१२॥
कात्यायनी पूजनीया षडश्रेषु महत्तरैः ।
गङ्गा च यमुना देवि पूज्या त्र्यश्रे सरस्वती ॥१३॥
बिन्दौ पूज्या च सशिवा साधकैरिष्टदेवता ।
मूलमन्त्रेण गन्धार्घ्यपुष्पधूपादिदीपकैः ॥१४॥

यन्त्रपूजन-विधि—सर्वसाधारण और तत्त्वदर्शियों के द्वारा यन्त्रपूजा को निश्चित क्रम में भूपुर के पूर्व, अग्नि, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान में इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर और ईशान का पूजन होता है।

दिक्पालों के पूजन में उनके नाम के साथ क्रमशः लं, रं, यं, क्षं, वं, यं, कुं, हं बीज लगाकर मन्त्र बनते हैं। इनके अस्त्रों का भी पूजन भूपुर में होता है। अष्टदल में भैरवों के साथ ब्राह्मी, वैष्णवी, माहेश्वरी, कौमारी, नारसिंही, वाराही, चामुण्डा और अपराजिता की पूजा होती है। षट्कोण में पार्वती, कुब्जिका, दुर्गा, चामुण्डा, नील, तारिणी और कात्यायनी का पूजन होता है। त्रिकोण के कोनों में गंगा, यमुना और सरस्वती का पूजन होता है। बिन्दु में शिवा के साथ साधक के इष्टदेवता का पूजन होता है। यह पूजन मूल मन्त्र से गन्ध, अर्घ्य, पुष्प, धूपादि दीपक से होता है।।९-१४।।

तत्र बिन्दौ न्यसेद्यन्त्रं स्वेष्टदेव्या महेश्वरि ।
वेदीविदिक्षु संस्थाप्य मन्त्री घटचतुष्टयम् ॥१५॥
मूलेन साधको देवि यवान् सम्मन्त्र्य धापयेत् ।
वह्निनिर्ऋतिवातेशक्रमेणैवं समर्चयेत् ॥१६॥
गणेशं भारतीं दुर्गां क्षेत्रपालं घटेषु च ।
स्वस्वमूलेन देवेशि तत्र पूजां तथाह्निकीम् ॥१७॥
कुर्यात्तदग्रतो देवि पुरश्चरणमारभेत् ।
श्रीचक्रं पूजयित्वादौ ततः कुर्याज्जपं सुधीः ॥१८॥

हे महेश्वरि! यन्त्र के बिन्दु में साधक अपने इष्टदेवता का न्यास करे। वेदी के अग्नि,

नैर्ऋत्य, वायव्य और ईशान कोणों में चार कलशों को स्थापित करे। मूल मन्त्र से यव को अभिमन्त्रित करके घट के नीचे वपन करे। कलशपूजन अग्नि, नैर्ऋत्य, वायव्य और ईशान में क्रम से करे। कलशों में गणेश, सरस्वती, दुर्गा और क्षेत्रपाल का पूजन उनके मूल मन्त्रों से करे। तब आह्निकी पूजन करे। वेदी पर यन्त्रपूजन करके उसके सामने बैठकर पुरश्चरण जप प्रारम्भ करे।।१५-१८।।

शान्तो दम्भं तथा लौल्यं त्यजेन्मन्त्रस्य सिद्धये।
ब्रह्मचर्यधरो मन्त्री ध्यायन् देवीं वरप्रदाम्॥१९॥
जपेन्मूलं वशी लक्षं नियमेन समाहितः।
हविष्याशी महादेवि ततः सिद्धमनुर्भवेत्॥२०॥

पुरश्चरण-काल में साधक शान्त रहे। दम्भ और लालच का त्याग कर दे। ब्रह्मचर्य रखे। वरप्रदा देवी का ध्यान करके मन्त्रसिद्धि के लिये जप करे। हे महादेवि! साधक नियम से समाहित होकर हविष्याशी होकर एक लाख जप मूल मन्त्र का करे। तभी मन्त्र सिद्ध होता है।।१९-२०।।

जपान्ते तर्पणादिविधिः

जप्त्वा मन्त्री मन्त्रराजं हुत्वा देवि दशांशतः।
तर्पयेत्तद्दशांशेन मार्जयेत्तद्दशांशतः॥२१॥
भोजयेत्तद्दशांशेन मन्त्रसिद्धिर्भवेद् ध्रुवम्।
अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते॥२२॥

जप के बाद हवन-तर्पण—हे देवि! साधक मन्त्रजप के बाद दशांश हवन करे। हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश ब्राह्मणभोजन कराये। ऐसा करने से मन्त्रसिद्धि निश्चित रूप से मिलती है। अथवा दूसरे प्रकार से पुरश्चरण करे।।२१-२२।।

पुरश्चरणप्रकारान्तरम्

रात्रौ परस्त्रियं बालां श्यामां वा मदनातुराम्।
आनीय पूजयेन्मन्त्री यथोक्तविधिना शिवे॥२३॥
नग्नो मुक्तकचो धीरो मधुपानपरायणः।
शक्तिवक्षःसमाश्लिष्टो जपेन्मूलं यथाविधि॥२४॥
लक्षमेकं दशांशेन संस्कृतं होमतर्पणैः।
मन्त्रसिद्धिर्भवेत्तस्य देवानामपि दुर्लभा॥२५॥

पुरश्चरण-प्रकारान्तर—हे शिवे! रात में मदनातुर परस्त्री, बाला या श्यामा को लाकर यथोक्त विधि से उसका पूजन करे। तब नग्न होकर केश को खुला रखकर धैर्यपूर्वक मद्यपान करके उक्त शक्ति को अपनी छाती से सटाकर यथाविधि मूल मन्त्र का जप करे। इस विधि से मन्त्र का एक लाख जप करे। संस्कृत अग्नि में उसका दशांश अर्थात् दश हजार हवन करे। हवन का दशांश तर्पण करे। तर्पण का दशांश मार्जन करे। मार्जन का दशांश ब्राह्मणभोजन कराये। ऐसा करने से साधक को देवताओं को भी दुर्लभ मन्त्रसिद्धि प्राप्त होती है।।२३-२५।।

पुरश्चरणप्रकारान्तरम्

अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते।
पुत्रजन्मोत्सवदिने सूतिकाकुलमन्दिरे ॥२६॥
मान्त्रिको मूलमन्त्रं स्वं जपेद् दशदिनावधि।
दशांशसंस्कृतं मन्त्रं कुर्यात् सिद्धो भवेन्मनुः ॥२७॥

अन्य प्रकार का पुरश्चरण—एक अन्य प्रकार के पुरश्चरण का वर्णन करता हूँ। पुत्रजन्मोत्सव के दिन से सूतिका गृह में दस दिनों तक इष्ट मन्त्र का जप करे। दशांश हवन, तर्पण, मार्जन, ब्राह्मणभोजन कराने से मन्त्र सिद्ध होता है।।२६-२७।।

पुरश्चरणप्रकारान्तरम्

अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते।
मृतकाशौचदिवसे प्रथमे साधको जपेत् ॥२८॥
मनुं वशी दिने रात्रौ वीरो भूत्वा यथार्थतः।
एकादशेऽहनि सुधीः कुर्यान्मन्त्रं तु संस्कृतम् ॥२९॥
कर्मणा मनसा वाचा मन्त्रः कल्पद्रुमो भवेत्।

अन्य प्रकार का पुरश्चरण—एक अन्य प्रकार के पुरश्चरण का वर्णन करता हूँ। मृतक अशौच के प्रथम दिन से दसवें दिन तक साधक मन्त्रजप दिन-रात करे। यथार्थ रूप से वीर के समान साधना करे। ग्यारहवें दिन मनसा-वाचा-कर्मणा मन्त्र का संस्कार, हवन-तर्पणादि करे। इससे साधक का मन्त्र कल्पवृक्ष के समान हो जाता है।।२८-२९।।

पुरश्चरणप्रकारान्तरम्

अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥३०॥
सूर्योदयात् समारभ्य यावत् सूर्योदयान्तरम्।
तावज्जप्त्वा निरातङ्को मन्त्रः कल्पद्रुमो भवेत् ॥३१॥

अन्य प्रकार का पुरश्चरण—अन्य प्रकार के पुरश्चरण का वर्णन करता हूँ।

सूर्योदय से प्रारम्भ करके दूसरे दिन के सूर्योदय तक निर्भय होकर मन्त्र का जप करे। इससे मन्त्र कल्पवृक्ष के समान फलदायी हो जाता है।।३०-३१।।

सूर्यग्रहणपुरश्चरणम्

अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते।
सूर्योपरागवेलायां जपेन्मन्त्रं महेश्वरि ॥३२॥
जप्त्वा होमादिकं कृत्वा मन्त्रसिद्धिर्भवेद् ध्रुवम्।

अन्य प्रकार का पुरश्चरण—सूर्यग्रहणकाल में अन्य प्रकार का भी पुरश्चरण होता है। सूर्यग्रहण के प्रारम्भ से ग्रहणमोक्ष तक मन्त्र का जप कर दशांश हवन-तर्पण-मार्जनादि करने से निश्चित ही मन्त्र सिद्ध होता है।।३२।।

चन्द्रग्रहणपुरश्चरणम्

अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥३३॥
चन्द्रोपरागे देवेशि जपेन्मूलं यथाविधि।
दशांशसंस्कृतो मन्त्रो भवेच्चिन्तामणिः क्षणात् ॥३४॥

चन्द्रग्रहण काल का पुरश्चरण—अथवा अन्य प्रकार से मन्त्र के पुरश्चरण की विधि इस प्रकार कही गई है—चन्द्रग्रहण के प्रारम्भ से मोक्ष तक ही अवधि में यथाविधि मूल मन्त्र का जप करे। दशांश हवन-तर्पण-मार्जन करे तो मन्त्र तत्क्षण ही चिन्तामणि के समान फलदायी हो जाता है।।३३-३४।।

यस्य नास्ति जपे शक्तिः पञ्चरत्नेश्वरीं जपेत्।
वर्णलक्षपुरश्चर्याफलमाप्नोति साधकः ॥३५॥
इदं तत्त्वं हि मन्त्राणां सारात् सारं परात् परम्।
अवाच्यं गुह्यमीशानि गोपनीयं मुमुक्षुभिः ॥३६॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये पुरश्चर्याविधिनिरूपणं नाम दशमः पटलः॥१०॥

जिसमें जप करने की शक्ति न हो, वह पञ्चरत्नेश्वरी का जप एक वर्ण पर एक लाख के हिसाब से करे। इससे साधक को मन्त्रपुरश्चरण का फल प्राप्त होता है। यह तत्त्व मन्त्रों के सार का सार और परा से परा है। हे देवि! इस गुह्य गोपनीय रहस्य को मुमुक्षुओं को भी नहीं बतलाना चाहिये।।३५-३६।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में पुरश्चरणविधि-निरूपण नामक दशम पटल पूर्ण हुआ।

●

अथैकादशः पटलः

पुरश्चर्या-होमविधिः

श्रीभैरव उवाच

अधुना देवि वक्ष्येऽहं पुरश्चर्याफलं परम्।
यं लब्ध्वा साधको देवि मर्त्योऽप्यमरतां लभेत् ॥१॥

श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! अब मैं पुरश्चरण के फल का वर्णन करता हूँ, जिस फल को प्राप्त करके साधक मर्त्य होने पर भी अमरता प्राप्त करता है।।१।।

श्रीदेव्युवाच

भगवंस्तत्त्ववेत्ता त्वं सकलागमपारगः।
पुरश्चरणहोमस्य वद मेऽद्य विधिं विभो ॥२॥

श्री देवी ने कहा कि हे भगवन्! आप तत्त्ववेत्ता हैं। सभी आगमों के पारगामी हैं। अब मुझे पुरश्चरण के हवन की विधि बतलावें।।२।।

पुरश्चरणहोमविधिः

श्रीभैरव उवाच

जप्त्वा मनुं लक्षसंख्यं साधको मन्त्रसाधकः।
गत्वा रहःस्थलं देवि होमं कुर्याद् दशांशतः ॥३॥

श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! मन्त्रसाधक एक लाख मन्त्र-जप करने के पश्चात् रहने के स्थान में जाकर जप का दशांश दस हजार हवन करे।।३।।

श्रीचक्रपूजा कुण्डपरिमिति तत्पूजा च

सुदिने शुभनक्षत्रे साधको भैरवार्चने।
गृहीत्वा होमसम्भारं व्रजेत् प्रयतमानसः ॥४॥
तत्रैकतः श्मशानं तु धृत्वा सम्मुखपृष्ठयोः।
ऐशान्यां दिशि देवेशि लिखेच्छ्रीचक्रमुत्तमम् ॥५॥
तत्समभ्यर्च्य विधिना श्रीचक्रं मूलविद्यया।
ततो मन्त्रं जपेत् सिद्धमष्टोत्तरशतावधि ॥६॥
पूर्वस्यां दिशि सद्यन्त्रात् खनेत् कुण्डं त्रिकोणकम्।
हस्तैकविस्तृतं चाधो हस्तैकपरिमाणतः ॥७॥

शुभ दिन, शुभ नक्षत्र में साधक भैरवार्चन की हवन सामग्री लेकर यत्नपूर्वक श्मशान में जाये। श्मशान के ईशान दिशा में श्रीचक्र का अंकन करे। श्रीचक्र का पूजन मूल विद्या से करके सिद्ध मन्त्र का जप एक सौ आठ बार करे। श्रीचक्र के पूर्व दिशा में स्नान करके एक त्रिकोण कुण्ड का खनन करे। यह कुण्ड एक हाथ लम्बा और एक हाथ गहरा होना चाहिये।।४-७।।

कुण्डेऽस्मिन् विलिखेद्यन्त्रं त्र्यश्रं बिन्दुविराजितम् ।
षट्कोणमष्टपत्रं च त्रिवृत्तं भूगृहाङ्कितम् ।।८।।
ततः पूजां चरेद् देवि कुण्डचक्रस्य पार्वति ।
यथोक्तविधिना येन साधको दीक्षितो भवेत् ।।९।।

इस त्रिकोण कुण्ड में त्रिकोण बनाकर उसके मध्य में बिन्दु का अंकन करे। उसके बाहर षट्कोण, अष्टदल, तीन वृत्त और भूपुर बनावे। हे पार्वति! उस कुण्डचक्र में साधक अपनी दीक्षाविधि के अनुसार पूजन करे।।८-९।।

कुण्डस्थ श्रीचक्र-पूजन
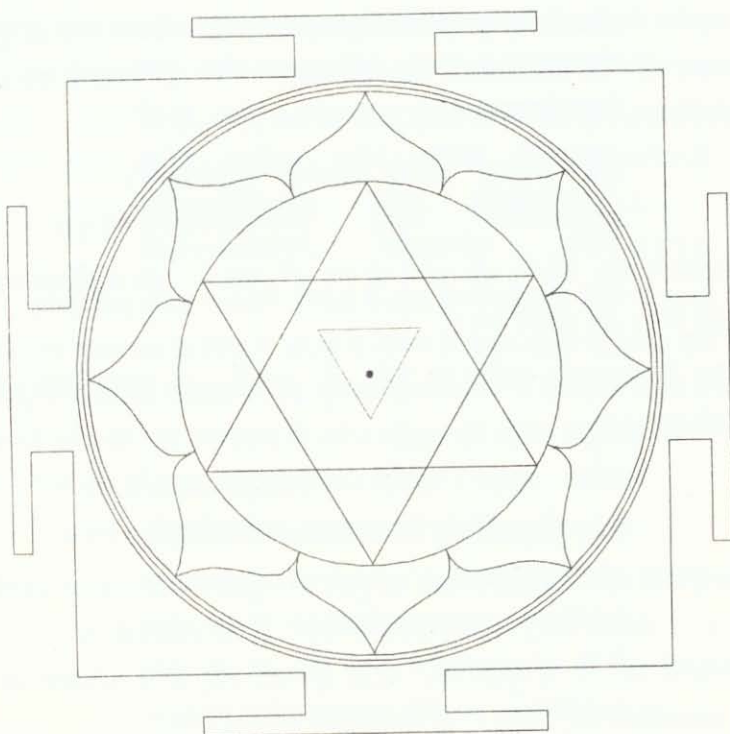
गणेशधर्मवरुणाः कुबेरसहितास्तथा ।
चतुर्द्वारिषु सम्पूज्याश्चत्वारो द्वारपालकाः ॥१०॥

भूपूर के चारो द्वारों पर पूर्वादि क्रम से दक्षिणावर्त रूप से गणेश, यम, वरुण और कुबेर की पूजा करे। पूजन मन्त्र है—गं गणेशाय नमः। यं यमाय नमः। वं वरुणाय नमः। कुं कुबेराय नमः।।१०।।

माया च मोहिनी मत्ता माध्वी वह्निवल्लभा ।
वर्तुली वीरसूर्वाम्या पूज्या अष्टदलस्थिताः ॥११॥

अष्टदल में माया, मोहिनी, मत्ता, माधवी, वह्निवल्लभा, वार्ताली, वीरसू, वाम्या का पूजन करे। मां मायायै नमः। मों मोहिन्यै नमः। मं मत्तायै नमः। मां माधव्यै नमः। वं वह्निवल्लभायै नमः। वां वार्ताल्यै नमः। वीं वीरसुवे नमः। वां वाम्यायै नमः।।११।।

अम्बालिकाम्बा बगला च्छिन्नशीर्षाम्बिका भगा ।
षट्कोणमध्यगाः पूज्याः कुण्डचक्रे महेश्वरि ॥१२॥

षट्कोण में अम्बालिका, अम्बा, बगला, छिन्नशीर्षा, अम्बिका और भगा का पूजन इस प्रकार करे—ह्रीं अम्बालिकायै नमः। ह्रीं अम्बायै नमः। ह्रीं बगलायै नमः। ह्रीं छिन्नशीर्षायै नमः। ह्रीं अम्बिकायै नमः। ह्रीं भगायै नमः।।१२।।

वह्निं वैश्वानरं चाग्निं त्रिकोणे पूजयेच्छिवे ।
स्वाहाभगवतीं बिन्दौ जातवेदसमर्चयेत् ॥१३॥

त्रिकोण में वह्नि, वैश्वानर और अग्नि की पूजा करे। मन्त्र है—ॐ वह्न्यै नमः। ॐ वैश्वानराय नमः। ॐ अग्नये नमः।

बिन्दु में स्वाहा और जातवेद का अर्चन करे। मन्त्र है—ॐ स्वाहायै नमः। ॐ जातवेदसे नमः।।१३।।

अग्निं मूलेन देवेशि वह्नेर्दशकलास्ततः ।
तारं वह्निः शिवोऽब्धिश्च हृज्जं शक्तिर्महेश्वरि ॥१४॥

बिन्दु में ही अग्नि की दश कलाओं का पूजन करे। पूजन मन्त्र है—१. यं धूम्रार्चिषे नमः, २. रं ऊष्मायै नमः, ३. लं ज्वलिन्यै नमः, ४. वं ज्वालिन्यै नमः, ५. शं विष्फुलिङ्गिन्यै नमः, ६. षं सुश्रियै नमः, ७. सं सुरूपायै नमः, ८. हं कपिलायै नमः, ९. ळं हव्यवाहिन्यै नमः एवं १०. क्षं कव्यवाहिन्यै नमः।।१४।।

अग्निपूजा-होमादिनिरूपणम्

अग्रे वैश्वानरं ब्रूयाज्जटाभारेति संवदेत्।
भास्वरेति त्रिनेत्रेति ज्वालामुख-पदं वदेत् ॥१५॥
प्रज्वलेति युगं ब्रूयाज्जातवेदसि संवदेत्।
ठद्वयं संवदेदन्ते मन्त्रोऽयं वह्निवल्लभः ॥१६॥
अनेन मूलमन्त्रेण वह्निचक्रं प्रपूजयेत्।
गन्धाक्षतप्रसूनैश्च धूपदीपादितर्पणैः ॥१७॥
नैवेद्याचमनीयाद्यैस्ताम्बूलैश्च सुवासितैः।

इसके बाद अग्नि देवता का पूजन करे। पूजन मन्त्र है—ॐ रं गं रूं जं सौः अग्ने वैश्वानर जटाभार भास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख प्रज्वल प्रज्वल जातवेद स्वाहा। इसी मन्त्र से वह्निचक्र का पूजन गन्ध-अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, तर्पण, नैवेद्य, आचमनीयादि सुवासित ताम्बूल से करे।।१५-१७।।

तत्र सम्पूज्य देवेशि श्रीचक्रं नवयोनिकम् ॥१८॥
ततो दिग्भैरवान् भूतानर्चयेत् कुसुमैः परम्।
ततो देवि प्रमथ्याग्निं कुण्डचक्रे कुलेश्वरि ॥१९॥
बिन्दौ वह्निं समावाह्य मूलेनोज्ज्वालयेच्छिवे।
अग्निं सन्दीप्य मूलेन प्रणमेद् वह्निमुद्रया ॥२०॥
मूलेनाहुतिभिर्वह्निं हुनेत् षोडशभिस्ततः।
अष्टोत्तरशतावृत्त्या दद्यादाज्येन पार्वति ॥२१॥

इसके बाद पूजित नवयोनि श्रीचक्र में आद दिग्भैरवों और भूतों का पूजन पुष्पों से करे। तब कुण्डचक्र के बिन्दु में अरणी के मन्थन से प्रभूत अग्नि का पूजन पुष्पों से करे। बिन्दु में अग्नि को आवाहित करके पूर्ववर्णित अग्निमन्त्र से प्रज्वलित करके वह्निमुद्रा से प्रणाम करे। तब मूल अग्निमन्त्र से अग्नि को घृत की सोलह आहुतियाँ देकर अग्नि को गोघृत से एक सौ आठ आहुतियाँ प्रदान करे।।१८-२१।।

आहुतीः पायसैर्देवि मृद्वीकागुरुपुष्पकैः।
मत्स्यण्डशर्कराचन्द्रैः कस्तूरीदृषदङ्कितैः ॥२२॥
ततो जप्त्वा महाविद्यां साधकान् पूजयेच्छिवे।
पञ्च वा नव वा देवि तथैकादश वा शिवे ॥२३॥
कुलीनान् धार्मिकाञ्छुद्धान् दीक्षितान् वाप्यदीक्षितान्।
दृढव्रताञ्छुभाचारान् देवीभक्तिरतांस्तथा ॥२४॥

वैष्णवान् गिरिजे शैवान् गुरुभक्तिपरायणान् ।
तत्र सम्पूज्य विधिवज्ज्ञात्वा भैरवसन्निभान् ॥२५॥
पाद्यार्घ्यमधुपर्काद्यैर्गन्धाक्षतसुपुष्पकैः ।
तान् सम्पूज्य महादेवि दशांशं होममाचरेत् ॥२६॥

इसके बाद पायस, मृद्वीका, अगर, पुष्प, मत्स्यण्ड, शक्कर, कपूर, कस्तूरी को मिलाकर आहुतियाँ प्रदान करे। इसके बाद महाविद्या का जप करे। तब पाँच या नव या ग्यारह कुलीन धार्मिक, शुद्ध, दीक्षित या अदीक्षित, दृढव्रती, शुभाचरण वाले, देवी-भक्ति में निरत, वैष्णव, गुरुभक्तिपरायण शैवों को भैरव मानकर उनका विधिवत् पूजन पाद्य, अर्घ्य, मधुपर्क, गन्ध, अक्षत से करे। उनकी पूजा करने के बाद दशांश हवन करे॥२२-२६॥

श्रीदेव्युवाच

भगवन् देवदेवेश तन्त्रज्ञ परमेश्वर ।
कुलसाधकपूजायां संशयं छेत्तुमर्हसि ॥२७॥
तत्र पूजाविधौ नाथ सर्वे पूज्या द्विजोत्तमाः ।
अथवा क्षत्रिया वैश्याः शूद्रा वा वद विस्तरात्॥२८॥

पूज्य कुलसाधक का निर्णय—श्रीदेवी ने कहा—हे देवदेवेश भगवन्! तन्त्रज्ञ परमेश्वर कुलसाधक पूजा के बारे में मेरे संशय का निवारण करे। इस पूजाविधि में सभी द्विजोत्तम ही पूज्य है या क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र भी पूज्य हैं। इसके विषय में विस्तार से कहिये।।२७-२८।।

श्रीभैरव उवाच

प्रवृत्ते भैरवे तन्त्रे सर्वे वर्णा द्विजोत्तमाः ।
निवृत्ते भैरवे तन्त्रे सर्वे वर्णाः पृथक् पृथक् ॥२९॥
सर्वदा शिवचक्रेऽस्मिन् सम्प्रदायोऽयमीरितः ।
न पुरश्चरणार्चायां तत्र सर्वे द्विजोत्तमाः ॥३०॥
एकस्तु क्षत्रियः पुण्यो दाता वैष्णवसत्तमः ।
दृढव्रतः शुभाचारः कुलीनः शिवपूजकः ॥३१॥
शाक्तः परमभक्तश्च कुलचक्रे निगद्यते ।
तत्र होमं च सम्पाद्य दद्यान्नैवेद्यमादरात् ॥३२॥

श्री भैरव ने कहा कि भैरवतन्त्र में सभी वर्णों के साधक द्विजोत्तम होते हैं। भैरवतन्त्र

के बाहर सभी वर्ण अलग-अलग हो जाते हैं। इस शिवचक्र को सम्प्रदाय कहा गया है; किन्तु पुरश्चरणकाल में सभी को द्विजोत्तम माना जाता है। यहाँ पुण्य ही एक क्षत्रिय है, जिसके दाता विष्णु ही उत्तम सत्त हैं। दृढ़व्रती शुभ आचार-निरत शिवभक्त ही कुलीन है। कुलचक्र में शाक्त भक्त ही कुलीन होता है। हवन करके आदरसहित इन्हें नैवेद्य देना चाहिये।।२९-३२।।

कुलचक्रगतान् देवि ब्राह्मणान् साधकोत्तमान्।
पूजयेद् क्षत्रियो वीरो भक्तिश्रद्धासमन्वितः ॥३३॥
गन्धाक्षतसुपुष्पैश्च धूपदीपादिभिः शिवे।
नैवेद्याचमनीयाद्यैर्भक्ष्यैर्भोज्यैश्च लेह्यकैः ॥३४॥
सन्तर्प्य साधकान् देवि परमानन्दसेवितः।
साधकः क्षत्रियं वीरं दातारं वीरसेवकम् ॥३५॥

हे देवि! कुलचक्र में साधकोत्तम ब्राह्मणों को भी क्षत्रिय वीर साधकों की पूजा श्रद्धा-भक्तिपूर्वक करनी चाहिये। हे शिवे! इनका पूजन गन्ध-अक्षत-पुष्प-धूप-दीप- नैवेद्य-आचमनीय तथा भोज्य-लेह्य आदि देकर करना चाहिये। परमानन्दयुक्त साधकों को संतृप्त करना चाहिये। क्षत्रिय वीर साधक दाता होता है।।३३-३५।।

कुलसाधकपूजाफलम्

आशीर्भिर्वर्धयेद् देवि प्रणमेत् त्रिपुराम्बिकाम्।
कुलचक्रगता वीराः कुलचक्रप्रपूजकाः ॥३६॥
सर्वे ते कुलदेव्यन्ते यान्ति शीघ्रं कुलालयम्।
क्षत्रियोऽपि महादेवि कुलसङ्घान् कुलार्थवित् ॥३७॥
सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वसिद्धिसमन्वितः।
इह लोके श्रियं प्राप्य भुक्त्वा भोगान् यथेप्सितान् ॥३८॥
परत्र परमेशानि मृतो देवीपदं व्रजेत्।
एवं विधाय मन्त्रज्ञो होमं जपफलाप्तये ॥३९॥
पुरश्चर्याफलं देवि वर्णलक्षस्य सोऽश्नुते।
वर्णलक्षजपस्यैवं फलमाप्नोति कौलिकः ॥४०॥
सर्वे तत्र स्थिता नत्वा श्मशानस्थं च भैरवम्।
संहारमुद्रया देवीं विसृज्य सशिवां शिवे ॥४१॥
सर्वे ते साधकश्रेष्ठा भवेयुः कुलभागिनः।

इदं रहस्यं देवेशि भक्त्या तव मयोदितम्।
अप्रकाश्यमदातव्यमित्याज्ञा पारमेश्वरी ॥४२॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये पुरश्चर्याहोम-
विधिनिरूपणं नामैकादशः पटलः॥११॥

कुलसाधक-पूजा-फलनिरूपण—कुलचक्र-प्रपूजकों को अम्बिका के कुलचक्र में कुलचक्रगत वीर साधकों के आशीर्वाद से सभी प्रकार का अभ्युदय होता है। वे सभी प्रपूजक अन्त में देवी के कुलालय में जाते हैं। कुलार्थ-ज्ञाता क्षत्रिय भी महादेवी के कुलसङ्घ में जाता है। सभी पापों से मुक्त होकर सभी सिद्धियों से समन्वित होकर इस संसार में वैभवयुक्त होकर यथोचित भोगों को भोगता है और अन्त में मृत्यु होने पर देवीपद को प्राप्त करता है। अत: जपफल की प्राप्ति के लिये मन्त्रज्ञ को इसी प्रकार का विधान अपनाना चाहिये। मन्त्र के प्रत्येक वर्ण पर एक लाख जप के पुरश्चरण से जो फल प्राप्त होता है, वह फल कौलिक को स्वत: प्राप्त होता है। कुलचक्रपूजन में उपस्थित सबों को श्मशान भैरव को प्रणाम करना चाहिये। इसके बाद शिवसहित शिवा का संहारमुद्रा से विसर्जन करना चाहिये। चक्र में भाग लेने वाले सभी साधक श्रेष्ठ हो जाते हैं। हे देवि! तुम्हारी भक्ति के कारण इस रहस्य का उद्घाटन मेरे द्वारा किया गया। हे परमेश्वरि! यह अप्रकाश्य और अदातव्य है—ऐसी मेरी आज्ञा है।।३६-४२।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में पुरश्चर्या-
होमविधिनिरूपण नामक एकादश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ द्वादशः पटलः

यन्त्रोद्धारः

यन्त्रोद्धारकथनम्

श्रीभैरव उवाच

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि गुह्यं सर्वस्वमुत्तमम्।
श्रीचक्रनिर्णयं नाम पटलं देवदुर्लभम् ॥१॥
देवीनां परमप्रीत्या यन्त्रोद्धारं ब्रवीम्यहम्।
यस्य कस्य न वक्तव्यं गोपनीयं विशेषतः ॥२॥
त्रयस्त्रिंशतिदेवानां कोटयः स्युर्महेश्वरि।
देवीनां च तथा देवि त्रयस्त्रिंशतिकोटयः ॥३॥
तासां मध्ये प्रधानाः स्युस्त्रयस्त्रिंशतिदेवताः।
पूर्वोक्ता या महादेवि तासां यन्त्रोत्तमाञ्छृणु ॥४॥

यन्त्रोद्धार-कथन—श्री भैरव ने कहा—हे देवि! सुनो, अब मैं गुह्य सर्वस्व उत्तम श्रीचक्रनिर्णय नामक देवदुर्लभ पटल का वर्णन करता हूँ। देवियों के परम प्रीतिदायक यन्त्रोद्धार का कथन मैं करता हूँ। इसे जिस-किसी को नहीं बतलाना चाहिये; क्योंकि यह विशेषत: गोपनीय है। हे महेश्वरि! तैंतीस कोटि देवता के समान ही तैंतीस कोटि देवियाँ भी हैं। उनमें से तैंतीस देवता ही प्रधान हैं, जिनका वर्णन मैं पहले ही कर चुका हूँ। अब उनके उत्तम यन्त्रों का वर्णन सुनो।।१-४।।

बालायन्त्रोद्धारकथनम्

अथ वक्ष्ये तव प्रीत्या बालायन्त्रं महेश्वरि।
सर्वार्थसाधकं देवि सर्वाशापरिपूरकम् ॥५॥
बिन्दुस्त्रिकोणरसकोणकनागपत्रवृत्तत्रयाञ्चितमहीसदनत्रयं च।
बालादिचक्रमिदमार्तिहरं गिरीश ब्रह्मेन्द्रविष्णुनमितं गदितं मया ते ॥६॥

बालायन्त्रोद्धार—हे महेश्वरि! अब मैं तुम्हारी प्रीति के लिये बालायन्त्र को बतलाता हूँ। इस यन्त्र में सर्वार्थसाधक, सर्वाशा-परिपूरक, बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल, तीन वृत्त और चतुर्द्वारयुक्त तीन भूपुर होते हैं। यह सभी दु:खों का निवारक, गिरीश, ब्रह्मा, इन्द्र और विष्णु के द्वारा वन्दित है तथा मेरे द्वारा वर्णित है।।५-६।।

बालायन्त्र
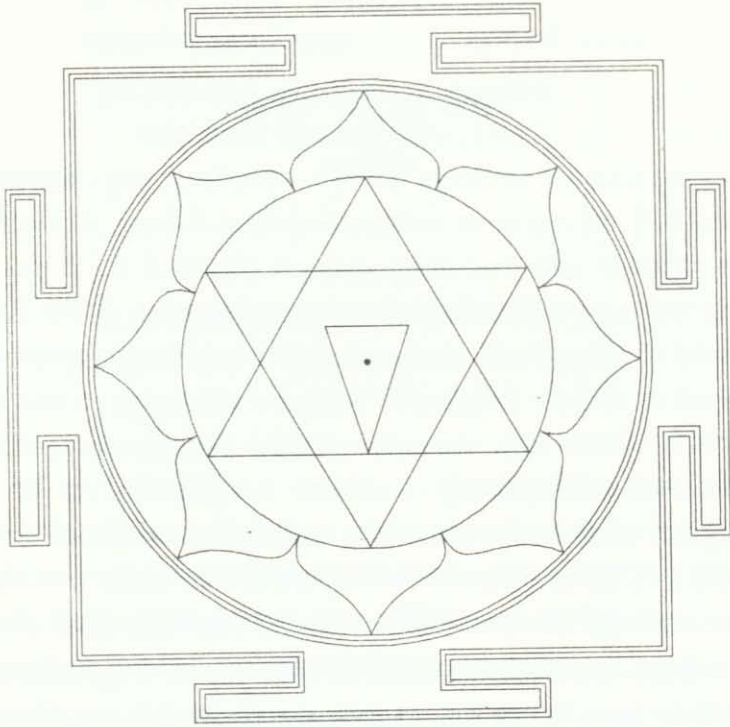
त्रिपुरभैरवीयन्त्रोद्धारकथनम्

अथो त्रिपुरभैरव्या यन्त्रोद्धारं ब्रवीम्यहम्।
सकलागमसाराढ्यमापदुद्धारणक्षमम् ॥७॥
बिन्दुस्त्र्यश्रं नागकोणं दशारं वृत्ताञ्चितं वसुपत्रं कलारम्।
वृत्तत्रयं भूनिकेतत्रयं च श्रीचक्रं ते वर्णितं भैरवीयम् ॥८॥

त्रिपुरभैरवी अर्थात् त्रिपुरसुन्दरी-यन्त्र—अब मैं त्रिपुरभैरवी अर्थात् त्रिपुरसुन्दरी के यन्त्रोद्धार का वर्णन करता हूँ। यह सभी आगमों का सार है। सभी आपत्तियों आपदाओं से उद्धार करने में सक्षम है। इस यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, अष्टकोण, दशार वृत्तार्चित अष्टदल, द्वादश दल, वृत्तत्रय और तीन भूपुर होते हैं।।७-८।।

त्रिपुरसुन्दरीयन्त्रोद्धारकथनम्

अथो त्रिपुरसुन्दर्या वक्ष्ये श्रीचक्रनिर्णयम्।
सर्वसम्मोहनं देवि सर्वसिद्धिप्रवर्तकम् ॥९॥
शून्यं मध्यगमग्निकोणसहितं दिग्दन्तिकोणाङ्कितं
विंशारं मनुमिश्रितं करिदलश्रीषोडशाराञ्चितम्।

सद्वृत्तत्रयसंयुतं च धरणीगेहाङ्कितं त्रैपुरं
भक्त्याभीष्टफलप्रदं कलियुगे श्रीचक्रमुद्द्योतते ॥१०॥
बिन्दुस्त्रिकोणवसुकोणदशारयुग्ममन्वश्रनागदलसङ्गतषोडशारम् ।
वृत्तत्रयञ्च धरणीसदनत्रञ्च श्रीचक्रमेतदुदितं परदेवतायाः ॥११॥

अब त्रिपुरसुन्दरी के श्रीचक्र का निरूपण करता हूँ। इस यन्त्र में सर्वसम्मोहन, सर्वसिद्धिप्रद, शून्य बिन्दु, अग्निकोण सहित अष्टकोण, विंशार, द्वादशार, षोडशदल तीन वृत, भूपुरत्रय होते हैं। उपर्युक्त दोनों प्रकार के श्रीयन्त्र आद्य शंकराचार्य के मत से वर्तमान कलियुग में प्रचलित नहीं हैं। वर्तमान में त्रिपुरभैरवी दश महाविद्याओं में एक स्वतन्त्र महाविद्या है; किन्तु इस ग्रन्थ के सप्तम पटल के श्लोक २ के अनुसार—

या बाला भैरवी सैव सैव त्रिपुरसुन्दरी।
त्रिपुरा यास्ति सा काली श्यामा सैव परा स्मृता।।

इस पटल के श्लोक ११ के अनुसार जो श्रीयन्त्र बनता है, वही यहाँ पर पूज्य है। इसमें विन्दु, त्रिकोण, अष्टकोण अन्तर्दशार, बहिर्दशार, चतुर्दशार, अष्टदल, षोड़शदल, वृत्तत्रय और भूपुरत्रय होते हैं। चक्र में देवता का उदय होता है।।९-११।।

श्रीचक्र यन्त्र
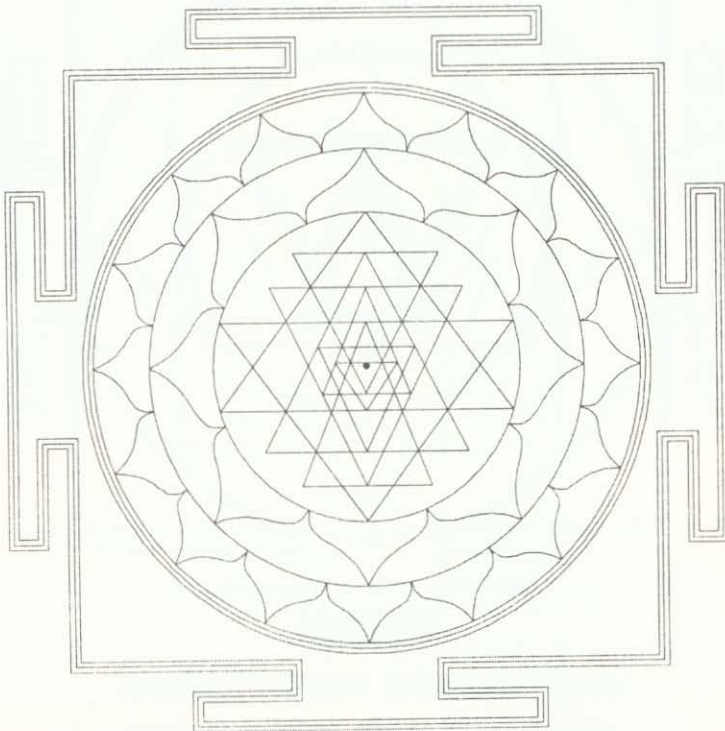
कालिकायन्त्रोद्धारः

अथाहं कालिकायास्ते यन्त्रोद्धारं ब्रवीम्यहम्।
सर्वार्थसिद्धिदं लोके सर्वकामप्रपूरकम् ॥१२॥
त्रिकोणस्थं शून्यं तदुपरि शरत्कोणसहितं
त्रिकोणं षट्कोणं भगवति च वृत्तं वसुदलम्।
त्रिवृत्तं तद्बाह्ये क्षितिभुवनयुक्तं च जयता-
दिदं श्यामायन्त्रं मरणभयवर्गप्रमथनम् ॥१३॥

कालिका यन्त्रोद्धार—अब मैं कालिका यन्त्र के उद्धार का वर्णन करता हूँ। संसार में यह सभी सिद्धियों को देने वाला एवं सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाला है। कालीपूजन यन्त्र बिन्दु, पाँच त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल, वृत्तत्रय और भूपुर से बनता है। यह यन्त्र मृत्युभयवर्ग का विनाशक है।।१२-१३।।

काली यन्त्र
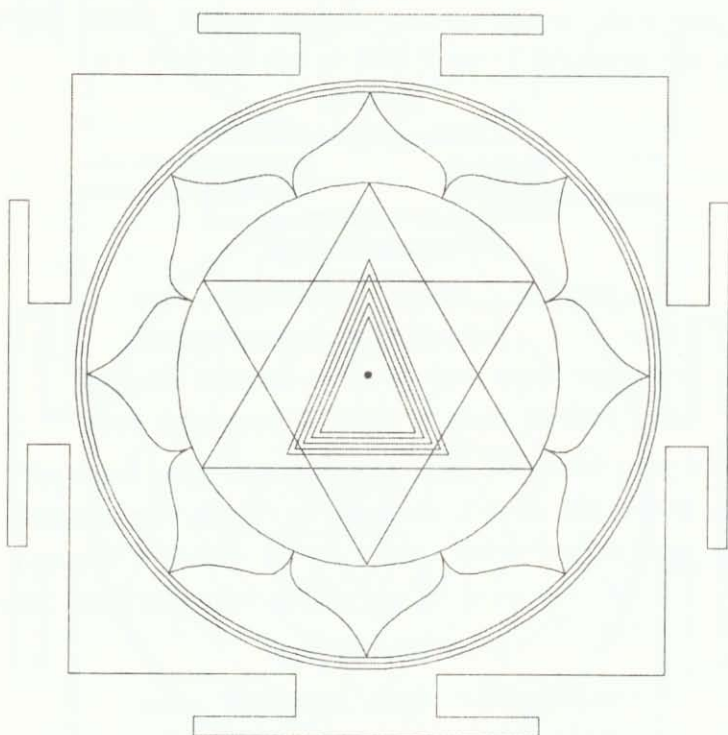
भद्रकालीयन्त्रोद्धारः

अथाहं भद्रकाल्यास्ते यन्त्रोद्धारं सुरप्रियम्।
ब्रवीमि दयया देवि सर्वसारस्वतप्रदम् ॥१४॥

मध्ये तुर्यवरं खमण्डलयुतं द्विःसप्तकाराङ्कितं
द्विस्तुर्याररयुगं चतुर्गुणचतुष्पत्रावलीशोभितम्।
सद्वृत्तत्रयमण्डितं बहिरिलागेहत्रयोद्भासितं
जीयाद्यन्त्रमिदं यथेष्टफलदं श्रीभद्रकालीप्रियम्॥१५॥

भद्रकाली यन्त्रोद्धार—अब मैं देवताओं की प्रिय भद्रकाली यन्त्र का वर्णन करता हूँ, जो सभी सारस्वत पदों को देने वाला है। बीच में तुर्यवर खमण्डलयुक्त द्विसप्तकाराङ्कित द्विस्तुर्याररयुग चतुर्गुण चतुष्पत्रावली-शोभित के बाहर वृत्तत्रय, भूपुर-त्रययुक्त आद्य यन्त्र यथेष्ट फलप्रद भद्रकाली को प्रिय है। बीजाक्षर पारिभाषिक सूची से इसका अर्थ स्पष्ट नहीं हो पाता। अन्य तन्त्रों में वर्णित भद्रकाली का पूजन यन्त्र साधकों के लाभार्थ यहाँ अङ्कित है।।१४-१५।।

भद्रकाली यन्त्र
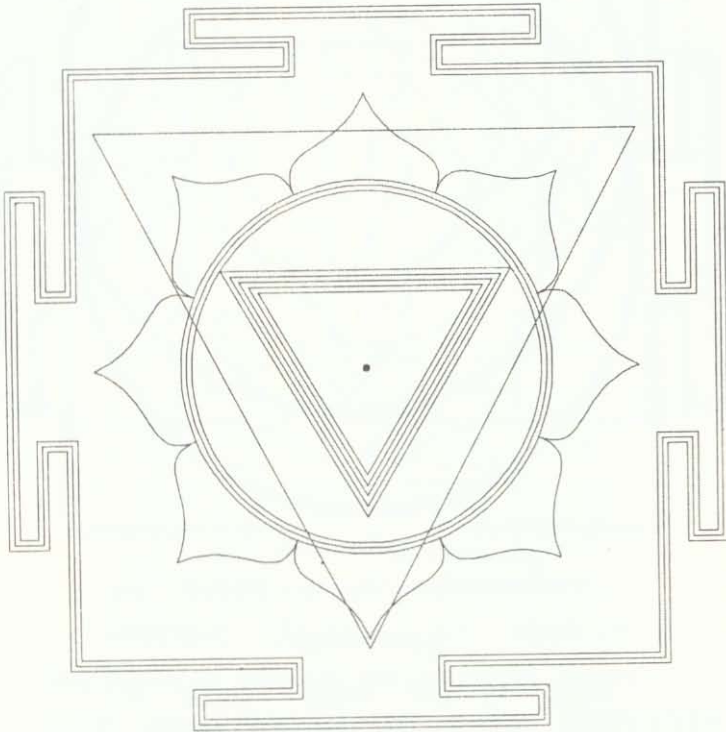
मातङ्गीयन्त्रोद्धारः

अथ वक्ष्यामि मातङ्ग्या यन्त्रं तन्त्रविनिश्चितम्।
देवदेवि तव प्रीत्या न चान्यत्र प्रकाशयेत्॥१६॥

बिन्दुस्त्रिकोणं वसुकोणयुक्तं वृत्तं ततो नागदलं त्रिवृत्तम्।
भूमन्दिरं पार्वति वह्निरेखं मातङ्गिनीयन्त्रमिदं प्रदिष्टम् ॥१७॥

मातङ्गी यन्त्रोद्धार—हे देवदेवि! अब मैं तन्त्रों में विनिश्चित मातङ्गी यन्त्र को तुम्हारी प्रीति के कारण बतलाता हूँ। इसे अन्यत्र प्रकाशित नहीं करना चाहिये। मातङ्गी यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, अष्टकोण और अष्टदलयुक्त वृत्त, वृत्तत्रय और भूपुरत्रय होते हैं। यह यन्त्र सर्वाभीष्ट-प्रदायक है।।१६-१७।।

मातङ्गी यन्त्र
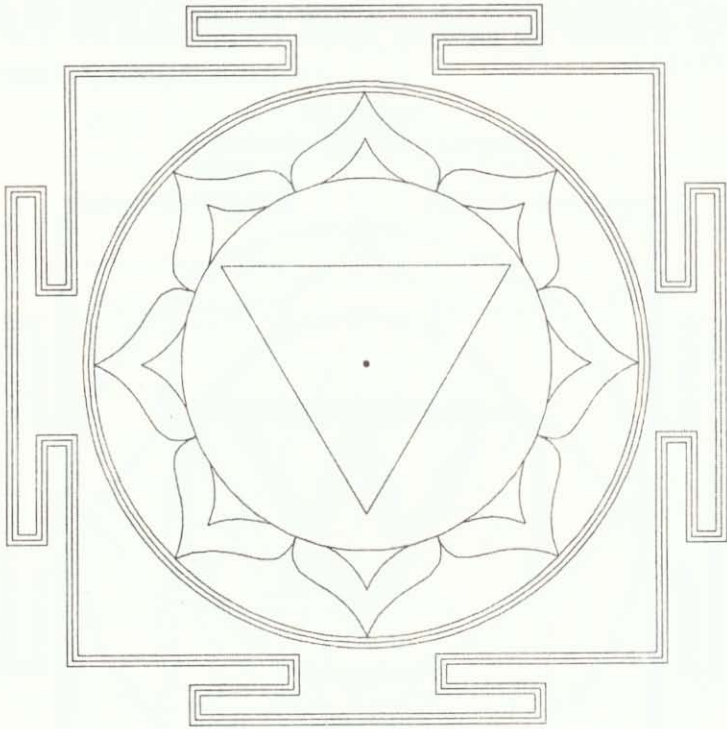
भुवनेश्वरीयन्त्रोद्धारः

अथाहं भुवनेश्वर्या यन्त्रोद्धारं ब्रवीमि ते।
प्रीत्या भक्त्या महेशानि न चाख्येयं महात्मभिः ॥१८॥
बिन्दुस्त्रिकोणं रसकोणसंयुतं वृत्ताञ्चितं नागदलेन मण्डितम्।
कलारवृत्तत्रयभूगृहाङ्कितं श्रीचक्रमेतद्भुवनेश्वरीप्रियम् ॥१९॥

भुवनेश्वरी यन्त्रोद्धार—अब मैं भुवनेश्वरी यन्त्र का उद्धार सुनाता हूँ। तुम्हारी प्रीति के कारण मैंने इसे प्रकट किया है। इसे किसी महात्मा को भी नहीं बतलाना चाहिये। भुवनेश्वरी यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदलयुक्त वृत्त-षोड़श दलयुक्त वृत्त, वृत्तत्रय और भूपुर होते हैं।।१८-१९।।

भुवनेश्वरीयन्त्र
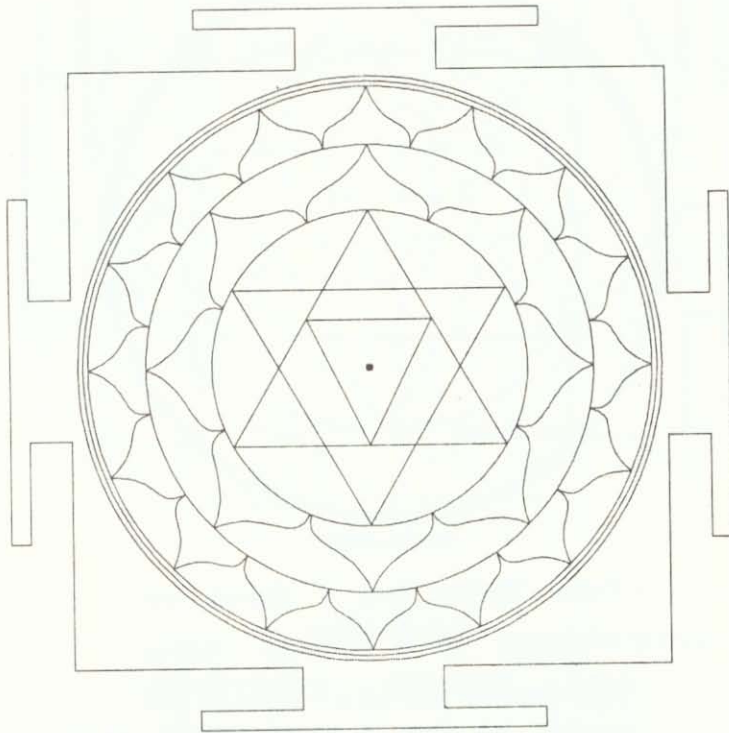
उग्रतारायन्त्रोद्धारः

अथ वक्ष्यामि ताराया यन्त्रोद्धारमनुत्तमम्।
भोगमोक्षप्रदं देवि गोप्यं कुरु महेश्वरि ॥२०॥
बिन्दुस्त्रिकोणं च षडस्त्रयुक्तं वृत्तं तथाष्टारमलं त्रिवृत्तम्।
सभूपुरं चैकजटाविलासगेहं मया यन्त्रमिदं प्रदिष्टम् ॥२१॥

तारा यन्त्रोद्धार—अब मैं तारा के उत्तम यन्त्र का उद्धार बतलाता हूँ। यह यन्त्र भोग-मोक्षप्रदायक है, हे महेश्वरि! इसे गुप्त रखना चाहिये। इस यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण,

षट्कोण, अष्टदल, वृत्तत्रय, भूपुर होते हैं। यह यन्त्र एकजटा का विलास गृह कहा गया है और इष्टार्थ-प्रदायक है।।२०-२१।।

तारा यन्त्र
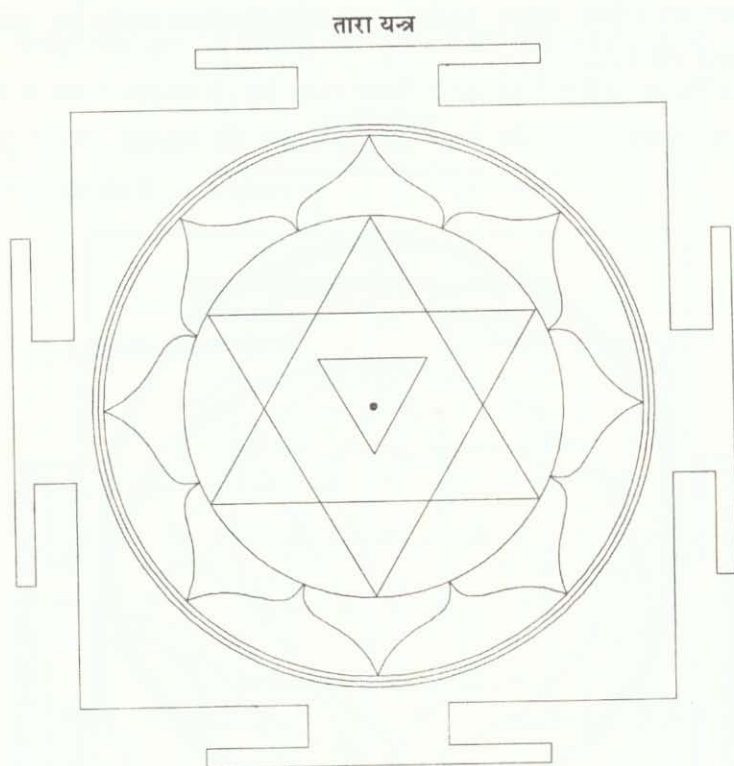
छिन्नमस्तायन्त्रोद्धारः

अथाहं छिन्नमस्ताया यन्त्रोद्धारमनुत्तमम्।
प्रवक्ष्यामि तव प्रीत्या न वक्तव्यं मुमुक्षुभिः ॥२२॥
बिन्दुस्त्रिकोणं च बहिस्त्रिकोणं
त्रिकोणमूर्ध्वं शुभवृत्तबिम्बम्।
वस्वश्रयुक्तं धरणीगृहं स्यात्
श्रीचक्रमेतत् परदेवतायाः ॥२३॥

छिन्नमस्ता यन्त्रोद्धार—हे देवि! तुम्हारी प्रीति के कारण अब मैं उत्तम छिन्नमस्ता यन्त्र का उद्धार वर्णन करता हूँ। इसे मुमुक्षुओं को भी नहीं बतलाना चाहिये। इस यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदलयुक्त वृत्त और भूपुर होते हैं।।२२-२३।।

छिन्नमस्ता यन्त्र
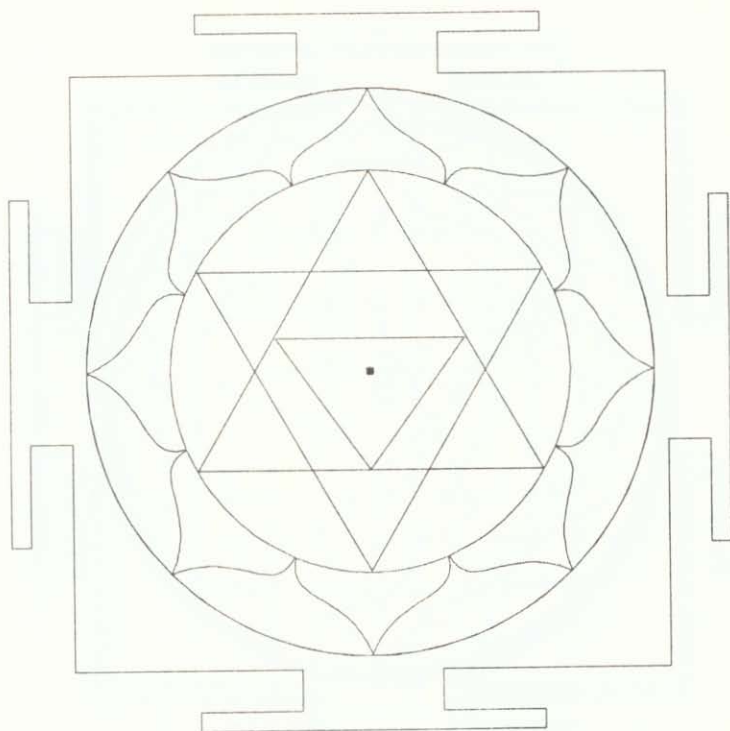
सुमुखीयन्त्रोद्धारः

अथ वक्ष्यामि ते देव्या यन्त्रोद्धारं महेश्वरि।
सुमुख्याः सारसर्वस्वं न देयं ब्रह्मवादिभिः ॥२४॥
बिन्दुं चानलकोणगं च विलिखेद् बाणाश्रकोणाङ्कितं
वृत्तं नागदलेन मण्डितमथो श्रीषोडशाराङ्कितम्।
सद्वृत्तत्रयसंयुतं च धरणीगेहाङ्कितं पार्वति
श्रीचक्रं सुमुखीप्रियं विजयताद् भोगापवर्गप्रदम् ॥२५॥

सुमुखी यन्त्रोद्धार—हे महेश्वरि! अब मैं तुम्हें सुमुखी देवी के सारसर्वस्व यन्त्रोद्धार का वर्णन सुनाता हूँ। ब्रह्मवादियों को भी इसे नहीं बतलाना चाहिये। सुमुखी देवी का यन्त्र बिन्दु, त्रिकोण, पञ्चकोण, अष्टदलाङ्कित वृत्त, षोड़श दल, वृत्तत्रय, भूपुर से बनता है। सुमुखी-प्रिय यह यन्त्र भोग, अपवर्ग और मोक्षप्रद है।।२४-२५।।

सुमुखी यन्त्र
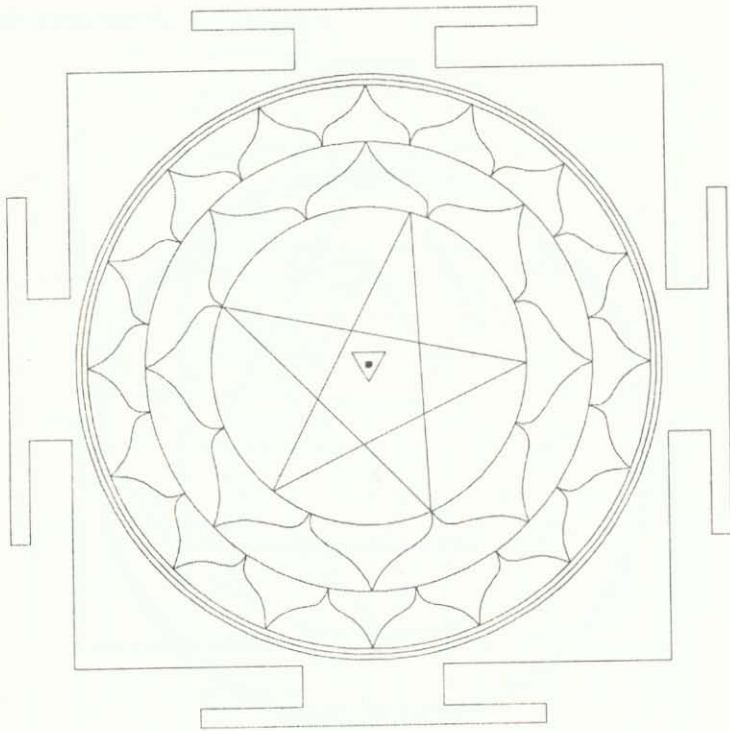
सरस्वतीयन्त्रोद्धार

अथ वक्ष्यामि तत्त्वं ते यन्त्रोद्धारं महेश्वरि।
सरस्वत्याः कौलिकानां भुक्तिमुक्तिफलप्रदम्॥२६॥
त्रिकोणं सबिन्दुं ततः षट्ककोणं
सवृत्तं ततो नागपत्रं त्रिवृत्तम्।
धरामन्दिरं वह्निरेखोज्ज्वलं ते
मयोक्तं हि सारस्वतं यन्त्रमेतत्॥२७॥

सरस्वती यन्त्रोद्धार—हे महेश्वरि! कौलिकों को मुक्तिप्रदायक सरस्वती यन्त्रोद्धार तत्त्व का वर्णन करता हूँ। सरस्वती-यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त अष्टपत्र, वृत्तत्रय, त्रिरेखात्मक भूपुर होते हैं। सारस्वत यन्त्र यही होता है।।२६-२७।।

सरस्वती यन्त्र
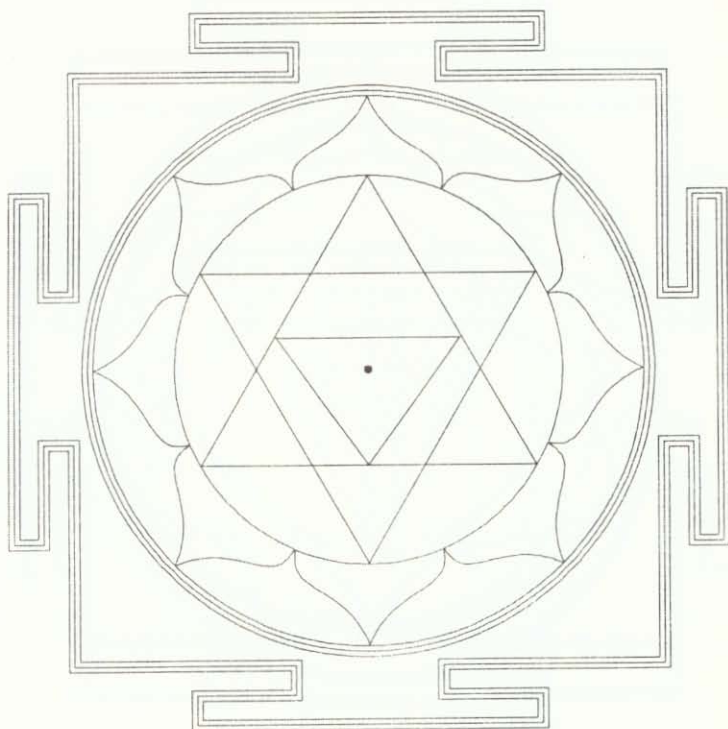
अन्नपूर्णायन्त्रोद्धारः

अथाहमन्नपूर्णाया यन्त्रराजं ब्रवीमि ते।
सर्वसम्मोहनं देवि सर्वभोगैकसाधनम् ॥२८॥
त्रिकोणं रसारं त्रिकोणं त्रिकोणं
त्रिकोणं त्रिकोणं त्रिकोणं हि वृत्तम्।
ततो नागपत्राञ्चितं चाग्निवृत्तं
धरामन्दिरं चान्नपूर्णेष्टचक्रम् ॥२९॥

अन्नपूर्णा यन्त्रोद्धार—अब मैं अन्नपूर्णा यन्त्र का वर्णन करता हूँ, जो सर्वसम्मोहन एवं सभी भोगों का साधन है। इस यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण के बाद पाँच त्रिकोण, अष्टदल, वृत्तत्रय और भूपुर होते हैं।।२८-२९।।

अन्नपूर्णा यन्त्र
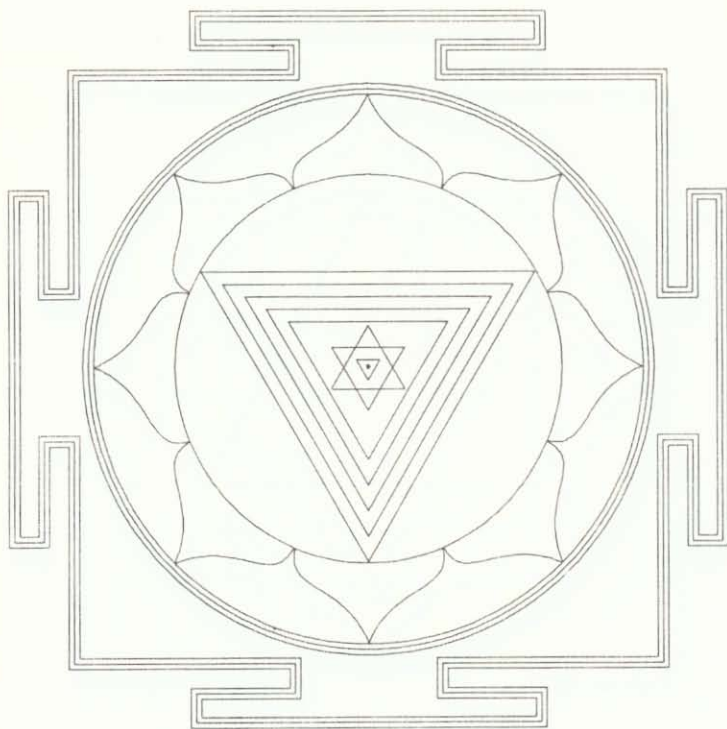
महालक्ष्मीयन्त्रोद्धारः

अथ वक्ष्ये शिवे यन्त्रं महालक्ष्म्याः परात् परम् ।
यमभ्यर्च्य मया प्राप्तं दुर्लभं परमं पदम् ॥३०॥
खं वह्न्यारगतं च कारममलं वृत्तं बहिः शोभनं
बाह्ये नागदलं कलारविलसद्वृत्तत्रयोद्भासितम् ।
भूगेहत्रयशोभितं तव मया निर्णीतमेतत् परं
श्रीचक्रं परमार्थदायि च महालक्ष्मीप्रियं सिद्धिदम् ॥३१॥

महालक्ष्मी यन्त्रोद्धार—हे शिवे! अब मैं महालक्ष्मी के परात्पर यन्त्र का वर्णन करता हूँ, जिसका अर्चन करके ही मैंने भी यह दुर्लभ पद पाया है। महालक्ष्मी यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, अष्टदल, द्वादशदल, वृत्तत्रय, त्रिरेखात्मक भूपुर होते हैं। महालक्ष्मी को प्रीतिप्रद यह यन्त्र परमार्थदायक है।।३०-३१।।

महालक्ष्मी यन्त्र
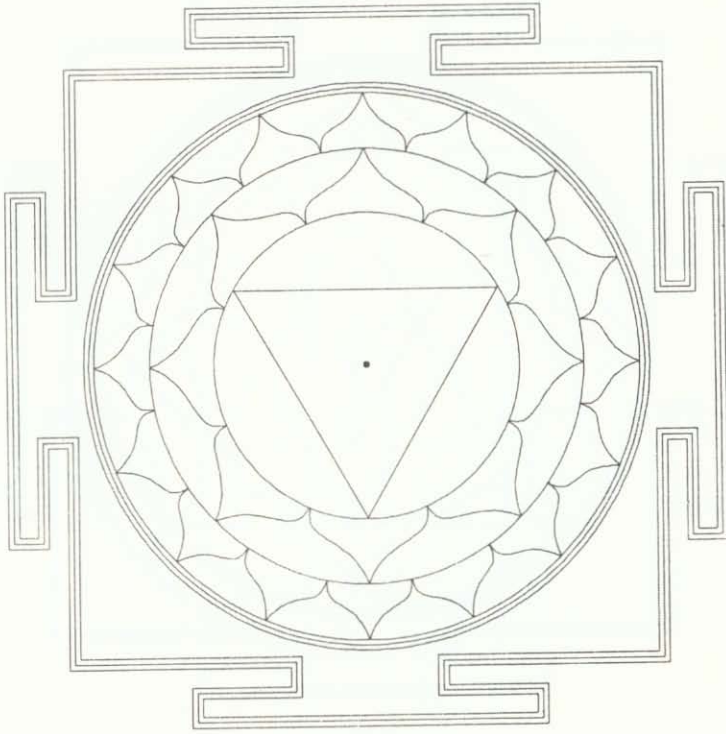
शारिकायन्त्रोद्धारः

यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि साधकानां शुभावहम् ।
शारिकाया महादेवि लीलालयलयाकुलम् ।।३२।।
खत्रिकोणवसुकोणसुवृत्तोद्द्योतनागदलवृत्तमण्डलम् ।
भूगृहं शिखिरवीन्दुभाञ्चितं यन्त्रमेतदुदितं शिलालयम् ।।३३।।

शारिका यन्त्रोद्धार—हे महादेवि! शारिका देवी का यन्त्रोद्धार बतलाता हूँ। यह साधकों को शुभदायक है। यह लीलालयलयाकुल है।

इस यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, अष्टकोण-सहित अष्टदल, भूपुर होते हैं। भूपुर में तीन रेखाएँ होती है।।३२-३३।।

शारिका यन्त्र
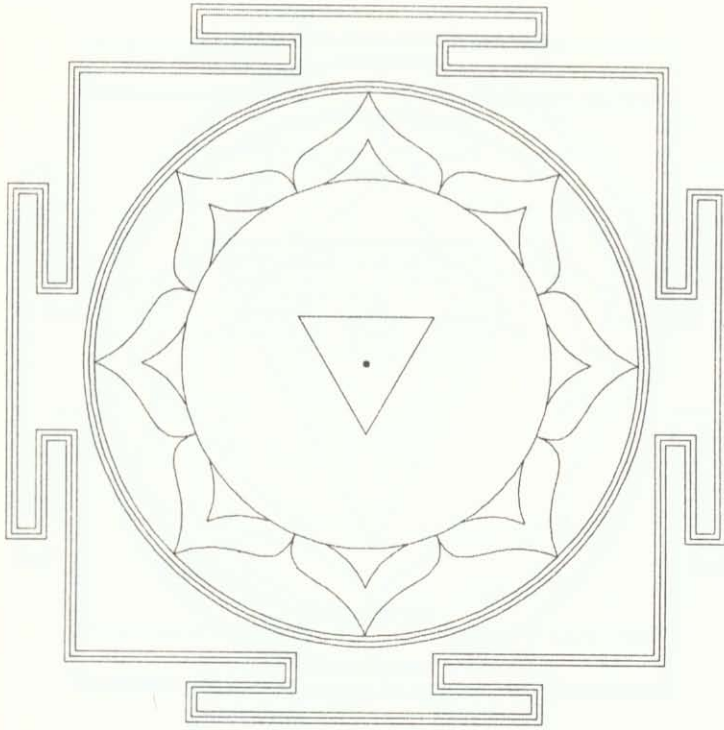
शारदायन्त्रोद्धारः

यन्त्रोद्धारं महादेवि शारदाया ब्रवीम्यहम् ।
सर्वार्थसाधकं चक्रं सर्वकामप्रपूरकम् ॥३४॥
मध्ये बिन्दुस्तद्बहिः स्यात् त्रिकोणं
षट्कोणं स्याद् वृत्तवस्वश्रयुक्तम् ।
वृत्ताकारं षोडशारं त्रिवृत्तं
भूगेहं स्याच्छारदायन्त्रमेतत् ॥३५॥

शारदा यन्त्रोद्धार—अब मैं सर्वार्थबाधक, सर्वकामप्रपूरक महादेवी शारदा के यन्त्रोद्धार को बतलाता हूँ। इस यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल, षोडशदल, वृत्तत्रय और भूपुर होते है।।३४-३५।।

शारदा यन्त्र
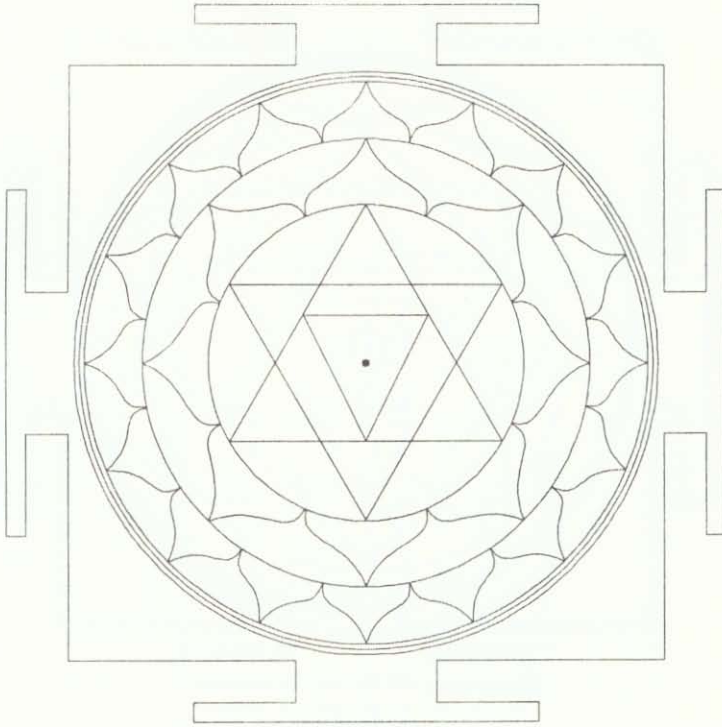
इन्द्राक्षीयन्त्रोद्धारः

अथाहं ते प्रवक्ष्यामि यन्त्रोद्धारं सुदुर्लभम्।
इन्द्राक्ष्यास्तत्त्वसर्वस्वं त्रिषु लोकेषु गोपितम्॥३६॥
बिन्दुस्त्रिकोणजषडश्रषडस्त्रयुक्त-
षट्कोणवृत्तवसुपत्रकलाश्रमिश्रम्।
भूगेहबिम्बमनलेन शशिप्रभाभ-
मिन्द्राक्षिणीप्रियतरं जयचक्रमेतत्॥३७॥

इन्द्राक्षी यन्त्रोद्धार—अब मैं इन्द्राक्षी यन्त्र के उद्धार का वर्णन करता हूँ। यह यन्त्र इन्द्राक्षी तत्त्व का सर्वस्व, अति दुर्लभ और लोकों में गुप्त है। त्रिकोण, बिन्दु में षड्दल, षट्कोण, अष्टदल, षोड़शदल और भूपुर से यह यन्त्र बनता है।।३६-३७।।

इन्द्राक्षी यन्त्र
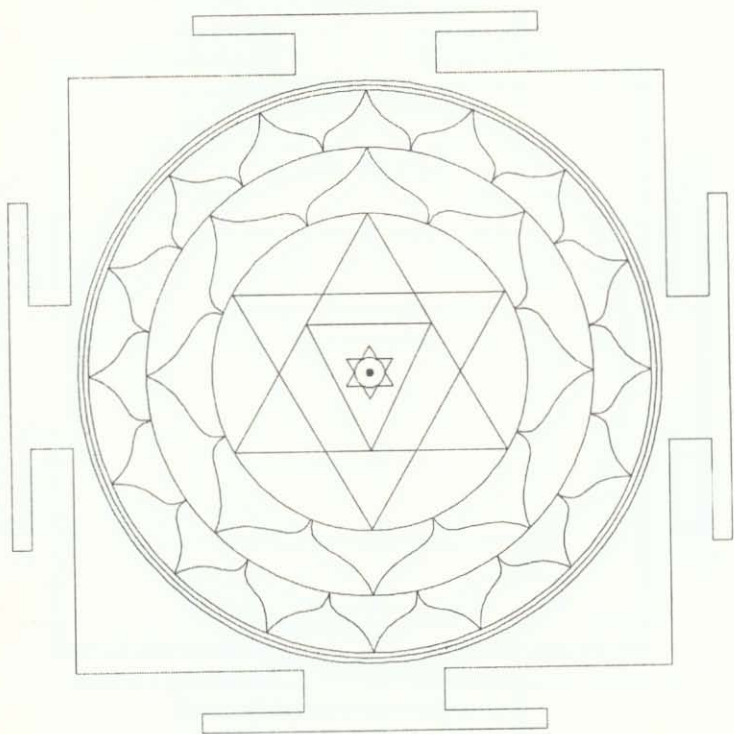
बगलामुखीयन्त्रोद्धारः

अथ ते बगलामुख्या यन्त्रोद्धारं ब्रवीम्यहम् ।
सर्वसिद्धिप्रदं देवि गोपनीयं प्रयत्नतः ॥३८॥
बिन्दुस्त्रिकोणं च रसारवृत्त-
वस्वश्रवृत्ताञ्चितषोडशारम् ।
वृत्तत्रयं भूसदनत्रयं च
श्रीचक्रमेतद् बगलामुखीयम् ॥३९॥

बगलामुखी यन्त्रोद्धार—हे देवि! अब तुझसे मैं बगलामुखी के यन्त्रोद्धार का वर्णन करता हूँ। यह सर्वसिद्धिप्रद है और यत्नपूर्वक गुप्त रखने योग्य है। यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल और षोड़श दल, वृत्तत्रय और तीन भूपुर होते हैं।।३८-३९।।

बगलामुखी यन्त्र
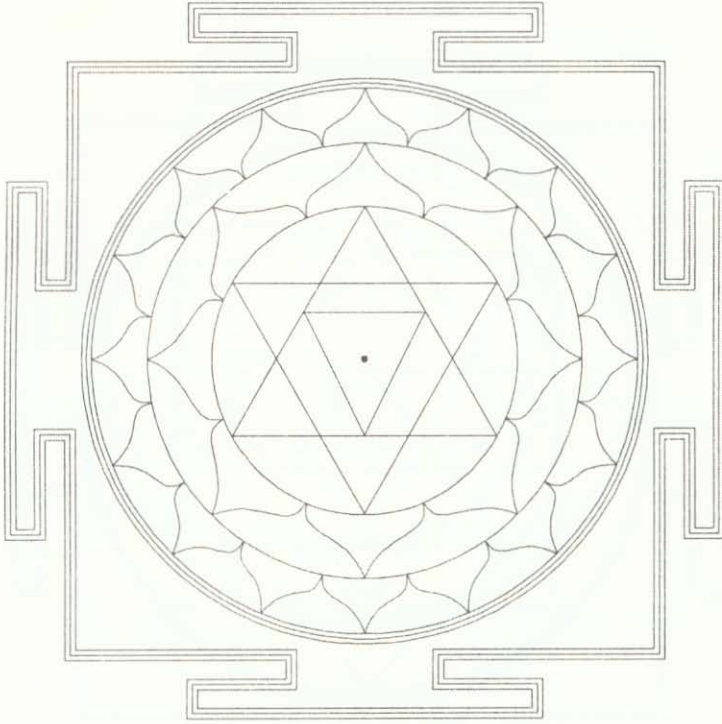
महातुरीयन्त्रोद्धारः

अथाहं ते महातुर्यायन्त्रोद्धारमनुत्तमम् ।
ब्रवीमि परमप्रीत्या सकलाभीष्टसाधनम् ॥४०॥
बिन्दुस्त्रिकोणं नवयोनियुक्तं
वृत्ताञ्चितं नागदलं त्रिवृत्तम् ।
धरागृहं वह्नितुटीभिरीड्यं
तुर्यालयं चक्रमिदं प्रदिष्टम् ॥४१॥

महातुरी यन्त्रोद्धार—तुम्हारी परम प्रीति से प्रसन्न होकर मैं सकलाभीष्टदायक महातुरी के उत्तम यन्त्र का उद्धार बतलाता हूँ। इस यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, नवयोनि, अष्टदल, वृत्तत्रय, त्रिरेखात्मक भूपुर होते हैं। देवी के आवासस्वरूप यह यन्त्र सभी अभीप्सितों को प्रदान करने वाला है।।४०-४१।।

महातुरी यन्त्र
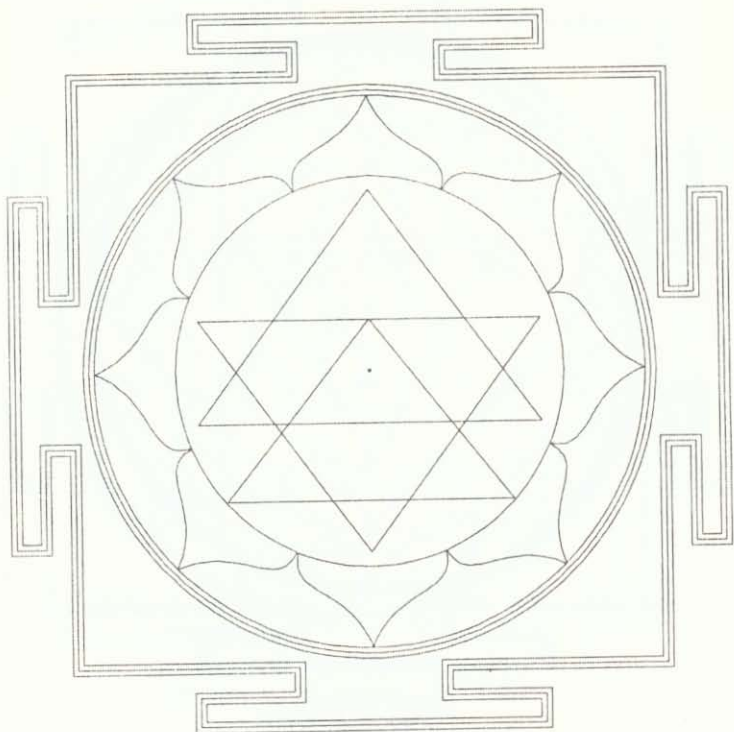
महाराज्ञीयन्त्रोद्धारः

यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि सर्वाशापरिपूरकम् ।
सर्वार्थसाधकं चक्रं सर्वसम्मोहनं तथा ॥४२॥
बिन्दुस्त्र्यश्रं षडश्रं च वृत्ताष्टदलमण्डितम् ।
वृत्तत्रयं धरासद्म राज्ञीश्रीचक्रमीरितम् ॥४३॥

महाराज्ञी यन्त्रोद्धार—अब महाराज्ञी के यन्त्रोद्धार का वर्णन किया जाता है, जो सभी आशा को परिपूर्ण करने वाला, सभी स्वार्थों का साधक और सबों को सम्मोहित करने वाला है। इस यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदलमण्डित वृत्त, वृत्तत्रय और भूपुर का अंकन होता है।।४२-४३।।

महाराज्ञी यन्त्र
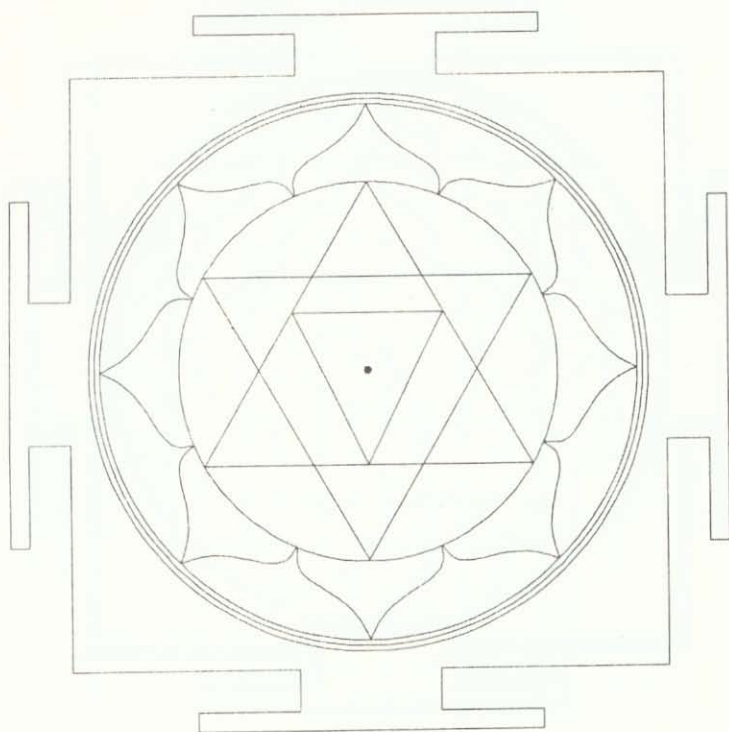
ज्वालामुखीयन्त्रोद्धारः

अथ यन्त्रवरं वक्ष्ये ज्वालामुख्या महेश्वरि।
सर्वतत्त्वैकनिलयं सर्ववाञ्छितदायकम् ॥४४॥
मध्ये शून्यं तदुपरि शरत्कोणमालिख्य देवि
तत्राधस्तात् त्रिकमथ बहिर्दिग्दलं वृत्तमेकम्।
वस्वश्रं द्विःकदलजशरद्वृत्तभूगेहयुक्तं
ज्वालामुख्या जगति जयताच्चक्रमेतन्महेशि ॥४५॥

ज्वालामुखी यन्त्रोद्धार—हे महेश्वरि! अब ज्वालामुखी के श्रेष्ठ यन्त्र का वर्णन करता हूँ। यह यन्त्र सभी तत्त्वों का आलय और सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाला है। इस यन्त्र में बिन्दु, पञ्चकोण, चार दल, वृत्त, अष्टदल, दो भूपुर होते हैं।।४४-४५।।

ज्वालामुखी यन्त्र
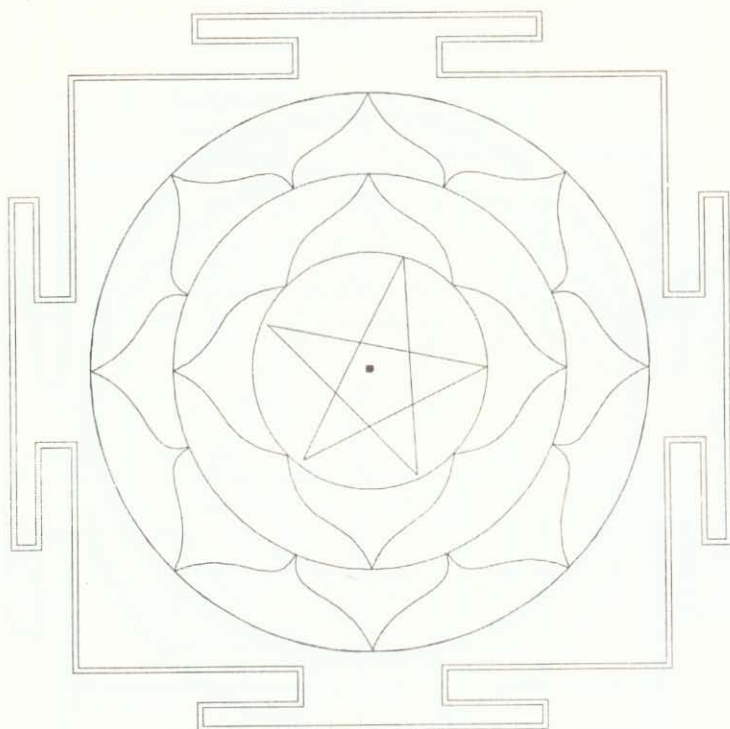
भीड़ायन्त्रोद्धारः

अथ वक्ष्यामि देवेशि भीडायन्त्रमनुत्तमम् ।
सर्वागमरहस्याढ्यं सर्वसारस्वतप्रदम् ॥४६॥
बिन्दुस्त्र्यश्रं काश्रमिश्रं सुवृत्तं
वस्वश्रं स्यात् तद्बहिः षोडशारम् ।
वृत्तत्रयं भूमिगेहत्रयाढ्यं
भीडायन्त्रं सर्वसिद्धिप्रदं स्यात् ॥४७॥

भीड़ा देवी यन्त्रोद्धार—हे देवेशि! अब मैं भीड़ा देवी के उत्तम यन्त्र के उद्धार का वर्णन करता हूँ। यह यन्त्र सभी आगमों के रहस्यों से परिपूर्ण है। सभी सारस्वत ज्ञान का प्रदायक है। इस यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, अष्टदल, षोड़शदल, वृत्तत्रय और त्रिरेखात्मक भूपुर होते हैं।।४६-४७।।

भीड़ा देवी यन्त्र
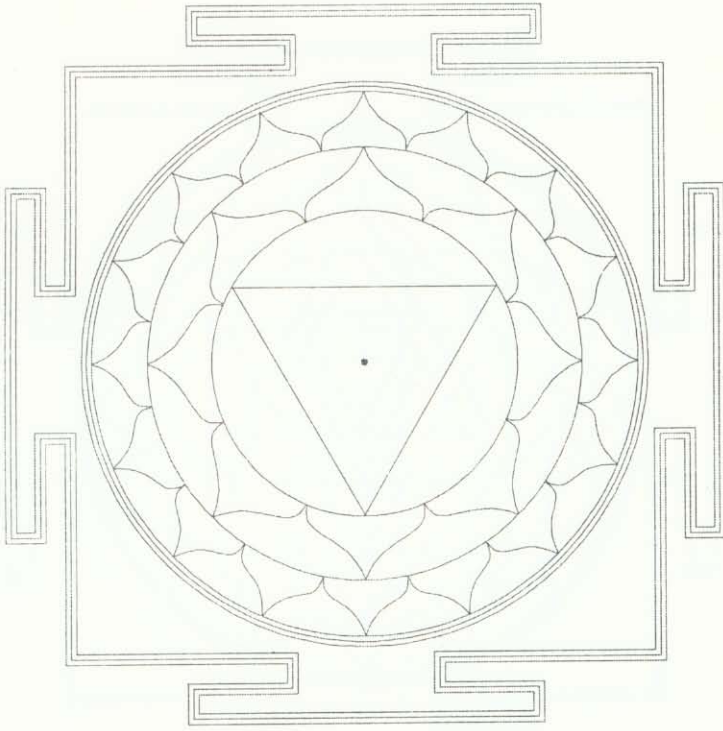
कालरात्रियन्त्रोद्धारः

अथ वक्ष्यामि देवेशि कालरात्र्या अनुत्तमम्।
यन्त्रोद्धारं परानन्दसाधनैकरसायनम् ।।४८।।
बिन्दुस्त्रिकोणरसकोणसुवृत्तनाग-
पत्रं कलारविलसद्दहनोरुवृत्तम् ।
भूमन्दिरत्रयामिदं गिरिपुत्रि यन्त्रं
श्रीकालरात्रिनिलयं परमार्थदं स्यात् ।।४९।।

कालरात्रि यन्त्रोद्धार—हे देवेशि! अब मैं कालरात्रि के उत्तम यन्त्र का उद्धार बतलाता हूँ। यह यन्त्र परानन्द-साधन का एकमात्र साधन है। इस यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल, द्वादश दल, वृत्तत्रय और त्रिरेखात्मक भूपुर होते हैं। कालरात्रि के आवासस्वरूप यह यन्त्र परमार्थप्रद है।।४८-४९।।

कालरात्री यन्त्र
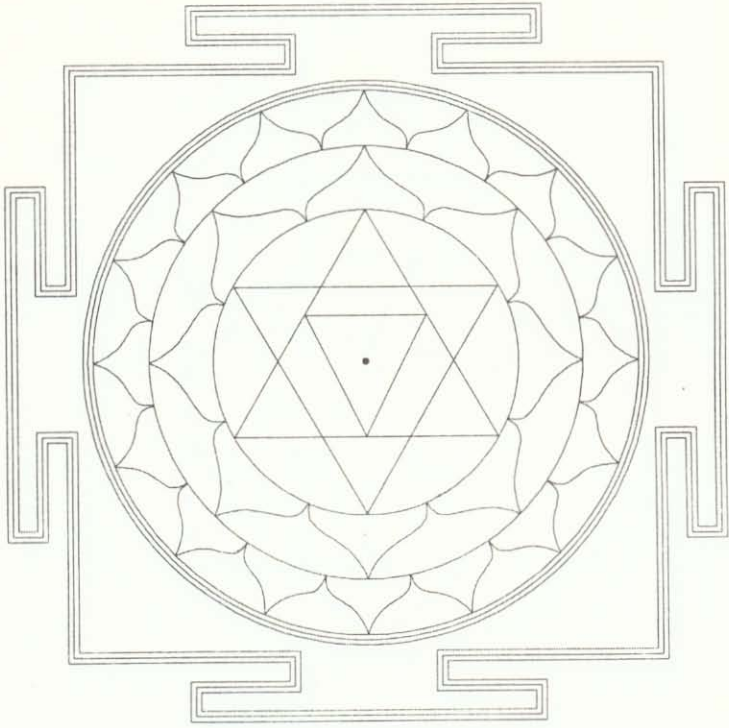
भवानीयन्त्रोद्धारः

अथाहं ते प्रवक्ष्यामि भवान्या यन्त्रमुत्तमम् ।
मूलमन्त्ररहस्याढ्यं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥५०॥
बिन्दुस्त्रिकोणं च षडश्रयुक्तं
वृत्तं च नागारकलादलाढ्यम् ।
वृत्तत्रयं भूसदनत्रयं स्यात्
श्रीचक्रमानन्दपदं भवान्याः ॥५१॥

भवानी यन्त्रोद्धार—हे देवि! अब मैं भवानी के उत्तम यन्त्र के उद्धार का वर्णन करता हूँ। यह यन्त्र मूल मन्त्र के रहस्य से पूर्ण है और सर्वसिद्धिप्रदायक है। इस यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल, द्वादश दल, तीन वृत्त और तीन भूपुर होते है। यह यन्त्र भवानी को आनन्दप्रद है।।५०-५१।।

भवानी यन्त्र
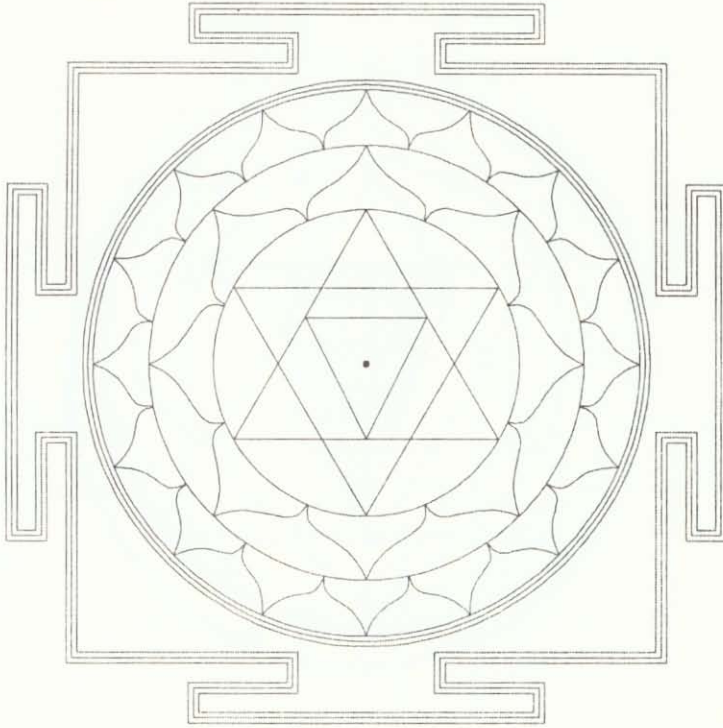
वज्रयोगिनीयन्त्रोद्धारः

अथ वक्ष्ये महादेवि यन्त्रराजं सुदुर्लभम् ।
श्रीवज्रयोगिनीदेव्याः सर्वसौख्यप्रवर्धनम् ।।५२।।
बिन्दुस्त्रिकोणं च बहिः षडश्रं
वृत्तैकवस्वश्रवृत्तयुक्तम् ।
धरागृहं यन्त्रमिदं महेशि
श्रीवज्रशब्दाङ्कितयोगिनीयम् ।।५३।।

वज्रयोगिनी यन्त्रोद्धार—हे महादेवि! अब मैं श्री वज्रयोगिनी देवी के सर्वसौख्यवर्द्धक दुर्लभ यन्त्र के उद्धार का वर्णन करता हूँ। इस यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल, तीन वृत्त और भूपुर होते हैं।।५२-५३।।

वज्रयोगिनी यन्त्र
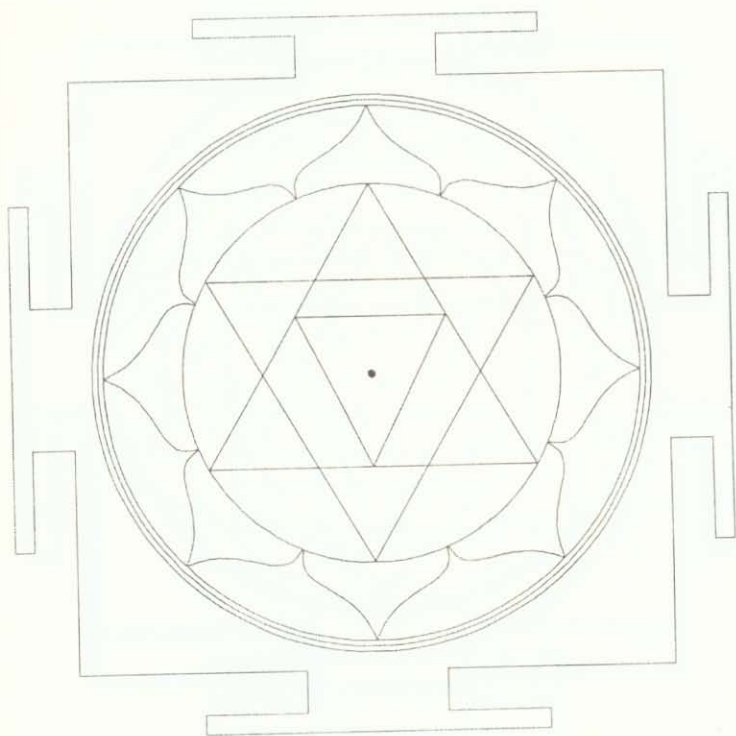
धूम्रवाराहीयन्त्रोद्धारः

अथ वक्ष्यामि वाराह्या यन्त्रोद्धारमनुत्तमम् ।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं साधकानां शुभावहम् ॥५४॥
त्रिकोणं सबिन्दुं पुनः स्यात् त्रिकोणं
ततः सप्तवारं त्रिकोणं प्रकुर्यात् ।
गजाश्रं कलारं हि वृत्तत्रयाङ्कं
धरासद्म यन्त्रं वराहेश्वरीयम् ॥५५॥

वाराही यन्त्रोद्धार—अब मैं वाराही के उत्तम यन्त्र के उद्धार का वर्णन करता हूँ। यह यन्त्र सभी मङ्गलों का माङ्गल्य और साधकों को शुभकारक है। इस यन्त्र में बिन्दु, नव त्रिकोण, अष्टदल, द्वादशदल, तीन वृत्त और भूपुर होते हैं।।५४-५५।।

वाराही यन्त्र
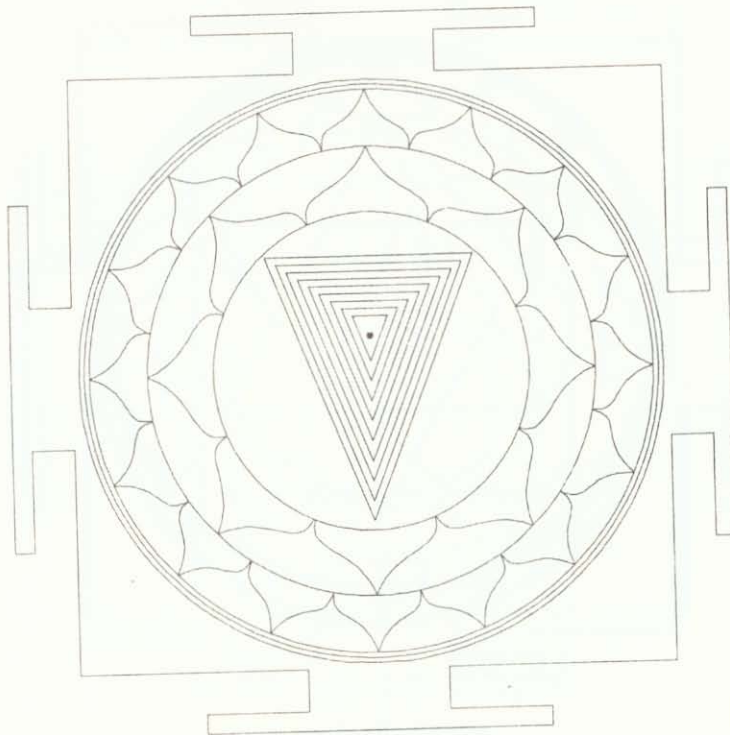
सिद्धलक्ष्मीयन्त्रोद्धारः

अथ वक्ष्ये महादेवि यन्त्रोद्धारं सुदुर्लभम्।
सर्ववैरिप्रशमनं सर्ववाञ्छितपूरकम् ॥५६॥
बिन्दुस्त्रिकोणषट्कोणवृत्ताष्टदलमण्डितम् ।
त्रिवृत्तं भूगृहं यन्त्रं सिद्धलक्ष्म्या मया स्मृतम् ॥५७॥

सिद्धलक्ष्मी यन्त्रोद्धार—हे महादेवि! अब मैं सिद्धलक्ष्मी के दुर्लभ यन्त्र का उद्धार बतलाता हूँ। यह यन्त्र सभी वैरियों का विनाशक और सभी मनोरथों को पूरा करने वाला है। यह यन्त्र बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल, तीन वृत्त और भूपुर से समन्वित होता है।।५६-५७।।

सिद्धलक्ष्मी यन्त्र
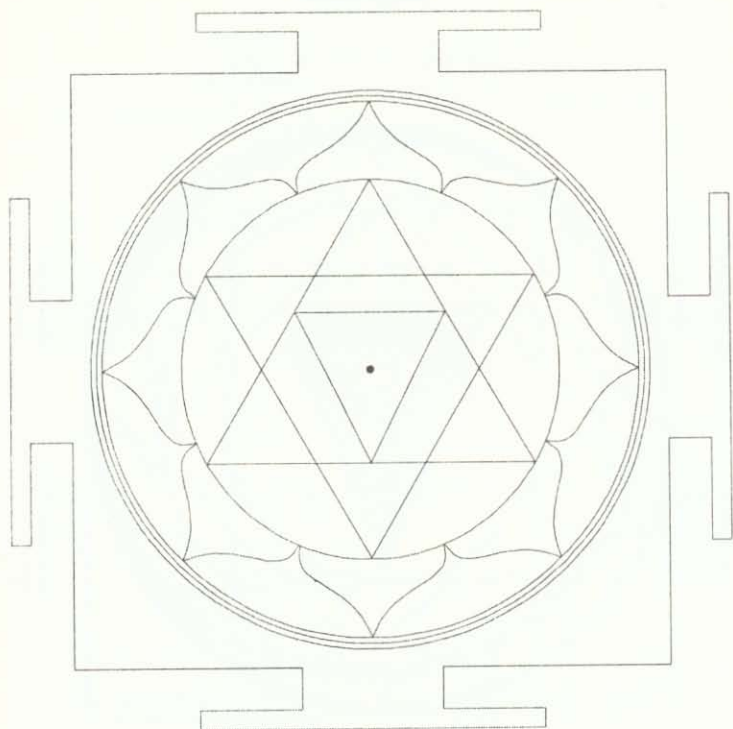
कुलवागीश्वरीयन्त्रोद्धारः

अथ यन्त्रवरं वक्ष्ये कुलवागीश्वरीप्रियम् ।
साधकेष्टप्रदं दिव्यं परम्पदरसालयम् ॥५८॥
त्रिकोणं सबिन्दुं शराश्रं सवृत्तं
ततो नागपत्राञ्चितं षोडशारम् ।
त्रिवृत्तं धरासद्म पद्मास्पदं ते
सुयन्त्रं प्रदिष्टं च वागीश्वरीयम् ॥५९॥

कुलवागीश्वरी यन्त्रोद्धार—अब मैं कुलवागीश्वरी के उत्तम यन्त्र के उद्धार का वर्णन करता हूँ। यह यन्त्र साधकों को अभीष्टदायक एवं परम पद रस का आलय है। इस यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, पञ्चकोण, अष्टदल और षोड़शार वृत्तत्रय और भूपुर अंकित होते हैं। वागीश्वरी यन्त्र अत्यन्त सुन्दर है और अभीष्टदायक है।।५८-५९।।

कुलवागीश्वरी यन्त्र
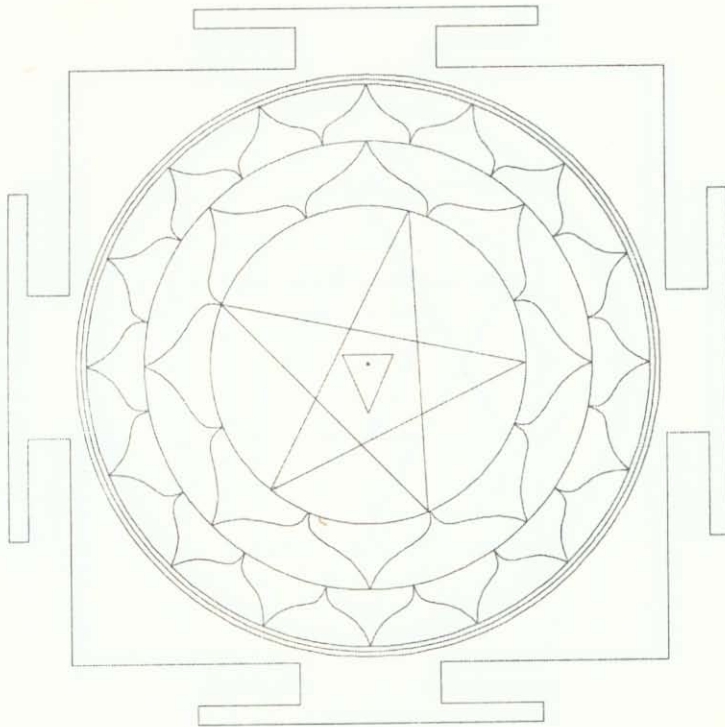
पद्मावतीयन्त्रोद्धारः

अथ वक्ष्यामि देवेशि यन्त्रं पद्मावतीप्रियम्।
सर्वार्थसाधकं दिव्यं सर्वाशापरिपूरकम् ॥६०॥
बिन्दुस्त्रिकोणवसुकोणसवृत्तनाग-
पत्रादिषोडशदलानलवर्तुलं च।
भूमन्दिरत्रयमिदं सकलार्थदं स्यात्
पद्मावती प्रियतरं जयचक्रमेतत् ॥६१॥

पद्मावती यन्त्रोद्धार—हे देवेशि! अब मैं पद्मावती के प्रिय यन्त्र का उद्धार-निरूपण करता हूँ। यह यन्त्र सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाला एवं सभी आशाओं को पूर्ण करने वाला है। यह यन्त्र बिन्दु, त्रिकोण, अष्टकोण, अष्टदल, षोड़शदल, तीन वृत्त, तीन भूपुरों से बनता है।।६०-६१।।

पद्मावती यन्त्र
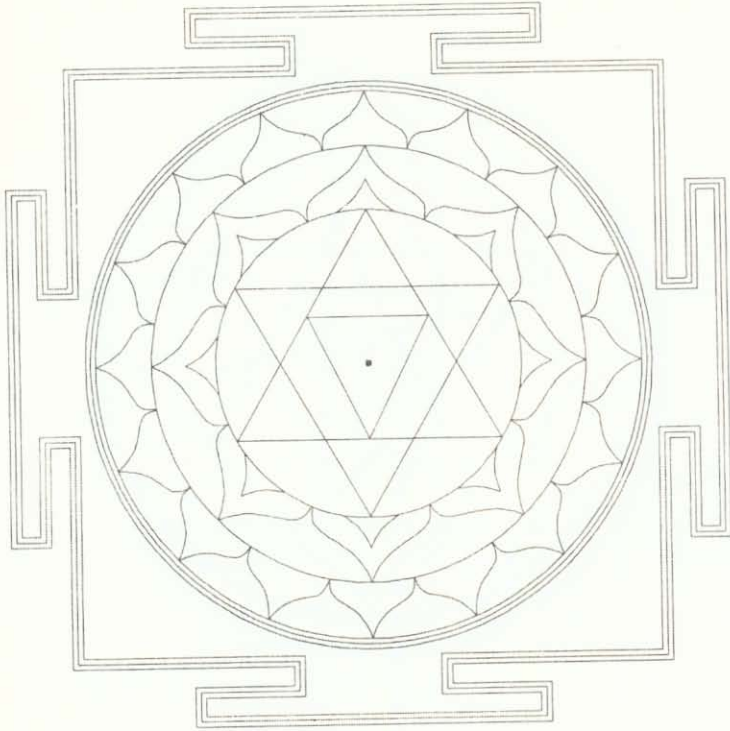
कुब्जिकायन्त्रोद्धारः

अथ वक्ष्ये महादेवि कुब्जिकायन्त्रमुत्तमम्।
सर्वदेवरहस्यं च गोपनीयं विशेषतः ॥६२॥
बिन्दुस्त्रिकोणं रसकोणयुक्तं
वृत्तं ततो नागदलं रवृत्तम्।
धरागृहं सर्वरहस्यगर्भं
श्रीकुब्जिकायन्त्रमिदं मयोक्तम् ॥६३॥

कुब्जिका यन्त्रोद्धार—हे महादेवि! अब मैं महादेवी कुब्जिका के उत्तम यन्त्र का वर्णन करता हूँ। यह सभी देवताओं का रहस्य होने से विशेष गोपनीय है। इस यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल, तीन वृत्त और भूपुर अंकित होते हैं। यह सर्व-रहस्यगर्भ है।।६२-६३।।

कुब्जिका यन्त्र
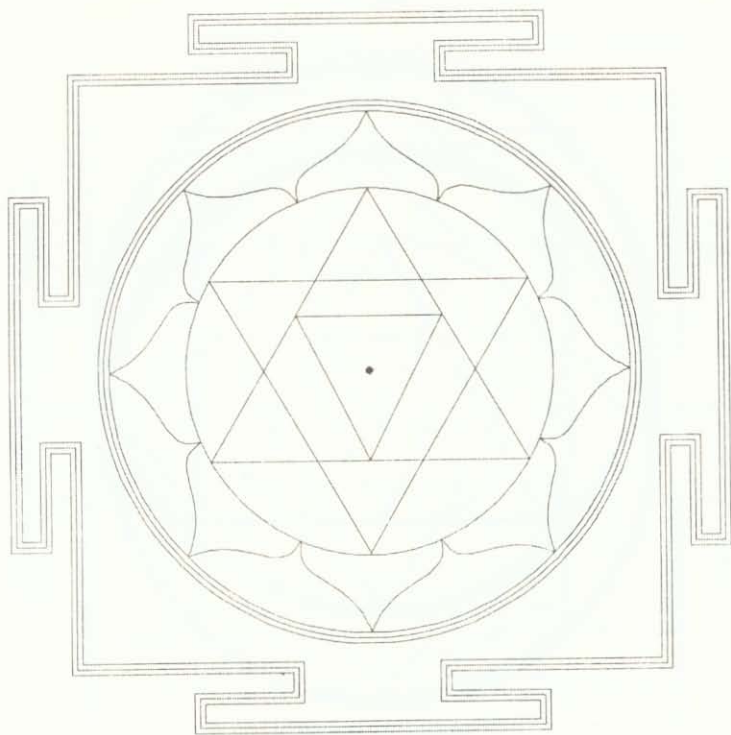
गौरीयन्त्रोद्धारः

अथ वक्ष्ये महादेवि गौरीयन्त्रं सुदुर्लभम्।
सर्वैश्वर्यप्रदं सर्वविघ्नप्रशमनं शिवे ॥६४॥
मध्ये त्रिकोणं खयुतं षडश्रं
वृत्तं तथा नागदलाग्निवृत्तम्।
भूमन्दिरं कौलकुलेष्टतत्त्व-
भूतं सुचक्रं कथितं हि गौर्याः ॥६५॥

गौरी यन्त्रोद्धार—हे शिवे! अब मैं महादेवी गौरी के अति दुर्लभ यन्त्र का उद्धार कहता हूँ। यह यन्त्र सर्वैश्वर्य-प्रदायक और सभी विघ्नों का विनाशक है। इस यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल, तीन वृत्त और भूपुर अंकित होते हैं। यह यन्त्र कौल-कुल के इष्टस्वरूप है।।६४-६५।।

गौरी यन्त्र
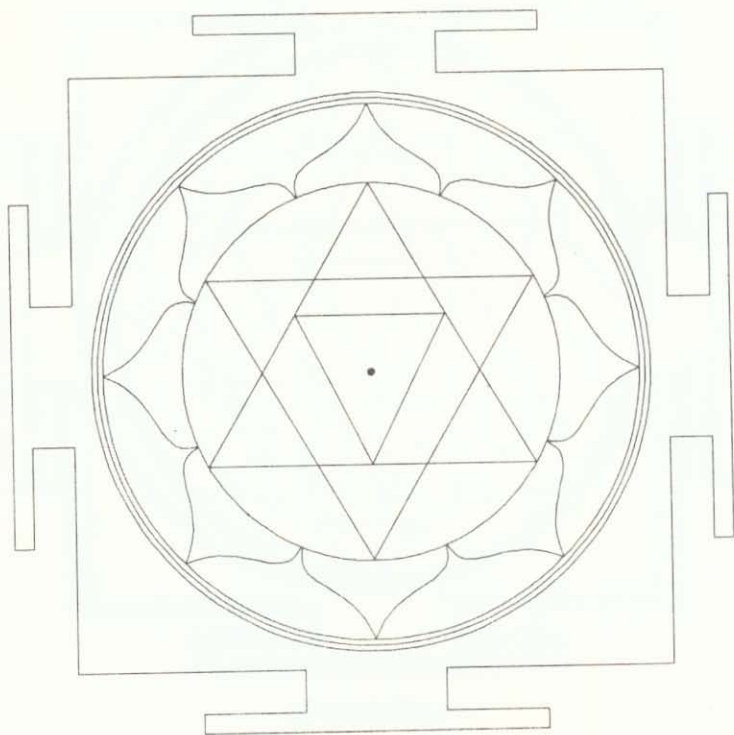
खेचरीयन्त्रोद्धारः

अथ वक्ष्ये महादेवि खेचरीयन्त्रमुत्तमम्।
योगिनां दुर्लभं योगसाधनानन्दकारणम् ॥६६॥
बिन्दुस्त्रिकोणकं वृत्तं वसुपत्राग्निवृत्तकम्।
धरागृहं मयाख्यातं खेचरीयन्त्रमुत्तमम् ॥६७॥

खेचरी यन्त्रोद्धार—अब मैं महादेवी खेचरी के उत्तम यन्त्र का वर्णन करता हूँ। यह यन्त्र योगियों को दुर्लभ योगसाधना के आनन्द का कारण है। इस यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, अष्टदल, तीन वृत्त और भूपुर अंकित होते हैं।।६६-६७।।

खेचरी यन्त्र
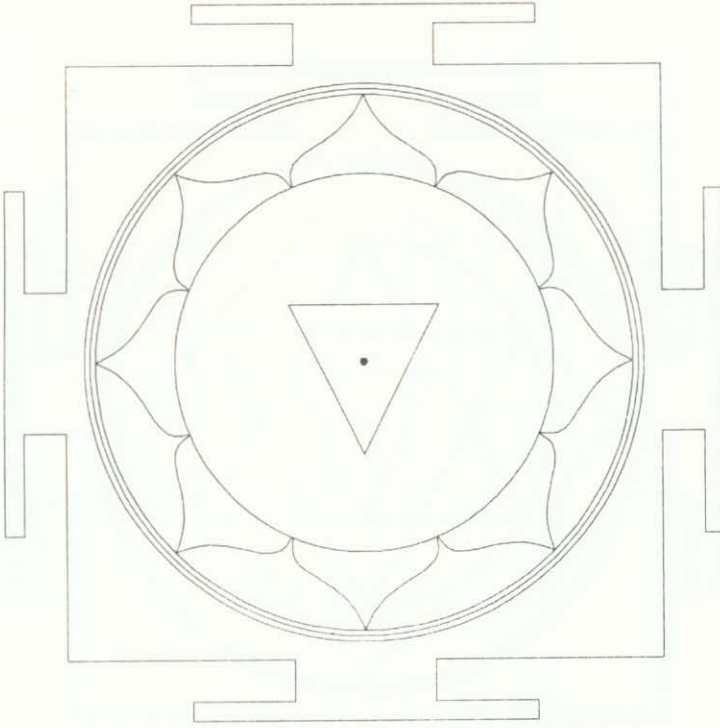
नीलसरस्वतीयन्त्रोद्धार:

अथ नीलसरस्वत्या यन्त्रोद्धारं ब्रवीम्यहम्।
महाचीनपदस्थानां सिद्धिदं भोगदं शिवे ॥६८॥
बिन्दुस्ततोऽग्न्यारषडश्रयुक्तं
वृत्तं ततो नागदलाग्निवृत्तम्।
धरागृहं वह्नितुटीभिरीड्यं
यन्त्रं परं नीलसरस्वतीयम् ॥६९॥

नीलसरस्वती यन्त्रोद्धार—अब मैं नीलसरस्वती के यन्त्र के उद्धार का निरूपण करता हूँ। हे शिवे! यह यन्त्र महाचीन साधना पद्धति में भोगप्रद और सिद्धिप्रदायक है। इस यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल, तीन वृत्त और त्रिरेखात्मक भूपुर का अंकन होता है।।६८-६९।।

नीलसरस्वती यन्त्र
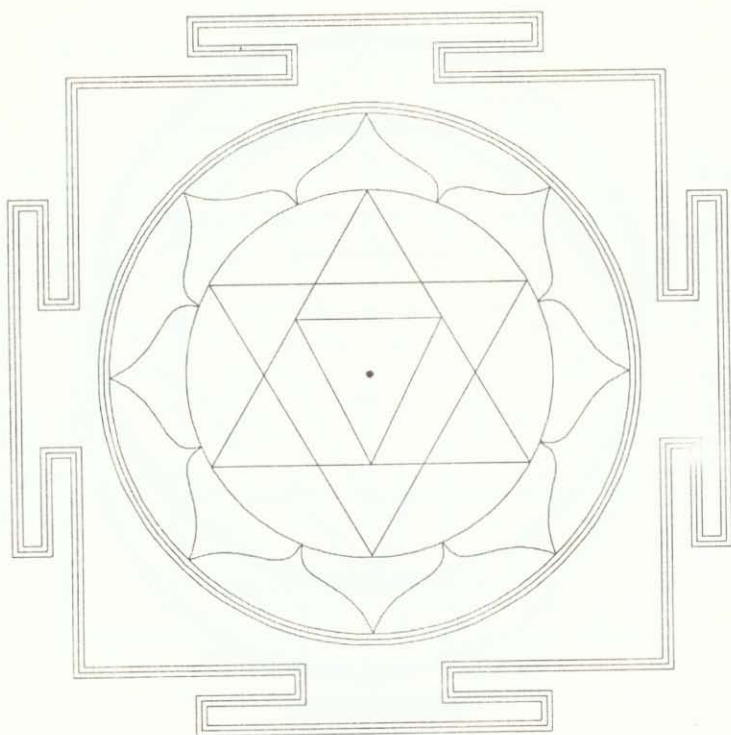
पराशक्तियन्त्रोद्धारः

अथ देव्याः पराशक्तेर्यन्त्रोद्धारं ब्रवीम्यहम् ।
सर्वसम्पत्प्रदं दिव्यं सर्वैश्वर्यप्रदायकम् ॥७०॥
बिन्दुस्त्रिकोणवृत्ताढ्यवसुपत्राग्निवृत्तकम् ।
भूगृहं यन्त्रमेतत्ते पराशक्तेर्मया स्मृतम् ॥७१॥

पराशक्ति यन्त्रोद्धार—अब मैं देवी पराशक्ति के यन्त्रोद्धार का निरूपण करता हूँ। यह यन्त्र सभी सम्पत्तियों का प्रदायक, दिव्य और सभी ऐश्वर्यों को देने वाला है। इस यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, अष्टदल, तीन वृत्त और भूपुर अंकित होते हैं।।७०-७१।।

पराशक्ति यन्त्र
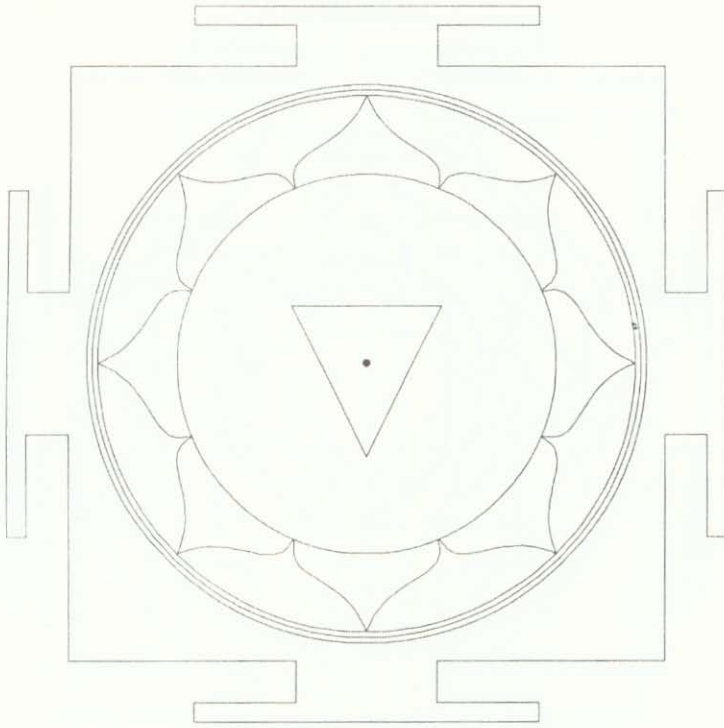
साधारणशिवयन्त्रोद्धारः

अथाहं यन्त्रमीशानि शिवस्य परमं ब्रुवे।
सर्वसाधारणं सर्ववाञ्छितैकप्रदायकम् ॥७२॥
बिन्दुस्त्रिकोणवसुकोणदशारवृत्त-
नागाश्रषोडशदलानलवृत्तयुक्तम् ।
भूमन्दिरत्रयमिदं परमार्थदं स्यात्
साधारणं जगति यन्त्रमनादि शैवम् ॥७३॥

ईशान शिव यन्त्रोद्धार—अब मैं ईशान शिव के यन्त्रोद्धार का निरूपण करता हूँ। यह श्रेष्ठ यन्त्र सबों की सभी इच्छित वस्तुओं का प्रदायक है। इस यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, अष्टकोण, दशदल, अष्टदल, षोड़शदल, त्रिवृत्त एवं तीन भूपुरों का अंकन होता है।।७२-७३।।

ईशान शिव यन्त्र
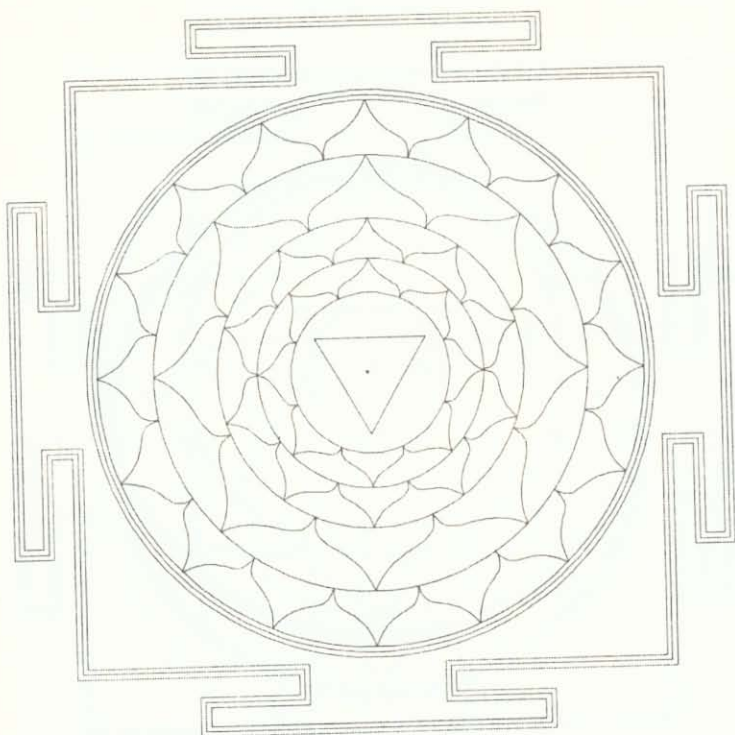
साधारणवैष्णवयन्त्रोद्धारः

अथाहं वैष्णवं देवि यन्त्रराजं ब्रवीमि ते।
सर्वसाधारणं लोके वैष्णवानां शुभप्रदम् ॥७४॥
बिन्दुस्त्रिकोणवसुकोणसुवृत्तनाग-
पत्राढ्यषोडशदलाञ्चितवृत्तबिम्बम् ।
भूमन्दिरं जयति यन्त्रमिदं भवानि
साधारणं परमवैष्णवधाम सत्यम् ॥७५॥

वैष्णव यन्त्रोद्धार—हे देवि! अब मैं वैष्णव यन्त्रोद्धार का निरूपण करता हूँ। इस संसार में यह यन्त्र सर्व सामान्य वैष्णवों के लिये शुभदायक है। यह बिन्दु, त्रिकोण, अष्टकोण, अष्टदल, षोड़श दल, वृत्त और भूपुर से बनता है। हे भवानि! यह यन्त्र विजयप्रद, परम वैष्णव और सत्य धाम है।।७४-७५।।

वैष्णव यन्त्र
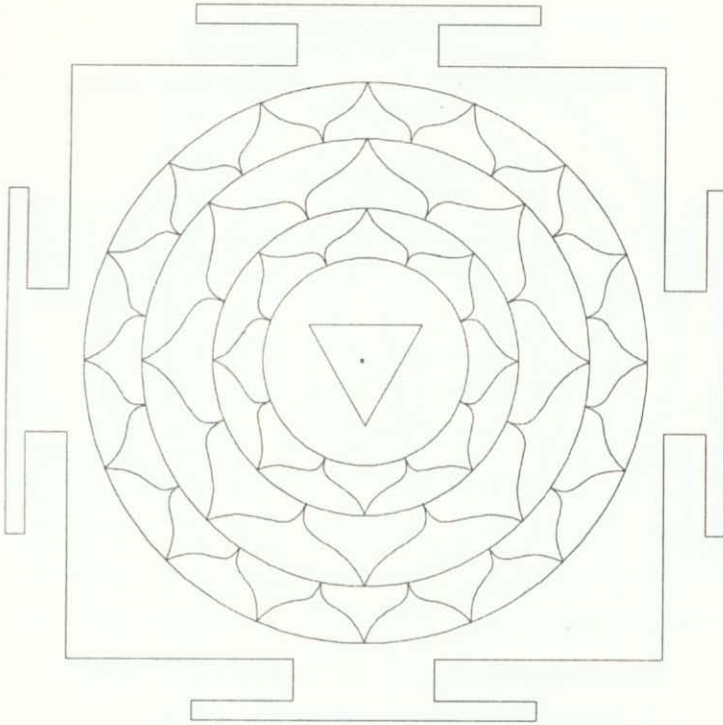
अघोरभैरवयन्त्रोद्धारः

सर्वेषामेव मन्त्राणां शैवानां परमेश्वरि।
गुरुरघोरो वक्ष्येऽहं तस्य यन्त्रमनुत्तमम् ॥७६॥
त्रिकोणं सबिन्दुं शराश्रं सकाश्रं
ततो नागपत्रं सवृत्तं कलारम्।
चतुर्भूगृहोद्भासितं वह्निरेखं
सदोद्द्योततेऽघोरदेवस्य यन्त्रम् ॥७७॥

अघोरभैरव यन्त्रोद्धार—हे परमेश्वरि! सभी शैव मन्त्रों में श्रेष्ठ अघोर यन्त्र का अब मैं निरूपण करता हूँ। इस यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, पञ्चकोण, अष्टदल, दशदल एवं तीन भूपुर अङ्कित होते हैं।।७६-७७।।

अघोरभैरव यन्त्र
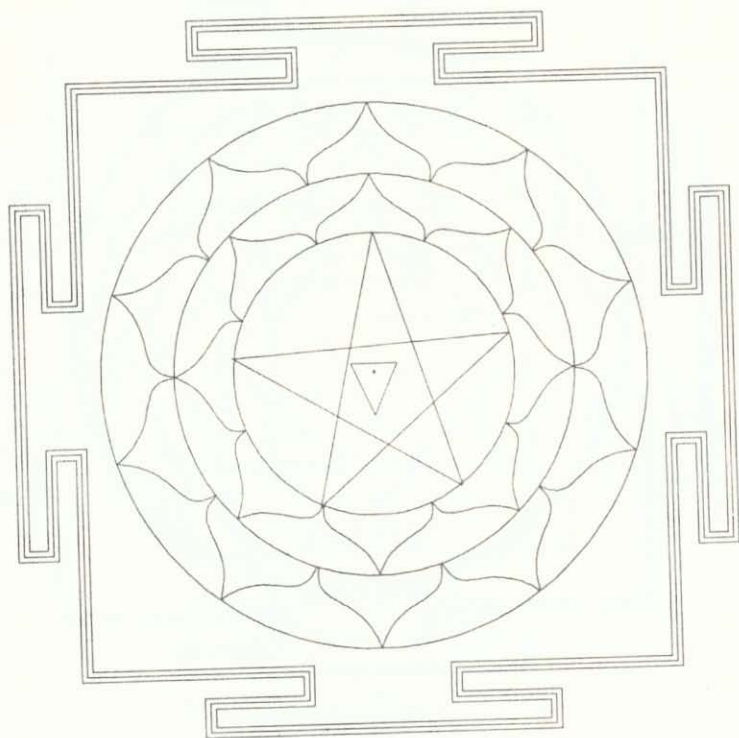
लक्ष्मीनारायणयन्त्रोद्धारः

सर्वेषामेव मन्त्राणां वैष्णवानां महेश्वरि।
लक्ष्मीनारायणः श्रेष्ठस्तस्य यन्त्रं ब्रवीम्यहम् ॥७८॥
बिन्दुस्त्रिकोणं वस्वश्रं वृत्ताष्टदलमण्डितम्।
षोडशारं रवृत्तं च भूगेहेनोपशोभितम् ॥७९॥
लक्ष्मीनारायणस्यैतच्छ्रीचक्रं परमार्थदम्।

लक्ष्मीनारायण यन्त्रोद्धार—हे महेश्वरि! सभी वैष्णव मन्त्रों में लक्ष्मीनारायण मन्त्र श्रेष्ठ है। उस मन्त्र के यन्त्र का अब मैं निरूपण करता हूँ। इस यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, अष्टकोण, अष्टदल, षोड़शदल, तीन वृत्त और भूपुर अंकित होते हैं। इस यन्त्र से परमार्थ की प्राप्ति होती है।।७८-७९।।

लक्ष्मीनारायण यन्त्र
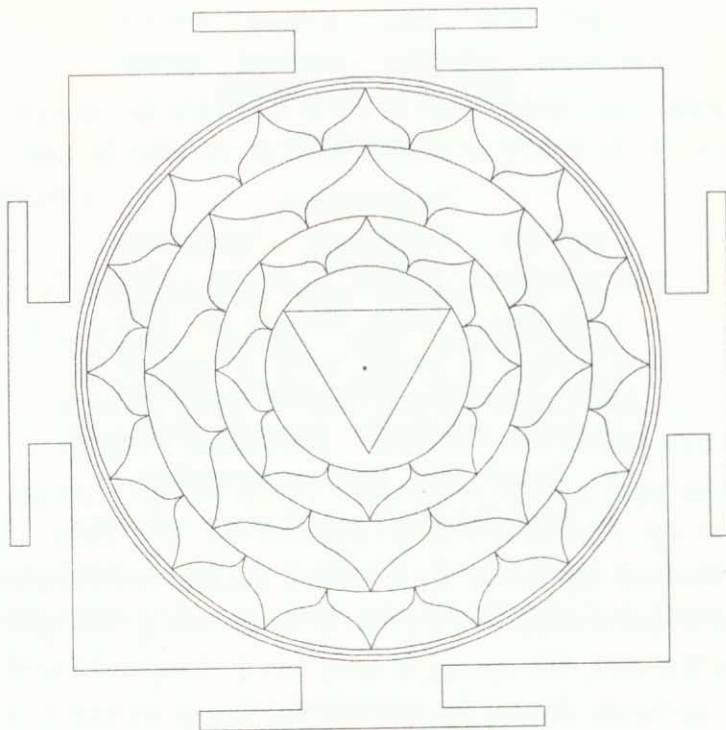
इतीदं सर्वदेवानां रहस्यं परमाद्भुतम्।
तत्त्वं तव मयाख्यातं गोपनीयं स्वयोनिवत्॥८०॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये यन्त्रोद्धार-
निरूपणं नाम द्वादशः पटलः॥१२॥

यह सभी देवों के तत्त्व के परम अद्भुत रहस्य का वर्णन सम्पूर्ण हुआ। इसे अपनी योनि के समान गुप्त रखना चाहिये।।८०।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में यन्त्रोद्धार
निरूपण नामक द्वादश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ त्रयोदशः पटलः

यन्त्रधारणविधिः

यन्त्रधारणमाहात्म्यम्

श्रीभैरव उवाच

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि रहस्यं सर्वकामिकम्।
यन्त्रधारणपूजाया विधिं साधारणं परम् ॥१॥
विना वर्म विना नाम्नां सहस्रकं महेश्वरि।
न सिद्धिः साधकस्यास्ति भैरवस्यापि पार्वति ॥२॥
यः साधको जपेद् विद्यां यन्त्रधारणवर्जितः।
सा विद्या कोटिजप्तापि तस्य निष्फलतां व्रजेत् ॥३॥

यन्त्रधारण-माहात्म्य—श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! अब मैं सर्वार्थसिद्धि के लिये यन्त्रधारण-पूजा की साधारण और श्रेष्ठ विधि का निरूपण करता हूँ, आप सुनिये। जो साधक विना कवच, विना सहस्रनाम के साधना करता है, भैरवतुल्य होने पर भी उसे सिद्धि नहीं मिलती। जो साधक बिना यन्त्र धारण किये विद्या का जप करता है, करोड़ों जप करने पर भी उसकी साधना निष्फल हो जाती है।।१-३।।

यन्त्रपूजाप्रकारः

शुभेऽह्नि शुभनक्षत्रे शुभवारे महेश्वरि।
ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय स्नात्वा ध्यात्वा गुरुं निजम् ॥४॥
सशिवां देवतां ध्यात्वा रहःस्थाने सुधूपिते।
गन्धाष्टकेन विलिखेद् यन्त्रं मूलेन वेष्टितम् ॥५॥
तद्बाह्ये कवचं दिव्यं तथा नामसहस्रकम्।
लिखेत् कनकलेखन्या भूर्जपत्रे सुशोभने ॥६॥

यन्त्रपूजा—शुभ तिथि, शुभ नक्षत्र, शुभ वार के ब्राह्म मुहूर्त में उठकर स्नान करे और गुरु का ध्यान करे। शिवा के साथ देवता का ध्यान करे। स्थान को सुगन्धित धूप से सुगन्धि करे। अष्टगन्ध से यन्त्र का अंकन करे और उसे मूल मन्त्र से वेष्टित करे। उसके बाहर दिव्य कवच तथा सहस्रनाम लिखे।।४-६।।

गन्धाष्टकनिरूपणम्

गन्धाष्टकं प्रवक्ष्यामि रहस्यं परमं प्रिये।
अवाच्यं देवभक्ताय परशिष्याय सर्वथा ॥७॥

अष्टगन्ध—यह यन्त्र भोजपत्र पर सोने की लेखनी से लिखे। अब मैं अष्टगन्ध के परम रहस्य को कहता हूँ। यह रहस्य अभक्तों तथा परशिष्यों को नहीं बतलाना चाहिये।।७।।

स्वयम्भूकुसुमं कुण्डगोलोत्थं रोचनागुरु।
कर्पूरं मृगनाभिश्च मद्यं च मलयोद्भवम् ॥८॥
अपरं ते प्रवक्ष्यामि सिद्धिदं गन्धसाधनम्।
वैष्णवानां च शैवानां शाक्तानां च शुभावहम् ॥९॥
काश्मीर-गोरोचन-पूगकादि-कुरङ्गनाभीज-सरुद्र-मूर्वाः।
पूतासकं चन्दनमिश्रमेतद् गन्धाष्टकं भैरवभैरवीष्टम् ॥१०॥

अष्टगन्ध के आठ गन्धों के नाम हैं—स्वयम्भू कुसुम, कुण्डगोल, मदिरा, मलयागिरि चन्दन, गोरोचन, अगर, कपूर और कस्तूरी। यह शक्ति का अष्टगन्ध है। दूसरे प्रकार के अष्टगन्ध का वर्णन करता हूँ, जो वैष्णवों, शैवों और शाक्तों के लिये शुभ है। इस गन्ध में केशर, गोरोचन, पूगी, कस्तूरी, अगर, तगर, श्वेत चन्दन और सिन्दूर मिलाया जाता है।।८-१०।।

यन्त्रलेखनप्रकारः

गन्धाष्टकं स्वमूलेन नियोज्य कुलसाधकः।
न्यासमृष्यादिकं कृत्वा ध्यायेद् देवीं शिवाङ्कगाम् ॥११॥
लिखेद्यन्त्रं निजं दिव्यं तद्बाह्ये मूलमन्त्रतः।
मातृकां विलिखेन्मन्त्री तद्बाह्ये कवचं लिखेत् ॥१२॥
तथा नामसहस्रं च लिखित्वा भूर्जपत्रके।

यन्त्रलेखन—कुलसाधक अपने मूल मन्त्र से अष्टगन्ध को अभिमन्त्रित करके ऋष्यादि न्यास करके शिव के अंक में आसीन देवी का ध्यान करे। इसके बाद इष्ट के यन्त्र को लिखे। यन्त्र के बाहर मूल मन्त्र को लिखे। इसके बाहर मातृकाओं को लिखे। उसके बाहर कवच लिखे और उसके बाहर सहस्रनाम लिखे। यह लेखन भोजपत्र पर करे।।११-१२।।

वेष्टयेत् श्वेतसूत्रेण पीतनीलक्रमेण च ॥१३॥
निजेष्टदेवीध्यानाभ-वर्णेन परमेश्वरि।
लाक्षया परिवेष्ट्याथ सुवर्णेनाथ वेष्टयेत् ॥१४॥

इस यन्त्र की गुटिका बनाकर बाहर क्रमशः उजले पीले नीले धागों से लपेटे। अपनी

इष्ट देवी का ध्यान करके इसका परिवेष्टन लाह या सोने से करे। अर्थात् सोने के ताबीज में इसे भरे।।१३-१४।।

ततः परां गुटीं दिव्यां देवीरूपां विचिन्त्य च।
यन्त्रधारण-यन्त्रस्य बिन्दौ संस्थापयेच्छिवे ॥१५॥
यन्त्रधारण-यन्त्रं ते वक्ष्ये साधकपूजिते।
कौलिकानां हितार्थाय गोपनीयं विशेषतः ॥१६॥
बिन्दुस्त्रिकोणं षट्कोणं षडस्त्रं वसुपत्रकम्।
त्रिवृत्तं च धरासद्म यन्त्रधारण-यन्त्रकम् ॥१७॥

उस दिव्य परा गुटिका का चिन्तन देवीस्वरूप में करे और धारण यन्त्र के बिन्दु में उसे स्थापित करे। हे साधकपूजिते! अब मैं धारण किये जाने वाले यन्त्र को तुमसे बतलाता हूँ। इसे कौलिकों के हितकामना से कहता हूँ। इसे विशेष रूप से गुप्त रखना चाहिये। इस धारण यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, षड्दल, अष्टदल, वृत्तत्रय और भूपुर अङ्कित होते हैं।।१५-१७।।

यन्त्रधारण यन्त्र
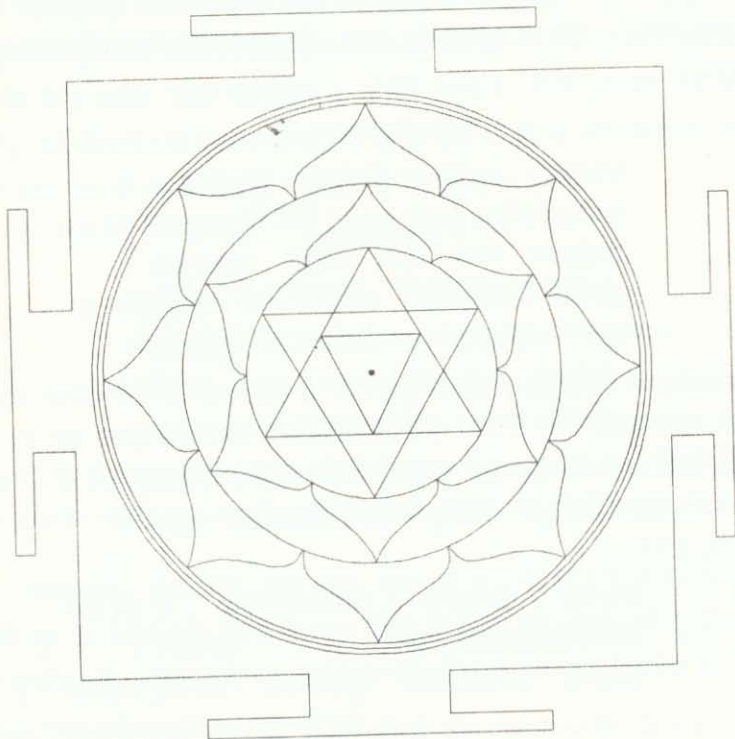
यन्त्रपूजनप्रकारः

सिन्दूरेण लिखेद् देवि लयाङ्गं पूजयेच्छिवे।
यस्य पूजनमात्रेण मन्त्री भैरवतां व्रजेत् ॥१८॥
गणेशं धर्मराजं च वरुणं च कुबेरकम्।
चतुर्द्वारेषु सम्पूज्याश्चत्वारो द्वारपालकाः ॥१९॥

यन्त्र-पूजन—इस यन्त्र को सिन्दूर से अङ्कित करे। हे शिवे! पहले लयाङ्ग पूजन करे। यह पूजन षट्कोण में ईष्ट के हृदय, ललाट, शिखा, कवच, नेत्र और अस्त्र का होता है। इस पूजन से साधक भैरवत्व प्राप्त करता है। भूपुर के चार द्वारों पर गणेश, यम, वरुण और कुबेर—इन द्वारपालकों का पूजन करे।।१७-१९।।

असिताङ्गं च कालाग्निं संहारं रुरुभैरवम्।
करालं विकरालं च सुप्तेशोन्मत्तभैरवौ ॥२०॥
अष्टपत्रेषु सम्पूज्य भैरवानष्ट पार्वति।
दुर्गां चण्डीं च सुमुखीं शिवादूतीं शिवां जयाम् ॥२१॥
बहिः षट्कोणके पूज्याश्चैता मूलेन साधकैः।
तारां च तारिणीं तुर्यां बगलां विजयां तथा ॥२२॥
छिन्नमस्तां षडश्रेषु पूजयेत् साधकोत्तमः।
भवानी कुब्जिका गौरी त्र्यश्रे पूज्या महेश्वरि ॥२३॥

अष्टदल में असिताङ्ग, कालाग्नि, संहार, रुरु, कराल, विकराल, सुप्तेश और उन्मत्तभैरवों का पूजन करे। षट्कोण के कोनों में दुर्गा, चण्डी, सुमुखी, शिवादूती, शिवा और जया का पूजन करे। इनका पूजन मूल मन्त्र से होता है। षड्दल में तारा, तारिणी, महातुरी, बगलामुखी, विजया और छिन्नमस्ता—इन छः देवियों की पूजा करे। त्रिकोण के तीनों कोनों में भवानी, कुब्जिका और गौरी का पूजन करे।।२०-२३।।

बिन्दौ स्वदेवतामिष्टां सशिवां कौलिकोत्तमः।
गन्धाक्षतप्रसूनैश्च धूपदीपादितर्पणैः ॥२४॥
नैवेद्याचमनीयाद्यैस्ताम्बूलैश्च सुवासितैः।
तत्र बिन्दौ महादेवि यथाविभवमात्मनः ॥२५॥
सौवर्णं राजतं मुक्तामणिताम्रादिपूर्वकम्।
देवताप्रीतये दद्याद् दक्षिणां गुरवेऽपि च ॥२६॥

बिन्दु में अपने इष्टदेवता का पूजन शिवा के साथ कौलिकोत्तम करे। पूजा गन्ध,

अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य से करके तर्पण करे। इसके बाद बिन्दु में महादेवी का पूजन अपने वैभव के अनुसार नैवेद्य, आचमनीय और सुगन्धित ताम्बूल से करे। देवता की प्रसन्नता के लिये अपने गुरुदेव को दक्षिणा के रूप में सोना, चाँदी, मोती, मणि, ताम्बा प्रदान करे।।२४-२६।।

तत्र स्वयं गुटीं दिव्यां देवीरूपां कुलेश्वरि।
पञ्चामृतैः पञ्चगव्यैः स्नापयेत् साधकोत्तमः ॥२७॥
संस्थाप्य गुटिकां मन्त्री बिन्दौ संस्थापयेत्ततः।
प्राणान् दत्त्वाऽऽवाहनादिमुद्रा मन्त्री प्रदर्शयेत् ॥२८॥
पाद्यार्घ्यमधुपर्कादि सर्वं तत्र निवेदयेत्।
चिन्तयेद् देवतारूपां पूजयेद् यन्त्रराजवत् ॥२९॥
सम्पूज्य गुटिकां दिव्यां तदग्रे साधको जपेत्।
मूलमन्त्रं यथाशक्त्या मालया करमालया ॥३०॥

यन्त्रधारण-विधि—इसके बाद साधक गुटिका को दिव्य देवीरूपा मानकर पञ्चामृत, पञ्चगव्य से स्नान कराये। इसके बाद गुटिका को बिन्दु में स्थापित करके प्राणप्रतिष्ठा करे। आवाहनादि मुद्रा प्रदर्शित करे। पाद्य, अर्घ्य, मधुपर्कादि सभी सामग्रियों से पूजन करे। गुटिका का चिन्तन देवता के रूप में करे और उसका पूजन यन्त्रराजवत् करे। पूजन के बाद उसके सामने बैठकर यथाशक्ति मूल मन्त्र का जप 'करमाला' से करे।।२७-३०।।

पठेत्तत्रैव कवचं मन्त्रनामसहस्रकम्।
स्तोत्रं मन्त्रमयं देवि मन्त्रिचक्रं प्रपूजयेत् ॥३१॥
तैः समं साधकैः कुर्यात् पात्रवन्दनमीश्वरि।
तान् सन्तर्प्य सुधीर्भक्त्या धारयेद् देवतां हृदि ॥३२॥
विसृज्य सशिवां देवीं नमेत् संहारमुद्रया।
धारयेन्मूर्ध्नि वा बाहौ गुटिकां वरदायिनीम् ॥३३॥

उसी स्थान पर कवच, सहस्रनाम, स्तोत्र का पाठ करके साधक मन्त्रचक्र का पूजन करे। हे ईश्वरि! उसी के समान साधक पात्रवन्दना करे। तर्पण करे और देवता को हृदय में धारण करे। शिवा के साथ विसर्जन करके नमन करे और संहार मुद्रा प्रदर्शित करे। तब गुटिका को मूर्धा में या बाँह में धारण करे। यह गुटिका वरदायिनी होती है।।३१-३३।।

यन्त्रधारणफलम्

य एवं धारयेद् यन्त्रं जपेन्मन्त्रं स साधकः।
साक्षाद् भवभयोन्मुक्तो भवेद् भैरवसन्निभः ॥३४॥

जपसिद्धिर्भवेत्तस्य य एवं धारयेद् गुटीम्।
बहुनोक्तेन किं देवि स भवेद् भैरवः स्वयम्॥३५॥
इदं तत्त्वतमं दिव्यं सर्वस्वं परमार्थदम्।
सारात् सारतरं गोप्यं गोपनीयं मुमुक्षुभिः॥३६॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये यन्त्रधारण-
विधिनिरूपणं नाम त्रयोदशः पटलः॥१३॥

यन्त्रधारण का फल—इस प्रकार से सविधि यन्त्र को जो धारण करता है एवं मन्त्र का जप करता है, वह सांसारिक भय से मुक्त होकर भैरव के समान हो जाता है। इस गुटिका को धारण करने से साधक को जप में सिद्धि मिलती है। बहुत क्या कहें, साधक स्वयं भैरव हो जाता है। यह सर्वश्रेष्ठ तत्त्व है, दिव्य सर्वस्व है, परमार्थदायक सारों का सार सारतर गोप्य है। मुमुक्षुओं से भी इसे गुप्त रखना चाहिये।।३४-३६।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में यन्त्र-
धारणविधि निरूपण नामक त्रयोदश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ चतुर्दशः पटलः

ऋष्यादिविनिर्णयः

मन्त्रेषु ऋष्यादिविनिर्णयप्रस्तावः

श्रीदेव्युवाच

भगवन् श्रोतुमिच्छामि च्छन्दोमुनिविनिर्णयम्।
तथा देवीश्वरादीनां देवताबीजनिर्णयम्॥१॥
शक्तिकीलकदिग्बन्धनिर्णयं परमेश्वर।
वक्तुमर्हसि मे देव यद्यस्ति मयि ते दया॥२॥

मन्त्रों के ऋष्यादि-विनिर्णय का प्रस्ताव—श्रीदेवी ने कहा कि हे भगवन्! मुझे मन्त्रों के छन्द और ऋषि के निर्णय को सुनने की इच्छा है तथा देवी-ईश्वरादि देवताओं के बीजमन्त्र को भी जानना चाहती हूँ। शक्ति, कीलक, दिग्बन्ध जानने की भी इच्छा है। यदि मुझ पर आपकी दया हो तो इन सबों को मुझे बतलाइये।।१-२।।

ऋषिविनिर्णयः

श्रीभैरव उवाच

एतद् गुह्यतमं देवि देवानां सारमुत्तमम्।
देवीनामादिदेवानां मन्त्राणां मे रहस्यकम्॥३॥
वक्ष्यामि तव भक्त्याहमृषिच्छन्दोविनिर्णयम्।
देवानां मन्त्रराजस्य देवीनां वा तथैव च॥४॥
षष्टिकल्पसहस्राणि येनैव विहितो जपः।
तथाब्दषष्टिलक्षाणि षष्टिजन्मान्तरेषु च॥५॥
पुरश्चर्याकरो देवि सर्षिरित्यभिधीयते।
ऋषिहीनो भवेन्मन्त्रो जप्तो जन्मान्तरेषु च॥६॥
प्रत्यवायकरो लोके साधकानां महेश्वरि।
यदा मन्त्रो मया वक्त्रान्महादेवि बहिष्कृतः॥७॥

ऋषि-निर्णय—श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! यह देवताओं का उत्तम सार है, एवं गुह्यतम है। यह देवियों एवं देवताओं के मन्त्रों का रहस्य है। तुम्हारी भक्ति से विवश होकर मैं मन्त्रों के ऋषि और छन्दों के निर्णय को सुनाता हूँ। देवताओं और देवियों के मन्त्रों के पुरश्चरण का काल साठ हजार कल्प विहित है, जिनका साठ लाख जप साठ

लाख वर्षों एवं साठ जन्मान्तरों में करने से पुरश्चरण होता है, उनका जप भी ऋषि के सहित ही होता है। बिना ऋषि-मन्त्र के जप से जन्मान्तरों में साधकों को प्रत्यवाय होता है। इस प्रकार के मन्त्रों का मेरे द्वारा बहिष्कृत कर दिया गया है।।३-७।।

छन्दोविनिर्णय:

वेष्टितो येन तेजस्वी तच्छन्द इति गीयते।
छन्दांसि विविधान्येषां मन्त्राणां परमेश्वरि ॥८॥
छन्दोहीनो भवेन्मन्त्रो नग्नो मर्त्य इव प्रिये।

छन्द-निर्णय—जो मन्त्र मेरे द्वारा वहिष्कृत किये गये हैं, उन्हें मेरे तेज से वेष्टित किया गया है। उस वेष्टन को ही छन्द कहते हैं। हे परमेश्वरि! इन मन्त्रों के छन्द विविध प्रकार के हैं। छन्दविहीन मन्त्र मृतक के समान नग्न होते हैं।।८।।

देवताविनिर्णय:

यदा जप्तो मनुर्देवि मया परमभक्तित: ॥९॥
प्रादुर्बभूव मे सद्यो या सा प्रोक्तेति देवता।

देवता-निर्णय—मेरी परम भक्ति के साथ जिन मन्त्रों का जप किया जाता है, उन मन्त्रों में मैं तुरन्त प्रवेश करता हूँ। उसी का नाम देवता है।।९।।

बीजविनिर्णय:

मन्त्रराजस्य देवीनां येनोत्पत्तिर्मया कृता ॥१०॥
तद्बीजमिति मन्त्राणां वर्ण्यते परमेश्वरि।
बीजहीनो भवेन्मन्त्र: सिद्धिहानिकर: शिवे ॥११॥
बीजहीनं जगद्धीनं जलहीनो नदो यथा।

बीज-निर्णय—जिन देवियों के मन्त्रों को मैंने उत्पन्न किया, उन्हीं को मन्त्रों का बीज कहा जाता है। बीजविहीन मन्त्र सिद्धियों में हानिप्रद होते हैं। जैसे–जलविहीन नदी बेकार होती है, वैसे ही बीजहीन मन्त्र भी जगत् में हीन होते हैं।।१०-११।।

शक्तिविनिर्णय:

जपान्ते जगदुत्पत्तिस्थितिसंहारिकी मति: ॥१२॥
जाता मे येन देवेशि सा शक्तिरिति गीयते।
शक्तिहीनो महादेवि मन्त्रो विघ्नकरो मत: ॥१३॥

शक्ति-निर्णय—जप के अन्त में संसार की उत्पत्ति, स्थिति और संहार की मति जिसके द्वारा उत्पन्न होती है, हे देवेशि! उसी को शक्ति कहते हैं। शक्तिहीन मन्त्र विघ्नकारक होते हैं, ऐसा कहा गया है।।१२-१३।।

कीलकविनिर्णयः

महामाङ्गल्यदो मन्त्रो देवीनां शक्तिबीजतः।
जप्त्वा स्तुत्वा महादेवि पुनर्येन स गोपितः ॥१४॥
निस्तेजस्कः पुनर्जातः कीलकं तदुदाहृतम्।

कीलक-निर्णय—देवियों के मन्त्र शक्तिबीज से ही महामाङ्गल्यप्रदायक होते हैं। महादेवी के जिन मन्त्रों को जप और स्तुति के बाद जो गुप्त नहीं रखते, वे निस्तेज हो जाते हैं। इन निस्तेज मन्त्रों का उद्धार कीलक से किया जाता है।।१४।।

दिग्बन्धनविनिर्णयः

निष्कीलितं जपान्ते च मनुमश्रद्धया शिवे ॥१५॥
त्यक्त्वा साधकराजस्य सिद्धिं हरति भैरवः।
जपकाले महादेवि राक्षसा भूतप्रेतकाः ॥१६॥
दिशो दश पलायन्ते येन दिग्बन्धनं च तत्।
दिग्बन्धेन विना देवि जपः पाठोऽपि वा तथा ॥१७॥
निष्फलो विघ्नकृन्नित्यं तेन दिग्बन्धनं चरेत्।
एतैर्विहीनो मन्त्रोऽस्ति निष्फलो विघ्नकारकः ॥१८॥
ममापि देवि किं वक्ष्ये पुनः क्षुद्रेषु जन्तुषु।
इत्येष पटलो गुह्यश्छन्दसां परमेश्वरि ॥
गोपनीयो महावीरैरित्याज्ञा पारमेश्वरी ॥१९॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये ऋष्यादि-
निरूपणं नाम चतुर्दशः पटलः॥१४॥

दिग्बन्ध-निर्णय—हे शिवे! निष्कीलित मन्त्रों के जप में श्रद्धा न होने से जप के अन्त में साधकश्रेष्ठ की सिद्धि का हरण भैरव कर लेते हैं। दिग्बन्ध के बिना जो जप किया जाता है, उसे जपकाल में ही भूत-प्रेत हरण कर लेते हैं। दशों दिशाओं में दिग्बन्ध करने से वे भूत-प्रेत भाग जाते हैं। हे देवि! दिग्बन्ध के बिना जप और पाठ निष्फल होते हैं। उनमें नित्य विघ्न होते हैं। इसलिये दिग्बन्ध करना आवश्यक है। इन सबों के बिना मन्त्र निष्फल और विघ्नकारक होते हैं। हे देवि! मैं भी क्या कहूँ? यह पटल क्षुद्र जीवों के लिये गुह्य एवं प्रच्छन्न है और महावीरों से भी गोपनीय है।।१५-१९।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में ऋष्यादि-
निरूपण नामक चतुर्दश पटल पूर्ण हुआ।

अथ पञ्चदशः पटलः

श्मशानार्चनविधिः

श्मशानसाधनप्रस्तावः

श्रीभैरव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि श्मशानस्योग्रसाधनम्।
येन साधनमात्रेण साधको भैरवो भवेत्॥१॥

श्मशानसाधन-प्रस्ताव—श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! सुनो, अब मैं श्मशान के उग्र साधन का विवेचन करता हूँ, जिसके साधनमात्र से ही साधक स्वयं भैरव के समान हो जाता है।।१।।

श्रीदेव्युवाच

भगवन् भवता भक्त्या प्रसादोऽयं महान् कृतः।
विस्मृतोऽयं विधिर्गुह्यः श्मशानस्यार्चनाङ्कितः॥२॥
सर्वतन्त्रेष्वविख्यातः स्मारितो मेऽधुना परः।

श्री देवी ने कहा कि हे भगवन् आपकी भक्ति से महान कर्मों का प्रसाद मुझे प्राप्त हुआ है। किन्तु श्मशान-अर्चनविधि का मुझे विस्मरण हो गया है। सभी तन्त्रों में विख्यात इस अर्चन को फिर से जानना चाहती हूँ।।२।।

साधनार्चनक्रमः

श्रीभैरव उवाच

त्रयस्त्रिंशतिकोटीनां देवतानां हि शक्तयः।
नामभिर्विश्रुता देवि भवत्या मे परं श्रुताः॥३॥
तासा वक्ष्येऽधुना देवि श्मशानार्चा यथाविधि।
साधका येन जायन्ते सर्वसिद्धियुताः शिवे॥४॥
विना शमशानविधिना पूजायोगजपादयः।
न सिद्ध्यन्ति वरारोहे कलौ भैरवशापतः॥५॥
त्रिस्त्रिंशत्कोटयो देव्यः सर्वाः प्रेतालयस्थिताः।
तत्र गत्वार्चयेद् यस्तु स भवेद् भैरवोपमः॥६॥

साधन-अर्चनक्रम—श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! तैंतीस करोड़ देवताओं की शक्तियों में विख्यात शक्तियों के नामों को मैंने सुना दिया है। अब मैं उन्हीं देवियों के श्मशान-अर्चन की विधि का यथार्थ रूप में वर्णन करता हूँ, जिस साधना के करने से साधक सभी सिद्धियों को प्राप्त कर लेते हैं। हे वरारोहे! कलियुग में भैरव के शाप के कारण पूजा, जप, योग आदि बिना श्मशानविधि की साधना के सिद्ध नहीं होते। सभी तैंतीस करोड़ देवियाँ श्मशान में रहती हैं। वहाँ जाकर जिसकी साधना की जाती है, उसकी सिद्धि प्राप्त करके साधक भैरवतुल्य हो जाता है।।३-६।।

श्मशाने भैरवस्थितिक्रमः

तत्र घोरारवैर्देवि महाकालः सृगालकैः।
सारमेयैश्च यक्षेन्द्रैः सोरगैः सपिशाचकैः ॥७॥
वेतालभूतप्रेतैश्च श्मशानार्चां करोति हि।
तत्र भूता महाघोराश्चत्वारो विघ्नकारकाः ॥८॥
दिग्विदिक्षु भ्रमन्ते ते देव्यष्टौ भूतभैरवाः।
ते सम्मुखगताः क्रूरा भूताः कुर्वन्ति विप्रियम् ॥९॥
भैरवा विघ्नहन्तारः शिवं कुर्वन्त्यसम्मुखे।
तेषां विधिं प्रवक्ष्यामि गुह्यं सारोत्तमोत्तमम् ॥१०॥

श्मशान में भैरवस्थितिक्रम—श्मशान में देवियाँ, महाकाल, सृगाल, सारमेय, यक्षेन्द्र, सर्प, पिशाच, वेताल, भूत-प्रेत अपने कर्कश शब्दों द्वारा साधना प्रारम्भ करते ही विघ्न उपस्थित करते हैं। देवी के आठो भैरव दिशा और विदिशा में भ्रमण करते रहते हैं। साधक के सम्मुख श्मशान में क्रूर भूत उपस्थित होकर बहुत से अप्रिय कार्य करते हैं। उन विघ्नों को भैरव दूर भगा देते हैं। विघ्नविनाशक भैरव जिस विधि के करने से कल्याणकारक होते हैं, उस विधि का वर्णन करता हूँ। यह गुह्य है, सारों का उत्तम सार है।।७-१०।।

श्मशानार्चनप्रकारः

अप्रकाश्यमदातव्यं श्मशानार्चनमुत्तमम्।
रवौ चन्द्रे कुजे सौम्ये गुरौ शुक्रे शनौ तथा ॥११॥
पुनः सूर्ये भ्रमन्ते ते दिग्विदिक्ष्वष्टभैरवाः।

श्मशान-अर्चन—यह उत्तम श्मशान-अर्चन न किसी को बतलाना चाहिये और न ही किसी को देना चाहिये। रविवार, सोमवार, भौमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार,

शनिवार और पुनः रविवार—इन आठ दिनों में आठो भैरव दिशा-विदिशाओं में भ्रमण करते हैं।।११।।

पूर्वोत्तरेशानसमीरणाग्निकेनाशरक्षोवरुणादिदिक्षु ।
महोग्रचित्राङ्गदचण्डभास्वल्लोलाक्षभूतेशकरालभीमाः ।।१२।।
एते भ्रमन्ते सततं श्मशाने दिग्भैरवा भूतयुता महेशि ।
एतान् समभ्यर्च्य वसेत् श्मशाने स्यादन्यथा धीभ्रमणं विपत्तिः ।।१३।।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये श्मशानार्चनविधि-
निरूपणं नाम पञ्चदशः पटलः।।१५।।

पूर्व दिशा में महोग्रभैरव, उत्तर में चित्रांगद, ईशान में चण्ड, वायव्य में भास्वर, अग्निकोण में लोलाक्ष, दक्षिण में भूतेश, नैर्ऋत्य में कराल और पश्चिम में भीम नामक भैरव भ्रमण करते रहते हैं। श्मशान की आठो दिशाओं में ये भैरव भूतों के साथ भ्रमण करते हैं। इनका अर्चन करने के बाद ही श्मशान में अर्चन होता है; अन्यथा साधक पागल हो जाता है और विपत्तिग्रस्त हो जाता है।।१२-१३।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में श्मशानार्चन-
विधि-निरूपण नामक पञ्चदश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ षोडशः पटलः

श्मशानार्चनपद्धतिः

श्मशानपूजापद्धतिः

श्रीभैरव उवाच

अथाहं पूजनस्यास्य वक्ष्ये पद्धतिमादरात्।
गद्यपद्यमयीं देवि मन्त्रसिद्धिप्रदायिनीम्॥१॥
रात्रिशेषे समुत्थाय साधको विहिताह्निकः।
श्मशानार्चनसम्भरं समादाय च सानुगः॥२॥
सवीरो वीरभूमिं तु व्रजेद्रात्रिमुखे प्रिये।
तत्र देवि विधिं वक्ष्ये शृणु पार्वति सादरम्॥३॥
गुह्यं सारतमं गोप्यं नाख्येयं सिद्धिवाञ्छकैः।

श्मशान-पूजापद्धति—श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! अब मैं गद्य-पद्यमयी श्मशान-पूजापद्धति का वर्णन आदरसहित करता हूँ। यह पद्धति मन्त्रसिद्धिप्रदायिनी है। रात्रि की समाप्ति होने पर साधक उठकर नित्य कर्म करके दिन में श्मशान अर्चन की सामग्रियों को लेकर वीर साथियों के साथ रात्रि के प्रारम्भ में श्मशान वीरभूमि में जाये। श्मशान में जो विधियाँ की जाती हैं, उनका वर्णन मैं करता हूँ। हे पार्वति! आदरपूर्वक सुनो। यह विधि सारोत्तम एवं गोप्य है। सिद्धियों के इच्छुक साधक को इसे किसी को भी नहीं बतलाना चाहिये।।१-३।।

तत्र रात्रिमुखे सवीरः श्मशानं गत्वा सप्तपदान्तां भूमिमुत्सृज्य श्मशानवेलां नोल्लङ्घयेत्। तत्र सम्भारं संस्थाप्य स्वहस्तपादौ प्रक्षाल्य त्रिराचम्य प्राणायामत्रयं मूलेन विधाया पूर्ववदाचम्य स्वमूलऋषिच्छन्दो-न्यासं कृत्वा कराङ्गन्यासौ कृत्वा मूलमष्टोत्तरशतं जपेत्। यथाशक्ति जप्त्वा देवीं सशिवां स्वगुरुं ध्यात्वा, कवच-सहस्रनाम-स्तवान् पठन् वेलां सप्तपदमात्रामुल्लङ्घ्य, शमशानमण्डलं प्रदक्षिणीकृत्य प्रविश्य चितां प्रणमेत्।

रात के प्रारम्भ में वीरों के साथ श्मशान में जाकर श्मशान से सात पग की दूरी पर रहकर स्थित हो जाय। श्मशानवेला का लङ्घन न करे। वहाँ पर सामग्रियों को रखकर

अपने हाथ-पाँव धोकर तीन आचमन करके तीन प्राणायाम मूल मन्त्र से करे। पूर्ववत् फिर आचमन करके अपने मूल मन्त्र से ऋष्यादि छन्द-न्यास करे। करन्यास और अङ्गन्यास करे। इसके बाद मूल मन्त्र का जप एक सौ आठ बार करे। यथाशक्ति जप करके शिवा के साथ देवी का और अपने गुरु का ध्यान करके कवच सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करे। इसके बाद सात पग पीछे श्मशान के पास जाकर श्मशानमण्डल की प्रदक्षिणा करे। चिता के पास जाकर प्रणाम करे।

ज्वालाकरालवदने कल्पान्तदहनप्रिये।
प्राणिप्राणालयोद्भूते चिते मेऽनुग्रहं कुरु ॥४॥

यह प्रार्थना मन्त्र है। इसका भाव यह है कि हे ज्वालाकरालमुखि! कल्पान्तदहनप्रिये! प्राणियों के प्राणालय से उद्भूत चित्ते! मुझ पर अनुग्रह करो।।४।।

इति नत्वा, यथावारं प्रशस्ताप्रशस्तान् भूतभैरवान् सम्मुखपृष्ठयोर्धृत्वा पूजामारभेत्।

इस प्रकार प्रणाम करके वार के अधिपति मूल भैरव को सम्मुख और पीठ की ओर करके पूजा प्रारम्भ करे। किस दिन में किस भैरव की पूजा करनी है, इसका वर्णन पहले ही किया जा चुका है।

श्रीदेवी उवाच

भगवन् भैरवान् भूतान् शापानुग्रहकारकान्।
कथं सन्धारयेन् मन्त्री तत्र सम्मुखपृष्ठयोः ॥५॥

श्री देवी ने कहा कि हे भगवन्! शापानुग्रहकारक भूत-भैरवों को साधक सम्मुख और पीछे किस प्रकार धारण करता है।।५।।

श्रीभैरव उवाच

एतद् देवि परं गुह्यं भूतभैरवसाधनम्।
वक्ष्यामि तव भक्त्याहं न चाख्येयं दुरात्मने ॥६॥

श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! यह भूत-भैरवसाधन परम गुह्य है। तुम्हारी भक्ति के कारण मैं इसे कहता हूँ। इसे दुष्ट आत्माओं से नहीं कहना चाहिये।।६।।

वारक्रमेण भूतभैरवसाधनम्

भूतो रवौ पूर्वगतो महोग्रश्चित्राङ्गदोऽप्युत्तरगो हिमांशौ।
चण्डस्तथेशानगतो महीजे भास्वान् बुधे भैरव एव वायौ ॥७॥

लोलाक्षको वह्निगतः सुरेज्ये भूतेश्वरो दक्षिणगोऽसुरेज्ये ।
करालको निर्ऋतिगोऽपिमन्दे रवौ पुनः पश्चिमगोऽपि भीमः ॥८॥
एवं भ्रमन्ते सततं महेशि दिग्भैरवा भूतगणाः श्मशाने ।
सुधांशुवृद्धौ शशिहीनपक्षे तद्वैपरीत्येन शिवे भ्रमन्ति ॥९॥

वारक्रम से भूत-भैरवसाधन—वार और दिशाक्रम से भैरवों की स्थिति निम्न प्रकार की होती है—

वार	दिशा	भैरव
रविवार	पूर्व	महोग्र
सोमवार	उत्तर	चित्रांगद
मंगलवार	ईशान	चण्ड
बुधवार	वायव्य	भास्वान
गुरुवार	अग्नि	लोलाक्ष
शुक्रवार	दक्षिण	भूतेश्वर
शनिवार	नैर्ऋत्य	कराल
रविवार	पश्चिम	भीम

हे महेशि! इस प्रकार दिग्भैरव और भूतगण बराबर श्मशान में भ्रमण करते रहते हैं। शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष में इनका भ्रमण विपरीतक्रम से होता है।।७-९।।

श्रीदेव्युवाच

देवेश करुणासान्द्र साधकेश जगत्पते ।
ज्ञायते भीमकर्मेदं हृदि साधकसत्तमाः ॥१०॥
महोग्रभीमयोः पूजां पक्षयोर्भीमसौम्ययोः ।
कथं देव करिष्यन्ति द्वयोर्भास्करवारयोः ॥११॥

श्री देवी ने कहा कि हे करुणेश! साधकेश! जगत्पते! साधकसत्तम के हृदय में जब इस भीषण कर्म का ज्ञान हो जाता है, तब साधक रविवार को महोग्र और भीम भैरवों की पूजा कृष्ण और शुक्ल पक्ष में कैसे करेंगे।।१०-११।।

श्रीभैरव उवाच

पौर्णमास्यां शिवे दृष्ट्वा ग्रहवारं ततोऽष्टधा ।
रविवारं च सङ्गुण्य प्रथमं वा द्वितीयकम् ॥१२॥

प्रथमे रविवारे तु महोग्रं पूर्वगं यजेत्।
द्वितीये पश्चिमे भीमं पूजयेच्छुक्लपक्षके ॥१३॥
कृष्णपक्षेऽर्चयेद् भूतान् विपरीतक्रमेण तु।
अधुनैषां प्रवक्ष्यामि पूजासारं महेश्वरि ॥१४॥

श्री भैरव ने कहा कि हे शिवे! साधक अष्टधा ग्रहवारों की गिनती पूर्णमासी में करके प्रथम रविवार में महोग्र का पूजन करके, दूसरे सोमवार में शुक्ल पक्ष में भीम का पूजन करे। कृष्ण पक्ष में भूतों का अर्चन विपरीतक्रम से करे। हे देवि! अब मैं पूजासार का वर्णन करता हूँ।।१२-१४।।

श्मशानकालिकापूजामन्त्र:

अवाच्यं परशिष्याय कुचैलाय दुरात्मने।
श्मशानपूजामन्त्रस्य महाकाल ऋषि: स्मृत: ॥१५॥

श्मशानकालिका-पूजामन्त्र—हे महेश्वरि! इस पूजासार को परशिष्यों को कुचैलों को, दुष्टों को नहीं बतलाना चाहिये।।१५।।

विनियोग:

उष्णिक् छन्द इति ख्यातं देवी श्मशानकालिका।
परा बीजं तटं शक्ति: काली कीलकमीरितम् ॥१६॥
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोग: प्रकीर्तित:।

अस्य श्रीश्मशानकालिकापूजामन्त्रस्य महाकालभैरव ऋषि:, उष्णिक् छन्द:, श्रीश्मशानकालिका देवता, ह्रीं बीजं, हूं शक्ति:, क्रीं कीलकं, धर्मार्थकाममोक्षार्थे पूजायां विनियोग:।

श्मशान पूजा मन्त्र के ऋषि महाकाल हैं, छन्द उष्णिक् और देवता श्मशानकालिका हैं। ह्रीं बीज है, हूं शक्ति है। क्रीं कीलक है। धर्मार्थ-काम-मोक्ष के लिये इसका विनियोग होता है। प्रयोग का प्रकार निम्नलिखित है—

विनियोग—अस्य श्रीश्मशानकालिकापूजामन्त्रस्य महाकालभैरवऋषि: उष्णिक् छन्द: श्रीश्मशानकालिका देवता ह्रीं बीजं हूं शक्ति: क्रीं कीलकं धर्मार्थकाम मोक्षेषु विनियोग:।।१६।।

श्मशानकालिकापूजाक्रम:

महाकालभैरव ऋषये नम: शिरसि, उष्णिक्छन्दसे नमो मुखे, श्मशानकालिकादेवतायै नमो हृदि, ह्रीं बीजाय नमो नाभौ, हूं शक्तये नमो गुह्ये, क्रीं कीलकाय नम: पादयो:, विनियोगाय नम: सर्वाङ्गेषु। ओं

क्रां हृदयाय नमः। ओं क्रीं शिरसे स्वाहा इत्यादि कराङ्गन्यासः। एवं षडङ्गं विधायासनं शोधयेत्। ओं आं आसनशोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसनशोधने विनियोगः। प्रीं पृथ्व्यै नमः

महि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

ऋष्यादि न्यास—महाकालभैरवाय नमः शिरसि। उष्णिक् छन्दसे नमः मुखे। श्मशानकालिका देवतायै नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः नाभौ। हूं शक्तये नमः गुह्ये। क्रीं कीलकाय नम पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु।

हृदयादि न्यास—ॐ क्रीं हृदयाय नमः। ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्रूं शिखायै वषट्। ॐ क्रैं कवचाय हूं। ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ क्रः अस्त्राय फट्।

करन्यास—ॐ क्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ क्रूं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ क्रैं अनामिकाभ्या हुं। ॐ क्रौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐ क्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

इस प्रकार के न्यास के बाद आसन का शोधन करे—ॐ आं आसनशोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसनशोधने विनियोगः। श्रीं पृथ्व्यै नमः

महि त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

ॐ क्रां आधारशक्तिकमलासनाय नमः। अनन्ताय नमः। पद्माय नमः। पद्मनालाय नमः। तत्रोपविश्य तालत्रयं दद्यात्। 'अपसर्पन्तु ते भूताः' इत्यादिना तालत्रयं दत्त्वा नाराचमुद्रां प्रदर्शयेत्। इत्यासनशुद्धिं विधाय भूतशुद्धिं कुर्यात्।

ॐ क्रां आधारशक्तिकमलासनाय नमः। अनन्ताय नमः। पद्माय नमः। पद्मनालाय नमः। इसके बाद आसन पर बैठकर तीन ताली बजाये और मन्त्र पढ़े—

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

तीन ताली बजाकर नाराच मुद्रा दिखावे। इस प्रकार आसनशुद्धि करके भूतशुद्धि करे।

ॐ हूं आकुञ्चेन सुषुम्नावर्त्मना प्रदीपकलिकाकारां ब्रह्मपथान्तर्नीत्वा स्वजीवं तत्र सदाशिवे लीनं ध्यात्वा, आदौ यमिति वायुबीजेन षोडशधा जप्तेन पापपुरुषं वामकुक्षिस्थं शोषयेत्। रमिति वह्निबीजेन चतुष्षष्टि-

वारजप्तेन दाहयेत्। वमिति वरुणबीजेन द्वात्रिंशद्वारजप्तेन प्लावयेत। लमिति भूबीजेन दशधा जप्तेन शरीरं पिण्डीभूतं विभाव्य स्वजीवं हृदि संस्थाप्य प्राणानर्पयेत्। इति भूतशुद्धिः॥

भूतशुद्धि—ॐ हूँ से मूलबन्ध करके सुषुम्नामार्ग से दीपशिखा के आकार के अपने जीव को ब्रह्मरन्ध्र में लाकर सहस्रार में सदाशिव में विलीन कर दे। पहले 'यं' वायुबीज के सोलह जप से वाम कुक्षि-स्थित पाप-पुरुष को सुखा दे। अग्निबीज 'रं' के चौंसठ जप से जला दे। वरुणबीज 'वं' के बत्तीस जप से प्लावित करे। भूमिबीज 'लं' के दश जप से अपने शरीर को पिण्डीभूत मानकर अपने जीव को उसमें स्थापित करे। तत्पश्चात् प्राण-प्रतिष्ठा करे।

ॐ आंह्रींक्रों यंरंलंवं शंषंसंहं सोहं हंसः मम प्राणा इह प्राणाः, एवं मम जीव इह स्थितः, एवं मम सर्वेन्द्रियाणि, मम वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वा-घ्राणप्राणा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। इति प्राणान् समर्प्य, मातृकान्यासं विधायं पूर्ववत् कराङ्गन्यासौ कृत्वा, तत्र चिताया ईशाने चतुरस्त्रां वेदीं विधाय, तत्र श्रीचक्रं विभाव्य यथोक्तविधिनाभ्यर्च्य, तत्र नवग्रहान् सम्पूज्य, पूर्वे वटुकं सम्पूज्य भूतभैरवान् सम्पूजयेत्। ॐ म्रीं महोग्राय नमः।

प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र—ॐ आं ह्रीं क्रां यं रं लं वं शं षं सं हं सोहं हंसः मम प्राणाः इह प्राणाः। एवं मम जीव इह स्थितः एवं मम सर्वेन्द्रियणि मम वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वा-घ्राणप्राणा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

इस मन्त्र से प्राणप्रतिष्ठा करके मातृकान्यास करे। पूर्ववत् करन्यास और अङ्गन्यास करे। इसके बाद चिता के ईशान कोण में चतुरस्त्र वेदी बनावे। उस वेदी पर श्रीचक्र की भावना करके यथोक्त विधि से अर्चन करे। नवग्रहों का पूजन करे। पूर्व में वटुकभैरव की पूजा करके भूतभैरवों का पूजन करे।

ॐ म्रीं मदालसायै नमः पूर्वे। ॐ श्रीं चित्राङ्गदाय नमः। ॐ श्रीं चित्रिण्यै नमः उत्तरे। ॐ ह्रीं चण्डाय नमः। ॐ ह्रीं चण्ड्यै नमः ईशाने। ॐ हौं भास्वते नमः। ॐ हौं प्रभायै नमः वायवे। ॐ लां लोलाक्षाय नमः। ॐ लां लोलायै नमः आग्नेये। ॐ भैं भूतेशाय नमः। ॐ भैं भूतधात्र्यै नमः दक्षिणे। ॐ क्रीं करालाय नमः। ॐ क्रीं करालिन्यै नमः नैर्ऋते। ॐ ह्रींश्रीं भीमाय नमः। ॐ ह्रींश्रीं भीमरूपायै नमः पश्चिमे। इति यथावारक्रमेण गन्धाक्षतपुष्पैरभ्यर्च्य, तत्र चिताग्रे श्रीचक्रं नवयोनिचक्रं

वा विभाव्य योगपीठपूजां कृत्वा पात्राणि संस्थाप्य पात्रपूजां कृत्वा, तत्र देवतावरणपूर्वं सशिवां देवीं सम्पूज्य यथाशक्त्या जप्त्वा जपं देव्यै समर्प्य, ततः कवच-सहस्रनाम-स्तवपाठादि विधाय तदपि समर्प्य चिताग्नौ दशांशं होमं कुर्यात्, तत्र वटुकादीन् सन्तर्प्य (भूतभैरवानपि सन्तर्प्य, नवकन्याः सन्तर्प्य) परस्परं नवपात्रावधि पानं कुर्यात्।

भैरवपूजन मन्त्र—

१. ॐ ह्रीं महोग्राय नमः। ॐ ह्रीं मदालसायै नमः—पूर्व में।
२. ॐ श्रीं चित्राङ्गदाय नमः। ॐ श्री चित्रिण्यै नमः—उत्तर में।
३. ॐ ह्रीं चण्डाय नमः। ॐ ह्रीं चण्ड्यै नमः—ईशान में।
४. ॐ ह्रौं भास्वताय नमः। ॐ ह्रौं प्रभायै नमः—वायव्य में।
५. ॐ लां लोलाक्षाय नमः। ॐ लां लोलायैः नमः—आग्नेय में।
६. ॐ भैं भूतेशाय नमः। ॐ भैं भूतधात्र्यै नमः—दक्षिण में।
७. ॐ क्रीं करालाय नमः। ॐ क्रीं करालिन्यै नमः—नैर्ऋत्य में।
८. ॐ ह्रीं श्रीं भीमरूपाय नमः। ॐ ह्रीं श्रीं भीमरूपायै नमः—पश्चिम में।

वारक्रमानुसार गन्धाक्षत-पुष्प से इनका अर्चन करे। तब उसे चिता के आगे नवयोन्यात्मक श्रीचक्र की कल्पना करके योगपीठ की पूजा करे। पात्रस्थापन करे। पात्र-पूजा करे। तब आवरणपूर्वक शिवा-सहित देवी का अर्चन करे। तब यथाशक्ति मन्त्रजप करके देवी को समर्पित करे। तब कवच, सहस्रनाम, स्तोत्रपाठ करे। इन पाठों को देवी के हाथों में समर्पित करके चिता की अग्नि में दशांश हवन करे। तब वटुक आदि का तर्पण करे। भूत-भैरवों का तर्पण करे। नव कन्याओं का तर्पण करे। तब परस्पर नवों पात्र के मद्य का पान करे।

श्रीदेव्युवाच

देवदेव महादेव शरणागवत्सल।
सुरापानविधिं ब्रूहि येन सिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ॥१७॥

मद्यपान-विधि—श्री देवी ने कहा हे देव! देव महादेव! शरणागतवत्सल! मुझे सुरापान की विधि बतलाइये, जिससे निश्चित सिद्धि प्राप्त हो सके।।१७।।

सुरापानविधानम्

श्रीभैरव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि पानपूजाविधिं परम्।
साधका येन जायन्ते कलौ भैरवसन्निभाः ॥१८॥

श्मशानेषु चरेत् पानं निशीथे वा महेश्वरि।
विना पानं न सिद्धिः स्यात् साधकानां कलौ ध्रुवम् ॥१९॥
सुरा संविद्वारुणीति त्रिधा पानं सदोत्तमम्।
तेषु ब्रह्मादयो देवा निलीना मुक्तये परम् ॥२०॥
आसवो मधुरं मद्यं शीधु चेति त्रयं परम्।
तत्र सर्वे स्थिता देवा वासवाद्या अहर्निशम् ॥२१॥
सम्पूज्य सशिवां देवीं प्रवृत्ते भैरवार्चने।
तत्र पानं परादेव्या महानन्दप्रदायकम् ॥२२॥
विना पानं न सिद्धिः स्याद्विना शक्तिसमर्चनम्।
न सिद्ध्यति शिवे मन्त्रः श्मशानार्चां विना तथा ॥२३॥

श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! सुनो, मैं श्रेष्ठ पान की विधि को बतलाता हूँ। इस प्रकार के पान से साधक साक्षात् भैरव के समान हो जाते हैं। हे महेश्वरि! साधकों को श्मशान में रात में सुरापान करना चाहिये। कलियुग में बिना मद्यपान के सिद्धि नहीं मिलती है। यह ध्रुव सत्य है। सुरा संविदा वारुणी को तीन बार पीना सदा उत्तम कहा गया है। इनमें ब्रह्मादि विलीन रहते हैं और यह श्रेष्ठ मोक्ष-प्रदायक है। आसव, मधुर मद्य और शीधु तीनों श्रेष्ठ हैं। इनके सभी देवता और वसु दिन-रात स्थित रहते हैं। शिवा के साथ देवी का पूजन करके भैरवों का अर्चन करे। तब पान करने से परा देवी को बहुत आनन्द मिलता है। बिना पान के यदि मन्त्र सिद्ध नहीं होते तो उसी प्रकार बिना श्मशान-पूजा के मन्त्र भी सिद्ध नहीं होते।।१८-२३।।

तस्मात् श्मशानं सम्पूज्य शक्तिमभ्यर्च्य साधकः।
पानं भजेत् परादेव्याः श्रीचक्राग्रे यथाविधि ॥२४॥
संवित्पानं चरेद्रात्रौ दिवापानं च शीधुना।
अहोरात्रे सुरापानं भोगदं मोक्षदं शिवे ॥२५॥
संविदासवयोर्मध्ये संविदेव गरीयसी।
स वैष्णवः स शाक्तश्च स शैवो यः श्मशानगः ॥२६॥
श्मशानभजनाद्वीरो भवेद् भैरवसन्निभः।
पानं तावद्भजेद् देवि यावत् संविन्मनोमयी ॥२७॥
यदि तत्र विकारः स्यात् पानं तद् ब्रह्मघातवत्।
यावन्न चलते दृष्टिर्यावन्न चलते मनः ॥२८॥

इसलिये श्मशान-पूजन करके साधक शक्ति का अर्चन करे। श्रीचक्र के आगे परा

देवी का यथाविधि स्मरण करके पान करे। रात में संवित् पान करे। शीधु का पान दिन में करे। दिन-रात सुरापान करने से भोग और मोक्ष प्राप्त होते हैं। संविदा और आसव में संविदा ही बड़ी है। वही वैष्णव और वही शाक्त, वही शैव है, जो श्मशान में जाकर पूजा करता है। श्मशान-सेवन से वीर साधक भैरव के समान हो जाता है। हे देवि! तब तक पान करे, जब तक मन संविन्मय नहीं हो जाय। पान के समय मन में यदि विकार उत्पन्न होता है तो वह ब्रह्महत्या के समान होता है। जब तक दृष्टि चञ्चल न हो, जब तक मन चञ्चल न हो तब तक पान करना चाहिये।।२४-२८।।

पूजारहितपञ्चमकारसेवने प्रत्यवायः

तावत् पानं प्रकर्तव्यं पशुपानमतः परम्।
विना पूजां चरेद्यस्तु पानं वा चर्वणादिकम्॥२९॥
मकारान् पञ्च देवेशि कुलटां वा परस्त्रियम्।
स रोगी निन्दितो लोके परपिण्डोपजीवकः॥३०॥
ब्रह्मघातवदीशानि शीघ्रं मृत्युमुखं व्रजेत्।
आत्मोच्छिष्टं न दातव्यं परोच्छिष्टं न भक्षयेत्॥३१॥
यद्युच्छिष्टं वीरचक्रे कौलिको भक्षयेच्छिवे।
सिद्धिहानिर्भवेत् सद्यो योगिन्यो भक्षयन्ति तम्॥३२॥

पूजा के विना पञ्चमकार-सेवन से प्रत्यवाय—अब पशुपान का विवेचन किया जा रहा है। हे देवि! बिना पूजा के जो मद्य पीता है, मुद्रा चबाता है और पञ्च मकारों का सेवन करता है, कुलटा अथवा परायी स्त्री का सेवन करता है, उसे संसार में भोगी, निन्दित और परपिण्डोपजीवक कहा जाता है। हे ईशानि! ब्रह्मघाती के समान वह शीघ्र मृत्यु को प्राप्त करता है। अपना जूठा किसी को न दे और न स्वयं ही दूसरों के जूठन को खाये। वीरचक्र में यदि कौलिक जूठन का सेवन करता है तब उसकी सिद्धि की हानि होती है। योगिनियाँ उसका भक्षण करती हैं।।२९-३२।।

पूजाकाले निशीथे च ध्यात्वा देवीं शिवाङ्कगाम्।
अभ्यर्च्य विधिना पानं कृत्वा चर्वणपूर्वकम्॥३३॥
मकारैः पञ्चभिर्देवि तर्पयित्वा परस्त्रियम्।
पानं पानं शिवे पानं सप्तवारं समुच्चरेत्॥३४॥
तेन देवी शिवाङ्कोपविष्टा प्रादुर्भविष्यति।

मध्य रात्रि में शिव की गोद में शिवा का ध्यान करके विधिवत् अर्चन करके मुद्रा-चर्वणपूर्वक पानकर पञ्च मकारों से देवी को तर्पित करके परस्त्री का तर्पण करके सात

बार 'पान' का उच्चारण करे। ऐसा करने से देवी शिवांक में विराजमान दिखायी देती हैं।।३३-३४।।

इत्येषा पद्धतिर्गुह्या श्मशानार्चनसंयुता ।।३५।।
गद्यपद्यमयी दिव्या तत्त्वसर्वस्वसंयुता ।
तव स्नेहेन विख्याता न प्रकाश्या कदाचन ।।३६।।
इति गुह्यतमं देवि रहस्यं देवदुर्लभम् ।
अप्रकाश्यमदातव्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ।।३७।।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये श्मशानार्चनपद्धति-निरूपणं नाम षोडश: पटल:।।१६।।

श्मशानपूजन से युक्त यह पद्धति परम गुह्य है। यह दिव्य पद्धति गद्य-पद्यमयी है एवं तत्त्व-सर्वस्व से संयुक्त है। तुम्हारी भक्ति से विवश होकर मैंने इसको प्रकाशित किया है। इसे किसी को भी नहीं बतलाना चाहिये। हे देवि! यह गुह्यतम रहस्य देवदुर्लभ है। यह अप्रकाश्य, अदातव्य और अपनी योनि के समान गोपनीय है।।३५-३७।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में श्मशानार्चन-पद्धति निरूपण नामक षोडश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ सप्तदशः पटलः

द्रव्यादिशोधनम्

मालाकपालकंकणशोधनम्

श्रीदेव्युवाच

भगवन् सर्वतन्त्रज्ञ सर्वलोकनमस्कृत।
श्रीदेव्या यन्त्रराजस्य मालाकङ्कणयोरपि ॥१॥
शोधनं श्रोतुमिच्छामि त्वयैव प्राङ्निवेदितम्।
येन शुद्धिर्भवेद् देव द्रव्याणां साधकस्य हि ॥२॥

माला-कपाल-कंकणशोधन—श्रीदेवी ने कहा कि हे भगवन्! आप सभी तत्वों के ज्ञाता, सभी लोकों के द्वारा नमस्कृत हैं। आपके द्वारा पहले बतलाये गये श्रीदेवी के यन्त्रराज, माला, कङ्कण आदि का शोधन किस प्रकार होता है, यह सुनने की मेरी प्रबल इच्छा है। साधक पूजन द्रव्यों का शोधन किस प्रकार करे, यह मैं जानना चाहती हूँ॥१-२॥

श्रीभैरव उवाच

अधुना देवि वक्ष्यामि शोधनं सर्वकामदम्।
सर्वसाधारणं लोके पटलं गुह्यमुत्तमम् ॥३॥
सुदिने देवि गत्वादौ श्मशानं साधकोत्तमः।
कपालं नरदन्तानां माला कङ्कणमीश्वरि ॥४॥
अष्टोत्तरशतं जप्त्वा मूलं यन्त्रे निधापयेत्।
पुनरष्टोत्तरशतं जप्त्वा तेनैव तर्पयेत् ॥५॥
देवान् पितॄन् ऋषीन् देवि माया माकामबीजकैः।
श्मशानभस्मलिप्तेन शुद्धेन सुरवन्दिते ॥६॥
ततो यन्त्रं लिखेद् देवि कपाले साधकोत्तमः।
मालां कुर्यान्नृदन्तानां सकलाभीष्टसिद्धये ॥७॥

श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! अब मैं सर्वकामदायक शोधन को बतलाता हूँ। इस संसार में जनसामान्य के लिये यह उत्तम पटल अत्यन्त गुह्य है। किसी शुभ दिन में साधकोत्तम श्मशान में जाकर मनुष्य की खोपड़ी और दाँतों की माला और कङ्कण बनावे।

मूल मन्त्र का एक सौ आठ जप करके माला और कङ्कण को यन्त्रराज में स्थापित करे। फिर एक सौ आठ जप करके उनका तर्पण करे। देवता-पितर-ऋषियों और देवी का तर्पण 'ह्रीं श्रीं क्लीं' से करे। हे सुरवन्दिते! नरकपाल में शुद्ध चिताभस्म का लेप लगाकर साधकोत्तम उस में यन्त्र का अङ्कन करे। सभी अभीष्ट-सिद्धि के लिये पुरुष के दाँतों की माला बनावे।।३-७।।

वामाचारपरः श्रीमान् यो न कुर्यान्महेश्वरि।
यन्त्रं मालां शिवे तस्य मन्त्रहानिर्भवेद् ध्रुवम् ॥८॥
कपालं मृतकस्याशु गृहीत्वा स्फटिकप्रभम्।
श्मशानभस्म शुद्धं च कृत्वा साधकसत्तमः ॥९॥
स्वमन्त्रं साधयेद् धीमानन्यथा सिद्धिहानिदः।
कपालयन्त्रं देवेशि केशकङ्कणमुत्तमम् ॥१०॥
नृदन्तमालां द्रव्यं च मुण्डपात्रं महेश्वरि।
गोपयेत् साधकोऽत्यन्तं देवीरूपं विचिन्तयेत् ॥११॥
य एवं साधकः कुर्यात्तस्य सिद्धिरदूरतः।
अन्यथा सिद्धिहानिः स्यान्ममापि परमेश्वरि ॥१२॥
इतीदं पटलं दिव्यं गुह्यं सर्वस्वमुत्तमम्।
अप्रकाश्यमदातव्यं गोपनीयं विशेषतः ॥१३॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये द्रव्यादिशोधन-
निरूपणं नाम सप्तदशः पटलः॥१७॥

जो वामाचारी श्रीमान् ऐसा यन्त्र और इस प्रकार की माला नहीं बनाता है, उसे मन्त्र हानि पहुँचाता है। स्फटिक के समान स्वच्छ मृतककपाल लेकर श्मशानभस्म से उसे शुद्ध करके अपने मन्त्र से साधक उस कपाल को सिद्ध करे; अन्यथा सिद्धि में हानि होती है। हे महेश्वरि! कपाल, यन्त्र, केश, कङ्कण, उत्तम नरदन्त, माला, द्रव्य और मुण्डपात्र को साधक गुप्त रखे। उन्हें देवीस्वरूप माने। जो साधक ऐसा करता है, उसे शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त होती है। हे परमेश्वरि! ऐसा न करने से मुझे भी सिद्धि की हानि हो सकती है। यह दिव्य पटल गुह्य, सर्वस्व एवं उत्तम है। यह न किसी के सामने कहने लायक है और न ही किसी को देने लायक है। यह विशेष रूप से गोपनीय रखने योग्य है।।८-१३।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में द्रव्यादिशोधन निरूपण नामक सप्तदश पटल पूर्ण हुआ।

•

अथाष्टादशः पटलः

शोधनपद्धतिः

मालादिशोधनपद्धतिः

श्रीदेव्युवाच

भगवन् देवदेवेश मालायन्त्रार्चनं परम्।
शोधनं श्रोतुमिच्छामि विस्तरात् परमार्थदम्॥१॥

मालाशोधन-पद्धति—श्रीदेवी ने कहा—हे भगवन् देवदेवेश! मैं मालायन्त्रार्चन की श्रेष्ठ शोधनविधि को विस्तार से सुनना चाहती हूँ, क्योंकि यह परमार्थ को प्रादान करने वाला है।।१।।

श्रीभैरव उवाच

अधुना देवि वक्ष्यामि पद्धतिं गद्यरूपिणीम्।
शोधनस्य हि द्रव्याणां मालादीनां महेश्वरि॥२॥

श्रीभैरव ने कहा कि हे देवि! अब मैं गद्यरूपिणी शोधन-पद्धति का वर्णन करता हूँ। जिससे द्रव्यों और माला इत्यादि का शोधन होता है।।२।।

तत्रादौ साधको रात्रिशेष उत्थाय बद्धपद्मासनः स्वशिरःस्थसहस्राराधो-मुखकमलकर्णिकान्तर्गतं निजगुरुं ध्यात्वा, देवीं च हृद्विषये ध्यात्वा, मानसैरुपचारैरभ्यर्च्यजपाजपं गुरवे देव्यै च समर्प्य प्रणमेत्। ततो बहिरागत्य नद्यादौ गत्वा स्नानासन्ध्यादि विधाय, यागगेहमेत्य नित्यकर्म समाप्य यन्त्रशोधनाद्यारभेत्। तत्रेशनदिग्विषये चतुष्कोणां हस्तैक-विस्तृतां विश्वक् सम्यक्तया वेदीं विधाय विलिप्य सिन्दूरेण स्वदेवतायन्त्रं विभाव्य, यथोक्तया पूजया सम्पूज्य द्रव्यादीन्यानाय्य यन्त्रादीन् शोधयेत्।

रात शेष होने पर साधक उठकर पद्मासन में बैठे। अपने शिर में स्थित सहस्रदल के अधोमुख कमलकर्णिका में अपने गुरु का ध्यान करे। हृदय में देवी का ध्यान करे। मानसोपचारों से उनका पूजन करे। अजपा जप करे। जप को गुरु और देवी के हाथों में समर्पित करे और प्रणाम करे। इसके बाद घर से बाहर नदी आदि जलाशयों में जाकर स्नान करे और सन्ध्यावन्दन करे। इसके बाद यागमण्डप में आकर नित्य कर्म करके यन्त्रशोधनादि कार्य का प्रारम्भ करे। यागमण्डप के ईशान कोण में एक हाथ लम्बी और

एक हाथ चौड़ी चौकोर वेदी बनावे। उसे लीप कर सिन्दूर से अपने इष्ट का यन्त्र बनावे। यथोक्त विधि से पूजन सामग्रियों और यन्त्रादि का शोधन करे।

स्त्रीकेशैश्च चरेद् देवि कङ्कणं साधकोत्तमः।
कङ्कणं दन्तमालां च यन्त्रं कापालिकं शिवे ॥३॥
द्रव्यं मधु तथा मत्स्यं मांसं मुद्रां च मैथुनम्।
मकारपञ्चसंयुक्तं पूजयेद् भैरवेश्वरीम् ॥४॥

तत्रैवानीयासनादिशुद्धिं कृत्वा, स्वमूलस्य सङ्कल्पपूर्वमृष्यादिन्यासं कुर्यात्। ततो मूलेनाचम्य प्राणायामत्रयं कृत्वा भूतशुद्ध्यादिप्राणान् संस्थाप्य पञ्चगव्येनौषधसप्तकेन शोधनं कुर्यात्।

तब साधकोत्तम स्त्री के केश से कङ्कण बनावे। इसके बाद कङ्कण, दन्तमाला और कपाल पर अंकित यन्त्र, मद्य, मत्स्य, मांस, मुद्रा, मैथुन, पञ्च मकार द्रव्य से भैरवीश्वरी का पूजन करे।।३-४।।

तब भैरवी को लाकर आसनादि की शुद्धि करे। अपने मूल मन्त्र से सङ्कल्पपूर्वक ऋष्यादि न्यास करे। तब मूल मन्त्र से आचमन करे, तीन प्राणायाम करे। भूतशुद्धि करे। प्राण-प्रतिष्ठा करे। इसके बाद पञ्चगव्य से सात औषधों का शोधन करे।।३-४।।

गव्यादिनिरूपणम्

स्तन्यं शुक्रं चारणालं तक्रं रक्तं स्वयोनिजम्।
पञ्चगव्यमिति प्राज्यं कुर्यात् साधकसत्तमः ॥५॥
काश्मीर-गोरोचन-पूगकादि कुरङ्गनाभीजमथापि मूर्वा।
पूतासमेवं मलयोद्भवं च सद्यन्त्रशुद्धौ महदौषधानि ॥६॥

पञ्चगव्य में स्त्रीस्तन का दूध, वीर्य, आरणाल, मट्ठा, योनि का रक्त—यही पाँच द्रव्य आते हैं। इसी पञ्चगव्य से केशर, गोरोचन, पूगकादि, कस्तूरी, मूर्वा, श्वेत चन्दन और पूतास नाम की सात औषधियों का शोधन करे।।५-६।।

यन्त्रेश्वरीमन्त्रः

एभिः सम्यक्तया यन्त्रं मालां कङ्कणं संलिप्य मूलविद्यया पृथक् पृथक् शोधनं कुर्यात्। 'ॐ ह्रींश्रींक्लीं देवि यन्त्रेश्वरि क्लींश्रींह्रीं ॐ यन्त्रं शोधय शोधय ह्रः:श्रः:क्लः ठःठःठः स्वाहा।'

इमां मन्त्रात्मिकां विद्यामष्टोत्तरशतं जपेत्।
यन्त्रे देवीं समावाह्य पूजयेत् साधकोत्तमः ॥७॥

इन्हीं शोधित औषधों का लेप यन्त्र, माला, कङ्गन में लगाकर मूल मन्त्र से अलग-अलग शोधन करे। यन्त्रेश्वरी का मन्त्र है—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं देवि यन्त्रेश्वरि क्लीं श्रीं ह्रीं ॐ यन्त्रं शोधय शोधय ह्रः श्रः क्लः ठः ठः स्वाहा।

इस मन्त्रात्मिका विद्या का एक सौ आठ बार जप करे। तब साधकोत्तम यन्त्र में देवी का आवाहन करके पूजन करे।।७।।

नृदन्तमालाशोभनकङ्कणशोधनमन्त्रकथनम्

तत्रादौ यन्त्रं मूलविद्यया पञ्चगव्यौषधैः संशोध्य, सिन्दूरयन्त्रे बिन्दूपरि संस्थाप्य पूर्ववत् स्वोक्तक्रमेण पूजयेत्। ततो मालामौषधादिना मूलविद्यया शोधयेत्। 'ॐ ॐ ह्रांह्रींश्रींश्रां क्लींक्लां मालारूपिणि सर्वलोकभक्षिणि हूं नृदन्तमालां शोधय शोधय फट् ठःठःठः स्वाहा'। इत्येवमष्टोत्तरशतं जप्त्वा मूलविद्यया पञ्चगव्येन शोधयेत्। ततः कङ्कणं शतबालानां स्त्रीकेशस्य कृत्वा मूलविद्यया शोधयेत्। 'ॐ ह्रींस्त्रींहूंश्रींक्रीं केशिनि निराकेशिनि कङ्कणं शोधय शोधय हूंक्रां फट् ठःठःठः स्वाहा'। इति मूलविद्यामष्टोत्तरशतं जप्त्वा पञ्चगव्यौषधजलेन संशोध्य, वामहस्तदक्षहस्तयोर्निबध्य स्वमूलं नृदन्तमालया यथाशक्त्या जपेत्। ततः कवचस्तोत्रसहस्रनामादिपाठं विधाय, मूलेन नैवेद्यं निवेद्य तदग्रे चक्रपूजां कुर्यात्।

पहले मूल विद्या से पञ्चगव्य के द्वारा औषधी का शोधन करके सिन्दूर से बने यन्त्र को बिन्दु में स्थापित करके पूर्ववत् उक्त विधि से पूजन करे। तब मूल मन्त्रोच्चारण करते हुए माला-औषधादि का शोधन करे।

मालाशोधन मन्त्र—ॐ ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं श्रां क्लीं क्लां मालारूपिणि सर्वलोकभक्षिणि हूं नृदन्तमालां शोधय शोधय फट् ठः ठः ठः स्वाहा।

इस मन्त्र का एक सौ आठ बार जप कर मूल विद्या से पञ्चगव्य के द्वारा शोधन करे। इसके बाद स्त्रीकेश के एक सौ बालों से कङ्गन बनाकर उसे मूल विद्या से शोधित करे।

कंगनशोधन मन्त्र—ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं श्रीं क्रीं केशिनि निराकेशिनि कंकणं शोधय शोधय हूं क्रां फट् ठः ठः ठः स्वाहा।

मूल विद्या को एक सौ आठ बार जप कर पञ्चगव्य का शोधन औषधजल से करे। तब बाँयें हाथ को दाँयें हाथ से बाँधकर अपने मूल मन्त्र का जपदन्त माला से यथाशक्ति

करे। तब कवच-स्तोत्र-सहस्रनाम का पाठ करे। मूल मन्त्र से नैवेद्य अर्पण करे। उसके आगे चक्रपूजा करे।

साधकैरेकादशक्रमेण वृत्ताकृत्या यागमण्डपे उपविश्य, मध्ये त्रिकोणं सविन्दुं षडश्रकं वृत्तमष्टदलं वृत्तत्रयं भूगृहं विलिख्य रक्तपुष्पैः पूजयेत्। बाह्ये—गं गणेशाय नमः, धं धर्मराजाय नमः, वं वरुणाय नमः, क्रीं कुवेराय नमः, इति सम्पूज्य। अष्टदलेषु—ह्लींश्रीं करालाय नमः, ह्लींश्रीं विकरालाय नमः, ह्लींश्रीं संहाराय नमः, ह्लींश्रीं रुरुभैरवाय नमः, ह्लींश्रीं महाकालाय नमः, ह्लींश्रीं कालाग्नये नमः, ह्लींश्रीं सुप्तभैरवाय नमः, ह्लींश्रीं उन्मत्तभैरवाय नमः, इत्यभ्यर्च्य। षडश्रे—ॐह्लींश्रीं जयायै नमः, षडश्रे—ॐ ह्लींश्रीं जयायै नमः, ॐह्लींश्रीं नमः विजयायै, ॐह्लींश्रीं कान्त्यै नमः, ॐह्लींश्रीं प्रीत्यै नमः, ॐह्लींश्रीं मनोन्मनायै नमः, इति पुष्पैरभ्यर्च्य। ततस्त्रिकोणे—गां गङ्गायै नमः, यां यमुनायै नमः, सं सरस्वत्यै नमः इत्यभ्यर्च्य, बिन्दौ मूलं० महामायायै नमः, एवं सम्पूज्य, तत्र श्रीदेवीं ज्योतीरूपां गोघृतेन विभाव्य यन्त्रवत्तां च पूजयेत्। तत्र भैरवं भैरवीं च पूजयेत्। तत्र वटुक सशक्तिकं च पूजयेत्।

साधक एकादश क्रम से वृत्त बनाकर यागमण्डप में बैठे। मध्य में बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल, वृत्तत्रय और भूपुर बनाकर उस यन्त्र का पूजन लाल फूलों से करे। यन्त्र के बाहर दिशाओं में गणेश, यमराज, वरुण और कुबेर की पूजा करे। इनका पूजन मन्त्र है—गं गणेशाय नमः। धं धर्मराजाय नमः। वं वरुणाय नमः। क्रीं कुबेराय नमः।

अष्टदलों में—ह्लीं श्रीं करालाय नमः। ह्लीं श्रीं विकरालाय नमः। ह्लीं श्रीं संहाराय नमः। ह्लीं श्रीं रुरुभैरवाय नमः। ह्लीं श्रीं महाकालाय नमः। ह्लीं श्रीं कालाग्नये नमः। ह्लीं श्रीं सुप्तभैरवाय नमः। ह्लीं श्रीं उन्मत्तभैरवाय नमः—इन मन्त्रों से अष्टभैरवों का पूजन करे।

षट्कोण में—ॐ ह्लीं श्रीं जयायै नमः। ॐ ह्लीं श्रीं विजयायै नमः। ॐ ह्लीं श्रीं कान्त्यै नमः। ॐ ह्लीं श्रीं रत्यै नमः। ॐ ह्लीं श्रीं प्रीत्यै नमः। ॐ ह्लीं श्री मनोन्मन्यै नमः से छः देवियों का पूजन करे। इनका अर्चन फूलों से करे।

इसके बाद त्रिकोण में गां गङ्गायै नमः। यां यमुनायै नमः। सं सरस्वत्यै नमः से तीन देवियों का पूजन करे। बिन्दु में मूल मन्त्र 'महामायायै नमः' से पूजन करे। तब गोघृत से दीपक जलाकर ज्योति रूपा श्रीदेवी का पूजन यन्त्र के रूप में करे। इसके बाद भैरव-भैरवी का पूजन करे। तब शक्ति के साथ वटुक का पूजन करे।

प्रवृत्ते भैरवे तन्त्रे सर्वे वर्णा द्विजातयः।
निवृत्ते भैरवे तन्त्रे सर्वे वर्णाः पृथक् पृथक्॥

तत्रैव नव कन्याः अभ्यर्च्य,

भैरवतन्त्र में प्रवृत्त सभी वर्णों को द्विज माना जाता है। भैरवतन्त्र से बाहर वे पुनः अपने-अपने वर्ण के हो जाते हैं। वहीं पर नव कन्याओं का भी पूजन करे।

साधकचक्रार्चानिरूपणम्

वामे रामा रमणकुशला दक्षिणे चालिपात्र-
मग्रे मुद्रश्चणकवटकौ सूकरस्योष्णशुद्धिः।
तन्त्री वीणा सरसमधुरा सद्गुरुः सत्कथाश्च
वामाचारः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः॥८॥
पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा यावत् संविन्मनोमयी।
यदि तत्र विकारः स्यात् पानं तद् ब्रह्मघातवत्॥९॥
मधुपानपरो मन्त्री शक्तिं सन्तोषयेद्रते।
रेतसा तर्पयेद् देवीं शक्तिं पानेन तर्पयेत्॥१०॥
शक्त्युच्छिष्टं पिबेन्मद्यं वीरोच्छिष्टं तु चर्वणम्।
मकारपञ्चसंयुक्तं कुर्याच्छ्रीचक्रमण्डलम्॥११॥
साधकान् साधको भक्त्या सन्तर्प्य पानभोजनैः।
सन्तर्प्य देवतामिष्टां मिष्टान्नैश्चर्वणैः शिवे॥१२॥
स्वगुरुं पूजयेद् भक्त्या तर्पयेच्छक्तितः परम्।
सन्तोषयित्वा स्वगुरुं दक्षिणाभिश्च वन्दनैः।
तदाज्ञां शिरसादाय नित्यकर्मणि सिद्धिदाम्॥१३॥

साधक चक्रार्चा-निरूपण—साधक के वामभाग में रमणकुशला नारी, दाँयें हाथ में शराब पात्र, आगे चने के गरम-गरम वटक की शुद्धि होती है। तन्त्री-वीणावादन, सद्गुरु की सत्कथा की चर्चा होती है। वामाचार परम गहन है। योगियों को भी अगम्य है। जब तक मन संविन्मय नहीं होता तब तक पान करे, पान करे, पान करे। पान के समय यदि विकार उत्पन्न होता है तो वह ब्रह्महत्या के समान होता है। मद्यपान-परायण साधक शक्ति को मैथुन से सन्तुष्ट करे। वीर्य से देवी का तर्पण करे। शक्ति का तर्पण मद्यपान से करे। शक्ति के जूठे मद्य का पान करे। वीरों का उच्छिष्ट चर्वण करे। पञ्च मकारों से युक्त श्रीचक्रमण्डल में अर्चन करे। साधकों को साधक भक्तिपूर्वक पान और भोजन से तृप्त करे। इष्टदेवता को मिष्ठान्न और चर्वण से तृप्त करे। अपने गुरु का पूजन भक्तिपूर्वक करे।

शक्ति के अनुसार दक्षिणा देकर उन्हें सन्तुष्ट करे। उनका वन्दन करे। उनकी आज्ञा को शिर पर धारण करके नित्य कर्म करने से सिद्धि प्राप्त होती है।।८-१३।।

तत्रैवं चक्रे साधकानभ्यर्च्यानन्दभैरवं स्वात्मानं ध्यात्वा परानन्दमयो भूत्वा, संहारमुद्रया देवीं सशिवां विसृज्य दण्डवत् प्रणमेत्।

इसके बाद वहाँ पर चक्र में उपस्थित साधकों का अर्चन करे। अपने को आनन्दभैरव-स्वरूप मान कर परमानन्दमय हो जाये। तब संहार मुद्रा से शिवा के सहित देवी का विसर्जन करके दण्डवत प्रणाम करे।

इत्येवं पद्धतिं गुह्यां गद्यपद्यैकरूपिणीम्।
सकलागमसाराढ्यां गोपयेत् साधकोत्तमः ।।१४।।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये शोधनपद्धति-
निरूपणं नामाष्टादशः पटलः।।१८।।

इस प्रकार यह गद्य-पद्यमयी गुह्य पद्धति सभी आगमों के सार से परिपूर्ण है। श्रेष्ठ साधक को इसे सदैव गुप्त रखना चाहिये।।१४।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में शोधन-
पद्धति निरूपण नामक अष्टादश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथैकोनविंशः पटलः

सुरोत्पत्तिः

सुरोत्पत्तिकथनम्

श्रीभैरव उवाच

अधुना देवि वक्ष्यामि सुरोत्पत्तिं महेश्वरि ।
यस्याः श्रवणमात्रेण दीक्षाफलमवाप्नुयात् ॥१॥
समुद्रे मथ्यमाने तु क्षीराब्धौ सागरोत्तमे ।
तत्रोत्पन्ना सुरादेवी कुमारीरूपधारिणी ॥२॥

सुरोत्पत्ति-निरूपण—श्री भैरव ने कहा कि हे देवि महेश्वरि! अब मैं सुरा की उत्पत्ति का वर्णन करता हूँ, जिसके श्रवणमात्र से दीक्षाफल प्राप्त होता है। सागरों में उत्तम क्षीरसागर के मन्थन से कुमारी रूपधारिणी सुरादेवी की उत्पत्ति हुई।।१-२।।

सुरादेवीध्यानम्

नग्ना कालाग्निसदृशी कृतहासोल्लसन्मुखी ।
अष्टादशभुजा दिव्या नवकुम्भधरा तथा ॥३॥
नवपात्रधरा तद्वन्मदिरारुणलोचना ।
नानाकुसुमभूषाढ्या मुक्तकेशी त्रिलोचना ॥४॥
नानारत्नाङ्गदयुता मुक्ताहारलताञ्चिता ।
रक्ताङ्गुलीयशोभाढ्या तुङ्गापीनस्तनाञ्चिता ॥५॥
विचित्ररत्नखचितकाञ्चीगुणनितम्बिनी ।
रत्नसिंहासनगता परमानन्ददायिनी ॥६॥
तां दृष्ट्वा तुष्टुवुर्देवीं ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ।
ससुरासुरगन्धर्वाः सेश्वराः ससदाशिवाः ॥७॥
तदा प्रसन्नवदना वरदानोद्यता सुरा ।

ध्यान—उत्पत्ति के समय यह देवी नग्न थीं एवं कालाग्नि के समान आभा वाली थीं। हासयुक्त सुन्दर मुख वाली थीं। इनकी अट्ठारह भुजाएँ थीं। उनके हाथों में नव कुम्भ थे। नव कुम्भधारिणी सुरा देवी की अरुण आँखें नशीली थीं। भाँति-भाँति के फूलों से

सुशोभित उनके वसन थे। केश खुले हुए थे। आँखें तीन थीं। विविध रत्नों से जटित अंगद थे। मोतियों की माला थी। लाल-लाल सुन्दर अङ्गुलियाँ थीं। स्तन उच्च और मोटे थे। विचित्र रत्नजड़ित रेशमी डण्डा से युक्त कटि और नितम्ब भारी थे। रत्नसिंहासन पर आसीन वह आनन्ददायिनी थीं। इन्हें देखकर ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सुर, असुर, गन्धर्व, ईश्वर, सदाशिव ने इन्हें स्तुति से तुष्ट किया तब यह देवी प्रसन्न मुखमण्डल से देवताओं को वरदान देने के लिये उद्यत हुई।।३-७।।

स्तुतया सुरादेव्या प्रथमं पात्रं सदाशिवाय दत्तं तद्बिन्दुपाताद्गुड़लताद्युत्पत्तिकथनम्

आदौ पात्रं ददौ दिव्यमानन्दरसपूरितम् ।।८।।
सदाशिवाय देवेशि स नत्वा पात्रमग्रहीत् ।
पात्राद् बिन्दुः पपातोर्व्यां जाता गुडलतास्ततः ।।९।।
बिन्दुपातात् कणा जातास्तेभ्यो जाताः सहस्रशः ।
इक्षुभेदाश्च खदिरास्त्र्यूषणाद्याः सितादयः ।।१०।।
क्रमुका नागवल्ली च स्रवन्तीति महेश्वरि ।
गौडी चैतद्युता प्रोक्ता सर्वार्थफलदायिनी ।।११।।

सदाशिव को पात्रदान से गुड़-लता की उत्पत्ति—दिव्य आनन्दरस से पूर्ण प्रथम पात्र पहले इन्होंने सदाशिव को दिया। उन्होंने इसे ग्रहण किया। देते समय पात्र से कुछ बूँद छलक कर भूमि पर गिर गये, जिससे गुड़लता उत्पन्न हुई। बिन्दुपात के समय जो कुछ कण छितरा गये, उनसे हजारों प्रकार के ईखभेद, खदिर, त्र्यूषण, सितादि, क्रमुक, नागवल्ली उत्पन्न हुए। इन सबों से समन्वित सर्वार्थफलदायिनी गौड़ी नाम की सुरा उत्पन्न हुई।।८-११।।

ईश्वरदत्तद्वितीयपात्रबिन्दुपाताद्द्राक्षादीनामुत्पत्तिकथनम्

ततो ददौ परं पात्रमीश्वराय सुरा शिवे ।
पात्राद् बिन्दुः पपातोर्व्यां ततो जाताहिवल्लरी ।।१२।।
बिन्दुपातकणेभ्योऽपि द्राक्षाभेदाः सहस्रशः ।
मृद्वीकाद्या महादेवि जाताः परमपावनाः ।।१३।।
माध्वी प्रोक्ता महाविद्यासाधने सर्वसिद्धिदा ।

द्वितीय ईश्वरदत्त पात्र के बिन्दुपतन से द्राक्षादि के उत्पत्ति—तब सुरा देवी ने दूसरा पात्र ईश्वर को दिया। देते समय कुछ बून्द उसमें से छलक कर बाहर छिटक गये।

उससे अहिवल्लरी की उत्पत्ति हुई। बिन्दुपात के कणों से द्राक्षा के हजारों भेदों एवं परम पावन मृद्विकादि की उत्पत्ति हुई। इस सुरा को माध्वी कहते हैं। महाविद्या के साधन में यह सभी सिद्धियों को देने वाली है।।१२-१३।।

रुद्रदत्ततृतीयपात्रबिन्दुपाताद्गोधूमाद्युत्पत्तिकथनम्

ततो ददौ परं पात्रं रुद्रायामृतपूरितम् ॥१४॥
पात्राद् बिन्दुः पपातोर्व्यां जाता गोधूमजातयः ।
तत्कणेभ्यो भदन्ती च जाता वै धान्यजातयः ॥१५॥
पैष्टी प्रोक्ता सुरा देवि परमानन्ददायिनी ।

रुद्रदत्त तृतीय पात्र के बिन्दुपात से गेहूँ आदि की उत्पत्ति—तब सुरा देवी ने तृतीय अमृतपूर्ण पात्र रुद्र को दिया। देते समय जो कुछ बूँदकण पात्र से छलक कर भूमि पर गिरे, उनसे गेहूँ आदि धान्यों की उत्पत्ति हुई। इन धान्यों से पैष्टी नाम की सुरा बनती है, जो परमानन्ददायिनी है।।१४-१५।।

विष्णुदत्तचतुर्थपात्रबिन्दुपातात्संविदुत्पत्तिकथनम्

ततो ददौ परं पात्रं विष्णवे प्रभविष्णवे ॥१६॥
पात्राद् बिन्दुः पपातोर्व्यां संविज्जाता ततः प्रिये ।
तत्कणेभ्योऽपि देवेशि तद्भेदाः कनकादयः ॥१७॥
अन्ये च बहवो जाता भेदा मदनवर्धकाः ।
विजयेति मया प्रोक्ता वैष्णवी परमार्थदा ॥१८॥
संविदासवयोर्मध्ये संविदेव गरीयसी ।

चतुर्थ विष्णुदत्त पात्र से संविदा की उत्पत्ति—सुरा देवी ने चौथा पात्र भास्वर विष्णु को दिया। पात्र से कुछ बूँद छलक कर पृथ्वी पर गिरे, जिससे संविदा विजया भांग की उत्पत्ति हुई। छिटके अन्य कणों से उसके भेद धत्तूर आदि की उत्पत्ति हुई; साथ ही अन्य प्रकार के मादक पौधों की भी उत्पत्ति हुई। वैष्णवी विजया को मैं परमार्थप्रदायिनी कहता हूँ। संविदा और आसव में संविदा ही श्रेष्ठ है।।१६-१८।।

परमेष्ठिदत्तपञ्चमपात्रबिन्दुपातात्परूष-
काद्युत्पत्तिकथनम्

ततो ददौ परं पात्रं श्रीसुरा परमेष्ठिने ॥१९॥
मात्राद् बिन्दुः पपातोर्व्यां जातः शीघ्रं परूषकः ।
तत्कणेभ्योऽपि सञ्जाता भेदाः क्षौद्ररसादयः ॥२०॥
पानकं प्रोक्तमीशानि सर्वसाधारणं परम् ।

ब्रह्मा को प्रदत्त पञ्चम पात्र से परूषक की उत्पत्ति—श्री सुरा देवी ने पञ्चम पात्र ब्रह्मा को दिया। पात्र से छलके बिन्दू से परूषक की उत्पत्ति हुई। अन्य छलके कणों से मधु आदि पानकों की उत्पत्ति हुई, जो सर्वसाधारण के लिये श्रेष्ठ हैं।।१९-२०।।

इन्द्रदत्तषष्ठपात्रबिन्दुपाताज्जातीफलाद्युत्पत्तिकथनम्

ततो ददौ परं पात्रमिन्द्रायामृतनिर्भरम् ।।२१।।
पात्राद् बिन्दुः पपातोर्व्यां जातं जातीफलं ततः ।
तत्कणेभ्योऽपि सञ्जाता भेदाश्चामलकादयः ।।२२।।
पानकं नाम तद् दिव्यं रसायनमुदाहृतम् ।

इन्द्र को प्रदत्त षष्ठ पात्र से जातीफल की उत्पत्ति—श्री सुरादेवी ने छठा अमृतपूर्ण पात्र इन्द्र को दिया। उस पात्र से छलके बिन्दू से जातीफल उत्पन्न हुआ। उसके कणों से आमला आदि प्रभेदों की उत्पत्ति हुई। इस पानक को दिव्य रसायन कहा जाता है।।२१-२२।।

गुरुदत्तसप्तमपात्रबिन्दुपातान्नारिकेलाद्युत्पत्तिकथनम्

ततो ददौ परं पात्रं गुरवे गिरिजे सुरा ।।२३।।
पात्राद् बिन्दुः पपातोर्व्यां गुडपुष्पं ततः शिवे ।
जातं तत्कणजा भेदा नारिकेलफलादयः ।।२४।।
पानकं नाम देवेशि रसायनमिदं परम् ।

वृहस्पति को प्रदत्त सप्तम पात्र से नारियल की उत्पत्ति—श्री सुरा देवी ने सप्तम पात्र देवगुरु वृहस्पति को दिया। हे शिवे! पात्र से छलके बिन्दू से ईख की उत्पत्ति हुई एवं उसके कणों-कणों से नारियल आदि फलों की उत्पत्ति हुई। इस पानक को श्रेष्ठ रसायन कहा जाता है।।२३-२४।।

शुक्रदत्ताष्टमपात्रबिन्दुपातात्खर्जूराद्युत्पत्तिकथनम्

ततो ददौ परं पात्रं शुक्रायामृतपूरितम् ।।२५।।
पात्राद् बिन्दुः पपातोर्व्यां जाताः खर्जूरपादपाः ।
तत्कणेभ्योऽपि सञ्जाता भेदा भादामकादयः ।।२६।।
पानकं तदपि प्रोक्तं दिव्यं सन्तोषकारणम् ।

शुक्रप्रदत्त अष्टम पात्र से खजूर आदि पादपों की उत्पत्ति—श्री सुरा देवी ने अष्टम अमृतपूर्ण पात्र शुक्राचार्य को दिया। पात्र से छलके बिन्दू से खजूर-ताड़ आदि वृक्ष उत्पन्न हुए। कणों से भादामकादिकों की उत्पत्ति हुई। इन्हें दिव्य सन्तोषकारक पानक कहते हैं।।२५-२६।।

सूर्याचन्द्रमसोर्नवमपात्रबिन्दुपातादोषध्याद्युत्पत्तिकथनम्

ततो ददौ परं पात्रं सूर्याचन्द्रमसोः सकृत् ॥२७॥
पात्राद् बिन्दुः पपातोर्व्यां जाता सञ्जीवनौषधिः ।
तत्कणेभ्योऽपि सञ्जाता विविधौषधयः शिवे ॥२८॥
पानकं तदपि प्रोक्तं सर्वसाधारणं परम् ।
सर्वार्थफलदं देवि सर्वसारस्वतप्रदम् ॥२९॥

सूर्य-चन्द्रप्रदत्त नवम पात्र से संजीवन औषधी की उत्पत्ति—श्री सुरा देवी ने नवम पात्र सूर्य-चन्द्र को दिया। उससे जो बिन्दु छलककर गिरे, उससे सञ्जीवन औषधों की उत्पत्ति हुई और कणों से विविध औषध उत्पन्न हुए। सर्वसाधारण इन्हें भी पानक ही मानते हैं। ये औषध सभी प्रकार के फलों के प्रदायक हैं एवं सभी विद्याओं को देने की क्षमता रखते हैं।।२७-२९।।

देवानां कृते सुरावरदानकथनम्

दत्त्वा दिव्यं रसं देवी सुरा तत्र तिरोदधे ।
ते सर्वे परमेशानि सुरानन्दैकनिर्भराः ॥३०॥
सदाशिवादयो देवाः सुरायै च वरं ददुः ।
ये पिबन्ति परं पानं परमानन्दकारणम् ॥३१॥
ते सर्वे यान्ति परमं पदं शाश्वतमव्ययम् ।

सुरा देवी को देवताओं का वरदान—देवताओं को दिव्य रस देकर सुरा देवी अन्तर्धान हो गयीं। हे परमेशानि! सुरानन्दनिर्भर सदाशिवादि सभी देवताओं ने सुरा को वरदान दिया कि जो सुरापान करेंगे, उन्हें परमानन्द की प्राप्ति होगी। सुरापान करने वाले सभी शाश्वत अव्यय परम पद को प्राप्त करेंगे।।३०-३१।।

पूजायां सुरावश्यकत्वकथनम्

विना गौडीं तथा माध्वीं सुरां यः पूजयेच्छिवाम् ॥३२॥
शिवं नारायणं रुद्रं स भवेन्निरयास्पदम् ।
अदीक्षितः पशुर्देवि दीक्षितोऽप्यसुरः पशुः ॥३३॥
तस्मात् सुरां शिवेऽभ्यर्च्य पूजायां वैष्णवोत्तमः ।
पिबेद्गौडीं तथा माध्वीं पैष्टीमासवमुत्तमम् ॥३४॥
पानकं च शुभाः सर्वे पूर्वाभावे परः परः ।

पूजा में सुरा की आवश्यकता—बिना गौड़ी और माध्वी सुरा के जो शिवा, शिव,

नारायण, रुद्र की पूजा करता है, वह नरकगामी होता है। दीक्षा के बिना साधक पशु होता है। दीक्षित होने पर भी असुर पशु होता है। ऐसी स्थिति में शिव का अर्चन सुरा से करना चाहिये। उत्तम वैष्णव गौड़ी, माध्वी, पैष्टी आसव का पान करे। सभी पानक पूर्वापर क्रम से शुभ होते हैं।।३२-३४।।

इतीदं परमं तत्त्वं कौलिकानां रहस्यकम्।
आनन्देश्वरसर्वस्वं गोपनीयं स्वयोनिवत्॥३५॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये सुरोत्पत्तिनिरूपणं नामैकोनविंशः पटलः॥१९॥

कौलिकों के परम तत्त्व का यह रहस्य-वर्णन समाप्त हुआ। यह रहस्य आनन्द का ईश्वर है और अपनी योनि के समान गोपनीय है।।३५।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में सुरोत्पत्ति निरूपण नामक एकोनविंश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ विंशः पटलः

पात्रवन्दनविधिः

पात्रवन्दनविधिः

श्रीभैरव उवाच

अधुना देवि वक्ष्येऽहं पात्रवन्दनमीश्वरि ।
तत्कालं यद्ददानन्दपात्रं देवैश्च वन्दितम् ॥१॥
पूजायां पात्रमानन्दभरितं परमेश्वरि ।
गुरुणा दत्तमभ्यर्च्य प्रणमेच्छिरसा तदा ॥२॥

पात्रवन्दनविधि—श्री भैरव ने कहा कि हे देवेश्वरि! अब मैं पात्रवन्दन को बतलाता हूँ, जो देवी-वन्दना के बाद तुरन्त पात्रों में आनन्द देती हैं और जो देवताओं से भी वन्दित हैं। हे परमेश्वरि! पूजा में गुरुपात्र की वन्दना गुरुवत् करे। वह पात्र आनन्द से परिपूर्ण होता है। उस समय शिर झुकाकर उसे प्रणाम करे।।१-२।।

प्रथमपात्रवन्दनम्

श्रीमद्भैरवशेखरप्रविलसच्चन्द्रामृताप्लावितं
क्षेत्राधीश्वरयोगिनीगणमहासिद्धैः समाराधितम् ।
आनन्दागमकं महात्मकमिदं साक्षात् त्रिखण्डामृतं
वन्दे श्रीप्रथमं कराम्बुजगतं पात्रं विशुद्धिप्रदम् ॥३॥

प्रथम पात्र-वन्दना—श्री भैरव के मस्तक पर विलसित चन्द्रमा से अमृत झर रहा है। क्षेत्राधीश्वरों, योगिनीगणों एवं महासिद्धों से ये आराधित हैं। यह आनन्दकर, महात्मकर, साक्षात् त्रिखण्डामृत से युक्त है। इस विशुद्धिप्रद प्रथम पात्र की मैं वन्दना करता हूँ, जो उन भैरव के करकञ्जों में शोभित है।।३।।

द्वितीयपात्रवन्दनम्

हैमं सिन्धुरसावहं दयितया दत्तं च पेयादिभिः
किञ्चिच्चञ्चलरक्तपङ्कजदृशा सानन्दमुद्वीक्षितम् ।
वामे स्वादुविशुद्धशुद्धिकवलं पाणौ विधायात्मके
वन्दे पात्रमहं द्वितीयमधुनानन्दैकसंवर्धनम् ॥४॥

द्वितीय पात्र-वन्दना—मेरे बाँयें हाथ में जो पात्र है, वह रस का सागर है। यह दयिताप्रदत्त है, जो उसके द्वारा स्वयं पान किया हुआ है। इसके कमलनयन किञ्चित चञ्चल हैं। वह आनन्दपूर्वक देख रही हैं। उनके बाँयें हाथ में विशुद्ध शुद्धि कौर है। इस द्वितीय पात्र की मैं वन्दना करता हूँ। यह आनन्द का संवर्धक है।।४।।

तृतीयपात्रवन्दनम्

सर्वाम्नायकलाकलापकलितं कौतूहलोद्द्योतितं
चन्द्रोपेन्द्रमहेन्द्रशम्भुवरुणब्रह्मादिभिः सेवितम्।
ध्यातं देवगणैः परं मुनिगणैर्मोक्षार्थिभिः सर्वदा
वन्दे पात्रमहं तृतीयमधुना स्वात्मावबोधक्षमम्॥५॥

तृतीय पात्र-वन्दना—यह तृतीय पात्र सभी आम्नायों के कलाकलापकलित हैं। कौतूहल से प्रकाशित है। चन्द्र, विष्णु, इन्द्र, शिव, वरुण, ब्रह्मादि द्वारा संसेवित है। देवगण, श्रेष्ठ मुनिगण और मोक्षार्थी भी सदैव इसका ध्यान करते हैं। इस तृतीय पात्र की मैं वन्दना करता हूँ, जो अपनी आत्मा का बोध कराने में सक्षम है।।५।।

चतुर्थपात्रवन्दनम्

मद्यं मीनरसावहं हरिहरब्रह्मादिभिः पूरितं
मुद्रामैथुनधर्मकर्मनिरतं क्षाराम्लतिक्ताश्रयम्।
आचार्याष्टकसिद्धभैरवकलान्यासेन संशोधितं
पायात् पञ्चमकारतत्त्वनिलयं पात्रं चतुर्थं नुमः॥६॥

चतुर्थ पात्र-वन्दना—चतुर्थ पात्र मद्य, मीन और रस का सरित् है। यह विष्णु, शिव और ब्रह्मा से सेवित है। मुद्रा, मैथुन, धर्म, कर्म में निरत है। क्षार, अम्ल, तिक्त रस का आश्रय है। आठ आचार्यों, सिद्ध एवं भैरव के कला-न्यास से संशोधित है। यह पञ्च मकारतत्त्वों का आलय है। ऐसे चतुर्थ पात्र को नमस्कार है।।६।।

पञ्चमपात्रवन्दनम्

आधारे भुजगाधिराजवलये पात्रं महीमण्डलं
मद्यं सप्तसमुद्रवारि पिशितं चाष्टौ च दिग्दन्तिनः।
सोऽहं भैरवमर्चयन् प्रतिदिनं तारागणैरक्षतै-
रादित्यप्रमुखैः सुरागुरगणैराज्ञाकरैः किङ्करैः॥७॥

पञ्चम पात्र-वन्दना—शेषनाग के फन को कङ्कण बनाने वाले भूमण्डल का पात्र सातो सागरों के जलरूप मद्य एवं आठों दिग्गजों के मांस से परिपूर्ण है। मैं भैरव प्रतिदिन

उस पात्र का अर्चन तारागणों के अक्षत से करता हूँ। जिसमें मेरे आज्ञाकारी किङ्कर, आदित्यप्रमुख सुर, देव और दैत्य भी समन्वित रहते हैं।।७।।

षष्ठपात्रवन्दनम्

सच्छत्रामलभद्रपीठपरमानन्दोदयादायकं
रम्यं राज्यकरं सदा सुखकरं सायुज्यसाम्राज्यदम्।
नानाव्याधिभवान्धकारहरणं जन्मान्तरध्वंसनं
श्रीमद्भैरवभैरवीप्रियतरं पात्रं च षष्ठं नुमः ॥८॥

षष्ठ पात्र-वन्दना—मैं उस छठे पात्र की वन्दना करता हूँ, जो श्रीमद् भैरव-भैरवी को प्रियतर है। जो सांसारिक विविध व्याधि-अन्धकार का हरण करने वाला है। जो जन्मान्तर का विनाशक है। जो रमणीक, राज्यप्रदायक, सदा सुखदायक सायुज्य साम्राज्यदायक है। जो छत्रयुक्त विमल पीठ पर स्थित परमानन्दप्रदायक है।।८।।

सप्तमपात्रवन्दनम्

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यपरतश्चैतन्यसाक्ष्यप्रदं वि-
द्युद्भास्करवह्निचन्द्रधनुषां ज्योतिष्कलाव्यापितम्।
येडापिङ्गलमध्यगा त्रिवलया तस्याः प्रबोधोद्धरं
पात्रं सप्तममूषणेन तरुणानन्दप्रदं पातु माम्॥९॥

सप्तम पात्र-वन्दना—जो जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीयावस्था से परे चैतन्य का साक्षात् प्रदायक है; जो विद्युत, सूर्य, चन्द्र, अग्नि के प्रकाश से व्याप्त है, जो इडा, पिगंला, सुषुम्णा मध्यगामिनी त्रिवलया कुण्डलिनी को प्रबुद्ध कर उद्धार करके खिड़की से दिखाने वाला है, ऐसा तरुणानन्दप्रदायक सप्तम पात्र मेरी रक्षा करे।।९।।

अष्टमपात्रवन्दनम्

खड्गं पात्रकमञ्चलं च गुटिकां कण्ठे हि सारस्वतं
शत्रोर्वाग्बलशौर्यकार्यहरणं देहस्थितेः कारणम्।
वाञ्छासिद्धिकरं मनःस्थितिकरं वश्यं जगद्योषितां
पात्रं चाष्टममष्टसिद्धिकरणं प्रौढप्रसन्नं भजे॥१०॥

अष्टम पात्र-वन्दना—प्रौढ़, प्रसन्न, अष्ट सिद्धिप्रदायक अष्टम पात्र की वन्दना करता हूँ। यह पात्र वाञ्छासिद्धिकारक, मन को स्थिर करने वाला, संसार की योषिताओं को वशीभूत करने वाला है। एक हाथ में खड्ग, दूसरे में पात्र, कण्ठ में सारस्वत गुटिका धारण किये हुए है। यह सारस्वत गुटिका शत्रु की वाणी, शक्ति, शौर्यकार्य की विनाशिका

है। देह की स्थिति का कारण है एवं समस्त सिद्धियों को देने वाला है।।१०।।

नवमपात्रवन्दनम्

सर्वानन्दकरं सदाशिवपदं सर्वार्थसम्पत्प्रदं
साम्राज्यार्थकरं समस्तसुखदं चाज्ञानविध्वंसनम्।
आयु:कान्तियशोविवर्धनकरं संसारमोहच्छिदं
पात्रं लक्षगुणात्मकं च नवमं प्रौढप्रतापं भजे ॥११॥

नवम पात्र-वन्दना—नवम पात्र लक्ष गुणात्मक, प्रौढ़ प्रतापकारक है। इसकी वन्दना करता हूँ। यह सभी आनन्दों का दाता, सदाशिव का पद देने वाल, सर्वार्थ-प्रदायक, सम्पत्तिप्रदायक, साम्राज्य के वैभव से युक्त करने वाला, सभी सुखों को देने वाला, अज्ञान का विनाशक, आयु-कान्ति-यश का वर्द्धक एवं संसार के मोह का उच्छेदन करने वाला है। ऐसे पात्र की मैं वन्दना करता हूँ।।११।।

दशमपात्रवन्दनम्

ब्रह्मविष्णुमहेशानां देवानां च विशेषत:।
दुर्लभं पावनं पात्रं दशमं प्रणमाम्यहम् ॥१२॥

दशम पात्र-वन्दना—दशम पात्र की मैं वन्दना करता हूँ, जो ब्रह्मा, विष्णु, महेश और देवताओं को विशेषकर दुर्लभ है। इस पावन दशम पात्र को मैं नमस्कार करता हूँ।।१२।।

एकादशपात्रवन्दनम्

पापघ्नं शान्तिशुभदं दिव्यं स्वादु सुखालयम्।
पात्रमेकादशं वन्दे गुरुसेवासुखागतम् ॥१३॥

एकादश पात्र-वन्दना—गुरुसेवा-सुखागत एकादश पात्र की मैं वन्दना करता हूँ, जो पापों का विनाशक, शान्ति-शुभदायक, दिव्य, स्वादु और सुख का आलयस्वरूप है।।१३।।

पात्रधारणफलम्

पात्रं कृत्वा करे मन्त्री सर्वकर्म लभेत् सुखी।
इह लोके श्रियं भुक्त्वा देहान्ते भैरवो भवेत् ॥१४॥

साधक हाथ में पात्र लेकर सभी कार्यों में सफल होकर सुखी होता है। इस संसार में श्री प्राप्त करके भोग भोगकर देहान्त के बाद भैरव होता है।।१४।।

कौलिकवीरत्वभावकथनम्

देहस्थाखिलदेवता गजमुखाः क्षेत्राधिपा भैरवाः
योगिन्यो वटुकाश्च यक्षपितरः पैशाचिकाश्चेटकाः।
अन्ये भूचरखेचराः प्रतिपगा वेतालभूतग्रहा-
स्तृप्ताः स्युः कुलपुत्रकस्य पिबतः पानं सदीपं चरुम् ॥१५॥

कौलिक वीरत्व भाव—कौलिक वीर के शरीर में सभी देवों, गणेशों, क्षेत्रपालों, भैरवों, योगिनियों, वटुक, यक्ष, पितर, पिशाच, चेटकादि अन्य भूतलगामी, आकाशचारी, प्रतिपग, वेताल, भूत, ग्रह का वास होता है। उसे पीने से सबों की वृद्धि होती है। दीपक के साथ चरु के पान से यह तृप्ति मिलती है।।१५।।

करे माला मुखे हाला वामे रामा सुकोमला।
हृदये त्रिपुरा बाला यागशाला गृहे गृहे ॥१६॥
पात्रं भैरवपात्रं गोत्रं श्रीनाथपादुकागोत्रम्।
शास्त्रं संविच्छास्त्रं ज्ञानं तत्त्वावबोधकं ज्ञानम् ॥१७॥
वामे रामा रमणकुशला दक्षिणे चालिपात्र-
मग्रे मुद्राश्चणकवटकौ सूकरस्योष्णशुद्धिः।
स्कन्धे वीणा सरसमधुरा सद्गुरोः सत्कथा च
कौलो मार्गः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ॥१८॥

हाथ में माला, मुख में मद्य, बाँयें सुन्दर कोमल रमणी, हृदय में त्रिपुरा बाला, घर-घर में यागशाला, पात्र भैरवपात्र, गोत्र श्रीनाथपादुका गोत्र, शास्त्र संवित् शास्त्र, रमणप्रवीणा रमणी, दक्षिण हाथ में मद्यपात्र, आगे चने का बड़ा मुद्रा की गरम- गरम शुद्धि होती है। कंधे पर वीणा, सद्गुरु की सरस मधुर सत्कथा से युक्त कौलिकों का मार्ग परम गहन है। यह योगियों को भी अगम्य है।।१६-१८।।

अलिपिशितपुरन्ध्री भोगपूजापरोऽहं
बहुविधकुलमार्गारम्भसम्भावितोऽहम्।
पशुजनविमुखोऽहं भैरवीमाश्रितोऽहं
गुरुचरणरतोऽहं भैरवोऽहं शिवोऽहम् ॥१९॥
करे पात्रं मुखे स्तोत्रमानन्दो हृदयान्तरे।
भक्तिर्गुरुपदाम्भोजे शरणं किमतः परम् ॥२०॥

कौलिकों का कथन है कि मैं मद्य- मांस-रमणी-भोगपूजापरायण हूँ। मैं बहुविध

कुलमार्ग के आरम्भ से सम्भावित हूँ। पशुजनों से मैं विमुख हूँ। मैं भैरवी का आश्रित हूँ। मैं गुरुचरण का भक्त हूँ। मैं भैरव हूँ। मैं शिव हूँ। मेरे हाथ में पात्र, मुख में स्तोत्र, हृदय में आनन्द, गुरुपदकमलों की भक्ति शरणागति है। इससे श्रेष्ठ और क्या हो सकता है?।।१९-२०।।

एकेन शुष्कवटकेन घटं पिबामि
वापीं पिबामि सहसा लवणार्द्रकेण।
आस्वाद्य मांसमलिरोहितमुण्डखण्डं
गङ्गां पिबामि यमुनां सह सागरेण ।।२१।।
वामे चन्द्रमुखी मुखे च मदिरा पात्रं कराम्भोरुहे
मूर्ध्नि श्रीगुरुचिन्तनं भगवतीध्यानास्पदं मानसम्।
जिह्वायां जपसाधनं परिणति: कौलक्रमाभ्यासने
ये सन्तो नियतं पिबन्ति सुरसं ते भुक्तिमुक्ती गता: ।।२२।।

एक ही सूखे बड़े की शुद्धि के साथ मैं एक घड़ा मद्यपान करता हूँ। नमक और अदरख के साथ वापी को पी जा सकता हूँ। रोहू मछली के मुण्डखण्ड, मांस एवं मद्य का स्वाद लेकर मैं सागर के सहित गङ्गा-यमुना को भी पी सकता हूँ। बाँयें चन्द्रमुखी हो, मुख में मदिरा हो, कर-कमल में पात्र हो, मूर्धा में गुरुचिन्तन हो, मन भगवती-ध्यानास्पद हो, जीभ में जप-साधन हो, कौलक्रम के अभ्यास में परिणति हो। जो सन्त सुन्दर रस का पान नियत मात्रा में करता हो, उसे भोग और मोक्ष दोनों की प्राप्ति होती है।।२१-२२।।

पीत्वा पीत्वा पुन: पीत्वा यावत् पतति भूतले।
पुनरुत्थाय वै पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ।।२३।।
धर्माधर्महविर्दीप्ते स्वात्माग्नौ मनसा स्रुचा।
सुषुम्नावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तीर्जुहोम्यहम् ।।२४।।
प्रकाशाकाशहस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनीस्रुचम् ।
धर्माधर्मकलास्नेहपूर्णां वह्नौ जुहोम्यहम् ।।२५।।
यावन्न चलते दृष्टिर्यावन्न चलते मन:।
तावत् पानं प्रकर्तव्यं पशुपानमत: परम् ।।२६।।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवी रहस्ये पात्रवन्दनविधि-
निरूपणं नाम विंश: पटल:।।२०।।

एक बार पान करे, दो बार पान करे, तब तक पान करे जब तक कि भूतल पर गिर न पड़े और फिर उठकर पान करे, उसे पुनर्जन्म नहीं होता। आत्मा की अग्नि में धर्म-अधर्म की हवि मन की स्रुचा से जो अर्पित करता है और सुषुम्ना मार्ग से नित्य अक्षवृत्ति का हवन करता है, वही कौल है। प्रकाश और आकाश के हाथ का अवलम्बन करके उन्मनी स्रुचा में धर्माधर्म के तैल को भरकर जो हवन करता है, वह कौल है। पशु पान का मत है कि जब तक आँखें चञ्चल न हों जायँ और मन चलायमान न हो जाय तब तक पीना चाहिये।।२३-२६।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में पात्रवन्दन-विधि निरूपण नामक विंशं पटल पूर्ण हुआ।

●

अथैकविंशः पटलः

शान्तिस्तोत्र-वीरवन्दनस्तोत्रम्

श्रीभैरव उवाच

देवि वक्ष्यामि पूजान्ते शान्तिस्तोत्रमनुत्तमम्।
वीरा येन परानन्दपदं प्राप्स्यन्ति निःस्पृहाः ।।१।।

शान्तिस्तोत्र—श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! अब मैं पूजा के अन्त में पठनीय उत्तम स्तोत्र को बतलाता हूँ; जिससे वीर साधक परमानन्द पद प्राप्त करके निःस्पृह हो जाते हैं और जिन्हें कोई कामना नहीं रह जाती है।।१।।

अथ शान्तिस्तोत्रम्

योगिनीचक्रमध्यस्थं मातृमण्डलवेष्टितम्।
नमामि शिरसा नाथं भैरवं भैरवीप्रियम्।।२।।
अनादिघोरसंसार-व्याधिध्वंसैकहेतवे ।
नमः श्रीनाथवैद्याय कुलौषधप्रदायिने।।३।।
आपदो दुरितं रोगाः समयाचारलङ्घनात्।
ते सर्वेऽत्र व्यपोहन्तु दिव्यचक्रस्य मेलनात्।।४।।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं कीर्तिर्लाभः सुखं जयः।
कान्तिर्मनोरथश्चास्तु पान्तु सर्वाश्च देवताः।।५।।
सम्पूजकानां प्रतिपालकानां
यतीन्द्रयोगीन्द्रतपोधनानाम् ।
देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञः
करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः।।६।।

स्तोत्र—मातृमण्डल-वेष्टित योगिनीचक्र के मध्य में स्थित भैरव और भैरवी को मैं शिर नवाकर नमस्कार करता हूँ। अनादि घोर संसार में व्याधिविनाश के लिये कुलौषध-प्रदायी श्रीनाथ वैद्य को प्रणाम करता हूँ। समयाचार के लङ्घन से उत्पन्न आपदा और कठिन रोगों का इस दिव्य चक्र के मेलन से विनाश करता हूँ। सभी देवता आयु-आरोग्य-ऐश्वर्य-कीर्तिलाभ, सुख, जय, कान्ति और सभी मनोरथों की रक्षा करें। सपूजकों, प्रतिपालकों,

यतीन्द्रों, योगीन्द्रों, तपोधनों की, देश को, राष्ट्र को राजकुल को भगवान कुलेश शान्ति प्रदान करें।।२-६।।

नन्दन्तु साधककुलान्वयदर्शका ये
सृष्ट्याद्यनाख्यचतुरुक्तमहान्वया ये।
नन्दन्तु सर्वकुलकौलरताः परे येऽ-
प्यन्ये विशेषपदभेदकशाम्भवा ये ॥७॥
नन्दन्तु सिद्धगुरवः स्वगुरुक्रमौघा
ज्येष्ठानुगाः समयिनो वटुकाः कुमार्यः।
षड्योगिनीप्रवरवीरकुलप्रसूता
नन्दन्तु भूमिपतिगोद्विजसाधुलोकाः ॥८॥
नन्दन्तु नीतिनिपुणा निरवद्यनिष्ठा
निर्मत्सरा निरुपमा निरुपद्रवाश्च।
नित्या निरन्तररता गुरवो निरीहाः
शाक्ताश्च शान्तमनसो हृतशोकशङ्काः ॥९॥

जो साधक कुलान्वय-दर्शक हैं, जो सृष्टि के आदि अनाख्य चतुरुक्त महान्वय हैं, वे आनन्दित हों। सभी कुल-कौलनिरत या इससे परे जो हों या अन्य कोई भी विशेष पदभेदक शाम्भव हों, वे सभी आनन्दित हों। सिद्ध गुरुवृन्द मेरे गुरुक्रम और मुझसे बड़े गुरुभाई, समयाचारी, वटुक, कुमारी आनन्दित हों। प्रवर वीर कुलोत्पन्न षड्योगिनियाँ, भूपति, गो, द्विज, साधु और सभी लोक आनन्दित हों। नीतिनिपुण, निरवद्यनिष्ठ, अद्वेषी, अद्वितीय, उपद्रवरहित नित्य, निरञ्जनरत गुरु, निरीह शाक्त, शान्त मनस्वी सभी शोक और शंका से रहित हों। शंका और शोक से मुक्त आनन्दित हों।।७-९।।

नन्दन्तु योगनिरताः कुलयोगयुक्ता
आचार्यसामयिकसाधकपुत्रकाश्च।
गावो द्विजा युवतयो यतयः कुमार्यो
धर्मे भवन्तु निरता गुरुभक्तियुक्ताः ॥१०॥
नन्दन्तु साधककुला ह्यणिमादिनिष्ठाः
शापाः पतन्तु द्विषतः कुलयोगिनीनाम्।
सा शाम्भवी स्फुरतु कापि ममाप्यवस्था
यस्यां गुरोश्चरणपङ्कजमेव लभ्यम् ॥११॥

योगलग्न, कुलयोगगामी, आचार्य सामयिक, साधकपुत्र, गो, द्विज, युवती, यति,

कुमार, सभी गुरुभक्तियुक्त धर्म में निरत होकर आनन्दित हों। साधक कुल, अणिमादि सिद्धियों में निष्ठावानों के शाप विनष्ट हों। कुलयोगिनियों के द्वेषियों का विनाश हो। सबों में मेरे समान शाम्भवी अवस्था का स्फुरण हो। उन्हें गुरुचरणकमल का लाभ हो।।१०-११।।

याश्चक्रक्रमभूमिकावसतयो नाडीषु याः संस्थिता
याः कायद्रुरोमकूपनिलया याः संस्थितो धातुषु।
उच्छ्वासोर्मिमरुत्तरङ्गनिलया निःश्वासवासाश्च या-
स्ता देव्यो रिपुभक्षणोद्यमपरास्तृप्यन्तु कौलार्चिताः ।।१२।।
या दिव्यक्रमपालिकाः क्षितिगता या देवतास्तोयगा
या नित्यं प्रथितप्रभाः शिखिगता या मातरिश्वाश्रयाः।
या व्योमामृतमण्डलामृतमया याः सर्वदा सर्वगा-
स्ताः सर्वाः कुलमार्गपालनपराः शान्तिं प्रयच्छन्तु मे ।।१३।।

जिनकी नाड़ियों में चक्रक्रमभूमिका का वास हो या जो उसमें संस्थित हो या जिनके शरीरवृक्ष के रोमकूपों में, धातुओं में या जिनके श्वासोच्छ्वासों की तरंगों में देवी का वासस्थान हो, उनके शत्रुओं का भक्षण करके कौलार्चिता परा देवी तृप्त हों।

जो दिव्य क्रमपालिका भूमिगत हों या देवनदी गङ्गा के जल में हों, जो नित्य प्रथित प्रभा शिखीगत हों या अग्नि में हों या जो आकाश अमृतमण्डल के अमृत से अमृतमय हो, जो सदैव सर्व दिग्गामी हों, वे सभी कुलमार्गपालन में तत्पर होकर मुझे शान्ति प्रदान करें।।१२-१३।।

ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि भुवनतले भूतले निस्तले वा
पाताले वा तले वा पवनसलिलयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा।
क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिमांसैः
प्रीत्या देव्यः सदा वः शुभबलिविधिना पान्तु वीरेन्द्रवन्द्याः ।।१४।।

ऊपरी ब्रह्माण्ड तक या दिव्य भुवन तल में या भूतल पर, निष्कल या पाताल में या तल में या पवन में जल में या जहाँ-कहीं स्थित क्षेत्र में, पीठ-उपपीठों में जो साधक धूप-दीप-मांस-शुभ बलि से विधिवत् देवीभक्ति में लग्न हो, उन सबों की रक्षा वीरवन्द्या परा देवी सदैव करे।।१४।।

ब्रह्मा श्रीशेषदुर्गागुहवटुकगणा भैरवाः क्षेत्रपाला
वेतालादित्यरुद्रग्रहवसुमनुसिद्धाप्सरोगुह्यकाद्याः ।

भूता गन्धर्वविद्याधरऋषिपितृयक्षासुराहिप्रभूता
योगीशाश्चारणाः किंपुरुषमुनिसुराश्चक्रगाः पान्तु सर्वे ॥१५॥

ब्रह्मा, श्रीशेष, दुर्गा, कार्तिकेय, वटुकगण, भैरव, क्षेत्रपाल, वेताल, आदित्य, रुद्र-ग्रह, वसुगण, मन्त्र, सिद्ध, अप्सरा, गुह्यकादि, भूत, गन्धर्व, विद्याधर, ऋषि, पितर, यक्ष, असुर, नागजाति, योगीश, चारण, किम्पुरुष, मुनि और देवता सभी चक्रार्चनरत साधकों की रक्षा करें।।१५।।

सत्यं चेद्गुरुवाक्यमेव पितरो देवाश्च चेद्योगिनी-
प्रीतिश्चेत् परदेवता च यदि चेद्वेदाः प्रमाणाश्च चेत्।
शाक्तेयं यदि दर्शनं भवति चेदाज्ञेयमेषा(माशा)स्ति चेत्
सन्त्यत्रापि च कौलिकाश्च यदि चेत् स्यान्मे जयः सर्वदा ॥१६॥

गुरुवाक्य यदि सत्य है, पितर, देवता योगिनी में यदि भक्ति है, अन्य देवताओं के बारे में यदि वेद प्रमाण हैं, शाक्तों का यदि दर्शन है, उनकी आज्ञाओं में यदि अनुशासन है, यदि कौलों में सन्त हों तब मुझे सदैव जय की प्राप्ति हो।।१६।।

तृप्यन्तु मातरः सर्वाः समुद्राः सगणाधिपाः।
योगिन्यः क्षेत्रपालाश्च मम देहे व्यवस्थिताः ॥१७॥
शिवाद्यवनिपर्यन्तं ब्रह्मादिस्तम्बसंयुतम्।
कालाग्न्यादिशिवान्तं च जगद्यज्ञेन तृप्यतु ॥१८॥
पठित्वेदं नमेद् वीरान् वीरवन्दनमाचरेत्।
स्तवेद् वीरान्नमेद् वीरान् मन्त्रसिद्धिः प्रजायते ॥१९॥

इति शान्तिस्तोत्रम्

सभी मातृकायें तृप्त हों, सभी सागर, गणाधिप, योगिनी, क्षेत्रपाल मेरे शरीर में व्यवस्थित हों। शिव से पृथ्वी तक के तत्त्व, ब्रह्मा से लेकर कीट तक, कालाग्नि से शिव तक जो भी हों, सभी तृप्त हों। इस स्तोत्र का पाठ करके वीर साधकों को नमस्कार करे। वीरों की वन्दना करे। इस स्तोत्र से वीरसाधक वीरों को नमन करे तो मन्त्र सिद्ध होते हैं।।१७-१९।।

•

अथ वीरवन्दनस्तोत्रम्

जगत्त्रयाभ्यर्चितशासनेभ्यः परार्थसम्पादनकोविदेभ्यः।
समुद्धृतक्लेशमहोरगेभ्यो नमो नमः साधकनायकेभ्यः ॥२०॥

वीरवन्दन स्तोत्र—उस साधक नायक को बार-बार प्रणाम है, जिसका अर्चन तीनों लोक करता है, जिसके शासन से कोविद परोपकार कार्य को सम्पादित करते हैं। जो महानागों के विषजन्य क्लेश से उद्धार करता है।।२०।।

प्रहीणसर्वास्त्रववासनेभ्यः सर्वार्थतत्त्वोदितसाधनेभ्यः ।
सर्वप्रजाभ्युद्धरणोद्यतेभ्यो नमो नमः साधकनायकेभ्यः ।।२१।।

उस साधकनायक को बार-बार प्रणाम है, जो सर्वार्थ तत्त्वोदित साधना से सभी वासनाओं से रहित है। जो सभी प्रजा के अभ्युदय और उद्धार के लिये सदैव लगा रहता है।।२१।।

निस्तीर्णसंसारमहार्णवेभ्यस्तृष्णालतोन्मूलनतत्परेभ्यः ।
जरारुजामृत्युनिवारकेभ्यो नमो नमः साधकनायकेभ्यः ।।२२।।

उस साधकनायक को बार-बार प्रणाम है, जो दुस्तर संसार महासागर को पार करता है, जो तृष्णालता के उन्मूलन में तत्पर रहता है और जो बुढापा, रोग एवं मृत्यु का निवारण करता है।।२२।।

सद्धर्मरत्नाकरभाजनेभ्यो निर्वाणमार्गोत्तमदेशिकेभ्यः ।
सर्वत्र सम्पूर्णमनोरथेभ्यो नमो नमः साधकनायकेभ्यः ।।२३।।

उस साधकश्रेष्ठ को बार-बार प्रणाम है, जो सद् धर्म का रत्नाकर है, जो निर्वाण के उत्तम मार्ग का देशिक है और जिसके सभी मनोरथ सर्वत्र पूर्ण हैं।।२३।।

लोकानुकम्पाभ्युदितादरेभ्यः कारुण्यमैत्रीपरिभावितेभ्यः ।
सर्वार्थचर्यापरिपूरकेभ्यो नमो नमः साधकनायकेभ्यः ।।२४।।

उस साधकोत्तम को बार-बार प्रणाम है, जो लोकानुकम्पा से अभ्युदितों का आदर करता है। जो कारुण्य मैत्री से परिभावित है। जो सर्वार्थचर्या का परिपूरक है।।२४।।

विध्वस्तनिःशेषकुवासनेभ्यो ज्ञानाग्निना दग्धमलेन्धनेभ्यः ।
प्रज्ञाप्रतिज्ञापरिपूरकेभ्यो नमो नमः साधकनायकेभ्यः ।।२५।।

उस साधकनायक को बार-बार प्रणाम है, जिसकी सभी बुरी वासनाओं का विनाश हो गया है, जिसके ज्ञान की अग्नि में सभी मलिनतारूपी ईन्धन भस्म हो गये हैं, जो अपनी प्रज्ञा प्रतिज्ञा को पूर्ण कर चुका है।।२५।।

सर्वार्थिताशापरिपूरकेभ्यो वैनेयपद्माकरबोधकेभ्यः ।
विस्तीर्णसर्वार्थगुणाकरेभ्यो नमो नमः साधकनायकेभ्यः ।।२६।।

उस साधकनायक को बार-बार प्रणाम है, जिसने अपनी सभी इच्छित आशाओं को पूरा कर लिया है, जो सभी पद्माकरों का बोध कराने वाला है। जो सभी गुणों का विस्तृत सागर है।।२६।।

अनन्तकर्मार्जितशासनेभ्यो ब्रह्मेन्द्ररुद्रादिनमस्कृतेभ्यः ।
परस्परानुग्रहकारकेभ्यो नमो नमः साधकनायकेभ्यः ॥२७॥

उस साधकनायक को बार-बार प्रणाम है, जो अनन्त कर्मों से अर्जित शासन से युक्त है, जिसे ब्रह्मा, इन्द्रादि नमस्कार करते हैं, जो परम्परागत अनुग्रह करने वाला है।।२७।।

विभग्नभूतादिमहाभयेभ्यो मपञ्चकाचारपरायणेभ्यः ।
समस्तसौभाग्यकलाकरेभ्यो नमो नमः कारणनायकेभ्यः ॥२८॥

जो महाभूतादि से निर्भय है, जो पञ्च मकार का आचारपरायण है, जो सभी सौभाग्यकलाओं का सागर है, उस साधकनायक को बार-बार प्रणाम है।।२८।।

विभक्तदुष्कर्मजवासनेभ्यः समन्ततो जुष्टमहायशोभ्यः ।
लभ्यामलज्ञानकृतास्पदेभ्यो नमो नमः शाम्भविशाम्भवेभ्यः ॥२९॥

जो दुष्कर्मजनित वासनाओं से पृथक् है, जो सभी महायशों की प्राप्ति से प्रसन्न है, जो विमल ज्ञानलाभ से कृतास्पद है, उस शाम्भव और शाम्भवी को मेरा बार-बार प्रणाम है।।२९।।

सर्वागमाम्भोधिमहाप्लवेभ्यः श्रीचक्रपूजार्थपरायणेभ्यः ।
श्रीवीरचर्याचरणक्षमेभ्यो नमो नमः शाम्भविशाम्भवेभ्यः ॥३०॥

जिसने सभी आगमों के महासागर में गोता लगा लिया है, जो श्रीचक्र की पूजा में सदा संलग्न है, जो श्री वीराचार में सक्षम है, ऐसे शाम्भव-शाम्भवी को बार-बार नमन है।।३०।।

श्रीमन्त्रकोटिद्युतिभूषणेभ्यो द्वाविंशदुल्लासदशातिगेभ्यः ।
अद्वैततत्त्वामृतभाजनेभ्यो नमो नमः शाम्भविशाम्भवेभ्यः ॥३१॥

कोटि श्रीमन्त्रों की ज्योति जिसका भूषण है, जो बाईस उल्लास की अवस्था पार कर चुका है, जो अद्वैत अमृत तत्त्व का भाजन है, ऐसे शाम्भव-शाम्भवी को बार-बार प्रणाम है।।३१।।

षट्त्रिंशतालक्षणभूषितेभ्यः प्रोत्फुल्लपद्माकरलोचनेभ्यः ।
प्रतप्तचामीकरविग्रहेभ्यो नमो नमः शाम्भविशाम्भवेभ्यः ॥३२॥

जो छत्तीस लक्षणों से विभूषित हैं, जिनके नेत्र विकसित कमल के समान हैं, जिनके विग्रह तप्त स्वर्ण के समान हैं, ऐसे शाम्भव-शाम्भवी को बार-बार प्रणाम है।।३२।।

सम्बोधसम्भारसुसंस्थितेभ्यः संसारनिर्वाणनिदर्शनेभ्यः ।
महाकृपावेष्टितमानसेभ्यो नमो नमः शाम्भविशाम्भवेभ्यः ।।३३।।

जो सम्बोध संभार में सम्यक् रूप से स्थित है, जो संसार से निर्वाण का निदर्शक है, जिसका मानस महाकृपा से वेष्टित है, ऐसे शाम्भवी और शाम्भव को बार-बार प्रणाम है।।३३।।

परैक्यविज्ञानरसाकुलेभ्यो वामाश्रिताचारभयानकेभ्यः ।
स्वातन्त्र्यविध्वस्तजगत्तमोभ्यो नमो नमः शाम्भविशाम्भवेभ्यः ।।३४।।

जो पर ऐक्य ज्ञान रसाकुल है, जो भयानक वामाचार पर आश्रित है, जो जगत् के अन्धकार का विनाश करने में स्वतन्त्र है, ऐसे शाम्भवी-शाम्भव को बार-बार प्रणाम है।।३४।।

श्मशानचर्याप्तमहाफलेभ्यो मोहान्धकारापहृतिक्षमेभ्यः ।
परस्पराज्ञापरिपालकेभ्यो नमो नमः शाम्भविशाम्भवेभ्यः ।।३५।।

जो श्मशानचर्या और उसके फल में निष्णात है, जो मोहरूपी अन्धकार का विनाश करने में सक्षम है, जो परस्पर आज्ञा का पालनकर्ता है, ऐसे शाम्भवी-शाम्भव को बार-बार प्रणाम है।।३५।।

विधूतकेशालिकपालकेभ्यः सुरासवारक्तविलोचनेभ्यः ।
नवीनकान्तारततत्परेभ्यो नमो नमः शाम्भविशाम्भवेभ्यः ।।३६।।

जिसके कपाल केशरहित हैं, शराब और नरकपाल जिसके हाथों में है, जिसकी आँखें सुरा और आसवपान से लाल हैं, जो तरुण रमणी के साथ रति में तत्पर हैं, ऐसे शाम्भवी और शाम्भव को बार-बार प्रणाम है।।३६।।

विभूतिलिप्ताङ्गदिगम्बरेभ्यश्चिताग्निधूमालिभयानकेभ्यः ।
कपालसान्द्रामृतपानकेभ्यो नमो नमो भैरविभैरवेभ्यः ।।३७।।

जिसका भस्मालेपित शरीर नग्न हो, भयानक चिता की अग्नि और धूम में भी मद्यपानरत हो, जो कपालपात्र में मद्यपान करता हो, ऐसे भैरवी-भैरव को बार-बार प्रणाम है।।३७।।

सिद्ध्यष्टकाधानमहामुनिभ्यः श्रीभैरवाचारकृतादरेभ्यः ।
स्वाधीनतान्यक्कृतनिर्जरेभ्यो नमो नमो भैरविभैरवेभ्यः ।।३८।।

जो आठों सिद्धियों को देने में सक्षम महामुनि है, जो भैरवाचार-कृतास्पद है, जो अन्य कर्मों से स्वतन्त्र है, ऐसे भैरवी-भैरव को बार-बार प्रणाम है।।३८।।

प्रशान्तशास्त्रार्थविचारकेभ्यो निवृत्तनानारसकाव्यकेभ्यः ।
निरस्तनिःशेषविकल्पनेभ्यो नमो नमो भैरविभैरवेभ्यः ॥३९॥

जो प्रशान्त शास्त्रविचारक है, जो काव्य के नाना रसों से घिरा है, जो सभी विकल्पों से पृथक् है, ऐसे भैरवी-भैरव को बार-बार प्रणाम है।।३९।।

स्वात्मैक्यभावान्तरिताशयेभ्यः सायुज्यसाम्राज्यसुखाकरेभ्यः ।
श्रीसच्चिदानन्दितविग्रहेभ्यो नमो नमो भैरविभैरवेभ्यः ॥४०॥

स्वात्मैक्य भाव से अन्तरित आशययुक्त है, जो सायुज्य साम्राज्य सुख का सागर है, जिसका विग्रह सच्चिदानन्द से आनन्दित है, ऐसे भैरवी-भैरव को बार-बार नमस्कार है।।४०।।

पराप्रसादास्पदमानसेभ्यो ब्रह्माद्वयज्ञानरसाकुलेभ्यः ।
शिवोऽहमित्याश्रितचेतनेभ्यो नमो नमो भैरविभैरवेभ्यः ॥४१॥

जो परा प्रसाद मन्त्रास्पद मानस वाला है, जो अद्वैत ब्रह्मज्ञान रस से आकुल है, जिसकी चेतना 'शिवोऽहं' में आश्रित है, ऐसे भैरवी-भैरव को बार-बार प्रणाम है।।४१।।

सर्वथा सर्वदानन्दं सर्वं घटपटादिसत् ।
जगज्जनितविस्तारं ब्रह्मेदमिति वेद्म्यहम् ॥४२॥
अहमेव परो हंसः शिवः परमकारणम् ।
मत्प्राणे स तु मच्चात्मा लीनः समरसीगतः ॥४३॥
सच्चिदानन्दनिलयं परापरमकारणम् ।
शिवाद्वयप्रकाशाढ्यं श्यामलं धाम धीमहि ॥४४॥

सभी नित्यानन्द, सभी घट-पट आदि से युक्त जगत जनित विस्तार ब्रह्म ही है और वह ब्रह्म मैं ही हूँ। मैं ही परम हंस हूँ। परम कारण शिव हूँ। मेरे प्राण और आत्मा समरसता में लीन हैं, परा परम कारण है। सच्चिदानन्द का आलय है। अद्वय शिव प्रकाशपुञ्ज है, बुद्धि श्यामल धाम है।।४२-४४।।

स्तोत्रफलप्रशंसा

अनेन वीरस्तवकीर्तनेन समुद्धृतक्लेशसुवासनोऽहम् ।
संसारकान्तारमहार्णवेऽस्मिन् निमज्जमानं जगदुद्धरेयम् ॥४५॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये शान्तिस्तोत्रवीरवन्दन-
निरूपणं नामैकविंशः पटलः॥२१॥

इस वीरस्तोत्र के पाठ से मैं क्लेशमुक्त होकर सुन्दर वासनाओं से युक्त हो गया हूँ। संसारकान्तार्णव में डूबते हुए लोगों के लिये यह स्तोत्र उनको पार करने वाला नाव है।।४५।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में शान्ति-वीरवन्दनरूपस्तोत्रद्वयनिरूपण नामक एकविंश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ द्वाविंशः पटलः

सुराशोधनविधिः

सुराशुद्धिविधिनिर्णयः

श्रीभैरव उवाच

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि सुराशुद्धिविधिं परम्।
यं विधाय कलौ मन्त्री भविता मुक्तिभाजनम्॥१॥
यैरेव पातकी देवि साधको द्रव्यसङ्करैः।
शुद्धैस्तैरेव पूजायां भवेद्भोगापवर्गभाक्॥२॥
यदा प्रभृति लोकेऽस्मिन् सुरा ख्यातिमुपागता।
तदा सर्वे सुरा देवि ब्रह्मविष्णुहरादयः॥३॥
तत्संसर्गोद्भवानन्दनिर्भरान्तरमानसाः।
असुरा राक्षसा यक्षा गन्धर्वा मानवादयः॥४॥
भजन्ति च सुरां दिव्यां मन्त्रसंस्कारमन्त्रिताम्।
कालेन कलशस्थाभूत् सुरादेवी सुरेश्वरि॥५॥
कलिना कालरूपेण बाधिते जगति प्रिये।
शप्ता शुक्रेण देवेशि कचकारणहत्यया॥६॥

सुराशुद्धि-निर्णय—श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! सुनो, अब मैं सुराशुद्धि की श्रेष्ठ विधि को बतलाता हूँ। इस विधि से सुरा की शुद्धि करके कलिकाल में साधक मोक्ष का भागी होता है। हे देवि! द्रव्य में मिलावट करने से साधक पातकी होता है। शुद्ध सुरा से अर्चन करने पर वह भोग और पुरुषार्थचतुष्टय का भागी होता है। जैसे इस लोक में सुरा की बड़ाई होती है, वैसे ही इस सुरा की ख्याति देवियों और ब्रह्मा, विष्णु, महेशादि देवताओं में भी है। सुरा के संसर्ग से जो आनन्द मिलता है, वह अन्तर मन का विषय है। असुर, राक्षस, यक्ष, गन्धर्व और मनुष्यादि इस सुरा का सदा स्मरण करते हैं। यह मन्त्रसंस्कार से मन्त्रित होने पर दिव्य हो जाती है। हे सुरेश्वरि! कालवश यह सुरा कलशस्थ हो गई। कालरूप धारण कर कलि इस सुरा से संसार में बाधा उत्पन्न करने लगा। वृहस्पतिपुत्र कच की हत्या के कारण शुक्र ने इसे शाप दे दिया॥१-६॥

कलिप्रादुर्भावे कलशस्था सुरा शुक्रेण ब्रह्मर्षिभिश्च शप्तेति विवेचनम्

शुक्रशापवशाद् देवा ब्रह्मविष्णुशिवादय: ।
ब्रह्मर्षय: सुरादेव्यै ददु: शापं यथाक्रमम् ।।७।।
ब्रह्महत्या सुरापानं समं ज्ञेयं महेश्वरि ।

कलि के प्रादुर्भाव से कलशस्थ सुरा को शुक्र और ब्रह्मर्षियों का शाप—शुक्रशाप के फलस्वरूप विवश होकर ब्रह्मा, विष्णु, शिवादि देवता और ब्रह्मर्षियों ने भी यथाक्रम से सुरा देवी को शाप दे दिया। हे महेश्वरि! सुरापान को ब्रह्महत्या के समान माना गया है।।७।।

सुरा शप्तेति श्रुत्वा मुदिता दैत्या: निर्बलान् देवान् स्वर्गान्निराकुर्वन्निति विवेचनम्

सुरा शप्ता यदा देवैस्तदा दैत्या मुदं ययु: ।।८।।
सुरां पीत्वा तु दितिजैर्देवा बलविवर्जिता: ।
स्वर्गान्निराकृता देवि पुरन्दरपुर:सरा: ।।९।।

जब सुरा देवी को शाप मिला तब दैत्यों को अतिशय खुशी हुई। सुरा पीकर बलवान दैत्यों ने बलहीन देवताओं सहित इन्द्र को भी स्वर्ग से निष्कासित कर दिया।।८-९।।

निराकृतैर्देवैर्यज्ञे शिवादीनामावाहनम्

तदा जिष्णुं पुरस्कृत्य देवा यज्ञमतन्वत ।
सदाशिवादयो देवि प्रादुर्भूता मखोत्तमे ।।१०।।
वरं वृणु यथाभीष्टं देवनायक साम्प्रतम् ।
तं तवाशु प्रयच्छामो गच्छामो निलयं स्वकम् ।।११।।

स्वर्ग से निष्कासित देवों द्वारा यज्ञ में शिवादि का आवाहन—तब विष्णु को आगे करके देवताओं ने यज्ञ का अनुष्ठान किया। उस उत्तम यज्ञ में सदाशिव आदि देवों का आगमन हुआ। सदाशिव ने कहा कि हे सुरपति इन्द्र! यथाभीष्ट वर माँगो। तुम्हें वर प्रदान कर मैं अविलम्ब अपने लोक जाना चाहता हूँ।।१०-११।।

शिवादीनां समीपे गुरुं पुरस्कृत्य देवानां निर्बलताकारणं सुराशाप इति निवेदनम्

तदा शक्रोऽब्रवीद् देवि पुरस्कृत्य गुरं शिवे ।
तृणाग्रबिन्दुमात्रेण सुराया: प्राशितेन च ।।१२।।

या तृप्तिर्जायतेऽस्माकं न सामृतघटीशतैः ।
सा शप्ता ब्रह्मणा देवी विष्णुना शङ्करेण च ॥१३॥
तां विना निर्बला जाताः शत्रुभिश्च पराजिताः ।

तब इन्द्र ने वृहस्पति को आगे करके, तृणाग्र से बिन्दुमात्र सुरापान करके सदाशिव से कहा कि एक बून्द सुरा से जो तृप्ति मुझे मिली, वैसी तृप्ति सौ घड़ा अमृतपान से भी नहीं मिलती। यह सुरा ब्रह्मा, विष्णु, महेश से अभिशप्त है। सुरा के बिना देवता निर्बल होकर शत्रु से पराजित हो गये हैं।।१२-१३।।

देवानां शिवस्तुतिक्रिया

तदा सर्वे सुरा देवं शिवमीश्वरमव्ययम् ॥१४॥
तुष्टुवुः परया भक्त्या प्रणिपत्य पुनः पुनः ।
एकाक्षराय रुद्राय अकारायात्मरूपिणे ॥१५॥
उकारायादिदेवाय विद्यादेहाय वै नमः ।
तृतीयाय मकाराय शिवाय परमात्मने ॥१६॥
सूर्याय सोमवर्णाय यजमानाय वै नमः ।
नमस्ते भगवन् रुद्र भास्करामिततेजसे ॥१७॥
नमो भवाय देवाय शर्वाय च कपर्दिने ।
शिवाय क्षितिरूपाय सदासुरभये नमः ॥१८॥
ईशानाय नमस्तुभ्यं संस्पर्शाय नमो नमः ।
पशूनां पतये चैव पावकामिततेजसे ॥१९॥
भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय वै नमः ।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमो नमः ॥२०॥
उग्राय यजमानाय नमस्ते कर्मयोगिने ।
इति स्तुत्वा परं देवं भैरवं शिवमीश्वरम् ॥२१॥

देवों के द्वारा शिव की स्तुति—तदनन्तर समस्त देवताओं ने बड़ी श्रद्धा-भक्ति से बार-बार उस अव्यय ईश्वर शिव जी को प्रणाम करके सन्तुष्ट किया और स्तुति किया। देवताओं ने कहा कि हे शिव जी! आप एकाक्षर 'ॐ' हैं। ॐ का 'अ' आत्मारूप है, उकार आदिदेव है और विद्यारूप है। नमस्कार है। तृतीय अक्षर 'मकार' शिवस्वरूप परमात्मा है। आप सूर्य-चन्द्र और यजमानरूप हैं, आपको नमस्कार है। अगणित सूर्यों के तेज से युक्त भगवन् रुद्र को प्रणाम है। भव, शर्व और कपर्दी देव को नमस्कार है। चितिरूप शिव को, असुरों के संहारक को प्रणाम है। ईशानरूप

आपको नमस्कार है। संस्पर्शरूप आपको नमस्कार है। पशुपति पतिस्वरूप, के अमित तेजरूप अग्नि, व्योमरूप भीम और शब्दमात्ररूप आपको नमस्कार है। महादेव-चन्द्र-अमृतरूप आपको नमस्कार है। उग्र रूपधारी, यजमान, कर्मयोगी आपको नमस्कार है। इस प्रकार देवों ने परमदेव शिव ईश्वर की स्तुति की।।१४-२१।।

आकाशवाणीश्रवणम्

प्रणेमुः सकला देवा ब्रह्मविष्णुहरादयः।
तदा वागुदभूद् व्योम्नः पञ्चव्योमशरीरिणाम् ॥२२॥
सुरेयं सर्वदा सेव्या सकलैस्तु मुमुक्षुभिः।
युक्त्यानया प्रसङ्गेन यथावदनुपूर्वशः ॥२३॥
चतुर्धा वेदरूपोऽहमृग्यजुःसामरूपवान्।
अथर्वाहं च मन्त्रात्मा परमात्मा शिवोऽव्ययः ॥२४॥
वेदानालोड्य वेदार्थं मन्त्ररूपं विधाय च।
कुरुकुल्लां महाविद्यां सदाशिव प्रकाशय ॥२५॥
आगमं नाम शास्त्रं तु चतुष्षष्ट्यात्मकं परम्।
तस्मिन् सुरादिशुद्धिं तु प्रकाशय मनूत्तमैः ॥२६॥
इति वाणी शिवोद्भूता विरराम यदा परा।
सदाशिवं महेशानं तुष्टुवुः प्रणताः सुराः ॥२७॥

आकाशवाणी-श्रवण—ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि सभी देवों ने शिव को प्रणाम किया। पञ्च व्योम शरीरियों के लिये तब आकाशवाणी हुई कि यह सुरा सभी मुमुक्षुओं के द्वारा सेवन करने योग्य है। प्रसङ्गवश पूर्ववत् इससे आप सब संयुक्त होइये।

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद चारों वेदस्वरूप मैं हूँ। मैं मन्त्रों की आत्मा, परमात्मा, अव्यय शिव हूँ। वेदों का आलोड़न करके वेदार्थ मन्त्ररूप का विधान मैंने किया है। कुरुकुल्ला महाविद्या को सदाशिव ने प्रकाशित किया है। श्रेष्ठ चौंसठ आगमशास्त्रों को शिव ने प्रकाशित किया है। उनमें सुराशोधन के उत्तम मन्त्रों को भी आप सब प्रकाशित करें। इस प्रकार कहकर शिवोद्भूत परावाणी का जब विराम हो गया तब महेश सदाशिव को प्रणाम करके देवों ने उनकी पुन: स्तुति की।।२२-२७।।

पुन: सदाशिवस्तुतिः

ॐकाररूपिणे देव नमस्ते विश्वरूपिणे।
नमो देवादिदेवाय महादेवाय वै नमः ॥२८॥

अर्धनारीशरीराय सांख्ययोगप्रवर्तिते ।
वेदशास्त्रार्थगम्याय शाश्वताय नमो नमः ॥२९॥
दीनार्तत्राणकर्त्रे च नमस्ते दिव्यचक्षुषे ।
नमः सहस्रशीर्षाय नमः साहस्रिकाङ्घ्रये ॥३०॥
नमो मन्त्राय चिद्व्योमवासिने परमात्मने ।
इति स्तुत्वा महादेवो महात्मा श्रीसदाशिवः ॥३१॥
प्रोवाचागमशास्त्रं तु मोक्षमार्गं महात्मनाम् ।
देवदेवीति या देवी या भवानीति विश्रुता ॥३२॥
सदाशिवं प्रणम्याशु प्रोवाच श्लक्ष्णया गिरा ।
वद देवागमं शास्त्रं रहस्यं परमाद्भुतम् ॥३३॥
यस्योच्चारणमात्रेण शापहीना भवेत् सुरा ।

देवों द्वारा पुनः शिवस्तुति—हे देव! ॐकाररूप आपको विश्वरूप नमस्कार है। देवादिदेव महादेव को नमस्कार है। अर्द्धनारी शरीर, सांख्य-योगप्रवर्तक, वेदशास्त्र-अर्थगम्य शाश्वत को नमस्कार है। दीन आर्तों के त्राणकर्ता, दिव्य चक्षु को नमस्कार है। मन्त्ररूप आपको नमस्कार है। चिदाकाशवासी परमात्मा को नमस्कार है। देवताओं ने महात्मा महादेव श्री सदाशिव की इस प्रकार स्तुति करने के पश्चात् निवेदन किया कि आपने महात्माओं के मोक्षमार्ग का वर्णन आगमशास्त्र के रूप में किया, जिसे देवियों की देवी भवानी ने श्रवण किया। आपका वर्णन श्लिष्ट भाषा में हुआ। अब आप देवागम शास्त्र के परम अद्भुत रहस्य का वर्णन स्पष्ट करके करें, जिसके उच्चारणमात्र से सुरा शाप से मुक्त हो जाये।।२८-३३।।

महादेवस्य सुराशोधनप्रकारकथनम्

श्रीशिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि सुराशुद्धिं यथाक्रमम् ।
मकराणां च सर्वेषां शोधनं सिद्धिवर्धनम् ॥३४॥
वेदो निष्कलशब्दो वै वेदार्थोऽस्त्यागमः शिवे ।
वेदार्थागमतत्त्वज्ञैः सुरा सेव्या मुमुक्षुभिः ॥३५॥
न वेदागमयोर्भेदः सर्वथेति विनिश्चयः ।
शास्त्राणां परमेशानि भ्रान्तिः कार्या न कौलिकैः ॥३६॥

शिव का सुराशोधनप्रकार-कथन—श्री शिव ने कहा कि हे देवि! सुनो, अब मैं यथाक्रम सुराशुद्धि और सभी मकारों के शोधन को बतलाता हूँ, जो सिद्धिवर्धक है।

हे शिवे! वेद निष्कल शब्द है। वेदार्थ आगम है। वेदार्थ आगम तत्त्व के ज्ञाता मुमुक्षु सुरा का सेवन करते हैं। यह सर्वथा निश्चित है कि वेद और आगम में भेद नहीं है। हे परमेशानि! कौलिक शास्त्रों में भेद नहीं करते। उन्हें भ्रान्ति नहीं होती है।।३४-३६।।

मण्डलनिर्माणं, तत्र कलार्चा तन्नाममन्त्राश्च

अधुना शृणु देवेशि सुराशोधनमुत्तमम्।
येन शोधनमात्रेण सर्वसिद्धिः प्रजायते ।।३७।।
मण्डलं वामतः कृत्वा जलेन रजसापि वा।
कुङ्कुमेनाष्टगन्धेन सर्वथा वीरभस्मना ।।३८।।
त्रिकोणं बिन्दुसंयुक्तं वृत्तं च चतुरस्रकम्।
सामान्यार्घ्योदकेनाशु सम्प्रोक्ष्य कुलसुन्दरि ।।३९।।
तत्राधारं च संस्थाप्य वह्निमण्डलमर्चयेत्।
वह्नेः कलाः समभ्यर्च्य यथावद्वर्ण्यते मया ।।४०।।
रकारं बिन्दुसंयुक्तं वह्निबिम्बं च ङेऽन्तिकम्।
दशकलात्मने विश्वमिति मन्त्रेण पूजयेत् ।।४१।।
धूम्रा च नीलवर्णा च कपिला विस्फुलिङ्गिनी।
ज्वाला हैमवती कव्यवाहनी हव्यवाहनी ।।४२।।
रौद्री सङ्कर्षणी चैव वैश्वानरकला दश।
पूजयित्वोक्तविधिना गन्धाक्षतप्रसूनकैः ।।४३।।
कलशं संस्थुलं दिव्यं पुष्पमालादिशोभितम्।
हैमं वा राजतं मार्दं स्थापयेद् वीरमुद्रया ।।४४।।
शम्भुना च यथा देवि विष्णुना च यथा पुरा।
ब्रह्मणा च यथा पूर्वं तथा त्वां स्थापयाम्यहम् ।।४५।।

सुराशोधनमण्डल-निर्माण—हे देवेशि! अब मैं सुराशोधन की उत्तम विधि कहता हूँ। जिस प्रकार के शोधनमात्र से ही सभी सिद्धियाँ मिलती हैं। अपने बाँयें भाग में जल से, वीर्य से, कुङ्कुम से, अष्टगन्ध से या वीरभस्म से मण्डल बनावे। मण्डल में बिन्दु, त्रिकोण, वृत्त और चतुरस्र अङ्कित करे—
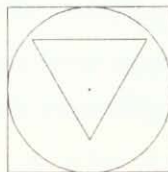
इस कुलसुन्दरी का प्रोक्षण सामान्य अर्घ्य जल से करे। इस मण्डल पर आधार स्थापित करे। उस पर वह्निमण्डल का अर्चन करे। उसमें आगे वर्णित विधि से वह्निकलाओं का पूजन करे। पूजन मन्त्र है—रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः। अग्नि की दश कलाओं का पूजन इस प्रकार करे—

१. यं धूम्रार्चिष्कलायै नमः।
२. रं नीलवर्णाकलायै नमः।
३. लं कपिला विस्फुलिङ्गिनीकलायै नमः।
४. वं ज्वालाकलायै नमः।
५. शं हैमवतीकलायै नमः।
६. षं कव्यवाहिनीकलायै नमः।
७. सं हव्य वाहिनीकलायै नमः।
८. हं रौद्रीकलायै नमः।
९. लं सङ्कर्षिणीकलायै नमः।
१०. क्षं वैश्वानरकलायै नमः।

उक्त विधि से इनका पूजन गन्धाक्षत-पुष्प से करे। दिव्य पुष्पमालादि से सजाकर सोना, चाँदी या मिट्टी के बड़े कलश को वीरमुद्रा से स्थापित करे। पूर्व काल में शिव के द्वारा, विष्णु के द्वारा और ब्रह्मा के द्वारा जैसे तुम स्थापित हुए हो, वैसे ही अब मैं तुम्हें स्थापित करता हूँ।।३७-४५।।

सूर्यपूजनम्

इति संस्थाप्य कलशं तत्र सूर्यं प्रपूजयेत्।
सूर्यनाम समुच्चार्य जीवमन्त्रं महेश्वरि ॥४६॥
सूर्यमण्डलङेन्तं च श्रीद्वादशकलात्मने।
विश्वमन्ते प्रयोक्तव्यं मनुनानेन पूजयेत् ॥४७॥
कला द्वादश सूर्यस्य पूजयेदुच्यते मया।
तपिनी तापिनी चैव बोधिनी चैव रोधिनी ॥४८॥
कलिनी शोषणी चैव वरेण्याकर्षणी तथा।
माया विश्वावती हेमप्रभा सौरकला इमाः ॥४९॥

सूर्यमण्डल का पूजन—इस प्रकार कलश स्थापित करके कलश के ऊपर सूर्य का पूजन करे। पूजन मन्त्र है—ह्रीं सूर्यमण्डलाय श्रीद्वादशकलात्मने नमः।

इसके बाद निम्नलिखित प्रकार से सूर्य के बारह कलाओं की पूजा करे—

१. ह्रीं तपिनीकलायै नमः।
२. ह्रीं तापिनीकलायै नमः।
३. ह्रीं बोधिनीकलायै नमः।
४. ह्रीं रोधिनीकलायै नमः।
५. ह्रीं कलिनीकलायै नमः।
६. ह्रीं शोषिणीकलायै नमः।
७. ह्रीं वरेण्याकलायै नमः।
८. ह्रीं आकर्षिणीकलायै नमः।
९. ह्रीं मायाकलायै नमः।
१०. ह्रीं विश्वावतीकलायै नमः।
११. ह्रीं हेमाकलायै नमः।
१२. ह्रीं प्रभाकलायै नमः।

चन्द्रकलापूजनम्

सम्पूज्य कलशे देवि कौलिकः कुलसिद्धये।
सुरया पूरयेत् कुम्भं विलोमैर्मातृकाक्षरैः ॥५०॥
तदिदं चामृतं साक्षाच्चन्द्ररूपं विचिन्तयेत्।
चन्द्रमण्डलमभ्यर्च्य मन्त्रेणानेन पार्वति ॥५१॥
शक्तिमुच्चार्य देवेशि सोममण्डलङेयुतम्।
विश्वाञ्चलाय देवेशि श्रीषोडशकलात्मने ॥५२॥
इति सम्पूज्य चन्द्रस्य कलाः षोडश पूजयेत्।
अमृता मानदा तुष्टिः पुष्टिः प्रीती रतिस्तथा ॥५३॥
श्रीश्च ह्रीश्च स्वधा रात्रिर्ज्योत्स्ना हैमवती तथा।
छाया च पूर्णिमा नित्या चामावस्या च षोडशी ॥५४॥

चन्द्रकला-पूजन—कलश की पूजा के बाद कुलसिद्धि के लिये कौलिक विलोम मातृका का उच्चारण करते हुए कलश को सुरा से पूर्ण करें। विलोक मातृका क्षं ळं हं सं.....आं अं कुल इक्यावन होती है। कलशस्थ सुरा को साक्षात् चन्द्र मान कर इस मन्त्र से चन्द्रमण्डल का अर्चन करे। अर्चन मन्त्र है—सौः सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः। इस पूजा के बाद निम्नांकित रूप में षोड़श चन्द्रकलाओं का पूजन करे—

१. अं अमृता कलायै नमः।
२. आं मानदा कलायै नमः।
३. इं तुष्टि कलायै नमः।
४. ईं पुष्टि कलायै नमः।
५. उं प्रीति कलायै नमः।
६. ऊं रति कलायै नमः।
७. ऋं श्रीं कलायै नमः।
८. ॠं ह्रीं कलायै नमः।
९. ऌं स्वधा कलायै नमः।
१०. ॡं रात्रि कलायै नमः।
११. ऐं ज्योत्स्ना कलायै नमः।
१२. ऐं हैम वती कलायै नमः।
१३. ओं छाया कलायै नमः।
१४. औं पूर्णिमा कलायै नमः।
१५. अं नित्या कलायै नमः।
१६. अः अमावस्या कलायै नमः।

कलशे भैरवीपूजनम्

एताः सम्पूज्य मन्त्रैस्तु यजेद् देवीं च भैरवीम्।
मूलेन तत्र कलशे त्रिकोणं च विभावयेत् ॥५५॥
बिन्दुबिम्बे परां ध्यात्वा पूजयेदिष्टदेवताम्।
प्रणवेनार्चयेद् देवि शिवं गन्धेन वायुना ॥५६॥
तत्र तारं च मायां च परमस्वामिन्युद्धरेत्।
परमाकाशशून्यं च वाहिनीति समुद्धरेत् ॥५७॥
चन्द्रार्काग्निभक्षणीति पात्रे विशयुगं वदेत्।
ठद्वयान्तामिमां विद्यां जपेत्तु दशधा घटे ॥५८॥
तत्रैव मातृकान्ते च जपेदृचमिमां प्रिये।
आकृष्णेन रजसेति नाति परमपावनीम् ॥५९॥
दशधैतामृचं देवि मधुवातऋताभिधाम्।
तत्रानन्देशगायत्रीं जपेत्तु दशधा प्रिये ॥६०॥
वाङ्मायामाः समुच्चार्य तथानन्देश्वराय च।
विद्महे श्रीसुरादेव्यै धीमहीति ततो वदेत् ॥६१॥
तन्नोऽर्धनारीश्वरश्च प्रचोदयात् समुद्धरेत्।
गायत्रीं दशधा जप्त्वा हंसः शुचिषदार्चयेत् ॥६२॥
अग्निमीळे पुरोहितं त्रिःसञ्जप्येति कौलिकः।
वकारं दीर्घषट्काद्यं प्रोच्चार्य तदनन्तरम् ॥६३॥
ब्रह्मशापमोचितायै सुरादेव्यै कुटान्तकम्।
दशधा प्रजपेद्विद्यामिषे त्वोर्जेत्यृचं जपेत् ॥६४॥

कलश में देवी भैरवी का पूजन—इस पूजन के बाद देवी भैरवी का पूजन मन्त्र से करे। उस कलश में मूल मन्त्र से त्रिकोण की कल्पना करे। त्रिकोण के बीच बिन्दु में परा देवी का ध्यान करके इष्ट देवता का पूजन करे। प्रणव से देवी का अर्चन करे और वायु से गन्ध के द्वारा शिव का अर्चन करे। देवीप्रणव 'ह्रीं' है और वायु 'खं' है। कलश में इस मन्त्र का जप दश बार करे—ॐ ह्रीं परमस्वामिनि परमाकाशशून्यवाहिनि चन्द्रार्क-अग्निभक्षिणि पात्रे विश विश स्वाहा।

इसके बाद वहीं पर मातृकाओं के बाद 'आकृष्णेन रजसा' नाम की परम पावनी ऋचा का जप करे। पूरी ऋचा यह है—

आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं सत्यञ्च।
हिरण्मयेन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

इसके बाद 'मधुवातऋता' नाम की ऋचा का पाठ दश बार करे यह ऋचा है—

माधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीर्मधु नक्तमुतोषसो।
मधुमत् पार्थिवं रजः मधु द्यौरस्तु नः पिता।
मधुमानन्नो वनस्पतिर्मधु मां अस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः मधु मधु मधु।।

इसके बाद आनन्देश गायत्री का जप दश बार करे—ऐं ह्रीं श्रीं आनन्देश्वराय विद्महे सुरादेव्यै धीमहि तन्नो अर्द्धनारीश्वर प्रचोदयात्। इसके बाद 'हंसः शुचिषदा' का जप करे। पूरी ऋचा यह है—

ॐ हंसः शुचिषत् वसुरन्तरिक्ष सद्धोता वेदीषद तिथिर्दुरोणसत्।
नृषद्वर सदृतः सद् व्योम सदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं वृहत्।।

इसके बाद कौलिक 'अग्निमीळे पुरोहितं' नाम की ऋचा का तीन बार जप करे।

ब्रह्मशापविमोचन मन्त्र—ॐ वां वीं वूं वैं वौं वः ब्रह्मशापविमोचितायै सुरादेव्यै नमः। इसका जप दश बार करे। तब 'त्वोर्जे' नाम की ऋचा का जप करे।।५५-६४।।

तारं मायार्णषड्दीर्घान् प्रोच्चार्येति सुधे ततः।
शुक्रशापं मोचय द्विर्वनान्तं च मनुं जपेत्।।६५।।
अग्न आयाहीति ऋचं दशधा प्रजपेत् प्रिये।
शुक्रशापहरीं विद्यां प्रजपेदुच्यते यथा।।६६।।
सूर्यमण्डलसम्भूते वरुणालयसम्भवे।
अमाबीजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम्।।६७।।
देवानां(वेदानां)प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि।
तेन सत्येन देवेशि ब्रह्महत्यां व्यापोहतु।।६८।।
एकमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं परम्।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम्।।६९।।
ब्रह्मशापविनिर्मुक्ता त्वं मुक्ता विष्णुशापतः।
विमुक्ता रुद्रशापेन पवित्रा भव साम्प्रतम्।।७०।।
एतैर्मन्त्रैः समभ्यर्च्य त्रिवारं कौलिकः शिवे।
शन्नो देवीरिति ऋचं दशधा प्रजपेद् घटे।।७१।।

शुक्रशाप-विमोचन मन्त्र—ॐ हां ह्रीं हूं हैं हौं हः सुधे शुक्रशापं मोचय मोचय नमः।

इस मन्त्र के जप के बाद 'अग्न आयाहि' ऋचा का जप दश बार करे। शुक्र- शापहरी विद्या इस प्रकार की भी है। इसका जप करे। श्लोक ६७-७० शापहरी मन्त्र है, जिसका आशय इस प्रकार है—

सूर्यमण्डल से उत्पन्न वरुणालय-सम्भूत अमा बीजमयी देवी शुक्रशाप से विमुक्त हो। वेदों का बीज ॐ यदि ब्रह्मानन्दमय है तो उस सत्य के प्रभाव से हे देवेशि! आप ब्रह्महत्या के शाप से विमुक्त होइये। श्रेष्ठ स्थूल-सूक्ष्ममय परं ब्रह्म यदि एक ही है तो कच के वध से उत्पन्न ब्रह्महत्या का मैं विनाश करता हूँ। हे सुरादेवि! तुम अब ब्रह्मशाप से विमुक्त हो गयी। विष्णुशाप से भी विमुक्त हो जाओ। रुद्रशाप से भी मुक्त होकर इस समय तुम पवित्र हो जाओ।

हे शिवे! कौलिक इस मन्त्र से तीन बार अर्चन करके शन्नोदेवी नामक ऋचा का दश बार जप करे। पूरी ऋचा इस प्रकार की है—

ॐ शन्नो देवीरभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शन्नोरभिस्रवन्तु नः।।६५-७१।।

छुरिकाविद्याप्रतिपादनम्

ततो मायां रमां देवि पङ्क्तुं षड्दीर्घभाजितम्।
छुरिकाकारिण्युच्चार्य शोभिनीति ततो वदेत्।।७२।।
विकारानस्य द्रव्यस्य हर-युग्मं च ठद्वयम्।
छुरिकाख्यां जपेद्विद्यां दशधा कलशोपरि।।७३।।
यो विश्वचक्षुरिति च ऋचं वै दशधा जपेत्।
गुरुं ध्यात्वा सहस्रारे हृत्पद्मेऽपीष्टदेवताम्।।७४।।

छुरिका विद्या—ह्रीं श्रीं छां छीं छूं छैं छौं छः छुरिके भव शोभिनि विकारान् अस्य द्रव्यस्य हर हर स्वाहा। इस मन्त्र का जप दश बार कलश के ऊपर करे। 'यो विश्वचक्षुः' नाम की ऋचा का जप दश बार करे। सहस्रार में गुरु का और हृदयकमल में इष्टदेवता का ध्यान करे, प्रणाम करे।।७२-७४।।

तिरस्करिणीध्यानं तिरस्करिणीविद्या च

प्रणम्य कौलिको ध्यायेत् श्रीतिरस्करणीं जपेत्।
नीलतोयदसङ्काशां नीलकुन्तलशोभिताम्।।७५।।
नीलाम्बरधरां देवीं नीलोत्पलविलोचनाम्।
नीलपुष्पविभूषाढ्यां नीलालङ्कारभूषिताम्।।७६।।
नीलाङ्गरागसञ्छनां नीलवैडूर्यमालिनीम्।

इन्द्रनीलनिबद्धांशुमहार्घमणिभूषिताम् ॥७७॥
नीलवाजिसमारूढां नीलखड्गायुधां पराम्।
निद्रापटेन नीलेन भुवनानि चतुर्दश ॥७८॥
मोहयन्तीं महामायां द्रव्यनिन्दकभक्षिणीम्।
वीरपानरतान् वीरान् पालयन्तीं समन्ततः ॥७९॥
सङ्केतमण्डलं दिव्यं छादयन्तीं स्ववाससा।
परमानन्दवपुषीं परमानन्दभैरवीम् ॥८०॥
परमानन्दजननीं प्रणमामि पराम्बिकाम्।
इति ध्यात्वा जपेद्विद्यां यथावद् वर्ण्यते मया ॥८१॥
वाक्काममठमायाश्च तिरस्करणि संवदेत्।
सकलजनं प्रोच्चार्य वाग्वादिनि ततो वदेत् ॥८२॥
सकलपशुजनं च वदेद् व्रातमनःपदम्।
चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणादीनि चेति तिरस्कुरु ॥८३॥
तिरस्कुरु ततः पद्मत्रयं ठद्वयमुद्धरेत्।
श्रीतिरस्करणीं विद्यां सञ्जपेद् दशधा घटे ॥८४॥

तिरस्करणी विद्या और ध्यान—कौलिक देवी तिरस्कारिणी का ध्यान करके तिरस्करणी मन्त्र का जप करे। तिरस्करिणी का ध्यान इस प्रकार है—

तिरस्करणी देवी का वर्ण नीले मेघ के समान है। नील केश से सुशोभित हैं। उनका वस्त्र नीला है, नील कमल के समान उनके नेत्र हैं। नील पुष्पों से विभूषित हैं। नीले अङ्गराग से लिप्त हैं। गले में नीले वैडूर्य की माला है। रेशमी वस्त्र नीलम महार्घमणि से जटित है। वे नीले घोड़े पर सवार हैं। उनके खड्ग आयुध भी नीले रंग के हैं। नीले निद्रापट से चौदहों भुवनों को मोहित करने वाली वे महामाया हैं। कुलद्रव्यों के निन्दक का भक्षण करती हैं। वीरपान में रत वीर साधकों का सम्यक् रूप से पालन करती हैं। अपने वस्त्रों से दिव्य संकेत मण्डल को ढँके रहती हैं। इनका शरीर परमानन्ददायक है। ये परमानन्द भैरवी हैं। ये परम आनन्द की जननी हैं। ऐसी पराम्बिका को मैं प्रणाम करता हूँ।

ऐसा ध्यान करके अग्रलिखित तिरस्करिणी विद्या का जप करे। तिरस्करणी देवी का मन्त्र है—

ऐं ह्रीं श्रीं तिरस्करणि सकलजनवाग्वादिनि सकल पशुजनं व्रातः मनः पदं चक्षु, श्रोत्र, जिह्वा, घ्राणादीनि तिरस्कुरु तिरस्कुरु ठः ठः ठः स्वाहा। कलश पर इस मन्त्र का जप दश बार करे।।७५-८४।।

पावमानी ऋक्कथनम्

पावमान्याः परं ब्रह्म शुद्धं ज्योतिः सनातनम्।
पितृंस्तस्योपतिष्ठति क्षीरं सर्पिर्मधूदकैः ॥८५॥
ऋचमेतां जपेदादौ त्रिवारं त्रिर्जपेत् ततः।

पावमानी ऋचा—श्लोक ८५ पावमानी ऋचा है। प्रारम्भ में इसका जप तीन बार करे। फिर तीन बार जप करे।।८५।।

पावमान्यं परं ब्रह्म पावमान्यः परो रसः ॥८६॥
पावमान्यं परं ज्ञानं तेन त्वां पावयाम्यहम्।
इति जप्त्वा गुरुं ध्यात्वा जपेद् वरुणबीजकम् ॥८७॥

श्लोक ८६ का उत्तरार्ध और ८७ का पूर्वार्द्ध दूसरी पावमानी ऋचा है। इसका जप करके गुरु का ध्यान करके वरुणबीज का जप करे।।८६-८७।।

कुण्डलिनीध्यानानीतेनामृतेनामृतीकरणम्

हंस इत्यर्कमन्त्रं च देवी कुण्डलिनीं स्मरेत्।
प्रसुप्तभुजगाकारां सार्धत्रिवलयां शुभाम् ॥८८॥
सूर्यकोटिकरालाभां चन्द्रकोटिसुशीतलाम्।
वह्निकोटिदुराद(ध)र्षां बिसतन्तुतनीयसीम् ॥८९॥
षट् चक्राणि विभिद्याशु सुषुम्नावर्त्मना नयेत्।
सहस्रारस्थितं देवं नत्वा शिवपदे लयेत् ॥९०॥
शिवशक्त्योर्महज्ज्योतिर्ध्यात्वा चन्द्रकलास्रुतम्।
अमृतं वामनासाग्रान्निःसार्य कलशे क्षिपेत् ॥९१॥
अमृतीकृत्य तद् द्रव्यं धेनुमुद्रां प्रदर्शयेत्।

कुण्डलिनी ध्यान से अमृतीकरण—सूर्यमन्त्र हंस से कुण्डलिनी का स्मरण करे। साढ़े तीन कुण्डलयुक्त यह कुण्डलिनी सुप्त नागिन के समान है। यह करोड़ों अग्नि के समान दुराधर्ष है। प्रकाशयुक्त है। पतले धागे के समान इसका शरीर है। करोड़ों सूर्य के समान इसकी प्रखर किरणें हैं। करोड़ों चन्द्रमा के समान यह शीतल है। इस कुण्डलिनी को मूलाधार चक्र से उठाकर स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्धि और आज्ञाचक्र का भेदन करते हुए सुषुम्ना मार्ग से सहस्रार स्थित शिव को प्रणाम करके शिवपदनख में उसे विलीन कर दे। शिव-शक्ति की महाज्योति का ध्यान करके चन्द्रकला से स्रवित अमृत को वाम नासाग्र से निकाल कर कलश में डाल दे। अमृतकृत उस द्रव्य को धेनुमुद्रा दिखावे।।८८-९१।।

अमृतीकरणमन्त्रकथनम्

मायां रमां कामकलाममृतेऽप्यमृतोद्भवे ॥९२॥
अमृतवर्षिण्युच्चार्य अमृतं स्रावय-द्वयम्।
अंआं विष्णुकलान्ते च पठेत् पार्वति कौलिक: ॥९३॥
विश्रान्तममृतेश्वर्यै मनुमेनं जपेद् घटे।
ध्यात्वामृतमयं द्रव्यं कर्पूरादिसुवासितम् ॥९४॥
एलालवङ्गकस्तूरी-चन्दनोशीरमिश्रितम् ।
विधाय मूलमन्त्रेण तीर्थान्यावाहयेद् घटे ॥९५॥
तारं शिवं शिवोद्भूतिं मूलमेतत् समुद्धरेत्।
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥९६॥
नर्मदे सिन्धुकावेरि द्रव्येऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।
इत्यावाह्य महादेवि मुद्रयाङ्कुशरूपया ॥९७॥
सर्वतीर्थमयं द्रव्यं ध्यायेत् परमपावनम्।
द्रव्यमध्ये बिन्दुयुतं त्रिकोणं च विभावयेत् ॥९८॥
योनिमुद्रां निबन्ध्याशु ध्यायेदानन्दभैरवम्।

अमृतीकरण मन्त्र—अमृतेश्वरी मन्त्र है—ह्रीं श्रीं क्लीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत-वर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय अं आं क्लीं ह्रीं नम:। इस मन्त्र का जप कलश में करे। कलशस्थ द्रव्य को अमृतमय मानकर कर्पूरादि से सुवासित करके इलायची, लवंग, कस्तूरी, चन्दन, खश आदि का मिश्रण करे। मिलाते समय मूल मन्त्र का जप करे। इसके बाद कलश में तीर्थों का आवाहन करे। मन्त्र है—ॐ ह्रां ह्रीं।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि द्रव्येऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

अङ्कुश मुद्रा से उन तीर्थों का आवाहन करके सर्वतीर्थमय द्रव्य को परम पावन समझे। द्रव्य में बिन्दुयुक्त त्रिकोण की कल्पना करके योनिमुद्रा बनाकर आनन्दभैरव का ध्यान करे।।९२-९८।।

आनन्दभैरवध्यानकथनम्

सूर्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम् ॥९९॥
अष्टादशभुजं देवं पञ्चवक्त्रं त्रिलोचनम्।

अमृतार्णवमध्यस्थं ब्रह्मपद्मोपरिस्थितम् ॥१००॥
वृषारूढं नीलकण्ठं सर्वा(र्पा)भरणभूषितम् ।
कपालखट्वाङ्गधरं घण्टाडमरुवादिनम् ॥१०१॥
पाशाङ्कुशधरं देवं गदामुसलधारिणम् ।
खड्गखेटकपट्टीश-मुद्गरोच्छूलकुन्तिनम् ॥१०२॥
विचित्रखेटकं मुण्डवरदाभयपाणिकम् ।
लोहितं देवदेवेशं भावयेत् साधकोत्तमः ॥१०३॥

आनन्दभैरव का ध्यान—आनन्दभैरव करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाशमान हैं। करोड़ों चन्द्रों के समान शीतल हैं। वे तीन नयनों से युक्त हैं। उनके पाँच मुख हैं। अट्ठारह भुजायें हैं। सुधासागर के मध्य में ब्रह्मकमल पर विराजमान हैं। नन्दी पर सवार हैं। उनका कण्ठ नीला है। सभी वस्त्राभूषण से सुशोभित हैं। हाथों में कपाल, खट्वांग है। घण्टा और डमरू बजा रहे हैं। पाश, अंकुश, गदा, मुशल, ढाल, तलवार, पट्टीश, मुद्गर, शूल, कुन्त, विचित्र ढाल, मुण्ड, वर और अभय धारण किए हुए हैं। देवदेवेश का वर्ण लोहित है। इस प्रकार आनन्दभैरव का ध्यान श्रेष्ठ साधक करे।।९९-१०३।।

आनन्दभैरवमन्त्रकथनम्

दत्त्वा पुष्पाञ्जलिं कुम्भे जपेदानन्दभैरवम् ।
हकारं च भृगुं देवं मण्डूकं धरणिं ततः ॥१०४॥
तथा जीमूतबीजं च हुतभुग्बीजमुद्धरेत् ।
वायुं केशं तथानन्दभैरवाय ततोऽञ्चले ॥१०५॥
विकुटं च मनुं जप्त्वा दशधा भैरवीं यजेत् ।
आनन्दभैरवीं ध्यायेद् यथावद् वर्ण्यते शिवे ॥१०६॥

आनदभैरव-मन्त्र—उपर्युक्त कलश पर पुष्पाञ्जलि समर्पित कर आनन्दभैरव के मन्त्र का जप करें। श्लोक १०४-१०६ का उद्धार करने पर आनन्दभैरव का मन्त्र इस प्रकार स्पष्ट होता है—हसक्षमलवरयूं आनन्दभैरवाय वषट्।

इस मन्त्र का जप दश बार करके आनन्दभैरवी का पूजन करे। हे शिवे! आनन्दभैरवी के ध्यान का अब यथावत् वर्णन किया जा रहा है।।१०४-१०६।।

आनन्दभैरवीध्यानम्

समुद्रे मथ्यमाने तु क्षीराब्धौ सागरोत्तमे ।
तत्रोत्पन्ना सुरा देवी कुमारीरूपधारिणी ॥१०७॥

भावयेच्च सुरां देवीं चन्द्रकोट्ययुतप्रभाम्।
हिमकुन्देन्दुधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिलोचनाम् ॥१०८॥
अष्टादशभुजैर्युक्तां सर्वानन्दकरोद्यताम्।
प्रहसन्तीं विशालाक्षीं देवदेवस्य सम्मुखीम् ॥१०९॥

आनन्दभैरवी—सुरा देवी का ध्यान—क्षीरसागर के मन्थन के मध्य में कुमारी रूपधारिणी सुरा देवी उत्पन्न हुई। हजार करोड़ चन्द्रमा के समान इनकी प्रभा है। इनके पाँचों मुख वर्फ, कुन्द और चन्द्रमा के समान धवल हैं। इनके प्रत्येक मुख में तीन-तीन आँखें हैं। इनकी भुजाएँ अट्ठारह हैं। सभी को आनन्द प्रदान करने के लिये ये सदा उद्यत रहती हैं। विशाल आँखों वाली ये सुरा देवी देवाधिदेव के सम्मुख विहंस रही हैं।।१०७-१०९।।

आनन्दभैरवीमन्त्र: कलशपूजनञ्च

शक्तिं शिवं निर्जरं च भेकीं भूबीजमेव च।
मेघं वह्निं समीरार्णं केशं चैव समुद्धरेत् ॥११०॥
सुरादेव्यै कुटं चान्ते विद्यां च दशधा जपेत्।
भैरवं भैरवीं चैव यष्ट्वा पार्वति कौलिक: ॥१११॥
महामुद्रां धेनुमुद्रां योनिं मत्स्यं प्रदर्शयेत्।
बद्ध्वा च लेलिहानाख्यां मुद्रां कुण्डलिनीं पुन: ॥११२॥
मूलाधारात् समुत्थाय सुषुम्नावर्त्मना प्रिये।
द्वादशान्तं समास्थाप्य सोहं हंस इति स्मरेत् ॥११३॥
शिवेन सह संयोज्य परानन्दमयो भवेत्।
तदुद्भूतामृतवृष्टिमुत्सृजेद् वामनासया ॥११४॥
प्रणवेन च देवेशि परद्रव्ये नियोजयेत्।
साक्षादमृततत्त्वाढ्यं ध्यायेत् कलशमुत्तमम् ॥११५॥
वारुणं बीजमुच्चार्य मूलमन्त्रं समुच्चरेत्।
दशधा प्रजपेद् देवि गन्धाक्षतपुर:सरै: ॥११६॥
पुष्पैर्नानाविधैर्दिव्यैर्माल्यैर्विविधभूषणै: ।
सम्पूज्य कलशं दिव्यं घण्टानि:स्वानपूर्वकम् ॥११७॥
धूपैर्दीपैर्महोत्साहै: परमैर्विविधौषधै: ।
प्रपूज्य परया भक्त्या प्रणामै: स्तुतिपूर्वकै: ॥११८॥

आनन्दभैरवी मन्त्र एवं कलशपूजन—इन दोनों श्लोकों के प्रतीकों का उद्धार

करने पर इनका मन्त्र यह होता है—सहक्षमलवरयीं आनन्दभैरव्यै वौषट्। इस मन्त्र का जप दश बार करे।

भैरव-भैरवी का इस प्रकार ध्यान और जप के बाद कौलिक महामुद्रा, धेनुमुद्रा, योनिमुद्रा और मत्स्यमुद्रा प्रदर्शित करे। लेलिहान मुद्रा बाँधकर कुण्डलिनी को मूलाधार से उठाकर सुषुम्ना मार्ग से सहस्रार में स्थापित करे। 'सोहं हंस:' का स्मरण करे। अपने को शिव के साथ संयुक्त करके परमानन्दमय हो जाये। इस स्थिति से उत्पन्न अमृतवृष्टि की भावना करे और उसे वाम नासा से ॐ के द्वारा निकालकर कलशस्थ द्रव्य में नियोजित करे। अब उस उत्तम कलश को साक्षात् अमृत तत्त्व से परिपूर्ण समझे।

उसपर गन्धाक्षत-पुष्प अर्पित करके वरुणबीज 'वं' के साथ मूल मन्त्र का जप दश बार करे। विविध प्रकार के फूलों, मालों, आभूषणों से कलश का पूजन घण्टी बजाते हुए करे। धूप-दीप-नैवेद्य आदि से परम उत्साह-पूर्वक पूजन के साथ विविध परमौषधों से भी परम भक्ति के साथ पूजा करे। तदनन्तर स्तोत्रपाठ करे और विधिपूर्वक प्रणाम करे।।११०-११८।।

कलशे अमृततत्त्वध्यानम्

सर्वदेवमयं कुम्भं ध्यायेद् देवेशि साधकः।
या सुरा सा उमादेवी यो द्रव्यं स महेश्वरः ॥११९॥
यो गन्धः स भवेद् ब्रह्मा यो मोहः स जनार्दनः।
स्वादे च संस्थितः सोमः फेनायामनलः स्थितः ॥१२०॥
इच्छायां मन्मथो देवश्छर्द्यामुच्छिष्टभैरवः।
द्रावे गङ्गा स्थिता देवि घटस्थाः सप्त सागराः ॥१२१॥
सर्वतेजोमयं द्रव्यं परमानन्दनिर्भरम्।
सर्वशापविनिर्मुक्तं सर्वमन्त्रसुसंस्कृतम् ॥१२२॥
परमामृतभावेन भैरवं भैरवीं यजेत्।
माहेश्वरैर्महावीरैर्महाचीनपदस्थितैः ॥१२३॥
महाशक्तिमयैर्मान्यैः सेव्यं द्रव्यमिदं प्रिये।
सन्तर्प्य देवतामिष्टां योगिनीगणमैश्वरम् ॥१२४॥
वटुकं क्षेत्रपालांश्च त्रिस्त्रिंशत्कोटिदेवताः।
मातॄर्मातृगणान् सर्वान् भूतप्रेतादिसंयुतान् ॥१२५॥
सन्तर्प्य विधिवद् देवि गुरुं गुरुवरांस्ततः।

गुरुं ध्यात्वा परां ध्यायेद्वीरान् सम्पूज्य शक्तितः ॥१२६॥
शक्तियुक्तो यजेत् पात्रमित्याज्ञा पारमेश्वरी ।
शक्तिहीने वृथापानं शिवहीने वृथार्चनम् ॥१२७॥
शिवशक्तिसमायोगे वीरपूजा विमोक्षदा ।
इतीदं शोधनं दिव्यं सुरायाः सुरदुर्लभम् ॥१२८॥

अमृततत्त्व के रूप में कलश का ध्यान—दे देवेशि! साधक कलश को सर्वदेवमय मानकर ध्यान करे। सह समझे कि जो सुरा है, वह उमा हैं और जो द्रव्य है, वह महेश हैं। इसकी गन्ध ब्रह्मा हैं। मोह विष्णु हैं। इसके स्वाद में चन्द्रमा स्थित हैं। फेन में अग्नि स्थित हैं। इच्छा में कामदेव हैं। उच्छिष्ट भैरव द्वारा ये आच्छादित हैं। गङ्गा द्रवरूप में हैं। सातो सागर कलश में हैं। घटस्थ द्रव्य सभी तेजों से युक्त है। परमानन्ददायक है। सभी शापों से विमुक्त है। सभी मन्त्रों से सुसंस्कृत है। परम अमृतभाव से भैरव-भैरवी का पूजन यह मानकर करे कि महाचीनाचार के अनुसार महेश्वर भैरव महावीर हैं। कलशस्थ सेव्य द्रव्य महाशक्ति है। इस द्रव्य से इष्टदेवता और योगिनियों के साथ गणेश्वरों का तर्पण करे। वटुक, क्षेत्रपाल, तैंतीस करोड़ देवता, भूत-प्रेतादिसहित सभी मातृकागणों का तर्पण करे। इसके बाद गुरु और गुरुवरों का विधिवत् तर्पण करे। गुरु का ध्यान करके परा शक्ति और वीरों का पूजन सामर्थ्य के अनुसार करे। शक्ति से युक्त पात्र का पूजन करे—ऐसी आज्ञा परमेश्वरी की है। जैसे शिव के बिना अर्चन व्यर्थ है, वैसे ही शक्ति के बिना सुरापान व्यर्थ है। शिव-शक्ति के समायोग से ही वीर-पूजन मोक्षदायक होता है। इस प्रकार सुरदुर्लभ दिव्य सुराशोधन विधि का वर्णन पूर्ण हुआ।।११९-१२८।।

अन्यद्रव्यशोधनप्रस्ताव:

तव स्नेहेन निर्णीतं शृणुष्वान्यदपि प्रिये ।
मद्यं मांसं तथा मीनो मुद्रा मैथुनमेव च ॥१२९॥
मकारपञ्चकं पूज्यं शिवशक्तिसमागमे ।
पूजायां यद्यदानीतं भक्ष्यं भोज्यं च लेह्यकम् ॥१३०॥
पेयं चोष्यं फलं पुष्पं सर्वं मन्त्रेण मन्त्रयेत् ।
विनाभिमन्त्रणेनैतद् यो मोहाद् भक्षयेच्छिवे ॥१३१॥
स मान्त्रिकोऽपि देवेशि सहसा निरयी भवेत् ।

चतुरस्त्रं लिखेद्बिम्बं तत्र मीनान् निधापयेत् ॥१३२॥
शोषयेद् दाहयेद् देवि प्लावयेन्मनुना शिवे।
वायुबीजेन वाह्नयेन वारुणेन यथाक्रमम् ॥१३३॥
धेनुयोनिमहामत्स्या मुद्राश्चैव प्रदर्शयेत्।
दशधा प्रजपेन्मन्त्रमानन्देश्वरभैरवम् ॥१३४॥
प्रजप्य प्रपठेद्विद्यां यथोक्तां कौलिकेश्वरि।

अन्य द्रव्य-शोधन—हे प्रिये! अन्य द्रव्यों की शोधन विधि को भी सुनो, जिसका तुम्हारे स्नेह के कारण वर्णन करता हूँ। मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन— ये मकारपञ्चक हैं। इन्हीं से शक्ति के सहित शिव का पूजन होता है। पूजा के लिये जो भी भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, चोष्य, पेय, फल-फूल एकत्र किए गये हों, उन सबों को मन्त्र से मन्त्रित करना चाहिये। अभिमन्त्रित किये बिना मोहवश जो इनका भक्षण करता है, वह मान्त्रिक साधक भी नारकी होता है। चतुरस्त्र बनाकर मत्स्यादि पात्र को उसमें रखे। उनका शोषण, दाहन और प्लावन मन्त्र से करे। वायुबीज 'यं' से उनके दोषों का शोषण करे। अग्निबीज 'रं' से उन दोषों का दहन करे। वरुणबीज 'वं' से उसे अमृतमय करे। तब उसके समक्ष धेनु, योनि, महामुद्रा और मत्स्य मुद्रा प्रदर्शित करे। तदनन्तर आनन्देश्वर भैरव के मन्त्र का जप दश बार करे। हे कौलिकेश्वरि! जप के बाद निम्नोक्त स्तोत्र का पाठ करे।।१२९-१३४।।

मत्स्यशोधनमन्त्रकथनम्

कृतावतारो हरिणा कलिना पीडितं जगत् ॥१३५॥
बलिना निगृहीतं च कौलिकानां हितेच्छया।
भैरवीपरितोषार्थं स्वयं मीनोऽभवद् हरिः ॥१३६॥
मायां च हरये विश्वं जपेदृचमतः परम्।
त्र्यम्बकं यजामहीति मन्त्रं त्रिःसञ्जपेत् सुधीः ॥१३७॥
प्रपूज्य गन्धपुष्पैस्तु प्रणमेद् देवतां पराम्।

मत्स्यशोधन स्तोत्र—कलि से पीड़ित संसार के दुःखों को दूर करने के लिये विष्णु ने अवतार लिया। कौलिकों के कल्याण की इच्छा से वे बलि से निगृहीत हुए। भैरवी के परितोष के लिये स्वयं विष्णु मत्स्यरूप हो गये। 'ह्रीं क्लीं नमः' के साथ 'त्र्यम्बकं यजामहे' मन्त्र का जप तीन बार करे। पूरा मन्त्र ऐसा होता है— ॐ ह्रीं क्लीं नमः।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

गन्ध-पुष्प से मत्स्य की पूजा करके परा देवता को प्रणाम करे।।१३५-१३७।।

मांसशोधनमन्त्रकथनम्

चतुरस्त्रे महादेवि मांसपात्रं निधापयेत् ।।१३८।।
संशोष्य सन्दह्य पलमाप्लाव्य कुलसुन्दरि ।
मुद्रात्रयं प्रदर्श्याशु प्रपठेत् कौलिको मनुम् ।।१३९।।

मांस-शोधन—एक चतुरस्त्र बनाकर उस पर मांसपात्र को रखे। पूर्वोक्त विधि से इसका शोषण, दाहन और प्लावन करके धेनु, योनि, मत्स्यमुद्रात्रय प्रदर्शित करे। इसके बाद इस मन्त्र का पाठ करे।।१३८-१३९।।

छागलाज्येणमर्त्यान्त्रि(न्तः)कृतरूपाय विष्णवे ।
बल्यर्थं शिवशक्त्योस्तं प्रपद्ये विष्णुमव्ययम् ।।१४०।।
प्रतर्पयामि बल्यर्थं पवित्रीभव साम्प्रतम् ।

मर्त्यों के त्राण के लिये छाग और लाजा का रूप विष्णु ने ग्रहण किया। शिव-शक्ति की बलि के लिये विष्णु ने विधि का प्रतिपादन किया। अब मैं तुम्हें बलि के लिये प्रतर्पित करता हूँ। अब तुम पवित्र हो जाओ।।१४०।।

त्रिः पठित्वा ऋचं देवि जपेत् कौलिकसत्तमः ।।१४१।।
प्रतद्विष्णुरिति स्मृत्वा प्रणमेद् योनिमुद्रया ।

उपरोक्त ऋचा का तीन बार पाठ करके प्रतद विष्णु नाम की ऋचा का पाठ करे। पूरी ऋचा है—

ॐ प्रतद् विष्णुः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः।
दिवीव चक्षुराततम् तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते।।

विष्णोर्यत् परमं पदम्।।१४१।।

मुद्राशोधनमन्त्रकथनम्

मुद्रापात्रं समानीय स्थापयेच्चतुरस्त्रके ।।१४२।।
संशोषणं दाहनं च प्लावनं पूर्ववच्चरेत् ।
मुद्रात्रयं च सन्दर्श्य प्रपठेद् वेदवद् विधिम् ।।१४३।।

मुद्राशोधन—मुद्रापात्र को लाकर चतुरस्र पर स्थापित करे। उसका पूर्ववत् शोषण, दाहन और प्लावन करे। उसके समक्ष पूर्ववत् मुद्रात्रय का प्रदर्शन करने के पश्चात् निम्नाङ्कित मन्त्र का पाठ करे।।१४२-१४३।।

देवतापूजने यानि सौरभेयानि साम्प्रतम्।
बल्यर्थं देवदेव्योश्च पवित्राणीह सिद्धये ॥१४४॥

श्लोक १४४ मन्त्र है। जिसका आशय यह है कि देवता-पूजन के लिये जो सम्भार उपलब्ध हैं, उनका शोधन देव-देवी की बलि के लिये करता हूँ, जिससे मुझे सिद्धि मिले।।१४४।।

मूलं च दशधा जप्त्वा जपेदृचमनुत्तमाम्।
तद्विष्णोः परमं मन्त्रं प्रजप्योपरि कौलिकः ॥१४५॥

मूल मन्त्र का जप दश बार करके उत्तम ऋचा पूर्वोक्त 'तद्विष्णोः परमं पदं' का जप मुद्रा के ऊपर करे।।१४५।।

कुण्डगोलशोधनम्

प्रणम्य भक्तिभावेन कुण्डगोलं च शोधयेत्।
चतुरस्रे च संस्थाप्य शोषयेद् दाहयेत् सुधीः ॥१४६॥
आप्लावयेत् परैर्बीजैर्मुद्राभिरभिरक्षेत्।
मूलं च दशधा जप्त्वा जपेदृचमथोपरि ॥१४७॥
विष्णुर्योनिमिति स्मृत्वा प्रजप्य प्रणमेत्ततः।

कुण्डगोल-शोधन—भक्तिभाव से प्रणाम करके कुण्डगोल का शोधन करे। कुण्डगोल पात्र को चतुरस्र में स्थापित करके उसके दोषों का शोषण, दाहन, प्लावन करे। परा बीज और मुद्रा से अभिरक्षण करे। मूल मन्त्र का दश बार जप करके उसके ऊपर 'विष्णुयोनि' नामक ऋचा का जप करके प्रणाम करे। पूरी ऋचा निम्नलिखित रूप में है—

ॐ विष्णु योनिः कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु।
आसिंचतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु वै।।
गर्भं देहि सिनीवाली गर्भं देहि सरस्वति।
गर्भं देहि अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजा।।१४६-१४७।।

समस्तद्रव्यशोधनमन्त्रः

सर्वेषु देवद्रव्येषु समानीतेषु कौलिकैः ॥१४८॥
ऋचमेतां जपेत् सम्यङ् मन्त्रमेनं समुद्धरेत्।

ग्लूंम्लूंस्लूंप्लूंन्लूं देवेशि स्वान्तं खं कामकालिकम् ॥१४९॥
अमृतेऽप्यमृतोद्धूतेऽप्यमृतेश्वरि चामृतम् ।
स्रावय-द्वयमुद्धृत्य ठद्वयं च समुद्धरेत् ॥१५०॥

सभी द्रव्यों के शोधन का मन्त्र—कौल साधक सभी उपलब्ध पूजन सामग्रियों का शोधन उक्त ऋचा से करे। इसके बाद निम्न मन्त्र का जप करे—

ॐ ग्लूं म्लूं स्लूं प्लूं न्लूं अं आं क्लीं क्रीं अमृते अमृतोद्भूते अमृतेश्वरि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा।।१४८-१५०।।

इयं शापहरी विद्या मकाराणां महेश्वरि ।
पञ्चानां पञ्चकल्पानां स्मरणीयार्चनाविधौ ॥१५१॥

हे महेश्वरि! पञ्च 'म'कारों की शापहरी विद्या यही है। पाँचों को पाँच कल्पों से स्मरण-अर्चन करने की विधि है।।१५१।।

भैरवयागकथनम्

संशोध्य शिवद्रव्याणि मन्त्रैर्मुद्राभिरेव च ।
ऋग्भि: क्रमेण मूलेन प्ला(पा)वयेच्च यथाक्रमम् ॥१५२॥
आनन्दरससम्पूर्णै: कलशामृतबिन्दुभि: ।
एवं संशोध्य द्रव्याणि परमाणि कुलेश्वरि ॥१५३॥
भैरवं भैरवीं देवीं यजेद् वीरसमागमे ।
अयष्ट्वा भैरवं देवमकृत्वा देवतार्चनम् ॥१५४॥
पशुपानविधौ पीत्वा वीरोऽपि नरकं व्रजेत् ।
एवं संस्कृत्य देवेशि गुरुभक्तिपुर:सरम् ॥१५५॥
य: पिबेत् परमं पानं शिवसायुज्यमाप्नुयात् ।
इतीदं परमं गुह्यं रहस्यानां रहस्यकम् ।
अष्टसिद्धिमयं तत्त्वं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥१५६॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये सुराशोधनविधिनिरूपणं नाम द्वाविंश: पटल:॥२२॥

भैरवयाग—शिवद्रव्यों का शोधन मन्त्र, मुद्रा, ऋचाओं और मूल मन्त्र से क्रमपूर्वक करके यथाक्रम प्लावन करे। आनन्दरस से परिपूर्ण कलशस्थ अमृतबिन्दु से द्रव्यों का शोधन करके वीर समागम में भैरव और भैरवी का पूजन करे। भैरव देवता को अर्चन के बिना पशु के समान जो पीता है, वह वीर होने पर नरकवासी होता है।

हे देवेशि! गुरुभक्तिपूर्वक संस्कृत परम मद्य का जो पान करता है, वह शिवसायुज्य प्राप्त करता है। परम गुह्य रहस्यों का यह रहस्य पूर्ण हुआ। यह तत्त्व अष्ट सिद्धियों का स्वरूप है। अपनी योनि के समान गोपनीय है।।१५२-१५६।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में सुराशोधन-
विधि निरूपण नामक द्वाविंश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ त्रयोविंशः पटलः

शक्तिशोधनविधिः

शक्तिशोधनप्रस्तावः

श्रीभैरव उवाच

अधुना श्रृणु देवेशि शक्तिशोधनमुत्तमम्।
येन श्रवणमात्रेण पराशक्तिपदे लयेत्॥१॥
अदीक्षितकुलासङ्गात् सिद्धिहानिः प्रजायते।
तत्कथाश्रवणं चेत् स्यात् तत्तल्पगमनं यदि॥२॥

शक्तिशोधन-प्रस्ताव—श्री भैरव ने कहा—हे देवेशि! अब शक्तिशोधन की उत्तम विधि को सुनो, जिसके श्रवणमात्र से ही परा शक्ति का पद प्राप्त होता है। अदीक्षित अकुल रमणी शक्ति की संगति से सिद्धि की हानि होती है, उसके बारे में कुछ सुनने से भी उसकी शय्या पर आसीन होने का पाप लगता है।।१-२।।

श्रीदेव्यवाच

कुलाचारक्रमार्चायां सिद्धिं कामयते तु यः।
स कुलीनः कथं देव पूजयेत् कुलयोषितम्॥३॥

श्री देवी ने कहा—हे देव! जो कुलाचारक्रम से अर्चन के द्वारा सिद्धिकामी है, उसे कुलीन कैसे कहा जाता है। कुलयोषिता का पूजन किस प्रकार होता है।।३।।

श्रीभैरव उवाच

संशोधनमकृत्वा वै स्त्रीषु मद्येषु कौलिकः।
कृतेऽपि सिद्धिहानिः स्यात् क्रुद्धा भवति चण्डिका॥४॥
अभिषेकाद् भवेत् सिद्धिर्मन्त्रस्योच्चारणाच्छुभा।
रतिकाले महेशानी दीक्षाकाले च कन्यका॥५॥
बलाद्वा यत्नतो बुद्ध्या प्ला(पा)वयेत् परयोषितम्।
सुरया रेतसा वापि जलेन मधुनाथ वा॥६॥
सङ्गेऽभिषेचयेन्नारीं चण्डां वा मन्त्रवर्जिताम्।
स्वकीयां परकीयां वा रूपयौवनगर्विताम्॥७॥

श्री भैरव ने कहा कि जो कौलिक संशोधन के बिना स्त्रियों में और मदिरा में आचार करता है, उसके सिद्धि की हानि होती है और चण्डिका उससे क्रुद्ध होती है। हे महेशानि! कन्या को दीक्षाकाल और रतिकाल में अभिषेक करने से और मन्त्रोच्चारण करने से उनमें शुभता आती है। बल से, यत्न से, बुद्धि से परयोषिताओं को सुरा से, रेत से, जल से, मधु से प्लावित या अभिषिक्त करने से उनमें शुभता आती है। इसलिये चण्डा, मन्त्रवर्जिता स्वकीया या परकीया नारी का अभिषेक संभोग के पूर्व करना अत्यावश्यक है।।४-७।।

श्रीदेव्युवाच

भगवन् देवदेवेश कुलाचारैकसिद्धये।
कुलयोगी कथं कुर्याच्छोधनं कुलयोषिताम्॥८॥

श्री देवी ने कहा—हे भगवन्! देवदेवेश! कुलाचार की सिद्धि के लिये कुलयोगी कुलयोषिता का शोधन किस प्रकार करे, जिससे उसमें कोई दोष शेष न रहे।।८।।

शक्तिप्रशंसा

श्रीभैरव उवाच

कुलजां युवतिं वीक्ष्य नमस्कुर्यात् कुलेश्वरः।
विधाय मानसीं पूजां मन्त्रं योगी समुच्चरेत्॥९॥
बालां वा यौवनोन्मत्तां वृद्धां वा सुन्दरीं तथा।
कुत्सितां वा महादुष्टां नमस्कृत्य विभावयेत्॥१०॥
तासां प्रहारो निन्दा च कौटिल्यमप्रियं तथा।
सर्वथा नैव कर्तव्यमन्यथा सिद्धिरोधकृत्॥११॥
स्त्रियो देवाः स्त्रियः प्राणाः स्त्रिय एव हि भूषणम्।
स्त्रीगणेषु सदा भाव्यमन्यथा स्वस्त्रियामपि॥१२॥
विपरीतरता सापि भविता हृदयोपरि।
साधकस्य भवेदाशु कामधेनुरिवापरा॥१३॥
नाधर्मो जायते तेन न कश्चिद् धर्महा भवेत्।
तत्परः परतन्वीनां परतत्त्वे प्रलीयते॥१४॥

शक्ति-प्रशंसा—कुलजा युवती को देखकर कुलेश्वर प्रणाम करे। मानसिक पूजा करके योगी मन्त्रों का उच्चारण करे। बाला या यौवनगर्विता या वृद्धा या सुन्दरी या कुरूपा या महादुष्टा नारी को नमस्कार करे। उस पर प्रहार करना, उसकी निन्दा करना या उसे कुटिल अप्रिय वचन कहना सर्वथा वर्जित है। इससे सिद्धि में अवरोध उत्पन्न होता है। स्त्री ही देवता है। स्त्री ही प्राण है। स्त्री ही भूषण है। स्त्रीवृन्दों के साथ-साथ

अपनी पत्नी से भी अन्यथाभाव न रखे। विपरीत रति में जब वह हृदय पर होती है तब वह साधक के लिये कामधेनु के समान परा शक्ति हो जाती है। इसमें कोई अधर्म नहीं होता और न ही इससे धर्म की हानि होती है। परायी रमणियों में तत्पर साधक परतत्त्व में लीन हो जाता है।।९-१४।।

नवकन्यानिरूपणम्

नटी कापालिकी वेश्या रजकी नापिताङ्गना।
ब्राह्मणी शूद्रकन्या च तथा गोपालकन्यका॥१५॥
मालाकारस्य कन्यापि नव कन्या: प्रकीर्तिता:।
एतासु काञ्चिदानीय संशोधनमथाचरेत्॥१६॥
पूजयेत् कौलिको देवि यथावद् वर्ण्यते मया।

नव कन्या-निरूपण—कुलाचार में नव कन्यायें ग्रहणीय हैं, ये नव हैं—१. नटी, २. कापालिकी, ३. वेश्या, ४. धोबिन, ५. नाइन, ६. ब्राह्मणी, ७. शूद्रकन्या, ८. गोपालकन्या, ९. मालिन। इनमें से किसी को भी लाकर उसका संशोधन करे। जैसा मैं आगे वर्णन करूँगा, वैसे ही कौलिक इसकी पूजा करे।।१५-१६।।

शक्तिशोधनमन्त्रस्तदृष्यादिविवेचनम्

शक्तिशोधनमन्त्रस्य ऋषि: प्रोक्त: सदाशिव:॥१७॥
त्रिष्टुप् छन्द इति ख्यातं देवता च पराम्बिका।
वाग्बीजं बीजमीशानि शक्ति: शक्तिरितीरिता॥१८॥
कामेश: कीलकं देवि दिग्बन्धो हरमीश्वरि।
भोगापवर्गसिद्ध्यर्थं विनियोगो महेश्वरि॥१९॥
महानिशायामानीय नव कन्याश्च भैरवान्।
एकादश नवाष्टौ वा कौलिक: कौलिकेश्वरि॥२०॥
शोधयेन्नवभिर्मन्त्रै: पूजयेत् कौलिकोत्तम:।
साधक: संस्पृशेदादौ कृत्वा विष्टरशोधनम्॥२१॥

विनियोग—अस्य श्रीशक्तिशोधनमन्त्रस्य ऋषि: सदाशिव छन्द: त्रिष्टुप् देवता पराम्बिका, ऐं बीजं, ईं शक्ति:, क्लीं कीलकं, फट् दिग्बन्ध:। भोगापवर्गसिद्ध्यर्थे विनियोग:।

महानिशा में नव कन्या और दो भैरव—कुल ग्यारह या नव या आठ लाकर कौलिक या कौलिकेश्वरी उनका शोधन नव मन्त्रों से करे और पूजा करे। साधक पहले आसनशुद्धि करे।।१७-२१।।

आसनशोधनान्ते भूतशुद्ध्यादिकथनम्

भूतशुद्धिं विधायापि प्राणार्पणविधिं चरेत्।
मन्त्रसङ्कल्पकं कृत्वा मुन्यादिन्यासमाचरेत् ॥२२॥
विधाय मातृकान्यासं कराङ्गन्यासपूर्वकम्।
हृत्पीठार्चां विधायाथ श्रीचक्रार्चनमाचरेत् ॥२३॥
संशोध्य देवद्रव्याणि कुण्डगोलादिकं तथा।
वीरार्चनं वीरकान्तासेवनं देवदुर्लभम् ॥२४॥
यथोक्तविधिना देवीं सम्पूज्य श्रीपराम्बिकाम्।
शक्तिं वामे तु संस्थाप्य पूजयेद्वर्ण्यते यथा ॥२५॥

आसनशोधन और भूतशुद्धि—भूतशुद्धि करके प्राणप्रतिष्ठा करे। मन्त्र-सङ्कल्प करके ऋष्यादि न्यास करे। करन्यास और अङ्गन्यास करके मातृकान्यास करे। हृत्पीठ का अर्चन करके श्रीचक्र का पूजन करे। कुण्डगोल आदि देवी-द्रव्यों का शोधन करके देवदुर्लभ वीरार्चन और वीरकान्ता का सेवन करे। यथोक्त विधि से देवी श्री पराम्बिका का पूजन करके उसके बाँयें भाग में शक्ति को बैठाकर आगे वर्णित विधि से उसका पूजन करे।।२२-२५।।

श्रीचक्रस्थापनम्

त्रिकोणं वाथ षट्कोणं त्र्यस्त्रत्रयमथो हविः (बहिः)।
शिवत्र्यस्त्रं कामत्र्यस्त्रं हेतित्र्यस्त्रं महेश्वरि ॥२६॥
ब्रह्मत्र्यस्त्रं नवत्र्यस्त्रं सिन्दूरेण विभावयेत्।
श्रीचक्रेषु हि नट्यादिमालिन्यन्तं विचार्य च ॥२७॥
यामेवासां कुमारीणां कौलिकस्तु समानयेत्।
तदीयं यन्त्रमालिख्य तस्मिंस्तामेव पूजयेत् ॥२८॥

श्रीचक्रस्थापन—त्रिकोण, षट्कोण, त्रिकोणत्रय, शिवत्रिकोण, कामत्रिकोण, हेतित्रिकोण, ब्रह्मत्रिकोण सब मिलाकर नव त्रिकोण सिन्दूर से बनाकर उनमें नटी से मालिनी तक की नव कन्याओं की स्थिति मानकर कुमारियों को बैठाये और उनके यन्त्र अङ्कित करके उनकी पूजा करे।।२५-२८।।

श्रीचक्रे शक्तिस्थापनम्

श्रीचक्रे स्थापयेद् वामे कन्यां भैरववल्लभाम्।
मुक्तकेशीं वीतलज्जां सर्वाभरणभूषिताम् ॥२९॥

सर्वशृङ्गारशोभाढ्यां तारुण्यमदगर्विताम् ।
आनन्दलीनहृदयां सौन्दर्यातिमनोहराम् ॥३०॥

शक्तिस्थापन—श्री चक्र के वाम भाग में भैरववल्लभा भैरवी की स्थापना करे। इस शक्ति के केश खुले हों। वह लज्जाहीन हो। सभी वस्त्राभूषण से युक्त हो। सभी श्रृंगार से सुशोभित हो। वह तारुण्य मद से गर्वित हो। उसका हृदय उल्लसित हो। देखने में अतिसुन्दर और मनोहर हो।।२९-३०।।

शक्तिपवित्रीकरणमन्त्र:

शोधयेच्छुद्धिमन्त्रेण सुरानन्दामृताम्बुभिः ।
बालाबीजत्रयं देवि प्रोच्चार्य तदनन्तरम् ॥३१॥
त्रिपुरायै ततो विश्वं विश्वान्ते नामपूर्वकम् ।
इमां शक्तिं पवित्रीति कुरु-युग्मं समुद्धरेत् ॥३२॥
मम शक्तिं कुरु-युग्मं वह्निजायां समुद्धरेत् ।
मन्त्रेणानेन देवेशि कामिनीमभिषेचयेत् ॥३३॥

शक्ति-पवित्रीकरण मन्त्र—शोधन मन्त्र से सुरानन्द अमृत से शक्ति का शोधन करे। शक्तिशोधन मन्त्र है—ऐं क्लीं सौ: त्रिपुरायै नम: नामपूर्वक इमां शक्ति पवित्री कुरु कुरु मम शक्ति कुरु कुरु स्वाहा। नाम के साथ 'नटी' 'कपालिकी' आदि उच्चारण करे। हे देवेशि! इसी मन्त्र से कुमारियों का अभिषेक करे।।३१-३३।।

कामिन्यभिषेकान्ते न्यास:
पञ्चबाणमुद्रान्यासश्च

अभिषिच्य कुमारीं तां न्यासजालं प्रविन्यसेत् ।
मातृकावन्महादेवि कामबाणांस्ततो न्यसेत् ॥३४॥
चन्द्रबीजद्वयं देवि कामराजं च मोहनम् ।
शक्तिबीजं ततो देवि यथावद्विन्यसेत् प्रिये ॥३५॥
ललाटे वदने न्यस्य (चांसे) हृदये योनिमण्डले ।
सर्वसंक्षोभणं बाणं सर्वविद्रावणं तथा ॥३६॥
सर्वाकर्षणबाणं च सर्वसम्मोहनं ततः ।
वशीकरणबाणं च पञ्चेषोः पञ्चबाणकान् ॥३७॥
विन्यस्य बाणमुद्राश्च पञ्चैता देवि दर्शयेत् ।
योनिबिम्बे जपेन्मन्त्रान् नव यान् वर्णयाम्यहम् ॥३८॥

अभिषेक के बाद न्यास—उन कुमारियों को अभिषेक के बाद न्यासयुक्त करना चाहिये। मातृका न्यास के समान कामबाणों का न्यास ललाट, मुख, कंधा, हृदय और योनिमण्डल में करना चाहिये। सर्वसंक्षोभण, सर्वविद्रावण, सर्वाकर्षण, सर्वसम्मोहन और सर्ववशीकरण—ये पाँच कामदेव के बाण हैं। यह न्यास बाणमुद्रा से करना चाहिये। न्यास के बाद योनिमुद्रा प्रदर्शित करे। तदनन्तर अग्रलिखित नव मन्त्रों का जप करे। बाणन्यास इस प्रकार करे—

द्रां सर्वसंक्षोभणबाणाय नमः ललाटे।
द्रीं सर्वविद्रावणबाणाय नमः मुखे।
क्लीं सर्वाकर्षणबाणाय नमः अंसे (कन्धा)।
क्लूं सर्वविद्रावणबाणाय नमः हृदये।
सः सर्ववशीकरणबाणाय नमः योनिमण्डले।

नटिनीमन्त्रोद्धारः

तारं चन्द्रं च वाग्बीजं कामं शक्तिं ततो वदेत्।
नटिनीति महासिद्धिं मम देहि-युगं वदेत् ॥३९॥
ठद्वयं प्रोच्चरेदन्ते मन्त्रोऽयं नटिनीप्रियः।

नटी मन्त्र—ॐ ऐं ऐं क्लीं सौः नटिनि महासिद्धिं मम देहि देहि स्वाहा। यह मन्त्र नटिनी देवी को अत्यन्त प्रिय है।।३९।।

कपालिनीमन्त्रोद्धारः

कालीं कूर्चं परां शक्तिं कामं कापालिनि प्रिये ॥४०॥
रेतो मुञ्च-युगं ब्रूयादन्ते दहनवल्लभा।
देवि कापालिकीमन्त्रः कामदेववशङ्करः ॥४१॥

कपालिनीमन्त्र—क्रीं हूं ह्रीं सौः क्लीं कपालिनि रेतो मुञ्च मुञ्च स्वाहा। कपालिनी देवी का यह मन्त्र कामदेव को वश में करने वाला है।।४०-४१।।

वेश्याशोधनमन्त्रोद्धारः

तारद्वन्द्वं च हरितं मेघषड्दीर्घबीजकम्।
वेश्ये कामदुघे रेतो मुञ्च-युग्माग्निवल्लभा ॥४२॥
वेश्याशोधनमन्त्रोऽयं सर्वकौलिकवल्लभः।

वेश्या-मन्त्र—ॐ ॐ ह्सौः वां वां वूं वैं वौं वः वेश्ये कामदुघे रेतो मुञ्च मुञ्च स्वाहा। यह वेश्या-शोधन मन्त्र सभी कौलिकों को अत्यन्त प्रिय है।।४२।।

रजकीशोधनमन्त्रोद्धार:

वेदाद्यं वाग्भवं कामं शक्तिं लक्ष्मीं परां स्मरेत् ॥४३॥
रजकीति महासिद्धिं देहि मे हर-ठद्वयम्।
रजकीशुद्धिमन्त्रोऽयं कुलयोषिद् वशङ्कर: ॥४४॥

रजकीमन्त्र—ॐ ऐं क्लीं सौ: श्रीं ह्रीं रजकी महासिद्धिं देहि मे फट् स्वाहा। यह रजकी मन्त्र कुलयोषिताओं को वश में करने वाला है।।४३-४४।।

नापिताङ्गनाशोधनमन्त्रोद्धार:

तारं तारत्रयं वस्त्रं प्रोच्चरेन्नापिताङ्गने।
हर-युग्मं च मे विघ्नांस्तुरगं ठद्वयं तत: ॥४५॥
नापितस्त्रीशुद्धिमन्त्रो महामाङ्गल्यदायक:।

नापितांगना मन्त्र—ॐ ॐ ॐ ॐ ह्सौ: नापितांगने फट् फट् मे विघ्नान् फट् स्वाहा। यह नापित स्त्रीशुद्धि मन्त्र महामाङ्गल्यदायक है।।४५।।

ब्राह्मणीशोधनमन्त्रोद्धार:

वेदाद्यं भूतिबीजं च तारं मायां धनुर्धर: ॥४६॥
ब्राह्मणि स्मर वीर्यं च मुञ्च मुञ्चेति सर्वदा।
सिद्धिं मे देहि देहीति हरं दहनवल्लभा ॥४७॥
ब्राह्मणीशुद्धिमन्त्रोऽयं महासिद्धिप्रदायक:।

ब्राह्मणी मन्त्र—ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं लं ब्राह्मणी क्लीं वीर्यं मुञ्च मुञ्च सर्वदा सिद्धिं मे देहि देहि फट् स्वाहा। यह ब्राह्मणी मन्त्र महासिद्धिप्रदायक है।।४६-४७।।

शूद्राणीशोधनमन्त्रोद्धार:

तारं रमा रमा तारं शूद्राणि च रतप्रिये ॥४८॥
रेत: स्तम्भय मे सिद्धिं देहि-युग्मं ततो वनम्।
शूद्राणीशुद्धिमन्त्रोऽयं कामिनीजनमोहन: ॥४९॥

शूद्राणी मन्त्र—ॐ श्रीं श्रीं ॐ शूद्राणि रतिप्रिये रेत: स्तम्भय मे सिद्धिं देहि देहि स्वाहा। यह शूद्राणी-शुद्धि मन्त्र कामिनियों का मोहक है।।४८-४९।।

गोपस्त्रीशोधनमन्त्रोद्धार:

तारकं शिवषड्दीर्घसंयुतं मठबीजकम्।
गोपालि मे सिद्धदण्डं द्रावय-द्वयमुद्धरेत् ॥५०॥
ठद्वयान्तो महामन्त्रो गोपीशोधनसाधक:।

गोपकन्या मन्त्र—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ग्लौं गोपालि मे सिद्धदण्डं द्रावय द्रावय स्वाहा। यह गोपीशोधन मन्त्र साधकों का महामन्त्र है।।५०।।

मालिनीशोधनमन्त्रोद्धारः

तारद्वयीसम्पुटितां मृद्वीकां दीर्घसंयुताम् ।।५१।।
उद्धृत्य मालिनि प्रेम कुरु-युग्मं मयि स्मरेत् ।
तुरगं ठद्वयं प्रान्ते मन्त्रोऽयं मालिनीप्रियः ।।५२।।

मालिनी मन्त्र—ॐ धूं ॐ मालिनि प्रेम कुरु कुरु मयि फट् स्वाहा। यह मन्त्र मालिनी को प्रिय है।।५१-५२।।

एवं शोधनमन्त्रास्ते वर्णिताश्च पृथङ्मया ।
योनौ जपेत् कुमारीणां कौलिकः करमालया ।।५३।।
सञ्जप्य दक्षकर्णे च मूलमन्त्रं त्रिरुच्चरेत् ।
अदीक्षितापि देवेशि दीक्षितैव भवेत् तदा ।।५४।।

इस प्रकार शोधन मन्त्रों का वर्णन अलग-अलग किया गया। कुमारियों की योनि पर करमाला से कौलिक जप करे। जप के बाद मूल मन्त्र का उच्चारण तीन बार उस कुमारी के दक्ष कान में करे। हे देवेशि! ऐसा करने से अदीक्षित कुमारी भी दीक्षित हो जाती है।।५३-५४।।

दीक्षितायां वीरतर्पणम्

दीक्षितां शोधितां वीरो भजेत् सर्वार्थसिद्धये ।
तारं व्योषमौष्मकं च शिवायेति स्वयम्भुवम् ।।५५।।
सम्पूज्य शिवमन्त्रं च जपेत् संस्तभ्य पुंध्वजम् ।
जप्त्वा निरुध्य तं दण्डं करभीतुण्डमुद्रया ।।५६।।
आनन्दतर्पितां कान्तां वीरः स्वानन्दविग्रहः ।
रतेन तर्पयेत् तत्र श्रीचक्रे वीरसंसदि ।।५७।।
पठन् प्रणवमुद्धृत्य मन्त्रराजं कुलेश्वरि ।
धर्माधर्महविर्दीप्ते स्वात्माग्नौ मनसा स्रुचा ।।५८।।
सुषुम्नावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तीर्जुहोम्यहम् ।
स्वाहान्तमन्त्रमुच्चार्य जपन् मूलं स्मरन् पराम् ।।५९।।
कुर्यान्निधुवनं मन्त्री मन्त्रसिद्धिमवाप्नुयात् ।।६०।।
तारद्वयान्तरगतं परमानन्दकारणम् ।
प्रकाशाकाशहस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनीस्रुचम् ।।६१।।

धर्माधर्मकलास्नेहपूर्णां वह्नौ जुहोम्यहम्।
स्वाहान्तेनाशु मन्त्रेण शुक्रमादाय पार्वति ॥६२॥
श्रीचक्रे तर्पयेद् देवीं ततः सिद्धिमवाप्नुयात्।
सम्पूज्य कान्तां सन्तर्प्य स्तुत्वा नत्वा परस्परम्।
संहारमुद्रया मन्त्री शक्तिं वीरान् विसर्जयेत् ॥६३॥
इतीदं परमं दिव्यं शक्तिशोधनमुत्तमम्।
तव स्नेहेन निर्णीतं गोपनीयं मुमुक्षुभिः ॥६४॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये शक्तिशोधनविधि-
निरूपणं नाम त्रयोविंशः पटलः॥२३॥

दीक्षितों में वीरतर्पण—दीक्षित शोधित शक्तियों को ही वीर सर्वार्थसिद्धि के लिये आचार में ग्रहण करे। 'ॐ ह्रां नमः शिवाय' मन्त्र से अपने लिङ्ग की पूजा करके शिव मन्त्र का जप करके लिङ्गोत्थान करे। जप के बाद हाथी के सूंड के समान लिंग को कान्ता की योनि में प्रविष्ट करके आनन्दविग्रह वीर कान्ता का भी आनन्द से तर्पण करे। यह कार्य श्रीचक्र में वीरों के सामने होता है। हे कुलेश्वरि! ॐ के साथ निम्न मन्त्रराज का पाठ करे—

ॐ धर्माधर्महविर्दीप्ते स्वात्माग्नौ मनसा स्रुचा।
सुषुम्नावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तीं जुहोम्यहम् स्वाहा।।

इसके बाद मूल मन्त्र का जप परा देवी का स्मरण करके करे। इस मैथुन से साधक सिद्ध होता है। मैथुन के बाद मूल मन्त्र का जप करे और इस मन्त्र का पाठ करे—

ॐ परमानन्दकारणमप्रकाशाप्रकाशहस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनी स्रुचं धर्माधर्मकलास्नेहपूर्णां वह्नौ जुहोम्यहम् स्वाहा ॐ। स्वाहा के बाद वीर्य लेकर श्रीचक्र में देवी का तर्पण करे। इस प्रकार सिद्धि प्राप्त होती है। इसके बाद कान्ता का पूजन-तर्पण और स्तुति करके परस्पर प्रणाम करे। संहारमुद्रा में साधक शक्ति के साथ वीरों का विसर्जन करे। इस प्रकार यह परम दिव्य शक्तिशोधन का वर्णन तुम्हारे स्नेहवश मैंने किया। इसे मुमुक्षुओं से भी गुप्त रखना चाहिये।।५५-६६।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में शक्तिशोधन-
विधि निरूपण नामक त्रयोविंश पटल पूर्ण हुआ।

•

अथ चतुर्विंशः पटलः

मालाशोधनमन्त्राः

मालाशोधनप्रस्तावः

श्रीभैरव उवाच

शृणुष्वावहिता भूत्वा मालाशोधनमुत्तमम्।
येन शोधनमात्रेण माला सिद्ध्यति सत्फला ॥१॥

मालाशोधन-प्रस्ताव—श्री भैरव ने कहा हे देवि! अब सावधानीपूर्वक उत्तम मालाशोधन का वर्णन सुनो, जिससे शोधन करते ही माला सत्फलों की सिद्धि देने वाली हो जाती है।।१।।

श्रीदेव्युवाच

माला कीदृग्विधा नाथ क्रियते कौलिकोत्तमैः।
कियत्फला कियत्संख्या सर्वं मे वक्तुमर्हसि ॥२॥

श्री देवी ने कहा कि हे नाथ! उत्तम कौलिक माला किससे बनावे। कितने दानों की माला किस वस्तु की बनावे—यह सब मुझे बतलाइये।।२।।

मालाया अक्षसंख्या

श्रीभैरव उवाच

नवान्ता वर्णिता संख्या कालोऽयं द्वादशावधिः।
माला जपस्य देवेशि रहस्यमिदमैश्वरम् ॥३॥
कालात्मा सविता प्रोक्तो वल्लभे जपदेवता।
द्वादशात्मा स सविता तदन्तावृत्तिरीरिता ॥४॥
माला रविफला प्रोक्ता संख्यया कौलिकेश्वरि।
आवर्तयेच्च नवधा तामेव जपसिद्धये ॥५॥

माला में मणियों की संख्या—श्री भैरव ने कहा—अङ्कों की संख्या नव होती है, काल बारह तक है। हे देवेशि! माला जप का यह रहस्य ईश्वरीय है। सूर्य काल की आत्मा है, जप का देवता है। सूर्य द्वादशात्मा है। इसलिये द्वादश आवृत्ति करनी चाहिये। हे कौलिकेश्वरि! माला को रविफला कहा गया है अर्थात् इसमें बारह मनके होते हैं और इसकी नव आवृत्ति से जप की सिद्धि होती है अर्थात् १०८ मणियों की माला बनानी चाहिये।।३-५।।

मालारहस्यकथनम्

अथान्तर्गुह्यमाचक्षे तव स्नेहेन पार्वति ।
मालारहस्यसर्वस्वं नाख्येयं यस्य कस्यचित् ॥६॥
रुद्राणां तु शतं चैकं भैरवाष्टकयोजितम् ।
कृत्वा मेरुं महारुद्रं जपमाला विनिर्मिता ॥७॥
न हन्याद् भैरवान् रुद्रैः रुद्रांश्च भैरवैस्तथा ।
अन्यथा जपहानिः स्याद्रुद्रस्य वचनं यथा ॥८॥
अष्टोत्कृष्टशतं देवि गोलकानां मुखं मुखे ।
पायुं पायौ निबध्नीयात् सूत्रे मन्त्रमनुस्मरन् ॥९॥
ऊर्ध्वे मेरुं महाकेतुं निबध्य कुलसुन्दरि ।
शङ्खमुक्ताप्रवालार्करुद्राक्षवरवीरुधाम् ॥१०॥
मणिकाञ्चनपद्माक्षनृदन्तानां यथाक्रमम् ।

मालारहस्य—मालारहस्य गुह्य है, तुम्हारे स्नेहवश इसे मैं बतलाता हूँ। माला के इस रहस्य को पूर्ण रूप से किसी को भी नहीं बतलाना चाहिये। सौ रुद्र, आठ भैरव, महारुद्र एवं एक को मेरु मानकर एक सौ नव मनकों की माला बनती है। रुद्रों के द्वारा भैरवों का और भैरवों के द्वारा रुद्रों का हनन नहीं करना चाहिये। अन्यथा जप में हानि होती है—ऐसा रुद्र का कथन है। एक सौ आठ गोल मनकों को मुख से मुख और पूँछ से पूँछ जोड़कर सूत्र में माला गूँथनी चाहिये। गूँथते समय मन्त्र का स्मरण करते रहना चाहिये। एक सौ आठ दानों के ऊपर मेरु बाँधना चाहिये, जो महाकेतु के समान हो। शङ्ख, मोती, मूँगा, अर्क, रुद्राक्ष, वरवीरुध, मणि, सोना, कमलगट्टा, नरदन्त के गोल मनकों की माला बनावे।।६-१०।।

मालामेरूनिरूपणम्

सर्वेषां गोलकानां च मेरुं रुद्राक्षमाचरेत् ॥११॥
नरदन्तविरोधानां मेरुं वाजिरदं चरेत् ।
षण्मासेनाक्षसूत्राणां शोधनं साधकश्चरेत् ॥१२॥
ततो जपेन्महाविद्यां कौलिको जपमालया ।
गुणैस्त्रिभिस्त्रिरावर्त्य षट्त्रिंशत्तत्त्वगोलकान् ॥१३॥
तारं मेरुं विदध्यात्तु तत्त्वमालासु कौलिकः ।
अष्टोत्कृष्टशते प्रौढा मालेयं देवि दुर्लभा ॥१४॥
प्रणवान्तरिता वर्णा देवि लोमानुलोमतः ।

वर्णिता मातृकामाला वेदादिहविराश्रिता ॥१५॥
तारद्वयं स्वरान्ते च दद्याल्लोमानुलोमतः ।
तारद्वयं च वर्गान्ते वर्णाद्यन्ते च तद्द्वयम् ॥१६॥
विधाय तुरगं मेरुं जपेच्छक्त्यर्णमालया ।
तारकामैः सम्पुटिता मालेयं गुरुवल्लभा ॥१७॥

मेरू-निरूपण—सभी प्रकार की मणियों में मेरु रुद्राक्ष का बनावे। नरदन्त की माला में मेरु अश्वदन्त का लगावे। छः महीनों के बाद पद्माक्षमाला के सूत्रों का शोधन करे। शोधन करके ही साधक माला से महाविद्या का जप करे। मालामनकों के बीच में साढ़े तीन लपेटी की गाँठ लगावे। छत्तीस तत्त्वों के रूप में छत्तीस मनकों को मानकर तीन आवृति में छतीसों तत्त्व आते हैं। इस प्रकार १०८ मनकों में ३६ तत्त्वों की तीन आवृत्ति होती है। मेरु को 'ॐ'कार मानना चाहिये। इस प्रकार तत्त्वमाला बनती है। १०८ दानों की माला दुर्लभ होती है। अनुलोम-विलोमरूप में दो वर्णों के बीच में प्रणव लगाकर जिस वर्णमाला पर जप किया जाता है, उसमें वेदादि हवि का वास होता है। प्रत्येक वर्ण के पहले और बाद में दो-दो प्रणव लगाकर और आठ वर्गों के आद्य वर्णों में ॐ लगाकर माला कल्पित करे। उसमें 'फट्' को मेरु बनावे। इसे शक्तिमाला कहते हैं। ॐ क्लीं से सम्पुटित वर्णमाला गुरु को प्रिय है।।११-१७।।

देवविशेषे मालाविशेषः

देवदेवस्य देवेशि स्वतन्त्रस्य महेशितुः ।
षडाननोद्भवास्ताराः षट् षडाम्नायसूचकाः ॥१८॥
चतुर्णामाश्रमाणां तु शङ्खार्कवरवीरुधाम् ।
रुद्राक्षाणां प्रकुर्वीत मालां सर्वार्थसिद्धिदाम् ॥१९॥
मुक्ताप्रवालसद्रत्न-हेमपद्माक्षशालिनाम् ।
पूर्वाम्नायादिभेदानां मालां कुर्याद्यथाक्रमम् ॥२०॥
लोमानुलोमवर्णानां द्वयोत्कृष्टशतं शिवे ।
तारकामेन संयोज्य ब्रह्मोत्कृष्टशतं शिवे ॥२१॥
क्षः सुमेरुं नियोज्यादौ वर्णलोमानुलोमकैः ।
स्वरवर्गयशाँल्लान्तान् योजयेत् परमेश्वरि ॥२२॥
श्रीशिवाक्षरमालेयं वर्णिता स्नेहतो मया ।
श्रीमहाषोडशीविद्यागुरूनादाय पार्वति ॥२३॥
षट्त्रिंशत्तत्त्वमात्राभिर्योजयेत् सप्तभिर्ग्रहैः ।

शिवामालेयमाख्याता शिवसायुज्यसिद्धये ॥२४॥
पञ्चषष्ट्यक्षरीवर्णांश्चत्वारिंशतिभैरवै: ।
त्र्यधिकैर्योजयेन्माला भैरवीयमुदाहृता ॥२५॥

देवता के अनुरूप माला—हे देवेशि! देवदेव महेश्वर स्वतन्त्र हैं। उनके छ: मुखों से छ: प्रणव निकले, जो षडाम्नायों के सूचक हैं। चारो आश्रमों के लिये शङ्ख, अर्क, करवीर, वीरुध और रुद्राक्ष की माला सर्वार्थसिद्धिदायिका कही गई है। पूर्वाम्नायादि भेदों से क्रमानुसार मोती, मूंगा, रत्न, सोना एवं पद्माक्ष की माला प्रशस्त कही गई है। पचास मातृका को अनुलोम-विलोम करने पर एक सौ होता है। ब्रह्मोत्कृत माला बनाने के लिये वर्णों के साथ ॐ लगाकर जप करे। वर्णों के विलोमानुलोम माला में सुमेरु 'क्ष' को माना जाता है। स्वर १६, वर्ग ८, य र ल व श ष स ह ळ के योजन से शिवाक्षर माला बनती है। महाषोडशी माला बनाने के लिये छत्तीस तत्त्वात्मक वर्णों के साथ सात ग्रहों के वर्णों को भी जोड़ना चाहिये। यह शिवमाला शिवसायुज्य सिद्धि देती है। पैंसठ अक्षरी वर्णों के साथ चालीस भैरववर्णी के योजन से भैरवी माला बनती है।।१८-२५।।

करमालानिर्णय:

अनामिकाद्वयं पर्व कनिष्ठादिक्रमेण तु ।
तर्जनीमूलपर्यन्तं करमालेयमाहृता ॥२६॥
दशांशं सञ्जपेद् देवि केवलं करमालया ।
अनामिकाद्वयं पर्व कनिष्ठादिक्रमेण तु ॥२७॥
तर्जनीमूलपर्यन्तं जपेद् द्वादशपर्वसु ।
कनिष्ठिकाचतुष्पर्वानामापर्वत्रयं तथा ॥२८॥
मध्यमापर्व देव्येकं तर्जन्याश्च चतुष्टयम् ।
संयोज्य सञ्जपेद् विद्यां मन्त्री द्वादशपर्वसु ॥२९॥
शक्तिमालेयमाख्याता त्यक्त्वा पर्वचतुष्टयम् ।
दुर्गावृत्त्या जपेद् देवि सहस्राद्ययुतावधि ॥३०॥

करमाला—अनामिका के दूसरे पोर से प्रारम्भ करके दो, कनिष्ठा के तीन पोर, अनामिका का तीसरा पर्व, मध्यमा के तीन पोर और तर्जनी का मूल पर्व मिलाने से १० मनकों की माला बनती है। इसे करमाला कहते हैं। करमाला से केवल दशांश जप करे। अनामिका के दो पर्व, कनिष्ठा के तीन पर्व, अनामिका का एक पर्व, मध्यमा का तीन पर्व और तर्जनी के तीन पर्व के योजन से बारह पर्वों की माला बनती है। इस माला से भी जप करना चाहिये। कनिष्ठा के चार पर्व, अनामिका के तीन पर्व,

मध्यमा का एक पर्व और तर्जनी के चार पर्व का योजन करके साधक बारह पर्वों पर जप करे। इनमें से चार पर्वों को छोड़ देने से यह शक्तिमाला होती है। इस माला पर दुर्गावृत्ति से जप एक हजार या दस हजार करना चाहिये।।२६-३०।।

कुलिकत्यागकथनम्

दिक्पालाश्च गृहाश्चाष्टौ सन्ति षोडशपर्वसु।
प्रलम्बपर्वत्रितये त्रयो देवाः समाहिताः ॥३१॥
क्रूरग्रहौ च मन्दारौ दिक्पालौ यमनिर्ऋती।
कुलिकश्चेति विख्यातो जपहानिकरो मतः ॥३२॥
कुलिकं सन्त्यजेद् देवि मन्त्री करजपे सदा।
कनिष्ठामूलपर्वादिक्रमेण करगाः सुराः ॥३३॥
तान् शृणुष्व महादेवि यथावद्वर्ण्यते मया।
ईशानोऽग्निर्निर्ऋतिश्च वायुरिन्द्रो यमस्तथा ॥३४॥
वरुणश्च कुबेरश्च सूर्यः सोमो बुधो गुरुः।
सितराह्वारसौरान्ता ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥३५॥
जपसिद्धिकरा देवि सकलाः करदेवताः।
कुलिकं सन्त्यजेद् देवि जपकाले स्वसिद्धये ॥३६॥
कुलिको मुद्गरो ज्ञेयो मुद्गरे तु महद्भयम्।
मुद्गरोल्लङ्घने शक्तिर्महारुद्रस्य केवलम् ॥३७॥
कुलिकं च महाकेतुं मेरुरूपं न लङ्घयेत्।
अन्यथा देवि मन्त्री च देवताशापमाप्नुयात् ॥३८॥

कुलिक का त्याग—सोलह पर्व आठ दिक्पालों के गृह हैं। तीन पर्वों में तीनों देवता का वास है। क्रूर ग्रहों में शनि, दिक्पालों में यम और निर्ऋति—ये तीनों कुलिक नाम से विख्यात हैं। इनका जप हानिकारक होता है। हे देवि! करमाला के जप में साधक कुलिक का त्याग करे। कनिष्ठा मूलपर्वादि क्रम से हाथ में देवता रहते हैं। महादेवि! उसे आप सुनिये, मैं वर्णन करता हूँ। ईशान, अग्नि, निर्ऋति, वायु, इन्द्र, यम, वरुण, कुबेर, सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, राहु, शनि, ब्रह्मा, विष्णु, महेश का वास हाथ में होता है। ये सभी देवता जपसिद्धिकारक होते हैं। अपनी सिद्धि के लिये जपकाल में कुलिक का त्याग करना चाहिये। कुलिक को मुद्गर कहा जाता है। मुद्गर महाभयजनक है। केवल शक्ति और महारुद्र के जप में मुद्गर का लङ्घन किया जा सकता है। कुलिक महाकेतु रूप में सुमेरु है। इसका लङ्घन कभी न करे; अन्यथा साधक को देवता शाप देते हैं।।३१-३८।।

मालाशोधनकथनम्

अथ षाण्मासिकीं शुद्धिं मालानां ते ब्रवीम्यहम्।
यया सिद्धिर्भवेद् देवि देवानामपि दुर्लभा ॥३९॥
मालाशोधनकाले तु गत्वा प्रेतालयं सुधीः।
विधाय भस्मना स्नानं जलेन मन्त्रितेन वा ॥४०॥
तत्र स्नात्वोपविश्याथ कृत्वा विष्टरशोधनम्।
भूतशुद्धिक्रमोपेतं प्राणार्पणविधिं ततः ॥४१॥
देहशुद्धिं विधायाथ मन्त्रसङ्कल्पमाचरेत्।

मालाशोधन—अब माला के छमाही शोधन का वर्णन मैं करता हूँ। इस शोधन से देवों को भी दुर्लभ सिद्धि साधक को प्राप्त होती है। मालाशोधन के लिये साधक श्मशान में जाकर भस्मस्नान करे या मन्त्रित जल से स्नान करे। स्नान के बाद बैठने के लिये आसन का शोधन करे। तब भूतशुद्धि करके प्राणप्रतिष्ठा करे। देहशुद्धि करके मन्त्र-सङ्कल्प करे।।३९-४१।।

मालामन्त्रर्ष्यादिकथनम्

मालाशोधनमन्त्रस्य ऋषिः कालाग्निरुद्रकः ॥४२॥
छन्दोऽनुष्टुब् महादेवि देवी श्मशानभैरवी।
कालरात्रीति विख्याता मुण्डमालाविलासिनी ॥४३॥
हरितं बीजमाख्यातं नलिनी शक्तिरीरिता।
सूर्याख्यं कीलकं मालाशुद्धये विनियोगकः ॥४४॥
ऋषिच्छन्दोदैवतादिन्यासं कुर्यात् कुलार्थवित्।
अङ्गन्यासं विधायाथ करन्यासादिपूर्वकम् ॥४५॥
विधायासनशुद्धिं च भूतशुद्धिक्रमं चरेत्।
प्राणान् देवि प्रतिष्ठाप्य श्रीचक्रार्चनमाचरेत् ॥४६॥
योगपीठार्चनं कृत्वा द्रव्यादीनि विशोधयेत्।
क्षेत्रेश-योगिनीवृन्दं सन्तर्प्य कुलसुन्दरि ॥४७॥
लयाङ्गं पूजयेद् देवि पूजान्ते सञ्जपेन्मनुम्।

मालायन्त्र के ऋषि आदि—इस मालाशोधनमन्त्र के ऋषि कालाग्नि रुद्र, छन्द अनुष्टुप् एवं देवता श्मशानभैरवी है, जो कालरात्रि के नाम से प्रसिद्ध है और मुण्डमाला-विलासिनी है। इसका बीज ह्सौः, शक्ति ठः एवं कीलक सूर्य है तथा माला की शुद्धि के लिये इसका विनियोग किया जाता है।

कुलाचार ज्ञानी ऋषि छन्द-देवतादि न्यास करे। करन्यास करके अङ्गन्यास करे। आसनशुद्धि करे। भूतशुद्धि करे। प्राणप्रतिष्ठा करे। तब श्रीचक्रार्चन करे। योगपीठ का अर्चन करके द्रव्यादि का शोधन करे। क्षेत्रपाल और योगिनीवृन्द का तर्पण करे। कुलसुन्दरी की लयाङ्ग पूजा करे। पूजा के बाद मन्त्रजप करे।।४२-४७।।

मालाया देवेदेवेशि यथाम्नायं यथाविधि ॥४८॥
श्रीचक्रोपरि संस्थाप्य शोधयेत् कलशामृतैः ।
मालामूलेण देवेशि मूलमन्त्रेण साधकः ॥४९॥
मालामन्त्रान् प्रवक्ष्येऽहं शृणुष्वावहिता प्रिये ।

हे देवेदेवेशि! यथाम्नाय यथाविधि माला को श्रीचक्र पर स्थापित करके कलश के अमृत से उसका शोधन करे। शोधन मालामन्त्र के जप से करे। अब विहित मालामन्त्रों का वर्णन एकाग्र मन से सुनो।।४८-४९।।

शङ्खमालाशोधनमन्त्रकथनम्

तारं रमा रमा तारं शङ्खिनीति-पदं वदेत् ॥५०॥
तारं मा तारमन्तेऽपो मन्त्रोऽयं शङ्खमालिकः ।

शङ्खमाला-शोधन मन्त्र— ॐ श्रीं श्रीं ॐ शङ्खिनि ॐ श्रीं ॐ।।५०।।

मुक्तामालाशोधनमन्त्रकथनम्

तारं लज्जा-युगं तारं मुक्तामालिनि मायुगम् ॥५१॥
ठद्वयं मन्त्रराजाऽयं मुक्तामालाविशोधनः ।

मुक्तामाला-शोधन मन्त्र— ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ मुक्तामालिनि श्रीं श्रीं स्वाहा।।५१।।

रोध्रमालाशोधनमन्त्रकथनम्

तारं वधूं च वेदाद्यं रौद्रे च रोध्रमालिनि ॥५२॥
अब्धिबीजं ठद्वयं च मन्त्रोऽयं रौध्रमालिकः ।

रोध्रमालिका-शोधन मन्त्र— ॐ स्त्रीं ॐ रौद्रे रोध्रमालिनि रूं स्वाहा।।५२।।

स्फटिकमालाशोधनमन्त्रकथनम्

तारं मात्राद्यमुच्चार्य सूर्याख्याबीज-युग्मकम् ॥५३॥
अर्कमाले हरं नीरं मन्त्रः स्फदिकशुद्धिकृत् ।

स्फटिकमाला-शोधन मन्त्र— ॐ ॐ ह्रां ह्रां अर्कमाले फट् स्वाहा।।५३।।

रुद्राक्षमालाशोधनमन्त्रकथनम्

तारमब्धिरमामाया: सिन्धुं रुद्राक्षमालिनि ॥५४॥
शुद्धा भव वनं मन्त्रो देवि रुद्राक्षशोधन: ।

रुद्राक्षमाला-शोधन मन्त्र—ॐ रूं श्रीं ह्रीं रूं रुद्राक्षमालिनि शुद्धा भव स्वाहा।।५४।।

तुलसीमालाशोधनमन्त्रकथनम्

तारं तारात्रयं तारं वधूं तुलसि वैष्णवि ॥५५॥
वौषड् वनं महामन्त्रस्तुलसीशोधनाभिध: ।

तुलसीमाला-शोधन मन्त्र—ॐ त्रों त्रों त्रों ॐ स्त्री तुलसी वैष्णवी वौषट् स्वाहा।।५५।।

मणिमालाशोधनमन्त्रकथनम्

तारं तारा च मृद्वीका मणिमाले मनोहरे ॥५६॥
ठद्वयं मन्त्रराजोऽयं मणिमालाविशोधन: ।

मणिमाला-शोधन मन्त्र—ॐ ॐ ह्रीं मणिमाले मनोहरे स्वाहा।।५६।।

सुवर्णमालाशोधनमन्त्रकथनम्

वेदाद्यं कमला कुन्ती वाग्बीजं कामशक्तिकम् ॥५७॥
सुवर्णमाले शक्त्यापो मन्त्रोऽयं स्वर्णशोधन: ।

स्वर्णमाला-शोधन मन्त्र—ॐ श्रीं क्रीं ऐं क्लीं सौ: सुवर्णमाले सौ: स्वाहा।।५७।।

पद्माक्षमालाशोधनमन्त्रकथनम्

तारं च वायुपूज्या च तारं पद्माक्षमालिनि ॥५८॥
हरितं ठद्वयं मन्त्रो देवि पद्माक्षशोधन: ।

पद्माक्षमाला-शोधन मन्त्र—ॐ प्रीं ॐ पद्माक्षमालिनि ह्सौ स्वाहा।।५८।।

नरदन्त-मुण्डमालाशोधनमन्त्रकथनम्

तारत्रयं मा-त्रयं च कामराजत्रयं शिवे ॥५९॥
शिव: शक्तिर्दन्तमाले मुण्डमाले च वागुरा ।
वधूर्वस्त्रं वनं मन्त्रो नरदन्तविशुद्धिकृत् ॥६०॥

नरदन्तमाला-मुण्डमालाशोधन मन्त्र—ॐ ॐ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं क्लीं क्लीं क्लीं ह्रां सौ: दन्तमाले मुण्डमाले प्रीं स्त्रीं ह्सौ: स्वाहा।।५९-६०।।

मालाशोधने कर्त्तव्यः

पृथङ् पृथङ् महामन्त्रैः श्रीचक्रस्थां महेश्वरि।
मालां संशोध्य सम्पूज्य मूलं जप्त्वा दशांशतः ॥६१॥
गन्धाक्षतप्रसूनैश्च पूजयेत् कौलिकोत्तमः।

माला-शोधन के समय प्रत्येक माला को अलग-अलग श्रीचक्र पर स्थापित करके उसके महामन्त्र से शोधन करे, पूजन करे और मूल मन्त्र का दश बार जप करे। जप के पश्चात् गन्ध, अक्षत, पुष्प से उसका पूजन करे।।६१।।

सर्वमालाशोधनमन्त्रः

ॐमाले माले महामाले सर्वतत्त्वस्वरूपिणि ॥६२॥
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।
स्वाहान्तोऽयं महामन्त्रः सर्वमालाविशोधनः ॥६३॥

सर्वमाला-विशोधन मन्त्र—ॐ माले माले महामाले सर्वतत्त्वस्वरूपिणि। चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्ये सिद्धिदा भव स्वाहा। यह महामन्त्र समस्त मालाओं को शुद्ध करने वाला है।।६२-६३।।

अन्यमालाशोधनमन्त्रः

शिवबीजं समुच्चार्य ततोऽविघ्नं कुरु स्मरेत्।
मे ठद्वयं महामन्त्रः सदा मालाविशोधनः ॥६४॥

सर्वमाला-शोधन महामन्त्र—ह्रां अविघ्नं कुरु स्वाहा। यह माला को शुद्ध करने का सामान्य मन्त्र है।।६४।।

एवं संशोध्य संस्कृत्य सम्पूज्य कुलसुन्दरि।
मालामादाय देवेशि सञ्जपेदर्धरात्रके ॥६५॥

हे कुलसुन्दरि! इस प्रकार माला का शोधन, संस्कार और पूजन करने के पश्चात् माला लेकर आधी रात में जप करना चाहिये।।६५।।

श्रीदेव्युवाच

करमालास्त्वया प्रोक्ता बह्व्यस्तासां च शोधनम्।
वद देव कथं कुर्यात् कौलिकः सर्वसिद्धये ॥६६॥

श्रीदेवी ने कहा कि हे देवि! करमालाओं का वर्णन तो आपने किया; पर उनकी शोधनविधि का वर्णन नहीं किया। हे देव! साधक करमाला का शोधन कैसे करता है इसे बताने की कृपा करें।।६६।।

करमालाशोधनमन्त्रकथनम्

श्रीभैरव उवाच

काली कामः कृपा कुन्ती करमाले हरं वनम्।
मन्त्रोऽयं करमालायाः शुद्धिदः सर्वसिद्धिदः ॥६७॥

करमाला-शोधनमन्त्र—श्री भैरव ने कहा कि सर्वसिद्धिप्रद करमाला का शोधन मन्त्र इस प्रकार है—क्रीं क्लीं ऋं क्रीं करमाले फट् स्वाहा।।६७।।

मालाशोधनावधिकथनम्

षण्मासेनैव मालानां शोधनं साधकश्चरेत्।
ततो जपेन्महाविद्यां सर्वसिद्धीश्वरो भवेत्॥६८॥
इदं तत्त्वं हि तत्त्वानां सर्वस्वं पारदैवतम्।
तव भक्त्या मयाख्यातं नाख्येयं ब्रह्मवादिभिः ॥६९॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये मालातन्मन्त्रादिशोधन-
निरूपणं नाम चतुर्विंशः पटलः॥२४॥

मालाशोधन की अवधि—साधक प्रत्येक माला का शोधन छः माह पर करे। इसके बाद जप करे। महाविद्या के जप से साधक सिद्धीश्वर होता है। इस प्रकार यह परदेवता के तत्त्वों का सर्वस्वभूत तत्त्व बतलाया गया। इसे ब्रह्मवादियों को भी नहीं बतलाना चाहिये।।६८-६९।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में मालामन्त्रादिशोधन निरूपण नामक चतुर्विंश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ पञ्चविंशः पटलः

यन्त्रशोधन-जप-पूजाकालः

यन्त्रशोधनप्रस्तावः

श्रीभैरव उवाच

अधुना देवदेवेशि यन्त्रशोधनमुत्तमम्।
वक्ष्यामि तव भक्त्याहं कौलिकानां हिताय च ॥१॥

यन्त्रशोधन-प्रस्ताव—श्री भैरव ने कहा—हे देवदेवेशि! तुम्हारे स्नेहवश और कौलिकों के हितार्थ अब मैं उत्तम यन्त्रशोधन-विधि का वर्णन करता हूँ।।१।।

अष्टधा धातुयन्त्रोल्लेखनम्

सौवर्णं राजतं ताम्रं स्फाटिकं रौध्रिकं तथा।
कापालिकं च पाशासं श्रीचक्रं वैष्णवाश्मिकम् ॥२॥
एतेष्वष्टसु दिव्येषु योगपीठेषु पार्वति।
विभावयेन्महायन्त्रं दैवं भौमं च भाविकम् ॥३॥
ऊर्ध्वरेखमधोरेखं तृतीयं गन्धचित्रितम्।
त्रिविधं यन्त्रमीशानि सुसिद्धं सिद्धसाध्यकम् ॥४॥

यन्त्रनिर्माण के आठ धातु—सोना, चाँदी, ताँबा, स्फटिक, रोध्र, कपाल, पाशास, वैष्णवाश्म—ये आठ धातु दिव्य योगपीठ हैं। दैव, भौम और काल्पनिक महायन्त्र भी पूजन के योग्य हैं। यन्त्र का निर्माण ऊर्ध्व रेखा, अधोरेखा और गन्ध से चित्रित होता है। हे ईशानि! तीनों प्रकार के यन्त्र सुसिद्ध, सिद्ध और साध्य होते हैं।।२-४।।

धातुनिर्मितयन्त्रशोधनकालकथनम्

सहस्राभं च पाशासं शोधयेदुत्तरायणे।
पञ्चमे पञ्चमे देवि ततः सिद्धिप्रदं भवेत् ॥५॥
शराङ्कुशं वैष्णवाश्मं शोधयेद् दक्षिणायने।
चतुर्थे च चतुर्थे च ततः सिद्धिमवाप्नुयात् ॥६॥
सौवर्णं स्फाटिकं यन्त्रं वर्षान्ते शोधयेत् सुधीः।
राजतं ताम्रिकं यन्त्रं षण्मासान्ते च शोधयेत् ॥७॥

एवं मयोक्तकालेषु शोधयेद् यन्त्रमीश्वरि।
सिद्धये कौलिको देवि यथावद्वर्ण्यते मया ॥८॥

यन्त्रशोधन काल—उत्तरायण में सहस्राभ और पाशास का शोधन करे। पाँच-पाँच महीनों पर शोधित होने पर यन्त्र सिद्धिप्रद होते हैं। शराङ्कुश और वैष्णवाश्म का शोधन दक्षिणायन में करे। चार-चार महीनों पर इनका शोधन करने से ये सिद्धिप्रदायक होते हैं। सोने और स्फटिक से निर्मित यन्त्रों का शोधन एक-एक वर्ष पर करे। छः छः महीनों पर चाँदी और ताम्बे के यन्त्रों का शोधन करे। हे ईश्वरि! मेरे द्वारा निश्चित इन्हीं कालों में यन्त्र का शोधन करना चाहिये। कौलिकों की सिद्धि के लिये इनका वर्णन यथावत् किया गया।।५-८।।

यन्त्रशोधनमन्त्रर्ष्यादिकथनम्

यन्त्रशोधनमन्त्रस्य ऋषिः प्रोक्तो मया शिवः।
त्रिष्टुप् छन्द इति ख्यातं पराशक्तिश्च देवता ॥९॥
रमा बीजं परा शक्तिः कामः कीलकमीश्वरि।
श्रीचक्रशुद्धिसिद्ध्यर्थं विनियोगः प्रकीर्तितः ॥१०॥

यन्त्रशोधन मन्त्र—यन्त्रशोधन का ऋषि मैं शिव हूँ। छन्द त्रिष्टुप्, देवता पराशक्ति, श्रीं बीज, शक्ति ह्रीं, क्लीं कीलक है। श्रीचक्रशुद्धि-सिद्धि के लिये कहा गया विनियोग है।।९-१०।।

यन्त्रस्थापनं तच्छुद्धिश्च

मुन्यादिना चरेन्न्यासं करन्यासं षडङ्गकम्।
ततो विष्टरशुद्धिं च प्राणार्पणविधिं चरेत् ॥११॥
इष्टर्षिदेवतान्यासं कराङ्गन्यासमाचरेत्।
विधाय मातृकान्यासं लयाङ्गन्याससंयुतम् ॥१२॥
अर्धनारीश्वरन्यासं षोढान्यासमतः परम्।
मूलत्रिखण्डकं न्यासं कृत्वा प्राणचयं शिवे ॥१३॥
पीठपूजां स्वहृदये कृत्वा षट्चक्रदीपनम्।
स्वर्णसिंहासने स्थाप्य श्रीचक्रं स्वेष्टदैवतम् ॥१४॥
शोधयेन्मधुना देवि कुण्डगोलोद्भवेन वा।
अष्टगन्धेन वा देवि पौरुषेण रसेन वा ॥१५॥
इभ्याज्येन महादेवि संस्थाप्य कुलपूजिते।
श्रीचक्रं मूलमन्त्रेण पूजयेत् तत्र कौलिकः ॥१६॥

यन्त्रस्थापन एवं उसकी शुद्धि— विनियोग के बाद ऋष्यादि न्यास, करन्यास, षडङ्ग न्यास करे। इसके बाद आसनशुद्धि, भूतशूद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, इष्टन्यास, ऋषिन्यास, करन्यास और अङ्गन्यास करे। मातृकान्यास करके लयाङ्ग न्यास, अर्द्धनारीश्वर न्यास एवं षोढ़ा न्यास, मूलमन्त्र को तीन भाग करके न्यास करके यन्त्र की प्राणप्रतिष्ठा करे। अपने हृदय में पीठपूजा करके षट्चक्र को दीपित करे। हृदयपीठ पर श्रीचक्र कल्पित करके उस पर अपने इष्टदेवता को स्थापित करे। श्रीचक्र का शोधन मद्य से या कुण्डगोलोद्भव रज से करे। अथवा अष्टगन्ध से या पुरुषवीर्य से शोधन करे। श्रीचक्र में गोघृत लगाकर कुलपूजा के लिये उसे स्थापित करे। तब कौलिक श्रीचक्र का पूजन मूल मन्त्र से करे।।११-१६।।

स्वर्णयन्त्रशोधनमन्त्रकथनम्

वाग्भवं शक्तिबीजं वाक्शक्तिं चक्रेश्वरि प्रिये।
यन्त्रं सौवर्णमुद्धृत्य शोधय-द्वयमुद्धरेत् ॥१७॥
ठद्वयं स्वर्णयन्त्रस्य मन्त्रः शोधनकारकः ।

स्वर्णयन्त्र-शोधन मन्त्र—ऐं सौः ऐं सौः चक्रेश्वरि यन्त्रसौवर्णं शोधय शोधय स्वाहा—यह स्वर्णयन्त्र का शोधन मन्त्र है।।१७।।

रजतयन्त्रशोधनमन्त्रकथनम्

तारं सिन्धुं च तारं च राजतं यन्त्रमुद्धरेत् ॥१८॥
शोधय-द्वयमापश्च यन्त्रशोधनको मनुः ।

चाँदी-यन्त्रशोधन मन्त्र—ॐ रूं ॐ राजतं यन्त्रं शोधय शोधय स्वाहा। यह रजत यन्त्र के शोधन का मन्त्र है।।१८।।

ताम्रयन्त्रशोधनमन्त्रकथनम्

तारं तारा च तारं च वधूं तारं च तारका ॥१९॥
ताम्रेश्वरीति यन्त्रं मे शोधयापो महामनुः ।

ताम्रयन्त्र-शोधन मन्त्र—ॐ त्रीं ॐ स्त्रीं ॐ श्रीं ताम्रेश्वरि यन्त्रं मे शोधय स्वाहा। यह ताम्रनिर्मित यत्र के शोधन का मन्त्र है।।१९।।

स्फटिकयन्त्रशोधनमन्त्रकथनम्

वेदाद्यं कमलां मायां तारं यन्त्रं कुलाम्बिके ॥२०॥
शोधय-द्विर्वनं मन्त्रः स्फाटिकाश्मविशोधनः ।

स्फटिकयन्त्र-शोधन मन्त्र—ॐ श्रीं ह्रीं ॐ यन्त्रं कुलाम्बिके शोधय शोधय स्वाहा। यह स्फटिक-निर्मित यन्त्र के शोधन मन्त्र है।।२०।।

रोध्रयन्त्रशोधनमन्त्रकथनम्

प्रणवं कूवरीबीजं मा माया वायुपूजिता ।।२१।।
रुद्रेश्वरि परा यन्त्रं शोधयापो मनुः स्मृतः ।

रोध्रयन्त्र-शोधन मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं प्रीं रुद्रेश्वरि ह्रीं यन्त्रं शोधय स्वाहा। यह रोध्रनिर्मित यन्त्र के शोधन का मन्त्र है।।२१।।

कपालयन्त्रशोधनमन्त्रकथनम्

तारं वाक् कामराजश्च शक्तिः कपालमालिनि ।।२२।।
यन्त्रं शोधय ठद्वन्द्वं कपालशोधनो मनुः ।

कपालयन्त्र-शोधन मन्त्र—ॐ ऐं क्लीं सौः कपालमालिनि यन्त्रं शोधय स्वाहा। यह कपालयन्त्र के शोधन का मन्त्र है।।२२।।

पाशांसयन्त्रशोधनमन्त्रकथनम्

तारं गौरी च तार्तीयं वाक् कामश्च चितासने ।।२३।।
यन्त्रं शोधय ठद्वन्द्वं मनुः पाशांसशोधनः ।

पाशांसयन्त्र-शोधन मन्त्र—ॐ गं सौः ऐं क्लीं चितासनयन्त्रं शोधय स्वाहा। यह पाशांसयन्त्र के शोधन का मन्त्र है।।२३।।

वैष्णवशिला-(शालग्राम)-यन्त्रशोधनमन्त्रकथनम्

वेदाद्यं हरितं वाणी शक्तिः कामो रमा रमा ।।२४।।
नित्ये विष्णुशिलायन्त्रं शोधयापो मनुः स्मृतः ।

शालग्रामयन्त्र-शोधन मन्त्र—ॐ ह्सौः ऐं सौः क्लीं श्रीं श्रीं नित्ये विष्णुशिलायन्त्रं शोधय स्वाहा। यह विष्णु शिलायन्त्र के शोधन का मन्त्र है। विष्णुशिला शालग्राम को कहा जाता है।।२४।।

इत्येवं यन्त्रमीशानि रत्नसिंहासनस्थितम् ।।२५।।

हे ईशानि! रत्नसिंहासनस्थित यन्त्र का वर्णन समाप्त हुआ।।२५।।

मूलमन्त्रेण संस्नाप्य पूर्वोक्तौषधवारिणा ।
मन्त्रैरेभिः प्रजप्तैश्च पूजयेद् गन्धमाल्यकैः ।।२६।।
सम्पूज्य देवि संशोध्य ततः पूजां शिवोदिताम् ।

यथोक्तां साधकः कुर्याद् द्रव्यशोधनपूर्वकम् ॥२७॥
अष्टाङ्गपूजां निर्माय निशीथे जपमाचरेत् ।

मूल मन्त्र के द्वारा पूर्वोक्त औषध-जल से यन्त्र को धोकर इनके मन्त्रों का जप करके गन्ध-पुष्प से पूजन करे। पूजा के बाद उनका शोधन करे। इस प्रकार शिवोक्त वचन सार्थक होता है। यथोक्त रीति से द्रव्य-शोधन करके अष्टाङ्ग पूजा करके निशीथ में जप करना चाहिये।।२६-२७।।

निशीथकालनिर्णयविषयकप्रश्नः

श्रीभैरव्युवाच

भगवन् कुलकौलेश भैरवाष्टकमध्यग ।
निशीथकालं मे ब्रूहि संशयोऽयं महान् मम ॥२८॥

निशीथ-काल-विषयक-प्रश्न—श्री भैरवी ने कहा कि हे भगवन् कुलकौलेश! भैरवाष्टक के बीच में मुझे निशीथकाल बतलाइये, इस विषय में मुझे महान् संशय है।।२८।।

निशीथ-अर्धरात्रिकालनिर्णयः

श्रीभैरव उवाच

अर्धरात्रस्तु त्रिविधो यन्मुहूर्तचतुष्टयम् ।
निशीथो वार्धरात्रश्च तृतीयैव महानिशा ॥२९॥
द्वितीये च तृतीये च यामे यामलभैरवि ।
मुहूर्ते द्वे समादाय तथा द्वे च महेश्वरि ॥३०॥
द्वे मुहूर्ते निशीथस्तु परतो द्वे मुहूर्तके ।
अर्धरात्रो मुहूर्ते द्वे पूजार्हः परमेश्वरि ॥३१॥
मुहूर्तैकं समादाय परतश्चैकमीश्वरि ।
यामद्वयादर्धरात्रो वर्णितः कौलसिद्धये ॥३२॥

निशीथ एवं अर्धरात्रि-काल-निर्णय—श्री भैरव ने कहा कि अर्द्धरात्रि तीन प्रकार की होती है, जिसमें चार मुहूर्त अर्थात् आठ घटी अर्थात् तीन घण्टे बारह मिनट के काल को १. निशीथ, २. अर्द्धरात्र, ३. महानिशा कहते हैं। रात के दूसरे और तीसरे दो प्रहरों के दो-दो मुहूर्तों से पहले दो मुहूर्त को निशीथ कहते हैं और इसके बाद के दो मुहूर्तों को आधी रात कहते हैं। यह समय पूजा के योग्य होता है। इसमें दूसरे प्रहर का एक मुहूर्त और तीसरे प्रहर का एक मुहूर्त होता है। कौलिकों की सिद्धि के लिये यह उत्तम होता है।।२९-३२।।

महानिशाकालनिर्णय:

शिवे मध्यमयो: सन्धिर्यामयोर्या महानिशा।
तस्यां परां जपेद्यस्तु स भवेच्छिवसन्निभ: ॥३३॥

दूसरे प्रहर की एक घटी और तीसरे प्रहर की एक घटी के मिलन से जो मुहूर्त बनता है, उसे महानिशा कहते हैं। इस काल में परा विद्या के जप से साधक शिव के समान हो जाता है।।३३।।

निशीथादौ जपफलम्

निशीथे पूजयेद्यन्त्रमर्धरात्रे जपेन्मनुम्।
महानिशायां प्रजपेत् परां कौलिकसत्तम: ॥३४॥
किं किं न साधयेल्लोके यन्ममापि हि दुर्लभम्।
रज: शुक्रं सुरां देवि मांसं मीनं च मैथुनम् ॥३५॥
सर्वथा शोधयेद् देवि मूलमन्त्रेण मान्त्रिक:।
पिबेन्मद्यं भजेद्रामां स्मरेद् भैरविभैरवम् ॥३६॥
नमेद्गुरुं जपेद् विद्यामिति कौलमतं परम्।
प्रात:कृत्यं शिवे कृत्वा श्रीचक्रं पूजयेत् तत: ॥३७॥

निशीथादि में जप का फल—निशीथ में यन्त्रपूजा, अर्द्धरात्रि में मन्त्रजप एवं महानिशा में परा विद्या का जप कौलिक को करना चाहिये। रज, वीर्य, सुरा, मांस, मछली, मैथुन से कौन-कौन सिद्धि नहीं मिलती? मेरे लिये भी जो दुर्लभ है, वह भी साधकों को मिलती है। इन द्रव्यों का शोधन यान्त्रिक को मूल मन्त्र द्वारा ही करना चाहिये। मद्यपान करे, रमणी से रमण करे और भैरव-भैरवी का स्मरण करे। गुरु को प्रणाम करे एवं विद्या का जप करे। यही श्रेष्ठ कौलमत है। हे शिवे! साधक प्रात:कृत्य करके श्रीचक्र का पूजन करे।।३४-३७।।

महानिशाजपप्रशंसा

जपेन्मन्त्री महाविद्यां स्तोत्रपाठं चरेत् तत:।
परां जपेत् सदा सत्यां ततो याति परं पदम् ॥३८॥
महापदि महोत्पाते महाशोके महामये।
महामोहे महाऽसौख्ये महादारिद्र्यसङ्कटे ॥३९॥
महारण्ये महाशून्ये महाऽज्ञाने महारणे।
दुरापदि दुराशे च दुर्भिक्षे दुर्निमित्तके ॥४०॥

समस्तक्लेशसङ्घाते स्मरेद् देवि पराम्बिकाम्।
वक्त्रे सरस्वती तस्य लक्ष्मीस्तस्य गृहे सदा।
धन्या च जननी तस्य येन देवी समर्चिता ॥४१॥
इदं सारं हि तन्त्राणां मन्त्राणां तत्त्वमुत्तमम्।
मयोदितं तव स्नेहान्नाख्येयं ब्रह्मवादिभिः ॥४२॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये भैरवभैरवीसंवादे परमार्थ-प्रदीपिकायां यन्त्रशोधनादिविधि-जप-पूजाकाल-निरूपणं नाम पञ्चविंशः पटलः॥२५॥

महानिशा-जप की प्रशंसा—साधक महाविद्या का जप करने के पश्चात् स्तोत्रपाठ करे। परा विद्या का सदैव जप करे। इससे परमपद प्राप्त होता है। यह सत्य है। महापद, महा उत्पात, महाशोक, महाभय, महामोह, महा सौख्य, महा दरिद्रता संकट, घोर जंगल, विकट पर्वत, महा अज्ञान, महा संग्राम, खराब आपदा, घोर निराशा, दुर्भिक्ष, मेरे द्वारा निर्मित काल के सभी क्लेशों के आने पर देवी पराम्बिका का स्मरण करे। इससे साधक के मुख में सरस्वती और घर में लक्ष्मी का वास होता है। उस साधक की जननी धन्य है, जो देवी का अर्चन करता है। तन्त्रों और मन्त्रों का सार यह उत्तम तत्त्व है। हे देवि! तुम्हारे स्नेहवश इसका वर्णन मैंने किया है। इसे ब्रह्मवादियों को भी नहीं बतलाना चाहिये।।३८-४२।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में यन्त्रशोधनादि-जप-पूजानिरूपण नामक पञ्चविंश पटल पूर्ण हुआ।

•

समाप्तमिदं पूर्वार्धम्

रुद्रयामलतन्त्रोक्तं

श्रीदेवीरहस्यम्

(उत्तरार्द्धम् : षड्विंशाध्यायतः ग्रन्थान्तम्)

- गणपतिपञ्चाङ्गम्
- सूर्यपञ्चाङ्गम्
- लक्ष्मीनारायणपञ्चाङ्गम्
- मृत्युञ्जयपञ्चाङ्गम्
- श्रीदुर्गापञ्चाङ्गम्

अथ गणपतिपञ्चाङ्गम्

अथ षड्विंशः पटलः

महागणपति-मन्त्रोद्धारः

तन्त्रोत्तरार्धप्रस्तावः

श्रीभैरव्युवाच

भगवन् भूतभव्येश कुलधर्मप्रकाशम्।
कुलेश श्रोमिच्छामि तन्त्रस्यास्योत्तरार्धकम्॥१॥

तन्त्रोत्तरार्ध-प्रस्ताव—श्री भैरवी ने कहा कि हे भगवन् भूत-भव्येश! कुल-धर्मप्रकाशक! कुलेश! अब मुझे तन्त्र के उत्तरार्द्ध को सुनने की इच्छा है॥१॥

देवानां भवान्यैक्य निरूपणम्

श्रीभैरव उवाच

अधुना देवि कौलेशि कौलिकानां हितेच्छया।
तन्त्रोत्तरार्धं वक्ष्यामि रहस्यविजयाभिधम्॥२॥
दुर्गादेवी परादेवी पराशक्तिः पराम्बिका।
देवदेवीति या ख्याता गायत्रीति श्रुतौ स्मृता॥३॥
तेजोमयी महाश्यामा महात्रिपुरसुन्दरी।
पञ्चात्मिका पञ्चमीशी पञ्चव्योमप्रकाशिनी॥४॥
उग्रदुर्गा परा या श्रीस्तज्ज्योतिः परमं पदम्।
परादेवीति या दुर्गा सा शिवः सा हरिः स्मृता॥५॥
सा सूर्यः सविता सैव महागणपतिः स्मृता।
पञ्चमी पञ्चिका देवी पञ्चमाचारवर्तिनी॥६॥
पञ्चाक्षरीति गायत्री परमात्मेति कीर्त्यते।
पञ्चकृत्यमयी देवी सर्वदेवीमयी शिवा॥७॥
गणेशार्कहरीशान-दुर्गारूपा सरस्वती।
महाश्यामा महाविद्या पूजनीया यथाक्रमम्॥८॥
न कुर्याद् भेदमेतेषां कौलिको वैष्णवोऽथवा।
गणेशार्कहरीशान-दुर्गाणां परमार्थवित्॥९॥

देवताओं के भवानी से एक्य का निरूपण—श्री भैरव ने कहा कि अब मैं इस तन्त्र के उत्तरार्द्ध का वर्णन कौलिकों के हित की इच्छा से करता हूँ। इस उत्तरार्द्ध को रहस्यविजय भी कहते हैं। दुर्गा देवी ही परादेवी, पराशक्ति, पराम्बिका, देवदेवी के नाम से विख्यात गायत्री हैं। यह श्रुतियों का वचन है। वही तेजोमयी महाकाली, महात्रिपुरसुन्दरी, पञ्चात्मिका, पञ्चमेशी, पञ्चव्योमप्रकाशिनी हैं। वही उग्र दुर्गा, पराश्री की ज्योति-परमपद-परादेवी हैं। दुर्गा ही शिव हैं, वही विष्णु हैं। वही दुर्गा सूर्य, सविता, महागणपति हैं। वही देवी पञ्चमी, पञ्चिका, पञ्च मकार के आचार की वर्तिनी हैं। वही पञ्चाक्षरी मन्त्र, गायत्री, परमात्मा कही जाती हैं। वही पञ्चविद्यामयी देवी हैं। वही सर्वदेवमयी शिवा हैं। गणेश, सूर्य, विष्णु, शिव दुर्गा के ही रूप हैं। सरस्वती दुर्गारूपा हैं। दुर्गा ही महाकाली, महाविद्या के रूप में यथाक्रम पूजनीय हैं। कौलिकों या वैष्णवों को गणेश, सूर्य, विष्णु, शिव में भेद नहीं करना चाहिये। दुर्गा के परमार्थ-ज्ञानियों का यही मत है।।२-९।।

सर्वचक्रेष्वभेदबुद्ध्या सर्वदेवपूजा

पूजयेदैक्यभावेन देवीभक्त्यैव भक्तिमान्।
देवीचक्रेऽर्चयेत् सर्वांश्छिवलिङ्गेऽथवा शिवे ॥१०॥
सालिग्रामशिलायां वा सूर्यपीठेऽथवा प्रिये।
श्रीगणेश्वरचक्रेण न भेदं कारयेद् बुधः ॥११॥
भेदं वै कुरुते यस्तु स शैवः शिवहा भवेत्।
पृथक् पृथक् शिवे कुर्यादर्चनं कौलिकोत्तमः ॥१२॥
गणेशस्य च सूर्यस्य विष्णोर्देवि शिवस्य च।
श्रीदेव्या उग्रदुर्गाया मन्त्री देवीरहस्यवित् ॥१३॥

सभी चक्रों में अभेदबुद्धि से सर्वदेव-पूजन—देवीभक्ति से युक्त भक्त सभी देवों का पूजन ऐक्य भाव से श्रीचक्र में करे। अथवा शिवलिङ्ग में या शालग्राम शिला में या सूर्यपीठ में या गणेशचक्र में बुद्धिमान साधक भेद न करके ऐक्य भाव से पूजन करे। जो शैव भेद-भाव करता है, वह शिव-घातक होता है। श्रेष्ठ कौलिक सबका अर्चन पृथक्-पृथक् करे। देवी के रहस्य को जानने वाला गणेश, सूर्य, विष्णु, देवी, शिव, श्रीदेवी, उग्र दुर्गा का पूजन पृथक्-पृथक् करे।।१०-१३।।

तन्त्रोत्तरार्धे पञ्चाङ्गनिरूपणम्

अद्याहं तव देवेशि प्रेम्णा वक्ष्ये कुलात्मकम्।
रहस्यविजयं नाम तन्त्रं तन्त्रोत्तरार्धकम् ॥१४॥
पञ्चाङ्गभूतमेतेषां सर्वमन्त्रार्चनामयम्।

गणेशस्य च पञ्चाङ्गं पञ्चाङ्गं सवितुस्तथा ॥१५॥
लक्ष्मीनारायणस्यापि पञ्चाङ्गं श्रीशिवस्य च।
दुर्गादिव्याश्च पञ्चाङ्गं दुर्गादेवीरहस्यकम् ॥१६॥
उत्तरार्धमिति प्रोक्तं तन्त्रस्यास्य महेश्वरि।
सर्वस्वमेतद् देवेशि तन्त्रं देवीरहस्यकम् ॥१७॥
अवक्तव्यमभक्तेभ्यो गोपयेत् कुलनायकः।
प्रथमं देवि पञ्चाङ्गं महागणपतेः शृणु ॥१८॥
येन श्रवणमात्रेण विघ्ननाशो भवेत् क्षणात्।

तन्त्रोत्तरार्द्ध में पञ्चाङ्ग-निरूपण—हे देवेशि! तुम्हारे प्रेमवश अब मैं कुलात्मक रहस्यविजय नामक तन्त्रोत्तरार्ध तन्त्र का वर्णन करता हूँ। इसमें सभी मन्त्रार्चन के पञ्चाङ्गों का वर्णन समाविष्ट है। इसमें गणेश, सविता, लक्ष्मी, नारायण, शिव, दुर्गा के पञ्चाङ्गों का वर्णन है। दुर्गा देवी के रहस्य का वर्णन है। हे महेश्वरि! इसे इस तन्त्र का उत्तरार्द्ध कहा जाता है। हे देवेशि! यह देवीरहस्य का सर्वस्व है। अभक्तों के पास इसे नहीं कहना चाहिये। कुलनायक को इसे गुप्त रखना चाहिये। हे देवि! पहले महागणपति के पञ्चाङ्ग का वर्णन सुनो, जिसके श्रवणमात्र से क्षणमात्र में ही विघ्नों का विनाश हो जाता है।।१४-१८।।

गणपतिपञ्चाङ्गावतारः

मेरुपृष्ठे सुखासीनं महादेवं त्रिलोचनम् ॥१९॥
सुरासुरगणैर्युक्तं ब्रह्माच्युतनमस्कृतम्।
सिद्धकिन्नरगन्धर्वैर्यक्षभूतपिशाचकैः ॥२०॥
तोषितं नतिभिः स्तोत्रैः पार्वतीसहितं शिवम्।
सस्मितं भाषमाणं च ब्रह्मणा हरिणा सह ॥२१॥
पार्वती प्रणता भूत्वा वचनं समभाषत।

गणेश-पञ्चाङ्ग—मेरुपृष्ठ पर त्रिलोचन महादेव सुख से बैठे हैं। देवता, दैत्यगण ब्रह्मा, विष्णु उन्हें नमस्कार कर रहे हैं। सिद्ध, किन्नर, गन्धर्व, यक्ष, भूत, पिशाच, पार्वती, सति अपने-अपने नमस्कार और स्तोत्रों द्वारा महादेव को सन्तुष्ट कर रहे हैं। मुस्कानयुक्त मुख से शिव ब्रह्मा और विष्णु से जब वार्ता कर रहे थे, उसी समय प्रणत होकर पार्वती इस प्रकार बोलीं।।१९-२१।।

श्रीदेव्युवाच

भगवन् सर्वतत्त्वज्ञ सर्वधर्मप्रकाशक।
कार्यस्य देवतानां च मनुष्याणां तथैव च॥२२॥
विघ्नः केन भवेद् देव संशयं छिन्दि शङ्कर।

शिर नवाकर पार्वती ने कहा—सभी तत्त्वों के ज्ञाता भगवन्! आप सभी धर्मों के प्रकाशक हैं। हे शङ्कर! मेरी इस शंका का आप समाधान कीजिये कि देवताओं और मनुष्यों के शुभ कार्य में विघ्न क्यों होते हैं।।२२।।

श्रीभैरव उवाच

देवि वक्ष्ये रहस्यं ते प्रश्नोत्तरमिदं महत्।
अवक्तव्यमभक्तेभ्यो भक्तेभ्यो मुक्तिसाधनम्॥२३॥
विनायको गणाध्यक्षो गणेश इति यः प्रभुः।
विघ्नकर्ता जगत्राता विघ्नहर्तेति विश्रुतः॥२४॥
तस्य भक्तस्य देवस्य मर्त्यस्यापि महेश्वरि।
विघ्नो न बाधते जातु यस्तं सम्पूजयेत् सदा॥२५॥
यो जपेद् देवि तन्मन्त्रं कवचं तस्य धारयेत्।
पठेन्नाम्नां सहस्रं तु स्तोत्रं मूलैकसाधनम्॥२६॥
विघ्नो न बाधते तस्य कार्यहानिर्न वा भवेत्।

श्री भैरव ने कहा कि इस रहस्य को मैं बतलाता हूँ। आपके प्रश्न और उत्तर दोनों महत्त्वपूर्ण हैं। इसे अभक्तों और मुमुक्षु भक्तों को भी नहीं बतलाना चाहिये। गणेश, जो विनायक और गणाध्यक्ष प्रभु हैं, वही विघ्नकर्ता, जगद्ररक्षक, विघ्नविनाशक के रूप में भी विख्यात हैं। गणेश के जो भक्त, देवता या मनुष्य सदैव उनकी पूजा करते हैं, उन्हें कभी भी विघ्न-बाधा नहीं होते। जो उनके मन्त्र का जप करता है, उनके कवच को धारण करता है, सहस्रनाम का पाठ करता है और स्तोत्रों का पाठ करता है, उसके लिये विघ्न बाधक नहीं होते और उसके कार्य में हानि भी नहीं होती।।२३-२६।।

श्रीदेव्युवाच

देवदेव महादेव गणेशस्य जगत्प्रभो।
मन्त्रं यन्त्रं स्तवं वर्म नाम्नां साहस्रमुत्तमम्॥२७॥
पूजां श्रोतुमहं त्वत्तो वाञ्छामि परमेश्वर।

श्री देवी ने कहा कि हे देवों के देव महादेव! जगत् के स्वामी! गणेश के मन्त्र, यन्त्र, स्तोत्र, कवच, सहस्रनाम और पूजन के बारे में आपसे सुनने की मेरी इच्छा है; आप उन्हें बतलाने की कृपा करें।।२७।।

श्रीभैरव उवाच

यो देवदेवो वरदो गणेशो विघ्ननायकः।
गजाननो गणाध्यक्षो विनायक इति श्रुतः ॥२८॥
पञ्चाङ्गमखिलं तस्य वक्ष्यामि तव प्रीतये।
तत्रादौ ते प्रवक्ष्यामि मन्त्रोद्धारं सुरेश्वरि ॥२९॥
यन्त्रोद्धारं लयाङ्गं च महागणपतेः शिवे।

श्री भैरव ने कहा कि जो देवों के देव, वरदायक, विघ्नविनाशक गणेश, गजानन, गणाध्यक्ष, विनायक के नाम से विख्यात हैं, तुम्हारे प्रेमवश मैं उन्हीं गणेश के पञ्चाङ्ग का वर्णन करूँगा; पर इसके पहले उन महागणपति के मन्त्र, यन्त्र एवं लयाङ्ग का वर्णन करता हूँ।।२८-२९।।

महागणपतिमन्त्रोद्धारः

अथ मन्त्रोद्धारः—

तारं मा सकला स्मरो मठशिवौ नम्नो वरेति द्वयं
सर्पः सर्वमतो जनं डुलिलते जीमूतशर्माक्षरम्।
भेकी खं लवणं समीरसहितं मन्त्राञ्चले ठद्वयं
ह्यष्टाविंशतिवर्णको निगदितो वैनायकोऽयं मनुः ॥३०॥

इति मन्त्रोद्धारः। प्रकाशम्—ॐश्रींह्रींक्लींग्लौंगं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।।

महागणपति मन्त्रोद्धार—उपर्युक्त श्लोक के सांकेतिक शब्दों का उद्धार करने पर अट्ठाईस अक्षरों का गणपतिमन्त्र बनता है, वह है—ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।।३०।।

तत्त्वलक्षं सवेदाङ्कं पुरश्चर्या प्रकीर्तिता।
वटे चतुष्पथे शून्यगृहे प्रेतालये चरेत् ॥३१॥
नास्य विघ्नो न वाशौचं न वा मन्त्रविपर्ययः।
न क्लेशो न च दुर्बुद्धिर्न मोहो न च शोकता ॥३२॥
सर्वथा सिद्धमन्त्रोऽयं महागणपतेः शिवे।

चार लाख जप से इस मन्त्र का पुरश्चरण होता है। वटवृक्ष के नीचे, चौराहे पर, शून्य गृह में या श्मशान में इसका जप करना प्रशस्त कहा गया है। इसमें कोई विघ्न नहीं है, न अशौच है, न मन्त्रविपर्यय है, न कोई कष्ट है, न बुद्धि खराब होती है, न मोह होता है और न ही शोक होता है। महागणपति का यह मन्त्र सर्वथा सिद्ध है।।३१-३२।।

महागणपतियन्त्रोद्धारः

यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि सर्वाशापरिपूरकम् ॥३३॥
सर्वसम्मोहनं चक्रं गणेशस्य जगत्प्रभोः ।

अब मैं सभी इच्छाओं को पूर्ण करने वाले महागणपति के यन्त्र का उद्धार बतलाता हूँ।।३३।।

अथ यन्त्रोद्धारः—

त्रिकोणं खयुक्तं दशारं महेशि
सुवृत्तं तथा नागपत्रं कलारम् ।
सुवृत्तं चतुर्द्वारयुक्तं प्रयुक्तं
गजास्यस्य श्रीचक्रमेतत् प्रसिद्धम् ॥३४॥

यन्त्रोद्धार—संसार के स्वामी श्री गणेश के सर्वसम्मोहन चक्र में बिन्दु, त्रिकोण, दशदल, अष्टपत्र, षोडशदल, वृत्त और चार द्वारयुक्त भूपुर अंकित होते हैं। गजानन का यह प्रसिद्ध यन्त्र है।।३४।।

महागणपतियन्त्र
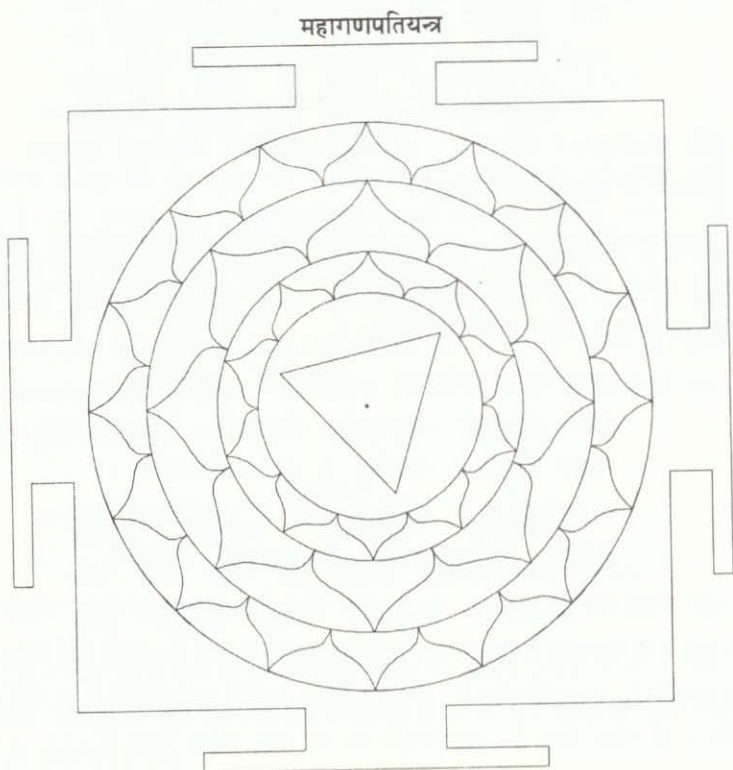
गणपतिध्यानम्

अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।
येन स्मरणमात्रेण सर्वो विघ्न: पलायते ॥३५॥
उद्यत्कोटिदिवाकरांशुसदृशं त्र्यक्षं किरीटोज्ज्वलं
मात्रं मोदकपूर्णमीड्यकलशं पद्माक्षसूत्रं भुजै: ।
बिभ्राणं शुचिनागसम्भवलसत्कायं भुजङ्गोज्ज्वलं
ध्यायेत् सिंहयुगासनं गणपतिं त्रैलोक्यचिन्तामणिम् ॥३६॥

गणपति-ध्यान—अब मैं सर्वसिद्धिप्रदायक गणपति के ध्यान का वर्णन करता हूँ, जिसके स्मरणमात्र से ही सभी विघ्न भाग जाते हैं। करोड़ों उदीयमान सूर्य की आभा के समान उनका वर्ण है। तीन नेत्र और जगमगाता किरीट उनके शिर पर है। हाथों में मोदकपूर्ण पात्र, कलश, पद्माक्षसूत्र है। उनका मुख हाथी का है। श्वेत नाग उनके तन से लिपटा हुआ है। दो सिंहों के आसन पर विराजमान तीनों लोकों के चिन्तामणि गणेश का मैं ध्यान करता हूँ।।३५-३६।।

गणपतिलयाङ्गपूजनम्

गामित्यादिकरन्यासं हृदयादिषडङ्गकम् ।
षड्वर्गबीजभागेन कल्यन्यासं चरेत् तत: ॥३७॥
लयाङ्गमधुना वक्ष्ये यन्त्रस्य परमेश्वरि ।
पूजनं सर्वतन्त्रेषु गोपितं शरजन्मना ॥३८॥
इन्द्रधर्मेशवरुणा: कुबेरसहितास्तथा ।
पूर्वपश्चिमयो: पूज्या दक्षिणोत्तरयोस्तथा ॥३९॥

इति द्वारपाला:।

गणपति-लयाङ्ग पूजन—गां गीं गूं गैं गौं ग: से करन्यास और हृदयादि षडङ्ग न्यास करे। अब मैं यन्त्र में षडङ्ग पूजन का वर्णन करता हूँ, जो सभी तन्त्रों में गुप्त रखा गया है। इन्द्र का पूर्व में, धर्मेश का दक्षिण में, वरुण का पश्चिम में और कुबेर का पूजन उत्तर में करे। ये द्वारपाल कहे गये हैं।।३७-३९।।

नन्दिवीरेशसौभाग्यभृङ्गिरीटिविराटका: ।
पुष्पदन्तविकर्तान्त्यचित्तलोहितसुन्दरा: ॥४०॥
नूपुराढ्यविचारोग्ररूप-सुप्तविनर्तका: ।
गणा: षोडश सम्पूज्या: षोडशारेषु सुन्दरि ॥४१॥

करालं विकरालं च संहारं रुरुमेव च।
महाकालं च कालाग्निं सितास्यमसितात्मकम् ॥४२॥

षोडशार में नन्दी, वीरेश, सौभाग्य, भृङ्गी, विराट, पुष्पदन्त, विकर्तन, अन्त्य, चित्त, लोहित, सुन्दर, नूपुराढ्य, विचार, उग्र, सुप्त और विनर्तक—इन सोलह गणों का पूजन करे।।४०-४२।।

अष्टपत्रेषु देवेशि पूजयेदष्टभैरवान्।
विनायकं विघ्नराजं गणाध्यक्षं गजाननम् ॥४३॥
हेरम्बं मोदकाहारं द्वैमातुरमरिन्दमम्।
एकदन्तं वक्रतुण्डं दशारेषु प्रपूजयेत् ॥४४॥

अष्टदल में आठ भैरवों का पूजन करे। ये हैं—कराल, विकराल, संहार, रुरु, महाकाल, कालाग्नि, सितास्य और असितात्म।

दशदल में विनायक, विघ्नराज, गणाध्यक्ष, गजानन, हेरम्ब, मोदकाहार, द्वैमातुर, अरिन्दम, एकदन्त, वक्रतुण्ड—इन दश का पूजन करे।।४३-४४।।

कुमारं च जयन्तं च प्रद्युम्नं सुरसुन्दरि।
त्रिकोणे पूजयेद्बिन्दौ महागणपतिं प्रभुम् ॥४५॥
गणेशं चैव गाङ्गेयं सिंहासनमतः परम्।
विघ्नान्तकाखुवाहौ च त्रिपुरान्तकमीश्वरि ॥४६॥
उपर्युपरि सम्पूज्य पूजयेदायुधांस्ततः।
शतपत्रं सहस्रारं दन्तमालां महेश्वरि ॥४७॥
मोदकाङ्कितपात्रं च कलशं परशुं ततः।
शङ्खौ सम्पूजयेद्बिन्दौ लयाङ्गमिदमुच्यते ॥४८॥

त्रिकोण के कोनों में कुमार, जयन्त और प्रद्युम्न का पूजन करे। बिन्दु में महागणपति का पूजन करे। सिंहासन पर गणेश, गाङ्गेय, त्रिपुरान्तक, विघ्नान्तक, मूषकवाहन का पूजन करे। इसके बाद उनके आयुधों का पूजन करे। आयुधों में शतपत्र, सहस्रार, दन्तमाला, मोदकपात्र, कलश, परशु और शङ्ख का पूजन करे। इसी पूजन को लयाङ्ग-पूजन कहते हैं।।४५-४८।।

महागणपतिमन्त्रतदृष्यादिकथनम्

मन्त्रस्यास्य गणेशस्य ऋषिर्ब्रह्मा प्रकीर्तितः।
गायत्र्यं छन्द इत्युक्तं देवो गणपतिः स्मृतः ॥४९॥

शिवबीजं च बीजं स्यान्मायाशक्तिरुदाहृता ।
कुरुद्वयं कीलकं स्यात् सर्वमन्त्रैकसाधनम् ॥५०॥
त्रैलोक्यविजये देवि विनियोगः प्रकीर्तितः ।

महागणपति मन्त्र के ऋष्यादि—इस गणेश मन्त्र के ऋषि ब्रह्मा कहे गये हैं। गायत्री इसका छन्द कहा गया है एवं गणपति देवतारूप में प्रतिष्ठित किये गये हैं। 'गं' बीज एवं 'ह्रीं' शक्ति कहे गये हैं। 'कुरु कुरु' इसका कीलक कहा गया है। समस्त मन्त्रों के एकमात्र साधनस्वरूप इस मन्त्र का त्रैलोक्य-विजय के लिये विनियोग कहा गया है।।४९-५०।।

महागणपतिमन्त्रद्वारा षट्कर्मसाधनम्

अयुतं च जपेन्मूलं हुत्वा सर्पिर्यवाङ्कुरम् ॥५१॥
मोहयेत् परमेशानि मारयेद् रिपुमण्डलम् ।
अयुतं च जपेन्मूलं वटे हुत्वा चितानले ॥५२॥
स्तम्भयेदखिलांल्लोकान् वादिदस्युबलानि च ।
नद्यां साधक एवाशु जपेदयुतसंख्यया ॥५३॥
जुहुयादिभविण्मांसं रिपुमुच्चाटयेद् ध्रुवम् ।
विद्वेषयेच्च ब्रह्माणं गिरिजे नात्र संशयः ॥५४॥
वने निम्बरसं हुत्वा जप्त्वा मूलमथायुतम् ।
वशयेदपि राजानमाकर्षयति योषितः ॥५५॥
इतीदं पटलं गुप्तं महागणपतेः शिवे ।
सर्वतन्त्रैकसर्वस्वं गोपनीयं विशेषतः ॥५६॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये महागणपति(पटल)-
मन्त्रोद्धारनिरूपणं नाम षड्विंशं पटलः॥२६॥

महागणपति मन्त्र से षट्कर्म-साधन—महागणपति का जप दश हजार करके गोघृत और यव के अंकुरों से हवन करे। इससे सबका मोहन होता है और शत्रुसमूह का विनाश होता हैं। दश हजार मन्त्रजप वटवृक्ष के मूल में बैठकर करने के बाद चिता की अग्नि में हवन करे। इससे सभी लोकों का स्तम्भन होता है। बलवान प्रतिवादी एवं दस्युदलों का भी स्तम्भन होता है। नदी में मूलमन्त्र का जप दश हजार करके हाथी के मांस से हवन करने पर शत्रुओं का उच्चाटन होता है। मूल मन्त्र का जप दश हजार करके नीम के रस से जङ्गल में हवन करने से ब्राह्मणों में विद्वेषण होता है। इससे

राजा वशीभूत होते हैं एवं रमणियाँ आकर्षित होती हैं। हे शिवे! इस प्रकार महागणपति का यह गुप्त पटल समाप्त हुआ। यह सभी तन्त्रों का सर्वस्व है और विशेष रूप से गोपनीय है।।५१-५६।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में महागणपति-मन्त्रोद्धार निरूपण नामक षड्विंश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ सप्तविंशः पटलः

वरदगणेश-पूजापद्धतिः

महागणपतिपूजापद्धतिः

श्रीभैरव उवाच

अद्याहं पद्धतिं वक्ष्ये महागणपतेः पराम्।
गद्यैकसारसर्वस्वामानन्दैकतरङ्गिणीम् ॥१॥

अब मैं परमानन्दतरङ्गिनी सारसर्वस्व महागणपति की परा पूजा पद्धति का वर्णन गद्य में कर रहा हूँ।।१।।

साधको रात्रिशेषे समुत्थाय पद्मासनं बद्ध्वा, मूलेन त्रिराचम्य स्वशिरसि सहस्रारपद्मकेसरोज्ज्वलकर्णिकान्तर्गतं निजगुरुं शुक्लालङ्कारं ध्यात्वा नत्वा, तच्छासनमादाय बहिरागत्य मलोत्सर्गशोधनं विधाय, वर्णोक्तं शौचं कृत्वा नद्यादौ गत्वा वाह्लीकबीजेन दन्तान् विशोध्य शिवबीजेन गण्डूषाणि कृत्वा, श्रींह्रींक्लीं इति मलापकर्षणं स्नानं विधाय मूलेनाङ्कुशमुद्रया तत्र त्रिकोणं विलिख्य—

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥ इति।

रात्रि के व्यतीत होने पर साधक उठकर पद्मासन में बैठे। मूल मन्त्र से तीन आचमन करे। अपने शिर में स्थित उज्ज्वल केसर से युक्त हजार दल वाले कमल के मध्य कर्णिका में अपने गुरु का ध्यान करे। गुरु के सभी अलङ्कार श्वेत वर्ण के हैं, उन्हें प्रणाम करे। उनकी आज्ञा प्राप्त करके घर से बाहर जाकर मलोत्सर्ग के बाद शोधन करे। शास्त्रवर्णित अपने वर्ण के अनुसार शौच करे। नदी आदि जलाशय पर जाकर 'ग्लौं' से दाँतों को साफ करे। 'गं' बीज से कुल्ला करे। 'श्रीं ह्रीं क्लीं' से मलापकर्षण करे। मूल मन्त्र के द्वारा अङ्कुशमुद्रा से जल पर त्रिकोण कल्पित करके निम्न मन्त्र से तीर्थों का आवाहन करे—

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु काबेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

तत्र तीर्थमावाह्य, देवं सशिवं (सशक्तिं) मूलेनावाह्य मूलेन मुखं त्रिः

प्रोक्ष्य त्रिरात्मानं पयसि प्रोन्मज्ज्यङ्क, 'ह्रींहंसः श्रीसूर्याय एष तेऽर्घो नमः' इत्यर्कायार्घ्य-त्रयं दत्त्वा जलादवरुह्य वैदिकीं सन्ध्यां निर्वर्त्य तान्त्रिकीं कुर्यात्। ततो वामकरे जलं धृत्वा वर्मणावगुण्ठ्य मूलेन सप्तधाभिमन्त्र्य तद्गलितोदकबिन्दुभिः स्वशिरः सप्तधा प्रोक्ष्य, तज्जलमिडयान्तर्नीत्वा वामनासया विरिच्य सुषुम्नामार्गेण दक्षहस्ते निःक्षिप्य, अस्त्राय फडिति मन्त्रेण वामभागस्थशिलायामास्फालयेत्, इत्यघमर्षणं विधायाचम्य प्राणायामत्रयं चरेत्। यथा—पूरकः १६ कुम्भकः ३२ रेचकः ६४ एवं विधाय, गायत्रीं त्रिर्जपेत्। ॐह्रीं वक्रतुण्डाय विद्महे श्रींक्लीं एकदन्ताय धीमहि ग्लौंगं गणपतिस्तन्नः प्रचोदयात् ३, इति यथाशक्त्या जप्त्वा गायत्र्या देवीदेवयोरर्घ्यत्रयं दत्त्वा, 'मूलं समस्तभुवनान्तरायहरणं हरपुत्रं गणगन्धर्वसिद्धवन्दितं प्रकटविकटाम्नायपरापररूपं गणाध्यक्षं गजाननं महागणपतिं वरदगणेशं तर्पयामि नमः' इति द्विः सन्तर्प्य, मूलं दिव्यौघ-सिद्धौघमानवौघपङ्क्तिगतान् गुरूंस्तर्पयामि नमः। मूलनैकैकाञ्जलिना परिवारान् सन्तर्प्य, संहारमुद्रया मनसा देवीदेवौ विसृज्य यागमण्डपमागच्छेदिति सन्ध्याविधिः।

तीर्थों का आवाहन कर मूल मन्त्र से शिवसहित शक्ति का आवाहन करे। मूल मन्त्र से अपने मुख का प्रोक्षण तीन बार करे। तीन आचमन करे। 'ह्रीं हंसः श्रीसूर्याय एष ते अर्घ्यो नमः' से तीन अर्घ्य प्रदान करे। तब जल से बाहर आकर पहले वैदिकी सन्ध्या करे तब तान्त्रिकी सन्ध्या करे। बाँयें हाथ में जल लेकर 'फट्' से अवगुण्ठन करे। मूल मन्त्र के सात जप से उसे मन्त्रित करे। हाथ से टपके बूदों से अपने शिर का प्रोक्षण सात बार करे। उस जल को इड़ा नाड़ी से अपने भीतर ले जाये। वाम नासा से उसका विरेचन करे। सुषुम्ना मार्ग से उसे निकालकर दाँयें हाथ में लेकर 'अस्त्राय फट्' बोलकर अपने वाम भाग में स्थित काल्पनिक शिला पर उसे पटक दे। इस प्रकार अघमर्षण करके आचमन करे और तीन प्राणायाम करे। प्राणायाम में १६ मात्रा से पूरक, ३२ मात्रा से कुम्भक और ६४ मात्रा से रेचक करे। तब तीन बार गणेश-गायत्री का जप करे। गणेश गायत्री यह है—ॐ ह्रीं वक्रतुण्डाय विद्महे श्रीं क्लीं एकदन्ताय धीमहि ग्लौं गं गणपतिस्तन्नः प्रचोदयात्।

यथाशक्ति गणेश-गायत्री का जप कर देवी-देव को तीन अर्घ्य प्रदान करे। तब दो बार तर्पण करे। तर्पण का मन्त्र है—

मूलं समस्तभुवनान्तरायहरणं हरपुत्रं गणगन्धर्वसिद्धवन्दितं प्रकटविकटाम्नायपरापर-

रूपं गणाध्यक्षं गजाननं महागणपतिं वरद गणेशं तर्पयामि नमः।

इसके बाद मूल मन्त्रसहित गुरुपंक्ति का तर्पण करे। मन्त्र है—मूलं दिव्यौघसिद्धौघ-मानवौघपंक्तिगतान् गुरूं तर्पयामि नमः।

मूल मन्त्र से अञ्जलि में जल लेकर गणेश-परिवार का तर्पण करे। तब संहार मुद्रा से मानसिक रूप से देवी-देवों का विसर्जन करे। तब यागमण्डप में आये। सन्ध्याविधि समाप्त हुई।

यागमण्डपमेत्य ह्रींश्रींक्लीं गं गङ्गायै नमः पूर्वे। ह्रीं श्रीं क्लीं यं यमुनायै नमः उत्तरे। ह्रीं श्रीं क्लीं सं सरस्वत्यै नमो दक्षिणे। ह्रीं श्रीं क्लीं यां योगिनीभ्यो नमः पश्चिमे। ह्रीं श्रीं क्लीं क्षां क्षेत्रपालाय नमः मध्ये। इति द्वारदेवताः सम्पूज्य, गृहान्तः प्रविश्य, ह्रीं श्रीं क्लीं आं आसनशोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनामन्त्रणे विनियोगः। ऐं पृथिव्यै नमः, अं अनन्ताय नमः, वं वसुन्धरायै नमः।

मूलं पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

इति ध्यानम्।

ॐह्रींश्रींक्लीं पद्मासनाय नमः।
ह्रीं श्रीं क्लीं सिंहासनाय नमः।
ह्रीं श्रीं क्लीं भद्रासनाय नमः।

ह्रीं श्रीं क्लीं अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

इति तालत्रयं दत्त्वा नाराचमुद्रां प्रदर्श्य गुरुं ध्यायेत्।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

इति गुरुं ध्यात्वाचमेत्।

यागमण्डप के द्वार पर द्वारदेवताओं का पूजन इस प्रकार करे—द्वार के पूरब में ह्रीं श्रीं क्लीं गं गंगायै नमः। उत्तर में ह्रीं श्रीं क्लीं यं यमुनायै नमः। दक्षिण में ह्रीं श्रीं क्लीं सं सरस्वत्यै नमः। पश्चिम में ह्रीं श्रीं क्लीं यां योगिनीभ्यो नमः। मध्य में ह्रीं श्रीं क्लीं क्षां क्षेत्रपालाय नमः। इस प्रकार द्वारदेवताओं का पूजन कर मण्डप में प्रवेश करे। आसनशोधन करे। आसन के आमन्त्रण का विनियोग इस प्रकार होता है—

ह्रीं श्रीं क्लीं आं आसनशोधन मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनमन्त्रणे विनियोगः। ऐं पृथिव्यै नमः। अं अनन्ताय नमः। वं वसुन्धरायै नमः। मूल मन्त्र के साथ इस मन्त्र का पाठ करे—

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवी त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

इसके बाद इन मन्त्रों का पाठ करे—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पद्मासनाय नमः। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिंहासनाय नमः। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं भद्रासनाय नमः। इसके बाद भूतोत्सारण करे और यह मन्त्र पढे—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

तब तीन ताली बजाकर नाराचमुद्रा प्रदर्शित करे। गुरु का ध्यान करे। ध्यान-मन्त्र है—

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

ग्लौं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, ग्लौं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ग्लौं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। इत्याचम्य, पूर्वोक्तं प्राणायामत्रयं विधाय भूतशुद्धिं कुर्यात्। ह्रीं कुण्डलिनीं ध्यात्वा श्रीं सुषुम्नावर्त्मना वायुं प्रोक्ष्य, क्लीं तत्राधिष्ठानमानीय, स्वशरीरं भस्मीभूतं विचिन्त्य, यंरंलंवं ब्रह्म-पथान्तर्जीवात्मानं विचिन्त्य, तत्र हंक्षं सुधामानीय, तोयात् स्वात्मानं सम्प्लाव्य, विगतकल्मषं देहं विभाव्य स्वस्थानं जीवमानीय प्राणान् प्रतिष्ठापयेदिति भूतशुद्धिः।

तत्पश्चात् इन आत्मशोधन मन्त्रों से आत्मशोधन आचमनसहित करे—ग्लौं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः। ग्लौं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः। ग्लौं शिवतत्त्वं शोधयामि नमः।

इस प्रकार तीन आचमन करके पूर्वोक्त रीति से तीन प्राणायाम करके भूतशुद्धि करे। 'ह्रीं' से कुण्डलिनी का ध्यान करे। 'श्रीं' से सुषुम्ना मार्ग से श्वास लेवे। 'क्लीं' से उसे भीतर मूलाधार में ले आये। अपने शरीर को भस्मीभूत समझे। यं रं लं वं से अपने जीव को ब्रह्मरन्ध्र के अन्त में ले आये। वहाँ से हं क्षं से अमृत लाकर अपने शरीर को प्लावित करे। इसके बाद अपने शरीर को कल्मषरहित मानकर जीव को अपने स्थान में ले आये। प्राणप्रतिष्ठा करे। भूतशुद्धि की रीति यही है।

आंह्रींक्रों यंरंलंवं शंषंसंहं सोहंसः हंसः मम प्राणाः इह प्राणाः १६ँ मम जीव इह स्थितः १६ँ मम सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा, इति प्राणप्रतिष्ठाक्रमः। ततः पुनराचम्य प्राणायामं विधाय न्यासपूर्वकं सङ्कल्पं चरेत्।

अस्य श्रीवरदगणेशमन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः गायत्रं छन्दः श्रीमहागणपतिर्देवता गं बीजं ह्रीं शक्तिः कुरु कुरु कीलकं श्रीमहागणपतिप्रीत्यर्थे (त्रैलोक्यविजये) जपे विनियोगः।

प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र है—

आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सोहं सः हंसः मम प्राणाः इह प्राणाः। ॐ ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सोहं सः हंसः मम जीव इह स्थितः। ॐ ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सोहं सः हंसः मम सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः-चक्षुश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

यह प्राणप्रतिष्ठा की रीति हुई। इसके बाद फिर आचमन और प्राणायाम करके न्यास करे और संकल्प करे। अस्य श्रीवरदगणेशमन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमहागणपतिर्देवता, गं बीजं, ह्रीं शक्ति, कुरु कुरु कीलकं श्रीमहागणपतिप्रीत्यर्थे त्रैलोक्यविजये जपे विनियोगः।

ब्रह्मऋषये नमः शिरसि, गायत्रीच्छन्दसे नमो मुखे, श्रीमहागणपतिदेवतायै नमो हृदि, गं बीजाय नमो नाभौ, ह्रीं शक्तये नमो गुह्ये, कुरु कुरु कीलकाय नमः पादयोः, त्रैलोक्यविजये विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु— इति ऋष्यादिन्यासः।

गां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, हृदयाय नमः। गीं तर्जनीभ्यां नमः, शिरसे स्वाहा। गूं मध्यमाभ्यां नमः, शिखायै वषट्। गैं अनामिकाभ्यां नमः, कवचाय हुं। गौं कनिष्ठाभ्यां नम;, नेत्रेभ्यो वौषट् । गः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः अस्त्राय फट्। इति करषडङ्गन्यासः।

ॐ आत्मतत्त्वं हृदयाय नमः। ॐ विद्यातत्त्वं शिरसे स्वाहा। ॐ शिवतत्त्वं शिखायै वषट्। ॐ गुरुतत्त्वं कवचाय हुं। ॐ योगतत्त्वं नेत्रेभ्यो वौषट्। ॐ सर्वतत्त्वमस्त्राय फट्। इति तत्त्वन्यासः।

ॐ अंकंखंगंघंङंआं हृदयाय नमः, इंचंछंजंझंञंई शिरसे स्वाहा, उंटंठंडंढंणंऊं शिखायै वषट्, एंतंथंदंधंनंऐं कवचाय हुं, ओंपंफंबंभंमंऔं नेत्रेभ्यो वौषट्,

अंयंरंलंवंशंषंसंहंळंक्षंअः अस्त्राय फट्। एवं करन्यासः। इति कल्पन्यासः।

ऋष्यादि न्यास—ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। गायत्रीछन्दसे नमः मुखे। श्रीमहागणपति-देवतायै नमः हृदि। गं बीजाय नमो नाभौ। ह्रीं शक्तये नमः गुह्ये। कुरु कुरु कीलकाय नमः पादयोः। त्रैलोक्यविजये विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु।

करन्यास—

गां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। गूं मध्यमाभ्यां नमः। गीं तर्जनीभ्यां नमः। गैं अनामिकाभ्यां नमः। गौं कनिष्ठाभ्यां नमः। गः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग न्यास— गां हृदयाय नमः। गीं शिरसे स्वाहा। गूं शिखायै वषट्। गैं कवचाय हुं। गौं नेत्रत्रयाय वौषट्। गः अस्त्राय फट्।

तत्त्वन्यास—ॐ आत्मतत्त्वं हृदयाय नमः। ॐ शिवतत्त्वं शिखायै वषट्। ॐ विद्यातत्त्वं शिरसे स्वाहा। ॐ गुरुतत्त्वं कवचाय हुं। ॐ योगतत्त्वं नेत्राभ्यां वौषट्। ॐ सर्वतत्त्वमस्त्राय फंट्।

कल्पन्यास— ॐ अं कं खं गं घं ङं आं हृदयाय नमः। इं चं छं जं झं ञं ईं शिरसे स्वाहा। उं टं ठं डं ढं णं ऊं शिखायै वषट्। एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुं। ओं पं फं बं भं मं औं नेत्राभ्यां वौषट्। अं यं रं लं वं शं वं सं हं ळं क्षं अः अस्त्राय फट्। इसी प्रकार करन्यास भी करे।

ॐगं काशीपीठाय नमो हृदये, ॐगं काञ्चीपीठाय नमः शिरसि, ॐगं मधुपुरीपीठाय नमः शिखायाम्। ॐगं उड्डीयानपीठाय नमः कवचे। ॐगं अयोध्यापीठाय नमो नेत्रयोः। ॐगं जालन्धरपीठाय नमः अस्त्रे। इति पीठन्यासः। ॐ हृदयाय नमः। ह्रीं गणपतये शिरसे स्वाहा। श्रीं वरवरद शिखायै वषट्। क्लीं सर्वजनं मे कवाचाय हुं। ग्लौं वशमानय नेत्रेभ्यो वौषट्। गं स्वाहा अस्त्राय फट्। एवं करन्यासः, इति मन्त्रन्यासः।

पीठन्यास—ॐ गं काशीपीठाय नम हृदये। ॐ गं काञ्चीपीठाय नमः शिरसि। ॐ गं मधुपुरीपीठाय नमः शिखायाम्। ॐ गं उड्डीयानपीठाय नमः कवचे। ॐ गं अयोध्यापीठाय नमः नेत्रयोः। ॐ गं जालन्धरपीठाय नमः अस्त्रे।

मन्त्रन्यास—ॐ हृदयाय नमः। ह्रीं गणपतये शिरसे स्वाहा। श्रीं वरवरद शिखायै वषट्। क्लीं सर्वजनं मे कवचाय हुं। ग्लौं वशमानय नेत्राभ्यां वौषट्। गं स्वाहा अस्त्राय फट्। इसी प्रकार करन्यास भी करे।

एवं न्यासं विधाय श्रीचक्रं ध्यात्वा चतुरश्रं षोडशदलं वसुदलं दशारं त्रिकोणं बिन्दुं विचिन्त्य भद्रपीठोपरि मूलेन संस्थाप्य योगपीठपूजां कुर्यात्। ह्रीं मण्डूकाय नमः। ह्रीं कालाग्निरुद्राय नमः। एवं मूलप्रकृत्यै०। आधारशक्त्यै०। कूर्माय०। अनन्ताय०। वराहाय०। पृथिव्यै० इत्युपर्युपरि सम्पूज्य, तन्मध्ये ह्रीं सुधार्णवाय नमः। तन्मध्ये नवरत्नविराजितनवखण्ड-मयश्वेतद्वीपाय नमः। तत्रेशानादिष्वष्टसु प्रादक्षिण्येन नवरत्नखण्डेभ्यो नमः। तन्मध्ये पद्मरागखण्डाय नमः। मध्ये सुवर्णपर्वताय नमः। उपरि नन्दनोद्यानाय नमः। मध्ये कल्पवनाय नमः। सरोवराय नमः। पद्मवनाय नमः। विचित्र-रत्नखचितभूमिकायै नमः। मध्ये सहस्रस्तम्भान्वितमध्यस्तम्भविवर्जित-चतुष्पञ्चाशद्योजनविस्तीर्णनानारत्नखचितचिन्तामणिमण्डपाय नमः। मध्ये नवरत्नखचितरत्नमयवेदिकायै नमः। उपरि रत्नसिंहासनाय नमः। उपरि उच्चैःश्वेतच्छत्राय नमः। पीठस्य कल्पिताग्निकोणादिषु धर्माय नमः, इत्यादि। कल्पितपूर्वादिषु अधर्माय नमः, इत्यादि। सिंहासनमध्ये आनन्दकन्दाय नमः। संविन्नालाय०। सहस्रदलकमलाय०। प्रकृतिमयपत्रेभ्यो०। विकृति-मयकेसरेभ्यो०। पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्यसर्वतत्त्वरूपायै कर्णिकायै नमः। उपरि अं अर्कमण्डलाय नमः। सों सोममण्डलाय नमः। रं वह्निमण्डलाय नमः। तं तमसे०। रं रजसे०। सं सत्त्वाय०। ह्रीं गं ह्रीं सर्वमन्त्रासनाय नमः। ॐ अं आं इत्यादिक्षान्तमुच्चार्य, शिवशक्तिसदाशिवेश्वर० इत्यादिसकलतत्त्वात्मने ह्रीं योगपीठाय नमः, इति योगपीठपूजां विधाय पात्राणि स्थापयेत्।

इस प्रकार न्यास करके श्रीचक्र का ध्यान करे। इसमें चतुरस्र, षोडश दल, अष्टदल, दशदल, त्रिकोण, बिन्दु का चिन्तन-करके भद्रपीठ पर मूल मन्त्र से स्थापन करके योगपीठ की पूजा करे।

योगपीठ-पूजन—ह्रीं मण्डूकाय नमः। ह्रीं कालाग्निरुद्राय नमः। मूलप्रकृत्यै नमः। आधारशक्तये नमः। कूर्माय नमः। अनन्ताय नमः। वराहाय नमः। पृथिव्यै नमः। इस प्रकार पीठपूजा करके उसके ऊपर इनकी पूजा करे—सुधार्णवाय नमः। नवरत्नविराजित-नवखण्डश्वेतद्वीपाय नमः। वहीं पर ईशानादि आठ दिशाओं में प्रदक्षिणक्रम से इनकी पूजा करे—नवरत्नखण्डेभ्यो नमः। पद्मरागखण्डाय नमः। सुवर्णपर्वताय नमः। नन्दनोद्यानाय नमः। कल्पवनाय नमः। सरोवराय नमः। पद्मवनाय नमः। विचित्ररत्नखचितभूमिकायै नमः। सहस्रस्तम्भान्वितमध्यस्तम्भविवर्जितचतुष्पञ्चाशद्योजनविस्तीर्णनानारत्नखचितचिन्ता-मणिमण्डपाय नमः। नवरत्नखचितरत्नमयवेदिकायै नमः। रत्नसिंहासनाय नमः। उच्चैःश्वेतच्छत्राय

नमः। पीठ के कल्पित अग्निकोणादिकों में धर्माय नमः इत्यादि। कल्पित पूर्वादि दिशाओं में अधर्माय नमः इत्यादि का पूजन करे।

सिंहासन के मध्य में—आनन्दकन्दाय नमः। संविन्नालाय नमः। सहस्रदलकमलाय नमः। प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः। विकृतिमयकेसरेभ्यो नमः। पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्यसर्वतत्त्वरूपायै कर्णिकायै नमः। उसके ऊपर इनकी पूजा करे—

अं अर्कमण्डलाय नमः। सों सोममण्डलाय नमः। रं वह्निमण्डलाय नमः। तं तमसे नमः। रं रजसे नमः। सं सत्वाय नमः। ह्रीं गं ह्रीं सर्वमन्त्रासनाय नमः। ॐ अं आं इं ईं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं शिवशक्तिसदाशिवेश्वर इत्यादि सकलतत्त्वात्मने ह्रीं योगपीठाय नमः। योगपीठपूजा करके पात्रस्थापन करे।

स्ववामभागे त्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुरश्ररूपं यन्त्रं विलिख्य शङ्खमुद्रां प्रदर्श्य, गां हृदयाय नमः। गीं शिरसे०। गूं शिखायै०। गैं कवचाय०। गौं नेत्रेभ्यो०। गः अस्त्राय फट्। इति त्रिपादिकां प्रक्षाल्य मूलेन संस्थाप्य, रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः श्रीमहागणपतिपात्रासनाय नमः इति गन्धाक्षतैरभ्यर्च्य, तदुपरि पात्रं संस्थाप्य, ॐ सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः श्रीमहागणपत्यर्घ्यपात्राय नमः, ततो मूलेनापूर्य ॐ चन्द्रमण्डलाय षोडशकलात्मने नमः गणपतिपात्राय नमः इति गन्धाक्षतैरभ्यर्च्य, ततोऽङ्कुशमुद्रया

गङ्गे च यमुने तापे गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

इति तीर्थमावाह्य, मूलेनाष्टधाभिमन्त्र्य षडङ्गैः सम्पूज्य, मत्स्यमुद्रयाच्छाद्य फडिति छोटिकाभिः संरक्ष्य, हुमित्यवगुण्ठ्य, वमित्यमृतीकृत्य, शङ्खचक्रमुसलयोनिमुद्राः प्रदर्श्य, तेनैव जलेन यागवस्तूनि प्रोक्षयेत्। मूलं ॐ ह्रीं परमामृतरूपेण महागणपतिचन्द्रमण्डलनिवासाय चन्द्रामृतेन पूरय पूरय द्रव्यं पवित्रीकुरु पवित्रीकुरु ॐ ह्रौं जुंसः स्वाहा। अनेन सर्वं प्रोक्षयेत्।

सामान्यार्घ्य-स्थापन—अपने वाम भाग में त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, चतुरस्र रूप का यन्त्र अंकित करके शङ्खमुद्रा प्रदर्शित करे। षडङ्ग पूजा करे—

गां हृदयाय नमः। गीं शिरसे स्वाहा। गूं शिखायै वषट्। गैं कवचाय हुं। गौं नेत्राभ्यां वौषट्। गः अस्त्राय फट्।

त्रिपाद को धोकर मूल मन्त्र से स्थापित करे। रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः।

श्रीं महागणपतिपात्रासनाय नमः से गन्धाक्षत से पूजन करे। उसके ऊपर पात्र स्थापित करे। पात्र का पूजन ॐ सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः। श्रीमहागणपत्यर्घ्यपात्राय नमः मन्त्र से गन्धाक्षत के द्वारा करे। इसके बाद पात्र में जल को अङ्कुश मुद्रा से अग्रवर्णित मन्त्रोच्चारणपूर्वक तीर्थों का आवाहन करे—

गङ्गे च यमुने तापे गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

मूल मन्त्र के आठ जप से अभिमन्त्रित करे। षडङ्ग पूजन करे। मत्स्य मुद्रा से ढँके। फट् कहते हुए छोटिका मुद्रा से संरक्षण करे। हुं मन्त्र से अवगुण्ठित करे। वं से अमृतीकरण करे। शङ्ख-चक्र-मुसल और योनिमुद्रा दिखावे। इसी सामान्यार्घ्य जल से सभी पूजन सामग्रियों का प्रोक्षण करे। तब इसे इस मन्त्र से अमृतमय बनाये—मूलं ॐ ह्रीं परमामृतरूपेण महागणपतिचन्द्रमण्डलनिवासाय चन्द्रामृतेन पूरय पूरय द्रव्यं पवित्रीकुरु कुरु ॐ हौं जूं सः स्वाहा। इस जल से सबका प्रोक्षण करे।

तदुत्तरे पाद्याचमनीयमधुपर्कपात्राणि संस्थाप्य सम्पूज्यात्मानं तन्मयं विभाव्य, ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय योगपीठात्मनेऽनन्ताय नमः इति सम्पूज्य, सशक्तिकं देवं मूलेनावाह्य मूलेन नवमुद्राः प्रदर्श्य, मूलषडङ्गं विधाय प्राणान् प्रतिष्ठाप्य स्वागतमित्युदीर्य मूलेन पाद्यार्घ्ये दद्यात्। एवं पाद्यार्घ्याचमनीयमधुपर्कस्नानादि विधाय मातृकाक्षरैरभ्यर्च्य, तैर्धूपदीपनैवेद्याचमनीयादीन् निवेद्य पुष्पाञ्जलित्रयं दत्त्वा देवस्यावरणदेवताः पूजयेत्।

पाद्य, आचमनीय, मधुपर्कपात्रस्थापन—सामान्यार्घ्य पात्र के उत्तर तरफ पाद्य, आचमनीय, मधुपर्क पात्रों को स्थापित करे। पूजन करे। अपने को महागणपतिस्वरूप समझे। ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय योगपीठात्मने अनन्ताय नमः मन्त्र से पूजन करे।

तब मूल मन्त्र से शक्तिसहित देव का आवाहन करे। मूलमन्त्र से नव मुद्रा दिखाये। मूल मन्त्र से षडङ्ग पूजन करे। प्राणप्रतिष्ठा करे, स्वागत करे। मूल मन्त्र से पाद्य, अर्घ्य प्रदान करे। इस प्रकार पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, मधुपर्क, स्नानादि कराकर मातृका वर्णों से पूजन करे। तब धूप-दीप-नैवेद्य-आचमनीयादि निवेदित करे। तीन पुष्पाञ्जलि देकर देव के आवरणदेवताओं का पूजन करे।

ॐ ह्रीं श्रीं सर्वाशापूरकचक्राय नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा, ॐ ह्रीं श्री इन्द्राय नमः पूर्वे। ह्रीं श्रीं क्लीं वरुणाय नमः पश्चिमे। ह्रीं श्रीं क्लीं धर्मराजाय नमो दक्षिणे। ह्रीं श्रीं क्लीं कुबेराय नमः उत्तरे। इति चतुरश्रं गन्धाक्षतैरभ्यर्च्य, प्रथमावरणम्।

मूलेन पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा ह्रीं श्रीं क्लीं नन्दिने नमः। ह्रीं श्रीं क्लीं वीरेशाय नमः। ह्रीं श्रीं क्लीं सौभाग्याय नमः। ह्रीं श्रीं क्लीं भृङ्गिरीटिने नमः। ह्रीं श्रीं क्लीं विराटकाय नमः। ह्रीं श्रीं क्लीं पुष्पदन्ताय नमः। ह्रीं श्रीं क्लीं विकर्ताय नमः। ह्रीं श्रीं क्लीं अन्त्यगणाय नमः। ह्रीं श्रीं क्लीं चित्तगणाय नमः। ह्रीं श्रीं क्लीं लोहिताय नमः। ह्रीं श्रीं क्लीं सुन्दराय नमः। ह्रीं श्रीं क्लीं नूपुराढ्याय नमः। ह्रीं श्रीं क्लीं विचाराय नमः। ह्रीं श्रीं क्लीं उग्ररूपाय नमः। ह्रीं श्रीं क्लीं सुप्ताय नमः। ह्रीं श्रीं क्लीं विनर्तकाय नमः। इति षोडशारं गन्धाक्षतैर्दक्षिणावर्तेनाभ्यर्च्य, द्वितीयावरणम्।

मूलेन पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा ह्रीं श्रीं क्लीं करालाय नमः। ह्रीं श्रीं क्लीं विकरालाय नमः। ह्रीं श्रीं क्लीं संहाराय०। ह्रीं श्रीं क्लीं रुरवे०। ह्रीं श्रीं क्लीं महाकालाय०। ह्रीं श्रीं क्लीं कालाग्नये०। ह्रीं श्रीं क्लीं सितास्याय०। ह्रीं श्रीं क्लीं असितात्मने नमः। इति वसुदलं गन्धाक्षतदूर्वाभिर्दक्षिणा-वर्तेनाभ्यर्चयेदिति तृतीयावरणम्।

मूलेन पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा ह्रीं श्रीं क्लीं विनायकाय नमः। ह्रीं श्रीं क्लीं विघ्नराजाय नमः। ह्रीं श्रीं क्लीं गणाध्यक्षाय०। ह्रीं श्रीं क्लीं गजाननाय०। ह्रीं श्रीं क्लीं हेरम्बाय०। ह्रीं श्रीं क्लीं मोदकाहाराय०। ह्रीं श्रीं क्लीं द्वैमातुराय०। ह्रीं श्रीं क्लीं अरिन्दमाय०। ह्रीं श्रीं क्लीं एकदन्ताय०। ह्रीं श्रीं क्लीं वक्रतुण्डाय नमः। इति गन्धाक्षतदूर्वाभिर्दक्षावर्तेन दशारमभ्यर्चयेदिति चतुर्थावरणम्।

मूलेन पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा ह्रीं श्रीं क्लीं कुमाराय नमः अग्रे। ह्रीं श्रीं क्लीं जयन्ताय० दक्षे। ह्रीं श्रीं क्लीं प्रद्युम्नाय० वामे। इति गन्धाक्षतदूर्वाभिः त्रिकोणमभ्यर्चयेदिति पञ्चमावरणम्।

मूलेन पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा मूलविद्यामुच्चार्य ह्रीं स्वशक्तिसहिताय महागणपतये नम्: इति सप्तधा बिन्दुं सम्पूजयेदिति षष्ठावरणम्।

मू० ह्रीं गणेशाय नमः। ह्रीं गाङ्गेयाय नमः। ह्रीं सिंहासनाय नमः। ह्रीं विघ्नान्तकाय नमः। ह्रीं आखुवाहाय नमः। ह्रीं त्रिपुरान्तकाय नमः। इत्युपरि गन्धाक्षतदूर्वाभिरभ्यर्चयेदिति सप्तमावरणम्।

उपरि मूलं० ह्रीं शतपत्राय नमः, ह्रीं सहस्राराय नमः, ह्रीं दन्तमालायै नमः, ह्रीं मोदकपात्राय नमः, ह्रीं सुधाकलशाय नमः, ह्रीं परशवे नमः, ह्रीं शङ्खाय नमः, ह्रीं पाञ्चजन्याय नमः इति,

दर्शनेनापि शङ्खस्य किं पुनः स्पर्शनेन च।
विलयं यान्ति पापानि हिमवद्भास्करोदये ॥

इति सप्तधा सम्पूजयेदित्यष्टमावरणम्।

प्रथम आवरण भूपुर में—ॐ ह्रीं श्रीं इन्द्राय नमः पूरब में। ॐ ह्रीं श्रीं वरुणाय नमः पश्चिम में। ॐ ह्रीं श्रीं धर्मराजाय नमः दक्षिण में। ॐ ह्रीं श्रीं कुवेराय नमः उत्तर में। गन्धाक्षत पुष्प से प्रथम आवरण पूजन करे।

षोडशार में मूल से पुष्पाञ्जलि देकर पूर्वादि क्रम से दक्षिणावर्त पूजा करे।

द्वितीय आवरण—

१. ॐ ह्रीं श्रीं नन्दिने नमः।
२. ॐ ह्रीं श्रीं वीरेशाय नमः
३. ॐ ह्रीं श्रीं सौभाग्याय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्रीं भृङ्गिरीटिने नमः।
५. ॐ ह्रीं श्रीं विराटकाय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्रीं पुष्पदन्ताय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्रीं विकर्ताय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्रीं अन्त्यगणाय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्रीं चित्तगणाय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्रीं लोहिताय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्रीं सुन्दराय नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्रीं नूपुराढ्याय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्रीं विचाराय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्रीं उग्ररूपाय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्रीं सुप्ताय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्रीं विनर्तकाय नमः।

तृतीय आवरण—अष्टदल में मूल मन्त्र से पुष्पाञ्जलि देकर तृतीयावरण की पूजा दूर्वा-गन्धाक्षत से दक्षिणावर्तक्रम से करे—

१. ॐ ह्रीं श्रीं करालाय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्रीं विकरालाय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्रीं संहाराय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्रीं रुरवे नमः।
५. ॐ ह्रीं श्रीं महाकालाय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्रीं कालाग्नये नमः।
७. ॐ ह्रीं श्रीं सितास्याय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्रीं असितात्मने नमः।

चतुर्थ आवरण—दश दल में मूल मन्त्र से पुष्पाञ्जलि देकर गन्धाक्षत-दूब से दक्षिणावर्ती क्रम से करे—

१. ॐ ह्रीं श्रीं विनायकाय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्रीं विघ्नराजाय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्रीं गणाध्यक्षाय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्रीं गजाननाय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्रीं हेरम्बाय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्रीं मोदकाहाराय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्रीं द्वैमातुराय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्रीं अरिन्दमाय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्रीं एकदन्ताय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्रीं वक्रतुण्डाय नमः।

पञ्चम आवरण—त्रिकोण में पुष्पाञ्जलि मूल मन्त्र से देकर गन्धाक्षत दूर्वा से पूजा करे—

१. ॐ ह्रीं श्रीं कुमाराय नमः—अपने सम्मुख कोण में।

२. ॐ ह्रीं श्रीं जयन्ताय नमः—दक्ष कोण में।

३. ॐ ह्रीं श्रीं प्रद्युम्नाय नमः—वाम कोण में।

षष्ठ आवरण—बिन्दु में पुष्पाञ्जलि देकर मूल विद्या का उच्चारण करके सात बार पूजन करे।

सप्तम आवरण—मूल मन्त्र ह्रीं स्वशक्तिसहिताय महागणपतये नमः। मूल मन्त्र ह्रीं गणेशाय नमः। ह्रीं गाङ्गेयाय नमः। ह्रीं सिंहासनाय नमः। ह्रीं विघ्नान्तकाय नमः। ह्रीं आखुवाहाय नमः। ह्रीं त्रिपुरान्तकाय नमः। यह पूजन भी गन्धाक्षत-दूर्वा से करे।

अष्टम आवरण—इसके बाद ऊपर में मूल मन्त्रसहित ह्रीं शतपत्राय नमः। ह्रीं सहस्राराय नमः। ह्रीं दन्तमालायै नमः। ह्रीं मोदकपात्राय नमः। ह्रीं सुधाकलशाय नमः। ह्रीं परशवे नमः। ह्रीं शङ्खाय नमः। ह्रीं पाञ्चजन्याय नमः।

निम्न मन्त्र से सात बार पूजन करे—

दर्शनेनापि शङ्खस्य किं पुनः स्पर्शनेन च।
विलयं यान्ति पापानि हिमवत् भास्करोदये।।

मूलमुच्चार्य गन्धाक्षतदूर्वापुष्पधूपदीपनैवेद्याचमनीयताम्बूलच्छत्रचामरादीन् समर्प्य, देवाग्रे संकल्पपूर्वं षडङ्गन्यासं विधाय देवं ध्यात्वा, मूलेन मालामभ्यर्च्य यथाशक्त्या मूलं जपेत्। ततो मूलमुच्चार्य देवाय जपं समर्प्य, कवचसहस्र-नामस्तवराजपाठं देवाग्रे कृत्वा, मूलं—

प्रातःप्रभृति सायान्तं सायादिप्रातरन्ततः।
यत्करोमि गणाध्यक्ष तदस्तु तव पूजनम्॥

इति नत्वा संहारमुद्रया सशक्तिकं देवं विसर्जयेत्।

इसके बाद मूल मन्त्रोच्चारणपूर्वक गन्धाक्षत-पुष्प-दूर्वा-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमनीय-ताम्बूल-छत्र-चामर आदि समर्पित करे। देव के सामने संकल्प करके षडङ्ग न्यास करके देव का ध्यान करे। मूल मन्त्र से माला की पूजा करके यथाशक्ति मूल मन्त्र का जप करे। तब मूल मन्त्र का उच्चारण करके जप को समर्पित करे। तब कवच, सहस्रनाम, स्तवराज का पाठ करे। इसके बाद मूल मन्त्र पढ़े हुये निम्न मन्त्र का पाठ करे—

प्रातःप्रभृति सायान्तं सायादि प्रातरन्ततः।
यत्करोमि गणाध्यक्ष तदस्तु तव पूजनम्।।

मन्त्रपाठ के बाद नमस्कार करके संहारमुद्रा से शक्तिसहित देव का विसर्जन करे।

इति श्रीनित्यपूजायाः पद्धतिं गद्यरूपिणीम्।
महागणपतेर्दिव्यां सर्वथा देवि गोपयेत्।।१।।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये वरदगणेशपूजापद्धतिनिरूपणं नाम सप्तविंशः पटलः।।२७।।

महा गणपति की दिव्य गद्यरूपिणी नित्य पूजापद्धति पूर्ण हुई। हे देवि! इसे सर्वथा गुप्त रखना चाहिये।।१।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में वरगणेशपूजा-पद्धति निरूपण नामक सप्तविंश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथाष्टाविंशः पटलः

महागणपति-कवचम्

महागणपतिकवचम्

श्रीभैरव उवाच

महादेवि गणेशस्य वरदस्य महात्मनः ।
कवचं ते प्रवक्ष्यामि वज्रपञ्जरकाभिधम् ॥१॥

श्री भैरव ने कहा—हे महादेवि! अब मैं वरद महागणपति का वज्रपञ्जर नाम के कवच का वर्णन करता हूँ।।१।।

विनियोगः

अस्य श्रीमहागणपतिवज्रपञ्जरकवचस्य श्रीभैरव ऋषिः, गायत्र्यं छन्दः श्रीमहागणपतिर्देवता, गं बीजं, ह्रीं शक्तिः, कुरु कुरु कीलकं, वज्र-विद्यादिसिद्ध्यर्थे महागणपतिवज्रपञ्जरकवचपाठे विनियोगः। गामित्यादिना षडङ्गन्यासं विधाय ध्यायेत्।

विनियोग—अस्य श्रीमहागणपतिवज्रपञ्जरकवचस्य श्रीभैरव ऋषिः, गायत्र्यं छन्दः, श्रीमहागणपतिर्देवता, गं बीजं ह्रीं शक्तिः कुरुकुरु कीलकं वज्रविद्यादिसिद्ध्यर्थे महागणपतिवज्र-पञ्जरकवचपाठे विनियोगः।

गां गीं गूं गैं गौं गः से षडङ्ग न्यास करके ध्यान करे।

महागणपतिध्यानम्

विघ्नेशं विश्ववन्द्यं सुविपुलयशसं लोकरक्षाप्रदक्षं
साक्षात् सर्वापदासु प्रशमनसुमतिं पार्वतीप्राणसूनुम्
प्रायः सर्वासुरेन्द्रैः ससुरमुनिगणैः साधकैः पूज्यमानं
कारुण्येनान्तरायामितभयशमनं विघ्नराजं नमामि ॥२॥

ध्यान—विघ्नेश, विश्ववन्द्य, अत्यन्त यशस्वी, लोकरक्षा में दक्ष, सभी आपदाओं में साक्षात् प्रशमन सुबुद्धि, पार्वती-प्राणप्रिय पुत्र, इन्द्र सहित सभी देवों, मुनिगणों और साधकों से पूज्य, करुणार्द्रहृदय, अमित भयनिवारक विघ्नराज को मैं नमस्कार करता हूँ।।२।।

ॐ श्रीं ह्रीं गं शिर: पातु महागणपति: प्रभु: ।
विनायको ललाटं मे विघ्नराजो भ्रुवौ मम ॥३॥
पातु नेत्रे गणाध्यक्षो नासिकां मे गजानन: ।
श्रुती मेऽवतु हेरम्बो गण्डौ मे मोदकाशन: ॥४॥
द्वैमातुरो मुखं पातु चाधरौ पात्वरिन्दम: ।
दन्तान् ममैकदन्तोऽव्याद् वक्रतुण्डोऽवताद् रसाम् ॥५॥
गाङ्गेयो मे गलं पातु स्कन्धौ सिंहासनोऽवतु ।
विघ्नान्तको भुजौ पातु हस्तौ मूषकवाहन: ॥६॥
ऊरू ममावतान्नित्यं देवस्त्रिपुरघातन: ।
हृदयं मे कुमारोऽव्याज्जयन्त: पार्श्वयुग्मकम् ॥७॥

कवच—ॐ श्रीं ह्रीं गं महागणपति प्रभु मेरे शिर की रक्षा करें। विनायक ललाट की और विघ्नराज भ्रुवों की रक्षा करें। गणाध्यक्ष मेरे नेत्रों की और गजानन नासिका की रक्षा करें। हेरम्ब मेरे कानों की और मोदकाशन कपोलों की रक्षा करें। द्वैमातुर मेरे मुख की और अरिन्दम मेरे अधरों की रक्षा करें। एकदन्त मेरे दाँतों की और रसना की रक्षा वक्रतुण्ड करें। गाङ्गेय मेरे गले की और सिंहासन कन्धों की रक्षा करें। विघ्नान्तक मेरी भुजाओं की और मूषकवाहन हाथों की रक्षा करें। त्रिपुरान्तक देव सदैव मेरे ऊरुओं की रक्षा करें। कुमार मेरे हृदय की और जयन्त दोनों पार्श्वों की रक्षा करें।।३-७।।

प्रद्युम्नो मेऽवतात् पृष्ठं नाभिं शङ्करनन्दन: ।
कटिं नन्दिगण: पातु शिश्नं वीरेश्वरोऽवतु ॥८॥
मेढ्रे मेऽवतु सौभाग्यो भृङ्गिरीटी च गुह्यकम् ।
विराटकोऽवतादूरू जानू मे पुष्पदन्तक: ॥९॥
जङ्घे मम विकर्तोऽव्याद् गुल्फावन्त्यगणोऽवतु ।
पादौ चित्तगण: पातु पादाधो लोहितोऽवतु ॥१०॥

प्रद्युम्न मेरे पीठ की और शंकरनन्दन मेरे नाभि की रक्षा करें। नन्दिगण मेरी कमर की और वीरेश्वर शिश्न की रक्षा करें। सौभाग्य मेरे मेढ्र की रक्षा करें। भृङ्गिरीटी गुह्य देश की रक्षा करें। विराट मेरे जङ्घों की और पुष्पदन्त मेरे घुटनों की रक्षा करें। विकर्तन मेरे जङ्घों की और अन्त्यगण गुल्फों की रक्षा करें। चित्तगण पैरों की और पादतलों की रक्षा लोहित करें।।८-१०।।

पादपृष्ठं सुन्दरोऽव्याद् नूपुराढ्यो वपुर्मम ।
विचारो जठरं पातु भूतानि चोग्ररूपक: ॥११॥

शिरसः पादपर्यन्तं वपुः सुप्तगणोऽवतु।
पादादिमूर्धपर्यन्तं वपुः पातु विनर्तकः ॥१२॥
विस्मारितं तु यत् स्थानं गणेशस्तत् सदावतु।

सुन्दर पादपृष्ठों की और नूपराढ्य मेरे शरीर की रक्षा करें। विचार मेरे उदर की और विनर्तक मेरे शरीर की रक्षा करें। सुप्त गण मेरे शिर से पाँव तक के शरीर की रक्षा करें। आपादमस्तक शरीर की रक्षा विनर्तक करें। जो स्थान छूट गये हैं, उनकी रक्षा सदैव गणेश करें।।११-१२।।

पूर्वे मां ह्रीं करालोऽव्यादाग्नेये विकरालकः ॥१३॥
दक्षिणे पातु संहारो नैर्ऋते रुरुभैरवः।
पश्चिमे मां महाकालो वायौ कालाग्निभैरवः ॥१४॥
उत्तरे मां सितास्योऽव्यादैशान्यामसितात्मकः।
प्रभाते शतपत्रोऽव्यात् सहस्रारस्तु मध्यमे ॥१५॥
दन्तमाला दिनान्तेऽव्यान्निशि पात्रं सदावतु।
कलशो मां निशीथेऽव्यान्निशान्ते परशुस्तथा।
सर्वत्र सर्वदा पातु शङ्खयुग्मं च मद्वपुः ॥१६॥

पूर्व में मेरी रक्षा कराल और आग्नेय में विकराल करें। दक्षिण में मेरी रक्षा संहार और नैर्ऋत्य में रुरुभैरव करें। पश्चिम में रक्षा महाकाल और वायव्य में कालाग्नि भैरव करें। उत्तर में मेरी रक्षा सितास्य और ईशान में असितात्मक करें। प्रभात में शतपत्र और मध्याह्न में सहस्रार रक्षा करें। सायंकाल में दन्तमाला और रात में पात्र मेरी रक्षा करें। निशीथ में मेरी रक्षा कलश, निशान्त में परशु करें। सर्वत्र सर्वदा मेरे शरीर की रक्षा दोनों शङ्ख करें।।१३-१६।।

ॐ ॐ राजकुले हहौं रणभये ह्रीं ह्रीं कुद्यूतेऽवतात्
श्रींश्रीं शत्रुगृहे शशौं जलभये क्लींक्लीं वनान्तेऽवतु।
ग्लौंग्लूंग्लैंग्लंगुं सत्त्वभीतिषु महाव्याध्यार्तिषु ग्लौंगगौं
नित्यं यक्षपिशाचभूतफणिषु ग्लौंगं गणेशोऽवतु ॥१७॥

ॐ ॐ राजदरबार में, हहौं युद्धभय में, ह्रीं ह्रीं खराब जुआ में रक्षा करें। श्रीं श्रीं शत्रुगृह में, शशौं जलभय में, क्लीं क्लीं वनान्त में रक्षा करें। ग्लौं ग्लूं ग्लैं ग्लं गुं सत्वभय में, महाव्याधि से कष्ट में ग्लौं गं गौं रक्षा करें। यक्ष-पिशाच-भूत-सर्पभय में ग्लौं गं गणेश मेरी रक्षा करें।।१७।।

महागणपतिकवचमाहात्म्यकथनम्

इतीदं कवचं गुह्यं सर्वतन्त्रेषु गोपितम्।
वज्रपञ्जरनामानं गणेशस्य महात्मनः ॥१८॥
अङ्गभूतं मनुमयं सर्वाचारैकसाधनम्।
विनानेन न सिद्धिः स्यात् पूजनस्य जपस्य च ॥१९॥
तस्मात्तु कवचं पुण्यं पठेद्वा धारयेत् सदा।
तस्य सिद्धिर्महादेवि करस्था पारलौकिकी ॥२०॥
यंयं कामयते कामं तंतं प्राप्नोति पाठतः।
अर्धरात्रे पठेन्नित्यं सर्वाभीष्टफलं लभेत् ॥२१॥
इति गुह्यं सुकवचं महागणपतेः प्रियम्।
सर्वसिद्धिमयं दिव्यं गोपयेत् परमेश्वरि ॥२२॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये महागणपतिकवचनिरूपणं नामाष्टाविंशः पटलः॥२८॥

कवच-माहात्म्य—यह कवच अत्यन्त गुह्य है। सभी तन्त्रों में गोपित है। महागणेश के इस कवच का नाम वज्रपञ्जर है। सभी आचार के साधनों में इस मन्त्रमय कवच को धारण के बिना पूजन और जप में सिद्धि नहीं मिलती। इसलिये इस पुनीत कवच का पाठ, धारण सदैव करना चाहिये। इस कवच को धारण करने वालों की पारलौकिकी सिद्धि हस्तामलकवत् होती है। वह जो-जो इच्छा करे, उन्हें इस कवच के पाठमात्र से ही पा सकता है। सभी अभीष्टों की सिद्धि के लिये इसका पाठ अर्द्धरात्रि में नित्य करना चाहिये। हे प्रिये! महागणपति का यह सुन्दर गुह्य कवच समाप्त हुआ। यह कवच सभी सिद्धियों को देने वाला है। हे परमेश्वरि! अत: इसे सदैव गुप्त रखना चाहिये।।१८-२०।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में महागणपतिकवच निरूपण नामक अष्टाविंश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथैकोनत्रिंशः पटलः

महागणपतिसहस्रनामकम्

सहस्रनामप्रस्तावः

श्रीभैरव उवाच

श्रृणु देवि रहस्यं मे यत्पुरा सूचितं मया।
तव भक्त्या गणेशस्य वक्ष्ये नामसहस्रकम् ॥१॥

सहस्रनाम-प्रस्ताव—श्रीभैरव ने कहा—हे देवि! पूर्व में जिसके बारे में मैंने तुम्हें बताया था, उस गणेश के सहस्रनाम को तुम्हारी भक्ति के कारण अब मैं कहता हूँ।।१।।

श्रीदेव्युवाच

भगवन् गणनाथस्य वरदस्य महात्मनः।
श्रोतुं नामसहस्रं मे हृदयं प्रोत्सुकायते ॥२॥

श्री देवी बोलीं—हे भगवन्! वर प्रदान करने वाले, महान् आत्मा, गणों के नायक गणेश के सहस्रनाम के सुनने के लिये मेरा हृदय अत्यन्त उत्सुक हो रहा है।।२।।

श्रीभैरव उवाच

प्राङ् मे त्रिपुरनाशे तु जाता विघ्नकुलाः शिवे।
मोहेन मुह्यते चेतस्ते सर्वे बलदर्पिताः ॥३॥
तदा प्रभुं गणाध्यक्षं स्तुत्वा नामसहस्रकैः।
विघ्ना दूरात् पलायन्ते कालरुद्रादिव प्रजाः ॥४॥
तस्यानुग्रहतो देवि जातोऽहं त्रिपुरान्तकः।
तमद्यापि गणेशानं स्तौमि नामसहस्रकैः ॥५॥

श्री भैरव बोले—हे शिवे! पूर्वकाल में मेरे द्वारा त्रिपुरनाश के समय अतिशय विघ्न हुये थे; वे सभी अतीव बलशाली थे एवं मेरे चित्त को अपने मोहनास्त्र द्वारा सम्मोहित कर रहे थे। उस समय गणों के ईश्वर प्रभु गणेश की मैंने उनके सहस्रनाम से स्तुति की थी, जिसके प्रभाव से वे सभी विघ्न उसी प्रकार दूर भाग गये, जैसे कि कालरुद्र को देखकर लोग दूर भाग खड़े होते हैं। हे देवि! उसी गणपति के सहस्रनाम स्तोत्र के अनुग्रह से मैं त्रिपुरान्तक हूँ। अत: उसी सहस्रनाम के द्वारा आज भी मैं गणेश की स्तुति करता हूँ।।३-५।।

तमद्य तव भक्त्याहं साधकानां हिताय च।
महागणपतेर्वक्ष्ये दिव्यं नामसहस्त्रकम् ॥६॥
(पाठकानां च दातॄणां सुखसम्पत्प्रदायकम्।
दुःखापहं च श्रोतॄणां मन्त्रनामसहस्त्रकम्) ॥७॥

हे देवि! महागणपति के उसी दिव्य सहस्रनाम को आज मैं तुम्हारी भक्ति के कारण एवं साधकों के हित की कामना से कहता हूँ। यह सहस्रनाम पाठ करने वालों के लिये एवं प्रदान करने वालों के लिये सभी प्रकार की सुख एवं सम्पत्तियों को प्रदान करने वाला है; साथ ही श्रवण करने वालों के समस्त कष्टों का विनाश करने वाला है।।६-७।।

विनियोगः

अस्य श्रीवरदगणेशसहस्त्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीभैरव ऋषिः, गायत्र्यं छन्दः, श्रीमहागणपतिर्देवता, गं बीजं, ह्रीं शक्तिः, कुरु कुरु कीलकं, धर्मार्थकाममोक्षार्थे सहस्त्रनामस्तवपाठे विनियोगः। पूर्ववद् ध्यानम्।

विनियोग—वरद गणेश-सहस्रनाम स्तोत्र के ऋषि श्री भैरव हैं, छन्द गायत्री है, इसके देवता श्री महागणपति हैं, 'गं' बीज है, 'ह्रीं' शक्ति है, 'कुरु कुरु' कीलक है एवं धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की प्राप्ति हेतु सहस्रनाम स्तुति के पाठ में इसका विनियोग किया जाता है। गणपति का ध्यान पूर्वोक्त प्रकार से ही करना चाहिये।

सहस्त्रनाम

ॐ ह्रींश्रींक्लीं गणाध्यक्षो ग्लौंगं गणपतिर्गुणी।
गुणाद्यो निर्गुणो गोप्ता गजवक्त्रो विभावसुः ॥८॥
विश्वेश्वरो विभादीप्तो दीपनो धीवरो धनी।
सदाशान्तो जगत्तातो विश्वक्सेनो विभाकरः ॥९॥
विस्त्रम्भी विजयी वैद्यो वारांनिधिरनुत्तमः।
अणीयान् विभवी श्रेष्ठो ज्येष्ठो गाथाप्रियो गुरुः ॥१०॥
सृष्टिकर्ता जगद्धर्ता विश्वभर्ता जगन्निधिः।
पतिः पीतविभूषाङ्गो रक्ताक्षो लोहिताम्बरः ॥११॥
विरूपाक्षो विमानस्थो विनयः सनयः सुखी।
सुरूपः सात्त्विकः सत्यः शुद्धः शङ्करनन्दनः ॥१२॥
नन्दीश्वरो सदानन्दी वन्दिस्तुत्यो विचक्षणः।
दैत्यमर्दी मदाक्षीबो मदिरारुणलोचनः ॥१३॥

सारात्मा विश्वसारश्च विश्वचारी विलेपनः ।
परं ब्रह्म परं ज्योतिः साक्षी त्र्यक्षो विकत्थनः ॥१४॥
वीरेश्वरो वीरहर्ता सौभाग्यो भाग्यवर्धनः ।
भृङ्गिरीटी भृङ्गमाली भृङ्गकूजितनादितः ॥१५॥
विनर्तको विनेतापि विनतानन्दनोऽर्चितः ।
वैनतेयो विनम्राङ्गो विश्वनेता विनायकः ॥१६॥
विराटको विराटश्च विदग्धो विधिरात्मभूः ।
पुष्पदन्तः पुष्पहारी पुष्पमालाविभूषणः ॥१७॥
पुष्पेषुर्मथनः पुष्टो विकर्ता कर्तरीकरः ।
अन्त्योऽन्तकश्चित्तगणश्चित्तचिन्तापहारकः ॥१८॥
अचिन्त्योऽचिन्त्यरूपश्च चन्दनाकुलमुण्डकः ।
लिपितो लोहितो लुप्तो (१००)लोहिताक्षो विलोभकः ॥१९॥

महागणपतिसहस्रनाम—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं गणाध्यक्ष, ग्लौं गं गणपति, गुणी, गुणाढ्य, निर्गुण, गोप्ता, गजवक्त्र, विभावसु, विश्वेश्वर, विभादीप्त, दीपन, धीवर, धनी, सदाशान्त, जगत्त्राता, विश्वक्सेन, विभाकर, विस्रम्भी, विजयी, वैद्य, वारांनिधि, अनुत्तम, अणीयान, विभवी, श्रेष्ठ, ज्येष्ठ, गाथाप्रिय, गुरु, सृष्टिकर्त्ता, जगद्धर्ता, विश्वभर्ता, जगन्निधि, पति, पीत-विभूषाङ्ग, रक्ताक्ष, लोहिताम्बर, विरूपाक्ष, विमानस्थ, विनय, सनय, सुखी, सुरूप, सात्विक, सत्य, शुद्ध, शंकरनन्दन, नन्दीश्वर, जयानन्दी, वन्दीस्तुत्य, विचक्षण, दैत्यमर्दी, मदाक्षीब, मदिरारूणलोचन, सारात्मा, विश्वसार, विश्वचारी, विलेपन, परंब्रह्म, परञ्ज्योति, साक्षी, त्र्यक्ष, विकत्थन, वीरेश्वर, वीरहर्त्ता, सौभाग्य, भाग्यवर्धन, भृङ्गि-रीटी, भृङ्गमाली, भृङ्गकूजित, भृङ्गनादित, विनर्तक, विनेतापी, विनतानन्दनार्चित वैन-तेय, विनम्राङ्ग, विश्वनेता, विनायक, विराटक, विराट, विदग्ध, विधिरात्मभूः, पुष्पदन्त, पुष्पहारी, पुष्पमालाविभूषण, पुष्पेषुर्मथन, पुष्ट, विकर्ता, कर्तरीकर, अन्त्य, अन्तक, चित्तगण, चित्त, चिन्तापहारक, अचिन्त्य, चन्दनाकुल, अचिन्त्यरूप, मुण्डक, लिपित, लोहित, लुप्त, लोहिताक्ष, विलोभक॥१-१९॥

लुब्धाशयो लोभरतो लाभदोऽलङ्घ्यगात्रकः ।
सुन्दरः सुन्दरीपुत्रः समस्तासुरघातनः ॥२०॥
नूपुराढ्यो विभवदो नरो नारायणो रविः ।
विचारी वान्तदो वाग्मी वितर्की विजयेश्वरः ॥२१॥
सुप्तो बद्धः सदारूपः सुखदः सुखसेवितः ।
विकर्तनो वियच्चारी विनटो नर्तको नटः ॥२२॥

नाट्यो नाट्यप्रियो नादोऽनन्तोऽनन्तगुणात्मकः ।
विश्वभूर्विश्वघाती च विनतास्यो विनर्तकः ॥२३॥
करालः कामदः कान्तः कमनीयः कलाधरः ।
कारुण्यरूपः कुटिलः कुलाचारी कुलेश्वरः ॥२४॥
विकरालो गणश्रेष्ठः संहारो हारभूषणः ।
रुरू रम्यमुखो रक्तो रेवतीदयितो रसः ॥२५॥
महाकालो महादंष्ट्रो महोरगभयापहः ।
उन्मत्तरूपः कालाग्निरग्निसूर्येन्दुलोचनः ॥२६॥
सितास्यः सितमाल्यश्च सितदन्तः सितांशुमान् ।
असितात्मा भैरवेशो भाग्यवान् भगवान् भगः ॥२७॥
भर्गात्मजो भगावासो भगदो भगवर्धनः ।
शुभङ्करः शुचिः शान्तः श्रेष्यः श्रव्यः शचीपतिः ॥२८॥
वेदाद्यो वेदकर्ता च वेदवेद्यः सनातनः ।
विद्याप्रदो वेदसारो वैदिको वेदपारगः ॥२९॥
वेदध्वनिरतो वीरो वरो वेदागमार्थवित् ।
तत्त्वज्ञः सर्वगः साधुः सदयः सद् (२००) असन्मयः ॥३०॥

लुब्धाशय, लोभरत, लाभद, अलंघ्यगात्रक, सुन्दर, सुन्दरीपुत्र, समस्त असुर घातक, नूपुराढ्य, विभवद, नर, नारायण, रवि, विचारी, वान्तद, वाग्मी, वितर्की, विजयेश्वर, सुप्त, बुद्ध, सदारूप, सुखद, सुखसेवित, विकर्तन, वियच्चारी, विनट, नर्तक, नाट्य, नाट्यप्रिय, नाद, अनन्त, अनन्तगुणात्मक, विश्वभू, विश्वघाती, विनतास्य, विनर्तक, कराल, कामद, कान्त, कमनीय, कलाधर, कारुण्यरूप, कुटिल, कुलाचारी, कुलेश्वर, विकराल, गणश्रेष्ठ, संहार, हारभूषण, रुरु, रम्य मुख, रक्त, रेवतीदयित, रस, महाकाल, महादंष्ट्र, महोरगभयापह, उन्मत्तरूप, कालाग्नि, अग्निसूर्येन्दुलोचन, सितास्य, सितमाल्य, सितदन्त, सितांशुमान, भैरवेश, भाग्यवान, भगवान्, भग, भर्गात्मज, भगावास, भगद, भगवर्धन, शुभङ्कर, शुचि, शान्त, श्रेष्य, श्रव्य, शचीपति, वेदाद्य, वेदकर्ता, वेदवेद्य, सनातन, विद्याप्रद, वेदसार, वैदिक, वेदपराग, वेदध्वनिरत, वीर, वर, वेदागमार्थवित्, तत्त्वज्ञ, सर्वग, साधु, सदय, असन्मय॥२०-३०॥

निरामयो निराकारो निर्भयो नित्यरूपभृत् ।
निर्वैरो वैरिविध्वंसी मत्तवारणसन्निभः ॥३१॥

शिवङ्करः शिवसुतः शिवः सुखविवर्धनः ।
श्वैत्यः श्वेतः शतमुखो मुग्धो मोदकभोजनः ॥३२॥
देवदेवो दिनकरो धृतिमान् द्युतिमान् धवः ।
शुद्धात्मा शुद्धमतिमाञ्छुद्धदीप्तिः शुचिव्रतः ॥३३॥
शरण्यः शौनकः शूरः शरदम्भोजधारकः ।
दारकः शिखिवाहेष्टः शीतः शङ्करवल्लभः ॥३४॥
शङ्करो निर्भवो नित्यो लयकृल्लास्यतत्परः ।
लूतो लीलारसोल्लासी विलासी विभ्रमो भ्रमः ॥३५॥
भ्रमणः शशभृत् सूर्यः शनिर्धरणिनन्दनः ।
बुद्धो विबुधसेव्यश्च बुधराजो बलन्धरः ॥३६॥
जीवो जीवप्रदो जैत्रः स्तुत्यो नुत्यो नतिप्रियः ।
जनको जिनमार्गज्ञो जैनमार्गनिवर्तकः ॥३७॥
गौरीसुतो गुरुरवो गौराङ्गो गजपूजितः ।
परं पदं परं धाम परमात्मा कविः कुजः ॥३८॥
राहुर्दैत्यशिरश्छेदी केतुः कनककुण्डलः ।
ग्रहेन्द्रो ग्राहितो ग्राह्योऽग्रणीर्घुर्घुरनादितः ॥३९॥
पर्जन्यः पीवरो पोत्री पीनवक्षाः पराजितः ।
वनेचरो वनपतिर्वनवासः स्मरोपमः ॥४०॥
पुण्यं पूतः पवित्रं च परात्मा पूर्णविग्रहः ।
पूर्णेन्दुशकलाकारो मन्युः पूर्णमनोरथः ॥४१॥
युगात्मा युगभृद्यज्वा (३००) याज्ञिको यज्ञवत्सलः ।

निरामय, निराकार, निर्मय, नित्यरूपमृत, निर्वैर, वैरिविध्वंसी, मत्तवारणसन्निभ, शिवंकर, शिवसुत, सुखविवर्धन, श्वैत्य, श्वेत, शतमुख, मुग्ध, मोदकभोजन, देवदेव, दिनकर, धृतिमान, द्युतिमान, धव, शुद्धात्मा, शुद्धमतिमान, शुद्धदीप्ति, शुचिव्रत, शरण्य, शौनक, शूर, शरदम्भोजधारक, दारक, शिखिवाहेष्ट, शीत, शङ्करवल्लभ, शङ्कर, निर्भय, नित्य, लयकृतलास्यतत्पर, लूत, लीलारसोल्लासी, विलासी, विभ्रम, भ्रम, भ्रमण, शशभृत्, सूर्य, शनि, धरणिनन्दन, बुद्ध, विवुधसेव्य, बुधराज, बलन्धर, जीव, जीवप्रद, जैत्र, स्तुत्य, नृत्य, नतिप्रिय, जनक, जिनमार्गज्ञ, जैनमार्गनिवर्तक, गौरीसुत, गुरुरव, गौराङ्ग, गजपूजित, परंपद, परंधाम, परमात्मा, कवि, कुज, राहु, दैत्यशिरश्छेदी, केतु, कनककुण्डल, ग्रह, ग्राहित, ग्राह्योऽग्रणी, घुर्घुरनादित, पर्जन्य,

पीवर, पोत्री, पीनवक्ष, परार्जित, वनेचर, वनपति, वनवास, स्मरोपम, पुण्य, पूत, पवित्र, परात्मा, पूर्णविग्रह, पूर्णेन्दु, शकलाकार, मन्त्र, पूर्णमनोरथ, युगात्मा, युगभृत्, यज्व, इन्द्र, याज्ञिक, यज्ञवत्सल।।३१-४१।।

यशस्वी यजमानेष्टो वज्रभृद् वज्रपञ्जर: ।।४२।।
मणिभद्रो मणिमयो मान्यो मीनध्वजाश्रित: ।
मीनध्वजो मनोहारी योगिनां योगवर्धन: ।।४३।।
द्रष्टा स्त्रष्टा तपस्वी च विग्रही तापसप्रिय: ।
तपोमयस्तपोमूर्तिस्तपनश्च तपोधन: ।।४४।।
रुचको मोचको रुष्टस्तुष्टस्तोमरधारक: ।
दण्डी चण्डांशुरव्यक्त: कमण्डलुधरोऽनघ: ।।४५।।
कामी कर्मरत: काल: कोल: क्रन्दितदिक्तट: ।
भ्रामको जातिपूज्यश्च जाड्यहा जडसूदन: ।।४६।।
जालन्धरो जगद्वासी हासकृद् हवनो हवि: ।
हविष्मान् हव्यवाहाक्षो हाटको हाटकाङ्गद: ।।४७।।
सुमेरुर्हिमवान् होता हरपुत्रो हलङ्कष: ।
हालाप्रियो हृदाशान्त: कान्ताहृदयपोषण: ।।४८।।
शोषण: क्लेशहा क्रूर: कठोर: कठिनाकृति: ।
कूवरो धीमयो ध्याता ध्येयो धीमान् दयानिधि: ।।४९।।
दविष्ठो दमनो द्युस्थो दाता त्राता सित: सम: ।
निर्गतो नैगमी गम्यो निर्जेयो जटिलोऽजर: ।।५०।।
जनजीवो जितारातिर्जगद्व्यापी जगन्मय: ।
चामीकरनिभोऽनाद्यो नलिनायतलोचन: ।।५१।।
रोचनो मोचनो मन्त्री मन्त्रकोटिसमाश्रित: ।
पञ्चभूतात्मक: पञ्चसायक: पञ्चवक्त्रक: ।।५२।।
पञ्चम: पश्चिम: पूर्व:(४००)पूर्ण: कीर्णालक: कुणि: ।

यशस्वी, यजमानेष्ट, वज्रभृत्, वज्रपञ्जर, मणिप्रभ, मणिमय, मान्य, मीनध्वजाश्रित, मीनध्वज, मनोहारी, योगिन, योगवर्धन, द्रष्टा, स्रष्टा, तपस्वी, विग्रही, तापसप्रिय, तपोमय, ऋतुरूप, ध्रुव, द्रुतगति, धर्म, धर्मी, रुष्ट, तुष्ट, तोमरधारक, दण्डी, चण्डांशु, अव्यक्त, कमण्डलुधर, अनघ, कामी, कर्मरत, काल, कोल, क्रन्दितदिक्तट, भ्रामक, जातिपूज्य, जाड्यहा, जडसूदन, जालन्धर, जगद्वासी, हासकृद्, हवन, हवि, हविष्मान,

हव्यवाहाक्ष, हाटक, हाटकाङ्गद, सुमेरु, हिमवान, होता, हरपुत्र, हलङ्कष, हालाप्रिय, हृदाशान्त, कान्ताहृदय, पोषण, शोषण, क्लेशहा, क्रूर, कठोर, कठिनाकृति, कूवर, धीमय, ध्याता, ध्येय, धीमान्, दयानिधि, दविष्ट, दमन, द्युस्थ, दाता, त्राता, सित, सम, निर्गत, नैगमी, गम्य, निर्जेय, जटिल, अजर, जनजीव, जिताराती, जगद्व्यापी, जगन्मय, चामीकरनिभ, अनाद्य, नलिनायतलोचन, रोचन, मोचन, मन्त्री, मन्त्रकोटिसमाश्रित, पञ्चभूतात्मक, पञ्चसायक, पञ्चवक्त्रक, पश्चिम, पूर्व, पूर्ण, कीर्णालिक, कुणि।।४२-५२।।

कठोरहृदयो ग्रीवालंकृतो ललिताशयः ॥५३॥
लोलचित्तो बृहन्नासो मासपक्षर्तुरूपवान्।
ध्रुवो द्रुतगतिर्धर्म्यो धर्मी नाकिप्रियोऽनलः ॥५४॥
अगस्त्यो ग्रस्तभुवनो भुवनैकमलापहः।
सागरः स्वर्गतिः स्वक्षः सानन्दः साधुपूजितः ॥५५॥
सतीपतिः समरसः सनकः सरलः सुरः।
सुराप्रियो वसुपतिर्वासवो वसुपूजितः ॥५६॥
वित्तदो वित्तनाथश्च धनिनां धनदायकः।
राजी राजीवनयनः स्मृतिदः कृत्तिकाम्बरः ॥५७॥
आश्विनोऽश्वमुखः शुभ्रो भरणो भरणीप्रियः।
कृत्तिकासनगः कोलो रोही रोहणपादुकः ॥५८॥
ऋभुवेष्टोऽरिमर्दी च रोहिणीमोहनोऽमृतम्।
मृगराजो मृगशिरा माधवो मधुरध्वनिः ॥५९॥
आर्द्राननो महाबुद्धिर्महोरगविभूषणः।
भ्रूक्षेपदत्तविभवो भ्रूकरालः पुनर्मयः ॥६०॥
पुनर्देवः पुनर्जेता पुनर्जीवः पुनर्वसुः।
तित्तिरिस्तिमिकेतुश्च तिमिचारकघातनः ॥६१॥
तिष्यस्तुलाधरो जम्भ्यो विश्लेषोऽश्लेष एणराट्।
मानदो माधवो माघो वाचालो मघवोपमः ॥६२॥
मेध्यो मघाप्रियो मेघो महामुण्डो महाभुजः।
पूर्वफाल्गुनिकः स्फीतः फल्गुरुत्तरफाल्गुनः ॥६३॥
फेनिलो ब्रह्मदो ब्रह्मा सप्ततन्तुसमाश्रयः।
घोणाहस्तश्चतुर्हस्तो हस्तिवक्त्रो हलायुधः ॥६४॥
चित्राम्बरो(५००)ऽर्चितपदः स्वादितः स्वातिविग्रहः।

कठोरहृदय, ग्रीवालंकृत, ललिताशय, लोलचित, वृहन्नासी, मासरूप, पक्षरूप, ऋतुरूप, ध्रुव, द्रुतगति, धर्म, धर्मी, नाकिप्रिय, अनल, अगस्त्य, ग्रस्तभुवन, भुवनैकमलापह, सागर, स्वर्गति, स्वक्ष, सानन्द, साधुपूजित, सतीपति, समरस, सनक, सरल, सुर, सुराप्रिय, वसुपति, वासव, वसुपूजित, वित्तद, वित्तनाथ, धनीधनदायक, राजी, राजीवनयन, स्मृतद, कृत्तिकाम्बर, आश्विन, अश्वमुख, शुभ्र, भरण, भरणीप्रिय, कृत्तिकासनग, कोल, रोही, रोहणपादुक, ऋभुवेष्ट, अरिमर्दी, रोहिणीमोहन, अमृत, मृगराज, मृगशिरा, माधव, मधुरध्वनि, आर्द्रानन, महाबुद्धि, महोरगविभूषण, भ्रूक्षेपदत्तविभव, भ्रूकराल, पुनर्मय, पुनर्देव, पुनर्जेता, पुनर्जीव, पुनर्वसु, तित्तिरतिमि, केतु, तिमिचारकघातन, तिष्यतुलाधर, जम्भ्य, विश्लेषा, श्लेष, एणराट, मानद, माधव, माघ, वाचाल, माधवोपम, मेध्य, मघाप्रिय, मेघ, महामुण्ड, महाभुज, पूर्वपाल्गुनिक, स्फीत, फल्गुरुत्तर, फाल्गुन, फेनलि, ब्रह्मद, ब्रह्मा, सप्ततन्तुसमाश्रय, घोणा, हस्त, चतुर्हस्त, हस्तिवक्त्र, हलायुध, चित्राम्बर, अर्चितपद, स्वादित, स्वातिविग्रह।।५३-६४।।

विशाखः शिखिसेव्यश्च शिखिध्वजसहोदरः ॥६५॥
अणू रेणुः कलास्फारोऽनूरू रेणुसुतो नरः।
अनूराधाप्रियो राध्यः श्रीमाञ्छुक्लः शुचिस्मितः ॥६६॥
ज्येष्ठः श्रेष्ठार्चितपदो मूलं त्रिजगतो गुरुः।
शुचिः पूर्वस्तथाषाढश्चोत्तराषाढ ईश्वरः ॥६७॥
श्रव्योऽभिजिदनन्तात्मा श्रवो वेपितदानवः।
श्रावणः श्रवणः श्रोता धनी धन्यो धनिष्ठकः ॥६८॥
शातातपः शातकुम्भः शतंज्योतिः शतंभिषक्।
पूर्वाभाद्रपदो भद्रश्चोत्तराभद्रपादितः ॥६९॥
रेणुकातनयो रामो रेवतीरमणो रमी।
अश्वियुक् कार्तिकेयेष्टो मार्गशीर्षो मृगोत्तमः ॥७०॥
पुष्यशौर्यः फाल्गुनात्मा वसन्तश्चित्रको मधुः।
राजयदोऽभिजिदात्मीयस्तारेशः तारकद्युतिः ॥७१॥
प्रतीतः प्रोज्झितः प्रीतः परमः पारमो हितः।
परहा पञ्चभूः पञ्चवायुः पूज्यः परं महः ॥७२॥
पुराणागमविद् योग्यो महिषो रासभोऽग्रगः।
ग्राहो मेषो वृषो मन्दो मन्मथो मिथुनार्चितः ॥७३॥
कल्कभृत् कटको दीनो मर्कटः कर्कटो घृणी।

कुक्कुटो वनजो हंसः परहंसः श्रृगालकः ॥७४॥
सिंहः सिंहासनो मूषो मोह्यो मूषकवाहनः(६००) ।

विशाख, शिखिसेव्य, शिखिध्वजसहोदर, अणु, रेणु, कलास्फार, आनूरु, रेणुसुत, नर, अनुराधाप्रिय, राध्य, श्रीमान्, शुक्र, शुचिस्मित, ज्येष्ठ, श्रेष्ठार्चितपद, मूल, त्रिजगत्, गुरु, शुचि, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, ईश्वर, श्रव्य, अभिजित, अनन्तात्मा, श्रव, वेपित, दानव, श्रावण, श्रवण, श्रोता, धनी, धन्य, धनिष्ठक, शातातप, शातकुम्भ, शतज्ज्योति, शतम्भिषक्, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्र, भाद्रपादित, रेणुकातनय, राम, रेवतीरमण, रमी, अश्वियुक्, कार्तिकेयेष्ट, मार्गशीर्ष, भृगोत्तम, पुष्यशौर्य, फाल्गुनात्मा, वसन्त, चित्रक, मधु, राज्यपद, अभिजित, आत्मीय, तारेश, तारकद्युति, प्रतीत, प्रोज्झित, प्रीत, परम, पारम, हित, परहा, पञ्चभू, पञ्चवायु, पूज्य, परं, मह, पुराण, आगमविद, योग्य, महिष, रास-भोऽग्रग, ग्राह, मेष, वृष, मन्द, मन्मथ, मिथुनार्चित, कल्कभृत्, कटक, दीन, मर्कट, कर्कट, घृणी, कुक्कुट, वनज, हंस, परहंस, श्रृगालक, सिंहसिंहासन, मूषकवाहन।।६५-७४।।

पुत्रदो नरकत्राता कन्याप्रीतः कुलोद्वहः ॥७५॥
अतुल्यरूपो बलदस्तुलाभृत् तुल्यसाक्षिकः ।
अलिचापधरो धन्वी कच्छपो मकरो मणिः ॥७६॥
स्थिरः प्रभुर्महाकर्मी महाभोगी महायशाः ।
वसुमूर्तिधरो व्यग्रोऽसुरहारी यमान्तकः ॥७७॥
देवाग्रणीर्गणाध्यक्षो ह्यम्बुजालो महामतिः ।
अङ्गदी कुण्डली भक्तिप्रियो भक्तविवर्धनः ॥७८॥
गाणपत्यप्रदो मायी वेदवेदान्तपारगः ।
कात्यायनीसुतो ब्रह्मपूजितो विघ्ननाशनः ॥७९॥
संसारभयविध्वंसी महोरस्को महीधरः ।
विघ्नान्तको महाग्रीवो भृशं मोदकमोदितः ॥८०॥
वाराणसीप्रियो मानी गहन आखुवाहनः ।
गुहाश्रयो विष्णुपदीतनयः स्थानदो ध्रुवः ॥८१॥
परर्द्धिस्तुष्टो विमलो मौलिमान् वल्लभाप्रियः ।
चतुर्दशीप्रियो मान्यो व्यवसायो मदान्वितः ॥८२॥
अचिन्त्यः सिंहयुगलनिविष्टो बालरूपधृत् ।
धीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो महाबलसमन्वितः ॥८३॥
सर्वात्मा हितकृद् वैद्यो महाकुक्षिर्महामतिः ।

करणं मृत्युहारी च पापसङ्कनिवर्तकः ॥८४॥
उद्भिद् वज्री महादैत्यसूदनो दीनरक्षकः ।
भूतचारी प्रेतचारी बुद्धिरूपो मनोमयः ॥८५॥
अहङ्कारवपुः सांख्यपुरुषस्त्रिगुणात्मकः ।
तन्मात्ररूपो भूतात्मा इन्द्रियात्मा वशीकरः ॥८६॥
मलत्रयबहिर्भूतो ह्यवस्थात्रयवर्जितः ।
नीरूपो बहुरूपश्च किन्नरो नागविक्रमः ॥८७॥
एकदन्तो महावेगः सेनानी स्त्रिदशाधिपः ।
विश्वकर्ता विश्वबीजं(७००)श्रीः संपदह्रीर्धृतिर्मतिः ॥८८॥

पुत्रद, नरकत्राता, कन्याप्रीत, कुलोद्वह, अतुल्यरूप, वलद, तुलाभृत्, तुल्यसाक्षिक, अलिचापधर, धन्वी, कच्छप, मकर, मणि, स्थिर, प्रभुमहाकर्मी, महाभोगी, महायश, वसुमूर्तिधर, व्यग्र असुरहारी, यमान्तक, देवाग्रणी, गणाध्यक्ष, ह्मम्बुजाल, महामति, अङ्गदी, कुण्डली, भक्तिप्रिय, भक्तविवर्धन, गाणपत्यप्रद, मायी, वेदवेदान्तपारग, कात्यायनीसुत, ब्रह्मपूजित, विघ्ननाशन, संसारभयविध्वंसी, महोरस्क, महीधर, विघ्नान्तक, महाग्रीव, भृश, मोदकमोदित, वाराणसीप्रिय, मानी, गहन, आखुवाहन, गुहाश्रय, विष्णुपदीतनय, स्थानद, ध्रुव, परर्द्धितुष्ट, विमल, मौलिमान, वल्लभाप्रिय, चतुर्दशीप्रिय, मान्य, व्यवसाय, मदान्वित, अचिन्त्य, सिंहयुगलनिविष्ट, बालरूपधृत, धीर, शक्तिमत्, श्रेष्ठ, महाबलसमन्वित, सर्वात्मा, हितकृत्, वैद्य, महाकुक्षि, महामति, करण, मृत्युहारी, पापसङ्कटनिवर्तक, उद्‌भिद्, वज्री, महादैत्यसूदन, दीनरक्षक, भूतचारी, प्रेतचारी, बुद्धिरूप, मनोमय, अहङ्कारवपु, सांख्यपुरुष त्रिगुणात्मक, तन्मात्ररूप, भूतात्मा, इन्द्रिययात्मा, वशीकर, मलत्रयबहिर्भूत, अवस्थात्रयवर्जित, नीरूप, बहुरूप, किन्नर, नाग, विक्रम, एकदन्त, महावेग, सेनानी, त्रिदशाधिप, विश्वकर्ता, विश्वबीज, श्री, सम्पद, ह्रीं, धृति, मति।।७५-८८।।

सर्वशोषकरो वायुः सूक्ष्मरूपः सुनिश्चलः ।
संहर्ता सृष्टिकर्ता च स्थितिकर्ता लयाश्रितः ॥८९॥
सामान्यरूपः सामास्योऽथर्वशीर्षो यजुर्भुजः ।
ऋगीक्षणः काव्यकर्ता शिक्षाकारी निरुक्तवित् ॥९०॥
शेषरूपधरो मुख्यः शब्दब्रह्मस्वरूपभाक् ।
विचारवाञ्शङ्खधारी सत्यव्रतपरायणः ॥९१॥
महातपा घोरतपाः सर्वदो भीमविक्रमः ।

सर्वसम्पत्करो व्यापी मेघगम्भीरनादभृत् ॥९२॥
समृद्धो भूतिदो भोगी वेशी शङ्करवत्सलः ।
शम्भुभक्तिरतो मोक्षदाता भवदवानलः ॥९३॥
सत्यस्तपा ध्येयमूर्तिः कर्ममूर्तिर्महांस्तथा ।
समष्टिव्यष्टिरूपश्च पञ्चकोशपराङ्मुखः ॥९४॥
तेजोनिधिर्जगन्मूर्तिश्चराचरवपुर्धरः ।
प्राणदो ज्ञानमूर्तिश्च नादमूर्तियुतोऽक्षरः ॥९५॥
भूताद्यस्तैजसो भावो निष्कलश्चैव निर्मलः ।
कूटस्थश्चेतनो रुद्रः क्षेत्रवित् पुरुषो बुधः ॥९६॥
अनाधारोऽप्यनाकारो धाता च विश्वतोमुखः ।
अप्रतर्क्यवपुः स्कन्दानुजो भानुर्महाप्रभः ॥९७॥
यज्ञहर्ता यज्ञकर्ता यज्ञानां फलदायकः ।
यज्ञगोप्ता यज्ञमयो दक्षयज्ञविनाशकृत् ॥९८॥
वक्रतुण्डो महाकायः कोटिसूर्यसमप्रभः ।
एकदंष्ट्रः कृष्णपिङ्गो विकटो धूम्रवर्णकः ॥९९॥
टङ्कधारी जम्बुकश्च नायकः शूर्पकर्णकः ।
सुवर्णगर्भः सुमुखः श्रीकरः सर्वसिद्धिदः ॥१००॥
सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो महात्मा चन्दनच्छविः ।
स्वङ्गः स्वक्षः (८००) शतानन्दो लोकविल्लोकविग्रहः ॥१०१॥

सर्वशोषकर, वायु, सूक्ष्मरूप, सुनिश्चल, संहर्ता, सृष्टिकर्ता, स्थितिकर्ता, लयाश्रित, सामान्यरूप, सामास्य, अथर्वशीर्षक, यजुर्भुज, ऋगीक्षण, काव्यकर्ता, शिक्षाकारी, निरुक्तवित्, शेषरूपधर, मुख्य, शब्दब्रह्मस्वरूपभाक्, विचारवान, शङ्खधारी, सत्यव्रतपरायण, महातपा, घोरतपा, सर्वद, भीमविक्रम, सर्वसम्पत्कर, व्यापी, मेघगम्भीरनादभृत्, समृद्ध, भूतिद, भोगी, वेशी, शङ्करवत्सल, शम्भुभक्तिरत, मोक्षदाता, भवदवानल, सत्यस्तपा, ध्येयमूर्ति, कर्ममूर्ति, महान्, समष्टिरूप, व्यष्टिरूप, पञ्चकोशप-राङ्मुख, तेजोनिधि, जगन्मूर्ति, चराचरवपुधर, प्राणद, ज्ञानमूर्ति, युतोऽक्षर, भुताद्य, तैजस, भाव, निष्कल, निर्मल, कूटस्थ चेतन, रुद्र, श्रेत्रवित्, पुरुष, बुध, अनाधार, धाता, विश्वतोमुख, अप्रतर्क्यवपु, स्कन्दानुज, भानुर्महाप्रभ, यज्ञहर्ता, यज्ञकर्ता, यज्ञानां फलदायक, यज्ञगोप्ता, यज्ञमय, दक्षयज्ञविनाशकृत्, वक्रतुण्ड, महाकाय, कोटिसूर्यसमप्रभ, एकदंष्ट्र, कृष्णपिङ्ग, विकट, धूम्रवर्णक, टङ्कधारी, जम्बुक, नायक, शूर्पकर्ण, सुवर्णगर्भ, सुमुख, श्रीकर, सर्वसिद्धिद,

सुवर्णवर्ण, हेमाङ्ग, महात्मा, चन्दन, छवि, स्वङ्ग, स्वक्ष, शतानन्द, लोकविल्लोक-विग्रह।।८९-१०१।।

इन्द्रो जिष्णुर्धूमकेतुर्वह्निः पूज्यो दवान्तकः।
पूर्णानन्दः परानन्दः पुराणपुरुषोत्तमः ॥१०२॥
कुम्भभृत् कलशी कुब्जो मीनमांससुतर्पितः।
राशितारायहमयस्थितिरूपो जगद्विभुः ॥१०३॥
प्रतापी प्रतिपत्प्रेयान् द्वितीयोऽद्वैतनिश्चितः।
त्रिरूपश्च तृतीयाग्निस्त्रयीरूपस्त्रयीतनुः ॥१०४॥
चतुर्थीवल्लभो देवो पारगः पञ्चमीरवः।
षड्सास्वादकोऽजातः षष्ठी षष्टिकवत्सरः ॥१०५॥
सप्तार्णवगतिः सारः सप्तमीश्वर ईहितः।
अष्टमीनन्दनोऽनार्तो नवमीभक्तिभावितः ॥१०६॥
दशदिक्पतिपूज्यश्च दशमी द्रुहिणो द्रुतः।
एकादशात्मा गणपो द्वादशीयुगचर्चितः ॥१०७॥
त्रयोदशमनुस्तुत्यश्चतुर्दशसुरप्रियः।
चतुर्दशेन्द्रसंस्तुत्यः पूर्णिमानन्दविग्रहः ॥१०८॥
दर्शादर्शो दर्शनश्च वानप्रस्थो मुनीश्वरः।
मौनी मधुरवाङ्मूलं मूर्तिमान् मेघवाहनः ॥१०९॥
महागजो जितक्रोधो जितशत्रुर्जयाश्रयः।
रौद्रो रुद्रप्रियो रुक्मो रुद्रपुत्रोऽघतापनः ॥११०॥
भवप्रियो भवानीष्टो भारभृद् भूतभावनः।
गान्धर्वकुशलोऽकुण्ठो वैकुण्ठो विष्णुसेवितः ॥१११॥
वृत्रहा विघ्नहा सीरः समस्तदुरितापहः।
मञ्जुलो मार्जनो मत्तो दुर्गापुत्रो दुरालसः ॥११२॥
अनन्तचित्सुधाधारो वीरो वीर्यैकसाधकः।
भास्वन्मुकुटमाणिक्यः कूजत्किङ्किणिजालकः ॥११३॥
शुण्डाधारी तुण्डचलः कुण्डली मुण्डमालकः।
पद्माक्षः पद्महस्तश्च(९००)पद्मनाभसमर्चितः ॥११४॥

इन्द्र, जिष्णु, धूमकेतु, वह्नि, पूज्य, दवान्तक, पूर्णानन्द, परानन्द, पुराण, पुरुषोत्तम, कुम्भभृत्, कलशी, कुब्ज, मीनमांससुतर्पित, राशिमयस्थितिरूप, ताराम-यस्थितिरूप,

ग्रहमयस्थितिरूप, जगद्विभु, प्रतापी, प्रतिपत्प्रोयान्, द्वितीया, अद्वैतनिश्चित, त्रिरूप, तृतीया, अगिनत्रयीरूप, त्रयीतनु, चतुर्थीवल्लभ, देव, पारग, पञ्चमीरव, षड्रसास्वाद, अजात, षष्ठी, षष्टिकत्सर, सप्तार्णवगति, सार, सप्तमीश्वर, ईहित, अष्टमीनन्दन, अनार्त, नवमीभक्तिभावित, दशदिक्पतिपूज्य, दशमी, द्रुहिण, द्रुत, एकादशात्मा, गणप, द्वादशीयुगचर्चित, त्रयोदशमनुस्तुत्य, चतुर्दशसुरप्रिय, चतुर्द-शेन्द्रसंस्तुत्य, पूर्णिमानन्दविग्रह, दर्शादर्श, दर्शन, वानप्रस्थ, मुनीश्वर, मौनी, मधुरवाङ्मूल, मूर्तिमान, मेघवाहन, महागज, जितक्रोध, जितशत्रु, जयाश्रय, रौद्र, रुद्रप्रिय, रुक्म, रुद्रपुत्र, अघतापन, भवप्रिय, भारभृत्, भूतभावन, गान्धर्वकुशल, अकुण्ठ, विष्णुसेवित, वृत्रहा, विघ्नहा, सीर, समस्तदुरितापह, मञ्जुल, मार्जन, मत्त, दुर्गापुत्र, दुरालस, अनन्त, चित्सुधाधार, वीर, वीर्यैकसाधक, भास्वन्मुकुटमाणिक्य, कूजतकिङ्किणीजालक, शुण्डाधारी, तण्डचल, कुण्डली, मुण्डमालक, पद्माक्ष, पद्महस्त, पद्मनाभसमर्चित।।१०२-११४।।

उद्गीथो नरदन्ताढ्यमालाभूषणभूषितः ।
नारदो वारणो लोलश्रवणः शूर्पकश्रवाः ।।११५।।
बृहदुल्लासनासाढ्यव्याप्तत्रैलोक्यमण्डलः ।
इलामण्डलसंभ्रान्तकृतानुग्रहजीवकः ।।११६।।
बृहत्कर्णाञ्चलोद्भूतवायुवीजितदिक्तटः ।
बृहदास्यरवाक्रान्तभीमब्रह्माण्डभाण्डकः ।।११७।।
बृहत्पादसमाक्रान्तसप्तपातालवेपितः ।
बृहद्दन्तकृतात्युग्ररणानन्दरसालसः ।।११८।।
बृहद्धस्तधृताशेषायुधनिर्जितदानवः ।
स्फुरत्सिन्दूरवदनः स्फुरत्तेजोऽग्निलोचनः ।।११९।।
उद्दीपितमणिस्फूर्जन्नूपुरध्वनिनादितः ।
चलत्तोयप्रवाहाढ्यनदीजलकणाकुलः ।।१२०।।
भ्रमत्कुञ्जरसङ्घातवन्दिताङ्घ्रिसरोरुहः ।
ब्रह्माच्युतमहारुद्रपुरः सरसुरार्चितः ।।१२१।।
अशेषशेषप्रभृतिव्यालजालोपसेवितः ।
गूर्जत्पञ्चाननारावप्राप्ताकाशधरातलः ।।१२२।।
हाहाहूहूकृतात्युग्रसुरविभ्रान्तमानसः ।
पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्यमन्त्रमन्त्रितविग्रहः ।।१२३।।
वेदान्तशास्त्रपीयूषधाराप्लावितभूतलः ।
शङ्खध्वनिसमाक्रान्तपातालादिनभस्तलः ।।१२४।।

चिन्तामणिर्महामल्लो भल्लहस्तो बलिः कलिः ।
कृतत्रेतायुगोल्लासभासमानजगत्त्रयः ॥१२५॥
द्वापरः परलोकैककर्मध्वान्तसुधाकरः ।
सुधासिक्तवपुर्व्याप्तब्रह्माण्डादिकटाहकः ॥१२६॥
अकारादिक्षकारान्तवर्णपङ्क्तिसमुज्ज्वलः ।
अकाराकारप्रोद्गीततारनादनिनादितः ॥१२७॥
इकारेकारमन्त्राढ्यमालाभ्रमणलालसः ।
उकारोकारप्रोद्गारिघोरनागोपवीतकः ॥१२८॥
ऋवर्णाङ्कितॠकारपद्मद्वयसमुज्ज्वलः ।
ऌकारयुतॡकारशङ्खपूर्णदिगन्तरः ॥१२९॥
एकारैकारगिरिजास्तनपानविचक्षणः ।
ओकारौकारविश्वादिकृतसृष्टिक्रमालसः ॥१३०॥
अंअःवर्णावलीव्याप्तपादादिशीर्षमण्डलः ।
कर्णतालकृतात्युच्चैर्वायुवीजितनिर्जरः ॥१३१॥
खगेशध्वजरत्नाङ्ककिरीटारुणपादकः ।
गर्विताशेषगन्धर्वगीततत्परश्रोत्रकः ॥१३२॥
घनवाहनवागीशपुरःसरसुरार्चितः ।
ङवर्णामृतधाराढ्यशोभमानैकदन्तकः ॥१३३॥
चन्द्रकुङ्कुमजम्बाललिप्तसुन्दरविग्रहः ।
छत्रचामररत्नाढ्यमुकुटालंकृताननः ॥१३४॥
जटाबद्धमहानर्घमणिपङ्क्तिविराजितः ।
झांकारिमधुपव्रातगाननादनिनादितः ॥१३५॥
ञवर्णकृतसंहारदैत्यासृक्पूर्णमुद्गरः ।
टङ्कारुकफलास्वादवेपिताशेषमूर्धजः ॥१३६॥
ठकाराढ्यडकाराङ्कढकारानन्दतोषितः ।
णवर्णामृतपीयूषधाराधरसुधाधरः ॥१३७॥
ताम्रसिन्दूरपुञ्जाढ्यललाटफलकच्छविः ।
थकारघनपङ्क्त्याढ्यसन्तोषितद्विजव्रजः ॥१३८॥
दयामयहृदम्भोजधृतत्रैलोक्यमण्डलः ।
धनदादिमहायक्षसंसेवितपदाम्बुजः ॥१३९॥

नमिताशेषदेवौघकिरीटमणिरञ्जितः ।
परवर्गापवर्गादिमार्गच्छेदनदक्षकः ॥१४०॥
फणिचक्रसमाक्रान्तगलमण्डलमण्डितः ।
बद्धभ्रूयुगभीमोग्रसन्तर्जितसुरासुरः ॥१४१॥
भवानीहृदयानन्दवर्धनैकनिशाकरः ।
मदिराकलशस्फीतकरालैककराम्बुजः ॥१४२॥
यज्ञान्तरायसङ्घातघातसज्जीकृतायुधः ।
रत्नाकरसुताकान्तकान्तिकीर्तिविवर्धनः ॥१४३॥
लम्बोदरमहाभीमवपुर्दीनीकृतासुरः ।
वरुणादिदिगीशानरचितार्चनचर्चितः ॥१४४॥
शङ्करैकप्रियप्रेमनयनानन्दवर्धनः ।
षोडशस्वरितालापगीतगानविचक्षणः ॥१४५॥
समस्तदुर्गतिसरिन्नाथोत्तारणकोडुपः ।
हरादिब्रह्मवैकुण्ठब्रह्मगीतादिपाठकः ॥१४६॥
क्षमापूरितहृत्पद्मसंरक्षितचराचरः ।
ताराङ्कमन्त्रवर्णैकविग्रहोज्ज्वलविग्रहः ॥१४७॥
अकारादिक्षकारान्तविद्याभूषितविग्रहः ।
ॐ श्रीं विनायको ॐ ह्रीं विघ्नाध्यक्षो गणाधिपः ॥१४८॥
हेरम्बो मोदकाहारो वक्रतुण्डो विधिस्मृतः ।
वेदान्तगीतो विद्यार्थी शुद्धमन्त्रः षडक्षरः ॥१४९॥
गणेशो वरदो देवो द्वादशाक्षरमन्त्रितः ।
सप्तकोटिमहामन्त्रमन्त्रिताशेषविग्रहः ॥१५०॥
गाङ्गेयो गणसेव्यश्च ॐश्रीद्वैमातुरः शिवः ।
ॐह्रींश्रींक्लींग्लौंगंदेवो महागणपतिः प्रभुः ॥१५१॥

उद्गीथ, भवानीष्ट, नरदन्ताढ्यमालाभूषणभूषित, नारद, वारण, लोलश्रवण, शूर्पकश्रवा, बृहत्कर्णाञ्चलोद्भूतवायुवीजितदिक्तट, बृहदास्यरवाक्रान्तभीमब्रह्माण्डभाण्डक, बृहत्पाद-समाक्रान्तसप्तपातालवेपित, बृहद्दन्तकृतात्युग्ररणानन्दरसालस, बृहद्धस्तधृताशेषा-युधनिर्जितदानव, स्फुरत्सिन्दूरवदन, स्फुरत्तेजोऽग्निलोचन, उद्दीपितमणिस्फूर्जन्नूपुरध्वनिनादित, चलत्तोयप्रवाहाढ्यनदीजलकणाकुल, भ्रमत्कुञ्जरसङ्घातवन्दिताङ्घ्रिसरोरुह, ब्रह्माच्युतमहारुद्रपुर, सरसुरार्चित, अशेषशेषप्रभृतिव्यालजालोपसेवित, गूर्जत्पञ्चाननारावप्राप्ताकाशधरातल,

हाहाहूहूकृतात्युग्रसुरविश्रान्तमानस, पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्यमन्त्रमन्त्रितविग्रह, वेदान्तशास्त्रपीयूष-धाराप्लावितभूतल, शङ्खध्वनिसमाक्रान्तपातालादिनभस्तल, चिन्तामणिर्महामल्लो भल्लहस्तो बलि, कलि, कृतत्रेतायुगोल्लासभासमानजगत्त्रय, द्वापर, परलोकैककर्मध्वान्तसुधाकर, सुधासिक्तवपुर्व्याप्तब्रह्माण्डादिकटाहक, अकारादिक्षकारान्तवर्णपङ्क्तिसमुज्ज्वल, अकारा-कारप्रोद्गीततारनादनिनादित, इकारेकारमन्त्राढ्यमालाभ्रमणलालस, उकारोकारप्रोद्गारिघोर-नागोपवीतक, ऋवर्णाङ्कितऋॄकारपद्मद्वयसमुज्ज्वल, ऌकारयुतॡकारशङ्खपूर्णदिगन्तर, एकारैकारगिरिजास्तनपानविचक्षण, ओकारौकारविश्वादिकृतसृष्टिक्रमालस, अंअः-वर्णावलीव्याप्तपादादिशीर्षमण्डल, कर्णतालकृतात्युच्चैर्वायुवीजितनिर्जर, खगेशध्व-जरत्नाङ्ककिरीटारुणपादक, गर्विताशेषगन्धर्वगीततत्परश्रोत्रक, घनवाहनवागीशपुरःसरसुरार्चित, ङवर्णामृतधाराढ्यशोभमानैकदन्तक, चन्द्रकुङ्कुमजम्बाललिप्तसुन्दरविग्रह, छत्रचामर-रत्नाढ्यमुकुटालंकृतानन, जटाबद्धमहानर्घमणिपङ्क्तिविराजित, झांकारिमधुपव्रातगाननादनि-नादित, ञवर्णकृतसंहारदैत्यासृक्पूर्णमुद्गर, टङ्कारुकफलास्वादवेपिताशेषमूर्धज, ठकारा-ढ्यडकाराङ्कढकारानन्दतोषित, णवर्णामृतपीयूषधाराधरसुधाधर, ताम्रसिन्दूरपुञ्जाढ्य-ललाटफलकच्छवि, थकारघनपङ्क्त्याढ्यसन्तोषितद्विजव्रज, दयामयहृदम्भोजधृतत्रैलोक्य-मण्डल, धनदादिमहायक्षसंसेवितपदाम्बुज, नमिताशेषदेवौघकिरीटमणिरञ्जित, पर-वर्गापवर्गादिमार्गच्छेदनदक्षक, फणिचक्रसमाक्रान्तगलमण्डलमण्डित, बद्धभ्रूयुगभीमोग्र-सन्तर्जितसुरासुर, भवानीहृदयानन्दवर्धनैकनिशाकर, मदिराकलशस्फीतकरालैककराम्बुज, यज्ञान्तरायसङ्घातघातसज्जीकृतायुध, रत्नाकरसुताकान्तकान्तिकीर्तिविवर्धन, लम्बोदर-महाभीमवपुर्दीनीकृतासुर, वरुणादिदिगीशानरचितार्चनचर्चित, शङ्करैकप्रियप्रेमनयनानन्दवर्धन, षोडशस्वरितालापगीतगानविचक्षण, समस्तदुर्गतिसरिन्नाथोत्तारणकोडुप, हरादिब्रह्म-वैकुण्ठब्रह्मगीतादिपाठक, क्षमापूरितहृत्पद्मसंरक्षितचराचर, ताराङ्कमन्त्रवर्णैकविग्रहोज्ज्वलविग्रह, अकारादिक्षकारान्तविद्याभूषितविग्रह। ॐ श्री विनायक, ॐ ह्रीं विघ्नाध्यक्ष, गणाधिप, हेरम्ब, मोदकाहारी, वक्रतुण्ड, विधि, स्मृति, वेदान्त, गीत, विद्यार्थी, सिद्धमन्त्र, षडक्षर, गणेश, वरद, देव, द्वादशाक्षरमन्त्रित, सप्तकोटिमहामन्त्रमन्त्रित, अशेषविग्रह, गाङ्गेय, गणसेव्य, ॐ श्री द्वैमातुर, शिव, ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ग्लौं गं देव, महागणपति, प्रभु॥११५-१५१॥

सहस्रनाममाहात्म्यम्

इदं नाम्नां सहस्रं ते महागणपतेः स्मृतम्।
गुह्यं गोप्यतमं गुप्तं सर्वतन्त्रेषु गोपितम्॥१५२॥
सर्वमन्त्रनिधिं दिव्यं सर्वविघ्नविनाशनम्।
ग्रहतारामयं राशिवर्णपङ्क्तिसमन्वितम्॥१५३॥

सर्वविद्यामयं ब्रह्मसाधनं साधकप्रियम् ।
गणेशस्य च सर्वस्वं रहस्यं त्रिदिवौकसाम् ॥१५४॥
यथेष्टफलदं लोके मनोरथप्रपूरणम् ।
अष्टसिद्धिमयं साध्यं साधकानां जयप्रदम् ॥१५५॥

सहस्रनाम-माहात्म्य—हे देवि! इस प्रकार महागणपति के हजार नामों को मैंने तुमसे कहा। ये नाम गुह्य, गोप्यतम, गुप्त एवं सभी तन्त्रों में गोपित हैं। यह सहस्रनाम सभी मन्त्रों का निधि है, दिव्य और विघ्नविनाशक है। ग्रह-तारा-राशि-वर्ण-पंक्ति से समन्वित है। ये सहस्रनाम सर्वविद्यामय, ब्रह्मसाधन-साधकप्रिय हैं। यह गणेशरहस्य का सर्वस्व है। देवताओं का सर्वोपरि रहस्य है। यथेष्ट फलप्रदायक है एवं संसार में सभी मनोरथों का प्रपूरक है। यह अष्टसिद्धिमय है साध्य है और साधकों को जयप्रदायक है।।१५२-१५५।।

विनार्चनं विना होमं विना न्यासं विना जपम् ।
अणिमाद्यष्टसिद्धीनां साधनं स्मृतिमात्रतः ॥१५६॥
चतुर्थ्यामर्धरात्रे तु पठेन्मन्त्री चतुष्पथे ।
लिखेद्भूर्जे रवौ देवि पुण्यं नाम्नां सहस्रकम् ॥१५७॥
धारयेत्तु चतुर्दश्यां मध्याह्ने मूर्ध्नि वा भुजे ।
योषिद्वामकरे बद्ध्वा पुरुषो दक्षिणे भुजे ॥१५८॥

बिना अर्चन, बिना होम, विना न्यास, बिना जप के इसके स्मरणमात्र से अणिमादि अष्ट सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। चतुर्थी तिथि की आधी रात में चौराहे पर साधक इसका पाठ करे। रविवार में भोजपत्र पर इन पुनीत हजार नामों को लिखे। चतुर्दशी के मध्य दिन में इसे मूर्धा या बाँह में धारण करे। स्त्री वाम भुजा में और पुरुष दक्ष भुजा में धारण करे।।१५६-१५८।।

स्तम्भयेदपि ब्रह्माणं मोहयेदपि शङ्करम् ।
वशयेदपि त्रैलोक्यं मारयेदखिलान् रिपून् ॥१५९॥
उच्चाटयेच्च गीर्वाणान् शमयेच्च धनञ्जयम् ।
वन्ध्या पुत्रांल्लभेच्छीघ्रं निर्धनो धनमाप्नुयात् ॥१६०॥
त्रिवारं य पठेद्रात्रौ गणेशस्य पुरः शिवे ।
नग्नः शक्तियुतो देवि भुक्त्वा भोगान् यथेप्सितान् ॥१६१॥

इसे धारण करके ब्रह्मा को भी स्तम्भित और शंकर को भी मोहित किया जा सकता

है। तीनों लोक साधक के वश में होते हैं। उसके सभी शत्रुओं का विनाश हो जाता है। गीर्वाणों का उच्चाटन होता है। अग्नि शान्त होती है। वन्ध्या को शीघ्र पुत्रलाभ होता है। निर्धन को धन प्राप्त होता है। रात में गणेश के सामने जो इसका तीन पाठ शक्ति के साथ नंगे होकर करता है, वह यथेच्छ भोगों का भोग करता है। इसके सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं।।१५९-१६१।।

प्रत्यक्षं वरदं पश्येद्गणेशं साधकोत्तमः।
य एनं पठते नाम्नां सहस्रं भक्तिपूर्वकम् ॥१६२॥
तस्य वित्तादिविभवो दारायुःसम्पदः सदा।
रणे राजभये द्यूते पठेन्नाम्नां सहस्रकम् ॥१६३॥
सर्वत्र जयमाप्नोति गणेशस्य प्रसादतः।
इतीदं पुण्यसर्वस्वं मन्त्रनामसहस्रकम् ॥१६४॥
महागणपतेर्गुह्यं गोपनीयं स्वयोनिवत्।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये महागणपतिसहस्रनाम-
निरूपणं नामैकोनत्रिंशः पटलः॥२९॥

उत्तम साधक को गणेश का दर्शन प्रत्यक्ष होता है। जो इस सहस्रनाम का पाठ भक्तिपूर्वक करता है, वह सदैव धन, वैभव, पत्नी और आयु से युक्त रहता है। युद्ध में, राजभय में, जुआ में सहस्रनाम का पाठ करने से गणेश की कृपा से पाठक को सर्वत्र विजय प्राप्त होती है। पुण्यसर्वस्व यह मन्त्रनामसहस्र सम्पूर्ण हुआ। यह गुह्य गोपनीय है। अपनी योनि के समान इसे गुप्त रखना चाहिये।।१६२-१६४।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में महागणपतिसहस्रनाम निरूपण नामक एकोनत्रिंश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ त्रिंशः पटलः

महागणपतिमूलमन्त्रस्तोत्रम्

स्तोत्रप्रस्तावः

श्रीदेव्युवाच

भगवन् परमेशान महागणपतेर्विभोः ।
स्तोत्रमङ्गतमं ब्रूहि मूलमन्त्रस्य तत्त्वतः ॥१॥

स्तोत्र-निरूपण-प्रस्ताव—श्रीदेवी ने कहा—हे भगवन् परमेशान! अब आप विभु महागणपति के उत्तमाङ्ग मूल मन्त्रगर्भित स्तोत्र का वर्णन कीजिये।।१।।

श्रीभैरव उवाच

महागणपतेर्वक्ष्ये स्तोत्रं तत्त्वनिरूपणम् ।
जीवस्याङ्गे कलौ शीघ्रं जीवन्मुक्तिप्रदायकम् ॥२॥

श्री भैरव ने कहा कि अब मैं महागणपति के स्तोत्रतत्त्व का निरूपण करता हूँ। देवता के सामने कलियुग में इसके पाठ से शीघ्र ही जीवनमुक्ति प्राप्त होती है।।२।।

विनियोगः

अस्य श्रीमहागणपतेः स्तोत्रस्य भैरव ऋषिः गायत्र्यं छन्दः श्रीमहागणपतिर्देवता गं बीजं ह्लीं शक्तिः कुरु कुरु कीलकं जीवन्मुक्तिकामनार्थे महागणपतिस्तवराजपाठे विनियोगः।

विनियोग—इस महागणपति स्तोत्र के ऋषि भैरव, छन्द गायत्री, देवता श्रीमहागणपति, बीज 'गं', शक्ति 'ह्लीं', कीलक 'कुरु-कुरु' है एवं जीवन्मुक्ति की कामना हेतु महागणपति के स्तोत्रपाठ में इसका विनियोग किया जाता है।

ध्यानम्

द्विचतुर्दशवर्णभूषिताङ्गं शशिसूर्याग्निविलोचनं सुरेशम्।
अहिभूषितकण्ठमक्षसूत्रं भ्रमयन्तं हृदये स्मरे गणेशम् ॥३॥

ध्यान—महागणपति का अङ्ग अट्ठाईस अक्षरों के मन्त्रवर्णों से विभूषित है। ये देवताओं के अधिपति हैं। तीन नेत्र चन्द्र, सूर्य, अग्नि हैं, नागभूषित कण्ठ है। ये अक्षसूत्र से युक्त हैं। अपने हृदय में भ्रमणरत उन गणेश का मैं स्मरण करता हूँ।।३।।

स्तोत्रम्

तारं नारदगीतमाद्यमनिशं यः साधकेन्द्रो जपे-
द्रात्रावह्नि निशामुखे शवगृहे शून्यालये वा प्रभो।
तस्य स्मेरमुखाम्बुजाः प्रतिदिनं लावण्यदर्पोज्ज्वलाः
स्वर्वेश्याश्च वशीभवन्ति त्रिदिवे भूमौ समस्ता नृपाः ।।४।।
सकलां सकलां जपेद्यदा गणनाथप्रियमन्त्रमेव यः।
सकलक्ष्मापतिमूर्धसु स्फुरच्चरणाब्जो भुवि शोभते च सः ।।५।।
कमलां कमलास्पृही च यो हृदये ध्यायति देवमध्यगाम्।
तव मन्त्रप्रभावतस्तदा कमला सद्मनि तस्य निश्चला ।।६।।

स्तोत्र—नारद जिस आद्यगीत 'ॐ' का अहर्निश जप करते हैं, उस ॐकार का जप जो साधक रात्रि के प्रथम प्रहर में घर के बाहर, श्मशान में या शून्य गृह में करता है, उसके वश में लावण्य के दर्प गर्वित से मुस्कुराती स्वकीया या वेश्या कमलमुखी प्रतिदिन रहती है। तीन दिनों में भूतल के सभी नरेश उसके वश में हो जाते हैं। गणनाथ के प्रिय मन्त्र 'ह्रीं ह्रीं' का जो जप करता है, वह सभी भूपालों में मूर्धन्य होता है। सारी पृथ्वी उसके चरणकमलों में होती है और वह शोभायमान होता है। लक्ष्मी के प्रिय मन्त्र 'श्रीं' का ध्यान जो अपने हृदय में देवताओं के मध्य में करता है, मन्त्र के साथ तुम्हारे प्रभाव से उस साधक के घर में निश्चल लक्ष्मी का वास होता है।।४-६।।

कामराजमनिशं स्मरातुरो यो जपेद्धृदि गणेश तावकम्।
उर्वशीवदनपद्मषट्पदो धीयतेऽधरपरागकामृतम् ।।७।।
मठं जपेद्यो निशि शून्यगेहे विमुक्तकेशो गणनाथ भक्त्या।
रणे रिपूनिन्द्रसमान् विजित्य प्राप्नोति राज्यं नृपचक्रवर्ती ।।८।।
शिवार्णमन्तर्यदि साधको जपेदरण्यभूमौ शिवसन्निधौ विभो।
चराचरे वै विचरेद्विमाने जगत्यशेषामरचक्रवर्ती ।।९।।
गणपतय इत मूलमनुं यो जपते भजते शृणुते पठते।
गणकिन्नरसिद्धसुरासुरैर्नमितो लभते गाणपत्यं सः ।।१०।।

हे गणेश! जो कामातुर अपने हृदय में आपके 'क्लीं' मन्त्र का जप अहर्निश करता है, उसके सामने उर्वशी उपस्थित होती है, जिसके मुखकमल पर भ्रमर अधरपराग के अमृत का ध्यान करते हुए मण्डराते रहते हैं। जो गणनाथ-भक्त रात में शून्य गृह में खुले केश होकर 'ग्लौं' का जप करता है, वह इन्द्र के समान शत्रु को भी युद्ध में जीतकर चक्रवर्ती राजा का राज्य पाता है। जङ्गल में, शिवमन्दिर में, शिव

के निकट जो 'गं' मन्त्र का जप करता है, वह चराचर का स्वामी होकर विमान में विचरण करता है। सारे संसार का चक्रवर्ती राजा होता है। 'गणपतये' इस मूल मन्त्र का जो जप करता है, स्मरण करता है, या सुनता है, या पाठ करता है, उसे गण, किन्नर, सिद्ध, देवता और दैत्य प्रणाम करते हैं और गाणपत्य पद को वह प्राप्त करता है।।७-१०।।

वर वरदेति च मन्त्रमिमं यो भजते निशि वा दिवसेऽप्यनिशम्।
वदने वसते सदने वसते हृदि वाक् कमला तव भक्तिरपि ॥११॥
सर्व जनं मे इति मन्त्रराजं जपन्ति ये भोजनकावसाने।
भजन्ति ते नन्दनचन्दनादिवृक्षेषु लीलां सुरसुन्दरीभिः ॥१२॥
वशमानयेति भगवन् यदि जपति स्मरतप्तहृदयश्च।
वशमेति किन्नरसुताप्युर्वशी सततं सुरतदक्षा ॥१३॥
स्वाहेति मन्त्राक्षरयुग्ममेतज्जपेद् दिनान्तेऽप्यशनादिकाले।
रोगा अशेषा विलयं प्रयान्ति तमांसि सूर्येऽभ्युदिते यथाशु ॥१४॥
पद्महस्तममृतांशुसन्निभं शङ्खयुग्ममपरं च दधानम्।
त्र्यक्षमग्निसदृशं स्मरन्ति ये ते प्रयान्ति त्रिदिवं विमानगाः ॥१५॥

'वरवरद' मन्त्र का भजन जो रात में या दिन में या अहर्निश करता है, उसके मुख में सरस्वती का वास, घर में लक्ष्मी का वास और हृदय में देवी की भक्ति का वास होता है। मन्त्रराज के 'सर्वजनं' का जप जो साधक भोजन के अन्त में करता है, वह नन्दन चन्दन वन में देवकन्याओं के साथ विहार करता है। मन्त्रराज के 'वशमानय' को जो कामातुर हृदय में स्मरण करता है, उसके वश में किन्नर कन्याओं के साथ-साथ उर्वशी भी होती है और सदैव मैथुन में दक्षता रखती है। मन्त्रराज के दो अक्षर 'स्वाहा' का जप जो सूर्यास्त के बाद भोजन के समय करता है, उसके सभी रोग ऐसे ही नष्ट होते हैं, जैसे सूर्योदय से अन्धकार समाप्त हो जाता है। हाथों के कमल और दो शङ्खसहित चन्द्रप्रभा से युक्त त्रिनेत्र अग्नि के समान गणपति का जो स्मरण करता है, वह देवताओं के समान विमान से विहार करता है।।११-१५।।

बिन्दुत्र्यश्रदशारवासवकलावेदाश्रमध्ये विभो-
ये ध्यायन्ति भवन्तमीड्यवपुषं त्रैलोक्यरक्षापरम्।
जित्वा भूमिमनल्पकल्पनिवहान् भुक्त्वा सहायैर्युताः
पश्चाद्यान्ति गणेश तावकपदं देवासुरैर्दुर्लभम् ॥१६॥
इति गणपतेः स्तोत्रं मन्त्रात्मकं परमं जपेत्
पठति शृणुयाद्भक्त्या नित्यं समस्तरहस्यकम्।

इह धनपतिर्लक्ष्मीमायुः सुतांल्लभतेऽचिराद्
व्रजति त्रिदिवं जीवन्मुक्तः परत्र स साधकः ॥१७॥

बिन्दु, त्रिकोण, दस दल, अष्टदल, षोडशदल और भूपुर से युक्त यन्त्र में जो प्रभु का ध्यान त्रैलोक्यरक्षा में तत्पर रूप में करता है, वह अल्प काल में ही सम्पूर्ण भूमि पर विजय प्राप्त कर अपने सहायकों सहित अनन्त वर्षों तक भूतल का भोग करता है और देहान्त होने पर देवासुर के लिये दुर्लभ गाणपत्य पद प्राप्त करता है। गणपति के इस श्रेष्ठ मन्त्रात्मक स्तोत्र का यदि निरन्तर जप करे, सभी रहस्य का भक्तिसहित नित्य श्रवण करे या पाठ करे तो साधक इस संसार में धन, पति, लक्ष्मी, आयु और पुत्र प्राप्त करता है। पश्चात् जीवन्मुक्त होता है और परलोक में स्वर्ग प्राप्त करता है।।१६-१७।।

इति स्तवोत्तमं देवि महागणपतेः परम्।
गोप्यं गुप्तं सदा गोप्यं पञ्चाङ्गं सुरसुन्दरि ॥१८॥
पञ्चाङ्गं च गणेशस्य रहस्यं मम पार्वति।
विना शिष्याय नो दद्यात् साधकाय विना तथा ॥१९॥
विना दानं न दातव्यं विना दानं न ग्राहयेत्।
अन्यथा सिद्धिहानिः स्यात् सर्वथा दानमाचरेत् ॥२०॥
पटलं पद्धतिं वर्म मन्त्रनामसहस्रकम्।
स्तोत्रं पञ्चाङ्गमनिशं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥२१॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये महागणपतेः
स्तोत्रनिरूपणं नाम त्रिंशः पटलः॥३०॥

हे देवि! इस प्रकार गणपति का यह उत्तम स्तोत्र समाप्त हुआ। यह परम गोप्य है। हे सुरसुन्दरि! गणेशपञ्चाङ्ग भी सदा गुह्य और गोप्य है। हे पार्वति! मेरे द्वारा वर्णित इस गणेश-पञ्चाङ्ग-रहस्य को जो शिष्य न हो, उसे न बतलाये। साधक को इसे बिना दान लिये न तो देना चाहिये और न ही बिना दान दिये लेना चाहिये। अन्यथा सिद्धि नहीं मिलती। इसलिये सर्वथा दान करे। इस पटल-पद्धति, कवच-मन्त्रात्मक सहस्रनाम और स्तोत्ररूपी पञ्चाङ्ग को यत्नर्पूवक सर्वदा गुप्त रखना चाहिये।।१८-२१।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में महागणपतिमूलमन्त्र स्तोत्र नामक त्रिंश पटल पूर्ण हुआ।

●

समाप्तमिदं गणपतिपञ्चाङ्गम्

अथ सूर्यपञ्चाङ्गम्

अथैकत्रिंशः पटलः

सूर्यपटलम्

सूर्यपञ्चाङ्गावतारः

श्रीभैरव उवाच

कैलासशिखरासीनं भैरवीपतिमीश्वरम्।
भैरवं चन्द्रमुकुटं गणगन्धर्वसेवितम् ॥१॥
पन्नगाभरणोपेतं जटामुकुटमण्डितम्।
भस्माङ्गरागधवलं सर्पगोनसकङ्कणम् ॥२॥
सिंहचर्मपरीधानं गजचर्मोत्तरीयकम्।
कपालखट्वाङ्गधरं घण्टाडमरुधारिणम् ॥३॥
त्रिशूलबाणासिकरं वराभयकरं शिवम्।
मुण्डमालाधरं कामकालान्धकभयङ्करम् ॥४॥
ब्रह्मोपेन्द्रेन्द्रनमितं चन्द्रकोटिसुशीतलम्।
यक्षेशकिन्नरोपेतं सुरासुरनमस्कृतम् ॥५॥
रक्षोमारीमहाप्रेत-भूतवेतालसंकुलम्।
साध्यसिद्धपिशाचौघ-भैरवप्रणतं प्रभुम् ॥६॥
ब्रह्मर्षिसेवितं देवं पार्वतीसहितं विभुम्।
गङ्गाधरं प्रसन्नास्यं हसिताननपङ्कजम् ॥७॥
नन्दिरुद्रार्चितं शम्भुं दृष्ट्वा प्रोवाच भैरवी।

सूर्यपञ्चाङ्ग-अवतार—श्री भैरव ने कहा—भैरवीपति ईश्वर श्रीशैलशिखर पर विराजमान हैं। उन भैरव के शिर पर चन्द्रमुकुट है। गन्धर्वगण उनकी सेवा में रत हैं। उनके आभरण नागों के हैं। जटा का मुकुट है। भस्म के अङ्गराग से उनका शरीर श्वेत वर्ण का है। सर्पों और गोनस के कङ्गन हैं। परीधान सिंहचर्म का है। हाथी के चमड़े का गमछा है। हाथों में कपाल, खट्वाङ्ग, घण्टा, डमरू, त्रिशूल, बाण, वर और अभय मुद्रा धारण किए हुए हैं। गले में मुण्डों की माला है। कामदेव के काल और अन्धकासुर के लिये भयङ्कर हैं। ब्रह्मा एवं विष्णु से नमस्कृत हैं। करोड़ चन्द्रमा के समान शीतल

हैं। यक्ष और किन्नरों से घिरे हैं। देव-दैत्य से नमस्कृत हैं। राक्षस, महामारी, पिशाचसमूह भैरव प्रभु के पास नतशिर हैं। देवी पार्वती के साथ विभु देव की सेवा में ब्रह्मर्षि लगे हुए हैं। उनके शिर पर गङ्गा हैं। मुख प्रसन्न है, मुख-कमल विहसित है। नन्दी और रुद्र से पूजित हैं। ऐसे शम्भु को देखकर भैरवी ने कहा।।१-७।।

श्रीदेव्युवाच

भगवन् देवदेवेश भक्तानामभयप्रद ।
त्वं शिवः परमेशानस्त्वं विष्णुस्त्वं प्रजापतिः ॥८॥
सत्त्वाश्रितो रजोरूपस्तामसो लोकनाशनः ।
निर्गुणो भैरवाध्यक्षः कारणानां च कारणम् ॥९॥
वेदमूलो वेदगम्यो जगत्राता जगत्पतिः ।
त्वं मे प्राणाधिको देव क्रीतास्मि तव किङ्करी ॥१०॥
पुरा पृष्टोऽसि भगवन् मया त्वं भक्तिपूर्वकम् ।
अद्य तद्वद तत्त्वं मे यद्यहं व वल्लभा ॥११॥

देवी बोलीं—भगवन् देवदेवेश! भक्तों के अभयदाता! आप शिव हैं। परम ईशान हैं। आप विष्णु हैं। आप ब्रह्मा हैं। सत्वाश्रित होकर आप पालन करते हैं। रजोरूप से सृष्टि करते हैं। तामस रूप से लोकों का विनाश करते हैं। आप निर्गुण भैरवाध्यक्ष हैं। कारणों के कारण हैं। वेदमूल और वेदगम्य हैं। आप संसार के रक्षक और संसार के स्वामी हैं। आप मुझे प्राणों से भी अधिक प्रिय हैं। मैं आपकी क्रीतदासी हूँ। यदि मैं आपकी प्रिया हूँ तो मैंने पहले जो भक्तिपूर्वक आपसे पूछा था, आज उस तत्त्व का वर्णन कीजिये।।८-११।।

श्रीभैरव उवाच

किं वक्ष्यामि शिवे तत्त्वं यत् तवास्ति सुदुर्लभम् ।
विस्मृतं वद मे शीघ्रं वक्ष्ये प्राणाधिकासि मे ॥१२॥

श्री भैरव ने कहा कि हे शिवे! मैं किस तत्त्व का वर्णन करूँ। वे दुर्लभ तत्त्व विस्मृत हो गये हैं। तुम मुझे प्राणों से भी अधिक प्रिय हो। उन तत्त्वों के बारे में मुझसे फिर पूछो।।१२।।

श्रीदेव्युवाच

देवदेव महादेव दैत्यनायकपूजित ।
सकलागमसारज्ञ कौलिकानां हितेच्छया ॥१३॥

वद शीघ्रं दयासिन्धो पञ्चाङ्गं पूर्वसूचितम्।
देवदेवस्य सूर्यस्य सर्वतत्त्वोत्तमोत्तमम्॥१४॥

श्री देवी ने कहा कि हे देव-देव महादेव! आप दैत्यनायक पूजित हैं। सभी आगमों के सार का ज्ञान आपको है। कौलिकों के हित की इच्छा से हे दयासिन्धो! पूर्वसूचित सर्वतत्त्वोत्तम देवदेव सूर्य के पञ्चाङ्ग का शीघ्र वर्णन कीजिये।।१३-१४।।

श्रीभैरव उवाच

एतद् गुह्यतमं देवि पञ्चाङ्गं द्वादशात्मनः।
सर्वागमरहस्यं ते वक्ष्ये स्नेहेन पार्वति॥१५॥
पटलं नित्यपूजायाः पद्धतिं कवचं परम्।
मन्त्रनामसहस्रं च स्तोत्रं मूलात्मकं प्रिये॥१६॥
पञ्चाङ्गमिदमीशानि देवदेवस्य भास्वतः।
सर्वसारमयं दिव्यं रहस्यं मम दुर्लभम्॥१७॥

श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! सूर्य का पञ्चाङ्ग गुह्यतम है। तुम्हारे स्नेहवश सभी आगमों के रहस्यरूप सूर्य-पञ्चाङ्ग का मैं वर्णन करता हूँ। पटल, नित्य पूजापद्धति, श्रेष्ठ कवच, मन्त्रात्मक सहस्रनाम, मूलमन्त्रात्मक स्तोत्र—देवदेव भास्कर के साधन के ये पाँच अङ्ग हैं। ये सर्वोत्तम हैं। यह रहस्य दिव्य और दुर्लभ है।।१५-१७।।

सूर्यपटलम्

अदातव्यमभक्तेभ्यो भक्तेभ्यो भोगदायकम्।
अथाहं पटलं वक्ष्ये मूलमन्त्रमयं प्रिये॥१८॥
यस्य श्रवणमात्रेण सर्वरोगैः प्रमुच्यते।
यो देवदेवो भगवान् भास्करस्तेजसां निधिः॥१९॥
प्रत्यक्षदेवो वेदानां कर्ता साक्षी च कर्मणाम्।
सवितेति च वेदेषु परमात्मा जगत्पतिः॥२०॥
गायत्रीवल्लभः सूर्यः सृष्टिस्थितिलयेश्वरः।
कालात्मा च परं धाम परं ब्रह्मेति गीयते॥२१॥
तस्यादिदेवदेवस्य सूर्यस्य सवितुः शिवे।
मन्त्रोद्धारं परं वक्ष्ये सर्वसिद्धिमयं कलौ॥२२॥

सूर्य-पटल—यह सूर्यपञ्चाङ्ग अभक्तों को बतलाने के योग्य नहीं है। भक्तों को भोगदायक है। अब मैं मूलमन्त्रमय सूर्य-पटल का वर्णन करता हूँ, जिसको सुनने से ही

श्रोता सभी रोगों से मुक्त हो जाता है। देवदेव भगवान् भास्कर के तेजों का यह निधि है। देवों में ये प्रत्यक्ष देव हैं। वेदों के कर्ता हैं। कर्मों के साक्षी हैं। वेदों में इन्हें सविता कहा गया है। ये परमात्मा जगत्पति हैं। सूर्य गायत्रीवल्लभ हैं। सृष्टि, स्थिति और लय करने वाले ईश्वर हैं। ये कला की आत्मा हैं, परम धाम हैं। इन्हें ब्रह्म कहा जाता है। देवों के आदिदेव सूर्य सविता के मन्त्र के उद्धार का अब मैं वर्णन करता हूँ, जो कलियुग में सर्वसिद्धिप्रदायक है।।१८-२२।।

सूर्यमन्त्रोद्धारः

तारं डिम्बं भूतिशक्ती च सूर्यं ङेऽन्तं मध्ये विश्वमन्ते भवानि ।
मन्त्रोद्धारः सवितुर्वर्णितस्ते दुर्गाक्षरो भोगमोक्षैकहेतुः ।।२३।।
नास्य विघ्नो न वा दोषो न साध्यारिभयं शिवे ।
न शौचनियमो वापि विपर्ययभयं न हि ।।२४।।
अष्टसिद्धिप्रदो मन्त्रः सर्वरोगहरः परः ।
सर्वार्थसाधको देवि न देयो यस्य कस्यचित् ।।२५।।

सूर्यमन्त्रोद्धार—तार = ॐ, डिम्ब = ह्रां, भूति = ह्रीं, शक्ति = सः, सूर्याय के बाद नमः लगाने से सूर्य का यह मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः।

हे भवानि! यह मन्त्र नवाक्षर है, जिसका वर्णन मैंने तुमसे किया है। यह भोग-मोक्ष दोनों का प्रदायक है। इसकी साधना में न कोई विघ्न है, न कोई दोष है, न साध्य या शत्रु होने का भय है। इसमें कोई शौच-नियम नहीं है। विपर्यय का भय भी नहीं है। यह मन्त्र अष्ट-सिद्धिप्रदायक है। सभी रोगों के विनाश के लिये श्रेष्ठ औषधस्वरूप है। इससे सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं। यह जिस-किसी को देय नहीं है।।२३-२५।।

वर्णलक्षं जपेन्मन्त्रं साधकः साङ्गमीश्वरि ।
किं किं न लभते मन्त्री वाञ्छितं सूर्यमुद्रणात् ।।२६।।
लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं दशांशं साधको हुनेत् ।
तर्पयेत् तद्दशांशेन मार्जयेत् तद्दशांशतः ।।२७।।
भोजयेत् तद्दशांशेन मन्त्रः कल्पद्रुमो भवेत् ।

वर्णलक्ष के हिसाब से अंगों सहित इसका जप नव लाख करने से साधक क्या-क्या नहीं प्राप्त कर सकता है? सूर्यमुद्रण से साधक की सभी इच्छाएँ पूरी होती हैं।

इस मन्त्र का जप एक लाख करके दस हजार हवन करना चाहिये। एक हजार तर्पण, एक सौ मार्जन और दश ब्राह्मणों को भोजन कराये। इस प्रकार के पुरश्चरण से यह मन्त्र साधक के लिये कल्पवृक्ष के समान हो जाता है।।२६-२७।।

वटेऽरण्ये श्मशाने च शून्यागारे चतुष्पथे ॥२८॥
अर्धरात्रेऽथ मध्याह्ने पुरश्चरणमाचरेत् ।
सूर्योपरागसमये ग्रासावधि विमुक्तितः ॥२९॥
यज्जपेत् तद्भवेत् सिद्धं भोगमोक्षैककारणम् ।

जङ्गल में, वटवृक्ष के नीचे, श्मशान में, शून्य गृह में, चौराहे पर आधी रात में या मध्य दिवस में इसका पुरश्चरण करना चाहिये। सूर्यग्रहण के समय ग्रास के प्रारम्भ से मोक्ष तक जो इसका निरन्तर जप करता है, वह सिद्ध हो जाता है। उसे भोग और मोक्ष दोनों की प्राप्ति होती है।।२८-२९।।

ऋष्यादिनिरूपणम्

मन्त्रस्यास्य महादेवि ऋषिर्ब्रह्मा समीरितः ॥३०॥
गायत्र्यं छन्द इत्युक्तं सविता देवता स्मृतः ।
व्योषं बीजं परा शक्तिस्तारं कीलकमीश्वरि ॥३१॥
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोग इति स्मृतः ।

विनियोग—हे महादेवि! इस सूर्यमन्त्र के ऋषि ब्रह्मा कहे गये हैं। गायत्री इसका छन्द कहा गया है एवं देवता सविता कहे गये हैं। व्योष = ह्रां बीज, परा = ह्रीं शक्ति एवं तार = ॐ इसका कीलक कहा गया है। हे ईश्वरि! धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति हेतु इसका विनियोग किया जाता है॥३०-३१॥

मायाबीजेन षड्दीर्घभागिना न्यासमाचरेत् ॥३२॥
करन्यासषडङ्गानि यथावदनुपूर्वशः ।

न्यास—षड् दीर्घ स्वरयुक्त ह्रीं से करन्यास और षडङ्ग न्यास करे।

करन्यास—ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग न्यास—ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुँ। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।।३२।।

उत्कीलनादिमन्त्रा:

कोलत्रयं पठेद् देवि जपादौ साधकोत्तम: ॥३३॥
उत्कीलनं भवेद् देवि मन्त्रराजस्य पार्वति ।

उत्कीलन—हे देवी पार्वति! जप के पहले साधक द्वारा कोलत्रय = हूं हूं हूं कहने से इस मन्त्रराज का उत्कीलन होता है।।३३।।

शरत्त्रयं पठेन्मध्ये मूलमन्त्रस्य साधक: ॥३४॥
सञ्जीवनमनु: प्रोक्तो मन्त्रस्यास्य महेश्वरि ।

सञ्जीवन—मन्त्रराज के मध्य में सौ: सौ: सौ: कहने से मन्त्र सञ्जीवन होता है। मन्त्र का रूप होगा—ॐ ह्रां ह्रीं स: सौ: सौ: सौ: सूर्याय नम:।।३४।।

मातृकाशोधितं मन्त्रं कृत्वा पार्वति साधक: ॥३५॥
निस्तौटिल्यो भवेन्मन्त्र: सर्वसिद्धिप्रदायक: ।
वेदादिडिम्बकान्त्यच्छं शक्तिर्मध्ये पठेच्छिवे ॥३६॥
शिवशापं मोचय द्वि: पुनर्जाया विभावसो: ।
इयं शापहरी विद्या जप्या साधकसत्तमै: ॥३७॥
दशधा सवितुर्देवि येन मन्त्री शिवं भजेत् ।

मातृकाशोधन—साधक मन्त्र का जप मातृकाओं से सम्पुटित करके करे। इससे मन्त्र निष्तुटित होता है और सर्व सिद्धिप्रदायक होता है। शाप-विमोचन का मन्त्र है—ॐ ह्रां हं ह्सौ: सौ: शिवशापं मोचय मोचय जं रं।

इस शापहरी विद्या के साथ साधकसत्तम सविता मन्त्र का जप दश बार करे। इससे साधक का कल्याण होता है।।३४-३७।।

सिद्धं मन्त्रं जपेद् देवि यथाशक्त्याक्षमालया ॥३८॥
सर्वरोगैर्विमुक्तो हि भोगमोक्षफलं लभेत् ।
जगदन्ते पठेद् देवि शरद्वारं च कौलिक: ॥३९॥
संपुटाख्योऽस्त्ययं मन्त्रो मन्त्ररक्षामणि: पर: ।
गुरूपदेशतो ज्ञेय: सूर्यास्त्रमनुरुत्तम: ॥४०॥
यं जप्त्वा सवितुर्मन्त्रो भवेत् कल्पद्रुमोऽचिरात् ।

इस सिद्ध मन्त्र का जप साधक यथाशक्ति अक्षमाला पर करे। इससे साधक सभी रोगों से मुक्त होकर भोग और मोक्षफल प्राप्त करता है। नम: सौ: क्लीं से सविता मन्त्र को सम्पुटित करके जप करने से यह मन्त्र परम रक्षामणि बन जाता है। गुरु के उपदेश से

उत्तम सूर्यास्त्र मन्त्र प्राप्त करे। जो इस सविता मन्त्र का जप करता है, वह कुछ ही समय में कल्पद्रुम के समान हो जाता है।।३८-४०।।

तारं व्योषं च सूर्याय विद्महे तदनन्तरम् ।।४१।।
मायां शक्तिं समुच्चार्य ज्योतीरूपाय धीमहि ।
तन्नः शिवश्च शक्तिश्च परमात्मा प्रचोदयात् ।।४२।।
वर्णिता सूर्यगायत्री सर्वतन्त्रेषु गोपिता ।
दशधा साधकैर्जप्या सन्ध्यास्वर्चासु तर्पणे ।।४३।।

सूर्यगायत्री—ॐ ह्रां सूर्याय विद्महे ह्रीं सः ज्योतिरूपाय धीमहि तन्नः ह्रां सः परमात्मा प्रचोदयात्।

सभी तन्त्रों में गोपित इस सूर्यगायत्री को साधक सन्ध्या-अर्चन में एवं तर्पण में दश-दश बार जप करे।।४१-४३।।

सूर्यध्यानम्

ध्यानमस्य प्रवक्ष्यामि सर्वदेवरहस्यकम् ।
सर्वरोगापहं देवि भोगमोक्षफलप्रदम् ।।४४।।
कल्पान्तानलकोटिभास्वरमुखं सिन्दूरधूलीजपा-
वर्णं रत्नकिरीटिनं द्विनयनं श्वेताब्जमध्यासनम् ।
नानाभूषणभूषितं स्मितमुखं रक्ताम्बरं चिन्मयं
सूर्यं स्वर्णसरोजरत्नकलशौ दोर्भ्यां दधानं भजे ।।४५।।

सूर्य-ध्यान—हे देवि! सभी देवों का रहस्यभूत, सर्व रोगनिवारक एवं भोग-मोक्ष फलप्रदायक सूर्य के ध्यान का अब मैं वर्णन करता हूँ। सूर्य भगवान् का मुख करोड़ अग्निप्रकाश के समान प्रकाशमान है। सिन्दूरचूर्ण और अड़हुल-फूल के समान वर्ण उनका है। दो आँखें हैं। श्वेत कमल के मध्य में विराजमान हैं। विविध भूषणों से सुशोभित हैं। मुस्कानयुक्त मुखमण्डल है। लाल वस्त्र हैं। सूर्य चिन्मय हैं। एक हाथ में स्वर्णकमल है और दूसरे हाथ में रत्नकलश है। इस प्रकार के सुशोभित भगवान् सूर्य का हम ध्यान करते हैं।।४४-४५।।

सूर्ययन्त्रोद्धारः

यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि सर्वाशापरिपूरकम् ।
सर्वसंमोहनं दिव्यं सर्वसिद्धिमयं शिवे ।।४६।।

बिन्दुत्रिकोणवसुकोणसुवृत्तरूपं दिव्याष्टपत्रविलसद्दहनारणाढ्यम् ।
रेखात्रयाञ्चितधरासदनं च देवि श्रीचक्रमेतदुदितं सवितुर्वरेण्यम् ॥४७॥

यन्त्रोद्धार—हे शिवे! सभी आशाओं का परिपूरक, सर्वसम्मोहन, सर्वसिद्धिप्रद सूर्य के दिव्य यन्त्र के उद्धार का वर्णन करता हूँ। बिन्दु, त्रिकोण, अष्टकोण, सुन्दर वृत्त पर अष्टदल, वृत्तत्रय और तीन रेखाओं से युक्त भूपुर के रूप में वरेण्य सविता का श्रीचक्र उदित होकर सुशोभित होता है।।४६-४७।।

सूर्ययन्त्र
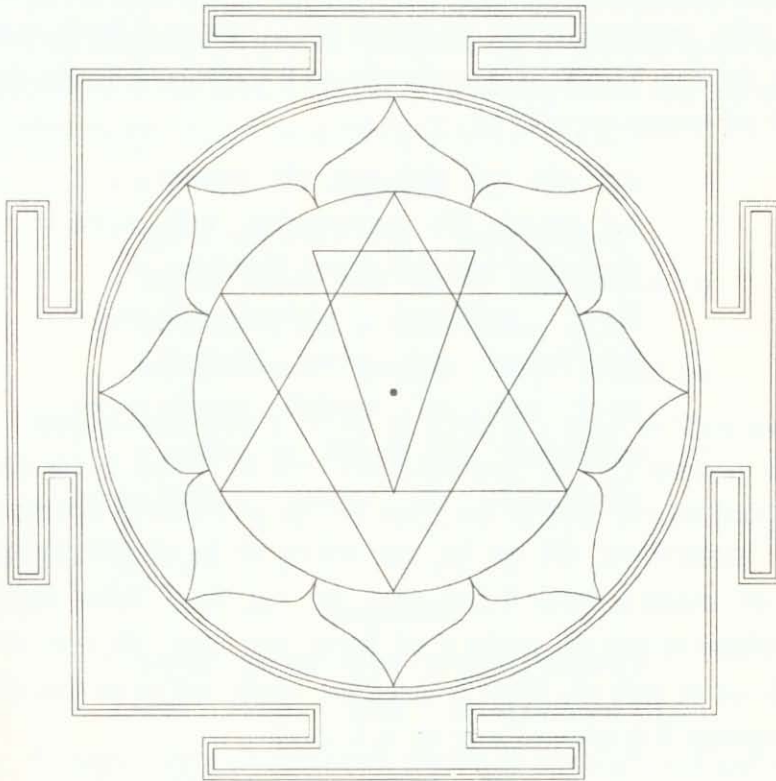
सूर्यलयाङ्गम्

लयाङ्गमस्य यन्त्रस्य वक्ष्ये पार्वति साधरम् ।
यस्य श्रवणमात्रेण कोटिपूजाफलं लभेत् ॥४८॥
शक्राग्नियममासाद-वरुणानिलवित्तदाः ।
सेशाः पूज्या बहिर्द्वारि यन्त्रराजस्य साधकैः ॥४९॥
गणेशश्चण्डवेतालो लोलाक्षो विकरालकः ।

अन्तर्द्वास्थाः शिवे पूज्या वामावर्तेन साधकैः ॥५०॥
दिव्यसिद्धमनुष्याख्यं गुरुपङ्क्तित्रयं शिवे।
वृत्तत्रयेऽर्चयेन्मन्त्री गन्धपुष्पाक्षतादिभिः ॥५१॥

सूर्यलयाङ्ग-पूजन—हे पार्वति! अब इस यन्त्र के लयाङ्ग-पूजन का वर्णन करता हूँ, जिसके सुनने से ही करोड़ पूजा का फल प्राप्त होता है। भूपुर की बाहरी दो रेखाओं के अन्तराल में पूर्वादि क्रम से पूज्य हैं—इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर एवं ईशान। भूपुर की भीतरी दो रेखाओं के अन्तराल में द्वारों पर पूर्वादि वामावर्त क्रम से गणेश, चण्डवेताल, लोलाक्ष और विकराल पूज्य हैं। प्रथम वृत्त में दिव्यौघ गुरुओं का, द्वितीय वृत में सिद्धौघ गुरुओं का और तृतीय वृत्त में मानवौघ गुरुओं का पूजन करते हुये उन्हें गन्धाक्षत-पुष्प अर्पित करे।।४८-५१।।

चन्द्रं भौमं बुधं जीवं शुक्रं सौरं तमस्तथा।
केतुं वसुदले देवि वामावृत्त्यार्चयेत् सुधीः ॥५२॥
दीप्तां सूक्ष्मां जयां भद्रां विमलां निर्मलां ततः।
विद्युतां सर्वतोवक्त्रां ग्रहैर्वसुदलेऽर्चयेत् ॥५३॥
सूर्यं दिवाकरं भानुं भास्करं रविमीश्वरि।
त्वष्टारं तपनं धर्मं वसुकोणे समर्चयेत् ॥५४॥
हंसं गृहपतिं देवि त्रिकोणे च त्रयीतनुम्।
श्रीबिन्दुमण्डले देवि सवितारं समर्चयेत् ॥५५॥

अष्टदल में चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि राहु और केतु की पूजा वामावर्तक्रम से करे। अष्टदल के अग्रभाग में दीप्ता, सूक्ष्मा, जया, भद्रा, विमला, निर्मला, विद्युता, सर्वतोवक्त्रा का पूजन करे। अष्टकोण में सूर्य, दिवाकर, भानु, भास्कर, रवि, त्वष्टा, तपन और धर्म का अर्चन करे। त्रिकोण के कोनों में हंस, गृहपति, त्रयी तनु का पूजन करे। बिन्दुमण्डल में ही सविता का अर्चन करे।।५२-५५।।

कलाः समर्चयेद् देवि वसुकोणे त्रिकोणके।
तपिनीं तापिनीं चैव बोधिनीं चैव रोधिनीम् ॥५६॥
केलिनीं शोषिणीं चैव वरेण्याकर्षिणीयुताम्।
एताः संपूज्य वस्वश्रे कौलिकः कुलसिद्धये ॥५७॥
मायां विश्वावतीं हेमप्रभां त्र्यश्रे समर्चयेत्।
विस्फुरां सवितारं च बिन्दुबिम्बे समर्चयेत् ॥५८॥

कमलैः केवलं देवं पूजयेदायुधानि च।
सुवर्णपद्मं संपूज्य रत्नाढ्यकलशं शिवे॥५९॥
मूलेन विधिवद् देवं नमेत् कैवल्यसिद्धये।
लयाङ्गमेतदाख्यातं सर्वतन्त्रेषु गोपितम्॥६०॥

अष्टकोण के कोनों में तपिनी, तापिनी, बोधिनी, रोधिनी, केलिनी, शोषिणी, वरेण्या, आकर्षिणी—इन आठ कलाओं का अर्चन करे। अष्टकोण में इनका पूजन करके कुलसिद्धि के लिये कौलिक त्रिकोण में ही माया, विश्वावती और हेमप्रभा का अर्चन करे। विस्फुरा और सविता का पूजन बिन्दुबिम्ब में करे। सविता का पूजन केवल कमल से करे। इसके बाद उनके आयुध का पूजन करे। सुवर्णपद्म की पूजा करके रत्नाढ्य की पूजा करे। कैवल्य-सिद्धि के लिये सविता के मूल मन्त्र से उन्हें विधिवत् नमस्कार करे। सभी तन्त्रों में गोपित इस पूजन का नाम लयाङ्ग-पूजन है।।५६-६०।।

पद्ममुद्रानिर्णयः

मुद्रां पद्माभिधां देवि दर्शयेदर्चनाविधौ।
अङ्गुष्ठौ विमुखौ मध्ये संयोज्य तर्जनीद्वयम्॥६१॥
कनिष्ठिके च संयोज्य मध्यमानामिकाः पृथक्।
पद्ममुद्रेयमाख्याता बिम्बमुद्रां शृणु प्रिये॥६२॥

पद्ममुद्रा—अर्चन-विधि में इस मुद्रा को प्रदर्शित करे। अँगूठों को विमुख करके उनके बीच में तर्जनियों को जोड़े। दोनों कनिष्ठिकाओं को जोड़े। मध्यमाओं और अनामिकाओं को पृथक्-पृथक् रखे। यही पद्ममुद्रा कही गई है। हे प्रिये! अब बिम्बमुद्रा को सुनो।।६१-६२।।

बिम्बमुद्रानिर्णयः

अङ्गुष्ठौ सम्मुखौ कृत्वा सम्मुखीरङ्गुलीश्चरेत्।
ऊर्ध्वं करयुगं कृत्वा बिम्बमुद्रेयमीरिता॥६३॥

बिम्बमुद्रा—अङ्गूठों को सम्मुख करके अँगुलियों को सम्मुख करे। दोनों हाथों को ऊपर की ओर करे। इसी को बिम्बमुद्रा कहते हैं।।६३।।

भास्करीमुद्रानिर्णयः

अधोमेरुर्वाममध्या तदूर्ध्वे सव्यमध्यमा।
तथैव कौलिकः कुर्याद्वामतः सव्यतोऽङ्गुलीः॥६४॥
इयं तु भास्करीमुद्रा त्रैलोक्यवशकारिणी।

सर्वरोगापहा ख्याता दर्शनीयार्चनाविधौ ॥६५॥
अङ्गुष्ठयोश्च चन्द्रारौ ज्ञेज्यावनामयोस्तथा।
सितासितौ च तर्जन्योः राहुकेतू प्रलम्बयोः ॥६६॥
मध्ये तु भास्करं देवं ध्यात्वा मुद्रां प्रदर्शयेत्।
आवाहने च गन्धादौ नैवेद्ये च विसर्जने ॥६७॥

भास्करी मुद्रा—बाँयें हाथ की अँगुलियों को सीधी रखकर अञ्जलि को अधोमुख करे। उस पर दाँयें हाथ को रखकर अँगुलियों को पकड़े। ऐसा करने से त्रैलोक्य-वश-कारिणी सर्व रोगविनाशक मुद्रा बनती है। पूजा के समय इसे प्रदर्शित किया जाता है। अँगूठे को राहु और तर्जनी को केतु माना जाता है। इन दोनों के बीच में भास्कर का ध्यान करते हुये यह भास्करी मुद्रा प्रदर्शित की जाती है। आवाहन-गन्धादि-नैवेद्य-समर्पण तथा विसर्जन में भी इसे प्रदर्शित किया जाता है।।६४-६७।।

खशोल्कामुद्रानिर्णयः

धूपदीपादिनैवेद्यं देयं सर्वं खशोल्कया।
खशोल्काख्या महामुद्रा (सर्वरोगापहारिणी ॥६८॥
सर्वार्थसाधनकरी दुःखदारिद्र्यनाशिनी।
बद्ध्वा मुष्टियुगं देवि पर्वं पर्वणि योजयेत् ॥६९॥
अङ्गुष्ठयोनिं बद्ध्वोर्ध्वे सर्वयोन्युत्तमोत्तमाम्।
खशोल्काख्या महामुद्रा) शत्रुवर्गविमर्दिनी ॥७०॥
रविं दृष्ट्वा प्रणम्यादौ दर्शनीया महेश्वरि।
महामुद्रा महागोप्या महामार्तण्डवल्लभा ॥७१॥
इमां यो भानवीं मुद्रां दर्शयेत् पूजने सुधीः।
शतवर्षसहस्राणां पूजाफलमवाप्नुयात् ॥७२॥

खशोल्का मुद्रा—सविता-पूजन में धूप-दीप-नैवेद्य का अर्पण खशोल्का मुद्रा से करे। यह सर्व रोगापहारिणी मुद्रा है। यह सर्वार्थ सिद्ध करने वाली एवं दुःख-दारिद्र्य का विनाश करने वाली है। दोनों हाथों की मुट्ठी बाँधकर पर्वों को पर्वों से जोड़े। अँगूठों को योनिबद्ध करे। यह सभी योनियों में उत्तम है। खशोल्का मुद्रा शत्रुवर्ग को विनष्ट करने वाली है। सूर्य को देखकर पहले प्रणाम करे। इसके बाद मुद्रा दिखावे। यह महामुद्रा महागोप्य एवं सूर्यप्रिया है। इन भानवी मुद्राओं को जो साधक पूजन के समय प्रदर्शित करता है, वह सौ हजार वर्षों के पूजाफल को प्राप्त करता है।।६८-७२।।

अष्टौ प्रयोगा:

प्रयोगानष्ट वक्ष्येऽहं शृणु पार्वति सादरम्।
येषां साधनमात्रेण मन्त्र: सिद्धिप्रदो भवेत्॥७३॥
स्तम्भनं मोहनं चैव मारणाकर्षणौ तत:।
वशीकरणविद्वेषौ शान्तिकी पौष्टिकी क्रिया॥७४॥
एतेषां साधनं वक्ष्ये साधकानां हितेच्छया।
अप्रकाश्यमदातव्यं कलौ रोगापहं शिवे॥७५॥

आठ प्रयोग—हे पार्वति! आदरपूर्वक सुनो। अब मैं सूर्यमन्त्र के आठ प्रयोगों का वर्णन करता हूँ, जिनके साधन से मन्त्र सिद्धप्रद होते हैं। साधकों के कल्याण की इच्छा से इनकी साधना का वर्णन करता हूँ। ये आठ साधन स्तम्भन, मोहन, मारण, आकर्षण, वशीकरण, विद्वेषण, शान्ति और पुष्टि की क्रिया हैं। ये सभी अप्रकाश्य एवं अदातव्य हैं। हे शिवे! ये सभी कलियुग में रोगविनाशक हैं।।७३-७५।।

स्तम्भनप्रयोग:

रवौ प्रभाते शयनादुत्थायावश्यकं चरेत्।
स्नात्वा जपेन्महादेवि सूर्याग्रे साधकोऽयुतम्॥७६॥
हुनेद् दशांशतो देवि पद्मपद्माक्षशर्करा:।
सर्पिषा स्तम्भनं सद्यो वादितस्करपाथसाम्॥७७॥

स्तम्भन—रविवार के दिन प्रात:काल शय्या का त्याग कर नित्य कृत्य करके स्नान करे। हे महादेवि! तब सूर्य की ओर मुख करके साधक दश हजार मन्त्र-जप करे। कमल, कमलगट्टा, शक्कर और गोघृत से एक हजार हवन करे। इससे अग्नि और तस्करों का स्तम्भन तुरन्त होता है।।७६-७७।।

सम्मोहनप्रयोग:

रवौ मध्याह्नवेलायां जपेदयुतसंख्यया।
हुनेद् दशांशमीशानि घृतपद्माक्षनागरान्॥७८॥
तर्पयेत् पयसा सद्यो मोहनं द्युसदामपि।

मोहन—रविवार में दोपहर के समय दश हजार मन्त्र-जप करे। एक हजार हवन घी, कमलबीज और नागरमोथा से करे। दूध से एक हजार तर्पण करे। इससे दुष्टों का भी मोहन तुरन्त होता है।।७८।।

मारणप्रयोगः

रवौ सायं जपेन्मूलं नदीतीरस्थितो रहः ।।७९।।
अयुतं तद्दशांशेन हुनेत् पद्माक्षपर्पटान् ।
घृतेन दध्ना सन्तर्प्य मारणं द्विषतां भवेत् ।।८०।।

मारण—रविवार की सन्ध्या में नदी-तट पर स्थित होकर दश हजार मन्त्र-जप करे। कमलबीज, पर्पट, घी मिलाकर एक हजार हवन करे। दही से एक सौ तर्पण करे। इससे शत्रुओं का मारण होता है।।७९-८०।।

आकर्षणप्रयोगः

रवौ निशीथे संजप्य मूलमन्त्रायुतं शिवे ।
हुनेद् दशांशमम्भोजशटीघृतकुलत्थकैः ।।८१।।
आकर्षणं भवेत् सद्यो देवि नाकस्त्रियामपि ।

आकर्षण—रविवार की आधी रात में दश हजार मन्त्र-जप करके कमल, आमा हल्दी, घी और कुलथी मिलाकर एक हजार हवन करे। इससे स्वर्ग की स्त्रियों का भी आकर्षण तुरन्त होता है।।८१।।

वशीकरणप्रयोगः

रवौ ब्राह्मे मुहूर्ते तु स्नात्वा तत्र जपेज्जले ।।८२।।
अयुतं मूलविद्याया दशांशं जुहुयात् सुधीः ।
घृतमत्स्यण्डकर्पूर-पद्मपद्माक्षकेसरान् ।।८३।।
इन्द्रोऽपि वशतां याति किं पुनः क्षुद्रभूमिपः ।

वशीकरण—रविवार को ब्राह्म मुहूर्त में नदी या तालाब में स्नान करके जल में खड़े रहकर मूल विद्या का दश हजार जप करे। तब साधक घी, मत्स्यण्ड, कपूर, कमल, कमलबीज, केसर से एक हजार हवन करे। इससे इन्द्र भी वश में होते हैं, तब क्षुद्र भूपालों के बारे में क्या सोचना है।।८२-८४।।

विद्वेषणप्रयोगः

सूर्योदये जपेद्विद्यां साधकोऽयुतसंख्यया ।।८४।।
जुहुयात् सर्पिरम्भोज-मुस्तापर्पटशर्कराः ।
विषेण तर्पयेद् देवं भवेद्विद्वेषणं द्विषाम् ।।८५।।

विद्वेषण—सूर्योदय के समय साधक दश हजार मन्त्र-जप करे। गोघृत, कमल, मुस्ता, पर्पट, शक्कर के मिश्रण से एक हजार हवन करे। एक सौ तर्पण विष से करे। इससे शत्रु का विद्वेषण होता है।।८४-८५।।

शान्तिप्रयोगः

रवावर्धोदिते देवि कूपभूमौ जपेन्मनुम्।
अयुतं तद्दशांशेन हुनेद् घृतयवाकणाः ॥८६॥
अम्भोजकेसरं शुण्ठीं शान्तिर्भवति तत्क्षणात्।
अतिवृष्टेरनावृष्टेः राजभीतेर्महेश्वरि ॥८७॥

शान्ति—सूर्य के आधा उदय होने पर कूप के निकट भूमि पर बैठकर दस हजार मन्त्र-जप करे। घी, यवचूर्ण, कमल, केसर, सोंठ के मिश्रण से एक हजार हवन करे। हे महेश्वरि! इससे अतिवृष्टि, अनावृष्टि, राजभीति की सद्यः शान्ति होती है।।८६-८७।।

पुष्टिप्रयोगः

रवावस्तङ्गतेऽप्यर्धे जपेद्वानीरमूलके।
मन्त्रायुतं महादेवि जुहुयाद् घृतगोपयः ॥८८॥
पद्मपद्माक्षकिञ्जल्क-मत्स्यण्डार्कदलानि च।
दशांशं तर्पयेद् दध्ना क्षीरेण सितया सुधीः ॥८९॥
महापुष्टिर्भवेल्लोके देवानामपि दुर्लभा।

पुष्टि—सूर्य के आधा अस्त होने पर पाकड़ वृक्ष के मूल में बैठकर दश हजार मन्त्र-जप करे। गाय के दूध, घी, कमल, कमलबीज-चूर्ण, शक्कर एवं अकवन-पत्ता के मिश्रण से एक हजार हवन करे। एक सौ तर्पण दही-दूध-चीनी से करे। इससे देवताओं को भी दुर्लभ महापुष्टि संसार में होती है।।८८-८९।।

पटलोपसंहारः

इत्येष पटलो गुह्यः सवितुश्चातिवल्लभः।
सर्वमन्त्रमयो दिव्यो गोपनीयो मुमुक्षुभिः ॥९०॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये सूर्यपटल-
निरूपणमेकत्रिंशः पटलः॥३१॥

सूर्य को अतिप्रिय यह गुह्य पटल सर्वमन्त्रमय, दिव्य और गोपनीय है। मुमुक्षुओं को भी इसे नहीं बतलाना चाहिये।।९०।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में सूर्यपटल-
निरूपण नामक एकत्रिंश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ द्वात्रिंशः पटलः

सूर्यपूजापद्धतिः

श्रीभैरव उवाच

अद्याहं सवितुर्वक्ष्ये नित्यपूजारहस्यकम्।
पद्धतिं परमां दिव्यां शृणु पार्वति सादरम्॥१॥
पञ्चकृत्यमकृत्वा यो गायत्रीं सञ्जपेच्छिवे।
स पातकी भवेद्रोगी यदिदं शिवशासनम्॥२॥
सवितुर्नित्यपूजायाः पद्धतिं गद्यरूपिणीम्।
सर्वतत्त्वरहस्याढ्यां वक्ष्येऽहं प्राणवल्लभे॥३॥

श्री भैरव बोले—हे पार्वति! आदरपूर्वक सुनो, अब मैं सविता के नित्य पूजन का महत्त्व बतलाता हूँ। पञ्चाङ्ग सेवन के बिना जो गायत्री का जप करता है, वह शिवशासनानुसार पापी और रोगी होता है। हे प्राणवल्लभे! गद्य-रूप में, सभी तत्त्वों से परिपूर्ण सविता नित्य पूजन की पद्धति का वर्णन मैं करता हूँ।।१-३।।

ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय बद्धपद्मासनः स्वशिरःस्थसहस्राराधोमुखकमल-कर्णिकामध्यवर्तिनं श्रीगुरुं चिदानन्दस्वरूपं ध्यात्वा नुत्वा तद्दर्शनानन्दाप्लुतो भूत्वा 'हंसः सोहं स्वाहा' इति सञ्जप्य जपं हंसाय निवेद्य, 'सोहं हंसः स्वाहा' इति ध्यात्वा जप्त्वा गुरवे निवेद्य, तदाज्ञां गृहीत्वा बहिरागत्य मलादीन् संत्यज्य, वर्णानुरूपं शौचं विधाय देवं ध्यात्वा प्राणायामत्रयं विधाय, तत्त्वत्रयेणाचम्य दन्तधावनं कुर्यात्। तद्यथा—क्लीं सर्वजनमनोहराय कामदेवाय वौषट्, इति दन्तान् संशोध्य, ह्रामिति गण्डूषत्रयं विधाय प्रणवेन त्रिराचम्य शिरोमुखहृत्कुक्षिनाभिपृष्ठलिङ्गजानुपादेषु प्रत्येकं मूलबीजाक्षराणि न्यसेत्।

ब्राह्म मुहूर्त में उठकर पद्मासन बाँधकर बैठे। अपने मस्तक में स्थित अधोमुख सहस्रदल कमल की कर्णिका में स्थित चिदानन्दस्वरूप गुरु का ध्यान करे। उनको प्रणाम करे। उनके दर्शन से आनन्दप्लुत होकर 'हंसः सोहं स्वाहा' का जप करके हंस को जप निवेदित कर दे। 'सोहं हंसः स्वाहा' से फिर ध्यान करके जप करे और इसे गुरु को निवेदित करे। गुरु की आज्ञा लेकर बाहर जाकर मलोत्सर्ग करे। वर्णानुरूप

शौच करके देव का ध्यान करके तीन प्राणायाम करे। तीन तत्त्वों से आचमन करके दतुवन करे।

दाँतों का शोधन 'क्लीं सर्वजनमनोहराय कामदेवाय वौषट्' से करे। 'ह्रां' से तीन बार कुल्ला करे। प्रणव से तीन आचमन करे। इसके बाद मूल मन्त्र-वर्ण से न्यास करे। जैसे—

ॐ नम: शिरसि। ह्रां नम: मुखे। ह्रीं नम: हृदये। स: नम: कुक्षौ। सूं नम: नाभौ। र्यां नम: पृष्ठे। यं नम: लिगे। नं नम: जानौ म: नम: पादयो:।

तत उपस्पृश्य मायाबीजेन ताराद्येन प्राणायामत्रयं कुर्यात्। पूरकं १६ कुम्भकं ६४ रेचकं ३२ इति प्राणापानसमानोदानव्यानादीन् नियम्य, नद्यादौ गत्वा मृत्त्रयं मूलेन त्रिधाभिमन्त्र्य, मलापकर्षणं स्नानं निर्माय ॐगांगींगूं।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

इत्यङ्कुशमुद्रया सूर्यमण्डलात्तीर्थान्यावाह्य,

ॐ भगवन् भवभूतेश ग्रहनायक भास्कर।
चिद्रूप वेदनेत्रेश परमार्थाद्वयप्रभो॥
यावत् त्वां तर्पयिष्यामि तावद्भानो इहावह।

इसके बाद बैठकर 'ॐ ह्रीं' से तीन प्राणायाम करे। ॐ ह्रीं के १६ मानसिक जप से पूरक, ६४ जप से कुम्भक और ३२ जप से रेचक करे। प्राण, अपान, समान, उदान, व्यानादि प्राणों को नियमित करे। तब नदी-तट पर जाकर मिट्टी को मूल मन्त्र के तीन जप से अभिमन्त्रित करे। मलापकर्षण स्नान करे। सूर्यमण्डल से अङ्कुश मुद्रा से तीर्थों का आवाहन करे। आवाहन मन्त्र है—

ॐ गां गीं गूं गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

देवता का आवाहन करे। जैसे—

ॐ भगवन् भवभूतेश ग्रहनायक भास्कर।
चिद्रूप वेदनेत्रेश परमार्थाद्वयोप्रभो।
यावत् त्वां तर्पयिष्यामि तावद् भानो इहावह।।

इत्यावाह्य, तृतीयां मृदमङ्गे विलिप्य मूलं सप्तधा समुच्चार्य, कुम्भमुद्रां

प्रदर्श्य जले त्रिरुन्मज्जेत्। इति स्नात्वा, देवं ध्यात्वा मूलेन देवायार्घ्यत्रयं दत्त्वा मूलविद्यां दशधा जप्त्वा सूर्यगायत्र्या महामार्तण्डायार्घ्यत्रयं दद्यात्। ॐह्रीं सूर्यरूपाय विद्महे ह्रींसः ज्योतीरूपाय धीमहि तन्नो हंसः प्रचोदयात् ३। ॐहंसः महामार्तण्डाय प्रकाशशक्तिसहिताय एष तेऽर्घो नमः। इत्यर्घ्यत्रयं दत्त्वा, मूलेन त्रिर्मार्जनपूर्वमाचम्य वासोऽन्यत् परिधाय संध्यां कुर्यात्। यथा—जले त्र्यश्रं कृत्वा स्वदेह उपस्पृश्य, वामहस्ते जलं धृत्वा दक्षहस्तेनाच्छाद्य, लंवंरंयंहं इति त्रिरभिमन्त्र्य दक्षकरे धृत्वा, तद्गलिताम्बुबिन्दुभिः स्वमूर्ध्नि द्वादशधा संमार्ज्य, इडया तज्जलमन्तर्नीत्वा, शारीरं कलुषं प्रक्षाल्य वामनासया विरेच्य तज्जलं कृष्णं पापरूपं स्ववामभागस्थवज्रशिलायामास्फालयेदिति मलापकर्षणं कृत्वा, ॐह्रीं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, ॐह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा, ॐह्री शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, इति त्रिराचम्य, पूर्ववत् १६। ६४। ३२ त्रिः प्राणानायम्य गायत्रीं दशधा जपेत्।

सवितुर्देवि गायत्रीं कौलिको दशधा जपेत्।
महापातकयुक्तोऽपि सर्वरोगैः प्रमुच्यते ॥

इति जप्त्वा, मूलं यथाशक्त्या जप्त्वा जपं देवाय समर्प्य, मूलमुच्चार्य

उद्वमन्तमनाभासं परमं व्योम चिन्मयम्।
अव्ययं सच्चिदाकाशमगमन् ज्योतिरुत्तमम् स्वाहा ॥

इत्युपस्थाय जलाञ्जलिं दत्त्वा, पुनर्जले श्रीचक्रं वा योनिचक्रं बिन्दुमण्डितं विलिख्य, मूलान्ते श्रीमहामार्तण्डदेवः सूर्यः सविता विस्फुरासहितस्तृप्यतामिति द्वादशवारं संतर्प्य, प्रत्येकं परिवारदेवताः संतर्प्य, पित्रादितर्पणं विधाय त्रिराचम्य, स्नानेशाय वरुणाय ॐहूंश्रूंवां वरुणाय वौषट्, इति नत्वा, देवं सदेवीकं विसृज्य, हृत्कुशेशयकोशान्तर्लीनं ध्यात्वा, स्नानशाटीं निर्वर्त्य यागमण्डपमागच्छेदिति सन्ध्याविधिः।

इस प्रकार आवाहन करके अपने अङ्गों में तीन बार मिट्टी का लेप करे। मूल मन्त्र का जप सात बार करे। कुम्भ मुद्रा दिखाकर जल में तीन बार स्नान करे। इस प्रकार स्नान करके देव का ध्यान करके मूल मन्त्र से तीन अर्घ्य प्रदान करे। मूल मन्त्र का जप दश बार करे। पूर्ववर्णित सूर्यगायत्री से महामार्तण्ड को तीन अर्घ्य प्रदान करे। सूर्य गायत्री इस प्रकार है—

ॐ ह्रीं सूर्यरूपाय विद्महे ह्रीं सः ज्योतीरूपाय धीमहि तन्नो हंसः प्रचोदयात्। ॐ

हंस: महामार्तण्डाय प्रकाशशक्तिसहिताय एष तेऽर्घ्यो नम:।

अर्घ्य के बाद मूल मन्त्र से तीन मार्जन करके आचमन करे और वस्त्र बदल कर सन्ध्या करे।

जल में त्रिकोण कल्पित करे। अपने शरीर का स्पर्श करे। बाँयें हाथ में जल लेकर दाँयें हाथ से उसे ढँके। तीन बार लं वं रं यं हं के जप से जल को अभिमन्त्रित करे। तब जल को दाहिने हाथ में लेकर उससे टपकते बूँदों से अपने मूर्धा पर मार्जन करे। इड़ा नाड़ी से जल को भीतर खींचकर पापरूप शरीर-कलुष का प्रक्षालन करे। वाम नासा से जल का विरेचन करे। उस जल में कृष्ण पापरूप को अपने वाम भागस्थ कल्पित वज्रशिला पर पटक दे। यही मलापकर्षण क्रिया है।

तीन बार आचमन करे; जैसे—ॐ ह्रीं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐ ह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। पूर्ववत् १६, ६४, ३२ मात्रा से पूरक, कुम्भक, रेचक करके दश बार गायत्री का जप करे। कौलिक देवीगायत्री का जप दश बार करे। इससे महापातकी भी सभी रोगों से मुक्त हो जाता है। मूलमन्त्र का यथाशक्ति जप करके जप देवता को समर्पित करे। मूल मन्त्र बोलकर यह मन्त्र पढ़े—

उद्वमन्तमनाभासं परमं व्योम चिन्मयम्।
अव्ययं सच्चिदाकाशमगमन् ज्योतिरुतमम् स्वाहा।।

जलाञ्जलि प्रदान करे। फिर जल में श्रीचक्र या योनिचक्र में बिन्दुसहित अङ्कित करके मूल मन्त्र के अन्त में 'श्रीमहामार्तण्डदेव: सूर्य: सविता विस्फुरासहितस्तृप्यताम्' से दश बार तर्पण करे। प्रत्येक परिवारदेवता का तर्पण करे। पितरों का तर्पण करे। तीन आचमन करे। जलदेवता वरुण को इस मन्त्र से नमस्कार करे। जैसे—स्नानेशाय वरुणाय ॐ हूं श्रूं वां वरुणाय वौषट्।

देवी-सहित देव को विसर्जित करे। हृत्कुशेशयकोशान्तर्लीनरूप में ध्यान करके स्नान धोती को निचोड़कर यागमण्डप में प्रवेश करे।

तत्र पादौ प्रक्षाल्य गेहान्तः प्रविश्य सामान्यार्घ्योदकेनाभ्युक्ष्य, ॐह्रां देहल्यै नमः, ॐगं गणपतये नमः, ॐसं सरस्वत्यै नमः, ॐदुं दुर्गायै नमः, ॐक्षां क्षेत्रपालाय नमः, मध्ये वास्तुदेवताभ्यो नमः, इति पूर्वद्वारादारभ्योत्तरद्वारपर्यन्तमभ्यर्च्य, द्वारोर्ध्वे गङ्गायै नमः, दक्षिणे यमुनायै नमः, द्वाराधः सरस्वत्यै नमः, उत्तरे चक्रायै नमः, मध्ये सुधार्णवाय नमः, इति संपूज्य

मूलेन निरीक्ष्य, छोटिकाभिः संताड्य यथार्हमासन उपविश्य शोधनं कुर्यात्।

ॐआं आसनशोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषि; सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनशोधने विनियोगः। ॐप्रीं पृथिव्यै नमः।

ॐमहि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

पाँव धोकर यागमण्डप में प्रवेश करे। सामान्य अर्घ्यजल से प्रोक्षण करे। पूजन करे। मन्त्र है—ॐ ह्रां देहल्यै नमः। ॐ गं गणपतये नमः। ॐ सं सरस्वत्यै नमः। ॐ दुं दुर्गायै नमः। ॐ क्षां क्षेत्रपालाय नमः। मध्ये वास्तुदेवताभ्यो नमः।

इस प्रकार पूर्व द्वार से प्रारम्भ करके उत्तर द्वार तक पूजन करके द्वार का पूजन करे। द्वार के ऊपरी भाग में गङ्गायै नमः, दक्षिण भाग में यमुनायै नमः, अधोभाग में सरस्वत्यै नमः, उत्तर में चक्रायै नमः, मध्य में सुधार्णवायै नमः। पूजन के बाद मूल मन्त्र से निरीक्षण करे। छोटिका से ताड़न करे। योग्य आसन पर बैठकर शोधन करे।

ॐ आं आसनशोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसनशोधने विनियोगः। ॐ प्रीं पृथिव्यै नमः।

ॐ महि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

ॐक्रांह्रांह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः, अं अनन्ताय नमः, पद्मनालाय नमः, पद्माय नमः, परागेभ्यो नमः, अष्टदलपद्मासनाय नमः, सहस्रदल-पद्मासनाय नमः, ॐहंसः श्रीकर्णिकायै नमः, सप्ततुरगेभ्यो नमः, इति संपूज्य दिव्यदृष्ट्या दिव्यांस्तालत्रयेणान्तरिक्षगतान् वामपार्ष्णिघातत्रयेण भौमान् विघ्नानुत्सार्य,

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

इत्यक्षतप्रक्षेपेण भूतान्निःसार्य, ॐह्रः अस्त्राय फडिति दिग्बन्धनं कृत्वा, 'ॐहंसः मां रक्ष-रक्ष हूं फट् स्वाहा' इत्यात्मरक्षां विधाय, हूं फट् वाम-नासया वायुमापूर्य, ह्रीं फट् कुम्भयित्वा, सः फट् विरेच्य, स्वात्मानं हंसरूपं ध्यात्वा ॐहूंहंसः इत्याकुञ्चेन कुलकुण्डलिनीं सार्धत्रिवलयां दीर्घाकारामुत्थाप्य, प्रदीपकलिकाकारां विसतन्तुतनीयसीं तडित्कोटिप्रभां चन्द्रकोटिशीतलां सूर्यकोटिदुर्दर्शां वह्निकोटिकरालां सुषुम्नामार्गेण षट्चक्रं

भित्त्वा ब्रह्मपथान्तर्नीत्वा परमशिवेन संयोज्य, सामरस्योद्भवानन्दामृतेन सन्तर्प्य, पुनस्तेनैव पथा मूलाधारं प्रापयित्वा, वामे पापपुरुषं श्मश्रुलं रक्ताक्षं धूम्रवर्णं खड्गचर्मधरं स्वाङ्गुष्ठाकारं विचिन्त्य, यंरंवंलंहं इति भूतबीजैः शोषण-दाहन-प्लावनादीन् कुर्यात्। यथा—आदौ प्राणायामयोगेन यमिति वायुबीजेन षोडशवारजप्तेन शोषयेत्। ततो रमिति वह्निबीजेन चतुष्षष्टिवारजप्तेन दाहयेत्। वमिति वरुणबीजेन द्वात्रिंशद्वारजप्तेन प्लावयेत्। लमिति भूबीजेन दशधा जप्तेन देहं दृढं विचिन्त्य, हमित्याकाशबीजेन दशधा जप्तेन शून्यात्मकं स्वात्मानं ध्यात्वा हृदयारविन्दकर्णिकायां देवं सूर्यं ध्यायेत्।

ॐ क्रां ह्रां ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः। अं अनन्ताय नमः। पद्मनालाय नमः। पद्माय नमः। परागेभ्यो नमः। अष्टदलपद्मासनाय नमः। सहस्रदलपद्मासनाय नमः। ॐ ह्रीं हंसः श्रीकर्णिकायै नमः। सप्ततुरगेभ्यो नमः। इस प्रकार पूजा करके दिव्य दृष्टि से दशो दिशाओं का निरीक्षण करते हुए तीन ताली बजाये। बाँयीं एँड़ी से पृथ्वी पर तीन आघात करे। विघ्नोत्सारण हेतु निम्न मन्त्र पढ़े—

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

यह मन्त्र पढ़कर अक्षत फेंककर भूत-निस्सारण करे। ॐ हः अस्त्राय फट् बोलकर दिग्बन्ध करे।

भूतशुद्धि—'ॐ हंसः मां रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा' बोलकर आत्मरक्षा करे। 'हं फट्' बोलकर वाम नासा से पूरक करे। 'ह्रीं फट्' से कुम्भक करे। संः फट् से रेचक करे। अपनी आत्मा को हंसरूप मानकर 'ॐ ह्रं हंसः' से आकुञ्चन करके साढ़े तीन कुण्डलरूपा कुण्डलिनी को दीर्घाकार सीधा करे। प्रदीपकलिका आकार की, बिसतन्तु के समान पतली, कोटि विद्युत्-सी प्रभावती, कोटि चन्द्र-सी शीतल, कोटि सूर्य के समान दुर्दर्शी, करोड़ अग्नि के समान भयंकर कुण्डलिनी को सुषुम्ना मार्ग से षट्चक्रों का भेदन कराते हुए ब्रह्मरन्ध्र के अन्त में लाकर परमशिव से मिला दे। उनके सामरस्य होने से उत्पन्न आनन्दरूप अमृत से तर्पण करे। इसके बाद कुण्डलिनी को उसी मार्ग से मूलाधार में ले आये। अपनी वाम कुक्षि में दढ़ियल, लाल नेत्र वाले, धूम्र वर्ण, खड्ग-ढालयुक्त, अपने अँगूठे के बराबर आकार वाले पापपुरुष का चिन्तन करके यं रं वं लं हं भूतबीजों से शोषण, दाहन, प्लावनादि करे। जैसे—

पहले प्राणायामयोग से 'यं' वायुबीज के सोलह जप से शोषण करे। तब अग्नि-

बीज 'रं' का चौंसठ जप से दाहन करे। जलबीज 'वं' के बत्तीस जप से प्लावन करे। भूबीज 'लं' के दश जप से अपने तन को दृढ़ करे। आकाशबीज 'हं' के दश जप से अपनी आत्मा का चिन्तन शून्यात्मक करे। हृदयकमल की कर्णिका में देव सूर्य का ध्यान करे।

देदीप्यमानमुकुटं मणिकुण्डलमण्डितम्।
देवं सहस्रकिरणं विस्फुरालिङ्गितं स्मरेत्॥

इति ध्यात्वा स्वात्मानं देवरूपं स्मृत्वा, ॐआंह्रींक्रोंह्रांह्रीं हंसः मम प्राणा इह प्राणा ८ँ मम जीव इह स्थितः ८ँ मम सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुस्त्वक्श्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा, इति भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठाक्रमः। ततो मूलन्यासं विधाय, मूलान्ते शिरसि त्रिः सूर्यं सम्पूज्य मन्त्रसङ्कल्पं कुर्यात्।

देदीप्यमानमुकुटं मणिकुण्डलमण्डितम्।
देवं सहस्रकिरणं विस्फुरालिंगितं स्मरेत्।।

ऐसा ध्यान करके अपनी आत्मा का चिन्तन देवस्वरूप में करे। तब प्राणप्रतिष्ठा करे, जैसे—ॐ आं ह्रीं क्रों ह्रां ह्रीं हंसः मम प्राणा इह प्राणाः, ॐ आं ह्रीं क्रों ह्रां ह्रीं हंसः मम जीव इह स्थितः, ॐ आं ह्रीं क्रों ह्रां ह्रीं हंसः मम सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुस्त्वक्श्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

यह भूतशुद्धि प्राणप्रतिष्ठा है। इसके बाद मूल न्यास करके मूल मन्त्र बोलते हुए शिर पर तीन बार सूर्यपूजन करे। इसके पश्चात् मन्त्र-सङ्कल्प करे।

ॐअस्य श्रीसूर्यपूजामन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्र्यं छन्दः, श्रीसविता देवता, ह्रां बीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकम्, धर्मार्थकाममोक्षार्थे सूर्यपूजायां विनियोगः।

ब्रह्मऋषये नमः शिरसि, गायत्र्यच्छन्दसे नमो मुखे, श्रीसवित्रे देवतायै नमो हृदि, ह्रां बीजाय नमो नाभौ, ह्रीं शक्तये नमो गुह्ये, ॐ कीलकाय नमः पादयोः, जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु। ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः, ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः, ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ह्रां हृदयाय०। ह्रीं शिरसे०। ह्रूं शिखायै०। ह्रैं कवचाय०। ह्रैं नेत्र०। ह्रः अस्त्राय०। इति करषडङ्गन्यासः। ॐ नमः शिरसि, ह्रां नेत्रयोः, ह्रीं मुखे, सः हृदि, सूं कुक्षौ, र्यां नाभौ, यं जानुनोः, नं पादयोः, मः शिरसः पादपर्यन्तमिति सप्तधा व्यापयेदिति मूलविद्यान्यासः।

ॐ ह्रां ऋग्वेदात्मने सूर्याय नमः शिरसि। ॐ ह्रीं यजुर्वेदात्मने सूर्याय नमः कुक्षौ। ॐ सः सामवेदात्मने सूर्याय नमो गुह्ये। ॐ अथर्ववेदात्मने सूर्याय नमः पादयोः। इति त्रिर्व्यापयेदिति वेदन्यासः।

ॐ ह्रां आत्मरूपाय सूर्याय हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं परमात्मने सूर्याय शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं सर्वभूतात्मने सूर्याय शिखायै०। ॐ ह्रैं ज्ञानात्मने सूर्याय कवचाय०। ॐ ह्रौं अन्तरात्मने सूर्याय नेत्रत्रयाय०। ॐ ह्रः हंसात्मने सूर्याय अस्त्राय फट्। एवमङ्गुलीन्यासः। इत्यात्मन्यासः।

विनियोग—अस्य श्रीसूर्यपूजामन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषि, गायत्र्यं छन्दः, श्री सविता देवता, ह्रां बीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकम्, धर्मार्थकाममोक्षार्थे सूर्यपूजायां विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास—ब्रह्मऋषये मनः शिरसि। गायत्र्यछन्दसे नमः मुखे। श्रीसवित्रे देवतायै नमः हृदि। ह्रां बीजाय नमः नाभौ। ह्रीं शक्तये नमः गुह्ये। ॐ कीलकाय नमः पादयोः। जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास—ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास—ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुं। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

मूल मन्त्र न्याय—ॐ नमः शिरसि। ह्रां नमः नेत्रयोः। ह्रीं नमः मुखे। सः नमः हृदि। सूं नमः कुक्षौ। र्यां नमः नाभौ। यं नमः जानुनी। नं नमः पादयोः। मः नमः शिरसः पादपर्यन्तम्। मूल मन्त्र से सात बार व्यापक न्यास करे।

वेद न्यास—ॐ ह्रां ऋग्वेदात्मने सूर्याय नमः शिरसि। ॐ ह्रीं यजुर्वेदात्मने सूर्याय नमः कुक्षौ। ॐ सः सामवेदात्मने सूर्याय नमः गुह्ये। ॐ अथर्ववेदात्मने सूर्याय नमः पादयोः। वेदन्यास से तीन बार व्यापक न्यास करे।

आत्मन्यास हृदयादि—ॐ ह्रां आत्मरूपाय सूर्याय हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं परमात्मने सूर्याय शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं सर्वभूतात्मने सूर्याय शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं ज्ञानात्मने सूर्याय कवचाय हूँ। ॐ ह्रौं अन्तरात्मने सूर्याय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः हंसात्मने सूर्याय अस्त्राय फट्।

न्यास अङ्गुष्ठादि—ॐ ह्रां आत्मरूपाय सूर्याय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं परमात्मने सूर्याय शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं सर्वभूतात्मने सूर्याय शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं ज्ञानात्मने सूर्याय कवचाय हुं। ॐ ह्रौं अन्तरात्मने सूर्याय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः हंसात्मने सूर्याय अस्त्राय फट्।

ॐ ह्रां सोमात्मने सूर्याय अङ्गुष्ठाभ्यां०। ॐ ह्रीं भौमात्मने सूर्याय तर्जनीभ्यां०। ॐ ह्रूं बुधात्मने सूर्याय मध्यमाभ्यां०। ॐ ह्रैं जीवात्मने सूर्याय अनामिकाभ्यां०। ॐ ह्रौं शुक्रात्मने सूर्याय कनिष्ठिकाभ्यां०। ॐ ह्रः सौरात्मने सूर्याय करतलकर-पृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादिन्यासः। इति ग्रहन्यासः।

ॐ अंआंइंईंउंऊंऋंॠंऌंॡंएंऐंओंऔंअंअः सूर्याय नमः मूलाधारे। ह्रां कंखंगंघंङं सूर्याय नमः मणिपूरे। ह्रीं चंछंजंझंञं सूर्याय नमः स्वाधिष्ठाने। सः टंठंडंढंणं सूर्याय नमः अनाहते। सूर्याय तंथंदंधंनं सूर्याय नमः विशुद्धौ। नं पंफंबंभंमं सूर्याय नमः आज्ञायां। मः यंरंलंवंशंषंसंहंळंक्षः सूर्याय नमः ब्रह्मरन्ध्रे। इति सप्तधा व्यापयेदिति मूलशुद्धिमातृकान्यासः।

अंआं गायत्रीछन्दसे सूर्याय नमो ब्रह्मरन्ध्रे। इंई त्रिष्टुप्छन्दसे सूर्याय नमः आज्ञायां। उंऊं अनुष्टुप्छन्दसे सूर्याय नमो विशुद्धौ। ऋंॠंऌंॡं उष्णिक्छन्दसे सूर्याय नमः अनाहते। एंऐं विराट्छन्दसे सूर्याय नमः स्वाधिष्ठाने। ओंऔं सम्राट्छन्दसे सूर्याय नमो मणिपूरे। अंअः बृहतीछन्दसे सूर्याय नमो मूलाधारे। इति सप्तधा व्यापयेदिति सप्तछन्दोन्यासः।

ग्रहन्यास-अङ्गुष्ठादि—ॐ ह्रां सोमात्मने सूर्याय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं भौमात्मने सूर्याय तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं बुधात्मने सूर्याय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं जीवात्मने सूर्याय अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं शुक्रात्मने सूर्याय कनिष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रं सौरात्मने सूर्याय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

ग्रहन्यास हृदयादि—ॐ ह्रां सोमात्मने सूर्याय हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं भौमात्मने सूर्याय शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं बुधात्मने सूर्याय शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं जीवात्मने सूर्याय कवचाय हुं। ॐ ह्रौं शुक्रात्मने सूर्याय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः सौरात्मने सूर्याय अस्त्राय फट्।

मूल शुद्धि मातृका न्यास—ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः सूर्याय नमः मूलाधारे। ह्रां कं खं गं घं ङं सूर्याय नमः मणिपूरे। ह्रीं चं छं जं झं ञं सूर्याय नमः स्वाधिष्ठाने। सः टं ठं डं ढं णं सूर्याय नमः अनाहते। सूर्याय तं थं दं धं नं सूर्याय नमः विशुद्धौ। नं पं फं बं भं मं सूर्याय नमः आज्ञायाम्। मः यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं सूर्याय नमः ब्रह्मरन्ध्रे।

सात बार व्यापक न्यास मूल मन्त्र से करे।

सप्त छन्द न्यास—अं आं गायत्रीछन्दसे सूर्याय नमो ब्रह्मरन्ध्रे। इं ईं त्रिष्टुप् छन्दसे सूर्याय नमो आज्ञायाम्। उं ऊं अनुष्टुप् छन्दसे सूर्याय नम: विशुद्धौ। ऋं ॠं ऌं ॡं उष्णिक् छन्दसे सूर्याय नम: अनाहते। एं ऐं विराट् छन्दसे सूर्याय नम: स्वाधिष्ठाने। ओं औं सम्राट् छन्दसे सूर्याय नम: मणिपूरे। अं अ: बृहती छन्दसे सूर्याय नम: मूलाधारे।

सात बार व्यापक न्यास करे।

ॐ गौराश्वाय सूर्याय नमो ब्रह्मरन्ध्रे। ह्रां पाण्डुराश्वाय सूर्याय नम: आज्ञायां। ह्रीं सिताश्वाय सूर्याय नमो विशुद्धौ। स: श्वेताश्वाय सूर्याय नम: अनाहते। सूर्याय हिमाश्वाय सूर्याय नम: स्वाधिष्ठाने। नं क्षीराश्वाय सूर्याय नमो मणिपूरे। म: कुन्दाश्वाय सूर्याय नमो मूलाधारे। इति त्रिर्व्यापयेत् इति सप्ततुरगन्यास:।

ॐ अजपादेवतायै सूर्याय नम: ब्रह्मरन्ध्रे। ह्रां गायत्रीदेवतायै सूर्याय नम: आज्ञायां। ह्रीं सावित्रीदेवतायै सूर्याय नमो विशुद्धौ। स: सरस्वतीदेवतायै सूर्याय नम: अनाहते। सूर्याय त्र्यक्षरीदेवतायै सूर्याय नम: स्वाधिष्ठाने। नं ब्रह्मवादिनीदेवतायै सूर्याय नमो मणिपूरे। म: पञ्चमुखीदेवतायै सूर्याय नमो मूलाधारे। इति त्रिर्व्यापयेदिति गायत्रीन्यास:।

ॐ शिवतत्त्वाय सूर्याय नमो ब्रह्मरन्ध्रे। ह्रां शक्तितत्त्वाय सूर्याय नम: आज्ञायां। ह्रीं मायातत्त्वाय सूर्याय नमो विशुद्धौ। स: विद्यातत्त्वाय सूर्याय नम: अनाहते। सूर्याय कलातत्त्वाय सूर्याय नम: स्वाधिष्ठाने। नं नियतितत्त्वात्मने सूर्याय नमो मणिपूरे। म: आत्मतत्त्वाय सूर्याय नमो मूलाधारे। इति त्रिर्व्यापयेदिति तत्त्वन्यास:।

सप्ततुरग न्यास—ॐ गौराश्वाय सूर्याय नम: ब्रह्मरन्ध्रे। ह्रां पाण्डुराश्वाय सूर्याय नम: आज्ञायाम्। ह्रीं सिताश्वाय सूर्याय नम: विशुद्धौ। स: श्वेताश्वाय सूर्याय नम: अनाहते। सूर्याय हिमाश्वाय सूर्याय नम: स्वाधिष्ठाने। नं क्षीराश्वाय सूर्याय नम: मणिपूरे। म: कुन्दाश्वाय सूर्याय नम: मूलाधारें।

तीन व्यापक न्यास करे।

गायत्री न्यास—ॐ अजपादेवतायै सूर्याय नम: ब्रह्मरन्ध्रे। ह्रां गायत्रीदेवतायै सूर्याय नम: आज्ञायाम्। ह्रीं सावित्रीदेवतायै सूर्याय नम: विशुद्धौ। स: सरस्वतीदेवतायै सूर्याय नम: अनाहते। सूर्याय त्र्यक्षरीदेवतायै सूर्याय नम: स्वाधिष्ठाने। नं ब्रह्मवादिनीदेवतायै सूर्याय नम: मणिपूरे। म: पञ्चमुखीदेवतायै सूर्याय नम: मूलाधारे।

तीन व्यापक न्यास करे।

तत्त्वन्यास—ॐ शिवतत्त्वाय सूर्याय नमो ब्रह्मरन्ध्रे। ह्रां शक्तितत्त्वाय सूर्याय नमः आज्ञायाम्। ह्रीं मायातत्त्वाय सूर्याय नमो विशुद्धौ। सः विद्यातत्त्वाय सूर्याय नमो अनाहते। सूर्याय कलातत्त्वाय सूर्याय नमो स्वाधिष्ठाने। नं नियतितत्त्वाय सूर्याय नमो मणिपूरे। मः आत्मतत्त्वाय सूर्याय नमो मूलाधारे।

तीन व्यापक न्यास करे।

ॐ कामरूपपीठेशाय सूर्याय नमो ब्रह्मरन्ध्रे। ह्रां उड्डीयानपीठेशाय सूर्याय नमः आज्ञायां। ह्रीं जालन्धरपीठेशाय सूर्याय नमो विशुद्धौ। सः पूर्णगिरिपीठेशाय सूर्याय नमः अनाहते। सूर्याय मधुपुरीपीठेशाय सूर्याय नमः स्वाधिष्ठाने। नं अवन्तीपीठेशाय सूर्याय नमो मणिपूरे। मः वाराणसीपीठेशाय सूर्याय नमो मूलाधारे। मूलं कुरुक्षेत्रपीठेशाय सूर्याय नमः सर्वाङ्गेषु। त्रिर्व्यापयेदिति पीठन्यासः। इति द्वादशन्यासाः। यथोक्तम्—

मुनिमायामूलविद्यावेदात्मग्रहशुद्धयः ।
छन्दस्तुरगगायत्रीतत्त्वपीठादयः पुनः ॥
एते हि द्वादश न्यासाः सर्वतन्त्रेषु गोपिताः ।
वर्णितास्तव देवेशि सर्वरोगापहारकाः ॥
एतान् यः कुरुते न्यासान् सवितुः सर्वसिद्धये ।
तस्य लक्ष्मीधनारोग्यविद्याकीर्तिसुखाप्तयः ॥
न्यासान्ते भास्करं ध्यायेत् पूजाकोटिफलं लभेत् । इति।

पीठन्यास—ॐ कामरूपपीठेशाय सूर्याय नमो ब्रह्मरन्ध्रे। ह्रां उड्डीयानपीठेशाय सूर्याय नमो आज्ञायाम्। ह्रीं जालन्धरपीठेशाय सूर्याय नमो विशुद्धौ। सः पूर्णगिरिपीठेशाय सूर्याय नमो अनाहते। सूर्याय मधुपुरीपीठेशाय सूर्याय नमो स्वाधिष्ठाने। नं अवन्तीपीठेशाय सूर्याय नमो मणिपूरे। यः वाराणसीपीठेशाय सूर्याय नमो मूलाधारे। ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः कुरुक्षेत्रपीठेशाय सूर्याय नमः सर्वाङ्गेषु।

ऊपर बारह प्रकार के न्यासों का वर्णन किया गया है। ये बारह प्रकार के न्यास चार श्लोकों में वर्णित हैं। वे हैं—१. ऋष्यादि न्यास, २. माया न्यास, ३. मूल विद्या न्यास, ४. वेद न्यास, ५. आत्म न्यास, ६. ग्रह न्यास, ७. शुद्धि न्यास, ८. छन्द न्यास, ९. तुरग न्यास, १०. गायत्री न्यास, ११. तत्त्व न्यास, १२. पीठ न्यास। ये बारह न्यास सभी तन्त्रों में गोपित हैं। हे देवि! तुम्हें मैंने बतलाया। ये न्यास सभी रोगों के विनाशक

हैं। सूर्य की सभी सिद्धियों के लिये जो इन बारह न्यासों को करता है, उसे लक्ष्मी, धन, आरोग्य, विद्या, कीर्ति और सुख की प्राप्ति होती है।

अथ मातृकान्यास:—अं कं ५ आं अङ्गुष्ठाभ्यां नम:। इं चं ५ ईं तर्जनीभ्यां०। उं टं ५ ऊं मध्यमाभ्यां०। एं तं ५ ऐं अनामिकाभ्यां०। ओं पं ५ औं कनिष्ठिकाभ्यां०। अं यंरंलंवंशंषंसंहंळंक्ष: अ: करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:। इति करन्यास:। एवं षडङ्गन्यास:। इति स्वराद्यन्तमातृकान्यास:।

अथ शुद्धमातृकान्यास:—अं नम: शिरसि। आं नमो मुखवृत्ते। एवं इं दक्षनेत्रे। ईं वामनेत्रे। उं दक्षकर्णे। ऊं वामकर्णे। ऋं दक्षनासापुटे। ॠं वामे। लृं दक्षगण्डे। लॄं वामे। एं ऊर्ध्वोष्ठे। ऐं अधरोष्ठे। ओं ऊर्ध्वदन्तपक्तौ। औं अधोदन्तपक्तौ। अं शिरसि। अ: मुखे। कं दक्षबाहुमूले। खं कूर्परे। गं मणिबन्धे। घं अङ्गुलिमूले। ङं अङ्गुल्यग्रे। चं वामबाहुमूले। छं कूर्परे। जं मणिबन्धे। झं अङ्गुलिमूले। ञं अङ्गुल्यग्रे। टं दक्षपादमूले। ठं जानुनि। डं गुल्फे। ढं अङ्गुलिमूले। णं अङ्गुल्यग्रे। तं वामपादमूले। थं जानुनि। दं गुल्फे। धं अङ्गुलिमूले। नं अङ्गुल्यग्रे। पं दक्षपार्श्वे। फं वामे। बं पृष्ठे। भं नाभौ। मं जठरे। यं हृदि। रं दक्षांसे। लं ककुदि। वं वामांसे। शं हृदादिदक्षहस्ताग्रान्तं। षं हृदादिवामहस्ताग्रान्तं। सं हृदादिदक्षपादाग्रान्तं। हं हृदादिवामपादाग्रान्तं। ळं पादादिशिर:पर्यन्तं। क्ष: नम: शिरस: पादपर्यन्तमिति त्रिर्व्यापयेत्। इति मातृकान्यास:।

मातृकान्यास

करन्यास—अं कं खं गं घं ङं आं अङ्गुष्ठाभ्यां नम:। इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नम:। उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नम:। एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नम:। ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठाभ्यां नम:। अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:।

हृदयादि न्यास—अं कं खं गं घं ङं आं हृदयाय नम:। इं चं छं जं झं ञं ईं शिरसे स्वाहा। उं टं ठं डं ढं झं ऊं शिखायै वषट्। एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुं। ओं पं फं बं भं मं औं नेत्रत्रयाय वौषट्। अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अ: अस्त्राय फट्।

शुद्ध मातृका न्यास—अं नम: शिरसि। आं नम: मुखवृत्ते। इं नम: दक्षनेत्रे। ईं नम: वामनेत्रे। उं नम: दक्षकर्णे। ऊं नम: वामकर्णे। ऋं नम: दक्षनासापुटे। ॠं नम: वामनासापुटे। लृं नम: दक्षगण्डे। लॄं नम: वामगण्डे। एं नम: ऊर्ध्वोष्ठे। ऐं नम: अधरोष्ठे। ओं नम:

ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ। औं नमः अधोदन्तपंक्तौ। अं नमः शिरसि। अः नमः मुखे। कं नमः दक्षबाहुमूले। खं नमः कूर्परे। गं नमः मणिबन्धे। घं नमः अङ्गुलि-मूले। ङं नमः अङ्गुल्यग्रे। चं नमः वामबाहुमूले। छं नमः कूर्परे। जं नमः मणिबन्धे। झं नमः अङ्गुलिमूले। ञं नमः अङ्गुल्यग्रे। टं नमः दक्षपादमूले। ठं नमः जानुनि। डं नमः गुल्फे। ढं नमः अङ्गुलिमूले। णं नमः अङ्गुल्यग्रे। तं नमः वामपादमूले। थं नमः जानुनि। दं नमः गुल्फे। धं नमः अङ्गुलिमूले। नं नमः अङ्गुल्यग्रे। पं नमः दक्षपार्श्वे। फं नमः वामपार्श्वे। वं नमः पृष्ठे। भं नमः नाभौ। मं नमः जठरे। यं नमः हृदि। रं नमः दक्षांसे। लं नमः ककुदि। वं नमः वामांसे। शं नमः हृदादिदक्षहस्ताग्रान्तम्। षं नमः हृदादिवामहस्ताग्रान्तम्। सं नमः हृदादिदक्षपादान्तम्। हं नमः हृदादिवामपादान्तम्। लं पादादिशिरःपर्यन्तम्। क्षं नमः शिरसः पादपर्यन्तम्।

ह्रीं नमः शिरसि, हं नमो हृदि, सः नमः पादयोः, मूलं शिरसः पादपर्यन्तं त्रिर्व्यापयेदिति न्यासं विधाय हृत्कमलकर्णिकान्तर्गतं देवं ध्यायेत्—

जपादाडिमबिम्बाभं द्विभुजं चारुणाम्बरम्।
सप्ताश्वरथसंयुक्तं मणिकुण्डलमण्डितम्॥
कीयूरहाराभरणं कलशाम्भोजधारिणम्।
सवितारं जगन्नाथं विस्फुरालिङ्गितं भजे॥

एवं ध्यात्वा मानसोपचारैरभ्यर्च्य, स्ववामे त्रिकोणवृत्तमण्डलं विलिख्य 'रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः' इति संपूज्य, त्रिपदीं क्षालितां संस्थाप्य, तत्र शङ्खं संस्थाप्य शङ्खे 'अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' इति संपूज्य, तीर्थजलेनापूर्य 'सौः सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः' इत्यभ्यर्च्य, हंसः सूर्याय ह्रीं नमः इति त्रिर्गन्धाक्षतपुष्पैः समभ्यर्च्य, ॐगांगींगूं 'गङ्गे च यमुने चैव' इत्यादिना सूर्यमण्डलात् तीर्थान्यङ्कुश-मुद्रयावाह्य, ॐह्रांह्रींसः हंसः शुचिषदे सूर्याय नमः इति संपूज्य, धेनुयोनि-मत्स्यखशोल्कामुद्राः प्रदर्श्य प्रणमेत्।

दर्शनेनापि शङ्खस्य किं पुनः स्पर्शनेन च।
विलयं यान्ति पापानि हिमवद्भास्करोदये॥

ह्रीं नमः शिरसि, हं नमः हृदि, सः नमः पादयोः, ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः, शिरसः पादपर्यन्तम्। मूल मन्त्र से तीन व्यापक न्यास करके हृदय कमलकर्णिकास्थित देव का इस प्रकार ध्यान करे—

अड़हुल और अनारदाने की आभा के समान वर्ण है। दो भुजायें हैं। सुन्दर रेशमी वस्त्र हैं। रथ सात घोड़ों से युक्त है। कानों में मणिकुण्डल है। केयूर हार का आभरण

है। एक हाथ में कमल है और दूसरे हाथ में कलश है। जगन्नाथ सविता विस्फुरा से अलिङ्गित हैं। ऐसे सूर्य भगवान् का मैं ध्यान करता हूँ। इस प्रकार का ध्यान करके मानसोपचारों से उनका पूजन करे।

अर्घ्यस्थापन—अपने वाम भाग में त्रिकोण वृत्त का मण्डल बनाकर 'रं वह्नि-मण्डलदशकलात्मने नम:' से पूजन करे। त्रिपाद को धोकर उस पर स्थापित करे। त्रिपाद पर शङ्ख स्थापित करे। 'अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नम:' से शङ्ख का पूजन करे। शङ्ख को तीर्थजल से पूर्ण करे। 'सौ: सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नम:' से जल का अर्चन करे। 'हंस: सूर्याय ह्रीं नम:' से गन्धाक्षत-पुष्प के द्वारा तीन बार पूजन करे। 'ॐ गां गीं गूं गङ्गे च यमुने चैव' मन्त्र बोलकर अङ्कुशमुद्रा से सूर्यमण्डल से तीर्थों का आवाहन उस जल में करे। 'ॐ ह्रां ह्रीं स: हंस: शुचिषदे सूर्याय नम:' से पूजन करे। धेनु, योनि, मत्स्य और खशोल्का मुद्रा दिखावे और प्रणाम करे। प्रणाम का मन्त्र इस प्रकार है—

दर्शनेनापि शङ्खस्य किं पुन: स्पर्शनेन च।
विलयं यान्ति पापानि हिमवद् भास्करोदये।।

इति सामान्यार्घ्यं विधाय, सुधार्घ्यं कुर्यात्। यथा सामान्यार्घ्यस्य दक्षे त्रिकोणवृत्तचतुरश्रं विलिख्य, सामान्यार्घ्योदकेनाभ्युक्ष्य, ॐ ह्रां हृदयाय नमः पूर्वे। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा दक्षिणे। ॐ ह्रूं शिखायै वषट् पश्चिमे। ॐ ह्रैं कवचाय हुं उत्तरे। ॐ ह्रौं नेत्रेभ्यो वौषट् अधः। ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ऊर्ध्वे। इति संपूज्य, ॐ इतीशाने, हमित्याग्नेये, सः इति अग्रे, इति त्र्यश्रं संपूज्य, क्षालिताधारं संस्थाप्य 'रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः' इत्यभ्यर्च्य तत्र

सौवर्णं राजतं वापि रक्तं वा मृण्मयं घटम्।
स्थापयेच्छोभितं दिव्यमालाभिः कुङ्कुमाञ्चितम् ॥

इति संस्थाप्य 'हंसः सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' इति संपूज्य, मधु-मात्रेणापूर्य तत्रानामिकाङ्गुष्ठाभ्याममृतधारापातेन संपूर्य, 'सौः सोममण्डलाय षोडश-कलात्मने नमः' इति सोममण्डलादमृतीकरणमुद्रयामृतं ध्यात्वा तत्रानीय कुम्भे निःक्षिप्य, अंआं इत्यादिक्षान्तमुच्चार्य मूलमुच्चार्य, 'प्रांप्रींप्रूंप्रैंप्रौंप्रः अः अमृते अमृतोद्भवे अमृताकर्षिणि अमृतवर्षिणि महा-मार्तण्डमण्डलेश्वरि सुधादेवि परमानन्देश्वरि ह्रांह्रींसः हंसः सोहं स्वाहा' इति दशधा जपेत् इति जप्त्वा—

सूर्यमण्डलसम्भूते वरुणालयसम्भवे ।
अमाबीजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम् ॥
वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि ।
तेन सत्येन देवेशि शुक्रशापाद्विमुच्यताम् ॥
एकमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम् ।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम् ॥
कृष्णशापविनिर्मुक्ता त्वं मुक्ता ब्रह्मशापतः ।
विमुक्ता रुद्रशापेन पवित्रा भव साम्प्रतम् ॥
पवमानः परानन्दः पवमानः परो रसः ।
पवमानं परं ब्रह्म तेन त्वां पावयाम्यहम् ॥

इति त्रिः संपूज्य गङ्गादितीर्थान्यावाह्य धेनुयोनिमत्स्यमुद्राः प्रदर्श्य 'हंसः सोहं स्वाहा' इत्यमृतीकृत्य, मूलं दशधा प्रजप्य गन्धाक्षतपुष्पैः संपूज्य महामृतमयं तीर्थं ध्यायेदिति घटस्थापनम्।

सुधार्घ्य-स्थापन—सामान्यार्घ्य के दक्ष भाग में त्रिकोण वृत्त चतुरस्र अङ्कित करे। सामान्य अर्घ्य जल से अभ्युक्षित करे। मण्डल की पूजा करे। ॐ ह्रां हृदयाय नमः पूर्वे। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा दक्षिणे। ॐ ह्रूं शिखायै वषट् पश्चिमे। ॐ ह्रैं कवचाय हुं उत्तरे। ॐ ह्रौं नेत्रेभ्यो वौषट् अधोभागे। ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ऊर्ध्वे। इसके बाद 'ॐ' से ईशान में, 'हं' से आग्नेय में, 'सः' से आगे त्रिकोण में पूजन करे। आधार को धोकर मण्डल पर स्थापित करे। 'रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः' से पूजन करे। इस मण्डल पर सोना, चाँदी, ताम्बे या मिट्टी के कलश को माला, कुङ्कुम आदि से सुशोभित करके स्थापित करे। कलश का पूजन 'हंसः सूर्यमण्डाय द्वादशकलात्मने नमः' से करे। इसके बाद इसे मधु से पूर्ण करे। इसके बाद अँगुष्ठ-अनामिकायोग से अमृत-धारापात करे। 'सौः सोममण्डलाय षोड़शकलात्मने नमः' से सोममण्डल से अमृतीकरण मुद्रा से अमृत लाकर कलश में निक्षिप्त करे। इसके बाद अं से क्षं तक की इक्यावन मातृकाओं का उच्चारण करके मूल मन्त्र बोलकर 'म्रां म्रीं म्रूं म्रैं म्रौं म्रः अः अमृते अमृतोद्भवे अमृताकर्षिणि अमृतवर्षिणि महामार्तण्डमण्डलेश्वरि सुधादेवि परमानन्देश्वरि ह्रां ह्रीं सः हंसः सोहं स्वाहा' का दश बार जप करे। इसके बाद निम्न मन्त्रों का जप तीन बार करे—

सूर्यमण्डलसम्भूते वरुणालयसम्भवे।
अमाबीजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम्।।

वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि।
तेन सत्येन देवेशि शुक्रशापाद्विमुच्यताम्।।
एकमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं परम्।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम्।।
कृष्णशापविनिर्मुक्ता त्वं मुक्ता ब्रह्मशापत:।
विमुक्ता रुद्रशापेन पवित्रा भव साम्प्रतम्।।
पवमान: परानन्द: पवमान: परो रस:।
पवमानं परं ब्रह्म तेन त्वां पावयाम्यहम्।।

इन मन्त्रों से तीन बार पूजा करके गङ्गादि तीर्थों का आवाहन करे। धेनु, योनि, मत्स्य मुद्रा का प्रदर्शन करे। 'हंस: सोहं स्वाहा' से अमृतीकरण करके मूल मन्त्र का दश बार जप करे। गन्धाक्षत-पुष्प से पूजन कर महा अमृतमय तीर्थ का कलश में ध्यान करे।

घटान्ते त्रिकोणं विलिख्य साधारं पात्रं संस्थाप्य घटामृतेनापूर्य, अं नम इत्यादि क्षं नम: इत्यन्तां मातृकां सञ्जप्य, मूलं तदुपरि जप्त्वा दिव्यखण्डं भावयेदिति परमं पात्रम्। परमपात्रान्ते गुरु-शक्ति-ग्रह-वीरपाद्याचमनीयमधुपर्कपात्राणि संस्थाप्य, गुरुशक्तिग्रहवीरपात्राणि तीर्थामृतेनापूर्य, पाद्याचमनीयपात्रे जलं मधुपर्कपात्रे घृतमधुसितादि नि:क्षिपेत्। तत: पूजाद्रव्याणि परमपात्रामृतेनाभ्युक्ष्य धेनुयोन्यमृतीकरणमुद्रा: प्रदर्श्य, श्रीचक्रं रत्नपीठाधारोपरि ध्यात्वा बिन्दुविराजमान-त्रिकोणमण्डित-वसुकोणाञ्चित-सुवृत्तविराजित-वसुदलखचित-वृत्तत्रयविलसित-धरणीसद्माश्रयं श्रीचक्रं विलिख्य संस्थाप्य वा, ॐ ह्रांह्रींस: हंस: सोहंस: स्वाहा, अं आमित्यादिक्षान्तमुच्चार्य शिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यामायाकलाविद्यारागकालनियतिपुरुषप्रकृत्यहङ्कारमनोबुद्धित्वक्चक्षु:श्रोत्रजिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवायुवह्निसलिलपृथिव्यात्मकषट्त्रिंशत्तत्त्वस्वरूपाय श्रीयोगपीठाय नम:। ॐ ह्रां अष्टदलपद्माय नम:। रँ द्वादशदलपद्माय नम:। रँ सहस्रदलपद्माय नम:। रँ सप्तच्छन्देभ्यो नम:। रँ सप्ततुरगेभ्यो नम:। मूलं श्रीरत्नसिंहासनाय नम: इति संपूज्य, पद्मकेसराञ्जलिं गृहीत्वार्घ्यमुद्रां बद्ध्वा, श्रीदेवं पूर्वोक्तं ध्यात्वा, मूलान्ते विस्फुरासहिताय श्रीसूर्याय पाद्याचमनीयमधुपर्काचमनीयार्घ्यगन्धाक्षतपुष्पस्नानवस्त्रालङ्कारनानाहारकेयूरनूपुराभरणरत्नसिंहासनगन्धाक्षतपुष्पधूप-

दीपनैवेद्याचमनीयताम्बूलच्छत्रचामरारात्रिकादीन् निवेद्य, मानसोपचारैः संपूज्य, सदेवीकं देवं सूर्यनाडीनिर्गतं वायुतेजोरूपं पुष्पमात्रं ध्यात्वा—

भगवन् सर्वलोकेश सहस्रकिरण प्रभो।
यावत् त्वामर्चयिष्यामि तावत् सूर्य इहावह॥

इति श्रीबिन्दुबिम्बे पुष्पं दत्त्वा बिम्बमुद्रया जीवं न्यसेत्।

परम पात्रस्थापन—कलश के बगल में आधारपात्र को स्थापित करके कलश के अमृत से उसे भर दे। अं नमः, आं नमः से क्षं नमः तक मातृकाओं का जप करके उसके ऊपर मूल मन्त्र का जप करे। इस परम पात्र को दिव्य होने की भावना करे।

परम पात्र के बाद गुरुपात्र, शक्तिपात्र, ग्रहपात्र, वीरपात्र, पाद्यपात्र, आचमनीय पात्र और मधुपर्क पात्र का स्थापन करे। तब गुरुपात्र, शक्तिपात्र, ग्रहपात्र और वीरपात्र को कलश-तीर्थ के अमृत से पूर्ण करे। पाद्य, आचमनीय पात्रों में जल भरे। मधुपर्क पात्र में भी मधु और चीनी मिलावे। तब पूजन सामग्रियों का परम पात्र के अमृत से प्रोक्षण करे। धेनु, योनि, अमृतीकरण मुद्रा दिखाये।

रत्नपीठ के आधार पर श्रीचक्र का ध्यान करे। श्रीचक्र में बिन्दु, त्रिकोण, अष्टकोण, सुवृत्त विराजित अष्टदल, वृत्तत्रय, भूपुरत्रययुक्त श्रीचक्र अङ्कित करे या पूर्वनिर्मित श्रीचक्र को स्थापित करे। 'ॐ ह्रां ह्रीं सः हंसः सोहं स्वाहा' 'अं' से 'क्षं' तक मातृका का उच्चारण करे। शिव-शक्ति सदाशिवेश्वर, शुद्ध विद्या, माया-कला विद्या, राग, काल, नियति, पुरुष, प्रकृति, अहङ्कार, मन, बुद्धि, त्वक्, चक्षु, श्रोत्र, जिह्वा, घ्राण, वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिव्यात्मक षट् त्रिंशत्तत्वस्वरूपाय श्रीयोगपीठाय नमः। ॐ ह्रां अष्टदलपद्माय नमः। ॐ ह्रीं द्वादशदलपद्माय नमः। ॐ ह्रीं सहस्रदलपद्माय नमः। ॐ ह्रीं सप्तछन्देभ्यो नमः। ॐ ह्रीं सप्ततुरगेभ्यो नमः। ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः। श्रीरत्नसिंहासनाय नमः से पूजा करे। अञ्जलि में कमल-केसर लेकर अर्घ्यमुद्रा बनाकर श्रीदेव का पूर्वोक्त रूप में ध्यान करे। ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः विस्फुरासहिताय श्रीसूर्याय पाद्य, आचमनीय, मधुपर्क, आचमनीय, अर्घ्य, गन्धाक्षत, पुष्प, स्नान, वस्त्र, अलंकार, नानाहार, केयूर, नूपुर, आभरण, रत्नसिंहासन, गन्धाक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमनीय, ताम्बूल, छत्र, चामर, आरती अर्पण करे। मानसोपचारों से पूजन करे। देवीसहित देव को पिंगला नाड़ी निर्गत वायु तेजोरूप पुष्पमात्र ध्यान करे। प्राणप्रतिष्ठा करे।

भगवन् सर्वलोकेश सहस्रकिरणप्रभो।
यावत् त्वां अर्चयिष्यामि तावत् सूर्य इहावह।।

इस मन्त्रपाठ के बाद बिन्दुमण्डल में बिम्बमुद्रा से उस फूल को रखे।

ॐ ह्रांह्रींसः हंसः यंरंलंवंशंषंसंहंळंक्षः विस्फुरासहितस्य श्रीसूर्यस्य प्राणा इह प्राणाः, १ँ६ विस्फुरासहितस्य श्रीसूर्यस्य जीव इह स्थितः, १ँ६ विस्फुरासहितस्य श्रीसूर्यस्य सर्वेन्द्रियाणि, १ँ६ वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्र-जिह्वाघ्राणप्राणा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा, इति प्राणान् दत्त्वा, आवाहनसंस्थापनसंनिरोधनावगुण्ठनसंमुखी (करणसुप्रसन्नामृतीकर-णपरमी)-करणानुपूर्वं धेनुयोनिमत्स्यपद्मबिम्बभानुख-शोल्कामुद्राः प्रदर्श्य, मूलान्ते भगवन् सूर्य इदं रत्नसिंहासनमास्यताम्। मूलान्ते परमावरणदेवता रश्मिमण्डलान्निर्गता ध्यात्वा, मूलं पाद्याचमनीयमधुपर्काचमनीय-पात्रेभ्यः सर्वं समर्प्य, मूलान्ते भगवन्नर्घ्यं गृहाण वौषट्, मू० गन्धं गृहाण नमः, मू० पुष्पाणि गृहाण वषट्, मू० सर्वाङ्गे गङ्गोदकं नमः, मू० भगवन् रत्नवस्त्रालङ्कारादि गृहाण नमः, मू० भगवन् रत्नपादुके गृहाण नमः, मू० भगवन् रत्नसिंहासनं नमः, मू० गन्धाक्षतपूर्वं पुष्पाणि गृहाण नमो वौषट्, मू० भगवन् धूपं गृहाण नमः, मू० भगवन् दीपं गृहाण नमः, इति खशोल्कया सर्वं दत्त्वा, आत्मपुरतस्त्र्यश्रं सवृत्तं भूमौ विलिख्य, तत्र साधारं पात्रं संस्थाप्य, नैवेद्यं निवेद्य मूलेनामृतीकृत्य, खशोल्कया निरीक्ष्य, मूलं दशधा जप्त्वा, धेनुयोनिमुद्रे प्रदर्श्य, ॐ ह्रांह्रींसः भवगन् सूर्य अपोशानं नमः, अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा इति जलं दत्वा, पुण्ड्रकमुद्रां प्रदर्श्य ग्रासमुद्रयाऽऽघ्राय, मूलान्ते देवं संतृप्तं ध्यात्वा इदमाचमनीयं स्वधा, (अमृतापिधानमसि स्वाहा) मू० ताम्बूलं नमः, मूलान्ते सप्तधा परमपात्रामृतेन सन्तर्प्य विस्फुरामपि त्रिः सन्तर्प्य प्रणमेत्।

ॐ ह्रां ह्रीं सः हंसः यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं विस्फुरासहितस्य श्रीसूर्यस्य प्राण इह प्राणाः। ॐ ह्रां ह्रीं सः हंसः यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं विस्फुरासहितस्य सूर्यस्य जीव इह स्थितः। ॐ ह्रां ह्रीं सः हंसः यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

इस प्रकार प्राणप्रतिष्ठा करके आवाहन, संस्थापन, संनिरोध, अवगुंठन, सम्मुखीकरण, प्रसन्नामृतीकरण, परमीकरण करे। धेनु, योनि, मत्स्य, पद्म, बिम्ब, भानु, खशोल्का मुद्राओं को दिखाये। ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः भगवन् सूर्य इदं रत्नसिंहासन-मास्यताम्। ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः परमावरणदेवता रश्मिमण्डलान्निर्गता का ध्यान करे। तब पूजा करे; जैसे—

ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः पाद्यं समर्पयामि। ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः आचमनीयं समर्पयामि। ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः मधुपर्कं समर्पयामि। ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः आचमनीयं समर्पयामि। ये सभी समर्पण आचमनीय जल से करे। ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः भगवन् अर्घ्यं गृहाण वौषट्। ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः गन्धं गृहाण नमः। ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः पुष्पाणि गृहाण वषट्। ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः सर्वाङ्गे गङ्गोदकं नमः। ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः रत्नवस्त्रालङ्कारादि गृहाण नमः। ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः भगवन् रत्नपादुके गृहाण नमः। ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः भगवन् रत्नसिंहासनं नमः। ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः गन्धाक्षतपूर्वं पुष्पाणि गृहाण नमो वौषट्। ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः भगवन् धूपं गृहाण नमः। ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः भगवन् दीपं गृहाण नमः—इन सबका समर्पण खशोल्का मुद्रा से करे।

अपने सामने भूमि पर त्रिकोण वृत्त अंकित करके उस पर आधार रखकर पात्र रखे। निवेद्य नैवेद्य को अर्पण करे। मूल मन्त्र से अमृतीकरण करे। खशोल्का मुद्रा से नैवेद्य का निरीक्षण करे। मूल मन्त्र का जप दश बार करे। धेनु-योनिमुद्रा दिखावे।

'ॐ ह्रां ह्रीं सः भगवन् सूर्य आपोशानं नमः अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा' से जल प्रदान करे। पुण्ड्रक मुद्रा दिखावे। ग्रास मुद्रा से आघ्राण करे। मूल मन्त्र से देव के सन्तृप्त होने का ध्यान करे। इदम् आचमनीयं स्वधा अमृतापिधानमसि स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः ताम्बूलं नमः।

मूल मन्त्र बोलकर परम पात्र के अमृत से सात बार तर्पण करे। तब विस्फुरा का तर्पण तीन बार करके प्रणाम करे।

ततः परिवारदेवता ध्यायेत्। यथा—

सौम्यानि रक्तवर्णानि वरदाब्जकराणि च।
भूषितानि द्विहस्तानि भानोरङ्गानि भावयेत्॥
दंष्ट्राकरालमत्युग्रं प्रज्वलत्पावकप्रभम्।
तर्जयेद् विघ्नसङ्घातमित्थमस्त्रं विचिन्तयेत्॥
सोमं कुमुदकुन्दाभं भौमं चामीकरप्रभम्।
नीलरत्ननिभं सौम्यं गुरुं गोरोचनानिभम्॥
गोक्षीरसन्निभं शुक्रं शनिं नीलाञ्जनप्रभम्।
कामरूपधराः सर्वे दिव्याम्बरविभूषणाः॥
वामोरुन्यस्तसद्धस्ता दक्षहस्ताभयप्रदाः।
ध्यानपूर्वं ग्रहानेवं सुभक्त्या कौलिकोऽर्चयेत्॥

इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा, वीरपात्रामृतेन संहृतिक्रमेण स्ववामावृत्त्या पूजयेत्। द्वाःस्थादिदेवायुधध्यानार्चनान्तं पूजाक्रमः, इति शिवशासनम्।

इसके बाद परिवार अर्थात् आवरण देवता का ध्यान करे। ध्यान के पाँच श्लोक हैं। इन श्लोकों में ग्रहों के रूप का वर्णन है। इनका अर्थ इस प्रकार है—

सूर्य—सूर्य सौम्य रूप है। उसका वर्ण लाल है। एक हाथ में वरमुद्रा है और दूसरे हाथ में कमल है। वस्त्राभूषणों से सुशोभित दो हाथ हैं। इस प्रकार ध्यान सूर्य का करे। इनके अस्त्र अत्यन्त उग्र हैं। दाँत भयंकर हैं। प्रज्ज्वलित अग्नि की प्रभा वाले हैं। इनका अस्त्र विघ्नों के समूह का विनाशक है।

चन्द्र—चन्द्रमा की आभा कुमुदिनी-फूल के समान श्वेत है।
मंगल—मंगल की प्रभा स्वर्णिम है।
बुध—बुध की प्रभा नीलम रत्न के समान नीली है।
गुरु—गुरु की प्रभा गोरोचन के समान है।
शुक्र—शुक्र का वर्ण गाय के दूध के समान श्वेत है।
शनि—शनि की प्रभा नीले अञ्जन के समान है।

ये सभी ग्रह इच्छानुरूप रूप धारण करने वाले हैं। सभी दिव्य वस्त्रों को धारण करते हैं। इनके आभूषण भी दिव्य हैं। इनका बाँयाँ हाथ ऊरु पर न्यस्त है। दाहिने हाथ में अभय मुद्रा है। कौलिक ध्यानपूर्वक इनका पूजन करे। इनको पुष्पाञ्जलि देकर वीरपात्र के अमृत से संहारक्रम से अपने वामावर्त क्रम से इनका पूजन करे। इनके आयुधों का पूजन पूजा के अन्त में करे। यही पूजा का क्रम है। यही शिव का शासन है।

यथा—लं इन्द्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, वीरपात्रामृतेन तर्पयेत्। रं अग्निश्रीपादुकां पू०। टं यमश्रीपा०। क्षं निर्ऋतिश्री०। वं वरुणश्री०। यं वायुश्री०। सं सोमश्री०। हं ईशानश्री०। ॐ ब्रह्मश्री०। ह्रीं अनन्तश्री०। इति पद्मपत्रैरभ्यर्चयेत् (अभीष्ट-सिद्धि०) इति प्रथमावरणम्।

प्रथम आवरण—भूपुर में पूर्वादि क्रम से—लं इन्द्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। वीरपात्र के अमृत से तर्पण करे। रं अग्निश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। टं यमश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। क्षं निर्ऋतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। वं वरुणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। यं वायुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। कुं कुबेरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। हं ईशानश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ब्रह्मश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं अनन्तश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

इनका पूजन कमलपत्रों से करे।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।

इस श्लोक से पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।

ॐ गं गणेशश्रीपादुकां पू०। ॐ चं चण्डवेतालश्रीपा०। ॐ लोलाक्षश्रीपा०। ॐ विकरालश्री०। इति गन्धाक्षतपुष्पैरभ्यर्च्य पूर्व-दक्षिण-पश्चिमोत्तरेषु वामावर्तेनान्तर्द्वाःस्थान् संपूजयेदिति (अभीष्ट०) इति द्वितीयावरणम्।

द्वितीय आवरण—भूपुर के द्वारों पर पूर्वादि क्रम से—

ॐ गं गणेशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः—पूर्वद्वार पर।
ॐ चं चण्डवेतालश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः—दक्षिण में।
ॐ लोलाक्षश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः—पश्चिम में।
ॐ विकरालश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः—उत्तर में।

गन्धाक्षत-पुष्प से पूजन करे।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।

इसके पुष्पाञ्जलि अर्पित करे।

मू० गुं स्वगुरुपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः, इति गुरुपात्रामृतेन संपूज्य, वा संतर्प्य, पं परमगुरुश्री०, पं परमेष्ठिगुरुश्री०, इति वृत्तत्रयेषु वायव्यादीशान्तं संपूजयेदिति तृतीयावरणम्।

तृतीयावरण—तीनों वृत्तों में वायव्य से ईशान कोण तक—

ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः गुं स्वगुरुपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। गुरुपात्र के अमृत से इनका पूजन-तर्पण करे।

ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः पं परमगुरुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः पं परमेष्ठिगुरुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

पूजन गन्धाक्षत-पुष्प से करे।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि अर्पित करे।

सौः ज्योत्स्नादेवीदीप्तासहितसोमश्रीपा० इति ग्रहपात्रामृतेन तर्पयेत्। सं सूक्ष्मासहितमङ्गलश्री०। बं जयासहितबुधश्री०। जुं भद्रासहितजीवश्री०। श्रीं विमलासहितशुक्रश्री०। शं निर्मलासहितशनिश्री०। रां विद्युतासहित-राहुश्री०। कं सर्वतोवक्त्रासहितकेतुश्री०। इति गन्धाक्षतपद्मपरागैर्वामावर्तेन वसुदले पूर्वादीशान्तं संपूजयेदिति चतुर्थावरणम्।

चतुर्थावरण—अष्टदल में पूर्व ईशान तक पूजन करे। ग्रहपात्र के अमृत से तर्पण करे—
सौः ज्योत्स्नादेवीदीप्तासहितसोमश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
सं सूक्ष्मासहितमंगलश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
बं जयासहितबुधश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
जुं भद्रासहितजीवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
श्रीं विमलासहितशुक्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
शं निर्मलासहितशनिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
रां विद्युतासहितराहुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
कं सर्वतोवक्त्रासहितकेतुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
गन्धाक्षत-पद्मपराग से वामावर्त क्रम से पूजन करे।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि अर्पित करे।

ॐ ह्रांह्रीं तपनीसहितसूर्यश्रीपा०। ३ँ तापिनीसहितदिवाकरश्री०। ३ँ बोधिनी-सहितभानुश्री०। ३ँ रोधिनीसहितभास्करश्री०। ३ँ कलिनीसहितरविश्री०। ३ँ शोषिणीसहितत्वष्टृश्री०। ३ँ वरेण्यासहिततपनश्री०। ३ँ आकर्षिणीसहित-धर्मश्री०। इति श्रीपरमपात्रामृतेन स्ववामावृत्त्या वसुकोणे पद्मपत्रैः संपूजयेदिति पञ्चमावरणम्।

पञ्चमावरण—अष्टकोण में स्व-वामावर्त क्रम से पद्मपत्रों से पूजन करे। श्रीपरमपात्र के अमृत से तर्पण करे—
ॐ ह्रां ह्रीं तपिनीसहितसूर्यश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रां ह्रीं तापिनीसहितदिवाकरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रां ह्रीं बोधिनीसहितभानुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रां ह्रीं रोधिनीसहितभास्करश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रां ह्रीं कलिनीसहितरविश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं शोषिणीसहितत्वष्टाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं वरेण्यासहिततपनश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं आकर्षिणीसहितधर्मश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।

ॐ ह्रांह्रीं मायासहितहंसश्रीपा० इतीशाने। ३ँ विश्वावतीसहितग्रहपतिश्री० इति आग्नेये। ३ँ हेमप्रभासहितत्रयीतनुश्री० इत्यग्रे। इति गन्धपुष्पाक्षतैरर्चयेदिति षष्ठावरणम्।

षष्ठावरण—त्रिकोण में गन्धाक्षत-पुष्प से पूजन करे—

ॐ ह्रां ह्रीं मायासहितहंसश्रीपादुकां पूजयामि—ईशान कोण में।

ॐ ह्रां ह्रीं विश्वावतीसहितग्रहपतिश्रीपादुकां पूजयामि—आग्नेय कोण में।

ॐ ह्रां ह्रीं हेमप्रभासहितत्रयीतनुश्रीपादुकां पूजयामि—सम्मुख कोण में।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।

३ँ 'जगद्ध्वनिमये मातर्घण्टायै नमः' इति संपूज्य शनैर्वादयन् मूलविद्यामुच्चार्य श्रीविस्फुरासहितसवितृश्री०, इति द्वादशवारं शतपत्रैः केवलमभ्यर्चयेदिति सप्तमावरणम्।

सप्तम आवरण—बिन्दुमण्डल में केवल कमल के फूल से बारह बार पूजन करे—

ॐ ह्रां ह्रीं जगद्ध्वनिमये मातर्घण्टायै नमः से पूजन करके धीरे-धीरे घण्टावादन करे। इसके बाद इस प्रकार पूजा करे—

ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः श्री विस्फुरासहितसवितृश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। बारह बार कमलफूल से पूजा करे।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।

३ँ रत्नकलशश्रीपा०, ३ँ सुवर्णकमलश्री०, इति परमपात्रामृतेन वामदक्षिणयोः करकमलयोः सम्पूजयेदित्यष्टमावरणम्।

अष्टमावरण—बिन्दु में भगवान् के हाथों में परमपात्र के अमृत से वाम और दक्ष करकमलों में पूजन करे—ॐ ह्रां ह्रीं रत्नकलशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रां ह्रीं सुवर्णकमलश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।

इत्थं संपूज्य, मूलेन मूलदेवतां त्रिः सन्तर्प्य प्रणमेत्। ततो मूलदेवतासहिताय श्रीसूर्याय सपरिच्छदाय परमान्नं नैवेद्यं निवेदयामि नमः, मूलेन दत्त्वा मूलान्ते सप्तप्रदक्षिणानि कृत्वा मूलान्ते मेरुपुण्ड्रकमुद्रां प्रदर्श्य पुनः पुनः प्रणमेत्।

इस प्रकार पूजा करके मूल मन्त्र से मूल देवता सूर्यनारायण का तीन बार तर्पण करके नमस्कार करे। इसके बाद मूलदेवतासहिताय श्रीसूर्याय सपरिच्छदाय परमान्नं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। मूल मन्त्र से नैवेद्य समर्पित करे। पानीय आचमनीय प्रदान करे। मूल मन्त्र के जप के साथ सात प्रदक्षिणा करे। मूल मन्त्रोच्चारणपूर्वक मेरुपुण्ड्रक मुद्रा प्रदर्शित करे। बार-बार प्रणाम करे।

दक्षिणान्तर्गता वामा वामान्तरगताः पराः।
अङ्गुलीर्योजयेद् देवि चाङ्गुष्ठौ संमुखौ चरेत्॥
आवर्त्त्य व्योमवद् हस्तावङ्गुष्ठौ देव्यधोमुखौ।
मेरुपुण्ड्रकमुद्रेशं दिव्या भास्करवल्लभा॥
नैवेद्ये च प्रणामे च पुण्ड्रकाख्यां प्रदर्शयेत्।

इति नत्वा संकल्पपूर्वं षडङ्गं विधाय प्राणायामत्रयं कृत्वा अर्कमालया मूलं यथाशक्त्या जपेत्। जपान्ते—

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात् प्रभाकर॥

इति जपं देवाय समर्प्य, योनिमुद्रया प्रणमेत्।

मेरुपुण्ड्रक मुद्रा—दक्षिण हाथ की अँगुलियों के बीच में वाम हाथ की अँगुलियों को प्रवेश कराये। अँगूठों को सम्मुख रखे। हाथों को आकाशवत् घुमाकर अँगूठों को अधोमुख करे। ऐसा करने से दिव्य मेरुपुण्ड्रक मुद्रा बनती है, जो सूर्य को अति प्रिय है। नैवेद्य और प्रणाम अर्पण करते समय मेरुपुण्ड्रक मुद्रा को प्रदर्शित करे।

इस प्रकार प्रणाम करके सङ्कल्पपूर्वक षडङ्ग न्यास करके तीन प्राणायाम करे। अर्कमाला से यथाशक्ति मूल मन्त्र का जप करे। जप के पश्चात् जप का समर्पण निम्नांकित मन्त्र से करे—

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात् प्रभाकर।।

इस मन्त्र से जप समर्पित करके योनिमुद्रा से प्रणाम करे।

ततः कवचसहस्रनामस्तवराजपाठं कुर्यात् (वैश्वदेवादिनित्यकर्म कुर्यात्)। तदपि बिम्बमुद्रया देवाय समर्प्य दण्डवत् प्रणम्य, ॐ ह्रींवीं वीरवटुकाय नमः। ॐ यांयूंयों योगिनीभ्यो नमः। ॐ क्षां क्षेत्रपालेभ्यो नमः। ॐ त्रांत्रों तेजश्चण्डाभ्यां नमः, इति बलिं निवेद्य, 'ॐ ह्रांह्रूं सर्वभूतेभ्यः सर्वविघ्नकृद्भ्यो बलिर्वौषट्' इति बलिं दत्त्वा, (ततः सूर्यस्य क्षमापयेत्) श्रीसामयिकैः सह वीरवन्दनं विधाय, तदन्ते 'ॐ सोहं हंसः स्वाहा' इत्यानन्दपात्रं शिरसि निःक्षिप्य, परमानन्दमयो भूत्वा स्वात्मानं तेजोमयं सूर्यरूपं विभाव्य 'ॐ ह्रः अस्त्राय फट्' सूर्यास्त्रं ध्यात्वा प्रणम्य पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा भानवीं मुद्रां प्रदर्श्य, संहारमुद्रया श्रीचक्रे बिन्दुबिम्बात् सूर्यतेजोमयं पुष्पमादाय पिङ्गलयाघ्राय तत्सौरं तेजः परमशिवेन संयोज्य, पुनर्मूलाधारं प्रापय्य स्वात्मानं तेजोमयरूपं दिव्यं नाटयन् स्वशक्त्या सह यथासुखं विहरेत्।

तब कवच, सहस्रनाम और स्तोत्र का पाठ करे। वैश्वदेवादि नित्य कर्म करे। इसे भी विम्बमुद्रा से देवता को समर्पित करे। दण्डवत् भूमि पर लेटकर प्रणाम करे। इसके बाद निम्नवत् बलि प्रदान करे—

वटुक को बलि—ॐ ह्रीं वीं वीरवटुकाय नमः।
योगिनियों को बलि—ॐ यां यूं यों योगिनीभ्यो नमः।
क्षेत्रपाल को बलि—ॐ क्षां क्षेत्रपालेभ्यो नमः।
तेजचण्ड को बलि—ॐ त्रां त्रों तेजश्चण्डाभ्यां नमः।

इसके बाद समस्त भूतों को बलि प्रदान करे—ॐ ह्रां ह्रूं सर्वभूतेभ्यः सर्वविघ्नकृद्भ्यो बलिर्वौषट्।

इस प्रकार बलि-प्रदान के बाद सूर्य से क्षमा माँगे।

श्रीसामयिकों के साथ वीरवन्दन करे। इसके बाद 'ॐ सोहं हंसः स्वाहा' से आनन्दपात्र को शिर पर उड़ेल कर परमानन्दित होकर अपने को तेजोमय सूर्यरूप मानकर

'ॐ ह्रः अस्त्राय फट्' से सूर्यास्त का ध्यान करे। प्रणाम करे। पुष्पाञ्जलि देकर भानवी मुद्रा दिखावे। संहारमुद्रा से श्रीचक्र के बिन्दुबिम्ब से सूर्य तेजोमय पुष्प लेकर पिङ्गला से सूँघे। तब सौर तेज को परम शिव के साथ जोड़कर पुनः मूलाधार में लाकर अपने को तेजोमय रूप में दिव्य समझकर नाचे। अपनी शक्ति के साथ यथाशक्ति विहार करे।

पटलोपसंहारः

इत्येषा नित्यपूजायाः पद्धतिर्गद्यरूपिणी।
तव स्नेहेन निर्णीता नाख्येया कौलिकैः प्रिये॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये सूर्यपूजापद्धतिनिरूपणं नाम द्वात्रिंशः पटलः॥३२॥

इस गद्य-पद्यमयी नित्य पूजा पद्धति को तुम्हारे स्नेहवश मैंने निरूपित किया है। कौलिक इसे किसी को न बतलाये।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में सूर्यपूजापद्धति निरूपण नामक द्वात्रिंश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ त्रयस्त्रिंशः पटलः

सूर्यकवचम्

कवचमाहात्म्यम्

श्रीभैरव उवाच

यो देवदेवो भगवान् भास्करो महसां निधिः।
गायत्रीनायको भास्वान् सवितेति प्रगीयते ॥१॥
तस्याहं कवचं दिव्यं वज्रपञ्जरकाभिधम्।
सर्वमन्त्रमयं गुह्यं मूलविद्यारहस्यकम् ॥२॥
सर्वपापापहं देवि दुःखदारिद्र्यनाशनम्।
महाकुष्ठहरं पुण्यं सर्वरोगनिवर्हणम् ॥३॥
सर्वशत्रुसमूहघ्नं संग्रामे विजयप्रदम्।
सर्वतेजोमयं सर्वदेवदानवपूजितम् ॥४॥

कवच का माहात्म्य—श्री भैरव ने कहा कि जो देवदेव भगवान् भास्कर प्रकाश के पुञ्ज हैं, गायत्री-नायक हैं, भास्वान हैं, उन्हें सविता कहा जाता है। उन्हीं के वज्रपञ्जर नामक कवच का मैं वर्णन करता हूँ। यह कवच दिव्य, सर्वमन्त्रमय एवं मूल विद्या का रहस्य है। यह सभी पापों का विनाशक, दुःख-दरिद्रता का विनाशक, महाकुष्ठहारी, पुनीत और सभी रोगों का विनाशक है। यह सभी शत्रुओं का घातक, युद्ध में विजय-प्रदायक, सर्वतेजोमय, सभी देव-दानवों से पूजित है।।१-४।।

रणे राजभये घोरे सर्वोपद्रवनाशनम्।
मातृकावेष्टितं वर्म भैरवाननिर्गतम् ॥५॥
ग्रहपीडाहरं देवि सर्वसङ्कटनाशनम्।
धारणादस्य देवेशि ब्रह्मा लोकपितामहः ॥६॥
विष्णुर्नारायणो देवि रणे दैत्याञ्जयिष्यति।
शङ्करः सर्वलोकेशो वासवोऽपि दिवस्पतिः ॥७॥
ओषधीशः शशी देवि शिवोऽहं भैरवेश्वरः।
मन्त्रात्मकं परं वर्म सवितुः सारमुत्तमम् ॥८॥

युद्ध में, राजभय में सभी घोर उपद्रवों का विनाशक है। यह मातृका-वेष्टित कवच भैरव के मुख से निर्गत है। यह ग्रहपीड़ा-निवारक एवं सभी संकटों का विनाशक है। इसे धारण करके लोकपितामह ब्रह्मा, विष्णु, नारायण युद्ध में दैत्यों को जीत लेते हैं। इसे धारण करके ही शंकर सभी लोकों के स्वामी हैं। इन्द्र स्वर्ग के स्वामी हैं। चन्द्रमा औषधों का ईश्वर है। मैं शिव भैरवों का स्वामी हूँ। यह मन्त्रात्मक श्रेष्ठ कवच सविता का उत्तम सार है।।५-८।।

यो धारयेद् भुजे मूर्ध्नि रविवारे महेश्वरि।
स राजवल्लभो लोके तेजस्वी वैरिमर्दनः ॥९॥
बहुनोक्तेन किं देवि कवचस्यास्य धारणात्।
इह लक्ष्मीधनारोग्यवृद्धिर्भवति नान्यथा ॥१०॥
परत्र परमा मुक्तिर्देवानामपि दुर्लभा।
कवचस्यास्य देवेशि मूलविद्यामयस्य च ॥११॥

रविवार को जो इसे अपनी भुजा में या मूर्धा में धारण करता है, वह राजा का प्रिय, संसार में तेजस्वी, शत्रुओं का विनाशक होता है। बहुत कहने से क्या लाभ है; इस कवच के धारण करने से संसार में लक्ष्मी-धन-आरोग्य की वृद्धि होती है; अन्यथा नहीं होती है। परलोक में देवदुर्लभ परम मोक्ष प्राप्त होता है। हे देवेशि! यह कवच मूल मन्त्रमय है।।९-११।।

कवचविनियोगः

वज्रपञ्जरकाख्यस्य मुनिर्ब्रह्मा समीरितः।
गायत्र्यं छन्द इत्युक्तं देवता सविता स्मृतः ॥१२॥
माया बीजं शरत् शक्तिर्नमः कीलकमीश्वरि।
सर्वार्थसाधने देवि विनियोगः प्रकीर्तितः ॥१३॥

अस्य श्रीवज्रपञ्जरकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्र्यं छन्दः, श्रीसविता देवता, ह्रीं बीजं, सः शक्तिः, नमः कीलकं, सर्वार्थसाधने वज्रपञ्जरकवचपाठे विनियोगः।

कवच का विनियोग—हे देवि! इस वज्रपञ्जर नामक कवच के मुनि (ऋषि) ब्रह्मा कहे गये हैं, गायत्री इसका छन्द कहा गया है और देवता सविता कहे गये हैं। माया = ह्रीं इसका बीज, शरत् = सः शक्ति एवं नमः कीलक कहा गया है। हे ईश्वरि! समस्त प्रकार के अभीप्सित-साधन करने के लिये इसका विनियोग कहा गया है।।१२-१३।।

ॐअंआंइंईं शिरः पातु ओं सूर्यो मन्त्रविग्रहः ।
उंऊंऋंॠं ललाटं मे ह्रां रविः पातु चिन्मयः ॥१४॥
ऌंॡंएंऐं पातु नेत्रे ह्रीं ममारुणसारथिः ।
ओंऔंअंअः श्रुती पातु सः सर्वजगदीश्वरः ॥१५॥
कंखंगंघं पातु गण्डौ सूं सूरः सुरपूजितः ।
चंछंजंझं च नासां मे पातु र्यां अर्यमा प्रभुः ॥१६॥

कवच—ॐ अं आं इं ईं ॐ सूर्यमन्त्रों का स्वरूप मेरे शिर की रक्षा करे। उं ऊं ऋं ॠं मेरे ललाट की रक्षा चिन्मय रवि ह्रां करें। ऌ ॡं एं ऐं नेत्रों की रक्षा ह्रीं अरुणरूपी सारथी करें। ओं औं अं अः कानों की रक्षा सः सभी जगत् का ईश्वर करें। कं खं गं घं गालों की रक्षा सूं सुरपूजित सूर्य करें। चं छं जं झं नासा की रक्षा र्यां अर्यमा करें।।१४-१६।।

टंठंडंढं मुखं पायाद् यं योगीश्वरपूजितः ।
तंथंदंधं गलं पातु नं नारायणवल्लभः ॥१७॥
पंफंबंभं मम स्कन्धौ पातु मं महसां निधिः ।
यंरंलंवं भुजौ पातु मूलं सकलनायकः ॥१८॥
शंषंसंहं पातु वक्षो मूलमन्त्रमयो ध्रुवः ।
ळंक्षः कुक्षिं सदा पातु ग्रहनाथो दिनेश्वरः ॥१९॥

टं ठं डं ढं मुख की रक्षा यं योगीश्वरपूजित करें। तं थं दं धं गला की रक्षा नारायणप्रिय नं करे। पं फं बं भं मेरे कन्धे हैं, इसकी रक्षा प्रकाशपुञ्ज मं करे। यं रं लं वंरूपी भुजा की रक्षा सर्वनायक मूल मन्त्र करे। शं षं सं हं वक्ष की रक्षा मूल मन्त्रमय ॐ करे। ळं क्षं कुक्षि की रक्षा ग्रहनाथ दिनेश्वर करें।।१७-१९।।

ङंञंणंनंमं मे पातु पृष्ठं दिवसनायकः ।
अंआंइंईं उंऊंऋंॠं नाभिं पातु तमोपहः ॥२०॥
ऌंॡंएंऐं ओंऔंअंअः लिङ्गं मेऽव्याद् ग्रहेश्वरः ।
कंखंगंघं चंछंजंझं कटिं भानुर्ममावतु ॥२१॥
टंठंडंढं तंथंदंधं जानू भास्वान् ममावतु ।
पंफंबंभं यंरंलंवं जङ्घे मेऽव्याद् विभाकरः ॥२२॥

ङं ञं णं नं मं पृष्ठ की रक्षा दिवसनायक करें। अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं नाभि की रक्षा तमनाशक करें। ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः लिङ्ग की रक्षा ग्रहेश्वर करें। कं खं गं

घं चं छं जं झं मेरे कमर की रक्षा भानु करें। टं ठं डं ढं तं थं दं धं मेरे जानु की रक्षा भास्वान करें। पं फं बं भं यं रं लं वं मेरे जंघों की रक्षा दिवाकर करें।।२०-२१।।

शंषंसंहंळंक्षः पातु मूलं पादौ त्रयीतनुः।
ङंञंणंनंमं मे पातु सविता सकलं वपुः ॥२३॥
सोमः पूर्वे च मां पातु भौमोऽग्नौ मां सदावतु।
बुधो मां दक्षिणे पातु नैर्ऋत्यां गुरुरेव माम् ॥२४॥
पश्चिमे मां सितः पातु वायव्यां मां शनैश्चरः।
उत्तरे मां तमः पायादैशान्यां मां शिखी तथा ॥२५॥

शं षं सं हं ळं क्षं मूल मन्त्र पैरों की रक्षा त्रयीतनु करें। ङं ञं णं नं मं सारे शरीर की रक्षा सविता करें। पूर्व में मेरी रक्षा चन्द्र करे, भौम मेरी रक्षा आग्नेय में करे। दक्षिण में मेरी रक्षा बुध करे। नैर्ऋत्य में गुरु रक्षा करे। पश्चिम में मेरी रक्षा शुक्र करे। शनि मेरी रक्षा वायव्य में करे। उत्तर में मेरी रक्षा केतु करे और ईशान में राहु रक्षा करे।।२३-२५।।

ऊर्ध्वं मां पातु मिहिरो मामधस्ताज्जगत्पतिः।
प्रभाते भास्करः पातु मध्याह्ने मां दिनेश्वरः ॥२६॥
सायं वेदप्रियः पातु निशीथे विस्फुरापतिः।
सर्वत्र सर्वदा सूर्यः पातु मां चक्रनायकः ॥२७॥
रणे राजकुले द्यूते विवादे शत्रुसङ्कटे।
संग्रामे च ज्वरे रोगे पातु मां सविता प्रभुः ॥२८॥

ऊर्ध्व में मेरी रक्षा मिहिर करे और जगत्पति अधोदिशा में रक्षा करे। प्रभात में भास्कर रक्षा करें। मध्याह्न में रक्षा दिनेश्वर करें। वेदप्रिय शाम में रक्षा करें और निशीथ में विस्फुरापति रक्षा करें। चक्रनायक सूर्य सर्वदा सर्वत्र मेरी रक्षा करें। युद्ध में, राजदरबार में, जुआ में, विवाद में, शत्रुसंकट में, संग्राम में, ज्वर में, रोग में मेरी रक्षा प्रभु सविता करें।।२६-२८।।

ॐ ॐ ॐ उत ॐउऊहंसमयः सूर्योऽवतान्मां भयाद्
ह्रांह्रींह्रुं हहहा हसौः हसहसौः हंसोऽवतात् सर्वतः।
सःसःसः सससा नृपाद्वनचराच्चौराद्रणात् सङ्कटात्
पायान्मां कुलनायकोऽपि सविता ॐह्रींहसौः सर्वदा ॥२९॥
द्रांद्रींद्रूं दधनं तथा च तरणिर्भांभैर्भयाद् भास्करो
रांरींरूं रुरुरूं रविर्ज्वरभयात् कुष्ठाच्च शूलामयात्।

अंअंआं विविवीं महामयभयं मां पातु मार्तण्डको
मूलव्याप्ततनुः सदावतु परं हंसः सहस्रांशुमान् ॥३०॥

ॐ ॐ ॐ अथवा ॐ उ ऊ हंसमय सूर्य भय से मेरी रक्षा करें। ह्रां ह्रीं सः ह ह हा हसौः हसहसौः हंस मेरी रक्षा सर्वत्र करें। सः सः सः स स सा नृप से, वनचरों से, चौरभय से, संकट से मेरी रक्षा कुलनायक सविता ॐ ह्रीं हसौः सर्वदा करें। द्रां द्रीं द्रूं दं धं नं तरणि भां भैं भय से भास्कर रक्षा करें। रां रीं रूं रुं रुं रूं ज्वरभय, कुष्ठ, शूल से मेरी रक्षा रवि करें। अं अं आं विविवीं महामय से मेरी रक्षा मार्तण्ड करें। मूल मन्त्रस्वरूप परं हंस अंशुमान मेरी रक्षा सर्वदा करें।।२९-३०।।

फलश्रुतिः

इति श्रीकवचं दिव्यं वज्रपञ्जरकाभिधम्।
सर्वदेवरहस्यं च मातृकामन्त्रवेष्टितम् ॥३१॥
महारोगभयघ्नं च पापघ्नं मन्मुखोदितम्।
गुह्यं यशस्करं पुण्यं सर्वश्रेयस्करं शिवे ॥३२॥

फलश्रुति—इस प्रकार दिव्य वज्रपञ्जर नामक कवच का वर्णन समाप्त हुआ। यह दिव्य कवच सभी देवों का रहस्य, मातृकामन्त्र से वेष्टित है। यह वज्रपञ्जर नामक कवच महा रोगभय-विनाशक, पापहारी, मेरे मुख से वर्णित गुह्य, यशप्रदायक, पुण्यप्रद एवं सभी प्रकार से श्रेयष्कर है।।३१-३२।।

लिखित्वा रविवारे तु तिष्ये वा जन्मभे प्रिये।
अष्टगन्धेन दिव्येन सुधाक्षीरेण पार्वति ॥३३॥
अर्कक्षीरेण पुण्येन भूर्जत्वचि महेश्वरि।
कनकीकाष्ठलेखन्या कवचं भास्करोदये ॥३४॥
श्वेतसूत्रेण रक्तेन श्यामेनावेष्टयेद् गुटीम्।
सौवर्णेनाथ संवेष्ट्य धारयेन्मूर्ध्नि वा भुजे ॥३५॥

रविवार को पुष्य नक्षत्र में या जन्मनक्षत्र में इसे दिव्य अष्टगन्ध से या सुधाक्षीर से या अर्कक्षीर से पुनीत भोजपत्र पर कनकी काष्ठलेखनी से सूर्योदय के समय लिखकर श्वेत, लाल, काले धागों से वेष्टित करके गुटिका बनावे या सोने के ताबीज में भरकर मूर्धा पर या भुजा में धारण करे।।३३-३५।।

रणे रिपूञ्जयेद् देवि वादे सदसि जेष्यति।
राजमान्यो भवेन्नित्यं सर्वतेजोमयो भवेत् ॥३६॥
कण्ठस्था पुत्रदा देवि कुक्षिस्था रोगनाशिनी।

शिरःस्था गुटिका दिव्या राजलोकवशङ्करी ॥३७॥
भुजस्था धनदा नित्यं तेजोबुद्धिविवर्धिनी ।
वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च याङ्गना ॥३८॥
कण्ठे सा धारयेन्नित्यं बहुपुत्रा प्रजायते ।

इससे साधक युद्ध में विजय प्राप्त करता है। वाद-विवाद में उसकी जीत होती है। हमेशा राजमान्य होता है। सभी तेजों से युक्त होता है। इसे कण्ठ में धारण करने से पुत्र होते हैं। कुक्षि में धारण करने से रोगों का नाश होता है। शिर पर धारण करने से राजलोक वश में होता है। भुजा में धारण करने से धन प्राप्त होता है। सदा तेज बुद्धि की वृद्धि होती है। वन्ध्या या काकवन्ध्या या मृतवत्सा स्त्री इसे नित्य कण्ठ में धारण करे तो वह बहुत पुत्रों वाली होती है।।३६-३८।।

यस्य देहे भवेन्नित्यं गुटिकैषा महेश्वरि ॥३९॥
महास्त्राणीन्द्रमुक्तानि ब्रह्मास्त्रादीनि पार्वति ।
तद्देहं प्राप्य व्यर्थानि भविष्यन्ति न संशयः ॥४०॥
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं कवचं वज्रपञ्जरम् ।
तस्य सद्यो महादेवि सविता वरदो भवेत् ॥४१॥
अज्ञात्वा कवचं देवि पूजयेद् यस्त्रयीतनुम् ।
तस्य पूजार्जितं पुण्यं जन्मकोटिषु निष्फलम् ॥४२॥

हे महेश्वरि! जिसके देह में यह गुटिका नित्य रहती है, वह महा अस्त्ररूपी इन्द्र का ब्रह्मास्त्र भी उसके देह से सटकर व्यर्थ हो जाते हैं। इसमें कोई संशय नहीं है। जो सदैव तीनों सन्ध्याओं में इस वज्रपञ्जर नामक कवच का पाठ करता है, उसे सविता शीघ्र ही वर देते हैं। जो कवच को जाने बिना त्रयीतनु का पूजन करता है, उसके पूजनार्जित पुण्य करोड़ों जन्मों तक निष्फल रहते हैं।।३९-४२।।

शतावर्तं पठेद्वर्म सप्तम्यां रविवासरे ।
महाकुष्ठार्दितो देवि मुच्यते नात्र संशयः ॥४३॥
नीरोगो यः पठेद्वर्म दरिद्रो वज्रपञ्जरम् ।
लक्ष्मीवाञ्जायते देवि सद्यः सूर्यप्रसादतः ॥४४॥
भक्त्या यः प्रपठेद् देवि कवचं प्रत्यहं प्रिये ।
इह लोके श्रियं भुक्त्वा देहान्ते मुक्तिमाप्नुयात् ॥४५॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये वज्रपञ्जराख्यसूर्यकवच-निरूपणं नाम त्रयस्त्रिंशः पटलः॥३३॥

रविवार की सप्तमी में इस कवच का सौ पाठ करे तो महाकुष्ठ से दुःखी मनुष्य भी रोगमुक्त होता है; इसमें संशय नहीं है। जो इस कवच का पाठ करता है, वह नीरोग होता है। वज्रपञ्जर कवच के पाठ से दरिद्र भी सूर्य की कृपा से थोड़े ही समय में लक्ष्मीवान हो जाता है। जो प्रतिदिन भक्तिपूर्वक इस कवच का पाठ करता है, वह इस संसार में सुखों को भोग करके देहान्त होने पर मोक्ष प्राप्त करता है।।४३-४५।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में सूर्यकवच निरूपण नामक त्रयस्त्रिंश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ चतुस्त्रिंशः पटलः

सूर्यसहस्रनाम

सहस्रनाममाहात्म्यम्

श्रीभैरव उवाच

देवदेवि महादेवि सर्वाभयवरप्रदे।
त्वं मे प्राणप्रिया प्रीता वरदोऽहं तव स्थितः ॥१॥
किञ्चित् प्रार्थय मे प्रेम्णा वक्ष्ये तत्ते ददाम्यहम्।

माहात्म्य—श्री भैरव ने कहा—हे देवदेवि महादेवि! सबों को अभय का वर देने वाली! तुम मुझे प्राणों से भी अधिक प्रिय हो। तुम्हारे स्नेहवश मैं तुम्हें वर देने के लिये उद्यत हूँ। प्रेमपूर्वक जो कुछ भी माँगोगी, वह मैं देने को तैयार हूँ।।१।।

श्रीदेव्युवाच

भगवन् देवदेवेश महारुद्र महेश्वर ॥२॥
यदि देयो वरो मह्यं वरयोग्यास्म्यहं यदि।
देवदेवस्य सवितुर्वद नामसहस्रकम् ॥३॥

श्री देवी ने कहा—भगवन् देवदेवेश महारुद्र महेश्वर! यदि मुझे आप वर देने के योग्य समझकर वर देने को तैयार हैं तो देवदेव सविता के सहस्रनाम का वर्णन कीजिये।।२-३।।

श्रीभैरव उवाच

एतद्गुह्यतमं देवि सर्वस्वं मम पार्वति।
रहस्यं सर्वदेवानां दुर्लभं कामनावहम् ॥४॥
यो देवो भगवान् सूर्यो वेदकर्ता प्रजापतिः।
कर्मसाक्षी जगच्चक्षुः स्तोतुं तं केन शक्यते ॥५॥
सस्यादिर्मध्यमन्तं च सुरैरपि न गम्यते।
तस्यादिदेवदेवस्य सवितुर्जगदीशितुः ॥६॥
मन्त्रनामसहस्रं ते वक्ष्ये साम्राज्यसिद्धिदम्।
सर्वपापापहं देवि तन्त्रवेदागमोद्धृतम् ॥७॥
माङ्गल्यं पौष्टिकं चैव रक्षोघ्नं पावनं महत्।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम् ॥८॥
धनदं पुण्यदं पुण्यं श्रेयस्करं यशस्करम्।
वक्ष्यामि परमं तत्त्वं मूलविद्यात्मकं परम् ॥९॥

श्री भैरव ने कहा—हे पार्वति! यह गुह्यतम है और मेरा सर्वस्व है। यह सभी देवों को दुर्लभ रहस्य है। कामनाओं को पूरा करने वाला है। जो देव भगवान् सूर्य हैं, वही वेदकर्ता ब्रह्मा हैं। कर्मों के साक्षी संसार के नेत्र हैं। उनकी स्तुति करने की क्षमता किसमें है? जिसके आदि, मध्य और अन्त का ज्ञान देवताओं को भी नहीं है, उस आदिदेवदेव जगदीश्वर सविता के मन्त्रनामसहस्र का वर्णन मैं करता हूँ। यह साम्राज्यसिद्धिप्रदायक एवं सभी पापों का विनाशक है। तन्त्र-वेद-आगम से उद्धृत है। मंगलकारी, पुष्टिप्रद, रक्षाकारक, पावन, महान्, सर्वमङ्गल-माङ्गल्य एवं सभी पापों का विनाशक है। यह धन देने वाला, पुण्यप्रदायक, श्रेयष्कर एवं यशस्कर है। अब मैं मूल विद्यात्मक परम तत्त्व का वर्णन करता हूँ।।४-९।।

ब्रह्मणो यत् परं ब्रह्म पराणामपि यत् परम्।
मन्त्राणामपि यत् तत्त्वं महसामपि यन्महः ॥१०॥
शान्तानामपि यः शान्तो मनूनामपि यो मनुः।
योगिनामपि यो योगी वेदानां प्रणवश्च यः ॥११॥
ग्रहाणामपि यो भास्वान् देवानामपि वासवः।
ताराणामपि यो राजा वायूनां च प्रभञ्जनः ॥१२॥
इन्द्रियाणामपि मनो देवीनामपि यः परा।
नगानामपि यो मेरुः पन्नगानां च वासुकिः ॥१३॥
तेजसामपि यो वह्निः कारणानां च यः शिवः।
सविता यस्तु गायत्र्याः परमात्मेति कीर्त्यते ॥१४॥
वक्ष्ये परमहंसस्य तस्य नामसहस्रकम्।

ब्रह्मों में जो परम ब्रह्म है, पराओं में जो परा है, मन्त्रों में जो तत्त्व है, प्रकाशों में जो प्रकाश मैं हूँ, शान्तों में जो शान्त है, मनुओं में जो मनु है, योगियों में जो योगी है, वेदों में जो प्रणव है, ग्रहों में जो सूर्य है, देवों में जो इन्द्र है, ताराओं में जो राजा है, वायुओं में जो प्रभञ्जन है, इन्द्रियों में जो मन है, देवियों में जो परा देवी है, पर्वतों में जो मेरु है, कारणों में जो शिव है, गायत्री में जो सविता है और जो परमात्मा कहा जाता है; उसी परमहंस के सहस्रनाम को मैं कहता हूँ।।१०-१४।।

सर्वदारिद्र्यशमनं सर्वदु:खविनाशनम् ।।१५।।
सर्वपापप्रशमनं सर्वतीर्थफलप्रदम् ।
ज्वररोगापमृत्युघ्नं सदा सर्वाभयप्रदम् ।।१६।।
तत्त्वं परमतत्त्वं च सर्वसारोत्तमोत्तमम् ।
राजप्रसादविजयलक्ष्मीविभवकारणम् ।।१७।।
आयुष्करं पुष्टिकरं सर्वयज्ञफलप्रदम् ।
मोहनस्तम्भनाकृष्टिवशीकरणकारणम् ।।१८।।
अदातव्यमभक्ताय सर्वकामप्रपूरकम् ।
श‍ृणुष्वावहिता भूत्वा सूर्यनामसहस्रकम् ।।१९।।

यह सहस्रनाम का वर्णन मैं करता हूँ। यह सभी दरिद्रताओं को नष्ट करता है। सभी दु:खों का विनाशक है, सभी पापों का हरण करने वाला है एवं सभी तीर्थों के फलों का दाता है। ज्वर, रोग, अपमृत्यु का विनाशक है। सर्वदा सभी भयों से निर्भय करता है। यह परम सभी तत्त्वों में उत्तम, राजा की कृपा, विजय, लक्ष्मी और वैभव का कारण है। यह आयु प्रदान करने वाला, पुष्टि देने वाला एवं समस्त यज्ञों के फल को देने वाला है। जो भक्त न हो, उसे देने योग्य नहीं है। सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाला है। अब सावधानीपूर्वक सूर्यसहस्रनाम को सुनो।।१५-१९।।

विनियोग:

अस्य श्रीसूर्यनामसहस्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषि:, गायत्र्यं छन्द:, श्रीभगवान् सविता देवता, ह्रां बीजं, स: शक्ति, ह्रीं कीलकं, धर्मार्थकाममोक्षार्थे सूर्यसहस्रनामपाठे विनियोग:।

सहस्रनाम-विनियोग—इस सूर्यसहस्रनाम के ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता भगवान् सविता, बीज ह्रां, शक्ति स: एवं कीलक ह्रीं हैं। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति हेतु सूर्यसहस्रनामपाठ में इसका विनियोग किया जाता है।

ध्यानम्

कल्पान्तानलकोटिभास्वरमुखं सिन्दूरधूलीजपा-
वर्णं रत्नकिरीटिनं द्विनयनं श्वेताब्जमध्यासनम् ।
नानाभूषणभूषितं स्मितमुखं रक्ताम्बरं चिन्मयं
सूर्यं स्वर्णसरोजरत्नकलशौ दोर्भ्यां दधानं भजे ।।१।।
प्रत्यक्षदेवं विशदं सहस्रमरीचिभि: शोभितभूमिदेशम् ।
सप्ताश्वगं सद्ध्वजहस्तमाद्यं देवं भजेऽहं मिहिरं हृदब्जे ।।२।।

ध्यान—सविता देव का मुख करोड़ कल्पान्तकारी अग्निज्वाला के समान प्रकाशमान है। सिन्दूर और अड़हुल के फूल के समान लाल रंग का वर्ण है। माथे पर रत्नकिरीट है। दो नेत्र हैं। श्वेत कमल के मध्य में विराजमान हैं। विविध आभूषणों से भूषित हैं। मुस्कानयुक्त मुख है। चिन्मय लाल वस्त्र है। सूर्य के एक हाथ में स्वर्णकमल और दूसरे हाथ में रत्नकलश शोभित हैं। ये प्रत्यक्ष देव हैं। विशद हजारों किरणों से भूमि को शोभित कर रहे हैं। इनके रथ में सात घोड़े हैं। इनके हाथ में सद् ध्वज है। ऐसे आद्य देव मिहिर का मैं अपने हृदयकमल में ध्यान करता हूँ।।१-२।।

सहस्रनाम

ॐह्रांह्रींसः हंसः सोहं सविता भास्करो भगः ।
भगवान् सर्वलोकेशो भूतेशो भूतभावनः ॥३॥
भूतात्मा सृष्टिकृत् स्रष्टा कर्ता हर्ता जगत्पतिः ।
आदित्यो वरदो वीरो वीरलो विश्वदीपनः ॥४॥
विश्वकृद् विश्वहृद् भक्तो भोक्ता भीमोऽभयापहः ।
विश्वात्मा पुरुषः साक्षी परं ब्रह्म परात् परः ॥५॥
प्रतापवान् विश्वयोनिर्विश्वेशो विश्वतोमुखः ।
कामी योगी महाबुद्धिर्मनस्वी मनुरव्ययः ॥६॥
प्रजापतिर्विश्ववन्द्यो वन्दितो भुवनेश्वरः ।
भूतभव्यभविष्यात्मा तत्त्वात्मा ज्ञानवान् गुणी ॥७॥
सात्त्विको राजसस्तामस्तमस्वी करुणानिधिः ।
सहस्रकिरणो भास्वान् भार्गवो भृगुरीश्वरः ॥८॥
निर्गुणो निर्ममो नित्यो नित्यानन्दो निराश्रयः ।
तपस्वी कालकृत् कालः कमनीयतनुः कृशः ॥९॥
दुर्दर्शः सुदशो दाशो दीनबन्धुर्दयाकरः ।
द्विभुजोऽष्टभुजो धीरो दशबाहुर्दशातिगः ॥१०॥
दशांशफलदो विष्णुर्जिगीषुर्जयवाञ्जयी ।
जटिलो निर्भयो भानुः पद्महस्तः कुशीरकः ॥११॥
समाहितगतिर्धाता विधाता कृतमङ्गलः ।
मार्तण्डो लोकधृत् त्राता रुद्रो भद्रप्रदः प्रभुः ॥१२॥
अरातिशमनः शान्तः शङ्करः कमलासनः ।
अविचिन्त्यवपुः (१००) श्रेष्ठो महाचीनक्रमेश्वरः ॥१३॥

सहस्रनाम—ॐ ह्रां ह्रीं स: ह्सौ: हंस: आदित्य, भास्कर, भग, भगवान्, सर्वलोकेश, भूतेश, भूतभावन, भूतात्मा, सृष्टिकृत्, स्रष्टा, कर्ता, हर्ता, जगत्पति, आदित्य, वरद, वीर, वीरल, विश्वदीपन, विश्वकृत, विश्वहृद, भक्त, भोक्ता, भीम, भयापह, विश्वात्मा, पुरुष, साक्षी, परंब्रह्म, परात्पर, प्रतापवान, विश्वयोनि, विश्वेश, विश्वतोमुख, कामी, योगी, महाबुद्धि, मनस्वी, मनु, अव्यय, प्रजापति, विश्ववन्द्य, वन्दित, भुवनेश्वर, भूतभव्य, भविष्यात्मा, तत्त्वात्मा, ज्ञानवान, गुणी, सात्त्विक, राजस, तामस, तमस्वी, करुणानिधि, सहस्रकिरण, भास्वान, भार्गव, भृगुरीश्वर, निर्गुण, निर्मम, नित्य, नित्यानन्द, निराश्रय, तपस्वी, कालकृत, काल, कमनीयतनु, कृश, दुर्दर्श, सुदश, दाश, दीनबन्धु, दयाकर, द्विभुज, अष्टभुज, धीर, दशबाहु, दशातिग, दशांशफलद, विष्णु, जिगीषु, जयवान्, जयी, जटिल, निर्भय, भानु, पद्महस्त, कुशीरक, समाहितगति, धाता, विधाता, कृतमंगल, मार्तण्ड, लोकधृत, त्राता, रुद्र, भद्रप्रद, प्रभु, अरातिशमन, शान्त, शंकर, कमलासन, अविचिन्त्यवपु, श्रेष्ठ, महाचीनपराक्रमेश्वर।।३-१३।।

महार्तिदमनो दान्तो महामोहहरो हरि: ।
नियतात्मा च कालेशो दिनेशो भक्तवत्सल: ।।१४।।
कल्याणकारी कमठकर्कश: कामवल्लभ: ।
व्योमचारी महान् सत्य: शम्भुरम्भोजवल्लभ: ।।१५।।
सामग: पञ्चमो द्रव्यो ध्रुवो दीनजनप्रिय: ।
त्रिजटो रक्तवाहश्च रक्तवस्त्रो रतिप्रिय: ।।१६।।
कालयोगी महानादो निश्चलो दृश्यरूपधृक् ।
गम्भीरघोषो निर्घोषो घटहस्तो महोमय: ।।१७।।
रक्ताम्बरधरो रक्तो रक्तमाल्यानुलेपन: ।
सहस्रहस्तो विजयो हरिगामी हरीश्वर: ।।१८।।
मुण्ड: कुण्डी भुजङ्गेशो रथी सुरथपूजित: ।
न्यग्रोधवासी न्यग्रोधो वृक्षकर्ण: कुलन्धर: ।।१९।।
शिखी चण्डी जटी ज्वाली ज्वालातेजोमयो विभु: ।
हैमो हेमकरो हारी हरिद्रत्नासनस्थित: ।।२०।।
हरिदश्वो जगद्वासी जगतां पतिरिङ्गिल: ।
विरोचनो विलासी च विरूपाक्षो विकर्तन: ।।२१।।
विनायको विभासश्च भासो भासां पति: पति: ।
मतिमान् रतिमान् स्वक्षो विशालाक्षो विशांपति: ।।२२।।

बालरूपो गिरिचरो गीर्पतिर्गोमतीपतिः ।
गङ्गाधरो गणाध्यक्षो गणसेव्यो गणेश्वरः ॥२३॥
गिरीशनयनावासी सर्ववासी सतीप्रियः ।
सत्यात्मकः सत्यधरः सत्यसन्धः सहस्रगुः ॥२४॥
अपारमहिमा मुक्तो मुक्तिदो मोक्षकामदः ।
मूर्तिमान् (२००) दुर्धरोऽमूर्तिस्तुटिरूपो लवात्मकः ॥२५॥

महार्तिदमन, दान्त, महामोहापहारी, हरि, नियतात्मा, कालेश, दिनेश, भक्तवत्सल, कल्याणकारी, कमठकर्कश, कामवल्लभ, व्योमचारी, महान्, सत्य, शम्भु, अम्भोजवल्लभ, सामग, पञ्चम द्रव्य, ध्रुव, दीनजनप्रिय, त्रिजट, रक्तवाह, रक्तवस्त्र, रतिप्रिय, कालयोगी, महानाद, निश्चल, दृश्यरूपधृक्, गम्भीरघोष, निर्घोष, घटहस्त, मयोमय, रक्ताम्बरधर, रक्त, रक्तमाल्यानुलेपन, सहस्रहस्त, विजय, हरिगामी, हरीश्वर, मुण्ड, कुण्डी, भुजङ्गेश, रथी, सुरथपूजित, न्यग्रोधवासी, न्यग्रोध, वृक्षकर्ण, धुरन्धर, शिखी, चण्डी, जटी, ज्वाली, ज्वालातेजोमय, विभु, हैम, हेमकरी, हारी, हरिद्रत्नासनस्थित, हरिदश्व, जगद्वासी, जगत्पतिरिंगित, विरोचन, विलासी, विरूपाक्ष, विकर्तन, विनायक, विभास, भास, भासाम्पति, प्रभु, मतिमान, रतिमान, स्वक्ष, विशालाक्ष, विशांपति, बालरूप, गिरिचर, गीर्पति, गोमतीपति, गङ्गाधर, गणाध्यक्ष, गणसेव्य, गणेश्वर, गिरीशनयनावासी, सर्ववासी, सतीप्रिय, सत्यात्मक, सत्यधर, सत्यसन्ध, सहस्रगु, अपारमहिमा, मुक्त, मुक्तिद, मोक्षकामद, मूर्तिमान, दुर्धर मूर्ति, तुटिरूप, लवात्मक।।१४-२५।।

प्राणेशो व्यानदोऽपानसमानोदानरूपवान् ।
चषको घटिकारूपो मुहूर्तो दिनरूपवान् ॥२६॥
पक्षो मास ऋतुर्वर्षो दिनकालेश्वरेश्वरः ।
अयनं युगरूपश्च कृतं त्रेतायुगस्त्रिपात् ॥२७॥
द्वापरश्च कलिः कालः कालात्मा कलिनाशनः ।
मन्वन्तरात्मको देवः शक्रस्त्रिभुवनेश्वरः ॥२८॥
वासवोऽग्निर्यमो रक्षो वरुणो यादसां पतिः ।
वायुर्वैश्रवणः शैव्यो गिरिजो जलजासनः ॥२९॥
अनन्तोऽनन्तमहिमा परमेष्ठी गतज्वरः ।
कल्पान्तकलनः क्रूरः कालाग्निः कालसूदनः ॥३०॥
महाप्रलयकृत् कृत्यः कृत्याशीर्युगवर्तनः ।
कालावर्तो युगधरो युगादिः शहकेश्वरः ॥३१॥

आकाशनिधिरूपश्च सर्वकालप्रवर्तकः ।
अचिन्त्यः सुबलो बालो बलाकावल्लभो वरः ॥३२॥
वरदो वीर्यदो वाग्मी वाक्पतिर्वाग्विलासदः ।
सांख्येश्वरो वेदगम्यो मन्त्रेशस्तन्त्रनायकः ॥३३॥
कुलाचारपरो नुत्यो नुतितुष्टो नुतिप्रियः ।
अलसस्तुलसीसेव्यस्तुष्टा रोगनिवर्हणः ॥३४॥
प्रस्कन्दनो विभागश्च नीरागो दशदिक्पतिः ।
वैराग्यदो विमानस्थो रत्नकुम्भधरायुधः ॥३५॥
महापादो महाहस्तो महाकायो महाशयः ।
ऋग्यजुःसामरूपश्च त्वष्टाथर्वणशाखिनः ॥३६॥
सहस्रशाखी सद्वृक्षो महाकल्पप्रियः पुमान् ।
कल्पवृक्षश्च मन्दारो (३००) मन्दाराचलशोभनः ॥३७॥

प्राणेश-व्यान-अपान-समान-उदान-रूपवान, चषक, घटिकारूप, मुर्हूतदिन, रूपवान, पक्ष-मास-ऋतु-वर्ष-दिन-कालेश्वरेश्वर, अयन, युग, कृत, त्रेता, द्वापर, कलि, काल, कालात्मा, कलिनाशन, मन्वन्तर, देव, शक्र, त्रिभुवनेश्वर, इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, यादसांपति, वायु, कुवेर, शैव्य, गिरिज, जलजासन, अनन्त, अनन्तमहिमा, परमेष्ठी, गतज्वर, कल्पान्तकलन, क्रूर, कालाग्नि, कालसूदन, महाप्रलय-कृत, कृत्य, कृत्याशी, युगवर्तन, कालावर्त, युगधर, युगादि, शहकेश्वर, आकाशनिधि-रूप, सर्वकालप्रवर्तक, अचिन्त्य, सुबल, बाल, बलाकावल्लभ, वर, वरद, वीर्यद, वाग्मी, वाक्पति, वाग्विलासद, सांख्येश्वर, वेदगम्य, मन्त्रेश, तन्त्रनायक, कुलाचारपर, नुत्य, नुतितुष्ट, नुतिप्रिय, अलस, तुलसीसेव्य, तुष्ट, रोगनिवर्हण, प्रस्कन्दन, विभाग, निराग, दशदिक्पति, वैराग्यद, विमानस्थ, रत्नकुम्भधरायुध, महापाद, महाहस्त, महाकाय, महाशय, ऋग्यजुःसामरूप, त्वष्टा, अथर्वणशाखिन्, सहस्रशाखी, सद्वृक्ष, महाकल्पप्रिय, पुमान, कल्पवृक्ष, मन्दार, मन्दराचलशोभन।।२६-३७।।

मेरुर्हिमाचलो माली मलयो मलयद्रुमः ।
सन्तानकुसुमच्छन्नः सन्तानफलदो विराट् ॥३८॥
क्षीराम्भोधिर्घृताम्भोधिर्जलधिः क्लेशनाशनः ।
रत्नाकरो महामान्यो वैण्यो वेणुधरो वणिक् ॥३९॥
वसन्तो मारसामन्तो ग्रीष्मः कल्मषनाशनः ।
वर्षाकालो वर्षपतिः शरदम्भोजवल्लभः ॥४०॥

हेमन्तो हेमकेयूरः शिशिरः शिशुवीर्यदः ।
सुमतिः सुगतिः साधुर्विष्णुः साम्बोऽम्बिकासुतः ॥४१॥
सारग्रीवो महाराजः सुनन्दो नन्दिसेवितः ।
सुमेरुशिखरावासी सप्तपातालगोचरः ॥४२॥
आकाशचारी नित्यात्मा विभुत्वविजयप्रदः ।
कुलकान्तः कुलाधीशो विनयी विजयी वियत् ॥४३॥
विश्वम्भरो वियच्चारी वियद्रूपो वियद्रथः ।
सुरथः सुगतस्तुत्यो वेणुवादनतत्परः ॥४४॥
गोपालो गोमयो गोप्ता प्रतिष्ठायी प्रजापतिः ।
आवेदनीयो वेदाक्षो महादिव्यवपुः सुराट् ॥४५॥
निर्जीवो जीवनो मन्त्री महार्णवनिनादभृत् ।
वसुरावर्तनो नित्यः सर्वाम्नायप्रभुः सुधीः ॥४६॥
न्यायनिर्वापणः शूली कपाली पद्ममध्यगः ।
त्रिकोणनिलयश्चेत्यो बिन्दुमण्डलमध्यगः ॥४७॥
बहुमालो महामालो दिव्यमालाधरो जपः ।
जपाकुसुमसङ्काशो जपपूजाफलप्रदः ॥४८॥
सहस्रमूर्धा देवेन्द्रः सहस्रनयनो रविः ।
सर्वतत्त्वाश्रयो ब्रध्नो वीरवन्द्यो विभावसुः ॥४९॥
विश्वावसुर्वसुपतिर्वसुनाथो विसर्गवान् ।
आदिरादित्यलोकेशः सर्वगामी (४००) कलाश्रयः ॥५०॥

मेरु, हिमाचल, माली, मलय, मलयद्रुम, सन्तानकुसुमच्छत्र, सन्तानफलद, विराट, क्षीराम्भोधि, घृताम्भोधि, जलधि, क्लेशनाशन, रत्नाकर, महामान्य, वैण्य, वेणुधर, वणिक, वसन्त, मारसामन्त, ग्रीष्म, कल्पषनाशन, वर्षाकाल, वर्षपति, शरद, अम्भोजवल्लभ, हेमन्त, हेमकेयूर, शिशिर, शिशुवीर्यद, सुमति, सुगति, साधु, विष्णु, साम्ब, अम्बिकासुत, सारग्रीव, महाराज, सुनन्द, नन्दिसेवित, सुमेरुशिखरावासी, सप्तपातालगोचर, आकाशचारी, नित्यात्मा, विभुत्वविजयप्रद, कुलकान्त, कुलाधीश, विहारी, विनयी, विजयी, वियत्, विश्वम्भर, वियद्व्यापी, वियद्रूप, वियद्रथ, सुरथ, सुगतस्तुत्य, वेणुवादनतत्पर, गोपाल, गोमय, गोप्ता, प्रतिष्ठायी, प्रजापति, आवेदनीय, वेदाक्ष, महादिव्यवपु, सुराट, निर्जीव, जीवन, मन्त्री, महार्णवनिनादवान, वसुरावर्तन, नित्य, सर्वाम्नायप्रभु, सुधी, न्यायनिर्वापण, शूली, कपाली, पद्ममध्यग, त्रिकोणनिलय, चेत्य, बिन्दुमण्डलमध्यग, बहुमाल्य, महामाल्य,

दिव्यमाला धर, जप, जपाकुसुमसंकाशी, जपपूजाफलप्रद, सहस्रमूर्धा, देवेन्द्र, सहस्रनयन, रवि, सर्वतत्त्वाश्रय, ब्रध्न, वीरवन्द्य, विभावसु, विश्वावसु, वसुपति, वसुनाथ, विसर्गवान, आदिरादित्य, लोकेश, सर्वगामी, कलाश्रय।।३८-५०।।

भोगेशो देवदेवेन्द्रो नरेन्द्रो हव्यवाहनः ।
विद्याधरेशो विद्येशो यक्षेशो रक्षणो गुरुः ॥५१॥
रक्षःकुलैकवरदो गन्धर्वकुलपूजितः ।
अप्सरोवन्दितोऽजय्यो जेता दैत्यनिवर्हणः ॥५२॥
गुह्यकेशः पिशाचेशः किन्नरीपूजितः कुजः ।
सिद्धसेव्यः समाम्नायः साधुसेव्यः सरित्पतिः ॥५३॥
ललाटाक्षो विश्वदेहो नियमी नियतेन्द्रियः ।
अर्कोऽर्ककान्तरत्नेशोऽनन्तबाहुरलोपकः ॥५४॥
अलिपात्रधरोऽनङ्गोऽप्यम्बरेशोऽम्बराश्रयः ।
अकारमातृकानाथो देवानामादिराकृतिः ॥५५॥
आरोग्यकारी चानन्दविग्रहो निग्रहो ग्रहः ।
आलोककृत् तथादित्यो वीरादित्यः प्रजाधिपः ॥५६॥
आकाशरूपः स्वाकार इन्द्रादिसुरपूजितः ।
इन्दिरापूजितश्चेन्दुरिन्द्रलोकाश्रयस्थितः ॥५७॥
ईशान ईश्वरश्चन्द्र ईश ईकारवल्लभः ।
उन्नतास्योऽप्युरुवपुरुन्नताद्रिचरो गुरुः ॥५८॥
उत्पलोऽप्युच्चलत्केतुरुच्चैर्हयगतिः सुखी ।
उकाराकारसुखितस्तथोष्मा निधिरूषणः ॥५९॥
अनूरुसारथिश्चोष्णभानुरूकारवल्लभः ।
ऋणहर्ता ॠलिहस्त ऋॠभूषणभूषितः ॥६०॥
लृप्ताङ्ग लृमनुस्थायी लृलृगण्डयुगोज्ज्वलः ।
एणाङ्कामृतदश्चीनपट्टभृद् बहुगोचरः ॥६१॥
एकचक्रधरश्चैकोऽनेकचक्षुस्तथैक्यदः ।
एकारबीजरमण एऐओष्ठामृताकरः ॥६२॥
ॐकारकारणं ब्रह्म औकारौचित्यमण्डनः ।
ओऔदन्तालिरहितो महितो महतां पतिः ॥६३॥
अंविद्याभूषणो भूष्यो लक्ष्मीशोऽम्बीजरूपवान् ।
अःस्वरूपः (५००) स्वरमयः सर्वस्वरपरात्मकः ॥६४॥

भोगेश, देवदेवेन्द्र, नरेन्द्र, हव्यवाहन, विद्याधरेश, विद्येश, यक्षेश, रक्षणगुरु, रक्ष:कुलैकवरद, गन्धर्वकुलपूजित, कुज, सिद्धसेव्य, समाम्नाय, साधुसेव्य, सरित्पति, ललाटाक्ष, विश्वदेह, नियमी, नियतेन्द्रिय, अर्क, अर्कान्तरत्नेश, अनन्तबाहु, अलोपक, अलिपात्रधर, अनङ्ग, अम्बरेश, अम्बराश्रय, अकारमातृकानाथ, देवानाम आदि आकृति, आरोग्यकारी, आनन्दविग्रह, निग्रह, ग्रह, आलोककृत, आदित्य, वीरादित्य, प्रजाधिप, आकाशरूप, स्वाकार, इन्द्रादिसुरपूजित, इन्दिरापूजित, इन्दु, इन्द्रलोकाश्रयस्थित, ईशान, ईश्वर, चन्द्र, ईश, ईकारवल्लभ, उन्नतास्य, उरुवपु, उन्नताद्रिचर, गुरु, उत्पल, उच्चलत्केतु, उच्चैर्हयगति, सुखी, उकाराकारसुखित, उष्मा, निधिरूप, अनूरुसारथि, उष्णभानु, उकारवल्लभ, ऋणहर्ता, ॠलिहस्त, ऋभूषणभूषित, क्लृप्ताङ्ग, ऌमनुस्थायी, ॡगण्डयुगोज्ज्वल, एणांकामृतद, चीनपट्टभृत्, बहुगोचर, एकवक्त्रधर, एक, अनेकचक्षु, ऐक्यद, एकारबीजरमण, एऐओष्ठामृताकर, ॐकारकारण, ब्रह्म, औकारौचित्यमण्डन, ओऔदन्तालिरहित, महित, महतां पति, अंविद्याभूषण, भूष्य, लक्ष्मीश, अंबीजरूपवान, अ:रूप, स्वरमय, सर्वस्वपरात्मक।।५१-६४।।

अंअ:स्वरूपमन्त्राङ्गः कलिकालनिवर्तकः।
कर्मैकवरदः कर्मसाक्षी कल्मषनाशनः ॥६५॥
कचध्वंसी च कपिलः कनकाचलचारकः।
कान्तः कामः कपिः क्रूरः कीरः केशनिसूदनः ॥६६॥
कृष्णः कापालिकः कुब्जः कमलाश्रयणः कुली।
कपालमोचकः काशः काश्मीरघनसारभृत् ॥६७॥
कूजत्किन्नरगीतेष्टः कुरुराजः कुलन्धरः।
कुवासी कुलकौलेशः ककाराक्षरमण्डनः ॥६८॥
खवासी खेटकेशानः खड्गमुण्डधरः खगः।
खगेश्वरश्च खचरः खेचरीगणसेवितः ॥६९॥
खरांशुः खेटकधरः खलहर्ता खवर्णकः।
गन्ता गीतप्रियो गेयो गयावासी गणाश्रयः ॥७०॥
गुणातीतो गोलगतिर्गुच्छलो गुणिसेवितः।
गदाधरो गदहरो गाङ्गेयवरदः प्रगी ॥७१॥
गिङ्गिलो गटिलो गान्तो गकाराक्षरभास्करः।
घृणिमान् घुर्घुरारावो घण्टाहस्तो घटाकरः ॥७२॥
घनच्छन्नो घनगतिर्घनवाहनतर्पितः।
ङान्तो ङेशो ङकाराङ्गश्चन्द्रकुङ्कुमवासितः ॥७३॥

चन्द्राश्रयश्चन्द्रधरोऽच्युतश्चम्पकसन्निभः ।
चामीकरप्रभश्चण्डभानुश्चण्डेशवल्लभः ॥७४॥
चञ्चच्चकोरकोकेष्टश्चपलश्चपलाश्रयः ।
चलत्पताकश्चण्डाद्रिश्चीवरैकधरोऽचरः ॥७५॥
चित्कलावर्धितश्चिन्त्यश्चिन्ताध्वंसी चवर्णवान् ।
छत्रभृच्छलहृच्छन्दः छुरिकाच्छिन्नविग्रहः ॥७६॥
जाम्बूनदाङ्गदोऽजातो जिनेन्द्रो जम्बुवल्लभः ।
जम्बारिर्जङ्गिटो जङ्गी जनलोकतमोपहः ॥७७॥
जयकारी (६००) जगद्धर्ता जरामृत्युविनाशनः ।

अंअःस्वरूपमन्त्राङ्ग, कलिकालनिवर्तक, कर्मैकवरद, कल्मषनाशन, कचध्वंसी, कपिल, कनकाचलचारक, कान्त, काम, कपि, क्रूर, कीर, केशनिसूदन, कृष्ण, कापालिक, कुब्ज, कमलाश्रयण, कुली, कपालमोचक, काश, काश्मीरधनसारभृत, कूजत्किन्नरगीतेष्ट, कुलराज, कुलन्धर, कुवासी, कुलकौलेश, ककाराक्षरमण्डन, खवासी, खेटकेशान, खड्गमुण्डधर, खग, खगेश्वर, खचर, खेचरीगणसेवित, खरांशु, खेटकधर, खलहर्ता, खवर्णक, गन्ता, गीतप्रिय, गेय, गयावासी, गणाश्रय, गुणातीत, गोलगति, गुच्छल, गुणिसेवित, गदाधर, गदहर, गाङ्गेयवरद, प्रगी, गिङ्गिल, गटिल, गान्त, गकाराक्षरभास्कर, घृणिमान, घुर्घुराराव, घण्टाहस्त, घटाकर, घनच्छन्न, घनगति, घनवाहनतर्पित, ङान्त, ङेश, ङकाराङ्ग, चन्द्रकुङ्कुमवासित, चन्द्राश्रय, चन्द्रधर, अच्युत, चम्पकसन्निभ, चामीकरप्रभ, चण्डभानु, चण्डेशवल्लभ, चंचत्कोरकोकेष्ट, चपल, चपलाश्रय, चलत्पताक, चण्डाद्रि, चीवरैकधर, अचर, चित्कलावर्धित, चिन्त्य, चिन्ता-ध्वंसी, चवर्णवान, छत्रभृत, छलहृत, छन्द, छुरिकाछिन्नविग्रह, जाम्बुनदाङ्गद, अजात, जिनेन्द्र, जम्बुवल्लभ, जम्बारि, जंगिट, जङ्गी, जनलोकतमोपह, जयकारी, जगद्धर्ता, जरामृत्युविनाशन।।६५-७८।।

जगत्राता जगद्धाता जगद्ध्येयो जगन्निधिः ॥७८॥
जगत्साक्षी जगच्चक्षुर्जगन्नाथप्रियोऽजितः ।
जकाराकारमुकुटो झञ्झाछन्नाकृतिर्झटः ॥७९॥
झिल्लीश्वरो झकारेशो झञ्झाङ्गुलिकराम्बुजः ।
ञाक्षराञ्चितष्टङ्कष्टिट्टिभासनसंस्थितः ॥८०॥
टीत्कारष्टङ्कधारी च ठःस्वरूपष्ठठाधिपः ।
डम्भरो डामरुर्डिण्डी डामरीशो डलाकृतिः ॥८१॥

डाकिनीसेवितो डाढी डढगुल्फाङ्गुलिप्रभः ।
णेशप्रियो णवर्णेशो णकारपदपङ्कजः ॥८२॥
ताराधिपेश्वरस्तथ्यस्तन्त्रीवादनतत्परः ।
त्रिपुरेशस्त्रिनेत्रेशस्त्रयीतनुरधोक्षजः ॥८३॥
तामस्तामरसेष्टश्च तमोहर्ता तमोरिपुः ।
तन्द्राहर्ता तमोरूपस्तपसां फलदायकः ॥८४॥
तुट्यादिकलनाकान्तस्तकाराक्षरभूषणः ।
स्थाणुस्थलीस्थितो नित्यं स्थविरः स्थण्डिलः स्थिरः ॥८५॥
थकारजानुरध्यात्मा देवनायकनायकः ।
दुर्जयो दुःखहा दाता दारिद्र्यच्छेदनो दमी ॥८६॥
दौर्भाग्यहर्ता देवेन्द्रो द्वादशाराब्जमध्यगः ।
द्वादशान्तैकवसतिर्द्वादशात्मा दिवस्पतिः ॥८७॥
दुर्गमो दैत्यशमनो दूरगो दुरतिक्रमः ।
दुर्ध्येयो दुष्टवंशघ्नो दयानाथो दयाकुलः ॥८८॥
दामोदरो दीधितिमान् दकाराक्षरमातृकः ।
धर्मबन्धुर्धर्मनिधिर्धर्मराजो धनप्रदः ॥८९॥
धनदेष्टो धनाध्यक्षो धरादर्शो धुरन्धरः ।
धूर्जटीक्षणवासी च धर्मक्षेत्रो धराधिपः ॥९०॥
धाराधरो धुरीणश्च धर्मात्मा धर्मवत्सलः ।
धराभृद्वल्लभो धर्मी धकाराक्षरभूषणः ॥९१॥
नर्मप्रियो नन्दिरुद्रो(७००)नेता नीतिप्रियो नयी ।

जगत्त्राता, जगद्धाता, जगद्ध्येय, जगन्निधि, जगत्साक्षी, जगच्चक्षु, जगन्नाथप्रिय, अजित, जकाराकारमुकुट, झञ्झाछन्नाकृति, झट, झिल्लीश्वर, झकारेश, झञ्झाङ्गुलिकराम्बुज, ञाक्षराञ्चित, टङ्क, टिट्टिभासनसंस्थित, टीत्कार, टङ्कधारी, ठस्वरूप, ठठाधिप, डम्भर, डामरु, डिण्डी, डामरीश, डलाकृति, डाकिनीसेवित, डाढी, डढगुल्फाङ्गुलिप्रभ, णेशप्रिय, णवर्णेश, णकारपदपङ्कज, ताराधिपेश्वर, तथ्य, तन्त्रीवादनतत्पर, त्रिपुरेश, त्रिनेत्रेश, त्रयीतनु, अधोक्षज, ताम, तामरसेष्ट, तमोहर्ता, तमोरिपु, तन्द्राहर्ता, तमोरूप, तपःफलदायक, तुट्यादिकलनाकान्त, तकाराक्षरभूषण, स्थाणुस्थलीस्थित, नित्य, स्थविर, स्थण्डिल, स्थिर, थकारजानु, अध्यात्मा, देवनायक, नायक, दुर्जय, दुःखहा, दाता, दारिद्र्यच्छेदन, दमी, दौर्भाग्यहर्ता, देवेन्द्र, द्वादशाराब्ज-मध्यग, द्वादशान्तैकवसति, द्वादशात्मा,

दिवस्पति, दुर्गम, दैत्यशमन, दूरग, दुरतिक्रम, दुर्ध्येय, दुष्टवंशघ्न, दयानाथ, दयाकुल, दामोदर, दीधितिमान, दकाराक्षरमातृक, धर्म-बन्धु, धर्मनिधि, धर्मराज, धनप्रद, धनदेष्ट, धनाध्यक्ष, धरादर्श, धुरन्धर, धूर्जटी, क्षणवासी, धर्मक्षेत्र, धराधिप, धाराधर, धुरीण, धर्मात्मा, धर्मवत्सल, धराभृद्वल्लभ, धर्मी, धकाराक्षरभूषण, नर्मप्रिय, नन्दिरुद्र, नेता, नीतिप्रिय, नयी।।७९-९१।।

नलिनीवल्लभो नुन्नो नाट्यकृन्नाट्यवर्धनः ।।९२।।
नरनाथो नृपस्तुत्यो नभोगामी नमःप्रियः ।
नमोऽन्तो नमितारातिर्नरनारायणाश्रयः ।।९३।।
नारायणो नीलरुचिर्नम्राङ्गो नीललोहितः ।
नादरूपो नादमयो नादबिन्दुस्वरूपकः ।।९४।।
नाथो नागपतिर्नागो नगराजाश्रितो नगः ।
नाकस्थितोऽनेकवपुर्नकाराक्षरमातृकः ।।९५।।
पद्माश्रयः परं ज्योतिः पीवरांसः पुटेश्वरः ।
प्रीतिप्रियः प्रेमकरः प्रणतार्तिभयापहः ।।९६।।
परत्राता परध्वंसी पुरारिः पुरसंस्थितः ।
पूर्णानन्दमयः पूर्णतेजः पूर्णेश्वरीश्वरः ।।९७।।
पटोलवर्णः पटिमा पाटलेशः परात्मवान् ।
परमेशवपुः प्रांशुः प्रमत्तः प्रणतेष्टदः ।।९८।।
अपारपारदः पीनः पीताम्बरप्रियः पविः ।
पाचनः पिचुलः प्लुष्टः प्रमदाजनसौख्यदः ।।९९।।
प्रमोदी प्रतिपक्षघ्नः पकाराक्षरमातृकः ।
फलं भोगापवर्गस्य फलिनीशः फलात्मकः ।।१००।।
फुल्लदम्भोजमध्यस्थः फुल्लदम्भोजधारकः ।
स्फुटज्ज्योतिः स्फुटाकारः स्फटिकाचलचारकः ।।१०१।।
स्फूर्जत्किरणमाली च फकाराक्षरपार्श्वकः ।
बालो बलप्रियो बान्तो बिलध्वान्तहरो बली ।।१०२।।
बालादिर्बर्बरध्वंसी बब्बोलामृतपानकः ।
बुधो बृहस्पतिर्वृक्षो बृहदश्वो बृहद्गतिः ।।१०३।।
बपृष्ठो भीमरूपश्च भामयो भेश्वरप्रियः ।
भगो भृगुर्भृगुस्थायी भार्गवः कविशेखरः ।।१०४।।

भाग्यदो भानुदीप्ताङ्गो भनाभिश्च भमातृकः।
महाकालो(८००)महाध्यक्षो महानादो महामतिः ॥१०५॥

नलिनीवल्लभ, नुन्न, नाट्यकृत, नाट्यवर्धन, नरनाथ, नृपस्तुत्य, नभोगामी, नमःप्रिय, नमोऽन्त, नमिताराति, नरनारायणाश्रय, नारायण, नीलरुचि, नम्राङ्ग, नीललोहित, नादरूप, नादमय, नादबिन्दुस्वरूप, नाथ, नागपति, नाग, नगराजाश्रित, नग, नाकस्थित, अनेकवपु, नकाराक्षरमातृका, पद्माश्रय, परंज्योति, पीवरांस, पुटेश्वर, प्रीतिप्रिय, प्रेयकर, प्रणतार्तिभयापह, परत्राता, परध्वंसी, पुरारि, पुरसंस्थित, पूर्णानन्दमय, पूर्णतेज, पूर्णेश्वरीश्वर, पटोलवर्ण, पटिमा, पाटलेश, परात्मवान, परमेशवपु, प्रांशु, प्रमत्त, प्रणतेष्टद, अपारपारद, पीन, पीताम्बरप्रिय, पवि, पाचन, पिचुल, प्लुष्ट, प्रमदाजनसौख्यद, प्रमोदी, प्रतिपक्षघ्न, पकाराक्षरमातृक, भोगापवर्ग-फल, फलिनीश, फलात्मक, फुल्लदम्भोजमध्यस्थ, फुल्लदम्भोजधारक, स्फुटज्ज्योति, स्फुटाकार, स्फटिकाचलचारक, स्फूर्जत्किरणमाली, फकाराक्षरपार्श्वक, बाल, बलप्रिय, बान्त, बिलध्वान्तहर, बली, बालादिबर्बरध्वंसी, बव्बोलामृतपानक, बुध, बृहस्पति, वृक्ष, बृहदश्व, बृहद्गति, बपृष्ठ, भीमरूप, भामय, भेश्वरप्रिय, भग, भृगु, भृगुस्थायी, भार्गव, कविशेखर, भाग्यद, भानुदीप्ताङ्ग, भनाभि, भमातृक, महाकाल, महाध्यक्ष, महानाद, महामति।।९३-१०५।।

महोज्ज्वलो मनोहारी मनोगामी मनोभवः।
मानदो मल्लहा मल्लो मेरुमन्दरमन्दिरः ॥१०६॥
मन्दारमालाभरणो माननीयो मनोमयः।
मोदितो मदिराहारो मार्तण्डो मुण्डमुण्डितः ॥१०७॥
महावराहो मीनेशो मेषगो मिथुनेष्टदः।
मदालसोऽमरस्तुत्यो मुरारिवरदो मनुः ॥१०८॥
माधवो मेदिनीशश्च मधुकैटभनाशनः।
माल्यवान् मेघनो मारो मेधावी मुसलायुधः ॥१०९॥
मुकुन्दो मुररीशानो मरालफलदो मदः।
मदनो मोदकाहारो मकाराक्षरमातृकः ॥११०॥
यज्वा यज्ञेश्वरो यान्तो योगिनां हृदयस्थितः।
यात्रिको यज्ञफलदो यायी यामलनायकः ॥१११॥
योगनिद्राप्रियो योगकारणं योगिवत्सलः।
यष्टिधारी च यन्त्रेशो योनिमण्डलमध्यगः ॥११२॥
युयुत्सुजयदो योद्धा युगधर्मानुवर्तकः।

योगिनीचक्रमध्यस्थो युगलेश्वरपूजित: ॥११३॥
यान्तो यक्षैकतिलको यकाराक्षरभूषण: ।
रामो रमणशीलश्च रत्नभानू रुरुप्रिय: ॥११४॥
रत्नमौली रत्नतुङ्गो रत्नपीठान्तरस्थित: ।
रत्नांशुमाली रत्नाढ्यो रत्नकङ्कणनूपुर: ॥११५॥
रत्नाङ्गदलसद्बाहू रत्नपादुकमण्डित: ।
रोहिणीशाश्रयो रक्षाकरो रात्रिञ्चरान्तक: ॥११६॥
रकाराक्षररूपश्च लज्जाबीजाश्रितो लव: ।
लक्ष्मीभानुर्लतावासी लसत्कान्तिश्च लोकभृत् ॥११७॥
लोकान्तकहरो लामावल्लभो लोमशोऽलिग: ।
लिङ्गेश्वरो लिङ्गनादो लीलाकारी ललम्बुस: ॥११८॥
लक्ष्मीवाँल्लोकविध्वंसी लकाराक्षरभूषण: ।
वामनो वीरवीरेन्द्रो वाचालो(९००)वाक्पतिप्रिय: ॥११९॥

महोज्ज्वल, मनोहारी, मनोगामी, मनोभव, मानद, मल्लहा, मल्ल, मेरुमन्दरमन्दिर, मन्दारमालाभरण, माननीय, मनोमय, मोदित, मदिराहार, मार्तण्ड, मुण्डमुण्डित, महा-वराह, मीनेश, मेषग, मिथुनेष्टद, मदालस, अमरस्तुत्य, मुरारिवरद, मनु, माधव, मेदि-नीश, मधुकैटभनाशन, माल्यवान, मेघन, मार, मेधावी, मुसलायुध, मुकुन्द, मुररीशान, मरालफलद, मद, मोदन, मोदकाहार, मकाराक्षर, मातृक, यज्वा, यज्ञेश्वर, यान्त, योगिनां हृदयस्थित, यात्रिक, यज्ञफलद, यायी, यामलनायक, योगनिद्राप्रिय, योगकारण, योगिवत्सल, यष्टिधारी, यन्त्रेश, योनिमण्डलमध्यग, युयुत्सुजयद, योद्धा, युग धर्मानुवर्तक, योगिनीचक्रमध्यस्थ, युगलेश्वरपूजित, यान्त, यक्षैकतिलक, यकाराक्षरभूषण, राम, रमणशील, रत्नभानु, रुरुप्रिय, रत्नमौली, रत्नतुङ्ग, रत्नपीठान्तरस्थित, रत्नांशुमाली, रत्नाढ्य, रत्नकङ्कणनूपुर, रत्नाङ्गलसद् वाहु, रत्नपादुकमण्डित, रोहिणीशाश्रय, रक्षाकर, रात्रिंचरान्तक, रकाराक्षरस्वरूप, लज्जा-बीजाश्रित, लव, लक्ष्मीभानु, लतावासी, लसत्कान्ति, लोकभृत्, लोकान्तकहर, लामावल्लभ, लोमश, अलिग, लिङ्गेश्वर, लिङ्गनाद, लीलाकारी, ललम्बुस, लक्ष्मीवान, लोकविध्वंसी, लकाराक्षरभूषण, वामन, वीरवीरेन्द्र, वाचाल, वाक्पतिप्रिय।।१०६-११९।।

वाचामगोचरो वान्तो वीणावेणुधरो वनम् ।
वाग्भवो वालिशध्वंसी विद्यानायकनायक: ॥१२०॥
वकारमातृकामौलि: शाम्भवेष्टप्रद: शुक: ।
शशी शोभाकर: शान्त: शान्तिकृच्छमनप्रिय: ॥१२१॥

शुभङ्करः शुक्लवस्त्रः श्रीपतिः श्रीयुतः श्रुतः ।
श्रुतिगम्यः शरद्बीजमण्डितः शिष्टसेवितः ॥१२२॥
शिष्टाचारः शुभाचारः शेषः शेवालताडनः ।
शिपिविष्टः शिविः शुक्रसेव्यः शाक्षरमातृकः ॥१२३॥
षडाननः षट्करकः षोडशस्वरभूषितः ।
षट्पदस्वनसन्तोषी षडाम्नायप्रवर्तकः ॥१२४॥
षड्रसास्वादसन्तुष्टः षकाराक्षरमातृकः ।
सूर्यभानुः सूरभानुः सूरिभानुः सुखाकरः ॥१२५॥
समस्तदैत्यवंशघ्नः समस्तसुरसेवितः ।
समस्तसाधकेशानः समस्तकुलशेखरः ॥१२६॥
सुरसूर्यः सुधासूर्यः स्वःसूर्यः साक्षरेश्वरः ।
हरित्सूर्यो हरिद्भानुर्हविर्भुग् हव्यवाहनः ॥१२७॥
हालासूर्यो होमसूर्यो हुतसूर्यो हरीश्वरः ।
ह्रांबीजसूर्यो ह्रींसूर्यो हकाराक्षरमातृकः ॥१२८॥
ळंबीजमण्डितः सूर्यः क्षोणीसूर्यः क्षमापतिः ।
क्षुत्सूर्यः क्षान्तसूर्यश्च ळंक्षःसूर्यः सदाशिवः ॥१२९॥
अकारसूर्यः क्षःसूर्यः सर्वसूर्यः कृपानिधिः ।
भूःसूर्यश्च भुवःसूर्यः स्वःसूर्यः सूर्यनायकः ॥१३०॥
ग्रहसूर्यः ऋक्षसूर्यो लग्नसूर्यो महेश्वरः ।
राशिसूर्यो योगसूर्यो मन्त्रसूर्यो मनूत्तमः ॥१३१॥
तत्त्वसूर्यः परासूर्यो विष्णुसूर्यः प्रतापवान् ।
रुद्रसूर्यो ब्रह्मसूर्यो वीरसूर्यो वरोत्तमः ॥१३२॥
धर्मसूर्यः कर्मसूर्यो विश्वसूर्यो विनायकः(१०००)।

वाचामगोचर, वान्त, वीणावेणुधर, वन, वाग्भव, वालिशध्वंसी, विद्यानायकनायक, वकारमातृकामौलि, शाम्भवेष्टप्रद, शुक, शशी, शोभाकर, शान्त, शान्तिकृत्, शमनप्रिय, शुभङ्कर, शुक्लवस्त्र, श्रीपति, श्रीयुत, श्रुत, श्रुतिगम्य, शरद् बीजमण्डित, शिष्टसेवित, शिष्टाचार, शुभाचार, शेष, शेवालताड़न, शिपिविष्ट, शिवि, शुक्रसेव्य, शाक्षरमातृक, षडानन, षट्करक, षोड़शस्वरभूषित, षट्पदस्वनसन्तोषी, षडाम्नायप्रवर्तक, षड्रसास्वाद-सन्तुष्ट, षकाराक्षरमातृक, सूर्यभानु, सूरभानु, सूरिभानु, सुखाकर, समस्तदैत्यवंशघ्न, समस्तसुरसेवित, समस्तसाधकेशान, समस्तकुलशेखर, सुरसूर्य, सुधासूर्य, स्वःसूर्य,

साक्षरेश्वर, हरित्सूर्य, हरिद्भानु, हविर्भुक्, हव्यवाहन, हालासूर्य, होमसूर्य, हुतसूर्य, हरीश्वर, ह्रांबीजसूर्य, ह्रीँसूर्य, हकाराक्षरमातृक, ळंबीजमण्डितसूर्य, क्षोणीसूर्य, क्षमापति, क्षुत्सूर्य, क्षान्तसूर्य, ळंक्षंसूर्य, सदाशिव, अकारसूर्य, क्ष:सूर्य, सर्वसूर्य, कृपानिधि, भू:सूर्य, भुव:सूर्य, स्व:सूर्य, सूर्यनायक, ग्रहसूर्य, ऋक्षसूर्य, लग्नसूर्य, महेश्वर, राशिसूर्य, योगसूर्य, मन्त्रसूर्य, मनूत्तम, तत्त्वसूर्य, परासूर्य, विष्णुसूर्य, प्रतापवान, रुद्रसूर्य, ब्रह्मसूर्य, वीरसूर्य, वरोत्तम, धर्मसूर्य, कर्मसूर्य, विश्वसूर्य, विनायक।।१२०-१३२।।

फलश्रुति:

इतीदं देवदेवेशि मन्त्रनामसहस्त्रकम् ।।१३३।।
देवदेवस्य सवितु: सूर्यस्यामिततेजस: ।
सर्वसारमयं दिव्यं ब्रह्मतेजोविवर्धनम् ।।१३४।।
ब्रह्मज्ञानमयं पुण्यं पुण्यतीर्थफलप्रदम् ।
सर्वयज्ञफलैस्तुल्यं सर्वसारस्वतप्रदम् ।।१३५।।
सर्वश्रेयस्करं लोके कीर्तिदं धनदं परम् ।
सर्वव्रतफलोद्रिक्तं सर्वधर्मफलप्रदम् ।।१३६।।

फलश्रुति—हे देवदेवेशि! यह मन्त्र नामसहस्त्र समाप्त हुआ। अमित तेजस्वी सूर्यदेव का सर्वसारमय दिव्य सहस्त्रनाम ब्रह्म-तेजविवर्धक है। यह ब्रह्मज्ञानमय, पुनीत, पुण्यफलप्रदायक है। सभी यज्ञ के फलों के समान है। सभी सारस्वत-प्रदायक है। सर्वश्रेयष्कर, संसार में कीर्तिप्रद, धनप्रद और श्रेष्ठ है। सर्वव्रतफलों का दायक और सर्वधर्म फलप्रद है।।१३३-१३६।।

सर्वरोगहरं देवि शरीरारोग्यवर्धनम् ।
प्रभावमस्य देवेशि नाम्नां साहस्त्रकस्य च ।।१३७।।
कल्पकोटिशतैर्वर्षैर्नैव शक्नोमि वर्णितुम् ।
यं यं काममभिध्यायेद् देवानामपि दुर्लभम् ।।१३८।।
तं तं प्राप्नोति सहसा पठनेनास्य पार्वति ।
य: पठेच्छ्रावयेद्वापि शृणोति नियतेन्द्रिय: ।।१३९।।
स वीरो धर्मिणां राजा लक्ष्मीवानपि जायते ।
धनवाञ्जायते लोके पुत्रवान् राजवल्लभ: ।।१४०।।
आयुरारोग्यवान् नित्यं स भवेत् संपदां पदम् ।

देवि! यह सर्वरोगहर एवं शरीरारोग्यवर्धक है। इस सहस्त्रनाम के प्रभाव का वर्णन करोड़ कल्प सौ वर्ष में भी मैं नहीं कर सकता। देवों को भी दुर्लभ जिस-जिस कामना

से इसका पाठ किया जायगा, वे सभी इसके पाठमात्र से प्राप्त होती हैं। जो नियतेन्द्रिय होकर इसका पाठ करता है या सुनाता है या सुनता है, वह वीर साधक धार्मिकों का राजा एवं लक्ष्मीवान होता है। संसार में वह धनवान होता है, पुत्रवान होता है और राजाओं का प्रिय होता है।।१३७-१४०।।

रवौ पठेन्महादेवि सूर्यं संपूज्य कौलिकः ॥१४१॥
सूर्योदये रविं ध्यात्वा लभेत् कामान् यथेप्सितान् ।
संक्रान्तौ यः पठेद् देवि त्रिकालं भक्तिपूर्वकम् ॥१४२॥
इह लोके श्रियं भुक्त्वा सर्वरोगैः प्रमुच्यते ।
सप्तम्यां शुक्लपक्षे यः पठेदस्तङ्गते रवौ ॥१४३॥
सर्वारोगयमयं देहं धारयेत् कौलिकोत्तमः ।

आयु-आरोग्यवान होकर नित्य सम्पत्तियों से युक्त रहता है। हे महादेवि! रविवार में सूर्य को पूजकर जो कौलिक इसका पाठ उदीयमान सूर्य का ध्यान करते हुए करता है, वह यथेष्ट कामनाओं को पूरा कर लेता है। संक्रान्ति के अवसर पर जो इसका पाठ भक्तिपूर्वक तीनों कालों में करता है, वह इस संसार में श्रीसम्पदा का भोग करके सभी रोगों से मुक्त होता है। रविवार की सप्तमी तिथि, शुक्ल पक्ष में सूर्यास्त काल में जो इसका पाठ करता है, वह कौलिक पूर्ण आरोग्यमय शरीर धारण करता है।।१४१-१४३।।

व्यतीपाते पठेद् देवि मध्याह्ने संयतेन्द्रियः ॥१४४॥
धनं पुत्रान् यशो मानं लभेत् सूर्यप्रसादतः ।
चक्रार्चने पठेद् देवि जपन् मूलं रविं स्मरन् ॥१४५॥
रवीभूत्वा महाचीनक्रमाचारविचक्षणः ।
सर्वशत्रून् विजित्याशु लभेल्लक्ष्मीं प्रतापवान् ॥१४६॥

व्यतीपात योग में मध्याह्न में संयतेन्द्रिय होकर जो इसका पाठ करता है, उसे सूर्य की कृपा से धन, पुत्र, यश और मान मिलता है। हे देवि! महाचीनक्रम के आचार में दक्ष कौलिक यदि चर्क्राचन में इसका पाठ करता है एवं सूर्य का स्मरण करते हुए मूल मन्त्र का जप करता है, वह सूर्य के समान होकर सभी शत्रुओं को जीतकर लक्ष्मीयुक्त एवं प्रतापी होता है।।१४४-१४६।।

यः पठेत् परदेशस्थो वटुकार्चनतत्परः ।
कान्ताश्रितो वीतभयो भवेत् स शिवसन्निभः ॥१४७॥
शतावर्तं पठेद्यस्तु सूर्योदययुगान्तरे ।
सविता सर्वलोकेशो वरदः सहसा भवेत् ॥१४८॥

बहुनात्र किमुक्तेन पठनादस्य पार्वति ।
इह लक्ष्मीं सदा भुक्त्वा परत्राप्नोति तत्पदम् ॥१४९॥

परदेश में वटुक के पूजन में तत्पर शक्ति के साथ निर्भय होकर जो इसका पाठ करता है, वह शिव के समान हो जाता है। एक युग के अन्त और दूसरे युग के प्रारम्भ अर्थात् युगादि काल में सूर्योदय के समय जो इसका पाठ सौ बार करता है, उसके लिये सर्वलोकेश सविता सहसा वरद होते हैं। बहुत कहने से क्या लाभ; हे पार्वति! इसके पाठ से साधक इस संसार में सदा लक्ष्मी का भोग करता है और देहान्त के बाद सूर्यलोक प्राप्त करता है।।१४७-१४९।।

रवौ देवि लिखेद्भूर्जे मन्त्रनामसहस्रकम् ।
अष्टगन्धेन दिव्येन नीलपुष्पहरिद्रया ॥१५०॥
पञ्चामृतौषधीभिश्च नृयुक्पीयूषबिन्दुभिः ।
विलिख्य विधिवन्मन्त्री यन्त्रमध्येऽर्णवेष्टितम् ॥१५१॥
गुटीं विधाय संवेष्ट्य मूलमन्त्रमनुस्मरन् ।
कन्याकर्तितसूत्रेण वेष्टयेद्रक्तलाक्षया ॥१५२॥
सुवर्णेन च संवेष्ट्य पञ्चगव्येन शोधयेत् ।
साधयेन्मन्त्रराजेन धारयेन्मूर्ध्नि वा भुजे ॥१५३॥

हे देवि! रविवार में इस मन्त्रनामसहस्र को भोजपत्र पर दिव्य अष्टगन्ध में नीला पुष्प, हल्दी, पञ्चामृत, औषधि, नृयुक्पीयूष बिन्दु के मिश्रण से विधिवत् लिखकर यन्त्र में अर्णवेष्टित करके गुटिका बनाकर मूल मन्त्र का स्मरण करते हुए कुमारी कन्या द्वारा काते सूत से वेष्टित करके लाह से वेष्टित करे। तब सोने से मढ़वाकर पञ्चगव्य से उसका शोधन करे। मूलमन्त्र से अभिमन्त्रित करे। मूर्धा में या भुजा में धारण करे।।१५०-१५३।।

किं किं न साधयेद् देवि यन्ममापि सुदुर्लभम् ।
कुष्ठरोगी च शूली च प्रमेही कुक्षिरोगवान् ॥१५४॥
भगन्धरातुरोऽप्यर्शी अश्मरीवांश्च कृच्छ्रवान् ।
मुच्यते सहसा धृत्वा गुटीमेतां सुदुर्लभाम् ॥१५५॥
वन्ध्या च काकवन्ध्या च मृतवत्सा च कामिनी ।
धारयेद्गुटिकामेतां वक्षसि स्मयतर्पिता ॥१५६॥
वन्ध्या लभेत् सुतं कान्तं काकवन्ध्यापि पार्वति ।
मृतवत्सा बहून् पुत्रान् सुरूपांश्च चिरायुषः ॥१५७॥
रणे गत्वा गुटीं धृत्वा शत्रूञ्जित्वा लभेच्छ्रियम् ।
अक्षताङ्गो महाराजः सुखी स्वपुरमाविशेत् ॥१५८॥

ऐसा करने से साधक को मेरे लिये भी दुर्लभ पदार्थ प्राप्त होते हैं। कुष्ठरोगी, शूली, प्रमेही, कुक्षिरोगी, भगन्दर से आतुर, अर्शरोगी, अश्मरी रोगी, कृच्छ्रवान इस दुर्लभ गुटिका को धारण करके तुरन्त रोग मुक्त हो जाते हैं। वन्ध्या, काकवन्ध्या, मृतवत्सा कामिनी यदि इस गुटिका को मुझे अर्पित करके वक्ष में धारण करती है तो वन्ध्या को सुन्दर पुत्र होता है। काकवन्ध्या को भी सुन्दर पुत्र होता है। मृतवत्सा को बहुत से सुन्दर दीर्घायु पुत्र प्राप्त होते हैं। गले में इस गुटिका धारण करके यदि युद्ध में जाये तो शत्रु को जीतकर विजयश्री लाभ करता है। महाराजा बिना किसी चोट-घाव के अपने नगर में सुखपूर्वक लौट आता है।।१५४-१५८।।

यो धारयेद् भुजे नित्यं राजलोकवशङ्करीम्।
गुटिकां मोहनाकर्षस्तम्भनोच्चाटनक्षमाम् ।।१५९।।
स भवेत् सूर्यसङ्काशो महसा महसां निधिः।
धनेन धनदो देवि विभवेन च शंकरः ।।१६०।।
श्रियेन्द्रो यशसा रामः पौरुषेण च भार्गवः।
गिरा बृहस्पतिर्देवि नयेन भृगुनन्दनः ।।१६१।।
बलेन वायुसङ्काशो दयया पुरुषोत्तमः।
आरोग्येण घटोद्भूतिः कान्त्या पूर्णेन्दुसन्निभः ।।१६२।।

राजलोक-वशंकरी इस गुटिका जो नित्य अपनी भुजा में धारण किए रहता है, उसमें मोहन, आकर्षण, स्तम्भन और उच्चाटन की क्षमता होती है। वह सूर्य के समान प्रकाशमान प्रकाशनिधि होकर धन में कुबेर के समान और वैभव में शंकर के समान हो जाता है। श्रीमानों में इन्द्र, यशस्वियों में राम, पौरुष में परशुराम, वाणी में वृहस्पति, न्याय में शुक्राचार्य, बल में वायु, दया में पुरुषोत्तम, आरोग्य में अगस्त्य एवं कान्ति में पूर्णिमा के चाँद के समान होता है।।१५९-१६२।।

धर्मेण धर्मराजश्च रत्नै रत्नाकरोपमः।
गाम्भीर्येण तथाम्भोधिर्दातृत्वेन बलिः स्वयम् ।।१६३।।
सिद्ध्या श्रीभैरवः साक्षादानन्देन चिदीश्वरः।
किं प्रलापेन बहुना पठेद्वा धारयेच्छिवे ।।१६४।।
शृणुयाद् यः परं दिव्यं सूर्यनामसहस्रकम्।
स भवेद् भास्करः साक्षात् परमानन्दविग्रहः ।।१६५।।
स्वतन्त्रः स प्रयात्यन्ते तद्विष्णोः परमं पदम्।
इदं दिव्यं महत् तत्त्वं सूर्यनामसहस्रकम् ।।१६६।।

धर्म में धर्मराज के समान, रत्नों में रत्नाकर-जैसा, गाम्भीर्य में सागर-जैसा, दाताओं में बलि के समान होता है। सिद्धों में श्रीभैरव, साक्षात् आनन्द में चिदीश्वर जैसा होता है। बहुत प्रलाप से क्या लाभ? जो इसका पाठ करता है या धारण करता है या श्रवण करता है, वह सूर्यनामसहस्र के परम दिव्य प्रभाव से साक्षात् सूर्य के समान परमानन्द विग्रह होता है। देहान्त के बाद वह मुक्त होकर विष्णु के परम पद को प्राप्त करता है। सूर्य नाम सहस्र का यह महान् दिव्य तत्त्व है।।१६३-१६६।।

अप्रकाश्यमदातव्यमवक्तव्यं दुरात्मने।
अभक्ताय कुचैलाय परशिष्याय पार्वति ॥१६७॥
कर्कशायाकुलीनाय दुर्जनायाघबुद्धये।
गुरुभक्तिविहीनाय निन्दकाय शिवागमे ॥१६८॥
देयं शिष्याय शान्ताय गुरुभक्तिपराय च।
कुलीनाय सुभक्ताय सूर्यभक्तिरताय च ॥१६९॥
इदं तत्त्वं हि तत्त्वानां वेदागमरहस्यकम्।
सर्वमन्त्रमयं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥१७०॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये सूर्यसहस्रनामनिरूपणं नाम चतुस्त्रिंश: पटल:॥३४॥

यह सहस्रनाम दुष्टों को बतलाने योग्य, देने योग्य या कहने योग्य इसे नहीं है। अभक्त, कुचैल, परशिष्य को भी नहीं बतलाना चाहिये। कर्कश, अकुलीन, दुर्जन, पापबुद्धि, गुरुभक्तिविहीन, शिवागमों के निन्दक को यह बतलाने योग्य नहीं है। शान्त, गुरुभक्ति-परायण, कुलीन, उत्तम भक्त, सूर्यभक्ति में लग्न शिष्य को ही इसे देना चाहिये। यह तत्त्वों का तत्त्व, वेदों एवं आगमों का रहस्य, सर्व-मन्त्रमय होने के कारण पूर्णत: गोप्य है। इसे अपनी योनि के समान ही गुप्त रखना चाहिये।।१६७-१७०।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में सूर्यसहस्रनाम निरूपण नामक चतुस्त्रिंश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ पञ्चत्रिंशः पटलः

सूर्यमूलमन्त्रस्तोत्रम्

स्तोत्रमाहात्म्यम्

श्रीभैरव उवाच

अधुना देवि वक्ष्यामि स्तोत्रं मन्त्रनिरूपणम्।
पञ्चमाङ्गमयं तत्त्वं सर्वापत्तारणं ध्रुवम् ॥१॥
अष्टसिद्धिमयं साध्यं सिद्धिदं बुद्धिवर्धनम्।
सर्वामयप्रशमनं तेजोबलविवर्धनम् ॥२॥
महादारिद्र्यहरणं पुत्रपौत्रप्रदं शिवे।
भोगापवर्गदं लोके रहस्यं मम पार्वति ॥३॥

स्तोत्र-माहात्म्य—श्रीभैरव ने कहा कि हे देवि! अब मैं सूर्यस्तोत्ररूप मन्त्र का निरूपण करता हूँ। यह पञ्चाङ्गमय तत्त्व सभी आपदाओं से निश्चित रूप से रक्षा करता है। यह स्तोत्र अष्ट सिद्धिमय, साध्य, सिद्धिदायक, बुद्धिवर्धक, सर्वरोग-प्रशामक, तेज और बल का वर्धक है। हे शिवे! यह इस संसार में महादारिद्र्यहारी, पुत्र-पौत्रप्रदायक, भोग और चतुर्वर्ग को देने वाला है।।१-३।।

विनियोगः

स्तोत्रस्यास्य महादेवि ऋषिर्ब्रह्मा समीरितः।
गायत्र्यं छन्द इत्युक्तं देवता सविता स्मृतः ॥४॥
बीजं च व्योषमाख्यातं माया शक्तिरितीरिता।
प्रणवः कीलकं देवि विश्वं दिग्बन्धनं ततः।
भोगापवर्गसिद्ध्यर्थं विनियोगः प्रकीर्तितः ॥५॥

अस्य श्रीसूर्यस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्र्यं छन्दः, सविता देवता, ह्रां बीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकं, नमो दिग्बन्धनं, भोगापवर्गसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

विनियोग—हे महादेवि! इस सूर्यस्तोत्र के ऋषि ब्रह्मा कहे गये हैं। गायत्री इसका छन्द कहा गया है एवं सविता देवता कहे गये हैं। व्योष = ह्रां बीज एवं माया = ह्रीं

शक्ति कहा गया है। प्रणव = ॐ इसका कीलक एवं विश्व = नम: दिग्बन्धन कहा गया है। भोग एवं अपवर्ग की सिद्धि हेतु इसका विनियोग किया जाता है।।४-५।।

ध्यानम्

देदीप्यमानमुकुटं मणिकुण्डलमण्डितम्।
विस्फुरालिङ्गितं ध्यात्वा स्तोत्रमेतदुदीरयेत्॥६॥
कल्पान्तानलकोटिभास्वरमुखं सिन्दूरधूलीजपा-
वर्णं रत्नकिरीटिनं द्विनयनं श्वेताब्जमध्यासनम्।
नानाभूषणभूषितं स्मितमुखं रक्ताम्बरं चिन्मयं
सूर्यं स्वर्णसरोजरत्नकलशौ दोर्भ्यां दधानं भजे॥७॥

ध्यान—सविता का मुकुट देदीप्यमान है। मणि-कुण्डलयुक्त कर्ण हैं। ये विस्फुरा से आलिङ्गित हैं। इस प्रकार का सूर्य का ध्यान करके स्तोत्र का पाठ करना चाहिये। इनका मुख-मण्डल करोड़ों कल्पान्त पावक ज्वाला के समान प्रकाशमान है। सिन्दूर और अड़हुल-फूल के समान इनका लाल वर्ण है। रत्नजटित किरीट माथे पर है। दो नेत्र हैं। श्वेत कमल के मध्य में इनका आसन है। विविध आभूषणों से ये सुशोभित हैं। मुख मुस्कानयुक्त है। चिन्मय लाल वस्त्र है। इनके एक हाथ में स्वर्णकमल है और दूसरे हाथ में रत्नकलश है।।६-७।।

स्तोत्रम्

वेदाद्यं नादबिन्दुस्फुरितशशिकलालङ्कृतं मन्त्रमूलं
यो ध्यायेद्वेदविद्याध्ययनविरहितो जाड्यपूर्णो दरिद्रः।
सद्यः सः क्षोणिपालोज्ज्वलमुकुटलसद्रत्ननीराजिताङ्घ्रि-
र्वागीशं जेष्यते द्राक् सुरसदसि सुधापूरिताभिश्च वाग्भिः॥८॥
शिवाकारं वह्निं शशधरकलाबिन्दुललितं
विभो ध्यायेच्चित्ते मनुमुकुटरत्नं जपति यः।
स संग्रामे जित्वा सकलरिपुसङ्घातमचिराद्
भवेत् सम्राड् भूमौ व्रजति हि परासुस्तव पदम्॥९॥

'ॐ ह्रां ह्रीं सः' से प्रारम्भ होने वाले मूल मन्त्र का ध्यान यदि वेदविद्या अध्ययनरहित जड़तायुक्त दरिद्र भी करता है तो तुरन्त रत्नजटित मुकुटयुक्त भूपाल भी उसके चरण में शीश झुकाते हैं। वह विद्वानों को जीत लेता है। वह देवताओं के समान अमृतपूर्ण वाणी बोलने वाला हो जाता है। मन्त्रमुकुटरत्न 'ह्रां' का जप जो विभु का ध्यानसहित करता

है, वह थोड़े ही दिनों में युद्ध में शत्रुसमूह को जीतकर सम्राट होकर पृथ्वी पर रहता है एवं श्रेष्ठ स्तुत्य पद को प्राप्त करता है।।८-९।।

व्योमानलारूढमिति स्मरेद्यो वामाक्षिबिन्द्वीन्दुकलाभिरामम् ।
गद्यादिपद्यामृतवर्षिणी वाग्वक्त्रे विभो तस्य करस्थिता श्रीः ॥१०॥

शक्तिं भक्तियुतो जपेद्यदि मनोर्मध्ये स्मरन् भास्करं
रोगार्तो निजशक्तिकामरसिको हालारसेनालसः ।
वीरो वीर्यमयो निरामयवपुर्भूत्वेह भुक्त्वा श्रियं
स्वर्गस्त्रीजनवीजितः स भगवन् धामाव्ययं यास्यति ॥११॥

जो 'ह्रीं' का जप ध्यानपूर्वक करता है, उसकी वाणी गद्य-पद्यमयी अमृतवर्षिणी होती है। उसके मुख में सरस्वती का और हाथ में लक्ष्मी का वास होता है। सूर्य के ध्यानपूर्वक भक्तियुक्त होकर जो मन्त्र के मध्य में स्थित 'सः' का जप करता है, वह रोगार्त, अपनी शक्ति में काम रसिक, मद्यपान से आलसी कौलिक वीर नीरोग एवं बलवान होकर संसार में समस्त वैभव का भोग करता है एवं स्वर्ग की स्त्रियों को जीत लेता है और अन्त में भगवान् के अव्यय धाम में जाता है।।१०-११।।

सूर्यायेत्यभिधाक्षराणि जपते यो देव सूर्योदये
मूकः शोकयुतो महामयमयो दारिद्र्यपीडाकुलः ।
सद्यो गद्यसुपद्यसारसरला निर्याति वाणी मुखात्
तस्यारोग्यतनोर्भवन्ति भगवन् वश्याः सदा सम्पदः ॥१२॥

सूर्योदय के समय जो दो अक्षरों वाले 'सूर्य' मन्त्र का जप करता है, वह गूङ्गा, शोकाकुल, महा भयातुर, दरिद्रता की पीड़ा से व्याकुल साधक भी अल्प काल में ही गद्य-पद्यसार-सरल वाणी बोलने लगता है एवं उसका शरीर नीरोग हो जाता है। उसका भय समाप्त हो जाता है और सभी सम्पदाएँ उसके वश में होती हैं।।१२।।

विश्वं विश्वमनोर्विभोऽञ्चलगतं यो मानसे सञ्जपेद्
रात्रौ कामकलासमाहिततनुः कामातुरः कौतुकी ।
कामं हन्त तिलोत्तमोत्तमतमा कामाभिरामाऽसमा
सद्यस्तस्य वशीभविष्यति महातेजस्विनो मानिनः ॥१३॥

विश्वमनु 'विभो' के अञ्चलगत 'नमः' का जप जो रात में मानसिक रूप से कामकला-समाहित तन से करता है, वह कामातुर कौतुकी उत्तम तिलोत्तमा के समान सुन्दर कामिनियों को भी कामातुर बना देता है। अल्पावधि में ही उसके वश में महा तेजस्वी और मानी व्यक्ति हो जाते हैं।।१३।।

मणिमुकुटमरीचिस्फीतभास्वल्ललाटं
कनककलशदिव्याम्भोजहस्तारबिन्दम् ।
निखिलनिगभगम्यं विस्फुरालिङ्गिताङ्गं
मनसि सरसिजेष्टं सूर्यमीशं नमामि ॥१४॥

मुकुट की मणियों से नि:सृत रश्मियों से जिनका ललाट प्रकाशमान है, हाथों में कनक कलश और दिव्य कमल है, जो निखिल वेदगम्य हैं, विस्फुरा से आलिंगित हैं, जो कमलों के इष्ट हैं, ऐसे सूर्य भगवान् को मैं मानसिक प्रणाम करता हूँ।।१४।।

भूगेहशोभितप(सु)रारणभूषिताष्ट-
पत्राञ्चितात्मवसुकोणसुराश्रबिन्दौ ।
देवं निषण्णममुदितांशुसहस्रभास्वद्
देहं भजामि भगवन्तमनन्तमाद्यम् ॥१५॥

भूपुर, वृत्तत्रय, अष्टदल, अष्टकोण, त्रिकोण, बिन्दु-सुशोभित यन्त्र के मध्य में अवस्थित प्रसन्नमुख, सहस्रांशु भासमान देह वाले अनन्त अनाद्य भगवान् का मैं स्मरण करता हूँ।।१५।।

फलश्रुति:

इति स्तोत्रं मन्त्रात्मकमखिलतन्त्रोद्धृतमिदं
पठेत् प्रात:स्नातो मिहिरभुवनेशस्य भवत: ।
भवेद् भोगी भूमौ विभवसहित: कीर्तिसहित:
परत्रान्ते विष्णोर्व्रजति परमं धाम सवितु: ॥१६॥

फलश्रुति—सकल तन्त्रोद्धृत मन्त्रात्मक स्तोत्र का वर्णन समाप्त हुआ। प्रात:काल स्नान के बाद भुवनेश मिहिर के सम्मुख जो इस स्तोत्र का पाठ करता है, वह वैभव एवं कीर्ति से युक्त होकर भूमि का भोग करता है एवं देहान्त के बाद विष्णु सविता के परम धाम में वास करता है।।१६।।

इतीदं देवि पञ्चाङ्गं देवदेवस्य भास्वत: ।
तव स्नेहान्मयाख्यातं नाख्येयं यस्य कस्यचित् ॥१७॥
यद्गृहे वर्तते पुण्यं पञ्चाङ्गं परमात्मन: ।
सवितु: सर्वसर्वस्वं रहस्यं गुह्यमुत्तमम् ॥१८॥
तद्गृहे निश्चला लक्ष्मीर्दासीव वसतिं चरेत् ।
नाग्निभीतिर्न दारिद्र्यं न रोगो नाप्युपद्रव: ॥१९॥

न राजभीतिर्नो शोकः सदा सर्वार्थसम्पदः ।
इदं तत्त्वं हि तत्त्वानां रहस्यं देवदुर्लभम् ॥२०॥
अदातव्यमभक्ताय दातव्यं च महात्मने ।
गुह्यातिगुह्यगुह्यं च सूर्यपञ्चाङ्गमुत्तमम् ॥२१॥
सर्वदा सर्वथा गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये सूर्यमूलमन्त्रस्तोत्रं नाम पञ्चत्रिंशः पटलः॥३५॥

हे देवि! भासमान देवदेव का यह पञ्चाङ्ग वर्णन पूरा हुआ। तुम्हारे स्नेहवश मैंने इसका वर्णन किया। जिस-किसी को इसे नहीं बतलाना चाहिये। जिसके घर में परमात्मा सविता का यह तत्त्वसर्वस्वभूत, गुह्य एवं रहस्यस्वरूप पञ्चाङ्ग रहता है, उसके घर में निश्चला लक्ष्मी दासी के समान निवास करती रहती है और विचरण करती है। उसे न तो अग्नि का भय होता है, न दरिद्रता होती है, न रोग होते हैं और न ही उपद्रव होते हैं। उसे न तो राजभय होता है और न ही शोक होता है। सदा सर्वार्थ सम्पदा से वह युक्त होता है। यह तत्त्वों के तत्त्वों का रहस्य देवदुर्लभ है। अभक्तों को यह देय नहीं है। महात्माओं को दिया जा सकता है। यह सूर्यपञ्चाङ्ग गुह्याति गुह्य और उत्तम है, सर्वदा सभी प्रकार से अपनी योनि के समान गोपनीय है।।१७-२१।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में सूर्यमूलमन्त्रस्तोत्र नामक पञ्चत्रिंश पटल पूर्ण हुआ।

•

समाप्तमिदं सूर्यपञ्चाङ्गम्

अथ लक्ष्मीनारायणपञ्चाङ्गम्

अथ षट्त्रिंशः पटलः

लक्ष्मीनारायणपटलम्

लक्ष्मीनारायणपञ्चाङ्गावतारः

श्रीभैरव उवाच

कैलासोत्तुङ्गशिखरे रत्नराजिविराजिते ।
कल्पद्रुमवनाकीर्णे स्वर्णपाषाणमण्डिते ।।१।।
पद्मरागशिलामुक्तामणिमाणिक्यभूषिते ।
वसन्तकुसुमामोदगन्धवाहैकवाहिनि ।।२।।
नवरत्नशिलाभद्रपीठस्थं परमेश्वरम् ।
देवदेवं जगन्नाथं पार्वतीसहितं विभुम् ।।३।।
वसन्तं च जपन्तं च ध्यायन्तं ब्रह्म शाश्वतम् ।
पन्नगाभरणोपेतं जटामुकुटमण्डितम् ।।४।।
कपालखट्वाङ्गकरं वराभयधरं हरम् ।
देवदानवयक्षेन्द्रपिशाचोरगसेवितम् ।।५।।
गणगन्धर्वसिद्धौघनारदार्चितमव्ययम् ।

पञ्चाङ्गावतरण—श्री भैरव ने कहा—कैलाश का उच्च शिखर रत्नराजि से सुशोभित है। यह कल्पवृक्षों से भरा हुआ एवं स्वर्ण-पाषाणों से मण्डित है। पद्मराग, मोती, मणि-माणिक्य से भूषित है। वसन्त-कुसुम के आमोद से युक्त है। सुगन्धित वायु से पूर्ण है। नव रत्नशिला बद्ध पीठ पर परमेश्वर देव-देव जगन्नाथ पार्वतीसहित विराजमान हैं। वे शाश्वत ब्रह्म के ध्यान में रमण करते हैं, उनका जप करते हैं और ध्यान करते हैं। पद्मराग आभरणोपेत जटा-मुकुट से युक्त हैं। हाथों में कपाल, खट्वाङ्ग, वर और अभयमुद्रा है। देव-दानव, यक्ष, इन्द्र, पिशाच, सर्पों से सेवित हैं। यह अव्यय ईश्वर, गन्धर्वगण, सिद्धौघ, नारद आदि से अर्चित हैं।।१-५।।

प्रसन्नवदनं देवं देवी दृष्ट्वा महेश्वरम् ।।६।।
प्रणम्योत्थाय सहसा बद्धाञ्जलिपुटं पुरः ।
उवाच पार्वती देवी शिवं त्रैलोक्यनायकम् ।।७।।

प्रसन्न मुख देव महेश्वर को अपनी ओर देखते हुए देखकर देवी ने सहसा उठकर उनके आगे हाथ जोड़कर प्रणाम किया और त्रैलोक्यनायक शिव से कहा।।६-७।।

श्रीदेव्युवाच

भगवन् देवदेवेश देवासुरनमस्कृत।
त्वं शिवः सर्वलोकेशः सत्यः सच्चित्स्वरूपकः ॥८॥
अनन्तः परमात्मेति त्रिजगत्कारणं प्रभुः।
उद्भूतिस्थितिकृन्नित्यं लयकृद् भुवनेश्वरः ॥९॥
अनादिनिधनो देवस्त्रिगुणात्मापि निर्गुणः।
किं तत् परं महत्तत्त्वं यज्जपस्यद्य सन्ततम्।
तत्तत्त्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो भक्तास्मि किङ्करी ॥१०॥

देवी बोलीं—भगवन् देवदेवेश! देव-दानव से नमस्कृत आप शिव सभी लोकों के स्वामी, सत्य और सत् चित् स्वरूप हैं। आप अनन्त परमात्मा हैं। तीनों लोकों के कारण प्रभु हैं। सृष्टि, स्थिति और प्रलय करने वाले भुवनेश्वर हैं। आपका आदि-अन्त नहीं है। त्रिगुणात्मक होकर भी आप निर्गुण हैं। जिसका जप आप निरन्तर करते रहते हैं, वह कौन-सा परम महत् तत्त्व है? उसी के बारे में सुनने की मेरी इच्छा है। मैं आपकी भक्ता और किकरी हूँ।।८-१०।।

श्री भैरव उवाच

लक्षवारसहस्राणि वारितासि पुनः पुनः।
स्त्रीस्वभावान्महादेवि पुनर्मां परिपृच्छसि ॥११॥
भक्त्यानया प्रसन्नोऽहं तव पार्वति तत्त्वतः।
एतद्रहस्यं परमं वक्ष्ये गुह्यं दिवौकसाम् ॥१२॥
अवक्तव्यमिदं तत्त्वमदातव्यं महेश्वरि।
तव स्नेहेन वक्ष्यामि न चाख्येयं महात्मभिः ॥१३॥

श्री भैरव ने कहा—हे महादेवि! एक लाख हजार बार मेरे मना करने पर भी आप स्त्रीस्वभाववश बार-बार मुझसे पूछती रहती हैं। हे पार्वति! आपकी इस भक्ति से मैं आप पर प्रसन्न हूँ। देवदुर्लभ गुह्य रहस्य का वर्णन मैं करता हूँ। यह तत्त्व किसी को भी बताने के लायक नहीं है और न ही किसी को देय है। तुम्हारे स्नेहवश मैं इसका वर्णन करता हूँ। इसे महात्माओं को भी नहीं बतलाना चाहिये।।११-१३।।

यो देवदेवो वरदो लक्ष्मीनारायणो विभुः।
सर्गस्थितिकरो लोके प्रलयान्तकरो लये ॥१४॥

स एव परमेशानो देवपन्नगरक्षसाम् ।
दैत्यकिन्नरयक्षेन्द्र-मनुजानलपाथसाम् ॥१५॥
ब्रह्मादिकीटपर्यन्त-जगत्त्रितयकारणम् ।
अध्यक्षः सात्त्विकः सर्वभूतात्मा परमेश्वरः ॥१६॥

जिनका मैं स्मरण करता हूँ, वे देवों के देव प्रभु लक्ष्मीनारायण हैं। वे ही संसार की सृष्टि, स्थिति और लय करने वाले हैं। वे देव, नाग और राक्षसों के परम ईशान हैं। वे दैत्य, किन्नर, यक्ष, इन्द्र, मनुष्य, अग्नि, आकाश के स्वामी हैं। वे ही तीनों लोकों में ब्रह्मा से कीटपर्यन्त सबों के कारणस्वरूप हैं। वे ही सबों के अध्यक्ष, सात्विक, सर्वभूतात्मा परमेश्वर हैं।।१४-१६।।

तस्य देवस्य पञ्चाङ्गं पटलं पद्धतिं शिवे ।
कवचं तत्त्वभूतं च मन्त्रनामसहस्रकम् ॥१७॥
स्तोत्रं जपामि देवेशि स्मरामि मनसा सदा ।
पठाम्यहर्निशं शान्तः परमानन्दकारणम् ॥१८॥

उन्हीं देव के पञ्चाङ्गों में पटल, पद्धति, कवच, तत्त्वभूत मन्त्रनामसहस्र एवं स्तोत्र का मानसिक जप और स्मरण मैं सदैव करता हूँ। अहर्निश मैं उन्हीं का पाठ करता रहता हूँ। इसी कारण मैं शान्त रहता हूँ और यही मेरे परमानन्द का कारण है।।१५-१८।।

श्रीदेव्युवाच

पञ्चाङ्गं देवदेवस्य लक्ष्मीनारायणस्य वै ।
श्रोतुमिच्छाम्यहं नाथ वक्तुमर्हसि साम्प्रतम् ॥१९॥

श्री देवी ने कहा कि हे नाथ! देवदेव लक्ष्मीनारायण के पञ्चाङ्ग को सुनने की मेरी इच्छा है। अत: इस समय आप इसका वर्णन कीजिये।।१९।।

श्रीभैरव उवाच

परमार्थप्रदं देवि पञ्चाङ्गं सर्वसिद्धिदम् ।
वक्ष्यामि परमेशस्य लक्ष्मीनारायणस्य ते ॥२०॥
तत्रादौ पटलं वक्ष्ये मूलविद्यारहस्यकम् ।

श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! यह पञ्चाङ्ग परमार्थप्रद और सभी सिद्धियों को देने वाला है। परमेश्वर लक्ष्मीनारायण के पञ्चाङ्ग का वर्णन मैं करता हूँ उसमें भी सर्वप्रथम मैं लक्ष्मीनारायण के मूल विद्या के रहस्यभूत पटल का वर्णन करता हूँ।।२०।।

नारायणमन्त्रसंस्कारादयः

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि लक्ष्मीनारायणस्य ते ॥२१॥
अष्टसिद्धिप्रदं सद्यः साधकानां सुदुर्लभम्।
तारं परा च हरितं परा लक्ष्मीस्ततोऽभिधम् ॥२२॥
लक्ष्मीनारायणायेति विश्वमन्ते मनुः स्मृतः।
नास्य विघ्नो न वा दोषो न भीतिर्न विपर्ययः ॥२३॥

नारायण मन्त्र संस्कार आदि—हे देवि! लक्ष्मीनारायण के आठों सिद्धियों को प्रदान करने वाले एवं साधकों के लिये अत्यन्त दुर्लभ मन्त्र का उद्धार तुम्हें बतलाता हूँ।

मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, परा = ह्रीं, हरित = ह्सौः, परा = ह्रीं, लक्ष्मी = श्रीं के बाद लक्ष्मीनारायणाय तब नमः लगाने से यह मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ॐ ह्रीं ह्सौः ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नमः।

यह चौदह अक्षरों का मन्त्र है। इसकी साधना में कोई विघ्न नहीं होता। कोई दोष, भय या विपर्यय भी नहीं होता।।२१-२३।।

साक्षान्मोक्षप्रदो मन्त्रः सर्वार्थफलदायकः।
वर्णलक्षपुरश्चर्यां विनायं चास्ति दोषभाक् ॥२४॥
जीवहीनो यथा देहः सर्वकर्मसु न क्षमः।
पुरश्चरणहीनोऽपि न मन्त्रः फलदायकः ॥२५॥

यह मन्त्र साक्षात् मोक्ष-प्रदायक एवं सर्वार्थ फलदायक है। वर्णलक्ष के अनुसार इसका पुरश्चरण चौदह लाख जप से होता है। बिना इसके मन्त्र दोषयुक्त होता है। जैसे जीवरहित शरीर समस्त लौकिक कार्यों में समर्थ नहीं होता है, वैसे ही पुरश्चरण के बिना मन्त्र भी फलदायक नहीं होते।।२४-२५।।

वटेऽरण्ये श्मशाने च शून्यागारे चतुष्पथे।
अर्धरात्रे च मध्याह्ने पुरश्चरणमाचरेत् ॥२६॥
वर्णलक्षं पुरश्चर्यां तदर्धं वा महेश्वरि।
एकलक्षावधिं कुर्यान्नातो न्यूनं कदाचन ॥२७॥
प्रथमं गुरुहस्तेन साधकस्य करेण वा।
ततः स्वयं चरेद्बह्वीः पुरश्चर्या विधानतः ॥२८॥

वटवृक्ष के नीचे, वन में, श्मशान में, सूने घर में, चौराहे पर, आधी रात में या मध्य दिवस में हे महेश्वरि! पुरश्चरण करना चाहिये। पुरश्चरण में मन्त्र के प्रत्येक अक्षर पर एक

लाख जप करे अथवा वर्णलक्ष का आधा करे; लेकिन एक लाख से कम जप न करे। पहले गुरु के हाथ से या साधक के हाथ के अग्निकर्म करवाने के बाद साधक विधिवत् पुरश्चरण कार्य करे।।२६-२८।।

जपाद् दशांशतो होमस्तद्दशांशेन तर्पणम्।
मार्जनं तद्दशांशेन तद्दशांशेन भोजनम् ।।२९।।
विना दशांशहोमेन न तत्फलमवाप्नुयात्।
पञ्चरत्नेश्वरीं विद्यां लक्ष्मीनारायणस्य हि ।।३०।।
जपेत् तां पञ्चभिः सार्धं पुरश्चर्याफलं लभेत्।

जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश ब्राह्मणभोजन कराये। बिना दशांश हवन के मन्त्र का फल नहीं मिलता। लक्ष्मीनारायण की विद्या पञ्चरत्नेश्वरी है। इसलिये साढ़े पाँच लाख जप करने पर इसके पुरश्चरण का फल प्राप्त होता है। इसके बाद मन्त्र के संस्कार विधि के अनुसार कार्य करे।।२९-३०।।

अथ मन्त्रस्य देवेशि संस्कारविधिमाचरेत् ।।३१।।
विधिना येन सद्यस्तु साधकः सिद्धिभाग्भवेत्।
उत्कीलयेन्मनुं देवि ततः सञ्जीवयेत् पुनः ।।३२।।
विद्यां शापहरीं देवि जपेत् सद्गुरुवक्त्रतः।
सिद्धं मन्त्रं जपेदन्ते पुनः संपुटितं चरेत् ।।३३।।
एष योगवरो मन्त्रो योगिनां दुर्लभः कलौ।

मन्त्रसंस्कार आदि—हे देवि! पुरश्चरण करने के पश्चात् मन्त्र का संस्कार आदि करना चाहिये। अतः अब मैं मन्त्रसंस्कार की विधि का वर्णन करता हूँ, जिससे साधक को शीघ्र सिद्धि मिलती है। पहले मन्त्र का उत्कीलन करे। तब उसे संजीवित करे। सद्गुरु के मुख से प्राप्त शापहरी विद्या का जप करे। इसके बाद सिद्ध मन्त्र का जप करे। फिर मन्त्र को सम्पुटित करके जप करे। यह योगश्रेष्ठ मन्त्र कलियुग में योगियों को भी दुर्लभ है।।३२-३३।।

अथोत्कीलनमाचक्षे मन्त्रस्यास्य महेश्वरि ।।३४।।
परार्णं हरितं भूतिं मां नाम सकलां पठेत्।
विश्रान्ते प्रणवो देवि सकृदुच्चारयेत् सुधीः ।।३५।।
मन्त्रोत्कीलनमेतत् स्यात् सर्वतत्त्वमयं शिवे।

उत्कीलन—अब मैं इस मन्त्र के उत्कीलन का वर्णन करता हूँ। परार्ण = ह्रीं, हरित् = ह्सौः, भूति = ह्रीं, मां = श्रीं, नाम = लक्ष्मी नारायण, विश्व = नमः एवं प्रणव = ॐ के योग से यह उत्कीलन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ह्रीं ह्सौः ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायण ह्रीं नमः ॐ। यह उत्कीलन मन्त्र सर्वतत्त्वमय है।।३४-३५।।

मन्त्रसञ्जीवनं वक्ष्ये शृणु पार्वति सादरम् ॥३६॥
परा विभूतिर्मा तारं नामान्ते विश्वमीरितम्।
सञ्जीवनाख्यो गदितो मन्त्रराजो महेश्वरि ॥३७॥

सञ्जीवन—हे पार्वति! अब मैं सञ्जीवन मन्त्र को कहता हूँ। परा = ह्रीं, विभूति = ह्रीं, मा = श्रीं, तार = ॐ, नाम = लक्ष्मीनारायण, विश्व = नमः के योग के सञ्जीवन मन्त्र बनता है। मन्त्र है—ह्रीं ह्रीं श्रीं ॐ लक्ष्मीनारायणाय नमः। हे महेश्वरि! यह सञ्जीवन मन्त्र मन्त्रराज कहा गया है।।३६-३७।।

शिवेन वर्णितां विद्यां शिवे शापहरीं जपेत्।
वक्ष्यामि तव भक्त्याहं गुह्यां सर्वार्थदायिनीम् ॥३८॥
तारं परा विर्देवेशि ब्रह्मशापं ततः पठेत्।
मोचय-द्वयमुद्धृत्य परा मा ठद्वयं जपेत् ॥३९॥

शापविमोचन मन्त्र—हे शिवे! शिव के द्वारा वर्णित शापहरी विद्या का जप करना चाहिये। तुम्हारी भक्तिवश मैं इस अत्यन्त गुह्य सर्वार्थदायिनी विद्या का वर्णन करता हूँ। तार = ॐ, परा = ह्रीं, विः = ह्सौः, ब्रह्मशापं मोचय मोचय, परा = ह्रीं, मा = श्रीं, ठद्वय = स्वाहा के योग से यह मन्त्र बनता है; जैसे—ॐ ह्रीं ह्सौः ब्रह्मशापं मोचय मोचय ह्रीं श्रीं स्वाहा।।३८-३९।।

विद्येयं दुर्लभा लोके लक्ष्मीनारायणप्रिया।
सिद्धं मन्त्रं जपेन्मन्त्री पुनः संपुटितं चरेत् ॥४०॥
संपुटस्य मनुं वक्ष्ये सर्वागमसमुद्धृतम्।
विश्वमादौ मनुं पश्चान्नाम चान्ते जपेत् प्रिये ॥४१॥
संपुटाख्यो मनुर्देवि वर्णितोऽयं फलाप्तये।

लक्ष्मीनारायण को प्रिय यह विद्या संसार में दुर्लभ है। पहले सिद्ध मन्त्र का जप करे तब उसे सम्पुटित करके जप करे। सभी आगमों से समुद्धृत सम्पुट मन्त्र को अब मैं कहता हूँ। मन्त्र के प्रारम्भ और अन्त में 'नमः' लगाकर जप करने से जप सम्पुटित होता है। फलप्राप्ति के लिये इस सम्पुट मन्त्र का वर्णन किया गया।।४०-४१।।

नारायणमन्त्रर्ष्यादिनिरूपणम्

मन्त्रास्यास्य महादेवि वर्णितोऽत्र ऋषिः शिवः ॥४२॥
त्रिष्टुप् छन्दो मयाख्यातं देवतापि समीरिता।
लक्ष्मीनारायणो देवि बीजं लक्ष्मीरुदाहृता ॥४३॥
शक्तिः परा तथा तारं कीलकं समुदाहृतम्।
भोगापवर्गसिद्ध्यर्थं विनियोगः प्रकीर्तितः ॥४४॥

नारायण मन्त्र की ऋषि आदि का निरूपण—हे महादेवि! इस लक्ष्मीनारायण मन्त्र के ऋषि शिव कहे गये हैं। मेरे द्वारा इस मन्त्र का छन्द त्रिष्टुप् एवं देवता लक्ष्मीनारायण कहे गये हैं। हे देवि! इसका बीज 'श्रीं' शक्ति 'ह्रीं' एवं कीलक 'ॐ' कहा गया है। भोग एवं अपवर्ग की सिद्धि हेतु इसका विनियोग किया जाता है।।४२-४४।।

लक्ष्मीनारायणध्यानम्

ध्यानमस्य प्रवक्ष्यामि लक्ष्मीनारायणस्य ते।
येनैव ध्यानमात्रेण लक्ष्मीः सन्निधिमेष्यति ॥४५॥
पूर्णेन्दुवदनं पीतवसनं कमलासनम्।
लक्ष्म्याश्रितं चतुर्बाहुं लक्ष्मीनारायणं भजे ॥४६॥

ध्यान—अब लक्ष्मीनारायण के ध्यान का वर्णन करता हूँ। जिस ध्यान के करने ही से लक्ष्मी की सन्निधि प्राप्त होती है। श्लोक ४६ ध्यान है; जिसका अर्थ यह है—

पूर्णिमा के चाँद जैसा मुख है। वस्त्र पीले हैं। कमल का आसन है। लक्ष्मी के आश्रित चतुर्बाहु लक्ष्मीनारायण का मैं स्मरण करता हूँ।।४५-४६।।

तारमाभूतिबीजैस्तु षड्दीर्घान्तैर्महेश्वरि।
न्यासं कुर्यात् षडङ्गादि करशुद्ध्यादिपूर्वकम् ॥४७॥

न्यास—हे महोदेवि! ॐ श्रीं ह्रीं में षड् दीर्घस्वर लगाकर करशुद्धि आदि करके षडङ्गादि न्यास करना चाहिये।।४७।।

लक्ष्मीनारायणयन्त्रोद्धारः

यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि सर्वाशासिद्धिदं परम्।
सर्वसंमोहनं यन्त्रं वाञ्छितैकप्रदायकम् ॥४८॥

लक्ष्मीनारायणयन्त्रोद्धार—अब मैं लक्ष्मीनारायण के सर्वसिद्धिप्रद श्रेष्ठ यन्त्र के उद्धार का वर्णन करता हूँ। सबका सम्मोहन करने वाला एवं आकाङ्क्षित फल को प्रदान करने वाला है।।४८।।

बिन्दुस्त्रिकोणं वस्वश्रं वृत्ताष्टदलमण्डितम् ।
षोडशारं रवृत्तं च भूगृहेणोपशोभितम् ॥४९॥
लक्ष्मीनारायाणस्यैतच्छ्रीचक्रं परमार्थदम् ।

लक्ष्मीनारायण-पूजनयन्त्र—लक्ष्मीनारायण यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, अष्टकोण, अष्टदल, षोड़शदल, वृत्तत्रय और भूपुर अंकित होते हैं। लक्ष्मीनारायण का यह श्रीचक्र परमार्थ को प्रदान करने वाला है।।४९।।

लक्ष्मीनारायण-यन्त्र
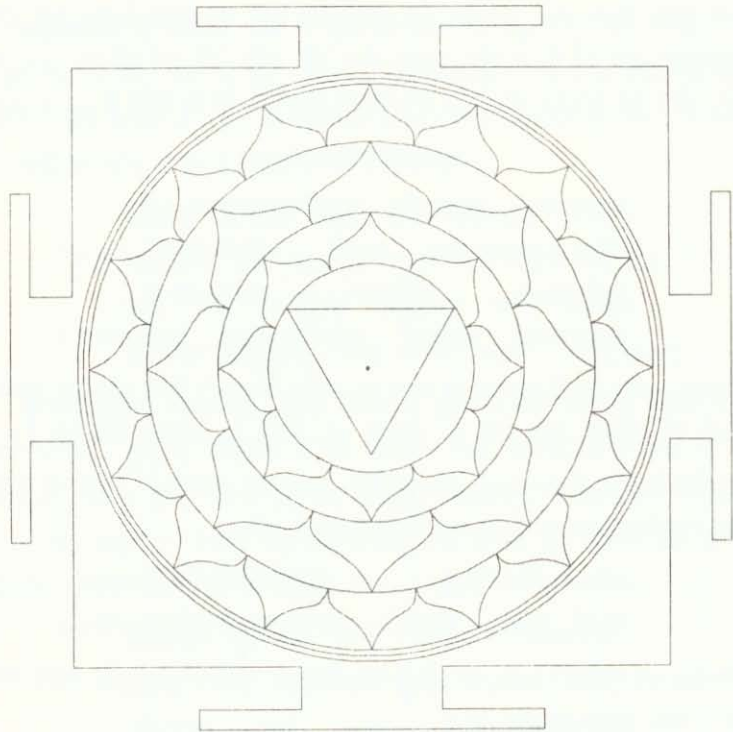
लक्ष्मीनारायणलयाङ्गम्

लयाङ्गं देवि वक्ष्यामि भोगमोक्षफलप्रदम् ॥५०॥
वेदागमरहस्याढ्यं पूजाकोटिफलप्रदम् ।
वज्रशक्तिदण्डखड्ग-पाशयष्टिध्वजास्ततः ॥५१॥
शूलं पूज्याः शिवे चैते बाह्यद्वारेषु सर्वदा ।
इन्द्राग्नियममांसाद-वरुणानिलवित्तदाः ॥५२॥
सेश्वराः साधकैः पूज्या ब्रह्मानन्तादयस्ततः ।

लक्ष्मीनारायण लयाङ्ग—हे देवि! भोग-मोक्ष फलप्रदायक लयाङ्ग का अब मैं वर्णन करता हूँ। वेद-आगम-रहस्य से परिपूर्ण यह करोड़ों पूजा के फल को देने वाला है। भूपुर के चारो द्वारों पर इन दो-दो का पूजन करे—वज्र, शक्ति, दण्ड, खड्ग, पाश, यष्टि, ध्वजा, शूल।

इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, कुवेर, ब्रह्मा, अनन्त—इन दश दिक्पालों का पूजन भूपुर में दशो दिशाओं में करे।।५०-५२।।

केशवं माधवं कृष्णं गोविन्दं मधुसूदनम् ।।५३।।
गङ्गाधरं शङ्खधरं चक्रपाणिं चतुर्भुजम् ।
पद्मायुधं कैटभारिं घोरदंष्ट्रं जनार्दनम् ।।५४।।
वैकुण्ठं वामनं चैव पूजयेद् गरुडध्वजम् ।
षोडशारेषु देवेशि वामावर्तेन साधक: ।।५५।।

षोड़श दल में केशव, माधव, कृष्ण, गोविन्द, मधुसूदन, गङ्गाधर, शङ्खधर, चक्रपाणि, चतुर्भुज, पद्मायुध, कैटभारि, घोरदंष्ट्र, जनार्दन, वैकुण्ठ, वामन, गरुड़ध्वज—इन सोलह का पूजन करे। पूजन पूर्वादि वामावर्त क्रम से करे।।५३-५५।।

तत्रार्चयेन्महादेवि मन्त्री गुरुचतुष्टयम् ।
असिताङ्गं हंसकेतुं वंशीपाणिं च पूजयेत् ।।५६।।
वृत्तत्रयेषु देवेशि साधको गन्धपुष्पकै: ।
संहारं रुरुकं चण्डं भूतेशं कालभैरवम् ।।५७।।
कपालं भीषणं चैव तथा श्मशानभैरवम् ।
पूजयेत् साधक: सिद्ध्यै वसुपत्रे महेश्वरि ।।५८।।

इसके बाद वृत्तत्रय में गुरुचतुष्टय में स्वगुरु, असिताङ्ग, हंसकेतु, वंशीपाणि का पूजन गन्धाक्षत-पुष्प से करे।

अष्टदल में संहार, रुरु, चण्ड, भूतेश, कालभैरव, कपाली, भीषण, श्मशानभैरव का पूजन करे। हे महेश्वरि! इससे साधक को सिद्धि मिलती है।।५६-५८।।

विष्णुं च वासुदेवं च देवं दामोदरं तथा ।
नृसिंहं च महादेवि देवं सङ्कर्षणं तथा ।।५९।।
त्रिविक्रमं चानिरुद्धं विश्वक्सेनं च साधक: ।
लक्ष्मीशब्दाङ्कितं देवि वसुकोणेषु पूजयेत् ।।६०।।
गङ्गां च यमुनां चैव त्र्यश्रे सरस्वतीं तथा ।
पूजयेदग्रवह्नीशक्रमयोगेन पार्वति ।।६१।।

अष्टकोण में लक्ष्मी-विष्णु, लक्ष्मी-वासुदेव, लक्ष्मी-दामोदर, लक्ष्मी-नृसिंह, लक्ष्मी-संकर्षण, लक्ष्मी-त्रिविक्रम, लक्ष्मी-अनिरुद्ध, लक्ष्मी-विश्वक्सेन का पूजन करे।

त्रिकोण में गङ्गा, यमुना, सरस्वती का पूजन करे। त्रिकोण के अग्रभाग में अग्नि देवता का पूजन करे।।५९-६१।।

लक्ष्मीनारायणं देवं पूजयेद् बिन्दुमण्डले।
महालक्ष्मीं राज्यलक्ष्मीं सिद्धलक्ष्मीं च पूजयेत् ॥६२॥
शङ्खं चक्रं गदां पद्मं पूजयेद् बिन्दुमण्डले।
गन्धाक्षतप्रसूनादि-गुरुमाल्यविभूषणैः ॥६३॥

बिन्दुमण्डल में देवता लक्ष्मी-नारायण, महालक्ष्मी, राज्यलक्ष्मी, सिद्धलक्ष्मी, शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म का पूजन गन्धाक्षत-पुष्प-माला-आभूषणों से करे।।६२-६३।।

सम्पूज्यामृतकुम्भस्थैर्बिन्दुभिर्मन्त्रपूजितैः ।
तर्पयेत् साधको देवं मकारैः पञ्चभिः परम् ॥६४॥

तदनन्तर साधक कुम्भस्थ मन्त्रपूजित अमृतबिन्दु से तर्पण करे एवं पञ्च मकारों से देवता का पूजन करे।।६४।।

अष्टौ प्रयोगाः

लयाङ्गमेतदाख्यातं प्रयोगानष्ट पार्वति।
वक्ष्ये येन भवेत् सिद्धिर्मन्त्रस्यास्य विशेषतः ॥६५॥
स्तम्भनं मोहनं चैव मारणाकर्षणौ ततः।
वशीकारं तथोच्चाटं शान्तिकं पौष्टिकं ततः ॥६६॥
एतेषां साधनं वक्ष्ये प्रयोगाणां महेश्वरि।
एषां साधनमात्रेण मन्त्रसिद्धिः प्रजायते ॥६७॥

आठ प्रयोग—हे पार्वति! इस पूजन को लयाङ्ग कहते हैं। इसका वर्णन किया गया; क्योंकि इससे मन्त्र सिद्ध होता है। अब इस सिद्ध मन्त्र के आठ प्रयोगों का वर्णन करता हूँ। इनमें स्तम्भन, मोहन, मारण, आकर्षण, वशीकरण, उच्चाटन, शान्ति, पुष्टि आते हैं। इन प्रयोगों के साधन का वर्णन करता हूँ, जिसके साधनमात्र से ही कार्यसिद्धि होती है।।६५-६७।।

स्तम्भनम्

रवौ स्नात्वा महादेवि गत्वाश्वत्थतरोस्तलम्।
जपेदयुतमीशानि हुनेत् तत्र दशांशतः ॥६८॥

घृतमत्स्यण्डगुडजैः पुष्पैरानन्दमिश्रितैः ।
स्तम्भनं जायते सद्यो वादिवातार्कपाथसाम् ॥६९॥

स्तम्भन—रविवार में स्नान करके पीपल के पेड़ के नीचे जाकर लक्ष्मीनारायण मन्त्र का जप दश हजार करे। जप का दशांश एक हजार हवन घी, मत्स्यण्ड, गुड़, फूल आनन्दमिश्रित करके करे। इससे प्रतिवादी, अन्धड़, सूर्य, आकाश का स्तम्भन होता है।।६८-६९।।

मोहनम्

चन्द्रेऽर्धरात्रवेलायां गत्वा शृङ्गाटकं सुधीः ।
दिशो बद्ध्वासनं शोध्य प्राणायामं विधाय च ॥७०॥
जपेन्मूलं हरिं ध्यात्वा हुत्वा देवि दशांशतः ।
घृतनागरपुन्नाग-करञ्जकुसुमानि च ॥७१॥
तर्पयित्वा दशांशेन मार्जयित्वा महेश्वरि ।
तद्भस्मना चरेद् भाले तिलकं साधकोत्तमः ॥७२॥
त्रैलोक्यं सहसा दृष्ट्वा मोहमेष्यति तन्मुखम् ।

मोहन—सोमवार की आधी रात के समय चौराहे पर जाकर दिग्बन्ध करे। आसन शोधन करके प्राणायाम करे। तब विष्णु का ध्यान करके मूल मन्त्र का जप दश हजार करे। एक हजार हवन घी, नागर, पुन्नाग, करञ्जफूल के मिश्रण से करे। एक सौ तर्पण और दश मार्जन करे। उसके भस्म का तिलक ललाट में लगावे। हे महेश्वरि! ऐसे उत्तम साधक को देखकर तीनों लोक मोहित हो जाता है।।७०-७२।।

मारणम्

भौमे गत्वा श्मशानं च जपेदयुतसंख्यया ॥७३॥
हुनेद् दशांशतो देवि सर्पिर्गोधूमपायसम् ।
दूर्वापत्रं सासवं च मृत्युश्च म्रियते क्षणात् ॥७४॥

मारण—मङ्गलवार में श्मशान में जाकर दश हजार मन्त्र जप करे। दशांश एक हजार हवन गाय के घी, गेहूँ, पायस, दूब और आसव-मिश्रण से करे। इससे साक्षात् मृत्यु की भी क्षणमात्र में मृत्यु हो जाती है।।७३-७४।।

आकर्षणम्

बुधे गत्वाटवीं दूरं जपेज्-झंझातटे शिवे ।
अयुतं मूलमन्त्रं च हुनेत् सर्पिर्यवाकणान् ॥७५॥

दूर्वापूतासपद्माक्षपत्राणि कुसुमानि च।
रम्भापि पुरतस्तस्य सद्यः प्रादुर्भविष्यति ॥७६॥

आकर्षण—हे शिवे! बुधवार में दूर जङ्गल में झरना के किनारे जाकर मूल मन्त्र का जप दश हजार करे। गोघृत, यवचूर्ण, दूब, कुश, पद्मपत्र, पद्मबीज और फूल के मिश्रण से हवन करे तो उसके सामने रम्भा भी सद्यः उपस्थित हो जाती है।।७५-७६।।

वशीकरणम्

गुरौ गत्वा नदीतीरं जपेत् तत्र दशांशतः।
हुनेदाज्येन मधुना शटीचन्द्रकरीरकान् ॥७७॥
तद्भस्मना साधितेन त्रैलोक्यं वश्यमेष्यति।

वशीकरण—गुरुवार में नदी तट पर जप करे। दशांश हवन गोघृत, मधु, गन्धबाला, कपूर, करीर के मिश्रण से करे। उस हवन के भस्म का तिलक लगाये तो उसके वश में तीनों लोक हो जाता है।।७७।।

उच्चाटनम्

शुक्रेऽशोकतरुं गत्वा जपेदयुतसंख्यया ॥७८॥
हुनेत् सर्पिर्नागपटं शालिचूर्णं तुषाकुलम्।
तर्पयेदासवाज्येक्षु-रसैर्भुक्त्वा दशांशतः ॥७९॥
शत्रोः शम्भुसमानस्य भवेदुच्चाटनं ध्रुवम्।

उच्चाटन—शुक्रवार में अशोक वृक्ष के नीचे बैठकर दश हजार मन्त्रजप करे। उसका दशांश गाय के घी, नागपट, शालिचूर्ण, तुषाकुल-मिश्रण से एक हजार हवन करे। आसव, ईख रस, गोघृत से दशांश तर्पण करे। इससे शिव के समान शक्तिशाली शत्रु का भी निश्चित रूप से उच्चाटन हो जाता है।।७८-७९।।

शान्तिः

शनौ गत्वा नदीतीरं जपेदयुतसंख्यया ॥८०॥
होमो दशांशतः कार्यो घृतपायसकुङ्कुमैः।
सारणालैर्जम्बुफलैः शान्तिकं जायते क्षणात् ॥८१॥

शान्ति—शनिवार में नदी किनारे जाकर दश हजार मन्त्र का जप करे। घी, पायस, कुङ्कुम, सारशाल एवं जामुनफल के मिश्रण से जप का दशांश हवन करे। इससे क्षण भर में शान्ति प्राप्त होती है।।८०-८१।।

पुष्टि:

शुभर्क्षे शुभवारे वा गत्वोपवनमण्डलम्।
जपेदयुतमीशानि हुनेदाज्येन पङ्कजै: ॥८२॥
सोत्पलं सकणं साम्लं महापुष्टि: प्रजायते।

पुष्टि—शुभ नक्षत्र, शुभ दिन में उपवन मण्डल में जाकर दश हजार मन्त्र का जप करे। गोघृत, कमल, उत्पल, सकण, साम्ल मिश्रण से जप का दशांश हवन करे तो महापुष्टि प्राप्त होती है।।८२।।

पटलोपसंहार:

एतद्रहस्यं परमं तव भक्त्या मयोदितम् ॥८३॥
लक्ष्मीनारायणस्येदं सर्वस्वं परमार्थदम्।
अदातव्यमभक्तेभ्यो दुष्टेभ्यो वीरवन्दिते ॥८४॥
महाचीनपदस्थेभ्यो भोगदं मोक्षदं कलौ।
गोप्यं गुह्यतमं तत्त्वं गुह्याद्गुह्यतमं शिवे।
आनन्दकारणं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥८५॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये लक्ष्मीनारायणपटल-निरूपणं नाम षट्त्रिंश: पटल:॥३६॥

उपसंहार—हे देवि! इस परम रहस्य का वर्णन तेरी भक्ति के वश में होकर मैंने किया। यह लक्ष्मीनारायण का सर्वस्वभूत यह पटल परमार्थ-प्रदायक है और अभक्तों को देय नहीं है। दुष्टों को भी देय नहीं है। कलियुग में महाचीन पदस्थ वीरों के लिये यह भोग-प्रदायक और मोक्षप्रद है। हे शिवे! यह गोप्य गुह्यतम तत्त्व गुह्यातिगुह्यतम है। समस्त आनन्द का कारण है। अपनी योनि के समान ही यह गोपनीय है।।८३-८५।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में लक्ष्मीनारायणपटल निरूपण नामक षट्त्रिंश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ सप्तत्रिंशः पटलः

लक्ष्मीनारायणपूजापद्धतिः

श्रीभैरव उवाच

अधुना देवि वक्ष्येऽहं गद्यपद्यैकरूपिणीम्।
पद्धतिं नित्यपूजाया लक्ष्मीनारायणस्य ते ॥१॥

श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! अब मैं गद्य-पद्यरूप में लक्ष्मीनारायण की नित्य पूजा पद्धति का वर्णन करता हूँ।।१।।

ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय बद्धपद्मासनः स्वशिरःस्थसहस्त्राराधोमुखकमलकर्णि-कान्तर्गतं निजगुरुं श्वेतालङ्कारालंकृतं ध्यात्वा, मानसैरुपचारैरभ्यर्च्य, तदग्रे मूलं स्वशक्त्या जप्त्वा, तज्जपं गुरवे समर्प्य, तदाज्ञामादाय बहिरागत्य दूरं मलादि संत्यज्य वर्णोक्तं शौचमादाय, नद्यादौ गत्वा, 'ॐक्लीं सर्व-जनप्रियाय कामदेवाय नमः' इति दन्तान् विशोध्य, आत्मशुद्धिं कृत्वा मृत्त्रयं मूलेन संशोध्य, मलापकर्षणं स्नानं कृत्वा मन्त्रस्नानं चरेत्। तत्र मृदा—

ॐगांगूं गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

इत्यङ्कुशमुद्रयावाह्य, मृदा मूलं

देवेश भक्तिसुलभ परिवारसमन्वित।
यावत् त्वां तर्पयिष्यामि तावद् देव इहावह ॥

साधक ब्राह्ममुहूर्त में उठकर पद्मासन में बैठे। अपने शिर में स्थित अधोमुख सहस्त्रदल कमलकर्णिका में अपने गुरु का ध्यान करे। गुरु श्वेत वस्त्रालंकार से युक्त हैं ऐसा ध्यान करते हुये मानसिक उपचारों से उनका पूजन करे। उनके आगे मूल मन्त्र का जप यथाशक्ति करे। जप गुरु को समर्पित करे। गुरु की आज्ञा लेकर घर से बाहर जाये। दूर जाकर मलादि का त्याग करके स्ववर्णोक्त शौच करे। तब नदी किनारे जाकर 'ॐ क्लीं सर्वजनप्रियाय कामदेवाय नमः' से दाँतों को साफ करे। आत्मशुद्धि करे। मिट्टी के तीन ढेलों को लेकर मूल मन्त्र से शोधन करे। उस मिट्टी को देह में लगाकर मलापकर्षण

स्नान करे। मन्त्रस्नान करे। मिट्टी में अंकुशमुद्रा से सूर्यमण्डल से तीर्थों का आवाहन करे—

ॐ गां गूं गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

फिर मिट्टी की मूल मन्त्र के साथ इस मन्त्र से प्रार्थना करे—

देवेश भक्तसुलभ परिवारसमन्वित।
यावत्त्वां तर्पयिष्यामि तावद् देव इहावह।।

इत्यावाहनादिमुद्राः प्रदर्श्य धेनुयोनिमत्स्यमुद्राः प्रदर्श्य मृदमङ्गे विलिप्य, जले त्र्यश्रं विभाव्य, त्र्यश्रे मूलं विलिख्य, तत्र मूलमुच्चरंस्त्रिरुन्मज्जेत्। ततः सूर्यायार्घ्यत्रयं दद्यात्, 'ॐह्रींहंसः श्रीसूर्याय एष तेऽर्घो नमः' इत्यर्घ्यत्रयं दत्त्वा जलादारुह्य, वासांसि परिधाप्य, देहशुद्धिं विधाय, मूलर्षिन्यासादि विधाय, मूलं यथाशक्त्या जप्त्वाऽघमर्षणं कुर्यात्। वामहस्ते जलं धृत्वा, दक्षहस्तेनाच्छाद्य, यंरंवंलंहं इति सप्तधाभिमन्त्र्य, तद्गलितोदकबिन्दुभिर्मूल-मुच्चरंश्चतुर्दशधा शिरः प्रोक्ष्यावशिष्टजलं दक्षहस्ते धृत्वेडयान्तर्नीत्वा पापं प्रक्षाल्य, तज्जलं कलुषं वामनासापुटेन बही रेचयित्वा वाममार्गस्थ-शिलायामास्फालयेदित्यघमर्षणम्।

इसके बाद आवाहनादि मुद्रा दिखाकर धेनु, योनि, मत्यमुद्रा दिखावे। तब शरीर में मिट्टी को लगाकर जल में त्रिकोण की कल्पना करके उसमें मूल मन्त्र लिखे। तब मूल मन्त्रोच्चारणपूर्वक तीन डुबकी लगाये। इसके बाद तीन अर्घ्य सूर्य को प्रदान करे। अर्घ्यमन्त्र है—ॐ ह्रीं हंसः श्रीसूर्याय एष तेऽर्घो नमः।

तीन अर्घ्य देकर जल के बाहर आये। वस्त्र बदले और देहशुद्धि करे। मूल मन्त्र से न्यास करे। यथाशक्ति मूल मन्त्र का जप करके अघमर्षण करे। बाँयें हाथ में जल लेकर दाँयें हाथ से ढके। यं रं लं वं हं के सात जप से उसे अभिमन्त्रित करे। उससे टपके हुए बिन्दुओं से मूलमन्त्रोच्चारणपूर्वक शिर का प्रोक्षण चौदह बार करे। अवशिष्ट जल दाहिनी हथेली में लेकर इडा से अन्दर खींचे और पाप का प्रक्षालन करे। उस जल को वाम नासापुट से बाहर रेचित कर दे। अपने वाम भाग में स्थित काल्पनिक शिला पर पाप पुरुष को पटक दे।

ततः पूर्ववन्न्यासं विधाय गायत्रीं जपेत् 'ॐह्रीं लक्ष्मीनारायणाय विद्महे ह्सौः परब्रह्मणे धीमहि ह्रींश्रीं तन्नः परमात्मा प्रचोदयात् ३। इति यथाशक्त्या

जप्त्वा, अनया श्रीगायत्र्या साङ्गाय सवाहनाय सपरिच्छदाय सशक्तिकाय श्रीलक्ष्मीनारायणाय एष तेऽर्घो नमः, इत्यर्घ्यत्रयं दत्त्वा, प्राणायामत्रयं कृत्वा,

इडया पिब षोडशभिः पवनं कुरु षष्टिचतुष्टयमन्तरगम्।
त्यज पिङ्गलया शनकैः शनकैर्दशभिर्दशभिर्दशभिर्द्व्यधिकैः॥

इत्थं प्राणायामत्रयं विधाय, ॐह्रीं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, ॐह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा, ॐह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, इत्याचम्य, पूर्ववत् सूर्यायार्घ्यत्रयं दत्त्वा जले यन्त्रं ध्यात्वा तत्र यथाशक्त्या तर्पणं कुर्यात्। मूलमुच्चार्य श्रीसाङ्गः सवाहनः सपरिवारः सदेवीकः लक्ष्मीनारायणः तृप्यतामिति त्रिः सन्तर्प्य, मूलविद्याक्षरमुच्चार्य एकैकाञ्जलिना परिवारान् सन्तर्प्य, देवर्षिपितॄन् सन्तर्प्य, पूर्ववत् सूर्यायार्घ्यत्रयं दत्त्वा (संहारमुद्रया देवतां प्रणम्य) यागमण्डपं प्रविशेदिति सन्ध्याविधिः।

इसके बाद पूर्ववत् न्यास करके गायत्री का जप करे। लक्ष्मीनारायण का गायत्री मन्त्र है—ॐ ह्रीं लक्ष्मीनारायणाय विद्महे ह्सौः परब्रह्मणे धीमहि ह्रीं श्रीं तन्नः प्रचोदयात्।

इसे यथाशक्ति जप कर इसी गायत्री के साथ 'साङ्गाय सवाहनाय सपरिच्छदाय सशक्तिकाय श्रीलक्ष्मीनारायणाय एष तेऽर्घो नमः' जोड़कर तीन अर्घ्य प्रदान करे। तब तीन प्राणायाम करे। प्राणायाम में १६ मात्रा से इड़ा नाड़ी से पूरक करे, ६४ मात्रा से कुम्भक करे और पिङ्गला से ३२ मात्रा में रेचक करे। इस प्रकार के तीन प्राणायाम करके तब शोधन करे; जैसे—

ॐ ह्रीं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।
ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा।
ॐ ह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

इन तीन मन्त्रों से तीन आचमन करके पूर्ववत् सूर्य को तीन अर्घ्य प्रदान करे। जल में यन्त्र का ध्यान करके यथाशक्ति तर्पण करे। तर्पण मन्त्र है—ॐ ह्रीं ह्सौः ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नमः श्रीसाङ्गः सवाहनः सपरिवारः सदेवीकः लक्ष्मीनारायणः तृप्यताम्।

तीन बार तर्पण करे। मूल विद्या का उच्चारण करके परिवार के प्रत्येक सदस्य को एक-एक अञ्जलि जल से तर्पण करे। देवता, पितर का तर्पण करके पूर्ववत् सूर्य को तीन अर्घ्य प्रदान करे। संहारमुद्रा से देवता को प्रणाम करके यागमण्डप में प्रवेश करे।

तत्र गृहमागत्य पादौ प्रक्षाल्य द्वारमभ्युक्ष्य, देहल्यग्रतश्चतुरश्रवृत्तमण्डलं विलिख्य, तत्र क्षालिताधारं संस्थाप्य, अस्त्राय फडिति साधारं पात्रं संस्थाप्य, ॐ हृदयाय नमः इति हृन्मन्त्रेणापूर्य, ॐ लक्ष्मीनारायणसामान्यार्घ्याय नमः इत्यभ्यर्च्य 'गङ्गे इति' तीर्थमावाह्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य, द्वारमभिषेचयेदिति सामान्यार्घ्यविधिः।

सामान्यार्घ्य—घर पर आकर पैरों को धोकर द्वार का अभ्युक्षण करे। दरवाजे के आगे चतुरस्त्र वृत्तमण्डल बनाकर उस पर आधार को धोकर स्थापित करे। 'अस्त्राय फट्' बोलकर आधार पर पात्र स्थापित करे। 'ॐ हृदयाय नम:' से उसमें जल भरे। 'ॐ लक्ष्मीनारायणसामान्यार्घ्याय नम:' से अर्चन करे। 'गङ्गे च यमुने' मन्त्र से तीर्थों का आवाहन करे। धेनुमुद्रा दिखाये। द्वार का अभिसेचन करे। यह सामान्यार्घ्य विधि का वर्णन हुआ।

पूर्वे गं गणपतये नमः, दक्षिणे वां वटुकाय नमः, पश्चिमे क्षां क्षेत्रपालाय नमः, उत्तरे यां योगिनीभ्यो नमः, दक्षे गां गङ्गायै नमः, वामे यं यमुनायै नमः, ऊर्ध्वे सं सरस्वत्यै नमः, अधो देहल्यां अस्त्राय फट् इति द्वारदेवीः संपूज्य, द्वारान्तः प्रविश्य विहितासने उपविश्य मूलेन निरीक्ष्य कवचेनाभ्युक्ष्य, अस्त्राय फडिति सन्ताड्य, पूजामण्डपं सधूपितं कृत्वा विष्टरशुद्धिं कुर्यात्। ॐ आं आसनशोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनशोधने विनियोगः। प्रीं पृथिव्यै नमः,

ॐ महि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां लोके पवित्रं कुरु चासनम्॥

ॐ क्रां आधारशक्तिकमलासनाय नमः, अनन्ताय नमः, पद्माय नमः, पद्मनालाय नमः, तत्रोपविश्य, तालत्रयं दत्त्वा,

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

द्वारपूजन—पूर्व में गङ्गणपतये नम:। दक्षिण में वां वटुकाय नम:। पश्चिम में क्षां क्षेत्रपालाय नम:। उत्तर में यां योगिनीभ्यो नम:। दाहिनी तरफ गां गङ्गायै नम:। बाँयीं तरफ यं यमुनायै नम:। ऊपर में सं सरस्वत्यै नभ:। दरवाजे के नीचे देहल्यां अस्त्राय फट् से द्वारदेवी का पूजन करे। इसके बाद यागमण्डप में प्रवेश करे।

यागमण्डप में प्रवेश करके विहित आसन पर बैठे। मूल मन्त्रोच्चारणपूर्वक निरीक्षण

करे। कवच से अभ्युक्षण करे। 'अस्त्राय फट्' से ताड़न करे। पूजामण्डप को धूपित करे। तब आसन शुद्धि करे।

आसनशुद्धि—ॐ आं आसनशोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसनशोधने विनियोगः। प्रीं पृथिव्यै नमः।

ॐ महि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

ॐ क्रां आधारशक्तिकमलासनाय नमः। अनन्ताय नमः। पद्माय नमः। पद्मनालाय नमः। इन मन्त्रों से आसनशुद्धि करके उस पर बैठे। तब भूतोत्सारण करे—

भूतोत्सारण—तीन ताली बजाकर इस मन्त्र का पाठ करे; जैसे—

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

इति वामपर्ष्णिघातत्रयेण विघ्नानुत्सार्य, नाराचमुद्रां प्रदर्शयेत्, इति आसनं संशोध्य गुरुं प्रणमेत्।

अखडमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

गुरुभ्यो नमः, परमगुरुभ्यो नमः, परापरगुरुभ्यो नमः, परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः इति शिरसि संपूज्य, देवं प्रणम्य, ॐह्रींमित्याकुञ्चनेन सुषुम्नावर्त्मना प्रदीपकलिकाकारां ब्रह्मपथान्तर्नीत्वा परमशिवेन संयोज्य तयोरैक्यं विभाव्य, तदुद्भूतामृतधारया कुलगुरून् संतर्प्य, पुनस्तेनैव मार्गेण डाकिन्यादिशक्तीः प्रीणयन्तीं कुण्डलिनीं स्वं पदं प्रापय्य वामकुक्षौ पापपुरुषमङ्गुष्ठमात्राकारं धूम्रवर्णं ध्यात्वा, यंरंवंलं इति शोषणदाहनाप्लावनोत्पाटनादि कुर्यात्। यं वायुबीजेन षोडशधा जप्तेन शोषयेत्। रं वह्निबीजेन चतुःषष्ट्या जप्तेन दाहयेत्। वं वरुणबीजेन द्वात्रिंशद्वारजप्तेनाप्लावयेत्। लमिति भूबीजेन दशधा जप्तेन शरीरं पिण्डीभूतं विधाय प्राणप्रतिष्ठां कुर्यादिति भूतशुद्धिः।

तब बाँयीं एंडी को पृथ्वी पर तीन बार पटके। नाराच मुद्रा दिखाये। इस प्रकार शुद्धि करके गुरु को प्रणाम करे। जैसे—

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

गुरुभ्यो नमः। परमगुरुभ्यो नमः। परापरगुरुभ्यो नमः। परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः। इनका

पूजन शिर पर करके देवता को प्रणाम करे। ॐ ह्रीं से मूलाधार का आकुञ्चन करके सुषुम्ना मार्ग से प्रदीपकलिका आकार की कुण्डलिनी को ब्रह्मरन्ध्र में लाकर परमशिव के साथ संयुक्त करे। उनके ऐक्य की भावना करके ऐक्य से उद्भूत अमृतधारा से कुलगुरुओं का तर्पण करे। फिर उसी मार्ग से डाकिनी आदि शक्तियों को प्रसन्न करते हुये कुण्डलिनी को मूलाधार में स्थापित करे। अपनी बाँयीं कुक्षि में अँगुष्ठ बराबर धूम्रवर्ण के पापपुरुष का ध्यान करके 'यं रं लं' से उसका शोषण, दाहन, प्लावनादि करे। वायुबीज 'यं' के सोलह जप से शोषण करे। वह्निबीज 'रं' के चौंसठ जप से दाहन करे। 'वं' वरुणबीज के बत्तीस जप से प्लावन करे। भूबीज 'लं' के दश जप से शरीर को पिण्डीभूत करे। प्राणप्रतिष्ठा करे। यही भूतशुद्धि है।

ॐह्रींक्रों यंरंलंवं शंषंसंहं सोहंसः हंसः मम प्राणा इह प्राणाः, १६ मम जीव इह स्थितः १६ सर्वेन्द्रियाणि, १६ वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा, इति प्राणप्रतिष्ठाक्रमः।

प्राणान् समर्प्य प्राणायामत्रयं कृत्वा, पूर्ववदाचम्य सङ्कल्पपूर्वं न्यासं कुर्यात्। अस्य श्रीलक्ष्मीनारायणपूजामन्त्रस्य श्रीशिव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, लक्ष्मीनारायणो देवता, श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐकीलकं, भोगापवर्गसिद्ध्यर्थे लक्ष्मीनारायणपूजायां विनियोगः।

प्राणप्रतिष्ठा—ॐ ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सोहंसः हंसः मम प्राणा इह प्राणाः। ॐ ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सोहंसः हंसः मम जीव इह स्थितः। ॐ ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सोहंसः हंसः सर्वेन्द्रयाणि। ॐ ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सोहंसः हंसः वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। यह प्राणप्रतिष्ठा का क्रम है। प्राणप्रतिष्ठा करके प्राणायामत्रय करे। पूर्ववत् आचमन करके संकल्पपूर्वक न्यास करे।

न्यास—अस्य श्रीलक्ष्मीनारायणमन्त्रस्य श्री शिव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, लक्ष्मीनारायणो देवता, श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकं, भोगापवर्गसिद्ध्यर्थे लक्ष्मीनारायणपूजायां विनियोगः।

शिवऋषये नमः शिरसि, त्रिष्टुप्छन्दसे नमो मुखे, लक्ष्मीनारायणदेवतायै नमो हृदि, श्रीं बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः, ॐ कीलकाय नमः सर्वाङ्गेषु, इति विन्यस्य षडङ्गादि कुर्यात्।

ॐह्रांश्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐह्रींश्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐह्रूंश्रूं मध्यमाभ्यां

नमः। ॐहैंश्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐह्रौंश्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐहः श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं षडङ्गन्यासः।

ऋष्यादि न्यास—शिवऋषये नमः शिरसि। त्रिष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। लक्ष्मीनारायण-देवतायै नमः हृदि। श्रीं बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ कीलकाय नमः सर्वांगेषु। इसके बाद षडाङ्गादि न्यास करे।

करन्यास—ॐ ह्रां श्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं श्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ हैं श्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं श्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ॐ हः श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग न्यास—ॐ ह्रां श्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं श्रूं शिखायै वषट्। ॐ हैं श्रैं कवचाय हुं। ॐ ह्रौं श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हः श्रः अस्त्राय फट्।

अथ (पुनः) करशुद्धिः—ॐ कामरूपपीठाय नमः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं जालन्धरपीठाय नमः तर्जनीभ्यां नमः। ह्सौः पूर्णगिरिपीठाय नमः मध्यमाभ्यां नमः। ह्रीं अवन्तीपीठाय नमः। अनामिकाभ्यां नमः। श्रीं सप्तपुरीपीठाय नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐह्रीं ह्सौः ह्रींश्रीं वाराणसी-पीठाय नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। इति करशुद्धिः। एवं षडङ्गन्यासः—अंआंइंईं उंऊंऋंॠं वामपादादिगुल्फान्तम्। ऌंॡंएंऐं ओंऔंअंअः दक्ष-पादादिगुल्फान्तम्। कंखंगंघंङं गुल्फादिवामपादमूलान्तम्। चंछंजंझंञं गुल्फादिदक्षपादमूलान्तम्। टंठंडंढंणं नाभ्यादिवामबाहुमूलान्तम्। तंथंदंधंनं नाभ्यादिदक्षबाहुमूलान्तम्। पंफंबंभंमं कट्यादिककुबन्तम्। यंरंलंवं वामस्कन्धादिवामकर्णान्तम्। शंषंसंहं दक्षस्कन्धादिदक्षकर्णान्तम्। ळंक्षः शिरसः पादपर्यन्तमिति त्रिर्व्यापयेत्।

अंकंखंगंघंङंआं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, इंचंछंजंझंञंईं तर्जनीभ्यां नमः, उंटंठंडंढंणंऊं मध्यमाभ्यां नमः, एंतंथंदंधंनंऐं अनामिकाभ्यां नमः, ओंपंफंबंभंमंऔं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, अंयंरंलंवंशंषंसंहंळंक्षःअः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः, इति करन्यासः। एवं हृदयादिषडङ्गन्यासः।

करशुद्धि—ॐ कामरूपपीठाय नमः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं जालन्धरपीठाय नमः तर्जनीभ्यां नमः। ह्सौः पूर्णगिरिपीठाय नमः मध्यमाभ्यां नमः। ह्रीं अवन्तीपीठाय नमः अनामिकाभ्यां नमः। श्रीं सप्तपुरीपीठाय नमः कनिष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं ह्सौः ह्रीं श्रीं वाराणसीपीठाय नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग न्यास—ॐ कामरूपपीठाय नम: हृदयाय नम:। ह्रीं जालन्धरपीठाय नम: शिरसे स्वाहा। ह्सौ: पूर्णगिरिपीठाय नम: शिखायै वषट्। ह्रीं अवन्तीपीठाय नम: कवचाय हुं। श्रीं सप्तपुरीपीठाय नम: नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रीं ह्सौ: ह्रीं श्रीं वाराणसीपीठाय नम: अस्त्राय फट्।

मातृका न्यास—अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं वामपादादिगुल्फान्तम्। ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अ: दक्षपादादिगुल्फान्तम्। कं खं गं घं ङं वामगुल्फादिपादमूलान्तम्। चं छं जं झं ञं दक्षगुल्फादिपादमूलान्तम्। टं ठं डं ढं णं नाभ्यादिवामबाहुमूलान्तम्। तं थं दं धं नं नाभ्यादिदक्षबाहुमूलान्तम्। पं फं बं भं मं कट्यादिककुदन्तम्। यं रं लं वं वामस्कन्धादिवामकर्णान्तम्। शं षं सं हं दक्षस्कन्धादिदक्षकर्णान्तम्। ळं क्षं शिरस: पादपर्यन्तम्।

तीन बार व्यापक न्यास करे।

करन्यास—अं कं खं गं घं ङं आं अङ्गुष्ठाभ्यां नम:। इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नम:। उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नम:। एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नम:। ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठाभ्यां नम:। अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अ: करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:।

षडङ्ग न्यास—अं कं खं गं घं ङं आं हृदयाय नम:। इं चं छं जं झं ञं ईं शिरसे स्वाहा। उं टं ठं डं ढं णं ऊं शिखायै वषट्। एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुं। ओं पं फं बं भं मं औं नेत्रत्रयाय वौषट्। अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अ: अस्त्राय फट्।

अथ मातृकान्यास:—अं नम: शिरसि, आं मुखवृत्ते, इं दक्षनेत्रे, ईं वामनेत्रे, उं दक्षकर्णे, ऊं वामकर्णे, ऋं दक्षनासापुटे, ॠं वामनासापुटे, ऌं दक्षगण्डे, ॡं वामगण्डे, एं ऊर्ध्वोष्ठे, ऐं अधरोष्ठे, ओं ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ, औं अधोदन्तपंक्तौ, अं शिरसि, अ: मुखे, कंखंगंघंङं दक्षबाहुसन्धिषु, चंछंजंझंञं वामबाहुसन्धिषु, टंठंडंढंणं दक्षपादसन्धिषु, तंथंदंधंनं वामपादसन्धिषु, पं दक्षपार्श्वे, फं वामपार्श्वे, बं पृष्ठे, भं नाभौ, मं जठरे, यं हृदि, रं दक्षांसे, लं ककुदि, वं वामांसे, शं हृदादिदक्षहस्ताग्रान्तं, षं हृदादिवामहस्ताग्रान्तं, सं हृदादिदक्षपादाग्रान्तं, हं हृदादिवामपादाग्रान्तं, ळं पादादिशिर:पर्यन्तं, क्ष: शिरस: पादपर्यन्तमिति त्रिर्व्यापयेत्। तत: अंॐअं इति क्षान्तं न्यसेत्। अंह्रींअमिति क्षान्तं मातृकास्थानेषु न्यसेत्। अंह्सौ:अमिति क्षान्तं न्यसेत्। अंह्रींअं इति क्षान्तं न्यसेत्। अंश्रींअं इति

क्षान्तं न्यसेत्। केवलं मातृकास्थानेषु मूलं न्यसेदिति षोढा न्यासं विधाय, मूलमुच्चरन् देहशुद्धिं कृत्वा घटपूजां कुर्यात्।

मातृका न्यास—अं नमः शिरसि। आं नमः मुखवृत्ते। इं नमः दक्षनेत्रे। ईं नमः वामनेत्रे। उं नमः दक्षकर्णे। ऊं नमः वामकर्णे। ऋं नमः दक्षनासापुटे। ॠं नमः वामनासापुटे। ऌं नमः दक्षगण्डे। ॡं नमः वामगण्डे। एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे। ऐं नमः अधरोष्ठे। ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ। औं नमः अधोदन्तपंक्तौ। अं नमः शिरसि। अः नमः मुखे। कं खं गं घं ङं दक्षबाहुसन्धिषु। चं छं जं झं ञं वामबाहुसन्धिषु। टं ठं डं ढं णं दक्षपादसन्धिषु। तं थं दं धं नं वामपादसन्धिषु। पं नमः दक्षपार्श्वे। फं नमः वामपार्श्वे। बं नमः पृष्ठे। भं नमः नाभौ। मं नमः जठरे। यं नमः हृदि। रं नमः दक्षांसे। लं नमः ककुदि। वं नमः वामांसे। शं नमः हृदादिदक्षहस्ताग्रान्तम्। षं नमः हृदादिवामहस्ताग्रान्तम्। सं नमः हृदादिदक्षपादाग्रान्तम्। हं नमः हृदादि वामपादाग्रान्तम्। लं नमः पादादिशिरःपर्यन्तम्। क्षं नमः शिरसः पादपर्यन्तम्। तीन व्यापक न्यास करे।

सम्पुट न्यास—इसके बाद अं ॐ अं से क्षं ॐ क्षं तक सम्पुटित न्यास करे। अं ह्रीं अं से क्षं ह्रीं क्षं तक न्यास करे। अं ह्सौः अं से क्षं ह्सौः क्षं तक न्यास करे। अं ह्रीं अं से क्षं ह्रीं क्षं तक न्यास करे। अं श्रीं अं से क्षं श्रीं क्षं तक न्यास करे। केवल मातृकास्थानों में मूल मन्त्र का न्यास करे। इस प्रकार षोढ़ा न्यास के बाद मूल मन्त्र का उच्चारण करके देहशुद्धि करे। तब घटपूजन करे।

तत्र सामान्यार्घ्यस्य वामे बिन्दुषट्कोणवृत्तचतुरश्रं विलिख्य, तत्र 'ॐ पीठेभ्यो नमः' इत्यभ्यर्च्य, तत्र क्षालिताधारं संस्थाप्य रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः इत्यक्षतैः संपूज्य, तत्र श्रीघटं संस्थाप्य,

ब्रह्मणा च यथापूर्व विष्णुना च यथा पुरा।
शम्भुना च यथा देवि तथा त्वां स्थापयाम्यहम्॥

इति संस्थाप्य, अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः, इति गन्धपुष्पैरभ्यर्च्य, मूलं विलोममातृकया परमामृतेनापूर्य, सौः सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः इति संपूज्य, अस्त्राय फडिति कुम्भे द्रव्यं संताड्य मूलमुच्चरन् नासया त्रिर्गन्धं गृह्णीयात्। तत्र त्रिकोणं विलिख्य, मूलं त्रिरिष्ट्वा मूलेन प्रपूज्य, 'ओंह्रांह्रींह्रूंह्रैंह्रौंह्रः सुधे शुक्रशापं मोचय मोचय अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा' इति द्रव्योपरि दशधा संजप्य,

ॐ सूर्यमण्डलसंभूते वरुणालयसंभवे।
अमाबीजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम्॥

वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि।
तेन सत्येन ते देवि ब्रह्महत्यां व्यपोहतु॥
पवमान: परानन्द: पवमान: परो रस:।
पवमानं परं ज्ञानं तेन त्वां पावयाम्यहम्॥

इति त्रिर्जप्त्वा, ॐअंआंइं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय अंह्रीं अमृतेश्वर्यै नम:, इति द्रव्योपरि दशधा जप्त्वा, आनन्द-भैरवभैरव्यौ ध्यात्वा ह्सक्षमलवरयऊं आनन्दभैरवाय वषट्, इति दशधा जपेत्। ९ँ सुधादेव्यै वौषट्, इति द्रव्योपरि दशधा जप्त्वा, तत्र त्रिकोणं विलिख्य 'गङ्गे च यमुने चैव' इत्यादिना तीर्थमावाह्य, अकारादिषोडश ककारादिषोडश थकारादिषोडश पूर्वादित्रिकोणे न्यसेत्। मध्ये हंळंक्षं विलिख्य, मूलं दशधा जप्त्वा गन्धपुष्पदूर्वाक्षतै: संपूज्य, मत्स्यमुद्रादीन् शोधयेदिति द्रव्यशुद्धि:।

घट पूजन द्रव्यशोधन—सामान्य अर्घ्यपात्र के वाम भाग में बिन्दु, षट्कोण वृत्त, चतुरस्त्र बनाकर उसका अर्चन 'ॐ पीठेभ्यो नम:' से करे। उस पर आधार को धोकर स्थापित करे। रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नम: से अक्षत चढ़ावे। आधार पर घट स्थापित करे। घटस्थापन का मन्त्र है—

ब्रह्मणा च यथापूर्वं विष्णुना च यथा पुरा।
शम्भुना च यथा देवि तथा त्वं स्थापयाम्यहम्।।

इसके बाद अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नम: से गन्धाक्षत-पुष्प से घट का पूजन करे। तब मूल मन्त्र के साथ क्षं से अं तक विलोमात्मक मातृका पाठ करके परमामृत से कलश को भर दे। सौ: सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नम: से कलशस्थ अमृत का पूजन करे। अस्त्राय फट् कहकर कलशस्थ द्रव्य का ताड़न करे। मूल मन्त्र बोलकर नाक से त्रिगन्ध ग्रहण करे। त्रिकोण बनाये। 'त्रिरिष्ट्वा' को मूल मन्त्र से सम्पुटित करके पूजन करे। ॐ हां ह्रीं हूं हैं हौं ह: सुधे शुक्रशापं मोचय मोचय अमृतं श्रावय श्रावय स्वाहा का जप द्रव्य पर दश बार करे।

ॐ सूर्यमण्डलसम्भूते वरुणालयसम्भवे।
अमाबीजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम्।।
वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि।
तेन सत्येन ते देवि ब्रह्महत्यां व्यपोहतु।।

पवमानः परानन्दः पवमानः परो रसः।
पवमानं परं ज्ञानं तेन त्वां पावयाम्यहम्।।

इन तीनों श्लोका को जप तीन बार करे।

ॐ अं आं इं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय अं ह्रीं अमृतेश्वर्यै नमः। अमृत पर इसका जप दश बार करे। आनन्दभैरव और भैरवी का ध्यान करे। ह स क्ष म ल व र य ऊं आनन्दभैरवाय वौषट् का जप दश बार करे।

हसक्षमलवरयीऊं सुधादेव्यै वौषट् का जप द्रव्य पर दश बार करे। द्रव्य पर त्रिकोण की कल्पना करके 'गङ्गे च यमुने' इत्यादि मन्त्र से तीर्थों का आवाहन करे। त्रिकोण के तीनों कोनों में पूर्वादि क्रम से अकारादि षोडश स्वर, क से त तक के सोलह वर्ण, थ से स तक के सोलह वर्णों का न्यास करे। त्रिकोण के मध्य में हं ळं क्षं लिखे। मूल मन्त्र का दश बार जप करे। गन्धाक्षत-पुष्प-दूब से पूजा करे। मत्स्यादि मुद्राओं से शोधन करे। यह द्रव्यशुद्धिकरण हुआ।

मीनोपरि धेनुयोनिमत्स्यमुद्राः प्रदर्श्य—

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

इति मूलं त्रिर्जप्त्वा मीनं शोधयेदिति मीनशुद्धिः।

मांसोपरि मुद्रात्रयं प्रदर्श्य—

ॐ प्र तद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा॥

इति मूलं त्रिर्जप्त्वा मांसं शोधयेदिति मांसशुद्धिः।

मुद्रोपरि मुद्रात्रयं प्रदर्श्य—

ॐ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुराततम्।
तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम्॥

इति मूलं त्रिर्जप्त्वा मुद्रां शोधयेदिति।

मत्स्यशुद्धि—मत्स्य पात्र में धेनु-योनि मुद्रा दिखाये। तब इस मन्त्र का जप तीन बार करे—

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

मांसशोधन—मांसपात्र को मत्स्य, धेनु और योनि मुद्रा दिखाकर इस मन्त्र का जप करे—

ॐ प्रतद् विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षिपन्ति भुवनानि विश्वा।।

इस प्रकार मांसशोधन होता है।

मुद्राशोधन—मुद्रापात्र में मत्स्य, योनि और धेनुमुद्रा दिखाकर निम्न मन्त्र का पाठ करके तीन बार मूल मन्त्र का जप करे—

ॐ तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः।
दिवीव चक्षुराततं तद् विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धसे विष्णोर्यत्परमं पदं।।

यह मुद्राशोधन हुआ।

ततो मुद्राखण्डमीनखण्डमांसखण्डादीन् घटे निःक्षिप्य, चतुरस्रं विलिख्य, स्ववामे साधारं पात्रं गुरोः संस्थाप्य, कुलामृतेनापूर्य मूलेन पूजयेत्। ततः स्वभोगपात्रं शक्तिपात्रं योगिनीवीरपात्रमधुपर्कपात्राणि संस्थाप्य कलशामृतेनापूर्य घृतमधुशर्कराभिर्मधुपर्कपात्रं प्रपूर्य योगपीठपूजां कुर्यात्। बिन्दुविभूषणत्रिकोणविराजमानवसुकोणमण्डितवृत्ताञ्चितवसुदलविराजितषोडशदलखचितवृत्तत्रयसंभूषितचतुरश्रं श्रीयन्त्रराजं विलिख्य, श्रीस्वर्णपीठादौ निवेश्य, हृदि सदेवीकं देवं मानसोपचारैरभ्यर्च्य बाह्यपूजां कुर्यात् । तत्र ॐह्रीं मण्डूकाय नमः, रँ कालाग्निरुद्राय नमः, रँ मूलप्रकृत्ये नमः, रँ आधारशक्त्यै नमः, रँ कूर्माय नमः, रँ अनन्ताय नमः, रँ वराहाय नमः, रँ पृथिव्यै नमः, रँ सुधार्णवाय नमः, रँ मणिमयद्वीपाय नमः। अष्टदिक्षु रँ नवरत्नखण्डेभ्यो नमः, रँ सुवर्णपर्वताय नमः, रँ नन्दनोद्यानाय नमः, रँ कल्पवनाय नमः, रँ पद्मवनाय नमः, रँ विचित्ररत्नखचितभूमिकायै नमः, रँ चिन्तामणिमण्डपाय नमः, रँ नवरत्नवेदिकायै०, रँ रत्नसिंहासनाय नमः, रँ उच्चैःश्वेतच्छत्राय नमः, पूर्वादिदिक्षु रँ धर्मज्ञानवैराग्यैश्वर्येभ्यो०, विदिक्षु रँ अधर्माज्ञानावैराग्यानैश्वर्येभ्यो०, रँ सं सत्त्वाय०, रँ रं रजसे०, रँ तं तमसे०, रँ तत्त्वेभ्यो नमः, रँ ॐह्रींह्सौः मन्त्रवर्णभूषितकर्णिकायै०, प्रकृतिमयपत्रेभ्यो०, विकृतिमयकेसरेभ्यो नमः, गरुडाय नमः, पञ्चाशद्वर्णविभूषितपद्मासनाय नमः, मूलं सर्वतत्त्वात्मकाय श्रीयोगपीठाय नमः, इति संपूज्य देवं ध्यात्वा, त्रिखण्डां पुष्पगर्भितां निबध्य

देवेश भक्तिसुलभ परिवारसमन्वित ।
यावत् त्वां पूजयिष्यामि तावद् देव इहावह ॥

इसके बाद मुद्रा खण्ड, मीन खण्ड, मांस खण्ड घट में डाले। अपने बाँयें भाग में चतुरस्र बनाकर उस पर आधार रखे। आधार पर गुरुपात्र को रखे। पात्र को कुलामृत से पूर्ण करे। मूल मन्त्र से पूजा करे।

पात्रस्थापन—अपने आगे भोगपात्र, शक्तिपात्र, योगिनीपात्र, वीरपात्र और मधुपर्कपात्र का स्थापन करे। कलश के अमृत से इन्हें पूर्ण करे। मधुपर्कपात्र को घी, मधु, शक्कर से पूर्ण करे। तब योगपीठ की पूजा करे।

योगपीठ-पूजन—बिन्दु, त्रिकोण, अष्टकोण, अष्टदल, षोड़शदल, वृत्तत्रय और भूपुरयुक्त श्रीयन्त्र अंकित करके या स्वर्णपत्र पर अंकित यन्त्र को स्थापित करे। हृदय में देवी-सहित देव का मानसोपचार से पूजन करे। तब बाह्य पूजन करे।

बाह्य पूजन—योगपीठ का पूजन—ॐ ह्रीं मण्डूकाय नमः। ॐ ह्रीं कालाग्निरुद्राय नमः। ॐ ह्रीं मूलप्रकृत्यै नमः। ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं कुर्माय नमः। ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः। ॐ ह्रीं वराहाय नमः। ॐ ह्रीं पृथिव्यै नमः। ॐ ह्रीं सुधार्णवाय नमः। ॐ ह्रीं मणिमयद्वीपाय नमः।

पीठ की आठो दिशाओं में—ॐ ह्रीं नवरत्नखण्डेभ्यो नमः। ॐ ह्रीं सुवर्णपर्वताय नमः। ॐ ह्रीं नन्दनोद्यानाय नमः। ॐ ह्रीं कल्पवनाय नमः। ॐ ह्रीं पद्मवनाय नमः। ॐ ह्रीं विचित्ररत्नखचितभूमिकायै नमः। ॐ ह्रीं चिन्तामणिमण्डपाय नमः। ॐ ह्रीं नवरत्नवेदिकायै नमः। ॐ ह्रीं रत्नसिंहासनायै नमः। ॐ ह्रीं उच्चैः श्वेतच्छत्राय नमः।

पूर्वादि दिशाओं में—ॐ ह्रीं धर्मज्ञानवैराग्यैश्वर्येभ्यो नमः।

विदिशाओं में—ॐ ह्रीं अधर्माज्ञानावैराग्यानैश्वर्येभ्यो नमः। ॐ ह्रीं सं सत्वाय नमः। ॐ ह्रीं रं रजसे नमः। ॐ ह्रीं तं तमसे नमः। ॐ ह्रीं तत्त्वेभ्यो नमः। ॐ ह्रीं ह्सौः मन्त्रवर्णभूषितकर्णिकायै नमः। प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः। विकृतिमयकेसरेभ्यो नमः। गरुडाय नमः। पञ्चाशद्वर्णविभूषितपद्मासनाय नमः। ॐ ह्रीं ह्सौः ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नमः। सर्वतत्त्वात्मकं श्रीयोगपीठाय नमः।

इस प्रकार पूजन के बाद देव का ध्यान करे। पुष्पगर्भित त्रिखण्डा मुद्रा बनाकर आवाहन करे, जैसे—

देवेश भक्तसुलभ परिवारसमन्वित।
यावत् त्वं पूजयिष्यामि तावद् देव इहावह।।

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिप्त्वा आवाहनादिका मुद्राः प्रदर्श्य, मूलं साङ्गः सदेवीकः

श्रीलक्ष्मीनारायणदेव इहागच्छ २ इह संतिष्ठ २ इह संनिधत्स्व २ मूलं ॐह्रींह्सौः आंह्रींक्रों हंसः लक्ष्मीनारायणप्राणा इह प्राणा ८ँ लक्ष्मी-नारायणजीव इह स्थितः ८ँ लक्ष्मीनारायणसर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुः-श्रोत्रघ्राणप्राणा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा, इति लेलिहानमुद्रया प्राणान् दत्त्वा, मूलं सदेवीकलक्ष्मीनारायण इदमासनमास्यतां, मूलविद्यान्ते पाद्याचमनीयमधुपर्काचमनीयार्घ्यगन्धपुष्पाक्षतस्नानालङ्काररत्नपीठगन्ध-पुष्पाक्षतधूपदीपनैवेद्याचमनीयताम्बूलच्छत्रचामरारात्रिकादीन्निवेद्य प्रणम्य, मूलेन कलशामृतेन तत्त्वमुद्रया साङ्गं सवाहनं सायुधं सदेवीकं सपरिच्छदं लक्ष्मीनारायणं पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः, इति त्रिः सन्तर्प्य, देवाज्ञामादाय परिवारदेवताः पूजयेत्।

पुष्पाञ्जलि देकर आवाहनादि मुद्रा प्रदर्शित करे। ॐ ह्रीं ह्सौ: ह्रीं श्रीं लक्ष्मी-नारायणाय नम: साङ्ग: सदेवीक: श्रीलक्ष्मीनारायणदेव इहागच्छ इहागच्छ, इह संतिष्ठ इह संतिष्ठ, इह सन्निधत्स्व, इह सन्निधत्स्व। ॐ ह्रीं ह्सौ: ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नम: ॐ ह्रीं ह्सौ: आं ह्रीं क्रों हंस: लक्ष्मीनारायण प्राणा इह प्राणा ॐ ह्रीं ह्सौ: आं ह्रीं क्रों हंस: लक्ष्मीनारायण जीव इह स्थित: ॐ ह्रीं ह्सौ: आं ह्रीं क्रों हंस: लक्ष्मी-नारायण सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मन:चक्षु:श्रोत्रघ्राणप्राणा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। लेलिहान मुद्रा से प्राणप्रतिष्ठा करे। ॐ ह्रीं ह्सौ: ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नम: सदेवीक इदमासनमास्यताम्। मूल विद्योच्चारणपूर्वक पूजन करे; जैसे—

ॐ ह्रीं ह्सौ: ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नम: पाद्यं समर्पयामि। ॐ ह्रीं ह्सौ: ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नम: आचमनीयं समर्पयामि। ॐ ह्रीं ह्सौ: ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नम: मधुपर्कं समर्पयामि। ॐ ह्रीं ह्सौ: ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नम: आचमनीयं समर्पयामि। ॐ ह्रीं ह्सौ: ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नम: गंधाक्षतपुष्पं समर्पयामि। ॐ ह्रीं ह्सौ: ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नम: स्नानालङ्काररत्नपीठगन्धाक्षतपुष्पं समर्पयामि। ॐ ह्रीं ह्सौ: ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नम: धूपं आघ्रापयामि। ॐ ह्रीं ह्सौ: ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नम: दीपं दर्शयामि। ॐ ह्रीं ह्सौ: ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नम: नैवेद्यं निवेदयामि। ॐ ह्रीं ह्सौ: ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नम: आचमनीयं समर्पयामि। ॐ ह्रीं ह्सौ: ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नम: ताम्बूलं समर्पयामि। ॐ ह्रीं ह्सौ: ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नम: छत्रचामरं समर्पयामि। ॐ ह्रीं ह्सौ: ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नम: आरार्तिकादि समर्पयामि।

इसके बाद प्रणाम करे।

ॐ ह्रीं ह्सौः ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नमः मन्त्र से कलशामृत से तत्त्वमुद्रा से साङ्गं, सवाहनं, सायुधं, सदेवीकं, सपरिच्छदं लक्ष्मीनारायणं पूजयामि नमः तर्पयामि नमः से पूजन करे। तीन बार तर्पण करे। देवता से आज्ञा लेकर परिवारदेवता का पूजन करे।

पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा मूलं महालक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, मू० राज्यलक्ष्मीश्रीपा०, मू० सिद्धलक्ष्मीश्री०, इति बिन्दौ प्रथमावरणम्।

ॐह्रींह्सौः गं गङ्गाश्रीपादुकां०, ॐह्रींह्सौः यं यमुनाश्री०, ॐह्रींह्सौः सं सरस्वतीश्री०, इति त्र्यश्रे द्वितीयावरणम्।

ॐह्रींह्सौः शंखश्री०, ॐह्रींह्सौः चक्रश्री०, ॐह्रींह्सौः गदाश्री०, ॐह्रींह्सौः पद्मश्री०, इति बिन्दौ तृतीयावरणम्।

प्रथम आवरण—बिन्दुमण्डल में पुष्पाञ्जलि देकर पूजन करे—

ॐ ह्रीं ह्सौः ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नमः महालक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीं ह्सौः ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नमः राज्यलक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीं ह्सौः ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नमः सिद्धलक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

द्वितीय आवरण—त्रिकोण में—

ॐ ह्रीं ह्सौः गं गङ्गाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः यं यमुनाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः सं सरस्वतीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।

तृतीय आवरण—बिन्दु में—

ॐ ह्रीं ह्सौः शङ्खश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः चक्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः गदाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः पद्मश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।

मूलं लक्ष्मीविष्णुश्रीपा०, ॐह्रींह्सौः लक्ष्मीवासुदेवश्री०, ॐह्रींह्सौः लक्ष्मीदामोदरश्री०, ओंह्रींह्सौः लक्ष्मीनृसिंहश्री०, ॐह्रींह्सौः लक्ष्मी-सङ्कर्षणश्री०, ॐह्रींह्सौः लक्ष्मीत्रिविक्रमश्रीपादु०, ॐह्रींह्सौः लक्ष्मी-अनिरुद्धश्री०, ॐह्रींह्सौः लक्ष्मीविश्वक्सेनश्री०, इति वसुकोणे चतुर्था-वरणम्।

ॐह्रींह्सौः महाभैरवश्रीपा०, ३ँ रुरुभैरवश्री०, ३ँ चण्डभैरवश्री०, ३ँ भूतेशभैरवश्री०, ३ँ कालभैरवश्री०, ३ँ कपालिभैरवश्री०, ३ँ भीषण-भैरवश्री०, ३ँ श्मशानभैरवश्री० इत्यष्टदलेषु पञ्चमावरणम्।

चतुर्थ आवरण—अष्टकोण में पूर्वादि क्रम में—

मूलं ॐ ह्रीं ह्सौः लक्ष्मीविष्णुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
मूलं ॐ ह्रीं ह्सौः लक्ष्मीवासुदेवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
मूलं ॐ ह्रीं ह्सौः लक्ष्मीदामोदरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
मूलं ॐ ह्रीं ह्सौः लक्ष्मीनृसिंहश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
मूलं ॐ ह्रीं ह्सौः लक्ष्मीसंकर्षणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
मूलं ॐ ह्रीं ह्सौः लक्ष्मीत्रिविक्रमश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
मूलं ॐ ह्रीं ह्सौः लक्ष्मीअनिरुद्धश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
मूलं ॐ ह्रीं ह्सौः लक्ष्मीविश्वक्सेनश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।

पञ्चम आवरण—अष्टदल में पूर्वादि क्रम से—

ॐ ह्रीं ह्सौः महाभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः रुरुभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः चण्डभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः भूतेशभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः कालभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ह्रीं ह्सौः कपालिभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः भीषणभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः श्मशानभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।

ॐह्रींह्सौः असिताङ्गभैरवश्री०, ३ँ हंसकेतुभैरवश्री०, ३ँ वंशीपाणिश्री०, ३ँ स्वगुरुश्री०, ३ँ परमगुरुश्री०, ३ँ परापरगुरुश्री०, ३ँ परमेष्ठिगुरुश्री०, इति वायव्यादीशान्तं अन्तर्वृत्तत्रये षष्ठावरणम्।

ॐह्रींह्सौः केशवश्री०, ३ँ माधवश्री०, ३ँ कृष्णश्री०, ३ँ गोविन्दश्री, ३ँ मधुसूदनश्री०, ३ँ गदाधरश्री०, ३ँ शंखपाणिश्री०, ३ँ चक्रपाणिश्री०, ३ँ चतुर्भुजश्री०, ३ँ पद्मायुधश्री०, ३ँ कैटभारिश्री०, ३ँ घोरदंष्ट्रश्री०, ३ँ जनार्दनश्री०, ३ँ वैकुण्ठश्री०, ३ँ वामनश्री० , ३ँ गरुडध्वजश्री०, इति षोडशदलेषु सप्तमावरणम्।

षष्ठ आवरण—वृत्तत्रय के अन्तराल में वायव्य से ईशान तक—
ॐ ह्रीं ह्सौः असिताङ्गभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः हंसकेतुभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः वंशीपाणिभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः स्वगुरुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः परमगुरुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः परापरगुरुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः परमेष्ठिगुरुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।

सप्तम आवरण—षोडशदल में पूर्वादि क्रम से—
ॐ ह्रीं ह्सौः केशवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः माधवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः कृष्णश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ह्रीं ह्सौः गोविन्दश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः मधुसूदनश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः गदाधरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः शङ्खपाणिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः चक्रपाणिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः चतुर्भुजश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः पद्मायुधश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः कैटभारिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः घोरदंष्ट्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः जनार्दनश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः वैकुण्ठश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः वामनश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः गरुड़ध्वजश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।

ॐह्रींह्सौः लं इन्द्रश्री०, ३ँ रं वह्निश्री०, ३ँ टं यमश्री०, ३ँ क्षं निर्ऋतिश्री०, ३ँ वं वरुणश्री०, ३ँ यं वायुश्री०, ३ँ सं सोमश्री०, ३ँ हं ईशानश्री०, ३ँ ह्रीं अनन्तश्री०, ३ँ ह्रीं ब्रह्मश्रीं०, इति चतुरश्रेऽष्टमावरणम्।

ॐह्रींह्सौः वज्रश्री०, ३ँ शक्तिश्री०, ३ँ दण्डश्री०, ३ँ खड्गश्री०, ३ँ पाशश्री०, ३ँ ध्वजश्री० ३ँ यष्टिश्री०, ३ँ शूलश्री०, इति बाह्यद्वारचक्रेषु नवमावरणम्।

मूलं त्रिरुच्चार्य साङ्गं सवाहनं सायुधं सपरिच्छदं सलक्ष्मीकं लक्ष्मीनारायणं देवं पूजयामि नमः तर्पयामि नमः, इति संपूज्य, त्रिः संतर्प्य योनिमुद्रया प्रणमेदिति दशमावरणम्।

अष्टम आवरण—भूपुर में पूर्वादि क्रम से—
ॐ ह्रीं ह्सौः लं इन्द्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः रं वह्निश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः टं यमश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः क्षं निर्ऋतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ह्रीं ह्सौः वं वरुणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः यं वायुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः सं सोमश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः हं ईशानश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः ह्रीं अनन्तश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः ह्रीं ब्रह्माश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।

नवम आवरण—भूपुर में पूर्वादि क्रम से—

ॐ ह्रीं ह्सौः वज्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः दण्डश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः खड्गश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः पाशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः ध्वजश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः यष्टिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं ह्सौः शूलश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।

दशमावरण में—मूल मन्त्र—ॐ ह्रीं ह्सौः ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नमः को तीन बार बोलकर साङ्गं, सवाहनं, सायुधं, सपरिच्छदं, सलक्ष्मीकं लक्ष्मीनारायणं देवं पूजयामि नमः तर्पयामि नमः कहकर पूजन करे। तीन बार तर्पण करे। योनिमुद्रा से प्रणाम करे।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं दशमावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।

ततः पुनर्नैवेद्याचमनीयताम्बूलच्छत्रादीन् निवेद्य, देवाग्रे मालां मूलेन संपूज्य, यथाशक्त्या मूलं जप्त्वा, 'गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं' इत्यादिना देवाय जपं

समर्प्य, तदग्रे कवचसहस्रनामस्तवपाठान् कृत्वा तदपि देवीदेवयोः समर्प्य, साधकैः सह साधकः पात्रवन्दनं कुर्यात्।

यावन्न चलते दृष्टिर्यावन्न चलते मनः।
तावत् पानं प्रकर्तव्यं पशुपानमतः परम्॥

इति पूर्णपात्रं हुत्वा शान्तिस्तोत्रं पठित्वा, पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा नासया पुष्पमाघ्राय, करन्ध्रे सदेवीकं देवं प्रापय्य, पुनर्हृत्कमलमानीय स्वयमपि लक्ष्मीनारायण-विहितविग्रहो भूत्वा बाह्यतो वैष्णवाचारपरायणः सुखं विहरेत्। संहारमुद्रया च प्रणमेत्।

पुनः नैवेद्य, आचमनीय, ताम्बूल, छत्रादि अर्पण करके देव के आगे मूल मन्त्र से माला का पूजन करे। यथाशक्ति मूल मन्त्र का जप करके गुह्यातिगुह्य गोप्ता त्वं से जप देवता को समर्पित करे। तब देवता के अग्रभाग में कवच, सहस्रनाम, स्तोत्र का पाठ करे। पाठ को समर्पित करे। साधकों के साथ साधक पात्रवन्दना करे, जैसे—

यावन्न चलते दृष्टिः यावन्न चलते मनः।
तावत्पानं प्रकर्त्तव्यं पशुपानमतः परम्।।

पूर्णपात्र का हवन करके स्तोत्रपाठ करके पुष्पाञ्जलि प्रदान करे। पुष्पाञ्जलि में से एक फूल लेकर नाक से सूँघे। ब्रह्मरन्ध्र में देवी-सहित देव को ले आये। तब हृदय- कमल में ले आये। स्वयं भी लक्ष्मीनारायण का विहित विग्रह होकर बाहर से वैष्णावाचार-परायण होकर सुख से विहार करे। संहारमुद्रा से प्रणाम करे।

पटलोपसंहारः

इति श्रीदेवदेवस्य लक्ष्मीनारायणस्य ते।
पद्धतिर्नित्यपूजाया वर्णिता गोपितां कुरु॥
गुह्यं गोप्यमिदं तत्त्वं पूजासारं महेश्वरि।
गोपयेद् वैष्णवः सत्यमित्याज्ञा पारमेश्वरी॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये लक्ष्मीनारायणपूजापद्धति-निरूपणं नाम सप्तत्रिंशः पटलः॥३७॥

पटलोपसंहार—देवदेव श्री लक्ष्मीनारायण की नित्य पूजा पद्धति का वर्णन पूरा हुआ। इसे गोपित करे। यह तत्त्व गुह्य गोप्य है। यह पूजा का सार है। वैष्णव इसे गुप्त रखे। हे पारमेश्वरि! यह आज्ञा सत्य है।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में लक्ष्मीनारायणपूजापद्धति निरूपण नामक सप्तत्रिंश पटल पूर्ण हुआ।

•

अथाष्टत्रिंशः पटलः

लक्ष्मीनारायणकवचम्

कवचामाहात्म्यम्

श्रीभैरव उवाच

अधुना देवि वक्ष्यामि लक्ष्मीनारायणस्य ते।
कवचं मन्त्रगर्भं च वज्रपञ्जरकाख्यया ॥१॥
श्रीवज्रपञ्जरं नाम कवचं परमाद्भुतम्।
रहस्यं सर्वदेवानां साधकानां विशेषतः ॥२॥
यं धृत्वा भगवान् देवः प्रसीदति परः पुमान्।
यस्य धारणमात्रेण ब्रह्मा लोकपितामहः ॥३॥
ईश्वरोऽहं शिवो भीमो वासवोऽपि दिवस्पतिः।
सूर्यस्तेजोनिधिर्देवि चन्द्रमास्तारकेश्वरः ॥४॥
वायुश्च बलवांल्लोके वरुणो यादसांपतिः।
कुबेरोऽपि धनाध्यक्षो धर्मराजो यमः स्मृतः ॥५॥
यं धृत्वा सहसा विष्णुः संहरिष्यति दानवान्।
जघान रावणादींश्च किं वक्ष्येऽहमतः परम् ॥६॥

कवचमाहात्म्य—श्रीभैरव ने कहा—हे देवि! लक्ष्मीनारायण के मन्त्रगर्भ वज्रपञ्जर नामक कवच का वर्णन तुझसे करता हूँ। यह वज्रपञ्जर नामक कवच परम अद्भुत है। यह समस्त देवों के लिये रहस्यपूर्ण है साधकों के लिये विशेष महत्त्वपूर्ण है। इसको धारण करके भगवान् देव परम पुमान् होकर प्रसन्न रहते हैं; जिसको धारण करके ब्रह्मा लोकपितामह हुये हैं। इसी को धारण करके मैं शिव भीमेश्वर हूँ। इसी को धारण करके इन्द्र स्वर्ग के स्वामी हैं। इसी को धारण करके सूर्य तेजोनिधि हैं। चन्द्रमा तारकवृन्द के स्वामी हैं। वायु संसार में बलवान है। वरुण सागरों के स्वामी हैं। कुवेर धनाध्यक्ष हैं। यम धर्मराज हैं। इसे धारण करके विष्णु दानवों का शीघ्र संहार करते हैं। रावण आदि दैत्यों का संहार किया है। इससे अधिक माहात्म्य और क्या हो सकता है।।१-६।।

कवचविनियोगः

कवचस्यास्य सुभगे कथितोऽयं मुनिः शिवः।
त्रिष्टुप् छन्दो देवता च लक्ष्मीनारायणो मतः ॥७॥

रमा बीजं परा शक्तिस्तारं कीलकमीश्वरि।
भोगापवर्गसिद्ध्यर्थं विनियोग इति स्मृत: ॥८॥

कवच-विनियोग—हे सुभगे! इस वज्रपञ्जर नामककवच के ऋषि शिव कहे गये हैं। इसका छन्द त्रिष्टुप् एवं देवता लक्ष्मीनारायण कहे गये हैं। रमा = श्रीं बीज, परा = ह्रीं शक्ति एवं तार = ॐ कीलक कहा गया हैं। हे ईश्वरि! भोग-अपवर्ग की सिद्धि के लिये इसका विनियोग किया जाता है।।७-८।।

ध्यानम्

पूर्णेन्दुवदनं पीतवसनं कमलासनम्।
लक्ष्म्या श्रितं चतुर्बाहुं लक्ष्मीनारायणं भजे ॥९॥

ध्यान—पूर्णिमा के चाँद जैसा मुखमण्डल है। वस्त्र पीले रंग के हैं। कमल के आसन पर बैठे हैं। लक्ष्मी के आश्रित चतुर्भज लक्ष्मीनारायण का ध्यान करता हूँ।।९।।

कवचम्

ॐवासुदेवोऽवतु मे मस्तकं सशिरोरुहम्।
ह्रींललाटं सदा पातु लक्ष्मीविष्णु: समन्तत: ॥१०॥
हसौ: नेत्रेऽवताल्लक्ष्मीगोविन्दो जगतां पति:।
ह्रीं नासां सर्वदा पातु लक्ष्मीदामोदर: प्रभु: ॥११॥
श्रीं मुखं सततं पातु देवो लक्ष्मीत्रिविक्रम:।
लक्ष्मी कण्ठं सदा पातु देवो लक्ष्मीजनार्दन: ॥१२॥
नारायणाय बाहू मे पातु लक्ष्मीगदाग्रज:।
नम: पार्श्वौ सदा पातु लक्ष्मीनन्दैकनन्दन: ॥१३॥

कवच—ॐ वासुदेव बालों के सहित मेरे मस्तक की रक्षा करें। ह्रीं लक्ष्मीसहित विष्णु मेरे ललाट की रक्षा करें। हसौ: लक्ष्मी गोविन्द जगत्पति मेरे नेत्रों की रक्षा करें। ह्रीं लक्ष्मी दामोदर प्रभु मेरी नासिका की रक्षा सदैव करें। लक्ष्मी जनार्दन सर्वदा मेरे कण्ठ की रक्षा करें। नारायणाय लक्ष्मी कृष्ण मेरे बाहुओं की रक्षा करें। नम: लक्ष्मी नन्दनन्दन मेरे पार्श्वों की रक्षा करें।।१०-१३।।

अंआंइईं पातु वक्षो ॐ लक्ष्मीत्रिपुरेश्वर:।
उंऊंऋंॠं पातु कुक्षिं ह्रीं लक्ष्मीगरुडध्वज: ॥१४॥
लृंॡंएंऐं पातु पृष्ठं हसौ: लक्ष्मीनृसिंहक:।
ओंऔंअंअ: पातु नाभिं ह्रीं लक्ष्मीविष्टरश्रव: ॥१५॥

कंखंगंघं गुदं पातु श्रीं लक्ष्मीकैटभान्तकः।
चंछंजंझं पातु शिश्नं लक्ष्मी लक्ष्मीश्वरः प्रभुः॥१६॥
टंठंडंढं कटिं पातु नारायणाय नायकः।
तंथंदंधं पातु चोरू नमो लक्ष्मीजगत्पतिः॥१७॥

अं आं इं ईं ॐ लक्ष्मी त्रिपुरेश्वर वक्ष की रक्षा करें। उं ऊं ऋं ॠं ह्रीं लक्ष्मी गरुड़ध्वज मेरी कुक्षि की रक्षा करें। ऌं ॡं एं ऐं ह्सौः लक्ष्मी नृसिंह मेरी पीठ की रक्षा करें। ओं औं अं अः ह्रीं लक्ष्मी विष्टरश्रव मेरी नाभि की रक्षा करें। कं खं गं घं श्रीं लक्ष्मी कैटभान्तक मेरे गुदा की रक्षा करें। चं छं जं झं लक्ष्मी लक्ष्मीश्वर मेरे शिश्न की रक्षा करें। टं ठं डं ढं नारायणाय नायक मेरे कमर की रक्षा करें। तं थं दं धं लक्ष्मी जगत्पति नमः मेरे उरुओं की रक्षा करें।।१४-१७।।

पंफंबंभं पातु जानू ॐह्रीं लक्ष्मीचतुर्भुजः।
यंरंलंवं पातु जङ्घे हसौः लक्ष्मीगदाधरः॥१८॥
शंषंसंहं पातु गुल्फौ ह्रींश्रीं लक्ष्मीरथाङ्गभृत्।
ळंक्षः पादौ सदा पातु मूलं लक्ष्मीसहस्रपात्॥१९॥
ङंञंणंनंमं मे पातु लक्ष्मीशः सकलं वपुः।

पं फं बं भं ॐ ह्रीं लक्ष्मी चतुर्भज मेरे जानुओं की रक्षा करें। यं रं लं वं ह्सौः लक्ष्मी गदाधर मेरे जङ्घों की रक्षा करें। शं षं सं हं ह्रीं श्रीं लक्ष्मी रथाङ्गभृत् मेरे गुल्फों की रक्षा करें। ळं क्षं ॐ ह्रीं ह्सौः ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नमः लक्ष्मी सहस्रपात् मेरे पैरों की रक्षा करें। ङं ञं णं नं मं लक्ष्मी मेरे पूरे शरीर की रक्षा करें।।१८-१९।।

इन्द्रो मां पूर्वतः पातु वह्निर्वह्नौ सदावतु॥२०॥
यमो मां दक्षिणे पातु नैर्ऋत्यां निर्ऋतिश्च माम्।
वरुणः पश्चिमेऽव्यान्मां वायव्येऽवतु मां मरुत्॥२१॥
उत्तरे धनदः पायादैशान्यामीश्वरोऽवतु।
वज्रशक्तिदण्डखड्गपाशयष्टिध्वजाङ्किताः ॥२२॥
सशूलाः सर्वदा पान्तु दिगीशाः परमार्थदाः।
अनन्तः पात्वधो नित्यमूर्ध्वे ब्रह्मावताच्च माम्॥२३॥
दशदिक्षु सदा पातु लक्ष्मीनारायणः प्रभुः।

पूर्व में मेरी रक्षा इन्द्र करें। आग्नेय दिशा में अग्नि सदा रक्षा करें। दक्षिण में मेरी रक्षा यम करें। निर्ऋति नैर्ऋत्य दिशा में रक्षा करें। पश्चिम में मेरी रक्षा वरुण करें। वायव्य

में मरुत् रक्षा करें। उत्तर में कुवेर रक्षा करें। ईशान दिशा में ईश्वर रक्षा करें। वज्र, शक्ति, दण्ड, खड्ग, पाश, यष्टि, ध्वज और त्रिशूल से दिक्पाल मेरी रक्षा सर्वदा करें। अनन्त मेरी रक्षा अधोदिशा में करें। ऊर्ध्वदिशा में मेरी रक्षा ब्रह्मा करें। लक्ष्मी-नारायण प्रभु मेरी रक्षा दशो दिशाओं में करें।।२०-२३।।

प्रभाते पातु मां विष्णुर्मध्याह्ने वासुदेवकः ॥२४॥
दामोदरोऽवतात् सायं निशादौ नरसिंहकः।
सङ्कर्षणोऽर्धरात्रेऽव्यात् प्रभातेऽव्यात् त्रिविक्रमः ॥२५॥
अनिरुद्धः सर्वकालं विश्वक्सेनश्च सर्वतः।
रणे राजकुले द्यूते विवादे शत्रुसङ्कटे।
ॐह्रींहसौः ह्रींश्रींमूलं लक्ष्मीनारायणोऽवतु ॥२६॥

प्रभात में मेरी रक्षा विष्णु और मध्याह्न में मेरी रक्षा वासुदेव करें। सायंकाल में मेरी रक्षा दामोदर करें। रात्रि के प्रारम्भ में नृसिंह रक्षा करें। आधी रात में संकर्षण और प्रभात में त्रिविक्रम रक्षा करें। सभी समय मेरी रक्षा अनिरुद्ध करें। विश्वक्सेन सभी स्थानों में रक्षा करें। युद्ध में, राजदरबार में, जुआ में, विवाद में, शत्रुसंकट में मेरी रक्षा ॐ ह्रीं ह्सौः ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नमः करें।।२४-२६।।

ॐॐॐरणराजचौररिपुतः पायाच्च मां केशवः
ह्रींह्रींह्रींहहहाहसौः हसहसौ वह्नेर्वतान्माधवः।
ह्रींह्रींह्रींजलपर्वताग्रभयतः पायादनन्तो विभुः
श्रींश्रींश्रींशशशाललं प्रतिदिनं लक्ष्मीधवः पातु माम् ॥२७॥
इतीदं कवचं दिव्यं वज्रपञ्जरकाभिधम्।
लक्ष्मीनारायणस्येष्टं चतुर्वर्गफलप्रदम् ॥२८॥

ॐ ॐ ॐ युद्ध, राजदरबार, चोर, शत्रु से मेरी रक्षा केशव करें। ह्रीं ह्रीं ह्रीं हहहा ह्सौः हसहसौ माधव मेरी रक्षा अग्नि से करें। ह्रीं ह्रीं ह्रीं जल, पर्वताग्र और भय से मेरी रक्षा विभु अनन्त करें। श्रीं श्रीं श्रीं शशशा ललं प्रतिदिन मेरी रक्षा लक्ष्मी माधव करें। यह दिव्य वज्रपञ्जर नामक कवच पूरा हुआ। यह लक्ष्मीनारायण को अतिशय प्रिय है एवं धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्षरूप फल को देने वाला है।।२७-२८।।

फलश्रुतिः

सर्वसौभाग्यनिलयं सर्वसारस्वतप्रदम्।
लक्ष्मीसंवननं तत्त्वं परमार्थरसायनम् ॥२९॥

मन्त्रगर्भं जगत्सारं रहस्यं त्रिदिवौकसाम्।
दशवारं पठेद्रात्रौ रतान्ते वैष्णवोत्तमः ॥३०॥
स्वप्ने वरप्रदं पश्येल्लक्ष्मीनारायणं सुधीः।
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं कवचं मन्मुखोदितम् ॥३१॥
स याति परमं धाम वैष्णवं वैष्णवोत्तमः।
महाचीनपदस्थोऽपि यः पठेदात्मचिन्तकः ॥३२॥
आनन्दपरितस्तूर्णं लभेद् मोक्षं स साधकः।

फलश्रुति—यह कवच सभी सौभाग्य का आलय है। सभी सारस्वत विद्या का दाता है। लक्ष्मी-संवहन है। परमार्थ का रसायन तत्त्व है। यह मन्त्रगर्भ कवच जगत् का सार है। देवताओं का रहस्य है। वैष्णवोत्तम इसका दश पाठ यदि रात में मैथुन के बाद करे तो स्वप्न में वरप्रद लक्ष्मीनारायण का दर्शन प्राप्त होता है। मेरे द्वारा कथित इस कवच का पाठ जो तीनों सन्ध्याओं में करता है, वह विष्णु के उत्तम धाम में जाता है। महाचीनाचारी आत्मचिन्तक यदि इसका पाठ करता है तो वह भी आनन्द से परिपूर्ण मोक्ष को प्राप्त करता हैं।।२९-३२।।

गन्धाष्टकेन विलिखेद्द्रवौ भूर्जे जपन्मनुम् ॥३३॥
पीतसूत्रेण संवेष्ट्य सौवर्णेनाथ वेष्टयेत्।
धारयेद्गुटिकां मूर्ध्नि लक्ष्मीनारायणं स्मरन् ॥३४॥
रणे रिपून् विजित्याशु कल्याणी गृहमाविशेत्।
वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च याङ्गना ॥३५॥
सा बन्धीयात् कण्ठदेशे लभेत् पुत्रांश्चिरायुषः।
गुरूपदेशतो धृत्वा गुरुं ध्यात्वा मनुं जपन् ॥३६॥
वर्णलक्षपुरश्चर्याफलमाप्नोति साधकः।

भोजपत्र पर गन्धाष्टक द्रव से लिखकर मन्त्र जप करके पीले धागे से संवेष्टित करके या सोने से मढ़वाकर लक्ष्मीनारायण का स्मरण करके मूर्धा में धारण करे तो युद्ध में शत्रु को जीतकर सकुशल घर में लौट आता है। वन्ध्या, मृतवत्सा या काकवन्ध्या स्त्री इसे अपने कण्ठ में धारण करती है तो उसे चिरायु पुत्र प्राप्त होते हैं। गुरु के उपदेश से धारण करके गुरु का ध्यान करके जो मन्त्र जपता है, वह वर्णलक्ष पुरश्चरण का फल प्राप्त करता है।।३३-३६।।

बहुनोक्तेन किं देवि कवचस्यास्य पार्वति ॥३७॥
विनानेन न सिद्धिः स्यान्मन्त्रस्यास्य महेश्वरि।

सर्वागमरहस्याढ्यं तत्त्वात् तत्त्वं परात् परम् ॥३८॥
अभक्ताय न दातव्यं कुचैलाय दुरात्मने।
दीक्षिताय कुलीनाय स्वशिष्याय महात्मने ॥३९॥
महाचीनपदस्थाय दातव्यं कवचोत्तमम्।
गुह्यं गोप्यं महादेवि लक्ष्मीनारायणप्रियम्।
वज्रपञ्जरकं वर्म गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥४०॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये लक्ष्मीनारायणकवच-निरूपणात्मकमष्टत्रिंशः पटलः॥३८॥

बहुत कहने से क्या लाभ? हे पार्वति! विना कवच के इस मन्त्र की सिद्धि नहीं होती है। यह सभी आगम रहस्यों से पूर्ण है। यह श्रेष्ठ से श्रेष्ठ तत्त्वों का भी तत्त्व है। यह अभक्तों को देय नहीं है। कुचैल, दुष्टों को भी देय नहीं है। दीक्षित कुलीन महात्मा महाचीनाचारी अपने शिष्य को यह उत्तम कवच देते हैं। यह कवच गुह्य, गोप्य, लक्ष्मीनारायण को प्रिय है। इस वज्रपञ्जर कवच को अपनी योनि के समान गुप्त रखना चाहिये।।३७-४०।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में लक्ष्मीनारायणकवच निरूपण नामक अष्टत्रिंश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथैकोनचत्वारिंश: पटल:

लक्ष्मीनारायणसहस्रनाम

सहस्रनामप्रस्ताव:

श्रीभैरव उवाच

अधुना कथयिष्यामि विद्यां साहस्रनामिकीम्।
भोगदां मोक्षदां लोके लक्ष्मीनारायणस्य ते ॥१॥

लक्ष्मीनारायण सहस्रनाम प्रस्ताव—श्रीभैरव ने कहा किं हे देवि! मैं संसार में भोग एवं मोक्ष प्रदान करने वाले लक्ष्मीनारायण के सहस्रनाम का वर्णन करूँगा।।१।।

श्रीभैरव्युवाच

भगवन् करुणाम्भोधे लक्ष्मीनारायणस्य मे।
भोगापवर्गदं दिव्यं वद नामसहस्रकम् ॥२॥
सर्वमन्त्रमयं तत्त्वं सर्वपूजाफलप्रदम्।
सर्वागमरहस्याढ्यं सर्वदेवैकवन्दितम् ॥३॥

श्रीभैरवी ने कहा कि करुणा के सागर हे भगवन्! भोग-मोक्षप्रद लक्ष्मीनारायण के दिव्य सहस्रनाम को मुझे सुनाइये, जो कि सर्व मन्त्रमय एवं सभी पूजनों के फलों को देने वाला है और जो सभी आगमों के रहस्य से परिपूर्ण है। साथ ही जो सभी देवों द्वारा वन्दित है।।२-३।।

सहस्रनाममाहात्म्यम्

श्रीभैरव उवाच

एतद्रहस्यं परमं मन्त्रनामसहस्रकम्।
लक्ष्मीनारायणस्येष्टं सर्वस्वं तत्त्वतो मम ॥४॥
गुह्यं गोप्यतमं देवि सुखदं धर्मवर्धनम्।
लक्ष्मीसंवननं लोके परत्र परमार्थदम् ॥५॥
महाचीनपदस्थानां कौलिकानामभीष्टदम्।
उपपातकपापानां शमनं दमकारकम् ॥६॥
सर्वतीर्थफलाद्रिक्तं सर्वयज्ञफलप्रदम्।

सर्वदेवस्तुतं साध्यं चतुर्वर्गफलप्रदम् ॥७॥
अवाच्यं मार्गहीनानामश्रव्यं दुष्टचेतसाम् ।
वैष्णवः कौलिकश्रेष्ठः पठेन्नामसहस्रकम् ।
गुरूपदेशतो देवि सर्वसिद्धिमवाप्नुयात् ॥८॥

माहात्म्य—श्रीभैरव ने कहा हे देवि! लक्ष्मीनारायण को प्रिय यह मन्त्रनामसहस्र परम रहस्य है। तत्त्वत: यह मेरा सर्वस्व है। यह गुह्य, गोप्यतम, सुखदायक, धर्म-वर्धक है। संसार में लक्ष्मीवर्धक और परलोक में परमार्थ-प्रदायक है। महाचीनाचारी कौलिकों के लिये यह अभीष्टदायक है। यह उपपातकों का शमन और पापों को दमन करता है। इससे सभी तीर्थों और यज्ञों के फल प्राप्त होते हैं, सभी देव इसकी स्तुति करते हैं। यह साध्य है और चतुर्वर्ग फल-प्रदायक है। इसे पथभ्रष्टों से नहीं कहना चाहिये। दुष्टों को नहीं सुनाना चाहिये। कौलिक वैष्णव गुरु-उपदेश से इस सहस्रनाम का पाठ करके सभी सिद्धियों को प्राप्त कर सकता है।।४-८।।

विनियोगः

अस्य श्रीलक्ष्मीनारायणसहस्रनामपाठस्य श्रीशिव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्रीलक्ष्मीनारायणो देवता, श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकं, धर्मार्थकाम-मोक्षार्थे सहस्रनामपाठे विनियोगः।

विनियोग—इस श्रीलक्ष्मीनारायण सहस्रनाम पाठ के ऋषि श्रीशिव हैं। छन्द त्रिष्टुप् है। श्रीलक्ष्मी नारायण देवता हैं। श्रीं बीज है, ह्रीं शक्ति है, ॐ कीलक है। धर्म-अर्थ-काम-मोक्षरूप पुरुषार्थचतुष्टय की प्राप्ति के लिये इस सहस्रनाम के पाठ का विनियोग किया जाता है।

ध्यानम्

वेदानुद्धरते जगन्ति वहते भूगोलमुद्बिभ्रते
दैत्यान् दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते ।
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते
म्लेच्छान् मूर्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः ॥

ध्यान—जो वेदों का उद्धार करते हैं, संसार का पालन करते हैं, भूलोक में भ्रमण करते हैं, दैत्यों का संहार करते हैं, बलि से छल करते हैं, क्षत्रियों का क्षय करते हैं, रावण का वध करते हैं, हल से शत्रु का संहार करते हैं, करुणा का विस्तार करते हैं, म्लेच्छों को मूर्च्छित करते हैं; ऐसे दश कृत्यों को करने वाले कृष्ण को प्रणाम है।

सहस्रनाम

ॐलक्ष्मीविष्णुरीशानो लक्ष्मीकान्तो विनायकः ।
विश्वम्भरो विश्वनाथो विश्वसूर्विश्वसूदनः ॥१॥
लक्ष्मीराजो महात्मा च परमात्मा परापरः ।
अपारविभवो भव्यो भवभूतिमयो भवः ॥२॥
लक्ष्मीधवो महांल्लक्ष्मीदेवो लक्ष्मीभवोत्तमः ।
लक्ष्मीधराधरो लक्ष्मीधाराधरसमद्युतिः ॥३॥
विश्रुतो विकलो व्यग्रो विलासी गीतवल्लभः ।
विद्याधरप्रियो विद्यावादी विद्याविशारदः ॥४॥
पट्टभृत् पाटलद्योतः पीतपट्टधरो भगः ।
भाग्यवान् भोगदो भार्गो भृगुभावविवर्धनः ॥५॥
लक्ष्मीकौलेश्वरो लक्ष्मीगुह्यो लक्ष्मीविभावसुः ।
लक्ष्मीवीरेश्वरो लक्ष्मीधन्यो लक्ष्मीविभाकरः ॥६॥
अचिन्त्यो नित्यसंयोगी संयमी यमभीतिहृत् ।
यामिनीशप्रियकरो राहुध्वंसी विषापहः ॥७॥
धीरो भ्रमहरो भीमो भीमास्यो भीमवल्लभः ।
हारकङ्कणभूषाढ्यो मौलिमान् नूपुराञ्चितः ॥८॥
किङ्किणीरवसन्तुष्टो वंशीवादनतत्परः ।
स्थाणुरूपश्चरगतिश्चारुवक्त्रो जयी नयी ॥९॥
लक्ष्मीविनयवाँल्लक्ष्मीजयवाँल्ललिताकृतिः ।
लक्ष्मीनेत्रवशी लक्ष्मीहासवश्यो विनर्तकः ॥१०॥
नाट्यप्रियो नटी नन्दी सर्ववित् सर्वसारभृत् ।
वासवो गोप्यमार्गेष्टो वैष्णवाचारतत्परः ॥११॥
आत्मा परात्मा ज्ञानात्मा लोकाध्यक्षः सुरेश्वरः ।
सत्यः स्तुत्यः शुचिर्नित्यो नित्यात्मा नित्यदर्शनः ॥१२॥
पञ्चनादमयोऽनन्तः पञ्चमाचारवल्लभः ।
पञ्चमस्वरसङ्गीतः कीर्तिदो मोहनाशनः ॥१३॥
लक्ष्मीपरः पुमाँल्लक्ष्मीशक्तिभृद् भक्तितोषितः ।
लक्ष्मीयोगीश्वरो लक्ष्मीयोगदो भोगिनायकः ॥१४॥
लक्ष्मीलोकेश्वरो लक्ष्मीवसुर्लक्ष्मीमनोहरः ।
अचिन्त्यमहिमा(१००)ऽचिन्त्यगरिमा घोरनिस्वनः ॥१५॥

सहस्रनाम—ॐ लक्ष्मीविष्णु, ईशान, लक्ष्मीकान्त, विनायक, विश्वम्भर, विश्वनाथ, विश्वसू, विश्वसूदन, लक्ष्मीराज, महात्मा, परमात्मा, परापर, अपारविभव, भव्य, भव-भूतिमय, भव, लक्ष्मीधव, महालक्ष्मीदेव, लक्ष्मीभवोत्तम, लक्ष्मीधराधर, लक्ष्मीधाराधर, समद्युति, विश्रुत, विकलव्यग्र, विलासी, गीतवल्लभ, विद्याधरप्रिय, विद्यावादी, विद्याविशारद, पट्टभृत, पाटलद्योत, पीतपट्टधर, भग, भाग्यवान, भोगदत् भार्ग, भृगुभावविवर्धन, लक्ष्मीकौलेश्वर, लक्ष्मीगुह्य, लक्ष्मीविभावसु, लक्ष्मीवीरेश्वर, लक्ष्मीधन्य, लक्ष्मीविभाकर, अचिन्त्य, नित्य संयोगी, संयमी, यमभीतिहृत्, यामिनीशप्रियकर, राहुध्वंसी, विषापह, धीर, भ्रमहर, भीमभीमास्य, भीमवल्लभ, हारकंकणभूषाढ्य, मौलिमान, नूपुरांचित, किङ्किणीरवसन्तुष्ट, वंशीवादनतत्पर, स्थाणुरूप, चरगति, चारुवक्त्र, जयी, नयी, लक्ष्मीविनयवान, लक्ष्मी-जयवान, ललिताकृति, लक्ष्मीनेत्रवशी, लक्ष्मीहास्यवश्य, विनर्तक, नाट्यप्रिय, नटी, नन्दी, सर्ववित्, सर्वसंसारभृत्, वासव, गोप्यमार्गेष्ट, वैष्णावाचारतत्पर, आत्मा, परात्मा, ज्ञानात्मा, लोकाध्यक्ष, सुरेश्वर, सत्यस्तुत्य, शुचिनित्य, नित्यात्मा, नित्यदर्शन, पञ्चनादमय, अनन्त, पञ्चमाचारवल्लभ, पञ्चमस्वरसङ्गीत, कीर्तिद, मोहनाशन, लक्ष्मीपर, पुमान्, लक्ष्मीशक्तिभृत्, भक्तितोषित, लक्ष्मीयोगीश्वर, लक्ष्मीयोगद, भोगिनायक, लक्ष्मीलोकेश्वर, लक्ष्मीवसु, लक्ष्मीमनोहर, अचिन्त्यमहिमा, अचिन्त्यगरिमा, घोरनिस्वन॥१-१५॥

सुखी सुखप्रदो दिव्यरूपो देवेश्वरेश्वरः ।
कामदेवो वैद्यवैद्यो वेदविद् वेदनायकः ॥१६॥
ऋग्रूपः सामगीतज्ञो यजुर्यज्ञभुजाम्पतिः ।
याज्ञिको यमिनां त्राता त्रिलोकजनकोऽजरः ॥१७॥
कामप्रदः कामिवरः कमनीयाकृतिः कुरुः ।
लक्ष्मीपृथुर्वसुप्रीतो लक्ष्मीश्रीदः श्रियःपतिः ॥१८॥
लक्ष्मीकामो लक्ष्मणेशो लक्ष्मीरामोऽतिसुन्दरः ।
अनिर्वर्ती च निःसङ्गो निर्भयो निरुपद्रवः ॥१९॥
निराभासो निराधारो निर्लेपो निरहंकृतिः ।
निराश्रयो निर्गुणश्च गुणातीतो गणेश्वरः ॥२०॥
ब्रह्मस्वरूपो ब्रह्मज्ञो बृंहणो ब्रह्मवर्धनः ।
महाक्रतुर्यज्ञवपुर्वराहो यज्ञनायकः ॥२१॥
महारुद्रो महादेवो माधवो मधुसूदनः ।
लक्ष्मीनिरञ्जनो लक्ष्मीसिद्धिदः सिद्धिवर्धनः ॥२२॥
लक्ष्मीश्रीवत्सवक्षाश्च लक्ष्मीकौस्तुभभूषितः ।

सर्वलोकधरो दान्तो दन्तिदन्तायुधो दमी ॥२३॥
अप्रमेयगतिः शान्तः शमी कामी कृतागमः ।
महाकर्मा महाचीनो मकारशिवपूजितः ॥२४॥
वाममार्गरसोद्रिक्तः सर्वाचारैकमध्यगः ।
मांसाहारी नित्यसङ्गी मीनासवरसाकुलः ॥२५॥
मुद्राप्रियो रतानन्दरतो रतिपतिप्रियः ।
अघोरदेवो दैत्यारिर्जितदेवो दिवाकरः ॥२६॥
निशानाथोऽमृतमयो नवग्रहसमर्चितः ।
सत्स्वरूपो विरूपाक्षो विभाकरशतप्रभः ॥२७॥
निग्रहो विग्रही वामो वारांनिधिनिवासकः ।
पीनबाहुः स्थूलपादो दीर्घचक्षुरलंभुजः ॥२८॥
पादामिलक्रमातीतः सत्यसन्धः सनातनः ।
लक्ष्मीसनातनो लक्ष्मीधर्माध्यक्षो धनेश्वरः ॥२९॥
लक्ष्मीधनप्रदो(२००)लक्ष्मीधर्मभागी च धर्मवान् ।

सुखी सुखप्रद, दिव्यरूप, देवेश्वरेश्वर, कामदेव, विश्ववैद्य, वेदविद, वेदनायक, ऋग्रूप, सामगीतज्ञ, यजुर्यज्ञभुजाम्पति, याज्ञिक, यमिनां त्राता, त्रिलोकजनक, अजर, कामप्रद, कामिवर, कमनीयाकृति, कुरु, लक्ष्मीपृथु, वसुप्रीत, लक्ष्मीश्रीद, श्रियःपति, लक्ष्मीकाम, लक्ष्मणेश, लक्ष्मीराम, अतिसुन्दर, अनिर्वर्ती, निःसङ्ग, निर्भय, निरुपद्रव, निराभास, निराधार, निर्लेप, निरंहकृति, निराश्रय, निर्गुण, गुणातीत, गणेश्वर, ब्रह्म-स्वरूप, ब्रह्मज्ञ, वृंहण, ब्रह्मवर्धन, महाक्रतु, यज्ञवपु, वराह, यज्ञनायक, महारुद्र, महादेव, माधव, मधुसूदन, लक्ष्मीनिरञ्जन, लक्ष्मीसिद्धिद, सिद्धिवर्धन, लक्ष्मीश्रीवत्स-वक्ष, लक्ष्मीकौस्तुभभूषित, सर्वलोकधर, दान्त, दन्तिदन्तायुध, दमी, अप्रमेय गति, शान्तशमी, कामी, कृतागम, महाकर्मा, महाचीन, मकारशिवपूजित, वाममार्गरसोद्रिक्त, वामाचारैकमध्यग, मांसाहारी, नित्यसङ्गी, मीनासवरसाकुल, मुद्राप्रिय, रताननन्दरत, रतिपतिप्रिय, अघोरदेव, दैत्यारि, जितदेव, दिवाकर, निशानाथ, अमृतमय, नवग्रहस-मर्चित, सत्यस्वरूप, विरूपाक्ष, विभाकरशतप्रभ, निग्रहविग्रह, वाम, वारांनिधिनिवासक पीनबाहु, स्थूलपाद, दीर्घचक्षुरलम्भुज, पादामितक्रमातीत, सत्यसन्ध, सनातन, लक्ष्मी-सनातन, लक्ष्मीधर्माध्यक्ष, धनेश्वर, लक्ष्मीधनप्रद, लक्ष्मीधर्मभागी, धर्मवान ।।१६-२९।।

वीरहा पुण्डरीकाक्षः पद्मनाभो जगत्प्रभुः ॥३०॥
पद्मासनो ब्रह्ममयो विस्मयी विगतस्मयः ।

समानः समदृष्टिश्च विषमो विषमेक्षणः ॥३१॥
चतुर्मूर्तिस्त्रिमूर्तिश्च चिन्तितश्चिञ्चिणीपतिः ।
सहस्रबाहुः क्षत्रेशो ब्राह्मणो वणिजां पतिः ॥३२॥
सर्वव्यापी सर्वमुखः सर्वमध्यगतः सखा ।
चक्रार्चितो नक्रपतिर्वरुणः शक्रसोदरः ॥३३॥
दर्पहा सर्पशयनः सर्पाशनवरप्रदः ।
अमानी मानदो मान्यो मानवेन्द्रो मनूत्तमः ॥३४॥
मनुवश्योऽमराध्यक्षो लक्ष्यो लोकैकरक्षकः ।
शोकहा दुर्गमो दृप्तो बलिहा कलिनाशनः ॥३५॥
शुभाङ्गो मदिराक्षीबः शुभकृत् शोभनाकृतिः ।
अतिथिस्तिथिनाथश्च नक्षत्रपरिवेषगः ॥३६॥
चतुर्बाहुश्चतुःश्रोत्रो विश्रवा विलयप्रदः ।
प्रलयान्तकरः प्राज्यो जननीजनकप्रियः ॥३७॥
यशस्वी श्रीधरः शान्तः शङ्काशतविनाशकः ।
अक्रूरवरदः क्रूरः कीरवाग् गणनायकः ॥३८॥
सुवर्णमुकुटो मारो मारसूर्मणिभूषणः ।
मान्त्रिको मञ्जुलो मन्त्री मान्तिकेष्टवरप्रदः ॥३९॥
लक्ष्मीवितर्कवाँल्लक्ष्मीसुन्दरो बन्धुरोऽभयः ।
अर्जितः सुखितस्तारस्तार्तीयः कार्तवीर्यकः ॥४०॥
लक्ष्मीपद्मधरो लक्ष्मीचन्द्रहासो विकत्थनः ।
लक्ष्मीगोवर्धनधरो लक्ष्मीकम्बुधरो विराट् ॥४१॥
स्कन्दाश्रयो रिपुध्वंसी देवसेनाधिनायकः ।
अनुकूलोऽनुकूटश्च सानुमान् सोमसुन्दरः ॥४२॥
तामसः सात्त्विकः सभ्यः(३००)सोमराजो मरीचिमान् ।

वीरहा, पुण्डरीकाक्ष, पद्मनाभ, जगत्प्रभु, पद्मासन, ब्रह्ममय, विस्मयी, विगतस्मयी, समान-समदृष्टि, विषम, विषमेक्षण, चतुर्मूर्ति, त्रिमूर्ति, चिञ्चित, चिञ्चिणीपति, सहस्रबाहु, क्षेत्रेश, ब्राह्मण, वणिजांपति, सर्वव्यापी, सर्वमुख, सर्वमध्यगत, सखा, चक्रार्चित, नक्रपति, वरुण, शक्रसोदर, दर्पहा, सर्पशयन, सर्पासन, वरप्रद, अमानी, मानद, मान्य, मानवेन्द्र, मनूत्तम, मनुवश्य, अमराध्यक्ष, लक्ष्य, लोकैकरक्षक, शोकहा दुर्गम, दृप्र, बलिहा, कलिनाशन, शुभाङ्ग, मदिराक्षीब, शुभकृत्, शोभनाकृति, अतिथि,

तिथिनाथ, नक्षत्रपरिवेषग, चतुर्बाहु, चतुःश्रोत्र, विश्रवा, विलयप्रद, प्रलयान्तकर, प्राज्य, जननीजनकप्रिय, यशस्वी, श्रीधर शान्त, शङ्काशतविनाशक, अक्रूरवरद, क्रूर, कीर-वाक्, गणनायक, सुवर्णमुकुट, मार, मारसू, मणिभूषण, मान्त्रिक, मञ्जुल, मन्त्री, मान्त्रिकेष्टवरप्रद, लक्ष्मीवितर्कवान, लक्ष्मीसुन्दर, बन्धुर, अभय, अर्जित, सुखित, तारतार्तीय, कार्तवीर्यक, लक्ष्मीपद्मधर, लक्ष्मीचन्द्रहास, विकत्थन, लक्ष्मीगोवर्धनधर, लक्ष्मीकम्बुधर, विराट, स्कन्दाश्रय, रिपुध्वंसी, देवसेनाधिनायक, अनुकूल, अनुकूट, सानुमान, सोमसुन्दर, तामस, सात्त्विक, सभ्य, सोमराज, मरीचिमान ।।३०-४०।।

अर्चिष्मान् विकलः कुल्यकल्पः सज्जनपोषकः ।।४३।।
विराजो वामनो वेणुर्वानरो वारिवाहनः ।
वाल्मीकिवरदो वन्दी वन्द्यो बन्धूकसन्निभः ।।४४।।
वर्णेश्वरो वर्णमाली वनमालातिसुन्दरः ।
भृगुर्भास्वद्वपुर्भोक्ता कर्ता हर्ता शतक्रतुः ।।४५।।
अतुल्यः कोमलः कोपी रमणो मणिकुण्डलः ।
लक्ष्मीकेयूरवाँल्लक्ष्मीमणिदामविराजितः ।।४६।।
लक्ष्मीनूपुरवाँल्लक्ष्मीमुक्तामाल्यविभूषणः ।
लक्ष्मीगोधाङ्गुलित्राणो लक्ष्मीसौवर्णकङ्कणः ।।४७।।
लक्ष्मीविराजितो लक्ष्मीविविधाभरणोज्ज्वलः ।
ककारादिक्षकारान्तविद्याभूषणभूषितः ।।४८।।
अकाराद्यक्षरस्फीतो निःशेषस्वरमण्डितः ।
वर्णमान्यो महाविद्यामातृकाक्षरतत्त्ववान् ।।४९।।
लक्ष्मीकामेश्वरो लक्ष्मीकामुको निर्जरेश्वरः ।
कलावान् कीर्तिमान् कूतः कुम्भाण्डप्राणहारकः ।।५०।।
केशान्तकः कालसूक्ष्म कारकः कष्टहा कठी ।
क्रीतः कुब्जः कम्बुधरः कलकण्ठः कुलालकः ।।५१।।
कुलाध्यक्षः कुलाचारी कुलाकुलपदार्चितः ।
करञ्जकः कर्तरीशः कनकः कर्तरीकरः ।।५२।।
कलङ्करहितः कोकः कोकशोकनिवर्हणः ।
कपिलः कलशी कोलः कालिकः कुलमानसः ।।५३।।
लक्ष्मीकुलाकुलो लक्ष्मीकुलजः कर्मवर्धनः ।
लक्ष्मीकाशीश्वरो लक्ष्मीनवनाथविनायकः ।।५४।।

लक्ष्मीकनिष्ठो निष्पिष्टो लक्ष्मीयोगीन्द्रयोगदः ।
खपरः खेचरः खेटः खगगामी खलान्तकः ॥५५॥
खरूपः खगरूपश्च खनित्रः खेटनायकः ।
खगायुधः खण्डधारी खञ्जनेक्षणभञ्जनः ॥५६॥
खरध्वंसी खराराव: खर्खुराकारभीषणः ।
खंखटोलः खगगतिः खेचरेश्वरसेवितः ॥५७॥
खेचरीगणसेव्यश्च खण्डमुद्रानियन्त्रितः ।
खड्गहस्तः खड्गपालः खेतः खवर्णभूषणः ॥५८॥

अर्चिष्मान, विकल, कुल्यकल्प, सज्जनपोषक, विराज, वामन, वेणुर्वानर, वरिवाहन, वाल्मीकिवरद, वन्दी, वन्द्य, बन्धूकसन्निभ, वर्णेश्वर, वर्णमाली, वनमालातिसुन्दर, भृगुर्भास्वद्वपुर्भोक्ता, कर्ता हर्ता, शतक्रतु, अतुल्यकोमल, कोपी, रमण, मणिकुण्डल, लक्ष्मीकेयूरवान, लक्ष्मीमणिदामविराजित, लक्ष्मीनूपुरवान, लक्ष्मीमुक्तामाल्यविभूषण, लक्ष्मीगोधाङ्गुलित्राण, लक्ष्मीसौवर्णकङ्कण, लक्ष्मीविराजित, लक्ष्मीविविधाभरणोज्ज्वल, ककारादिक्षकारान्तविद्याभूषित, अकाराद्यक्षरस्फीत, निःशेषस्वरमण्डित, वर्णमान्य, महाविद्यामातृकाक्षरतत्त्ववान, लक्ष्मीकामेश्वर, लक्ष्मीकामुक, निर्जरेश्वर, कलावान, कीर्तिमान, कूत, कुम्भाण्डप्राणहारक, केशान्तक, कालसू, कारक, कष्टहा कठी, क्रीत, कुब्ज, कम्बुधर, कलकण्ठ, कुलालक, कुलाध्यक्ष, कुलाचारी, कुलाकुलपदार्चित, करञ्जक, कर्तरीश, कनक, कर्तरीकर, कलङ्करहित, कोक, कोकशोकनिवर्हण, कपिल, कलशी, कोल, कालिक, कुलमानस, लक्ष्मीकुलाकुल, लक्ष्मीकुलज, कर्मवर्धन, लक्ष्मीकाशीश्वर, लक्ष्मीनवनाथविनायक, लक्ष्मीकनिष्ठ, निष्पिष्ट, लक्ष्मीयोगीन्द्रयोगद, खपर, खेचर, खेट, खगगामी, खलान्तक, खरूप, खगरूप, खनित्र, खेटनायक, खगायुध, खण्डधारी, खञ्जनेक्षणभञ्जन, खरध्वंसी, खराराव, खर्खुराकारभीषण, खङ्खटोल, खगगति, खेचरेश्वरसेवित, खेचरीगणसेव्य, खण्डमुद्रानियन्त्रित, खड्गहस्त, खड्गपाल, खेत, खवर्णभूषण।।४३-५८।।

लक्ष्मीखेशः खोकरूपो लक्ष्मीभास्वरमूर्तिमान् ।
लक्ष्मीखट्वाङ्गभृल्लक्ष्मीखेचरः खाश्मलेपितः ॥५९॥
लक्ष्मीचिताग्निनिलयो लक्ष्मीभस्मीकृतानलः ।
लक्ष्मीभूतिप्रदो लक्ष्मीज्योतिष्मान् गाक्षराञ्चितः ॥६०॥
लक्ष्मीगीतः स्वरालापी गोपतिर्गोकुलेश्वरः ।
गङ्गाधरप्रियो गोष्ठी गोपालो गन्धवर्धनः ॥६१॥

गन्धवाहप्रियो गीतो गीतिज्ञो गीतलालसः ।
गुञ्जाहारप्रियो गण्डी गुरुर्गोवाहनोऽगदः ॥६२॥
गाम्भीर्यवान् गुरुतरो गुरुशब्दविवर्धनः ।
गुरुभक्तिप्रियो गोलो गण्डशैलनिवासकः ॥६३॥
गर्जन्नादो गोत्रपतिर्गोलमार्गप्रियोऽङ्गवान् ।
निरङ्गो गजवक्त्रेशो गणनायकनायकः ॥६४॥
गन्धर्वनाथवरदो गगनेचरपूजितः ।
गर्भहीनो गर्भवाही गुणेयो गुणसागरः ॥६५॥
गुणातीतवपुर्गुण्यो गुप्तमार्गप्रवर्तकः ।
गुप्तमन्त्रप्रियो गोप्यो गुह्यो गुह्यकवल्लभः ॥६६॥
गोपीतो गिरिनाथश्च गिरिधारी जगन्निधिः ।
लक्ष्मीप्रियः प्रियः प्रीतो लक्ष्मीगरुडवाहनः ॥६७॥
लक्ष्मीकपोतनिलयो लक्ष्मीकल्पद्रुमो रविः ।
लक्ष्मीसन्तानकः सारो लक्ष्मीसारो लतापतिः ॥६८॥
लक्ष्मीग्राह्योऽसुलक्ष्मा च लक्ष्मीसागरनन्दनः ।
घृणी घृणिमयो घृष्टो घुसृणारक्त ईश्वरः ॥६९॥
घृणामयोऽघहर्ता च घृणिनाथो घवर्णभाक् ।
लक्ष्मीचिन्तामणिः साधुर्लक्ष्मीवीरो वरोत्तमः ॥७०॥
लक्ष्मीचतुर्भुजो लक्ष्मीविश्वनाथो विनायकः ।
ङवर्णोऽनन्तरूपश्च जानुज्ञो ङोर्णरूपवान् ॥७१॥
ङवर्णरूपो विश्वेशो ङकाराक्षरमण्डनः ।
लक्ष्मीसेव्यो निर्गुणात्मा लक्ष्मीशानः शिवार्चितः ॥७२॥
चारुरूपश्चारुगतिश्चारुमूर्तिश्चमत्कृतिः ।
चारुनेत्रश्चारुमुखश्चारुबाहुश्चतुर्भुजः ॥७३॥
चारुहस्तश्चारुनखश्चारुकेशश्चमूपतिः (५००) ।

लक्ष्मीखेश, खोकरूप, लक्ष्मीभास्वरमूर्तिमान, लक्ष्मीखट्वाङ्गभृत, लक्ष्मीखेचर, खाश्मरीप्रिय, लक्ष्मीचिताग्निनिलय, लक्ष्मीभस्मीकृतानल, लक्ष्मीभूतिप्रद, लक्ष्मीज्योतिष्मान, गाक्षराञ्चित, लक्ष्मीगीत, स्वरालापी, गोपति गोकुलेश्वर, गङ्गाधरप्रिय, गोष्ठी, गोपाल, गन्धवर्धन, गन्धवाहप्रिय, गीतगीतिज्ञ, गीतलालस, गुञ्जाहारप्रिय, गण्डी, गुरु, गोवाहन, अगद, गाम्भीर्यवान, गुरुतर, गुरुशब्दविवर्धन, गुरुभक्तिप्रिय, गोल,

गण्डशैलनिवासक, गर्जन्नादगोत्रपति, गोलमार्गप्रिय, अङ्गवान, निरङ्ग, गजवक्त्रेश, गणनायकनायक, गन्धर्वनाथवरद, गगनेचरपूजित, गर्भहीन, गर्भवाही, गुणेय गुणसागर, गुणातीतवपु, गुण्य, गुप्तमार्गप्रवर्तक, गुप्तमन्त्रप्रिय, गोप्य गुह्य, गुह्यकवल्लभ, गोपीत, गिरिनाथ, गिरिधारी, जगन्निधि, लक्ष्मीप्रिय, प्रियप्रीत, लक्ष्मीगरुड़वाहन, लक्ष्मीकपोतनिलय, लक्ष्मीकल्पद्रुम, रवि, लक्ष्मीसन्तानक, सार, लक्ष्मीसारलतापति, लक्ष्मीग्राह्य, असुलक्ष्मा लक्ष्मीसागरनन्दन, घृणी, घृणिमय, घुष्ट, घुसृणारक्त, ईश्वर, घृणामय, अघहर्ता, घृणिनाथ, घवर्णभाक, लक्ष्मीचिन्तामणि, लक्ष्मीचिन्तामणि-सखा, लक्ष्मीचतुर्बाहु, लक्ष्मीविश्वनाथ, विनायक, ङवर्ण, अनन्तरूप, जानुज्ञ, ङोर्णरूप-वान, ङवर्णरूप, विश्वेश, ङकाराक्षरमण्डन, लक्ष्मीसेव्य निर्गुणात्मा, लक्ष्मीशान, शिवार्चित, चारुरूप, चारुगति, चारुमूर्ति, चमत्कृति, चारुनेत्र, चारुमुख, चारुबाहु, चतुर्भुज, चारुहस्त, चारुनखः चारुकेश, चमूपति।।५९-७३।।

चितावासी चरोऽचेलश्चीनाम्बरधरोऽच्युतः ।।७४।।
चारुहासश्चारुदन्तश्च्यवनश्चन्द्रवासितः ।
चन्द्रश्चन्द्रकलानाथश्चारुपादश्चतुर्गतिः ।।७५।।
चतुरात्मा चतुर्थात्मा चतुर्भूमिधरो धरः ।
चतुःसमुद्रशयनः चतुस्सागरलङ्घनः ।।७६।।
चतुर्द्युतिश्चतुःशय्याचतुर्वीरवरोऽवरः ।
चतुर्वेदमयो वैद्यश्चार्वङ्गश्चारुभाषणः ।।७७।।
चतुर्वक्त्रश्चतुर्वक्त्रपूजितः परमेश्वरः ।
चलच्चन्द्रकशोभाढ्यश्चलन्नूपुरकूजितः ।।७८।।
चलदम्भोदसदृशश्चलदम्भोजलोचनः ।
चलदम्भोदवदनश्चलदम्भोदशोभितः ।।७९।।
चलत्कनककेयूरश्चलत्काञ्चनकुण्डलः ।
चलत्कनकशृङ्गाभश्चलत्कनकशेखरः ।।८०।।
चकाररूपश्चारेशश्चकारार्णविभूषितः ।
लक्ष्मीशान्तो महादक्षो लक्ष्मीपीताम्बरः पविः ।।८१।।
छत्री च्छत्रधरश्छान्तः छिन्नमस्ताप्रियः पिता ।
छन्नच्छेदी छिन्नमुखः छकाराक्षररूपवान् ।।८२।।
लक्ष्मीकान्तः कान्तियुक्तो लक्ष्मीसाधक ईश्वरः ।
जगन्नाथो जगद्धर्ता जगत्कर्ता जगत्स्थितिः ।।८३।।

जगत्क्षयकरो जेता जगतां पतिरुत्तमः ।
जगत्स्वामी जगद्धाता जगत्संहारकारकः ॥८४॥
जीवात्मा परमात्मा च जगद्भूतिप्रदो भवः ।
जगद्गुणी जगत्स्तुत्यो जगदानन्ददायकः ॥८५॥
जगत्सन्तोषभूतात्मा जगत्क्रोधदयान्वितः ।
जगद्दीप्तिकरो वेदोपासितो जगदीश्वरः ॥८६॥
जवी जवान्वितो जारो जगदाडम्बरप्रदः ।
जगत्सेव्यो जगत्प्रीतो जगदिष्टो जगन्मयः ॥८७॥
जृम्भणो जटिलो जीवो जम्भारातिवरप्रदः ।
जामाता जलधेर्जान्तो जटामुकुटमण्डितः ॥८८॥
जितारिर्जयदोऽजेयो जयकृद्वीरतापनः ।
लक्ष्मीकुचतटासीनो लक्ष्मीनयनगोचरः ॥८९॥
झलरीझोत्कृतो झाडी झण्डी शण्ठप्रतापनः ।
झाङ्कारी झङ्कृतिर्झिल्लीरवो झाङ्कारिनूपुरः ॥९०॥
लक्ष्मीवरो(६००)महालक्ष्मीसेवितो देववन्दितः ।

चितावासी चर, अचेल, चीनाम्बरधर, अच्युत, चारुहास, चारुदन्त, च्यवनचन्द्र-वासित, चन्द्र, चन्द्रकलानाथ, चारुपाद चतुर्गति, चतुरात्मा, चतुर्थात्मा, चतुर्भूमिधर, धर, चतुःसमुद्रशयन, चतुस्सागरलङ्घन, चतुर्द्युति, चतुःशय्या, चतुर्वीरवर, अवर, चतुर्वेदमय, वैद्य, चार्वङ्ग चारुभाषण, चतुर्वक्त्र, चतुर्वक्त्रपूजित, परमेश्वर, चलच्चन्द्रकशोभाढ्य, चलन्नूपुरकूजित, चलदम्भोदसदृश, चलदम्भोजलोचन, चलदम्भोदवदन, चलदम्भोदशोभित, चलत्कनककेयूर, चलत्काञ्चनकुण्डल, चलत्कनकशृंगाभ, चलत्कनकशेखर, चकाररूप, चारेश, चकारार्णविभूषित, लक्ष्मीशान्त महादक्ष, लक्ष्मीपीताम्बर, पवि, लक्ष्मीछत्रधर, छिन्नमस्ताप्रिय, पिता, छन्नच्छेदी, छिन्नमुख, छकाराक्षररूपवान, लक्ष्मीकान्त, कान्तियुक्त, लक्ष्मीसाधक ईश्वर, जगन्नाथ, जगद्भर्ता, जगत्कर्ता, जगत्स्थिति, जग-त्क्षयकर, जेता, जगतांपतिरुतम, जगत्स्वामी, जगद्धाता, जगत्संहारकारक, जीवात्मा, परमात्मा, जगद्भूतिप्रद भव, जगद्गुणी, जगत्स्तुत्य, जगदानन्ददायक, जगत्सन्तोषभूतात्मा, जगत् क्रोधदयान्वित, जगद्दीप्तिकर, वेदोपासित, जगदीश्वर, जवी, जवान्वितजार, जगदाडम्बरप्रद, जगत्सेव्य, जगत्प्रीत, जगदीष्ट जगन्मय, जृम्भण, जटिलजीव, जम्भारातिवरप्रद, जामाता, जलधिजान्त, जटामुकुटमण्डित, जितारि, जयद, अजेय, जयकृतवीरतापन, लक्ष्मीकुचतटासीन, लक्ष्मीनयन-

गोचर, झल्लरीझोत्कृत, झाडी, झण्डी, शण्ठप्रतापन, झाङ्कारी, झंकृति, झिल्लीरत, झाङ्कारिनूपुर, लक्ष्मीवर, महालक्ष्मीसेवित, देववन्दित।।७४-९०।।

ञकारो ञारलो ञेशो ञवर्णामृतरूपवान् ॥९१॥
लक्ष्मीस्वभूः स्वर्गपतिर्लक्ष्मीवन्द्यो विधुन्तुदः ।
टकारो टङ्कहस्तश्च टान्तष्टीत्कारकूजितः ॥९२॥
लक्ष्मीदेवो देवदेवो लक्ष्मीदान्तः कृपानिधिः ।
ठकुरो ठालको ठास्यो ठवर्णसुषमानिधिः ॥९३॥
लक्ष्मीविधुर्वितर्काख्यो वैनतेयध्वजो ध्वजः ।
डमरुर्डामरेशानो डकाराक्षरसंयुतः ॥९४॥
लक्ष्मीपतिः पीवराङ्गो लक्ष्मीनायकनायकः ।
डकारवाग् ढक्कभेद्यो ढक्कासुरनिसूदनः ॥९५॥
लक्ष्मीजेता जयकरो लक्ष्मीशो लम्बमूर्धजः ।
लक्ष्मीजगत्स्थितिर्लक्ष्मीशौरिर्लक्ष्मीगदाधरः ॥९६॥
णान्तो णवर्णको णेशो णवर्णामृतसाधितः ।
लक्ष्मीदामोदरो लक्ष्मीप्राणो लक्ष्मीरथाङ्गभृत् ॥९७॥
तुल्योऽतुल्यो महातुल्यचित्तस्तारार्णमण्डितः ।
तोतुलस्तुलसीनाथस्तन्त्रज्ञो मन्त्रनायकः ॥९८॥
तपःफलप्रदस्ताम्ररूपोऽतुलपराक्रमः ।
तुटिरूपस्तुटिगतिस्तपस्वी तापसप्रियः ॥९९॥
तुहिनांशुस्तुहिनजस्तुषारकरशोभितः ।
तुरीसेव्यस्तुलाभश्च तकाराक्षरमण्डनः ॥१००॥
लक्ष्मीशङ्खायुधो लक्ष्मीनन्दकेशस्तवर्णभृत् ।
स्थविरः स्थूलगात्रश्च स्थाणुसेव्यस्थशब्दकृत् ॥१०१॥
स्थालीरसप्रियो स्थूलः थकारेश्वर ईश्वरः ।
लक्ष्मीजीवेश्वरो लक्ष्मीधरो लक्ष्मीनृसिंहकः ॥१०२॥
दयावान् द्युपतिर्दक्षो द्यूतो दम्भविवर्जितः ।
दारिद्र्यहा दुःखहर्ता दौर्भाग्यक्षयकृद् दयी ॥१०३॥
दीनो दीनप्रभुर्दम्भी दयितोदयवाञ्छकः ।
दानकृद् दातृफलदो दनुजेन्द्रक्षयङ्करः ॥१०४॥
दैत्यहा दैत्यदर्पघ्नो दर्पवादिक्षयङ्करः ।

दारप्रियो दीर्घनखो दुष्टासुरनिसूदनः ॥१०५॥
देवदेवो यशोवन्द्यो दकाराक्षरमण्डितः (७००)।

ञकार, ञारल, ञेश, ञवर्णामृतरूपवान्, लक्ष्मीस्वभू, स्वर्गपति, लक्ष्मीवन्द्य, विधुन्तुद, टकार, टङ्कहस्त, टान्त, टीत्कारकूजित, लक्ष्मीदेव देवदेव, लक्ष्मीदान्त, कृपानिधि, लक्ष्मीविधु, वितर्काख्य, वैनतेयध्वज, ध्वज, डमरुडामरेशान, डकाराक्षरसंयुत, लक्ष्मीपति, पीवराङ्ग, लक्ष्मीनायकनायक, डकारवाग्, ढक्कभेद्य, ढक्कासुरनिसूदन, लक्ष्मीजेता, जयकर, लक्ष्मीश, लम्बमूर्धज, लक्ष्मीजगत्स्थिति, लक्ष्मीशौरि, लक्ष्मीगदाधर, णान्त, णवर्णक, णेश, णवर्णामृतसाधित, लक्ष्मीदामोदर, लक्ष्मीप्राण, लक्ष्मीरथाङ्गभृत्, तुल्य, अतुल्य, महातुल्यचित्त, तारार्णमण्डित, तोतुल, तुलसीनाथ, तन्त्रज्ञ मन्त्रनायक, तपःफलप्रद, ताम्ररूप, अतुलपराक्रम, तुटिरूप, तुटिगति, तपस्वी, तापसप्रिय, तुहिनांशु, तुहिनज, तुषारकरशोभित, तुरीसेव्य, तुलाभ, तकाराक्षरमण्डन, लक्ष्मीशङ्खायुध, लक्ष्मीनन्दकेश, तवर्णभृत्, स्थविर स्थूलगात्र, स्थाणुसेव्य, स्थाणुशब्दकृत्, स्थालीरसप्रिय, स्थूल, थकारेश्वर, ईश्वर, लक्ष्मीजीवेश्वर, लक्ष्मीधर, लक्ष्मीनृसिंह, दयावान, द्युपतिदक्ष, द्यूत, दम्भविवर्जित, दारिद्र्यहा, दुःखहर्ता, दौर्भाग्यक्षयकृत, दयी, दीनादीनप्रभु, दम्भी, दयितोदयवाञ्छक, दानकृत्, दातृफलद, दनुजेन्दक्षयंकर, दैत्यहा, दैत्यदर्पघ्न, दर्पवादिक्षयंकर, दारप्रिय, दीर्घनख, दुष्टासुरनिसूदन, देवदेव, यशोवन्द्य, दकाराक्षरमण्डित।।९१-१०५।।

लक्ष्मीदयाकरो लक्ष्मीदेवो लक्ष्मीदयानिधिः ॥१०६॥
धनदो धनकृद्धन्यो धनदेशो धनप्रदः ।
धृतिमान् धर्मवान् धर्मी धर्मकर्मविचक्षणः ॥१०७॥
धर्माध्यक्षो धनाध्यक्षो धवलो धैर्यवान् धनी ।
धीरो धैर्यकरो धर्मदक्षो धनदपूजितः ॥१०८॥
लक्ष्मीधनी महालक्ष्मीधवो लक्ष्मीमनोभवः ।
नवीनो नूतनो नम्रो नटनो नाट्यतोषितः ॥१०९॥
नगो नागनगश्रेष्ठो नृगम्यो नागमण्डनः ।
नृसिंहो नृवरोऽनन्तो नरनारायणो नवः ॥११०॥
नागराजो नागपतिर्नागान्तकध्वजोऽनलः ।
नगारूढो निम्ननाभिर्नन्दिसेव्यो नटेश्वरः ॥१११॥
नलिनाक्षो नृवन्द्योऽपि नायको नागनायकः ।
नर्मदातीरक्रीडाकृन्नलिनीपति लोचनः ॥११२॥

नरेशो नृपपूज्यश्च नागशायी नगोत्तमः।
नारायणो निष्कलङ्को नवर्णाकृतिरात्मवान् ॥११३॥
लक्ष्मीनागो नगधरो लक्ष्मीनाथो नरूपवान्।
पुष्पप्रियः पुष्पशय्याशयानः पुष्पशेखरः ॥११४॥
पुष्पधन्वा प्रद्युम्नश्च पुष्पेषुपुष्पपूजितः।
पूज्यः पवित्रं परमं परमेष्ठी पितामहः ॥११५॥
परं पदं परं पुण्यं परमायुः परात्परः।
पारावारसुताभर्ता परमेशः परं महः ॥११६॥
पुण्यदः पुण्यकृत् पूतः पुराणागमपूजितः।
पुराणपुरुषः पीनः पीनवक्षा जितेन्द्रियः ॥११७॥
पीतवासाः पीतमालः पीतवर्णः पराङ्कुशः।
पत्रगो विश्रुतः पान्थः पथिकः पान्थतोषदः ॥११८॥
पूर्वः पौरजनस्तुत्यः पवर्णाक्षरमण्डनः।
लक्ष्मीपीताम्बरो लक्ष्मीपीतो लक्ष्मीपरः परम् ॥११९॥
फलं फणिवरः स्फीतः फलकृत् फलदः फणी।
फणिशय्याशयानश्च फकारामृतमण्डनः(८००)॥१२०॥

लक्ष्मीदयाकर, लक्ष्मीदेव, लक्ष्मीदयानिधि, धनद, धनकृत्, धन्य, धनदेश धनप्रद, धृतिमान, धर्मवान्, धर्मी, धर्मकर्मविचक्षण, धर्माध्यक्ष, धनाध्यक्ष, धवल, धैर्यवान, धनी, धीर, धैर्यकर, धर्मदक्ष, धनदपूजित, लक्ष्मीधनी, महालक्ष्मीधव, लक्ष्मीमनोभव, नवीन नूतन, नम्र, नटन, नाट्यतोषित, नग, नागनगश्रेष्ठ, नृगम्य, नागमण्डन, नृसिंह नृवर, अनन्त, नरनारायण, नव, नागराज, नागपति, नागान्तकध्वज, अनल, नगारूढ़, निम्ननाभि, नन्दिसेव्य नटेश्वर, नलिनाक्ष, नृवन्द्य, नायक, नागनायक, नर्मदातीर-क्रीड़ाकृत, नलिनीपतिलोचन, नरेश नृपपूज्य, नागशायी, नगोत्तम, नारायण, निष्कलंक, नवर्णाकृतिरात्मवान, लक्ष्मीनाग, नगधर, लक्ष्मीनाथ, नरूपवान, पुष्पप्रिय, पुष्पशय्या-शयान, पुष्पशेखर, पुष्पधन्वा, प्रद्युम्न, पुष्पेषुपुष्पपूजित, पूज्य, पवित्र परम, परमेष्ठी, पितामह, परंपद, परंपुण्य, परमायु, परात्पर, पारावारसुताभर्ता, परमेश, परंमहः, पुण्यद, पुण्यकृद् पूत, पुराणागमपूजित, पुराणपुरुष, पीनपीनवक्षा, जितेन्द्रिय, पीत-वासा, पीतमाल, पीतवर्ण, पराङ्कुश, पत्रग, विश्रुत, पान्थपथिक, पान्थतोषद, पूर्वपौरज-नस्तुत्य, पवर्णाक्षरमण्डन, लक्ष्मीपीताम्बर, लक्ष्मीपीत, लक्ष्मीपर, परमफल, फणिवर, स्फीत फलकृत्, फलद, फणी, फणिशय्या शयान, फकारामृतमण्डन।।१०६-१२०।।

बालको बुद्धिमान् बौद्धो बन्धुर्बान्धव ईश्वरः ।
लक्ष्मीबन्धुर्महालक्ष्मीबान्धवो लक्षणान्वितः ॥१२१॥
भद्रपदो भास्वराङ्गो भास्करो भानुरव्ययः ।
भानिधिर्भगवान् भीतो भीतिहाऽभयदायकः ॥१२२॥
लक्ष्मीभयहरो लक्ष्मीभयदो भयघातनः ।
महेश्वरो महामान्यो महामात्यो मनोरमः ॥१२३॥
मनोहारी महाशान्तो महातेजा मनोजवः ।
महोत्साही माधवश्च मायाधारी मनोन्मनः ॥१२४॥
मानदो मुरघाती च मानवेष्टफलप्रदः ।
मदिरामोदमुदितो मारमोहविवर्जितः ॥१२५॥
लक्ष्मीमहोदयो लक्ष्मीमान्यो लक्ष्मीमदालसः ।
यशोदानन्दनो यान्तो यशस्वी योधसैनिकः ॥१२६॥
यशोधरो यमो योगी योगिनां योगदायकः ।
योगेन्द्रो यागपूज्यश्च यादवो यादवेश्वरः ॥१२७॥
यज्ञप्रीतो यज्ञनिधिर्याजको याज्ञिकप्रियः ।
यज्वा यज्ञो यशोजातो यकाराक्षररूपवान् ॥१२८॥
लक्ष्मीयज्ञकरो लक्ष्मीयाज्ञिको यज्ञसेवितः ।
राजा रमापतिर्देवो रामो राजा अधोरजः ॥१२९॥
राजसो रात्रिकृद्रामो रामानन्दप्रदायकः ।
रेवतीरमणो राकापतिः सर्वकलाधरः ॥१३०॥
लक्ष्मीरामो महालक्ष्मीराजा लक्ष्मीत्रिविक्रमः ।
लाक्षारुणो लीतराक्षो ललज्जिह्वो लतापतिः ॥१३१॥
लङ्केशो लासिको लान्तो लम्बोदरप्रियः परः ।
लक्ष्मीलीनोऽलिवर्णश्च लकाराकार ईश्वरः ॥१३२॥
वान्तदो वारसेनानीर्वराहो विग्रही विराट् ।
विष्णुर्वसुन्धरानाथो वसुदो वसुधाधिपः ॥१३३॥
वागीश्वरो वेणुहस्तो वेतालो विरसो वियत् ।
विद्वान् विशालनयनो विकारोऽविकृतिः पुमान् ॥१३४॥

बालक, बुद्धिमान, बौद्ध, बन्धु, बान्धवेश्वर, लक्ष्मीबन्धु, महालक्ष्मीबान्धव, लक्षणान्वित, भद्रपद, भास्वराङ्ग, भास्कर, भानुनु, अव्य, भानिधि भगवान, भीत,

भीतिहा, अभयदायक, लक्ष्मीभयहर, लक्ष्मीभयद, भयघातन, महेश्वर, महामान्य, महामात्य, मनोरम, मनोहारी, महाशान्त, महातेजा, मनोजव, महोत्साही, माधव, मायाधारी, मनोन्मन, मानद, मुरघाती, मानवेष्टफलप्रद, मदिरामोदमुदित, मारमोह-विवर्जित, लक्ष्मीमहोदय, लक्ष्मीमान्य, लक्ष्मीमदालस, यशोदानन्दन, यान्त, यशस्वी योधसैनिक, यशोधर, यमयोगी, योगियोगदायक, योगेन्द्र, यागपूज्य, यादवयादवेश्वर, यज्ञप्रीत, यज्ञनिधि, याजक याज्ञिकप्रिय, यज्वा, यज्ञ, यशोजात, यकाराक्षररूपवान, लक्ष्मीयज्ञकर, लक्ष्मीयाज्ञिक, यज्ञसेवित, राजा, रमापतिर्देव, रामराजा, अधोरज, राजस, रात्रिकृत्, राम, रामानन्दप्रदायक, रेवतीरमण, राकापति, सर्वकलाधर, लक्ष्मीराम, महालक्ष्मीराजा, लक्ष्मीत्रिविक्रम, लाक्षारुण, लीतराक्ष, ललज्जिह्व, लतापति, लङ्केश, लासिक, लान्त, लम्बोदरप्रियपर, लक्ष्मीलीन, अलिवर्ण, लकाराकार ईश्वर, वान्तद, वारसेनानी, वराह, विग्रही, विराट, विष्णु, वसुन्धरानाथ, वसुद, वसुधाधिप, वागीश्वर, वेणुहस्त, वेताल, विरस, वियत्, विद्वान्, विशालनयन, विकार, अविकृति पुमान्।।१२१-१३४।।

वितर्की(९००)विनयी विद्याराजमान्यो विचारकः ।
वाग्मी वानीरमूलस्थो वाचाटो वीरनायकः ॥१३५॥
लक्ष्मीवराहो वीरेशो लक्ष्मीवीरो वनेचरः ।
शङ्करः श्रीधरः श्रीलः श्रमी शीतांशुशीतलः ॥१३६॥
शशिमौलिः शरन्नागः शम्भुः शङ्खनिसूदनः ।
शक्रः शत्रुक्षयकरः शत्रुकालकरः शिवः ॥१३७॥
लक्ष्मीशिवः श्रीपतिः श्रीवरो लक्ष्मीशिवप्रदः ।
षोडशस्वररूपश्च षोडशार्णविभूषणः ॥१३८॥
षडङ्गविद्यावेत्ता च षकाराक्षरभूषितः ।
लक्ष्मीषडङ्गधारी च लक्ष्मीषोडशवर्णभृत् ॥१३९॥
सुन्दरः स्वर्गवसतिः सर्वेशः सर्वतोमुखः ।
सप्तसप्तिः सदाचारः साधुः साधुजनप्रियः ॥१४०॥
सरसः सरलः सालः सुखी सुखविवर्धनः ।
सप्तद्वीपवतीनाथः सप्तसागरनायकः ॥१४१॥
सप्तस्वरमयः सप्तपातालतलवासकः ।
सात्त्विकः सत्त्वसंपन्नः समस्तदुरितापहः ॥१४२॥
समस्तरिपुविध्वंसी समस्तासुरघातनः ।

समस्तपातकध्वंसी समस्तसुरवन्दितः ॥१४३॥
लक्ष्मीसनातनो लक्ष्मीसनकः साधुपूजितः ।
हरिर्हरो हरिहरो हाटकेशो हटापहः ॥१४४॥
हरिद्रवर्णो हसितो हारी हरितलोचनः ।
लक्ष्मीहरिर्हृषीकेशो लक्ष्मीहारधरोऽनघः ॥१४५॥
क्षमी क्षमापतिः क्षत्ता क्षमेशश्च क्षवर्णभाक् ।
क्षणकृत् क्षणदानाथः क्षमावान् क्षुभितासुरः ॥१४६॥
लक्ष्मीक्षमायुतो लक्ष्मीक्षत्ता लक्ष्मीक्षवर्णभृत् ।
अनन्तोऽनन्तपूज्यश्चाप्यादिरादित्यसन्निभः ॥१४७॥
इन्दिरावल्लभो देव ईश्वरश्चोग्ररूपवान् ।
ऊष्मोज्ज्वलोऽपि ऋणहा ॠकारोज्ज्वलमातृकः ॥१४८॥
ऌवर्णवर्णो ॡकार एनवर्णसमन्वितः ।
ऐश्वर्यसहितश्चोष्ठस्तथौन्मत्तस्वरार्चितः ॥१४९॥
अंकारश्चैवमःकारस्वरूपः स्वरभूषितः ।
ॐह्रींहसौः ह्रींश्रींदेवो लक्ष्मीनारायणः शिवः ॥१५०॥

वितर्की, विनयी, विद्याराजमान्य, विचारक, वाग्मी, वानीरमूलस्थ, वाचाट, वीरनायक, लक्ष्मीवराह, लक्ष्मीवीर, वनेचर, शङ्कर, श्रीधरश्रील, श्रमी, शीतांशुशीतल, शशिमौलि, शरन्नाग, शम्भु, शङ्खनिसूदन, शक्र, शत्रुक्षयकर, शत्रुकालकर, शिव, लक्ष्मीशिव, श्रीपति श्रीवर, लक्ष्मीशिवप्रद, षोड़शस्वरूप, षोडशार्णविभूषण, षडङ्ग-विद्यावेत्ता, षकाराक्षरभूषित, लक्ष्मीषडङ्गधारी, लक्ष्मीषोड़शवर्णभृत्, सुन्दर, स्वर्गवसति, सर्वेशसर्वतोमुख, सप्तसप्ति, सदाचार, साधुसाधुजनप्रिय, सरस, सरल, सार, सुखी, सुखविवर्धन, सप्तद्वीपवतीनाथ, सप्तसागरनायक, सप्तस्वरमय, सप्तपातालतल-वासक, सात्विक, सत्वसम्पन्न, समस्तदुरितापह, समस्तरिपुध्वंसी, समस्त असुरघातन, समस्तपातकध्वंसी, समस्तसुरवन्दित, लक्ष्मीसनातन, लक्ष्मीसनंक, साधुंपूजित, हरि, हर, हरिहर, हाटकेश, हटापह, हरिद्वर्ण, हसित, हारी, हरितलोचन, लक्ष्मीहरि, हृषीकेश, लक्ष्मीहारधर अनघ, क्षमी, क्षमापति, क्षत्ता, क्षमेश, क्षवर्णभाक्, क्षणकृत्' क्षणदानाथ, क्षमावान, क्षुभितासुर, लक्ष्मीक्षमायुत, लक्ष्मीक्षत्ता, लक्ष्मीक्षवर्णभृत्, अनन्त, अनन्तपूज्य, आदि आदित्यसन्निभ, इन्दिरावल्लभ देव, ईश्वर, उग्ररूपवान, ऊष्मोज्ज्वल, ऋणहा, ॠकारोज्ज्वलमातृक, ऌवर्णवर्ण, ॡकार, एनवर्णसमन्वित, ऐश्वर्यसहित ओष्ठ, उन्मत्तस्वरार्चित, अङ्कारमकारस्वरूप, स्वरभूषित, ॐ ह्रीं हसौः ह्री श्रीं देवो लक्ष्मीनारायणः शिवः।।१३५-१५०।।

फलश्रुतिः

इति मन्त्रमयं नाम्नां सहस्रं तत्त्वमुत्तमम्।
अकारादिक्षकारान्तविद्यानिलयमीश्वरि ॥१५१॥
सर्वतीर्थमयं सर्वदेवदानवपूजितम्।
अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयस्य कोटयः ॥१५२॥
चन्द्रायणायुतं देवि महादानान्यनेकशः।
मन्त्रनामसहस्रस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥१५३॥

फलश्रुति—इस प्रकार मन्त्रमय सहस्रनामरूप उत्तम तत्त्व का वर्णन पूरा हुआ। इसमें अकार से क्षकार तक की मातृकाओं का आवास है। यह सर्व तीर्थमय एवं सभी देव-दानवों से पूजित है। हजार अश्वमेध और करोड़ वाजपेय यज्ञ का फल इसके पाठ से प्राप्त होता है। दश हजार चान्द्रायण व्रत और अनेक महादान का जो फल प्राप्त होता है, वह इस मन्त्रनामसहस्र की सोलहवीं कला के बराबर भी नहीं है।।१५१-१५३।।

अर्धरात्रे पठेद्वीरः शक्तिवक्षःस्थितः शनैः।
स्वप्ने लक्ष्मीप्रियं देवं वरदं सोऽपि पश्यति ॥१५४॥
महाचीनार्चनं कृत्वा पठेद्वीरार्चने सकृत्।
शतवर्षसहस्राणि पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥१५५॥
एकवारं पठेद्यस्तु संपूज्य गुरुसंनिधौ।
स भवेत् साधकः श्रीमान् परत्र त्रिदिवं व्रजेत् ॥१५६॥

शनिवार की आधी रात में शक्ति को हृदय से लगाकर वीर इसका पाठ करे। इससे वह स्वप्न में लक्ष्मीप्रिय वरद देव का दर्शन पाता है। महाचीनाचार से अर्चन करके वीर इसका पाठ करे तो सौ हजार वर्ष की पूजा का फल उसे प्राप्त होता है। गुरु की सन्निधि में पूजन करके जो साधक इसका एक बार पाठ करता है वह संसार में वैभवयुक्त होकर देहान्त होने पर स्वर्ग में वास करता है।।१५४-१५६।।

पुण्यदं वरदं नुत्यं तीर्थसाधनमुत्तमम्।
योगिनां योगदं पूज्यं भोगिनां भोगवर्धनम् ॥१५७॥
रोगिणां रोगशमनं सर्वदुष्कृतनाशनम्।
वैष्णवानां प्रियतरं मुक्तानां परमार्थदम् ॥१५८॥

यह पुण्यप्रद, वरदाता और नित्य उत्तम तीर्थ का साधन है। योगियों के लिये योगप्रद और भोगियों के लिये भोगवर्धक है। रोगियों के रोगों का विनाशक है। सभी

दु:ष्कर्मों का नाशक है। वैष्णवों को यह अतिप्रिय है। यह मुमुक्षुओं को परमार्थ प्रदान करने वाला है।।१५७-१५८।।

अदातव्यमश्रोतव्यमन्यशिष्याय पार्वति।
विना दानं न गृह्णीयान्न दद्याद् दक्षिणां विना ॥१५९॥
दत्वा गृहीत्वाप्युभयोः सिद्धिहानिर्भवेद् ध्रुवम्।
इदं नामसहस्रं तु लक्ष्मीनारायणस्य ते।
तव भक्त्या मयाख्यातं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥१६०॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये लक्ष्मीनारायणसहस्रनामनिरूपणं नामैकोनचत्वारिंशः पटलः॥३९॥

हे पार्वति! अशिष्य को न तो यह देय है और न ही सुनाने लायक है। शिष्य विना दान के इसे ग्रहण न करे। गुरुदक्षिणा लिये बिना गुरु भी शिष्य को न दे। देने और लेने से सिद्धिलाभ नहीं होता। तुम्हारे स्नेह से इस लक्ष्मीनारायण सहस्रनाम का वर्णन मैंने किया। अपनी योनि के समान इसे गुप्त रखना चाहिये।।१५९-१६०।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में लक्ष्मीनारायण-सहस्रनाम निरूपण नामक एकोनचत्वारिंश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ चत्वारिंशः पटलः

लक्ष्मीनारायणमूलमन्त्रस्तोत्रम्

स्तोत्रमाहात्म्यम्

श्रीभैरव उवाच

अद्याहं तत्त्वसर्वस्वं रहस्यं परमार्थदम्।
मन्त्रस्तोत्रं प्रवक्ष्यामि लक्ष्मीनारायणस्य ते ॥१॥
पञ्चमाङ्गं महादेवि परमार्थप्रकाशकम्।
चतुर्वेदागमस्तुत्यं भोगमोक्षैककारणम् ॥२॥
गुह्यं गुप्ततरं तत्त्वं मन्त्रराजस्य पार्वति।
कौलिकानां सदा संविदानन्दरसकारणम् ॥३॥

माहात्म्य—हे देवि! अब मैं तुम्हें लक्ष्मीनारायण के मन्त्रस्तोत्र को सुनाता हूँ, जो सभी तत्त्वों का रहस्य एवं परमार्थ-प्रदायक है। हे महादेवि! यह पञ्चम अङ्ग परमार्थ का प्रकाशक, चारो वेद एवं आगमों से स्तुत्य और भोग-मोक्ष का कारण है। हे पार्वति! मन्त्रराज का यह तत्त्व गुह्य एवं अत्यन्त गुप्त है तथा कौलिकों के लिये सदा संविदा से प्राप्त आनन्दरस का हेतु है।।१-३।।

विनियोगः

अस्य श्रीलक्ष्मीनारायणमन्त्रस्तोत्रराजस्य शिव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्रीलक्ष्मीनारायणो देवता, श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकं, भोगापवर्ग-सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

विनियोग—इस लक्ष्मीनारायणमन्त्रस्तोत्रराज के शिव ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द, श्रीलक्ष्मीनारायण देवता, श्रीं बीज, ह्रीं शक्ति, ॐ कीलक है एवं भोग तथा अपवर्ग की सिद्धि हेतु पाठ में इसका विनियोग किया जाता है।

ध्यानम्

पूर्णेन्दुवदनं पीतवसनं कमलासनम्।
लक्ष्म्या श्रितं चतुर्बाहुं लक्ष्मीनारायणं भजे ॥४॥

किरीटिनं कुण्डलहारमण्डितं पद्मासनं श्याममुखं चतुर्भुजम्।
पीताम्बरं शंखगदाब्जचक्रपाणिं पुराणं पुरुषं भजे विभुम्॥५॥

ध्यान—पूर्णिमा के चाँद जैसा मुखमण्डल, पीले वस्त्र, कमल का आसन, लक्ष्मी से सेवित, चतुर्भुज लक्ष्मीनारायण का मैं ध्यान करता हूँ, जो माथे पर किरीट, कानों में कुण्डल, गले में हार, श्यामल वर्ण का मुख, चार भुजा से शोभित एवं कमल के आसन पर बैठे हैं। पीताम्बर धारण किये हुये हैं। हाथों में शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म है। ऐसे पुराणपुरुष विभु का मैं स्मरण करता हूँ।।४-५।।

स्तोत्रम्

प्रणवं यदि मानवो जपेद्धरिपादाम्बुजसेवनाकुलः।
दनुजान्तकधाम याति नूनं परमानन्दमयो गतस्मयः॥६॥
पराबीजं नुत्यं यदि जपति जन्तुर्जपभुवि
स्मराक्रान्तः स्मार्तागमकुटिलमार्गोज्झितभयः।
भवेत् कौलेशानः सकलरिपुदावाग्निजलदः
सुरस्त्रीभिः सार्धं सुरविटपिवाटीषु रमते॥७॥
विबीजं यो महामन्त्रं जपेदानन्दनिर्भरः।
आनन्दरूपो भविता लक्ष्मीनारायणप्रियः॥८॥

स्तोत्र—विष्णुपद सेवा में तत्पर मनुष्य यदि 'ॐ' का जप करे तो वह गत-विकार परमानन्दमय होकर विष्णुधाम वैकुण्ठ में जाता है। लक्ष्मीनारायण को प्रणाम करके पराबीज 'ह्रीं' का जप जो कामातुर होकर करता है तो स्मार्ता रमणी कठिन मार्ग में होने पर भी साधक के पास आ जाती है। वह कौलों में श्रेष्ठ सभी शत्रुरूपी दावानल के लिये मेघ के समान होता है। वह देवकन्याओं के साथ नन्दनवन में विहार करता है। हसौः बीज महामन्त्र जप जो आनन्दमग्न होकर करता है, वह आनन्दरूप होकर लक्ष्मीनारायण का प्रिय होता है।।६-८।।

विभूतिबीजं मनुराजतत्त्वं जपेद्रतान्ते यदि कौलिकेन्द्रः।
स याति देवासुरपूजिताङ्घ्रिः परं पदं सर्वसुरैरलभ्यम्॥९॥
माबीजमन्तः परमार्थतत्त्वं सत्त्वैकरूपं मनसा जपेद्यः।
स कामिनीकामरणप्रवीणो भवेदरीणामुरुदर्पहारी॥१०॥
रमाबीजं नामाक्षरपदमयं मन्त्रमुकुटं
जपेद्यो यन्त्राग्रे हरचरणपद्मार्पितमनाः।

भवेद् भूभृन्मौलिस्फुरितमणिमालांशुनिवह-
प्रभाभास्वत्पादः स धरणिधरेन्द्रो विजयवान् ॥११॥

मन्त्रराजतत्त्व 'ह्रीं' का जो कौलिकश्रेष्ठ मैथुन के बाद जप करता है, वह देव-दैत्यपूजित सभी देवों को अप्राप्य परम पद को प्राप्त करता है। परमार्थ-तत्त्व 'श्रीं' का जप जो सात्त्विक भाव से मानसिक रूप से करता है, वह कामिनी के साथ मैथुन में प्रवीण होता है और शत्रुओं के दर्प का विनाशक होता है। विष्णु के चरणकमलों में मन लगाकर मन्त्रमुकुट श्रीलक्ष्मीनारायण का जप यन्त्र के आगे जो करता है, वह भूपालों में श्रेष्ठ, मणिमाला से प्रकाशित प्रभाभास्वत् पाद सभी राजाओं का इन्द्र एवं विजयी होता है।।९-११।।

नारायणायेति जपेन्मनुं यो
रात्रौ प्रभाते परमार्थबीजम् ।
स वैरिदावानलवारिवाहो
भवेत् स गीर्भिर्गुरुगर्वहारी ॥१२॥
विश्वं जपेद्यो हृदि विश्वसारं
विश्वम्भरध्यानपरः प्रभाते ।
साम्राज्यलक्ष्मीं स रिपून् विजित्य
लभेद् भुवि स्वर्गमतः परासुः ॥१३॥
चतुरश्रवृत्तषोडशारवसुपत्राञ्चितकाश्रराश्रबिन्दौ ।
कमलाश्रितमीश्वरं निविष्टं परमानन्दमयं भजाम्यनन्तम्॥१४॥

केवल 'नारायण' का जप जो रात में या प्रभात में करता है, वह इस परमार्थ बीज के प्रभाव से वैरी दावानल के लिये जलद के समान होता है। अपनी वाणी द्वारा गुरु के गर्व को हरण करने वाला होता है। प्रभात में अपने हृदय में विश्वसार विश्वम्भर के ध्यानसहित जो 'नम:' का जप करता है, उसे साम्राज्यलक्ष्मी प्राप्त होती है। शत्रुओं को जीतकर वह भूमि पर स्वर्ग का सुख भोगता है। चतुरस्त्र, वृत्तत्रय, षोड़शदल, अष्टपत्र, अष्टकोण, त्रिकोण, बिन्दुमण्डल में कमलासहित विष्णु का ध्यान मैं परमानन्दमय रूप में करता हूँ।।१२-१४।।

फलश्रुतिः

इति मन्त्रमयं पठेत् स्तवं यो हृदि नारायणवल्लभं प्रभाते ।
कमला विमलाशयस्य तस्य श्रुतिशीलस्य वशीभवत्यवश्यम् ॥१५॥

इतीदं स्तोत्रमीशानि मूलमन्त्रमयं परम्।
तव भक्त्या मयाख्यातं न चाख्येयं मुमुक्षुभिः ॥१६॥
पञ्चाङ्गमिदमाद्यन्तं लक्ष्मीनारायणस्य ते।
वर्णितं गोप्यमर्चाढ्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥१७॥

फलश्रुति—प्रात:काल में हृदय में लक्ष्मीनारायण के ध्यानसहित जो इस मन्त्रमय स्तोत्र का पाठ करता है, विमलाशय कमला उसकी हो जाती है। वह श्रुतिशील होता है। उसके वश में सभी वश्य होते हैं। हे ईशानि! यह श्रेष्ठ स्तोत्र मूलमन्त्रमय है। तुम्हारी भक्ति के कारण मैंने इसका वर्णन किया। मुमुक्षुओं को इसे नहीं बतलाना चाहिये। इस प्रकार लक्ष्मीनारायण के पञ्चाङ्ग के आदि और अन्त का वर्णन किया। यह गोप्य है एवं अर्चन से परिपूर्ण है। अपनी योनि के समान इसे गुप्त रखना चाहिये।।१५-१७।।

श्रीदेव्युवाच

भगवन् सर्वत्त्वज्ञ सर्वलोकहिते रत।
क्रीतास्मि भवतानेन कथनेनास्य शङ्कर ॥१८॥
लक्ष्मीनारायणस्याद्य श्रुत्वा पञ्चाङ्गमुत्तमम्।
मयाप्तः परमानन्दो दास्यहं ते ब्रवीमि किम् ॥१९॥

श्रीदेवी ने कहा—भगवन्! आप सभी तत्त्वों के ज्ञाता हैं एवं सभी लोकों के कल्याण में लगे रहते हैं। आपने मुझे यह बताकर खरीद लिया है। आज लक्ष्मी-नारायण के उत्तम पञ्चाङ्ग को सुनकर मैं आप्तकाम होकर परम आनन्दित होकर आपकी दासी हो गई हूँ; अब क्या कहूँ?।।१८-१९।।

श्रीभैरव उवाच

एतद्रहस्यमखिलं सर्वतन्त्रेषु गोपितम्।
वेदानालोड्य तन्त्रांश्च देवि ते कथितं मया ॥२०॥
देवानां दुर्लभं तत्त्वं पञ्चाङ्गं वैष्णवार्चिते।
रहस्यं सर्वलोकानां सर्वस्वं मम पार्वति ॥२१॥
अप्रकाश्यमवक्तव्यमदातव्यं दुरात्मने।
देयं शिष्याय शान्ताय गुरुभक्तिपराय च ॥२२॥
दानशीलाय भक्ताय कौलमार्गरताय च।
महाचीनपदस्थाय वैष्णवाय महात्मने ॥२३॥
दत्त्वा मुक्तिं लभेद् देवि भक्तानां सुखदायिनीम्।

इतीदं परमं तत्त्वं तत्त्वात्तत्त्वं परात्परम्।
गोप्यं गुह्यं गोपनीयं चेत्याज्ञा पारमेश्वरी॥२४॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये लक्ष्मीनारायणस्तवाख्यानं नाम चत्वारिंशः पटलः॥४०॥

श्रीभैरव ने कहा—यह अखिल रहस्य सभी तन्त्रों में गोपित है, वेदों और तन्त्रों का आलोड़न करके मैंने इसका वर्णन किया है। विष्णु के अर्चन में यह पञ्चाङ्ग तत्त्व देवताओं को भी दुर्लभ है। सभी लोकों के लिये यह रहस्य है और मेरा सर्वस्व है। दुष्टों के लिये अप्रकाश्य, अवक्तव्य और अदातव्य है। शान्त, गुरुभक्तिपरायण शिष्य को ही इसे देना चाहिये। हे देवि! कौलमार्ग में तत्पर साधक को प्रदान करने से दाता भक्तों की सुखदायिनी मुक्ति को प्राप्त करता है। यह तत्त्वों का परात्पर श्रेष्ठ तत्त्व है। हे परमेश्वरि! मेरी आज्ञा है कि इसे गोप्य गुह्य गोपनीय रखना चाहिये।।२०-२४।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में लक्ष्मीनारायण-मूलमन्त्रस्तोत्र नामक चत्वारिंश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ मृत्युञ्जयपञ्चाङ्गम्

अथैकचत्वारिंशः पटलः

मृत्युञ्जयपटलम्

मृत्युञ्जयपञ्चाङ्गावतारः

श्रीभैरव उवाच

कैलासशिखरे रम्ये मणिमालातिभास्वरे ।
नानाद्रुमलताकीर्णे नानापुष्पोपशोभिते ॥१॥
विचित्ररत्नखचित-शिलामण्डपमण्डिते ।
किन्नरीमधुरालाप-मुखरीकृतदिङ्मुखे ॥२॥
भगवन्तमुमानाथमुपविष्टमुमाश्रितम् ।
ब्रह्मोपेन्द्रेन्द्रचन्द्रार्क-गुरुशुक्रसमन्वितम् ॥३॥
ब्रह्मर्षिवसुसिद्धौघ-गणगन्धर्वसेवितम् ।

मृत्यञ्जय पञ्चाङ्ग-अवतरण—कैलाश के रम्य शिखर पर भगवान् उमानाथ उमासहित बैठे हैं। कैलाशशिखर मणिमाला से प्रकाशमान है। विविध प्रकार के वृक्ष और लताओं से परिपूर्ण है। भाँति-भाँति के फूलों से शोभित है। विचित्र रत्नों से खचित सुन्दर शिलामण्डप है। किन्नरियाँ मधुर आलाप कर रही हैं। उनके आलाप से दिशायें गुञ्जित हैं। भगवान् उमानाथ ब्रह्मा, विष्णु, चन्द्र, सूर्य, गुरु शुक्र से समन्वित हैं। ब्रह्मर्षि, वसु, सिद्धौघगण, गन्धर्व उनकी सेवा में लगे हुए हैं।।१-३।।

चन्द्रार्धमुकुटोपेतं शूलखट्वाङ्गधारिणम् ॥४॥
वराभयकरं शान्तं कुन्तबाणासिसंयुतम् ।
खड्गखेटकहस्तं च पाशतोमरकायुधम् ॥५॥
भिण्डिपालकरं प्रासपरिघायुधधारणम् ।
गदाडमरुहस्तं च शतघ्नीचक्रसंयुतम् ॥६॥
अष्टादशभुजं देवं भूतिभूषितविग्रहम् ।

भगवान् शिव के जटामुकुट में द्वितीया का चाँद है। हाथों में त्रिशूल और खाटी का पावा है। वरमुद्रा और अभयमुद्रा है। वे शान्त हैं। कुन्त, वाण और तलवार से युक्त

हैं। खड्ग, खेटक, पाश, तोमर, आयुध से युक्त हैं। भिन्दिपाल, प्रास, परिघ, आयुध धारण किये हुये हैं। गदा, डमरू, शतघ्नी और चक्र भी है। ये सभी अस्त्र उनकी अट्ठारह भुजाओं में शोभित हैं।।४-६।।

दिगम्बरं विशालाक्षं त्रिनेत्रं पञ्चवक्त्रकम् ॥७॥
आनन्दमुदितं विश्वं विश्वनायकमीश्वरम् ।
जपन्तं प्रहसन्तं च गौर्यालिङ्गितविग्रहम् ॥८॥
पन्नगाभरणोपेतं महादेवं महेश्वरम् ।
बद्धपद्मासनं शंभुं शरणागतवत्सलम् ॥९॥
प्रसन्नवदनं दृष्ट्वा प्रणम्योत्थाय पार्वती ।
गिरा मधुरया देवं प्रोवाच परमेश्वरम् ॥१०॥

शरीर में भस्म रमाये हैं। दिगम्बर हैं। उनकी आँखें विशाल हैं। तीन-तीन नेत्रों से युक्त पाँच मुख हैं। ये आनन्दित हैं। यही विश्व और विश्वनायक ईश्वर हैं। जप करते हैं, हँसते हैं, श्रीविग्रह गौरी से आलिङ्गित हैं। साँपों के आभूषण हैं। ये महादेव महेश्वर हैं। शम्भु पद्मासन में अवस्थित हैं। ये शरणागतवत्सल हैं। भगवान् शिव को प्रसन्न देखकर पार्वती ने उठकर प्रणाम किया और परमेश्वर से मधुर वाणी में कहा।।७-१०।।

श्रीदेव्युवाच

भगवन् यः शिवो देवो महामृत्युञ्जयः परः ।
आदिनाथो जगत्त्राता दीक्षानायक ईश्वरः ॥११॥
वर्णितः प्राङ् महादेवो गुणातीतश्चिदीश्वरः ।
भवता तस्य देवस्य परब्रह्मस्वरूपिणः ॥१२॥
पञ्चाङ्गं श्रोतुमिच्छामि वक्तुमर्हसि मे प्रभो ।

देवी बोलीं—हे भगवन्! जिन परदेव महामृत्युञ्जय आदिनाथ, जगत् के त्राता, दीक्षानायक ईश्वर के बारे में आपने पहले कहा है, उन महादेव गुणातीत चित्त के ईश्वर परब्रह्मस्वरूप देव के पञ्चाङ्ग को सुनने की मेरी इच्छा है। आपमें कहने की शक्ति-सामर्थ्य है; अतः आप बताइये।।११-१२।।

श्रीभैरव उवाच

परमेश्वरदेवस्य महामृत्युञ्जयस्य ते ।
भक्त्या वक्ष्यामि पञ्चाङ्गं नाख्येयं यस्य कस्यचित् ॥१३॥
पटलं पद्धतिं वर्म मन्त्रनामसहस्रकम् ।
स्तोत्रं पञ्चाङ्गभूतं च गोपयेद्यः स साधकः ॥१४॥

श्रीभैरव ने कहा—परमेश्वर महामृत्युञ्जय देव के पञ्चाङ्ग को बतलाता हूँ। इसे जिस किसी से नहीं कहना चाहिये। पटल, पद्धति, कवच, मन्त्रनामसहस्र और स्तोत्र—ये इस पञ्चाङ्ग के पाँच अङ्ग हैं। साधक इसे गुप्त रखे।।१३-१४।।

तत्रादौ पटलं वक्ष्ये दीक्षानायकवल्लभम्।
गुह्यं परमगुह्यं च गोप्तव्यं तु मुमुक्षुभिः ॥१५॥

सर्वप्रथमपहले दीक्षानायकवल्लभ पटल का वर्णन करता हूँ। यह गुह्य, परम गुह्य और गोप्तव्य है। मुमुक्षुओं को भी इसे नहीं बतलाना चाहिये।।१५।।

मृत्युञ्जयमन्त्रोद्धारः

मन्त्रोद्धारं महादेवि दीक्षाफलविवृद्धये।
दिव्यं सुखकरं साध्यं सिद्धं वक्ष्यामि सिद्धये ॥१६॥
तारं हृद्धातार्तिकं शिवशरन्मण्डूकबीजं ततो
वाच्यं पालय पालयेति च पुनः शक्तिः शिवः शाक्तिकम्।
हृज्जं तारकभूषणं निगदितस्त्वद्भक्तिहेतोर्मया
दीक्षानायकवल्लभो मनुरयं त्रैलोक्यचिन्तामणिः ॥१७॥

हे महादेवि! दीक्षाफल में वृद्धि के लिये मन्त्रोद्धार बतलाता हूँ, जो दिव्य, सुखकर एवं साध्य, सिद्ध और सिद्धि का साधन है। श्लोक १७ का उद्धार करने पर मन्त्र बनता है— ॐ हौं जूं सः पालय पालय सः जूं हौं ॐ

इस मन्त्र का वर्णन हे देवि! तुम्हारी भक्ति के कारण किया। यह दीक्षानायक का प्रिय है। यह मन्त्र त्रैलोक्य में चिन्तामणि के समान है।।१६-१७।।

नास्यान्तरायबाहुल्यं सिद्धसाध्यारिदूषणम्।
न कायक्लेशदौर्बल्यं नाचारनियमभ्रमः ॥१८॥
न पञ्चदोषशङ्कापि नोत्तमर्णाधमर्णकौ।
केवलं परमानन्दवर्धनो रिपुमर्दनः ॥१९॥
मन्त्रोऽयं मन्त्रराजेन्द्रो दीक्षाफलसुरद्रुमः।

इसकी साधना में अन्तराय की अधिकता नहीं है। सिद्ध, साध्य, अरि, दोष का विचार आवश्यक नहीं है। इसकी साधना में शरीर को क्लेश नहीं होता। दुर्बलता नहीं होती। इसमें आचार-नियम का भ्रम नहीं है। इसमें पञ्च दोष की शङ्का नहीं है। उत्तमर्ण और अधमर्ण का विचार भी नहीं है। यह केवल परमानन्दवर्धक है, शत्रुविनाशक है। यह मन्त्र मन्त्रों का राजा इन्द्र है। इसका दीक्षाफल कल्पवृक्ष के समान है।।१८-१९।।

विना पुरस्क्रियामेष मन्त्रराजो न सिध्यति ॥२०॥
तस्मात् पुरस्क्रियाहेतोर्गुरुं संप्रार्थयेच्छिवे ।
गुरुहस्तेन यः कुर्यान्मन्त्रस्यास्य पुरस्क्रियाम् ॥२१॥
तस्यायं मन्त्रराजेन्द्रो भवेत् कल्पद्रुमोपमः ।
वर्णलक्षं पुरश्चर्यां तदर्धं वा महेश्वरि ॥२२॥
एकलक्षावधिं कुर्यान्नातो न्यूनं कदाचन ।
जपाद् दशांशतो होमस्तद्दशांशेन तर्पणम् ॥२३॥
मार्जनं तद्दशांशेन तद्दशांशेन भोजनम् ।
एवं विधाय मन्त्रस्य पुरश्चर्यां च साधकः ॥२४॥

बिना पुरश्चरण क्रिया के यह मन्त्रराज सिद्ध नहीं होता। इसलिये पुरश्चरण के लिये गुरु से साधक प्रार्थना करे। गुरु के द्वारा इसका यदि पुरश्चरण किया जाता है तो उस साधक के लिये यह मन्त्रराज कल्पवृक्ष के समान होता है। हे महेश्वरि! वर्णलक्ष या उसका आधा जप करने से इसका पुरश्चरण सम्पन्न होता है। किसी भी स्थिति में एक लाख से कम जप नहीं करना चाहिये। जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश ब्राह्मणभोजन कराना चाहिये। इस प्रकार समस्त कृत्यों को सम्पन्न करने से पुरश्चरण सम्पन्न होता है।।२०-२४।।

गुरवे दक्षिणां दत्त्वा यथाविभवमीश्वरि ।
ततो जपो भवेद् देवि सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥२५॥
अन्यथा न भवेत् सिद्धिर्दीक्षायाः सुमनोरपि ।

हे ईश्वरि! यथाशक्ति गुरुदक्षिणा देने से मन्त्रजप सर्वसिद्धिप्रदायक होता है। अन्यथा मन्त्र सिद्धिनायक नहीं होता।।२५।।

मृत्युञ्जययन्त्रोद्धारः

यन्त्रोद्धारविधिं वक्ष्ये देवदेवस्य पार्वति ॥२६॥
सर्वसंमोहनं दिव्यं सर्वाशापरिपूरकम् ।
बिन्दुत्रिकोणषट्कोण-वृत्ताष्टदलमण्डितम् ॥२७॥
वृत्तत्रयं धरासद्म श्रीचक्रं शैवमीरितम् ।

मृत्युञ्जय यन्त्रोद्धार—हे पार्वति! अब देवदेव मृत्युञ्जय के यन्त्रोद्धार को बतलाता हूँ। देवदेव का यह यन्त्र सर्वसम्मोहन है। सभी मनोरथों को पूरा करने वाला है। बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल, वृत्तत्रय और भूपुर से यह यन्त्र बनता है।।२६-२७।।

मृत्युञ्जय यन्त्र
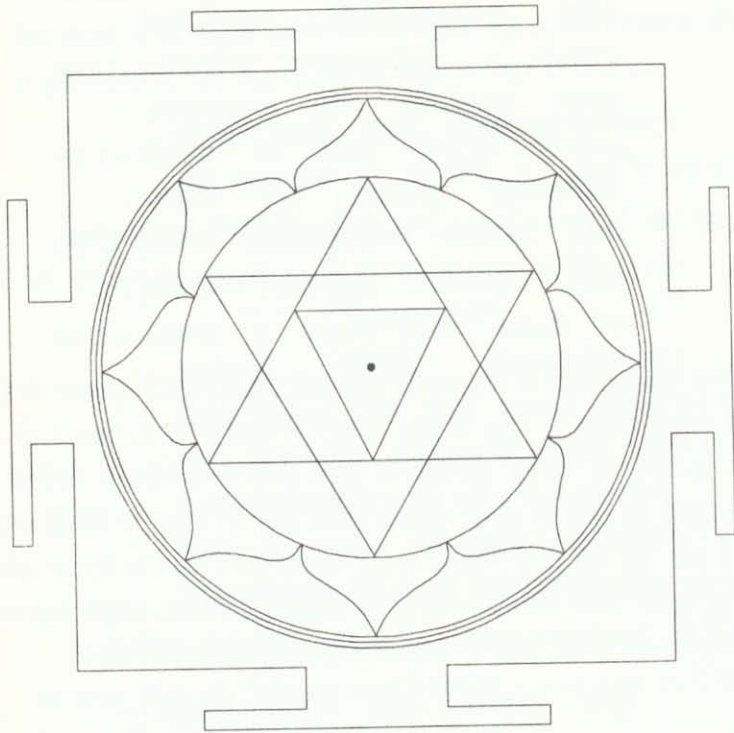
मृत्युञ्जयलयाङ्गम्

लयाङ्गमस्य वक्ष्यामि यन्त्रराजस्य पार्वति ॥२८॥
यस्य श्रवणमात्रेण दीक्षाफलमवाप्नुयात् ।
इन्द्राद्या दश दिक्पालाः सायुधा भूगृहे शिवे ॥२९॥
दिव्यसिद्धौघमर्त्यौघा गुरवोऽप्यारणत्रये ।
असिताङ्गो रुरुश्चण्डक्रोधेशोन्मत्तभैरवाः ॥३०॥
कपालीशो भीषणाख्यः संहारेशोऽष्टमः शिवे ।
पूजनीया वसुदले साधकैस्तु मुमुक्षुभिः ॥३१॥

हे पार्वति! अब इस यन्त्रराज के लयाङ्ग का वर्णन करता हूँ। इसके सुनने से ही दीक्षा का फल प्राप्त होता है। भूपुर में अस्त्रों सहित इन्द्रादि दिक्पालों का पूजन होता है। वृत्तत्रय के अन्तरालों में गुरु, मानवौघ, दिव्यौघ और सिद्धौघों का पूजन होता है। अष्टदल में असिताङ्ग, रुद्र, चण्ड, क्रोधेश, उन्मत्त, कपालीश, भीषण, संहार—इन आठ भैरवों का पूजन होता है।।२८-३१।।

कालाग्निरुद्रं नेत्रेशं विश्वनाथं महेश्वरम् ।
सद्योजातं वामदेवं पूजयेत् कामयोनिषु ।।३२।।
कामेश्वरं महाकालं देवं स्वच्छन्दभैरवम् ।
त्रिकोणे पूजयेद् देवि स्वाग्रेशानाग्निभागत: ।।३३।।
बिन्दौ मृत्युञ्जयं देवं स्वशक्त्या सहितं शिवे ।
अमृतेश्वरमीशानमीश्वरं भुवनेश्वरम् ।।३४।।

षट्कोण में कालाग्नि रुद्र, नेत्रेश, विश्वनाथ, महेश्वर, सद्योजात वामदेव—इन छ: की पूजा होती है। त्रिकोण में अपने सामने के कोण में कामेश्वर का, ईशान में महाकाल का और अग्निकोण में स्वच्छन्दभैरव का पूजन होता है। बिन्दुमण्डल में शक्तिसहित मृत्युञ्जय देव का पूजन करना चाहिये। साथ ही अमृतेश्वर, ईशान, ईश्वर और भुवनेश्वर का पूजन भी होता है।।३२-३४।।

त्रिखण्डां पाशमीशानि सुधाकलशमुत्तमम् ।
मुक्ताक्षसूत्रं देवाङ्गे पूजयेत् साधकोत्तम: ।।३५।।
संपूज्य विधिवद् देवि गन्धाक्षतप्रसूनकै: ।
धूपदीपादिनैवेद्यैस्ताम्बूलैश्छत्रचामरै: ।।३६।।
लयाङ्गमिदमाख्यातं सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ।
सर्वसिद्धिप्रदं देवि गोपनीयं विशेषत: ।।३७।।

देवता के अङ्ग में त्रिखण्डा, पाश, ईशानि, सुधाकलश, मुक्ता, अक्षसूत्र का भी पूजन होता है। यह पूजन गन्धाक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, छत्र, चामर से विधिवत् करना चाहिये। इस पूजा का नाम लयाङ्ग है। यह सभी तन्त्रों में गोपित है। यह सर्वसिद्धिप्रद लयाङ्ग विशेष रूप से गोपनीय है।।३५-३७।।

मृत्युञ्जयमन्त्रर्ष्यादि

मन्त्रस्यास्य महादेवि महाचम-पदादिक: ।
सकहोल ऋषिश्छन्दो गायत्री देवता तथा ।।३८।।
महामृत्युञ्जयो रुद्रो महादेवोऽधिदेवता ।
बीजं च प्रणवो देवि शक्तिर्ह्ज्जाख्यबीजकम् ।।३९।।
कीलकं शरदीशानि दिग्बन्धोऽस्त्यस्त्रमीश्वरि ।
चतुर्वर्गेषु विद्याया विनियोग: प्रकीर्तित: ।।४०।।

विनियोग—हे महादेवि! इस मृत्युञ्जय मन्त्र के ऋषि कहोल कहे गये हैं। छन्द

गायत्री, देवता महामृत्युञ्जय रुद्र, अधिदेवता महादेव, बीज ॐ, शक्ति ह्रौं, कीलक सः एवं फट् से दिग्बन्ध कहा गया है। हे ईशानि! चतुर्वर्ग की सिद्धि के लिये इस विद्या का विनियोग कहा गया है।।३८-४०।।

तारहृज्जशरद्बीजैः षड्दीर्घैः प्राण(न्यास)माचरेत् ।
करयोर्हृदयादीनामङ्गानां साधकोत्तमः ।।४१।।
मूलादिबीजमात्रेण प्राणायामत्रयं चरेत् ।
तत्त्वत्रयेणाचमनमात्मविद्याशिवादिना ।।४२।।

न्यास—ॐ जूं सः के षड्दीर्घ रूप से करन्यास और हृदयादि षडङ्ग न्यास करे। मूल मन्त्र के आदि बीज 'ॐ ह्रौं जूं सः' से तीन प्राणायाम करे। आत्म, विद्या, शिव—तत्त्वत्रय से आचमन करे।।४१-४२।।

मृत्युञ्जयध्यानम्

अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि देवदेवेश्वरस्य हि ।
येनैव ध्यानमात्रेण मन्त्री शैवं पदं व्रजेत् ।।४३।।
चन्द्रार्काग्निविलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तःस्थितं
मुद्रापाशसुधाक्षसूत्रविलसत्पाणिं हिमांशुप्रभम् ।
कोटीरेन्दुगलत्सुधाप्लुततनुं हारादिभूषोज्ज्वलं
कान्त्या विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयं भावयेत् ।।४४।।

ध्यान—अब मैं देवदेव के ध्यान का वर्णन करता हूँ, जिस ध्यान के करने से ही साधक शैव पद पर प्रतिष्ठित हो जाता है। चन्द्र-सूर्य-अग्नि—ये तीन इनके नेत्र हैं, मुस्कानयुक्त मुख है। दो हाथों में कमल और अन्यों में पाश, मुद्रा, सुधा, अक्षसूत्र हैं। चन्द्रमा के समान प्रकाशमान हैं। कोटि चन्द्र से झरते अमृत से शरीर भीगा हुआ है। हार आदि भूषण उज्ज्वल हैं, विश्व को मोहित करने वाली कान्ति है। ऐसे पशुपति मृत्युञ्जय का ध्यान करना चाहिये।।४३-४४।।

चन्द्रमण्डलमध्यस्थे रुद्रभालेऽतिविस्तृते ।
तत्रस्थं चिन्तयेत् साध्यं मृत्युं प्राप्तोऽपि जीवति ।।४५।।
इति साध्यं पराबीजमन्त्रावयवभूषितम् ।
रुद्रभालस्थमीशानि गोपनीयं विशेषतः ।।४६।।

मन्त्र का माहात्म्य—रुद्र के अति विस्तृत ललाट के चन्द्रमण्डल मध्य में साध्य को स्थित रूप में चिन्तन करने से मृत व्यक्ति भी जीवित हो जाता है। ऐसा ध्यान करते

हुए साध्य के अवयवों को परा बीज ह्रीं से विभूषित होने का चिन्तन करे। यह साधन विशेष गोपनीय है।।४५-४६।।

मृत्युञ्जयमन्त्रस्याष्टौ प्रयोगाः

प्रयोगानष्ट वक्ष्यामि दुर्लभान् परमार्थदान्।
यान् विधाय शिवे मन्त्री भवेद् भैरवसन्निभः ।।४७।।
स्तम्भनं मोहनं चैव मारणाकर्षणे ततः।
वशीकारं तथोच्चाटं शान्तिकं पौष्टिकं तथा ।।४८।।
एतेषां साधनं वक्ष्ये सर्वसौख्यैककारणम्।
येन साधनमात्रेण सर्वसिद्धिर्भवेत् कलौ ।।४९।।

आठ प्रयोग—अब मैं आठ दुर्लभ परमार्थप्रद प्रयोगों का वर्णन करता हूँ। इन विधानों के करने से साधक भैरवतुल्य हो जाता है। ये आठ प्रयोग हैं—स्तम्भन, मोहन, मारण, आकर्षण, वशीकरण, उच्चाटन, शान्ति और पुष्टि। इनके साधना-विधान का वर्णन करता हूँ। ये सभी प्रकार के सुखों के कारण हैं। इनके साधनमात्र से कलियुग में सभी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।।४७-४९।।

स्तम्भनम्

रवौ स्नानं शिवे कृत्वा नित्यकर्म समाप्य च।
संकल्पपूर्वं मन्त्रं च जपेदयुतसंख्यया ।।५०।।
होमो दशांशतः सर्पिर्यवाकनकबीजकैः।
स्तम्भनं जायते वादिमुखदस्युविवस्वताम् ।।५१।।

स्तम्भन—हे शिवे! रविवार में स्नानादि नित्य कर्म करके सङ्कल्पपूर्वक दश हजार मन्त्र-जप करे। एक हजार हवन गाय के घी, यव और धतूरे के बीजों से करे। इससे वादी-मुख और दस्युओं का स्तम्भन होता है।।५०-५१।।

मोहनम्

चन्द्रे संपूज्य देवेशं जपेदयुतसंख्यया।
होमो घृतयवालाजशाकपत्रेर्दशांशतः ।।५२।।
तद्भस्मतिलकेनैव मोहनं जगतां भवेत्।

मोहन—सोमवार में देवेश का पूजन करके दश हजार मन्त्र-जप करे। एक हजार हवन घी, यव, लावा और शाकपत्र के मिश्रण से करे। हवन-भस्म से तिलक लगाने से सारा संसार मोहित होता है।।५२।।

मारणम्

मङ्गले साधकः स्नात्वा गत्वा श्मशानमण्डलम् ॥५३॥
अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं होमो घृतविशालया।
श्रीपर्णीमधुकोन्मिश्रैः श्रीफलैश्चिञ्चिनीफलैः ॥५४॥
मृत्युं याति रिपुर्देवि दशाहावधि मत्समः।

मारण—मंगलवार में स्नान करके साधक श्मशान-मण्डल में जाकर दश हजार मन्त्र-जप करे। घी, विशाल मृगमांस, श्रीपर्णी और मधु मिलाकर बेलफल और इमली के फल से एक हजार हवन करे। इससे मुझ शिव के समान शत्रु की भी मृत्यु दश दिनों में हो जाती है।।५३-५४।।

आकर्षणम्

बुधे स्नात्वार्चयेद् देवं श्रीचक्राग्रे जपेन्मनुम् ॥५५॥
अयुतं तद्दशांशेन हुनेत् सर्पिः शतावरीम्।
त्रिकण्टकं बिल्वकं च स्त्रीणामाकर्षणं भवेत् ॥५६॥

आकर्षण—बुधवार में स्नान करके देव का श्रीचक्र के आगे विधिपूर्वक अर्चन करे। चक्र के सामने बैठकर दश हजार मन्त्र-जप करे। एक हजार हवन गाय के घी, शता-वरी, त्रिकंटक एवं बेल को एक में मिलाकर करे। इससे स्त्रियों का आकर्षण होता है।।५५-५६।।

वशीकरणम्

गुरौ स्नात्वा जपेद्विद्यां परामयुतसंख्यया।
होमो दशांशतः कार्यो घृतपद्माक्षचन्दनैः ॥५७॥
आरग्वधेन कणया वरयामृतया शिवे।
रिपू राजा धनी वीरो जिष्णुर्दासत्वमेष्यति ॥५८॥

वशीकरण—गुरुवार में स्नान के बाद पराविद्या का जप दश हजार करे। एक हजार हवन घी, कमलगट्टा, चन्दन, सेमलचूर्ण और गुरुचखण्डों को एक में मिलाकर करे। इससे राजा, शत्रु, वीर और विष्णु भी साधक के दास हो जाते हैं।।५७-५८।।

उच्चाटनम्

शुक्रे श्मशाने वीरेशो जपेदयुतसंख्यया।
चिताग्रे मूलविद्यां तु तद्दशांशं हुनेद् घृतम् ॥५९॥
समण्डूकं शम्भूकं च रिपुमुच्चाटयेद् ध्रुवम्।

उच्चाटन—शुक्रवार में वीरेश श्मशान में जाकर दश हजार मन्त्र-जप चिता के सामने करे। एक हजार हवन घी, मेढ़क और घोंघा से करे। इससे शत्रु का उच्चाटन निश्चित रूप से होता है।।५९।।

शान्तिः

शनौ स्नात्वा चरेत् पूजां जपेद्विद्यां तथायुतम् ।।६०।।
हुनेदाज्यपयोमृत्स्ना-वार्ताकमृदुशाद्वलान् ।
धत्तूरपुष्पसहितान् सर्वशान्तिः प्रजायते ।।६१।।

शान्ति—शनिवार में स्नान के बाद पूजा करे। विद्या का जप दश हजार करे। एक हजार हवन गोघृत, दूध, मिट्टी, बैंगन, घास के मैदान की मिट्टी और धत्तूर-पुष्प के मिश्रण से करे। इससे सभी प्रकार की शान्ति होती है।।६०-६१।।

पुष्टिः

सर्वदा सर्ववारेषु जपेदयुतसंख्यया ।
होमो दशांशतः कार्यो घृतपायसपङ्कजैः ।।६२।।
छागैणकूर्मवाराहपलयुक्तैः सभक्तकैः ।
पितॄणां देवतानां च भूभृतां रोगिणां तथा ।।६३।।
दशांशं विधिवद् दत्त्वा महापुष्टिः प्रजायते ।

पुष्टि—सर्वदा सभी दिनों में दश हजार मन्त्र-जप करे। एक हजार हवन घी, पायस, कमल, छाग-कछुआ, सूअर-मांस और भात के मिश्रण से पितरों, देवताओं, भूपालों एवं रोगियों के लिये करे। इससे महापुष्टि होती है।।६२-६३।।

पटलोपसंहारः

इतीदं परमं तत्त्वं मन्त्रस्यास्य मयेरितम् ।
अदातव्यमभक्तेभ्यो गोपनीयं स्वयोनिवत् ।।६४।।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये मृत्युञ्जयपटलनिरूपणं नामैकचत्वारिंशः पटलः।।४१।।

इस प्रकार इस मन्त्र के परम तत्त्व का निरूपण मैंने किया। यह अभक्तों को देय नहीं है। अपनी योनि के समान इसे गुप्त रखना चाहिये।।६४।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में मृत्युञ्जयपटल निरूपण नामक एकचत्वारिंश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ द्वाचत्वारिंशः पटलः

मृत्युञ्जयपूजापद्धतिः

श्रीभैरव उवाच

अधुना देवि वक्ष्यामि पूजापद्धतिमुत्तमाम्।
गद्यपद्यमयीं दिव्यां कोटियज्ञफलप्रदाम्॥१॥
प्रातःकृत्यमकृत्वा तु यः शिवं भक्तितोऽर्चयेत्।
तस्य पूजा तु विफला शौचहीना यथा क्रिया॥२॥

महामृत्युञ्जय-पूजापद्धति—श्रीभैरव ने कहा—हे देवि! अब मैं उत्तम पूजा-पद्धति का वर्णन करता हूँ। यह पद्धति गद्य-पद्यमयी है। दिव्य है। करोड़ यज्ञों का फल देने वाली है। प्रातःकृत्य किए बिना जो पूर्ण भक्ति से शिवपूजन करता है, उसकी पूजा उसी तरह विफल होती है, जिस तरह शौचरहित क्रिया विफल होती है।।१-२।।

ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय बद्धपद्मासनः स्वशिरःस्थसहस्त्राराधोमुखकमल-कर्णिकान्तर्गतं निजगुरुं ध्यायेत्।

श्रीगुरुं परमानन्दं वन्दे स्वानन्दविग्रहम्।
यस्य सन्निधिमात्रेण चिदानन्दायते वपुः॥

इति नत्वा,

श्रीगुरुं द्विभुजं शान्तं वराभयकराम्बुजम्।
पूर्णेन्दुवदनाम्भोजं हसन्तं शक्तिसंयुतम्॥
श्वेतवस्त्रपरीधानं नानालङ्कारभूषितम्।
आनन्दमुदितं देवं ध्यायेत् पङ्कजविष्टरम्॥

ब्राह्म मुहूर्त में उठकर पद्मासन में बैठे। अपने शिर में स्थित अधोमुख सहस्त्रदल कमल की कर्णिका में अपने गुरु का ध्यान करे, जैसे—

श्रीगुरुं परमानन्दं वन्दे स्वानन्दविग्रहम्।
यस्य सन्निधिमात्रेण चिदानन्दायते वपुः।।

तब प्रणाम करे। इसके बाद फिर ध्यान करे। जैसे—

श्रीगुरुं द्विभुजं शान्तं वराभयकराम्बुजम्।
पूर्णेन्दुवदनाम्भोजं हसन्तं शक्तिसंयुतम्।।

श्वेतवस्त्रपरीधानं नानालङ्कारभूषितम्।
आनन्दमुदितं देवं ध्यायेत् पङ्कजविष्टरम्।।

इन ध्यानश्लोकों का अर्थ है—परमानन्दित श्रीगुरु को प्रणाम करता हूँ, जो आत्मानन्दस्वरूप हैं। जिनकी निकटता से ही शरीर चिदानन्द से पूर्ण हो जाता है। श्रीगुरु शान्तमूर्ति हैं। उनके एक हाथ में वरमुद्रा और दूसरे हाथ में अभयमुद्रा है। मुखकमल पूर्णिमा के चाँद-जैसा है। मुस्कुराती हुई अपनी शक्ति से संयुक्त हैं। श्वेत वस्त्र का परीधान है। विविध आभूषणों से सुशोभित हैं। चिदानन्द से प्रसन्न हैं। कमल के आसन पर विराजित हैं। ऐसे गुरुदेव का ध्यान करते हैं।

इति ध्यात्वा दण्डवत् प्रणम्य, हंसः इति षट्शताधिकमेकविंशति-साहस्रमजपाजपं मूलं च यथाशक्त्या जप्त्वा, जपं गुरवे समर्प्य तदाज्ञामादाय, बहिरागत्य मलादि सन्त्यज्य वर्णोक्तं शौचमादाय नद्यादौ गत्वा 'ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजनमनोहराय नमः' इति दन्तान् संशोध्य, 'गं ग्लौं दन्तशोधनशक्त्यै नमः' इति गण्डूषत्रयं विधाय, मृदमानीय त्रिभागं कृत्वा, 'ॐ प्रीं मृत्तिकायै नमः' इत्यभिषिच्य, मूलेनाभिमन्त्र्य मलापकर्षणं स्नानं कृत्वा, ॐ गां गीं

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।

इति सूर्यमण्डलादङ्कुशमुद्रया तीर्थान्यावाह्य, मृदं जले क्षिप्त्वा, पुनः

देवेश भक्तिसुलभ सपरिच्छद भैरव।
यावत् त्वां तर्पयिष्यामि तावद्देव इहावह ।।

इति जले त्रिकोणं विभाव्य, तत्र मृदा देवमावाह्य मुद्राः प्रदर्श्य, मूलेन प्राणायामपूर्वं पादादिशिरःपर्यन्तं त्रिरुन्मज्जेत्।

इस प्रकार के ध्यान के बाद दण्डवत् भूमि पर लेटकर प्रणाम करे। इक्कीस हजार छः सौ हंस जप को मूलमन्त्र का यथाशक्ति जप करके गुरुदेव को समर्पित करे। गुरु से आज्ञा लेकर घर से बाहर जाकर मलादि त्याग करे। वर्णोक्त शौच करे। नदी आदि जलाशय के किनारे जाकर दतुवन करे। इसका मन्त्र है—ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजनमनोहराय नमः।

इसके बाद मन्त्र बोलकर तीन कुल्ला करे; जैसे—गं ग्लौं दन्तशोधनशत्त्यै नमः। इसके बाद मिट्टी लेकर तीन भाग करे। 'ॐ प्रीं मृत्तिकायै नमः' से उसे पानी से भिगावे।

मूल मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। देह में लगाकर मलशोधन करे। स्नान करे। इसके बाद मन्त्र कहकर सूर्यमण्डल से अङ्कुश मुद्रा के द्वारा तीर्थों का आवाहन करे—

ॐ गां गीं गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिङ्कुरु।।

शेष मिट्टी को जल में रखकर, त्रिकोण की कल्पना करके उस मिट्टी में भैरव का आवाहन करे। मन्त्र है—

देवेश भक्तिसुलभ सपरिच्छद भैरव।
यावत् त्वां तर्पयिष्यामि तावद् देव इहावह।।

तब मुद्रा दिखावे। मूल मन्त्र से प्राणायाम करे। इसके बाद नदी में तीन डुबकी लगाए।

ततः सूर्यायार्घ्यत्रयं दद्यात्। 'ॐह्रांह्रींसः श्रीसूर्याय प्रकाशशक्तिसहिताय एष तेऽर्घो नमः' इति अर्घ्यत्रयं दत्त्वा, ततोऽन्यद्वासः परिधाप्य कराङ्गन्यासपूर्वं प्राणायामत्रयं चरेत्। यथा—

**इडया पिब षोडशभिः पवनं चतुरुत्तरषष्टितमाभ्यधिकम्।
त्यज पिङ्गलया शनकैः शनकैर्दशभिर्दशभिर्दशभिर्द्व्यधिकैः ।।**

पूरकः १६, कुम्भकः ६४, रेचकः ३२ इति त्रिः कृत्वा, ॐजुंसः आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, ॐजुंसः विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा, ॐजुंसः शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा इत्याचम्य, षडङ्गं विधाय, वामहस्ते जलं धृत्वा तत्त्वमुद्रयाच्छाद्य, यंरंवंलंहं इति पञ्चभूतमन्त्रेण सप्तवारमभिमन्त्र्य दक्षहस्ते धृत्वा, वामानामिकाङ्गुष्ठयोगेन तद्गलितोदकबिन्दुभिः स्वशिरो मूलमुच्चरन् दशधा प्रोक्ष्य पुनर्वामहस्ते विधाय, इडयान्तर्नीत्वा देहान्तः पापं प्रक्षाल्य, पिङ्गलया तज्जलं सकलुषं दक्षहस्ते धृत्वा स्ववामभागस्थकल्पितवज्रशिलायामास्फालयेदित्यघमर्षणं विधाय, पूर्ववत् षडङ्गं कृत्वा, ॐजुंसः परमहंसाय विद्महे सोहंसः मृत्युञ्जयाय धीमहि जुं ॐ तन्नोऽमृतेश्वरः प्रचोदयात्। इति दशधा प्रजप्य मूलं च यथाशक्त्या जप्त्वा, गायत्र्या देवीदेवयोरर्घ्यत्रयं दद्यात्। ॐजुंसः साङ्गायामृतेश्वरीसहिताय मृत्युञ्जयाय एष ते अर्घो नमः। तथा पूर्ववत् सूर्यायार्घ्यत्रयं दत्त्वा, जले चतुरस्रं सत्र्यस्रं विभाव्य मूलमुच्चरन् सप्तधा सदेवीकं देवं तर्पयेत्। मू० साङ्गः सवाहनः सायुधः सपरिच्छदः

सदेवीको मृत्युञ्जयो भगवांस्तृप्यतामिति सन्तर्प्य, परिवारानेकैकाञ्जलिना सन्तर्प्य, ब्रह्मादिकीटपर्यन्तं सन्तर्प्य, पित्रादितर्पणं विधाय, पूर्ववद् देवं संहारमुद्रया स्वहृदि समानीय शिवोऽहमिति भावयन् यागमण्डपमागच्छेदिति संध्याविधिः।

इसके बाद सूर्य को तीन अर्घ्य प्रदान करे। अर्घ्यमन्त्र है—

ॐ ह्रां ह्रीं सः श्रीसूर्याय प्रकाशशक्तिसहिताय एष ते अर्घो नमः। इसके बाद वस्त्र बदलकर करन्यास और अङ्ग न्यास करके तीन प्राणायाम करे; जैसे—

इडया पिब षोडशभिः पवनं चतुरुत्तरषष्टितमाभ्यधिकम्।
त्यज पिङ्गलया शनकैः शनकैः दशभिर्दशभिर्द्व्यधिकैः।।

अर्थात् १६ मात्रा से पूरक, ६४ मात्रा से कुम्भक और ३२ मात्रा से रेचक करे। इसके बाद आचमन करे; जैसे—ॐ जूं सः आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः। ॐ जूं सः विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः। ॐ जूं सः शिवतत्त्वं शोधयामि नमः।

इसके बाद षडङ्ग न्यास करे। बाँयें हाथ में जल लेकर दाँयें हाथ से तत्त्वमुद्रा से उसे आच्छादित करे। यं रं वं लं हं पञ्चभूत मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करे। तब जल दाहिने हाथ में लेकर वाम अनामिका-अँगूठा-योग से उससे टपके जलबूँद से अपने शिर का प्रोक्षण मूल मन्त्रोच्चारणपूर्वक दश बार करे। फिर बाँयें हाथ में जल लेकर इडा नाड़ी से देह में लाकर पाप का प्रक्षालन करे। पिङ्गला नाड़ी से उस जलसहित पापपुरुष को दाहिनी हथेली में रखे। अपने वाम भाग में कल्पित वज्रशिला पर पापपुरुष को पटक दे। यह अघमर्षण हुआ। पूर्ववत् षडङ्ग न्यास करे। मृत्युञ्जय-गायत्री का जप दश बार करे। मन्त्र है—ॐ जुं सः परमहंसाय विद्महे मृत्युञ्जयाय धीमहि जुं ॐ तन्नो अमृतेश्वरः प्रचोदयात्।

इसके बाद मूल मन्त्र का जप यथाशक्ति करे। गायत्री देवी और देव को तीन अर्घ्य प्रदान करे। मन्त्र है—ॐ जुं सः साङ्गायामृतेश्वरिसहिताय मृत्युञ्जयाय एष ते अर्घो नमः।

तब पूर्ववत् सूर्य को तीन अर्घ्य प्रदान करे। जल पर चतुष्कोण के अन्दर त्रिकोण कल्पित करे। मूल मन्त्र का उच्चारण करते हुए देवी-सहित देव का सत्रह बार तर्पण करे। मन्त्र है—ॐ जुं सः सांगः सवाहनः सायुधः सपरिच्छदः सदेवीको मृत्युञ्जयो भगवांस्तृप्यताम्।

देव के तर्पण के बाद आवरण के प्रत्येक देवता को एक-एक अञ्जलि जल से तर्पित करे। ब्रह्मादि कीटपर्यन्त का तर्पण करे। पितरों का तर्पण करे। पूर्ववत् देव को

संहार मुद्रा से अपने हृदय में लाकर भावना करे कि 'शिवोऽहम्'। तब यागमण्डप के पास आये। यह सन्ध्या विधि हुई।

ततो गृहमागत्य पादौ प्रक्षाल्य, द्वारदेवताः पूजयेत्। हूंफडिति द्वारं प्रक्षाल्य, ऊर्ध्वे गां गणेशाय नमः, वामदक्षिणक्रमेण महालक्ष्म्यै नमः, सरस्वत्यै नमः, गङ्गायै नमः, यमुनायै नमः, धात्रे नमः, विधात्रे नमः, नन्दाय नमः, सुनन्दाय नमः, प्रचण्डाय नमः, चण्डाय नमः, क्षेत्रपालाय नमः, वेतालाय नमः, अग्निवेतालाय नमः इति संपूज्य, तत्रासने मन्त्रेण पुष्पं दत्त्वा अनन्तासनाय नमः, विमलासनाय नमः, पद्मासनाय नमः।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां लोके पवित्रं कुरु चासनम्॥

त्रिर्वामपार्ष्णिघातं दत्त्वा,

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

इति विघ्नानुत्सार्य, हूं अघोराय फट् इति दश दिशो बद्ध्वा भूतशुद्धिं कुर्यात्।

नदी-तट से घर पर आकर पैरों को धोकर द्वारदेवों का पूजन करे। 'हूं फट्' से द्वार को पानी से साफ करे। द्वार के ऊपर गं गणेशाय नमः से गणेश का, वाम भाग में महालक्ष्म्यै नमः से महालक्ष्मी का, दक्षभाग में सरस्वत्यै नमः से सरस्वती का पूजन करे। तब गङ्गायै नमः, यमुनायै नमः, धात्रे नमः, विधात्रे नमः, नन्दाय नमः, सुनन्दाय नमः, प्रचण्डाय नमः, चण्डाय नमः, क्षेत्रपालाय नमः, वेतालाय नमः, अग्निवेतालाय नमः से इनका पूजन वाम-दक्षक्रम से द्वार में करे। यागमण्डप में आसन के निकट जाकर आसन पर मन्त्र से फूल डाले। तब इनका पूजन करे—अनन्ताय नमः, विमलासनाय नमः, पद्मासनाय नमः। इसके बाद निम्न मन्त्र का उच्चारण करे—

ॐ पृश्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां लोके पवित्रं कुरु चासनम्।।

इसके बाद पृथ्वी पर बाँयीं एँड़ी से तीन आघात करके यह मन्त्र पढ़े—

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवज्ञया।।

इस प्रकार विघ्नोत्सारण करके 'हूं अघोराय फट्' से दशो दिशाओं को बाँधकर दिग्बन्ध करे। तब भूतशुद्धि करे।

अद्याहं भूतशुद्धिं करिष्ये इति सङ्कल्प्य वामे गुरुभ्यो नमः, दक्षिणे गणेशाय नमः, अग्रे शिवाय नमः, पृष्ठे क्षेत्रपालय नमः इति नमस्कृत्य, प्रणवेन प्राणायामत्रयं कृत्वा हूमिति मूलाधारात् कुण्डलिनीमुत्थाप्य सुषुम्नावर्त्मना हृदयस्थजीवमादाय ब्रह्मरन्ध्रगतां विभाव्य हंस इति ब्रह्मणि योजयेत्। ततः पादादिजानुपर्यन्तं पृथिवीं जान्वादिनाभ्यन्तं जलं, नाभ्यादिहृदयान्तं वह्निं, हृदयादिभ्रूमध्यान्तं वायुं, भ्रूमध्यादिद्वादशान्तमाकाशं प्रत्येकं प्रविलाप्य, आकाशमहङ्कारेऽहङ्कारं महत्तत्त्वे तदहंप्रकृतौ तां सच्चिदानन्दरूपे ब्रह्मणि विलाप्य, स्वात्मानं ब्रह्ममयं विभाव्य—

अहं देवो न चान्योऽस्मि ब्रह्मैवाहं न शोकभाक्।
सच्चिदानन्दरूपोऽहं नित्यमुक्तस्वभाववान्॥

भूतशुद्धि—'अद्याहं भूतशुद्धिं करिष्ये' से संकल्प करे। बाँयें गुरुभ्यो नमः, दाँयें गणेशाय नमः, पीछे क्षेत्रपालाय नमः से नमस्कार करे। ॐ से तीन प्राणायाम करे। 'हूं' का उच्चारण करके मूलाधार से कुण्डलिनी को उठाकर सुषुम्ना मार्ग से हृदयस्थ जीव से मिलावे। जीवसहित कुण्डलिनी के ब्रह्मरन्ध्र में प्रविष्ट होने की कल्पना करे। 'हंस' मन्त्र को बोलकर उसे ब्रह्म के साथ मिला दे। तब पाँव से जानुपर्यन्त पृथ्वीतत्त्व को जानु से नाभि तक जलतत्त्व में, नाभि से हृदय तक अग्नितत्त्व में, हृदय से भ्रूमध्य तक वायुतत्त्व में, भ्रूमध्य से सहस्रार तक आकाशतत्त्व में विलीन कर दे। आकाश को अहंकार में, अहंकार को महत्तत्व में, तब अहं को प्रकृति में और प्रकृति को सच्चिदानन्दरूप ब्रह्म में विलीन करके अहं ब्रह्मास्मि की भावना करे और निम्न श्लोक का पाठ करे—

अहं देवो न चान्योऽस्मि ब्रह्मैवाहं न शोकभाक्।
सच्चिदानन्दरूपोऽहं नित्यमुक्तस्वभाववान्।।

एवं विभाव्य स्वशरीरदक्षकुक्षौ पापपुरुषं ध्यायेत्—

ब्रह्महत्याशिरस्कं च स्वर्णस्तेयभुजद्वयम्।
सुरापानहृदा युक्तं गुरुतल्पकटिद्वयम्॥
तत्संसर्गिपदद्वन्द्वमङ्गप्रत्यङ्गपातकम्।
उपपातकलोमानं रक्तश्मश्रुविलोचनम्॥
खड्गचर्मधरं कृष्णं कुक्षौ पापं विचिन्तयेत्।

इति ध्यात्वा शरीरं सकलुषं मलिनं विचिन्त्य प्राणायामपूर्वकं पञ्चभूतमन्त्रैर्निष्पापं कुर्यात्। हृदादिभ्रूमध्यात् यंबीजेन षोडशधा जप्तेन

वायुमापूर्य पापं संशोष्य, नाभ्यादिहृत्पर्यन्तान्तर्गतमग्निमग्निबीजेन चतुष्षष्टिवारजप्तेन सन्दीप्य पापं निर्दह्य, जान्वादिनाभ्यन्तं जलं वमिति वरुणबीजेन द्वात्रिंशद्वारजप्तेनादाय पापमम्भसाप्लाव्य, लमिति भूबीजेन षोडशधा जप्तेन पादादिजानुपर्यन्तं पृथिवीं विचिन्त्य पिण्डीभूतं स्वात्मकं ध्यात्वा, हमित्याकाशबीजेन सकृज्जप्तेन चैतन्यं संभाव्य चिदानन्दमयं स्वशरीरमुत्पाद्य प्राणान् धारयेदिति भूतशुद्धिः।

इस प्रकार का चिन्तन करके अपने शरीर की दाहिनी कुक्षि में पापपुरुष का ध्यान करे; जैसे—

ब्रह्महत्याशिरस्कं च स्वर्णस्तेयभुजद्वयम्।
सुरापानहृदायुक्तं गुरुतल्पकटिद्वयम्।।
तत्संसर्गपदद्वन्द्वमङ्गप्रत्यङ्गपातकम् ।
उपपातकलोमानं रक्तश्मश्रुविलोचनम्।
खड्गचर्मधरं कृष्णं कुक्षौ पापं विचिन्तयेत्।।

इस प्रकार ध्यान करके अपने शरीर के कलुषयुक्त मलिन होने का चिन्तन करे। प्राणायाम करके पञ्चभूत मन्त्रों से इसे पापमुक्त करे। हृदय से भ्रूमध्य तक 'यं' बीज के १६ जप से श्वास खींचकर पाप का शोषण करे। नाभि से हृदय तक अग्निबीज 'रं' के ६४ जप से प्रज्ज्वलित अग्नि में उसका दहन करे। जानु से नाभि तक जल के बीजमन्त्र 'वं' के ३२ जप से उस भस्म को बहा दे। भूबीज 'लं' के १६ जप से पैर से जानु तक पृथ्वीतत्त्व का चिन्तन करके अपने शरीर के पिण्डीभूत होने की भावना करे। आकाशबीज 'हं' के जप से अपने को चैतन्य करके चिदानन्दमय अपने शरीर को उत्पन्न करके प्राणप्रतिष्ठा करे। यह भूतशुद्धि है।

ॐजुंसः शिवाय प्राणात्मने नमः इति स्वहृदि पुष्पं दत्त्वा आंह्रींक्रोंयंरंवंलंहंशंषंसंहं हंसः सोहं जुंसः ओं मम प्राणा इह प्राणाः, १९ँ मम जीव इह स्थितः, १९ँ मम सर्वेन्द्रियाणि, १९ँ मम वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा इति प्राणान् धृत्वा, मूलं स्वहृदि विलिख्य सशिवं शिवं संपूज्य, शिवोऽहमिति विचिन्त्य मन्त्रसङ्कल्पं कुर्यात्।

अस्य श्रीमहामृत्यञ्जयपूजामन्त्रस्य महाचमसकहोल ऋषिः, देवीगायत्री छन्दः, श्रीमृत्युञ्जयरुद्रो महादेवो देवता, ॐ बीजं, जुं शक्तिः, सः कीलकम्, धर्मार्थकाममोक्षार्थे पूजायां विनियोगः।

ॐ जुं सः शिवाय प्राणात्मने नमः मन्त्र से अपने शिर पर फूल रखकर यह मन्त्र पढ़े—आं ह्रीं क्रों यं रं वं लं हं शं षं सं हं हंसः सोहं जुं सः ॐ मम प्राणा इह प्राणाः।

आं ह्रीं क्रों यं रं वं लं हं शं षं सं हं हंसः सोहं जुं सः ॐ मम जीव इह स्थितः।

आं ह्रीं क्रों यं रं वं लं हं शं षं सं हं हंसः सोहं जुं सः ॐ मम सर्वेन्द्रियाणि।

आं ह्रीं क्रों यं रं वं लं हं शं षं सं हं हंसः सोहं जुं सः ॐ मम वाङ्मनः-चक्षुः-श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-प्राणा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

इस प्रकार प्राणप्रतिष्ठा करके अपने हृदय में मूल मन्त्र लिखकर शिवा-सहित शिव की पूजा करके 'मैं शिव हूँ' यह भावना करके मन्त्र-सङ्कल्प करे।

विनियोग—अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयपूजामन्त्रस्य महाचमसकहोल ऋषिः देवी गायत्री छन्दः, श्रीमृत्युञ्जयरुद्रमहादेव देवता, ॐ बीजं, जुं शक्तिः, सः कीलकम् धर्मार्थकाम-मोक्षार्थे पूजायां विनियोगः।

अथ न्यासः। महाचमसकहोलऋषये नमः शिरसि, देवीगायत्रीच्छन्दसे नमो मुखे, श्रीमृत्युञ्जयरुद्रमहादेवदेवतायै नमो हृदि, ॐ बीजाय नमो नाभौ, जं शक्तये नमो गुह्ये, सं: कीलकाय नमः पादयोः, जपे (पूजायां) विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु।

अथ करन्यासः। ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, जुं तर्जनीभ्यां मनः, सः मध्यमाभ्यां नमः, ॐ अनामिकाभ्यां नमः, जुं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः इति करन्यासः।

अथ षडङ्गन्यासः। ॐ हृदयाय नमः, जुं शिरसे स्वाहा, सः शिखायै वषट्, ॐ कवचाय हुं, जुं नेत्रेभ्यो वौषट्, सः अस्त्राय फट्।

अथ मातृकान्यासः। अं नमः शिरसि। आं नमो मुखवृत्ते। इं नमो दक्षनेत्रे। ईं वामनेत्रे। उं दक्षकर्णे। ऊं वामकर्णे। ऋं दक्षनासापुटे। ॠं वामनासापुटे। ऌं दक्षगण्डे। ॡं वामगण्डे। एं ऊर्ध्वोष्ठे। ऐं अधरोष्ठे। ओं ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ। औं अधोदन्तपंक्तौ। अं ललाटे। अः जिह्वायां। कं दक्षबाहुमूले। खं कूर्परे। गं मणिबन्धे। घं अङ्गुलिमूले। ङं अङ्गुल्यग्रे। चं वामबाहुमूले। छं कूर्परे। जं मणिबन्धे। झं अङ्गुलिमूले। ञं अङ्गुल्यग्रे। टं दक्षपादमूले। ठं जानुनि। डं गुल्फे। ढं अङ्गुलिमूले। णं अङ्गुल्यग्रे। तं वामपादमूले। थं जानुनि। दं गुल्फे। धं अङ्गुलिमूले। नं अङ्गुल्यग्रे। पं दक्षपार्श्वे। फं वामपार्श्वे। बं पृष्ठे। भं नाभौ। मं जठरे। यं हृदि। रं दक्षांसे। लं ककुदि। वं वामांसे। शं

हृदादिदक्षहस्ताग्रान्तं। षं हृदादिवामहस्ताग्रान्तं। सं हृदादिदक्षपादाग्रान्तं। हं हृदादिवामपादाग्रान्तं। ळं पादादिशिरःपर्यन्तं। क्षं नमः शिरसः पाद-पर्यन्तम्। इति त्रिर्व्यापयेदिति मातृकान्यासः।

ऋष्यादि न्यास—महाचमसकहोल ऋषये नमः शिरसि, देवी गायत्री छन्दसे नमः मुखे, श्रीमृत्युञ्जयरुद्रमहादेवदेवतायै नमः हृदि, ॐ बीजायै नमः नाभौ, जुं शक्तये नमः गुह्ये, सः कीलकाय नमः पादयोः जपे-पूजायां विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु।

करन्यास—ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, जुं तर्जनीभ्यां नमः, सः मध्यमाभ्यां नमः, ॐ अनामिकाभ्यां नमः, जुं कनिष्ठाभ्यां नमः, सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग न्यास—ॐ हृदयाय नमः। जुं शिरसे स्वाहा। सः शिखायै वषट्। ॐ कवचाय हुं। जुं नेत्राभ्यां वौषट्। सः अस्त्राय फट्।

मातृका न्यास—अं नमः शिरसि। आं नमः मुखवृत्ते। इं नमः दक्षनेत्रे। ईं नमः वामनेत्रे। उं नमः दक्षकर्णे। ऊं नमः वामकर्णे। ऋं नमः दक्षनासापुटे। ॠं नमः वाम-नासापुटे। ऌं नमः दक्षगण्डे। ॡं नमः वामगण्डे। एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे। ऐं नमः अधरोष्ठे। ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ। औं नमः अधोदन्तपंक्तौ। अं नमः ललाटे। अः नमः जिह्वायां। कं नमः दक्षबाहुमूले। खं नमः कूर्परे। गं नमः मणिबन्धे। घं नमः अंगुलिमूले। ङं नमः अंगुल्यग्रे। चं नमः वामबाहुमूले। छं नमः कूर्परे। जं नमः मणिबन्धे। झं नमः अंगुलिमूले। ञं नमः अंगुल्यग्रे। टं नमः दक्षपादमूले। ठं नमः जानुनि। डं नमः गुल्फे। ढं नमः अंगुलिमूले। णं नमः अंगुल्यग्रे। तं नमः वामपादमूले। थं नमः जानुनि। दं नमः गुल्फे। धं नमः अंगुलिमूले। नं नमः अंगुल्यग्रे। पं नमः दक्षपार्श्वे। फं नमः वामपार्श्वे। बं नमः पृष्ठे। भं नमः नाभौ। मं नमः जठरे। यं नमः हृदि। रं नमः दक्षांसे। लं नमः ककुदि। वं नमः वामांसे। शं नमः हृदादिदक्षहस्तान्तं। षं नमः हृदादि वामहस्तान्तम्। सं नमः हृदादिदक्षपादान्तम्। हं नमः हृदादिवामपादान्तम्। लं नमः पादादि शिरःपर्यन्तम्। क्षं नमः शिरसः पादपर्यन्तम्। तीन व्यापक न्यास करे।

ॐह्सौः अं श्रीकण्ठपूर्णोदरीभ्यां नमः शिरसि। ॐह्सौः आं अनन्ते-शविरजाभ्यां नमो मुखवृत्ते। ॐह्सौः इं सूक्ष्मेशशाल्मलीभ्यां नमो दक्षनेत्रे। ॐह्सौः ईं त्रिमूर्तीशलोलाक्षीभ्यां नमो वामनेत्रे। ॐह्सौः उं अमरेशवर्तुलाक्षीभ्यां नमो दक्षकर्णे। ॐह्सौः ऊं अर्घेशदीर्घघोणाभ्यां नमो वामकर्णे। ॐह्सौः ऋं भावभूतीशदीर्घमुखीभ्यां नमो दक्षनासा-पुटे। ॐह्सौः ॠं तिथीशगोमुखीभ्यां नमो वामनासापुटे। ॐह्सौः ऌं

स्थाणुकेशदीर्घजिह्वाभ्यां नमो दक्षगण्डे। ॐह्सौः लॄं हरेशकुण्डोदरीभ्यां नमो वामगण्डे। ॐह्सौः एं झिण्टीशोर्ध्वकेशीभ्यां नमः ऊर्ध्वोष्ठे। ॐह्सौः ऐं भौतिकेशविकृतमुखीभ्यां नमः अधरोष्ठे। ॐह्सौः ओं सद्योजातेशज्वालामुखीभ्यां नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ। ॐह्सौः औं अनुग्रहेशोल्कामुखीभ्यां नमः अधोदन्तपंक्तौ। ॐ ह्सौः अं अक्रूरेशश्रीमुखीभ्यां नमो ललाटे। ॐह्सौः अः महासेनेशविद्यामुखीभ्यां नमो जिह्वायां। ॐह्सौः कं क्रोधीशमहाकालीभ्यां नमो दक्षबाहुमूले। ॐह्सौः खं चण्डीशसरस्वतीभ्यां नमः कूर्परे। ॐह्सौः गं पञ्चाननेशसर्वसिद्धिभ्यां नमो मणिबन्धे। ॐह्सौः घं शिवोत्तमेशत्रिलोकविद्याभ्यां नमः अङ्गुलिमूले। ॐह्सौः ङं एकरुद्रेशमन्त्रशक्तिभ्यां नमः अङ्गुल्यग्रे। ॐह्सौः चं कूर्मेशात्मशक्तिभ्यां नमो वामबाहुमूले। ॐह्सौः छं एकनेत्रेशभूतमातृभ्यां नमः कूर्परे। ॐह्सौः जं चतुराननेशलम्बोदरीभ्यां नमो मणिबन्धे। ॐह्सौः झं अजेशद्राविणीभ्यां नमः अङ्गुलिमूले। २ँ ञं शर्वेशनागरीभ्यां नमः अङ्गुल्यग्रे। २ँ टं सोमेशखेचरीभ्यां नमो दक्षपादमूले। २ँ ठं लाङ्गलीशमञ्जरीभ्यां नमो जानुनि। २ँ डं दाहकेशरूपिणीभ्यां नमो गुल्फे। २ँ ढं अर्धनारीशवीरिणीभ्यां नमः अङ्गुलिमूले। २ँ णं उमाकान्तेशकाकोदरीभ्यां नमः अङ्गुल्यग्रे। २ँ तं आषाढीशपूतनाभ्यां नमो वामपादमूले। २ँ थं दण्डीशभद्रकालीभ्यां नमो जानुनि। २ँ दं अद्रीशयोगिनीभ्यां नमो गुल्फे। २ँ धं मीनेशशङ्खिनीभ्यां नमः अङ्गुलिमूले। २ँ नं मेषेशगर्जिनीभ्यां नमः अङ्गुल्यग्रे। २ँ पं लोहितेशकालरात्रिभ्यां नमो दक्षपार्श्वे। २ँ फं शिखीशकुर्दिनीभ्यां नमो वामपार्श्वे। २ँ बं छगलण्डेशकपर्दिनीभ्यां नमः पृष्ठे। (२ँ भं द्विरण्डेशवज्रिणीभ्यां नमो नाभौ। २ँ मं महाकालेशजयाभ्यां नमो जठरे। २ँ यं त्वगात्मभ्यां कपालीशसुमुखीभ्यां नमो हृदये)। २ँ रं असृगात्मभ्यां भुजङ्गेशरेवतीभ्यां नमो दक्षांसे। २ँ लं मांसात्मभ्यां पिनाकीशमाधवीभ्यां नमः ककुदि। २ँ वं मेदआत्मभ्यां खड्गीशवारुणीभ्यां नमो वामांसे। २ँ शं अस्थ्यात्मभ्यां बकेशवायवीभ्यां नमो हृदादिदक्षहस्ताग्रान्तं। २ँ षं मज्जात्मभ्यां श्वेतेशरक्षोबन्धिनीभ्यां नमो हृदादिवामहस्ताग्रान्तं। २ँ सं शुक्रात्मभ्यां भृग्वीशसहजाभ्यां नमो हृदादिदक्षपादाग्रान्तं। २ँ हं प्राणात्मभ्यां नकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमो हृदादिवामपादाग्रान्तं। २ँ ळं शक्त्यात्मभ्यां शिवे-

शव्यापिनीभ्यां नमः पादादिशिरःपर्यन्तम्। रँ क्षः क्रोधात्मभ्यां संवर्तेशमहामायाभ्यां नमः शिरसः पादपर्यन्तमिति श्रीकण्ठादिमातृकान्यासः।

श्रीकण्ठादि मातृका न्यास—ॐ ह्सौः अं श्रीकण्ठपूर्णोदरीभ्यां नमः शिरसि। ॐ ह्सौः आं अनन्तेशविरजाभ्यां नमः मुखवृत्ते। ॐ ह्सौः इं सूक्ष्मेशशाल्मलीभ्यां नमः दक्षनेत्रे। ॐ ह्सौः ईं त्रिमूर्तिलोलाक्षीभ्यां नमः वामनेत्रे। ॐ ह्सौः उं अमरेशवर्तुलाक्षीभ्यां नमो दक्षकर्णे। ॐ ह्सौः ऊं अर्घेशदीर्घघोणाभ्यां नमो वामकर्णे। ॐ ह्सौः ऋं भावभूतीशदीर्घमुखीभ्यां नमो दक्षनासापुटे। ॐ ह्सौः ॠं तिथीशगोमुखीभ्यां नमो वामनासापुटे। ॐ ह्सौः ऌं स्थाणुकेशदीर्घजिह्वाभ्यां नमः दक्षगण्डे। ॐ ह्सौः ॡं हरेशकुण्डोदरीभ्यां नमो वामगण्डे। ॐ ह्सौः एं झिण्टीशऊर्ध्वकेशीभ्यां नमः ऊर्ध्वोष्ठे। ॐ ह्सौः ऐं भौतिकेश-विकृत-मुखीभ्यां नमः अधरोष्ठे। ॐ ह्सौः ओं सद्योजातेश-ज्वालामुखीभ्यां नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ। ॐ ह्सौः औं अनुग्रहेश-उल्कामुखीभ्यां नमः अधोदन्तपंक्तौ। ॐ ह्सौः अं अक्रूरेश-श्रीमुखीभ्यां नमः ललाटे। ॐ ह्सौः अः महासेनेश-विद्यामुखीभ्यां नमः मुखान्तरे। ॐ ह्सौः कं क्रोधीश-महाकालीभ्यां नमः दक्षबाहुमूले। ॐ ह्सौः खं खण्डीश-सरस्वतीभ्यां नमः कूर्परे। ॐ ह्सौः गं पञ्चान्तकेश-सर्वसिद्धीभ्यां नमः मणिबन्धे। ॐ ह्सौः घं शिवोत्तमेश-त्रिलोकविद्याभ्यां नमः अंगुलिमूले। ॐ ह्सौः ङं एकरुद्रेश-मन्त्रशक्तिभ्यां नमः अंगुल्यग्रे। ॐ ह्सौः चं कूर्मेश-आत्मशक्तिभ्यां नमः वामबाहुमूले। ॐ ह्सौः छं एकनेत्रेश-भूतमातृकाभ्यां नमः कूर्परे। ॐ ह्सौः जं चतुराननेश-लम्बोदरीभ्यां नमः मणिबन्धे। ॐ ह्सौः झं अजेश-द्राविणीभ्यां नमः अंगुलिमूले। ॐ ह्सौः ञं शर्वेश-नागरीभ्यां नमः अंगुल्यग्रे। ॐ ह्सौः टं सोमेश-खेचरीभ्यां नमः दक्षपादमूले। ॐ ह्सौः ठं लाङ्गलीश-मञ्जरीभ्यां नमः जानुनि। ॐ ह्सौः डं दोहकेश-रूपिणीभ्यां नमः गुल्फे। ॐ ह्सौः ढं अर्धनारीकेश-वीरिणीभ्यां नमः अंगुलिमूले। ॐ ह्सौः णं उमाकान्तेश-काकोदरीभ्यां नमः अंगुल्यग्रे। ॐ ह्सौः तं आषाढीश-पूतनाभ्यां नमः वामपादमूले। ॐ ह्सौः थं दण्डीश-भद्रकालीभ्यां नमः जानुनि। ॐ ह्सौः दं अद्रीश-योगिनीभ्यां नमः गुल्फे। ॐ ह्सौः धं मीनेश-शङ्खिनीभ्यां नमः अंगुलिमूले। ॐ ह्सौः नं मेषेश-गर्जिनीभ्यां नमः अंगुल्यग्रे। ॐ ह्सौः पं लोहितेश-कालरात्रिभ्यां नमः दक्षपार्श्वे। ॐ ह्सौः फं शिखीश-कुर्दिनीभ्यां नमः वामपार्श्वे। ॐ ह्सौः बं छगलण्डेश-कपर्दिनीभ्यां नमः पृष्ठे। ॐ ह्सौः भं द्विरण्डेश-वज्रिणीभ्यां नमः नाभौ। ॐ ह्सौः मं महाकालेश-जयाभ्यां नमः जठरे। ॐ ह्सौः यं त्वगात्मभ्यां कपालीशसुखीभ्यां नमः हृदये। ॐ ह्सौः रं असृगात्मभ्यां भुजङ्गेशरेवतीभ्यां नमः दक्षांसे। ॐ ह्सौः लं मांसात्मभ्यां पिनाकीशमाधवीभ्यां नमः ककुदि। ॐ ह्सौः

वं मेदात्मभ्यां खड्गीशवारुणीभ्यां नमः वामांसे। ॐ ह्सौ: शं अस्थ्यात्मभ्यां वकेशवायवीभ्यां नमः हृदादिदक्षहस्ताग्रान्तम्। ॐ ह्सौ: षं मज्जात्मभ्यां श्वेतेशर-क्षोबन्धिनीभ्यां नमः हृदादिवामहस्ताग्रान्तम्। ॐ ह्सौ: सं शुक्रात्मभ्यां भृग्वीशसहजाभ्यां नमः हृदादिदक्षपादाग्रान्तम्। ॐ ह्सौ: हं प्राणात्मभ्यां नकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः हृदादिवामपादाग्रान्तम्। ॐ ह्सौ: लं शक्त्यात्मभ्यां शिवेशव्यापिनीभ्यां नमः पादादिशिर: पर्यन्तम्। ॐ ह्सौ: क्षं क्रोधात्मभ्यां संवर्तेशमहामायाभ्यां नमः शिरसः पादपर्यन्तम्।

अथ कलान्यासः। ॐह्रींह्सौः सर्वज्ञाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ४ँ अमृत-ज्वालामालिने तर्जनीभ्यां नमः। ४ँ ज्वलितशिखिशिखाय मध्यमाभ्यां नमः। ४ँ वज्रिणे वज्रहस्ताय अनामिकाभ्यां नमः। ४ँ अलुप्तशक्तये कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ४ँ पशुपतये करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। इति करन्यासः।

ॐऐंह्रींह्सौः सर्वज्ञाय हृदयाय नमः। ४ँ अमृतज्वालामालिने शिरसे स्वाहा। ४ँ ज्वलितशिखिशिखाय शिखायै वषट्। ४ँ वज्रिणे वज्रह-स्ताय कवचाय हुं। ४ँ अलुप्तशक्तये नेत्राभ्यां वौषट्। ४ँ पशुपतये अस्त्राय फट्। इति हृदयादिन्यासः।

ॐजुंसः निवृत्त्यात्मने शिवाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ३ँ प्रतिष्ठात्मने सदाशिवाय तर्जनीभ्यां नमः। ३ँ विद्याकलात्मने ईश्वराय मध्यमाभ्यां नमः। ३ँ शान्तिकलात्मने महारुद्राय अनामिकाभ्यां नमः। ३ँ शान्त्य-तीताकलात्मने विष्णवे कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ३ँ ज्योतिष्कलात्मने पर-ब्रह्मणे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। इति करन्यासः।

ॐजुंसः निवृत्त्यात्मने शिवाय हृदयाय नमः। ३ँ प्रतिष्ठात्मने सदा-शिवाय शिरसे स्वाहा। ३ँ विद्याकलात्मने ईश्वराय शिखायै वषट्। ३ँ शान्तिकलात्मने महारुद्राय कवचाय हुं। ३ँ शान्त्यतीताकलात्मने विष्णवे नेत्राभ्यां वौषट्। ३ँ ज्योतिष्कलात्मने परब्रह्मणे अस्त्राय फट्। इति कलान्यासः।

कला न्यास—ॐ ऐं ह्रीं ह्सौ: सर्वज्ञाय अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं ह्सौ: अमृतज्वालामालिने तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं ह्सौ: ज्वलितशिखिशिखाय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं ह्सौ: वज्रिणे वज्रहस्ताय अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं ह्सौ: अलुप्तशक्तये कनिष्ठाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं ह्सौ: पशुपतये करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास—ॐ ऐं ह्रीं ह्सौः सर्वज्ञाय हृदयाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं ह्सौः अमृत-ज्वालामालिने शिरसे स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं ह्सौः ज्वलितशिखिशिखायै वषट्। ॐ ऐं ह्रीं ह्सौः वज्रिणे वज्रहस्ताय कवचाय हुं। ॐ ऐं ह्रीं ह्सौः अलुप्तशक्तये नेत्राभ्यां वौषट्। ॐ ऐं ह्रीं ह्सौः पशुपतये अस्त्राय फट्।

करन्यास—ॐ जुं सः निवृत्त्यात्मने शिवाय अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ जुं सः प्रतिष्ठात्मने सदाशिवाय तर्जनीभ्यां नमः। ॐ जुं सः विद्याकलात्मने ईश्वराय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ जुं सः शान्तिकलात्मने महारुद्राय अनामिकाभ्यां नमः। ॐ जुं सः शान्त्यतीताकलात्मने विष्णवे कनिष्ठाभ्यां नमः। ॐ जुं सः ज्योतिष्कलात्मने परब्रह्मणे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास—ॐ जुं सः निवृत्त्यात्मने शिवाय हृदयाय नमः। ॐ जुं सः प्रतिष्ठात्मने सदाशिवाय शिरसे स्वाहा। ॐ जुं सः विद्याकलात्मने ईश्वराय शिखायै वषट्। ॐ जुं सः शान्तिकलात्मने महारुद्राय कवचाय हुं। ॐ जुं सः शान्त्यतीता कलात्मने विष्णवे नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ जुं सः ज्योतिकलात्मने परब्रह्मणे अस्त्राय फट्।

ॐजुंसः नेत्रनाथाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। हंसः भववन्नेत्राय तर्जनीभ्यां नमः। मां पालयपालय सोमसूर्याग्निनेत्राय मध्यमाभ्यां नमः। सोहंसः नेत्रनाथाय अनामिकाभ्यां नमः। जुंॐ भगवन्नेत्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐजुंसः हंसः मां पालयपालय सोहंसः जुॐ सोमसूर्याग्निनेत्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं षडङ्गन्यासः। इति नेत्रन्यासः।

ॐ नमः शिरसि। जुं भ्रूमध्ये। सः मुखे। हं कण्ठे। सः हृदि। मां हस्तयोः। पां स्तनयोः। लं कुक्षौ। यं पार्श्वयोः। पां पृष्ठे। लं नाभौ। यं मेढ्रे। सों जान्वोः। हं जङ्घयोः। सः पादयोः। जुं पादादिशिरःपर्यन्तं। ॐ शिरसः पादपर्यन्तमिति त्रिर्व्यापयेदिति मूलमन्त्रन्यासः।

ईशानतत्पुरुषयोरघोरकलितात्मनोः ।
सद्योजातेशवामेशयुतयोर्न्यासमाचरेत् ॥

इति शिवशासनम्।

नेत्रन्यास-करन्यास—ॐ जुं सः नेत्रनाथाय अंगुष्ठाभ्यां नमः। हंसः भगवन्नेत्राय तर्जनीभ्यां नमः। मां पालय पालय सोमसूर्याग्निनेत्राय मध्यमाभ्यां नमः। सो हं सः नेत्रनाथाय अनामिकाभ्यां नमः। जुं ॐ भगवन्नेत्राय नमः कनिष्ठाभ्यां नमः। ॐ जुं सः हंसः मां पालय पालय सोहं सः जुं ॐ सोमसूर्याग्निनेत्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

नेत्रन्यास-षडङ्ग न्यास—ॐ जुं स: नेत्रनाथाय हृदयाय नम:। हंस: भगवन्नेत्राय शिरसे स्वाहा। मां पालय पालय सोमसूर्याग्निनेत्राय शिखायै वषट्। सो हंस: नेत्रनाथाय कवचाय हुं। जुं ॐ भगवन्नेत्राय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ जुं स: हंस: मां पालय पालय सोहं स: जुं ॐ सोमसूर्याग्निनेत्राय अस्त्राय फट्।

मूलमन्त्र-न्यास—ॐ नम: शिरसि। जुं नम: भ्रूमध्ये। स: नम: मुखे। हं नम: कण्ठे। स: नम: हृदि:। मां नम: हस्तयो:। पां नम: स्तनयो:। लं नम: कुक्षौ। यं नम: पार्श्वयो:। पां नम: पृष्ठे। लं नम: नाभौ। यं नम: मेढ्रे। सों नम: जान्वो। हं नम: जङ्घयो:। स: नम: पादयो:। जुं पादादि- शिर:पर्यन्तम्। ॐ शिरस: पादपर्यन्तम्। तीन व्यापक न्यास करे।

ईशानतत्पुरुषयोरघोरकलितात्मने ।
सद्योजातेशवामेशयुतयोर्न्यासमाचरेत् ।।

यह शिवशासन है।

ॐ मूलाधारे। जुं भ्रूमध्ये। स: करन्ध्रे। इमं न्यासं यथाशक्त्या विधाय दिव्यदेहं ध्यात्वा, हृदये ॐजुंस: अमृतेश्वरपीठाय नम:। हृदि गन्धाक्षतपुष्पै: संपूज्य 'ॐजुंस: हंस: श्रीकालाग्निरुद्रमूलप्रकृतिकूर्मानन्तवराहपृथिवीसुधार्णवरत्नद्वीपरत्नमण्डपरत्नसिंहासनस्थाग्निमण्डलार्कमण्डलामृतमरीचिमण्डलान्तर्गतसहस्रदलकमलकर्णिकाकेसरकणामृतधारामयाय योगपीठाय नम:' इति स्वहृदये संपूज्य, अमृतीकरणमुद्रां बद्ध्वा पद्ममुद्रान्तर्गतं पुष्पं सन्निधाय, मूलाधारात् कुण्डलिनीं तडित्कोटिप्रद्योतनीं सूर्यकोटिप्रकाशां वह्निकोटिदुराधर्षां चन्द्रकोटिसुशीतलां प्रदीपकलिकाकारामुत्थाप्य सुषुम्नामार्गेण ब्रह्मपथान्तरस्थामृतेश्वरेण सह संयोज्य, सोममण्डलप्रच्युतामृतधारया संतर्प्य, पुन: स्वहृदि समानीय स्वस्थानं प्रापयित्वामृतशरीरीभूय शिवोऽहमिति भावयन् देवं भावयेत्।

पीयूषांशुशिरोमणि: करतले पीयूषकुम्भं वहन्
पीयूषद्युतिसम्पुटान्तरगत: पीयूषधाराधर: ।
मां पीयूषमयूखसुन्दरवपु: पीयूषलक्ष्मीसख:
पीयूषद्रववर्षणोऽप्यहरह: प्रीणातु मृत्युञ्जय: ॥

एवं देवं ध्यात्वा मानसैरुपचारै: कलशस्थापनं कुर्यात्।

ॐ मूलाधारे। जुं भ्रूमध्ये। सः करन्ध्रे। इस न्यास को यथाशक्ति करके अपने देह के दिव्य होने का चिन्तन करे। हृदय में ॐ जुंसः अमृतेश्वरपीठाय नमः से ध्यान करके गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे। तब योगपीठ की पूजा करे। जैसे—ॐ जुं सः हंसः श्री कालाग्नि रुद्र मूल प्रकृति कूर्म, अनन्त, वराह, पृथ्वी, सुधार्णव, रत्नद्वीप, रत्नमण्डप, रत्नसिंहासनस्थ, अग्निमण्डल, अर्कमण्डल, अमृतमरीचिमण्डल अन्तर्गत सहस्रदल कमल कर्णिका केसर कणामृत धारामयाय योगपीठाय नमः। अपने हृदय में यह पूजा करके अमृतीकरण मुद्रा बाँधकर पद्ममुद्रा से फूल लेकर करोड़ विद्युत् प्रभावती, करोड़ सूर्य-सी प्रकाशमान, करोड़ अग्नि-सी दुराधर्ष, करोड़ चन्द्र-सी शीतल, प्रदीप कलिकाकृति कुण्डलिनी को मूलाधार से उठाकर सुषुम्ना मार्ग से ब्रह्मपथान्तरस्थ अमृतेश्वर के साथ संयुक्त करे। सोममण्डल से चूते हुए अमृतधारा से तर्पण करे। फिर अपने हृदय में लाकर अपने स्थान में स्थापित करे। अपने शरीर को अमृतमय करके भावना करे कि मैं ही देव शिव हूँ—'शिवोऽहम्'। इस प्रकार का ध्यान करे। ध्यान मन्त्र है—

पीयूषांशुशिरोमणिः करतले पीयूषकुम्भं वहन्
पीयूषद्युतिसम्पुटान्तरगतः पीयूषधाराधरः।
मां पीयूषमयूखसुन्दरवपुः पीयूषलक्ष्मीसखः
पीयूषद्रववर्षणोऽप्यहरहः प्रीणातु मृत्युञ्जयः।।

मृत्युञ्जय देव के शिरोमणि से सुधा-किरणें छिटक रही हैं। हाथ पर अमृतकलश धारण किए हुए हैं। पीयूष द्युति सम्पुट के अन्तर्गत अमृत की धारा धारण किए हुए हैं। अमृत मयूख सुन्दर शरीर अमृत लक्ष्मी के सखा अमृतरस की वर्षा से मुझे मृत्युञ्जय देव अमर करें। इस प्रकार देवता का ध्यान करके मानसोपचारों से पूजन करे। तब कलशस्थापन करे।

स्ववामे त्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुरश्रं विलिख्य शङ्खमुद्रां प्रदर्श्य मूलेन संपूज्य 'रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः' इति संपूज्याधारं संस्थाप्य, तत्र पात्रमाधारे निधाय 'अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' इति पात्रान्तः संपूज्य, तत्र जलेन संपूर्य 'सौः सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः' इति संपूज्य तत्राङ्कुशमुद्रया

ॐगांगीं गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु॥

इत्यादिना तीर्थमावाह्य मूलेनाष्टाभिमन्त्रितं कृत्वा धेनुयोनिकलशमुद्राः प्रदर्श्य फडिति छोटिकाभिः संरक्ष्य, हूमित्यवगुण्ठ्य शङ्खचक्रयोनिमुद्राः

प्रदर्श्य प्रणमेत्।

दर्शनेनापि शङ्खस्य किं पुनः स्पर्शनेन च।
विलयं यान्ति पापानि हिमवद्भास्करोदये॥

इति सामान्यार्घ्यविधिः।

कलश-स्थापन—अपने वाम भाग में त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, चतुरस्र बनाकर शङ्खमुद्रा दिखाये। मूल मन्त्र से पूजन करे। तब 'रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः' से पूजा करे। उस पर प्रक्षालित आधार स्थापित करे। आधार पर कलशस्थापन करे। 'अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' से पात्र के अन्दर पूजन करे। तब उसे जल से परिपूर्ण करे। 'सौः सोममण्डलाय षोड़शकलात्मने नमः' से कलशजल की पूजा करे। अंकुश मुद्रा से सूर्यमण्डल से तीर्थों का आवाहन करे; जैसे—

ॐ गां गीं गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

आवाहन के बाद मूल मन्त्र के आठ जप से अभिमन्त्रित करे। धेनु-योनि और कलश मुद्रा दिखावे। 'फट्' कहकर छोटिका से उसका संरक्षण करे। 'हुं' से अवगुंठन करे। शङ्ख-चक्र-योनि मुद्रा दिखाकर प्रणाम करे। प्रणाममन्त्र है—

दर्शनेनापि शङ्खस्य कि पुनः स्पर्शनेन च।
विलयं यान्ति पापानि हिमवद्भास्करोदये।।

सामान्यार्घ्यस्य दक्षे बिन्दुत्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुरश्रं मण्डलं निर्माय 'कामरूपोड्डीयानजालन्धरपूर्णगिरिपीठेभ्यो नमः' इति चतुरश्रेषु सम्पूज्य, षडश्रेषु षडङ्गमन्त्रान् संपूज्य, त्रिकोणे बीजत्रयं संपूज्य, बिन्दौ मूलेन संपूज्य, 'ॐरं अग्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः' इति प्रक्षालितमाधारं संस्थाप्य, 'अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' इति कलशं कुम्भमुद्रया संस्थाप्य तत्र 'ॐज्वांज्वीं ज्यूंज्वैंज्वौंज्वः सः अमृतेश्वरभैरवाय मृत्युञ्जयाय नमः' इति मूलेन वा मूलविद्यया तत्त्वमुद्रया धारापातेन परमानन्दद्रव्यादिना कुम्भमापूर्य 'ॐसौः सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः' इति गन्धाक्षतपुष्पैरभ्यर्च्य, हंसः इति मन्त्रेण दश दिशो बद्ध्वा छोटिकाभिः संरक्ष्य हूमित्यवगुण्ठ्य, नमः इत्य-भ्युक्ष्य, मूलं दशधा जप्त्वामृतमुद्रां प्रदर्श्य 'ॐअंआंईॐजुंसः अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय २ ॐजुंसः अमृतेश्वर्यै नमः' इति दशधा जप्त्वा

ॐजुंसः सूर्यमण्डलसंभूते वरुणालयसंभवे।
अमाबीजमयि देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम्॥
ॐजुंसः देवानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि।
तेन सत्येन देवेशि ब्रह्महत्यां व्यपोहतु॥
ॐजुंसः एकमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम्।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम्॥
ॐजुंसः ब्रह्मशापाद्विनिर्मुक्ता त्वं मुक्ता विष्णुशापतः।
विमुक्ता रुद्रशापेन पवित्रा भव सांप्रतम्॥
ॐजुंसः पवमानः परानन्दः पवमानः परो रसः।
पवमानं परं ज्ञानं तेन त्वां पावयाम्यहम्॥

इति त्रिर्जप्त्वा, ॐ हसक्षमलवरयूँ आनन्देश्वरभैरवाय वौषट् इति दशधा जप्त्वा, सहक्षमलवरयूँ सुरादेव्यै वौषट् इति दशधा जप्त्वा, मूलं त्रिर्जप्त्वा, 'ॐ गङ्गे च यमुने चैव' इत्यादिना अङ्कुशमुद्रया तीर्थान्यावाह्य, कुण्डलिनीं ज्योतीरूपामुत्थाप्य षट्चक्रं भित्त्वा, ब्रह्मरन्ध्रस्थपरमशिवभट्टारकेण नियोज्य 'हंसः सोहं स्वाहा' इति विचिन्त्य, तयोः सामरस्योद्भवानन्दामृतवहमाननासापुटनिःसृतामृतधारया कलशमापूर्यामृतमयं ध्यात्वा गन्धाक्षतपुष्पैरभ्यर्च्य, धेनुयोनिमत्स्यमुद्राः प्रदर्श्य प्रणमेदिति द्रव्यशुद्धिः।

सामान्यार्घ्य के दाहिने भाग में बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, चतुरस्र बनाकर चतुरस्र का पूजन इस मन्त्र से करे—कामरूप उड्डीयान जालन्धर पूर्णगिरिपीठेभ्यो नमः। षट्कोण में षडङ्ग मन्त्र से पूजन करे। त्रिकोण बीजत्रय ॐ जुं सः का पूजन करे। बिन्दु में मूल मन्त्र से पूजन करे। पूरे मण्डल का पूजन ॐ रं अग्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः से करे। उस पर आधार स्थापित करे। आधार पर कुम्भमुद्रा से कलश स्थापित करे। कलश का पूजन अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः से करे। तब ॐ ज्वां ज्वीं ज्वूं ज्वैं ज्वौं ज्वः सः अमृतेश्वरभैरवाय मृत्युञ्जयाय नमः से या मूल मन्त्र से तत्त्वमुद्रा से परमानन्द द्रव्य आदि की धारा से कुम्भ को पूर्ण करे। ॐ सौः सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः से गन्धाक्षत पुष्प से पूजा करे। 'हंसः' से सभी दिशाओं का दिग्बन्ध करे। छोटिका से संरक्षण करे। हुं से अवगुण्ठन करे। नमः से अभ्युक्षण करे। मूल मन्त्र का दश जप करके अमृत मुद्रा दिखावे। तब मन्त्रपाठ करे; जैसे—ॐ अं आं ईं ऊं जुं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय ॐ जुं सः अमृतेश्वर्यै नमः। इसका जप दश बार करे। तब शापविमोचन करे।

शापविमोचन—शापविमोचन के लिये निम्नलिखित मन्त्रों का पाठ करे; जैसे—

ॐ जुंस: सूर्यमण्डलसम्भूते वरुणालयसम्भवे।
अमाबीजमयी देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम्।।
ॐ जुंस: देवानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि।
तेन सत्येन देवेशि ब्रह्महत्यां व्यपोहतु।।
ॐ जुंस: एकमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम्।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम्।।
ॐ जुं स: ब्रह्मशापविनिर्मुक्ता त्वं मुक्ता विष्णुशापत:।
विमुक्ता रुद्रशापेन पवित्रा भव साम्प्रतम्।
ॐ जुंस: पवमान: परानन्द: पवमान: परो रस:।
पवमानं परं ज्ञानं तेन त्वां पावयाम्यहम्।।

इसका जप तीन बार करके ॐ हसक्षमलवरयूं आनन्देश्वरभैरवाय वौषट् का जप दश बार करे। तब सहक्षमलवरयीं सुरादेव्यै वौषट् का जप दश बार करे। मूल मन्त्र का जप तीन बार करे। 'ॐ गङ्गे च यमुने चैव' से अङ्कुश मुद्रा द्वारा तीर्थों का आवाहन करे। ज्योतिरूपा कुण्डलिनी को उठाकर षट्चक्रों का भेदन कराते हुए ब्रह्मरन्ध्रस्थ परशिव-भट्टारक के साथ उसका नियोजन करे। हंस: सोहं स्वाहा का चिन्तन करे। उनके सामरस्य होने की भावना करे। सामरस्य से उत्पन्न आनन्दामृत को चखते हुए श्वास नली से धाररूप में बाहर लाकर कलश को पूर्ण करके उसे अमृतमय समझे। गन्धाक्षत-पुष्प से अर्चन करे। प्रणाम करे। इस प्रकार यह द्रव्यशोधन हुआ।

तत: 'ॐ जुंस: हंस: परमामृतेशश्रीअमृतेश्वरीश्वरमहामृत्यञ्जयपूजा-द्रव्येभ्यो वौषट्' इति कलशादमृतमादाय, ॐ जुंस: हंस: सोहंस: जुॐ' इति दशाक्षरमूलेन 'श्रीअमृतेश्वरीश्वरमहामृत्युञ्जयचन्द्रामृतमयेन कलशामृतेन यागद्रव्याणि पवित्रीकुरु २ सुधादिना पूरय २ ॐ हौं स्वाहा' इति यागवस्तूनि संशोध्य, सामान्यार्घ्यस्याधस्त्रिकोणं सहरं विभाव्य, मूलबीजत्रयेण त्रिकोणं संपूज्य मूलविद्यया बिन्दुमभ्यर्च्य, तत्राग्निसूर्यसोममण्डलानि संपूज्य, दिव्यं पात्रं संस्थाप्य कलशामृते-नापूर्य मूलविद्यया संपूज्य, पृथिव्यादिषट्त्रिंशत्तत्त्वानि संपूज्य, महामुद्रां प्रदर्श्य अग्निपद्मामृतमुद्रा: प्रदर्श्य मातृकां देवीं संपूज्य, मूलव-र्णांस्तत्रान्त: संपूज्य, गङ्गादितीर्थान्यावाह्य, ईशानकला: संपूज्य तत्पु-रुषाघोरसद्योजातवामदेवकला: संपूज्य, शिवमयं ध्यात्वा परमा-

मृतबुद्ध्या विन्दुपानाच्चिद्दीपं प्रोज्ज्वाल्य शिवमयं जगद्भावयेदिति पर-माघ्यर्पात्रम्।

'ॐ जुं स: हंस: परमामृतेशश्री अमृतेश्वरीश्वरमहामृत्युञ्जयपूजाद्रव्येभ्यो वौषट्' से कलश से अमृत निकाले। 'ॐ जुं स: हंस: सोहं स: जुं ॐ' इस दशाक्षर मन्त्र के साथ मूल मन्त्र जोड़कर 'श्री अमृतेश्वरीश्वर महामृत्युञ्जय चन्द्रामृतमयेन कलाशामृतेन याग-द्रव्याणि पवित्रीकुरु कुरु सुधादिना पूरय पूरय ॐ हौं स्वाहा' से निकाले गये अमृत से याग वस्तुओं का शोधन करे। सामान्यार्घ्य के नीचे त्रिकोण में बिन्दु कल्पित करके मूल मन्त्र के तीन बीजों ॐ जुं स: से तीनों कोनों में पूजन करे। मूल मन्त्र से बिन्दु का अर्चन करे। वहीं पर अग्नि सूर्य सोम मण्डल का पूजन करे। उस पर दिव्य पात्र स्थापित करके उसे कलशामृत से पूर्ण करे। पृथ्वी आदि ३६ तत्त्वों का पूजन करे। महामुद्रा दिखावे। अग्नि-पद्म-अमृतमुद्रा प्रदर्शित करे। मातृका देवी का पूजन करे। मूलमन्त्र के सभी वर्णों का पूजन करे। गङ्गादि तीर्थों का आवाहन करे। ईशान कला का पूजन करे। तब तत्पुरुष, अघोर, सद्योजात और वामदेव कलाओं का पूजन करे। अपने को शिवस्वरूप मानकर, परमामृत बुद्धि से विन्दुपान से चित्तदीप को प्रोज्ज्वल करके संसार को शिवमय माने।

सामान्यार्घ्यस्य वामे गुरुशक्तियोगिनीवीरवटुकक्षेत्रपालपात्राणि संस्थाप्य, तथोत्तरे पाद्याचमनीयमधुपर्काचमनीयार्घ्यपात्राणि स्थापयेदिति पात्रसंस्थापनम्।

पाद्यादिपात्रेषु पानीयं, गुरुपात्रादिषु दिव्यामृतं तत्रात्मानं मूलविद्यया संपूज्य, स्वाधारात् कुण्डलिनीमुत्थाप्य परमशिवेन संयोज्य चन्द्रमण्डल-स्थमहामृत्युञ्जयललाटावतंसचन्द्रकलास्रुतामृतधारया स्वात्मानं संप्लाव्य, शिवोऽहमिति स्मृत्वा, चिदानन्दमयो भूत्वा, विश्वं श्वेतमिव ध्यात्वा सदे-वीकं शिवं हृत्कमले ध्यात्वा, यथोक्तं स्मृत्वा मानसैरुपचारैः संपूज्य, स्वात्मानं तन्मयं भावयित्वा, श्रीचक्रं पुरोक्तं चतुरश्रोद्भासितारणत्रय-विराजितवसुदलखचितषडस्रमण्डितत्रिकोणोल्लसितबिन्दुमण्डलं श्रीयन्त्र-राजं विलिख्य वा प्रक्षाल्य, श्रीरत्नपीठे संस्थाप्य योगपीठपूजां कुर्यात्।

सामान्यार्घ्य पात्र के वाम भाग में गुरु, शक्ति, योगिनी, वीर, वटुक, क्षेत्रपाल के पात्रों को स्थापित करे। उसके उत्तर भाग में पाद्य, आचमनीय, मधुपर्क, आचमनीय अर्घ्यपात्रों को स्थापित करे।

पाद्यादि पात्रों में पानीय, गुरुपात्रादि में दिव्यामृत डालकर मूल विद्या से पूजन करे। अपने आधार से कुण्डलिनी को उठाकर परमशिव के साथ मिलावे। चन्द्रमण्डलस्थ

महामृत्युञ्जय ललाटावतंस चन्द्र से श्रावित अमृतधारा से अपने को प्रोक्षित करे। प्लावित करे। शिवोऽहम् की भावना करे। चिदानन्दमय होकर विश्व का ध्यान श्वेत रूप में करके देवी सहित शिव का ध्यान हृदयकमल में करे। यथोक्त रूप से स्मरण करके मानसोपचारों से पूजन करे। अपने को भी तन्मय समझे। तब श्रीचक्र को भूपुर, वृत्तत्रय, अष्टदल, षट्कोण, त्रिकोण, विन्दुमण्डल सहित अंकित करे या प्रक्षालित करके श्रीरत्नपीठ पर स्थापित करे और योगपीठ की पूजा करे।

ॐ जुंसः हंसः सोहंसः जुं ॐ अंआंइंईं उंऊंऋंॠं लृंलॄंएंऐं ओंऔंअंअः कंखंगंघंङं चंछंजंझंञं टंठंडंढंणं तंथंदंधंनं पंफंबंभंमं यंरंलंवं शंषंसंहंळंक्षं ॐ शिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यामायाकलाविद्यारागकालनियतिपुरुषप्रकृ-त्यहङ्कारबुद्धिमनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थशब्दस्पर्शरू-परसगन्धाकाशवायुवह्निसलिलपृथिव्यात्मने श्रीयोगपीठाय नमः इति श्रीचक्रे संपूज्य, वसुपत्रेषु—वामायै नमः। ज्येष्ठायै०। रौद्र्यै०। काल्यै०। कलविकरण्यै० बलविकरण्यै०। बलप्रमथन्यै०। सर्वभूत-दमन्यै नमः—इत्यभ्यर्च्य, ॐ जुंसः नमो भगवते सकलगुणात्म-शक्तियुक्ताय परानन्ताय योगपीठात्मने नमः इति योगपीठं संपूज्य, अमृतीकरणमुद्रां बद्ध्वा मूलमन्त्रेण सङ्कल्प्यावाहयेत्। मूलेन सुषुम्नया हृत्कमलस्थं ज्योतिर्वामनासया निःसार्य करस्थपुष्पेषु स्थितं ध्यात्वा देवमावाहयेत्—

स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामहं परमेश्वर।
आरण्यमिव हव्याशं बिन्दावावाहयाम्यहम्॥
देवेश भक्तिसुलभ परिवारसमन्वित।
यावत् त्वां तर्पयिष्यामि तावत् शिव इहावह॥ इति।

योगपीठपूजा—'ॐ जुं सः हंसः सोहंसः जुं ॐ अं आं इं ईं, उं ऊं ऋं ॠं, लृं लॄं एं ऐं, ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं, चं छं जं झं ञं, टं ठं डं ढं णं, तं थं दं धं नं, पं फं बं भं मं, यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं ॐ शिव शक्ति सदा शिवेश्वर शुद्ध विद्या माया कला विद्या राग काल नियति पुरुष प्रकृति अहंकार बुद्धि मन त्वक् चक्षु श्रोत्र जिह्वा घ्राण वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध आकाश वायु वह्नि सलिल पृथिव्यात्मने श्रीयोगपीठाय नमः' से योगपीठ की पूजा करे। अष्टदल में वामायै नमः। ज्येष्ठायै नमः। रौद्र्यै नमः। काल्यै नमः। कलविकरण्यै नमः। बलविकरण्यै नमः। बलप्रमथन्यै नमः। सर्वभूतदमन्यै नमः से अर्चन करे। इसके बाद 'ॐ जुं सः नमो

भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय परानन्ताय योगपीठात्मने नमः' इस प्रकार योगपीठ का पूजन करे। अमृतीकरण मुद्रा बनाकर मूल मन्त्र से संकल्प करके आवाहन करे। मूल मन्त्र से सुषुम्ना मार्ग से हृदयकमल में स्थित ज्योति को वाम नासाछिद्र से निकालकर हाथ में स्थित फूल में स्थित होने का ध्यान करे। इस प्रकार ध्यान करके आवाहन करे—

स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामहं परमेश्वर।
आरण्यमिव हव्याशं विन्दावावाहयाम्यहम्।।
देवेश भक्तिसुलभ परिवारसमन्वित।
यावत् त्वां पूजयिष्यामि तावत् शिव इहावह।।

मूलमुच्चार्य यन्त्रेषु पुष्पाणि दत्त्वावाह्य संस्थाप्य संनिरुध्य मूलेन दश मुद्राः प्रदर्श्य, ॐ जुंसः आंह्रींक्रों यंरंलंवं शंषंसंहं ॐ जुंसः हंसः अमृतेश्वरीसहितस्य मृत्युञ्जयदेवस्य प्राणाः इह प्राणाः १९ँ जीव इह स्थितः १९ँ सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा, इति देवीदेवयोः प्राणान् दत्त्वा, पञ्च मुद्राः प्रदर्श्य धेनुमुद्रयामृतीकृत्य महामुद्रया परमीकृत्य, षडङ्गैः सकलीकृत्य शङ्खचक्रत्रिखण्डापाशकलशमालामुद्राः प्रदर्श्य, भगवन् अमृतेश्वरीसहित मृत्युञ्जय इदमासनं गृह्यतां। फट् भगवन् स्वागतमित्युदीर्य नमस्कृत्य मुद्रया प्रणम्य। मू० भगवन् सदेवीक पाद्यं नमः। मू० भगवन् सदेवीकाचमनीयं स्वधा। मू० भगवन् सदेवीक मधुपर्कः स्वधा। मू० भगवन् सदेवीक इदमाचमनीयं नमः। मूलं भगवन् सदेवीक इदमर्घ्यं स्वाहा। मूलं भगवन् सदेवीक एष गन्धो नमः। मू० भगवन् सदेवीकाक्षतपूर्वमेतानि पुष्पाणि वौषट्। श्यामाकदूर्वाकसशिवाक्रान्ताभिमिश्रितं गङ्गोदकं समादाय मूलमन्त्रेण मन्त्रयेत्। मू० भगवन् सदेवीकं सर्वाङ्गे गङ्गोदकस्नानीयं नमः। मूलं भगवन् सदेवीक महाश्वेतमहार्घ्यवस्त्रयुग्मं नमः। मू० भगवन् सदेवीक मुक्ताभरणानि निवेदयामि नमः। मू० भगवन् सदेवीक रत्नसिंहासने उपविश्यताम्। मू० भगवन् सदेवीक गन्धाक्षतपुष्पाणि गृहाण वौषट्। मू० भगवन् सदेवीक धूपं गृहाण नमः। मू० भगवन् सदेवीक दीपं निवेदयामि नमः। धूपदीपौ दत्त्वा परमीकरणमुद्रां प्रदर्श्य त्रिकोणवृत्तमण्डलं विभाव्य साधारं पात्रं संस्थाप्य, दिव्यौदनं षड्रसोपेतं नानाव्यञ्जनान्वितं धेनुमुद्रयामृतीकृत्य, 'ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा' इति निवेद्य मूलं दशधा जप्त्वा

प्राणादिपञ्चग्रासमुद्राः प्रदर्श्य 'ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा' इति भवगते शिवाय जलं दत्त्वा, मूलेन ताम्बूलं निवेद्य, दिव्यपात्रामृतेन दशधा सन्तर्प्य प्रणम्य, परिवारदेवता देवाङ्गात् निस्सृता ध्यात्वा यथोपचितस्थानेषु संस्थाप्य ध्यात्वा प्रणामपूर्वकं प्राणायामत्रयं विधाय श्रीचक्रे परिवारदेवताः पूजयेत्।

मूल मन्त्र का उच्चारण करके यन्त्र में पुष्पाञ्जलि प्रदान करे। आवाहन, स्थापन, सन्निरोधन करे। मूल मन्त्र बोलते हुए दश मुद्राओं को प्रदर्शित करे। तब प्राणप्रतिष्ठा करे।

प्राणप्रतिष्ठामन्त्र—ॐ जुं सः आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ॐ जुं सः हंसः अमृतेश्वरीसहितस्य मृत्युञ्जयदेवस्य प्राणा इह प्राणाः। ॐ जुं सः आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ॐ जुं सः हंसः मृत्युञ्जयदेवस्य जीव इह स्थितः। ॐ जुं सः आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ॐ जुं सः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्-मनः-चक्षुश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

इस प्रकार देवी-देव की प्राणप्रतिष्ठा करके पाँच मुद्राओं को दिखावे। धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करे। महामुद्रा से परमीकरण करे। षडङ्ग पूजन से सकलीकरण करे। शङ्ख, चक्र, त्रिखण्डा, पाश, कलश, माला मुद्रा दिखाये। तब पूजन करे; जैसे—भगवन् अमृतेश्वरी सहित मृत्युञ्जय आसनं गृह्यताम्। फट् भगवन् स्वागतम्—कहकर नमस्कार मुद्रा से प्रणाम करे।

ॐ जुं सः भगवन् सदेवीकं पाद्यं नमः। ॐ जुं सः भगवन् सदेवीकं आचमनीयं स्वधा। ॐ जुं सः भगवन् सदेवीकं मधुपर्कः स्वधा। ॐ जुं सः भगवन् सदेवीकं इदम् आचमनीयं नमः। ॐ जुं सः भगवन् सदेवीकं इदम् अर्घ्यं स्वाहा। ॐ जुं सः भगवन् सदेवीकं एष गन्धो नमः। ॐ जुं सः भगवन् सदेवीकं अक्षतपूर्व एतानि पुष्पाणि वौषट्।

गङ्गाजल में श्यामाक, दूर्वा और शिवाक्रान्ता मिलाकर मूल मन्त्र से अभिमन्त्रित करे।

ॐ जुं सः भगवन् सवेदीकं सर्वांगे गङ्गोदकस्नानीयं नमः। ॐ जुं सः भगवन् सदेवीकं महाश्वेतमहार्घ्यवस्त्रयुग्मं नमः। ॐ जुं सः भगवन् सदेवीकं मुक्ताभरणानि निवेदयामि नमः। ॐ जुं सः भगवन् सदेवीकं रत्नसिंहासने उपविश्यताम्। ॐ जुं सः भगवन् सदेवीकं गन्धाक्षतपुष्पाणि गृहाण वौषट्। ॐ जुं सः भगवन् सदेवीकं धूपं गृहाण नमः। ॐ जुं सः भगवन् सदेवीकं दीपं निवेदयामि नमः।

धूप-दीप देकर परमीकरण मुद्रा दिखाये। देव के सामने त्रिकोण वृत्त मण्डल बनाकर उसपर आधार रखे। आधार पर नैवेद्य पात्र को स्थापित करे। नैवेद्य में दिव्य भात, षट् रसयुक्त नाना व्यञ्जन रखकर उसे धेनु मुद्रा से अमृतीकृत करे। तब 'ॐ अमृतोपमस्तरणमसि स्वाहा' कहकर नैवेद्य को निवेदित करे। मूल मन्त्र का दश बार जप करके प्राणादि पञ्च ग्रास मुद्रा प्रदर्शित करे। तब 'ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा' से जल देवे। मूल मन्त्र से ताम्बूल को निवेदित करे। दिव्य पात्र के अमृत से दश बार तर्पण करे। प्रणाम करे। परिवारदेवताओं को देव के शरीर से निस्सृत समझकर ध्यान करे। यथोचित स्थानों में उन्हें स्थापित करे। ध्यान करे। प्रणाम करे। तीन प्राणायाम करे। श्रीचक्र में परिवारदेवताओं का पूजन करे।

ॐ जुंसः कामेश्वरश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः इति वीरपात्रामृतेनेशानाग्नेयाग्रेषु पूजयेत्। ॐ जुंसः महाकालश्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः। ॐ जुंसः स्वच्छन्दश्री०। इति संपूज्य, मूलेन मूलदेवं संपूज्य सन्तर्प्य, इत्यग्रे प्रथमावरणम्।

ॐ जुंसः कालाग्निरुद्रश्री०। ३ँ नेत्रेशश्री०। ३ँ विश्वनाथश्री०। ३ँ महेश्वरश्री०। ३ँ सद्योजातश्री०। ३ँ वामदेवश्री०। इति संपूज्य, मूलेन मूलदेवं सन्तर्प्य षट्कोणेषु द्वितीयावरणम्।

प्रथम आवरण—ॐ जुं सः कामेश्वरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। वीरपात्र के अमृत से ईशान-आग्नेय के आगे पूजन करे। ॐ जुं सः महाकालश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः स्वच्छन्दश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इसके मूल मन्त्र से मूल देवता का पूजन और तर्पण करे।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

द्वितीय आवरण—षट्कोण में—ॐ जुं सः कालाग्निरुद्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः नेत्रेशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः विश्वनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः महेश्वरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः सद्योजातश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः वामदेवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। मूल मन्त्र से मूल देव का तर्पण करे।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।

ॐ जुंसः असिताङ्गभैरवश्री०। ३ँ रुरुभैरवश्री०। ३ँ चण्डभैरवश्री०। ३ँ क्रोधराजभैरवश्री०। ३ँ उन्मत्तभैरवश्री०। ३ँ कपालीशभैरवश्री०। ३ँ भीषणभैरवश्री०। ३ँ संहारभैरवश्री० इति संपूज्य मूलेन मूलदेवं संतर्प्य स्ववामावर्तेनाष्टदले तृतीयावरणम्।

ॐ जुंसः ब्रह्माणीश्री०। ३ँ माहेश्वरीश्री०। ३ँ वैष्णवीश्री०। ३ँ वाराहीश्री०। ३ँ नारसिंहीश्री०। ३ँ इन्द्राणीश्री०। ३ँ चामुण्डाश्री०। ३ँ महालक्ष्मीश्री० इति योगिनीपात्रामृतेन सन्तर्प्य, दिव्यामृतेन मूलदेवं सदेवीकं सन्तर्प्य स्व वामावर्तेन वसुदले चतुर्थावरणम्।

तृतीयवरण—अष्टदल में वामावर्त क्रम से—ॐ जुं सः असिताङ्गभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः चण्डभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः क्रोधराजभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः उन्मत्तभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः कपालीशभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः भीषणभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः संहारभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। मूलमन्त्र से मूल देव का तर्पण करे।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।

चतुर्थावरण—अष्टदल में ही—ॐ जुं सः ब्रह्माणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः माहेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः वैष्णवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः वाराहीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः नारसिंहीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः इन्द्राणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः चामुण्डाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः महालक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। योगिनी पात्र से तर्पण करे। दिव्य अमृत से देवी-सहित मूल देव का तर्पण करे।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।

ॐ जुंसः स्वगुरुश्री०। इँ परमगुरुश्री०। इँ परापरगुरुश्री०। इँ परमेष्ठिगुरुश्री० इति गुरुपात्रामृतेन सन्तर्प्य दिव्यामृतेन सदेवीकं देवं बिन्दौ सन्तर्प्य वृत्तत्रये पञ्चमावरणम्।

ॐ लं इन्द्रश्री०। ॐ रं अग्निश्री०। ॐ टं यमश्री०। ॐ क्षं निर्ऋतिश्री०। ॐ वं वरुणश्री०। ॐ यं वायुश्री०। ॐ सं सोमश्री०। ॐ हं ईशानश्री०। ॐ ह्रीं अनन्तश्री०। ॐ ब्रह्मश्री० इति वीरपात्रामृतेन संतर्प्य बिन्दौ देवं सन्तर्प्य चतुरश्रे षष्ठावरणम्।

पञ्चम आवरण—वृत्तान्तरालों में—ॐ जुं सः स्वगुरुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः परमगुरुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः परापरगुरुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः परमेष्ठिगुरुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। गुरुपात्र के अमृत से तर्पण करके दिव्यामृत से देवी सहित देव का बिन्दु में तर्पण करे।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।

षष्ठ आवरण—भूपुर में पूर्वादि क्रम से—ॐ लं इन्द्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ रं अग्निश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ टं यमश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ क्षं निर्ऋतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ वं वरुणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ यं वायुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ सं सोमश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ हं ईशानश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं अनन्तश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं ब्रह्मश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। वीरपात्र के अमृत से इनका तर्पण करे। बिन्दु में देव का तर्पण करे।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

ॐ वज्रश्री०। शक्तिश्री०। दण्डश्री०। खड्गश्री०। पाशश्री०। ध्वजश्री०। गदाश्री०। त्रिशूलश्री०। चक्रश्री०। पद्मश्री० इति वीरपात्रामृतेन संपूज्य संतर्प्य, दिव्यामृतेन बिन्दौ देवे संतर्प्य सप्तमावरणम्।

मू० श्रीअमृतेश्वरीशक्तिसहितश्रीमृत्युञ्जयश्रीपादुकां पू० त०। मूलं श्री

अमृतेश्वरश्रीपादुकां०। मूलं ईशानश्रीपा०। मूलं भुवनेश्वरश्रीपा०। मूलं श्रीमदमृतेश्वरीसहितदीक्षानायकश्रीमहामृत्युञ्जयश्रीपा० इति दशधा संपूज्य सन्तर्प्य अष्टमावरणम्।

सप्तम आवरण—भूपुर में ही—ॐ वज्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:। ॐ शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:। ॐ दण्डश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:। ॐ खड्गश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:। ॐ पाशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:। ॐ ध्वजश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:। ॐ गदाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:। ॐ त्रिशूलश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:। ॐ चक्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:। ॐ पद्मश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:। वीरपात्र के अमृत से तर्पण करे। दिव्य अमृत से देव का तर्पण करे।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।

अष्टम आवरण—बिन्दु में—ॐ जुं स: अमृतेश्वरीशक्तिसहितश्रीमृत्युञ्जयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:। ॐ जुं स: अमृतेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:। ॐ जुं स: ईशानश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:। ॐ जुं स: भुवनेश्वरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:। ॐ जुं स: अमृतेश्वरीसहितदीक्षानायकमहामृत्युञ्जयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:। दश बार पूजन तर्पण करे। तत्पश्चात् निम्न मन्त्र से पुष्पाञ्जलि अर्पित करे—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यमष्टमावरणार्चनम्।।

मूलं त्रिखण्डाश्री०। मूलं पाशश्री०। मूलं सुधाकलशश्री०। मूलं मुक्ताक्षसूत्रश्री० इति परामृतेन बिन्दौ सन्तर्प्य सशक्तिं देवं बिन्दौ संपूज्य नवमावरणम्।

मूलं मुष्टिमुद्राश्री०! मूलं सारङ्गमुद्राश्री०। मूलं लिङ्गमुद्राश्री०। मूलं योनिमुद्राश्री०। मूलं पञ्चमुखमुद्राश्री० इति बिन्दौ परमामृतेन सन्तर्प्य, मूलविद्यामुच्चार्य श्रीमदमृतेश्वरीशक्तिसहितश्रीमहामृत्युञ्जयश्रीपादुकां पू० इति बिन्दौ त्रि: संपूज्य दशमावरणम् ।

इति नत्वा पुनर्नैवेद्यं

ॐरत्नपात्रस्थितं दिव्यं नानाव्यञ्जनबृंहितम्।
दिव्यौदनं निवेद्याशु परमामृतसंप्लुतम्॥

इति मृगमुद्रया निवेद्य प्रणम्य, मूलान्ते आचमनीयताम्बूलारात्रिकाच्छत्र-चामरादर्शप्रभृतीनि दिव्यानि वस्तूनि सदेवीकाय देवाय निवेद्य साष्टाङ्गं प्रणमेत्।

नवम आवरण—बिन्दु में—ॐ जुं सः त्रिखण्डाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः पाशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः सुधाकलशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः मुक्ताक्षसूत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। परामृत से बिन्दु में तर्पण करके सशक्ति देव का बिन्दु में पूजन करे। तदनन्तर निम्न मन्त्र से पुष्पाञ्जलि समर्पित करे—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्।।

दशम आवरण—बिन्दु में—ॐ जुं सः मुष्टिमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः सारङ्गमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः लिङ्गमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः योनिमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जुं सः पञ्चमुखीमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। बिन्दु में परमामृत से तर्पण करे। मूल विद्या का उच्चारण करके श्रीमदमृतेश्वरीशक्तिसहितश्रीमहामृत्युञ्जयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। तीन बार पूजन तर्पण करे। तदनन्तर—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं दशमावरणार्चनम्।।

मन्त्र से पुष्पाञ्जलि देकर प्रणाम करे। पुनः नैवेद्य अर्पण करे; जैसे—

ॐ रत्नपात्रस्थितं दिव्यं नानाव्यञ्जनबृंहितम्।
दिव्यौदनं निवेद्याशु परमामृतसम्प्लुतम्।।

ॐ जुं सः से आचमनीय, ताम्बूल, आरात्रिक, छत्र, चामर, दर्पण-प्रभृति दिव्य वस्तुओं को सदेवीकाय देवाय निवेद्य साष्टाङ्ग प्रणाम करे।

देवाग्रे मालामादाय मूलं यथाशक्ति जप्त्वा 'गुह्यातीति' जपं निवेद्य देवाग्रे कवचसहस्रनामस्तवराजपाठं कृत्वा तदपि देवीदेवयोः समर्प्य, ॐक्षांक्षींक्षूंक्षैंक्षौंक्षः क्षेत्रपालेभ्यो वौषट् इति बलिं निवेद्य, ॐयांयींयूंयैंयौंयः ह्सौःसःजुंॐ सर्वयोगिनीभ्यो बलिर्नमः, ॐह्रीं

सर्वविघ्नकृद्भ्यो भूतेभ्यो बलिर्वषट् स्वाहा, इति बलिं दत्त्वा प्रणाममुद्रां प्रदर्श्य दण्डवत् प्रणमेत्।

ततो वीरेन्द्रैः सह वीरपानं विधाय पूर्णपात्रं हुत्वा स्वशक्तिमानन्दनिर्भरां निर्माय रतेन संतर्प्य शिवोऽहं भावयन् देवं सदेवीकं ज्योतीरूपं संहृति-मुद्रया श्रीचक्रादुत्थाप्य वामनासयान्तर्नीत्वा तत्तेजः परमचैतन्यज्योतिषि ब्रह्मणि निलीनं ध्यात्वा

अहमेव परो हंसः शिवः परमकारणम्।
मत्प्राणे स तु पश्चात्मा लीनः सामरसीगतः॥

इति ध्यात्वा परमशिवो भूत्वा स्वशक्त्या सह सुखं विहरेत्। बाह्ये वैष्णवाचारपरायणः कालं नयेत्। ततः श्रीचक्रमुत्थाप्य मूलेन प्रक्षाल्य निर्माल्यं 'ॐ जुंसः हूं ॐस्वाहा' इतीशानदिशि निर्माल्यं क्षिपेत्।

देव के सम्मुख माला लेकर यथाशक्ति मन्त्रजप करे। 'गुह्यातिगुह्य' से जप को निवेदन करे। देवता के आगे कवच, सहस्रनाम, स्तोत्र का पाठ करके देवी-देव को समर्पित करे। तब बलि प्रदान करे; जैसे—ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं: सः क्षेत्रपालेभ्यो वौषट्। ॐ यां यीं यूं यैं यौं यः ह्सौः सः जुं ॐ सर्वयोगिनीभ्यो बलिं नमः। ॐ ह्रीं सर्वविघ्न-कृद्भ्यो भूतेभ्यो वलिं वषट् से वलि देकर प्रणाम मुद्रा दिखाकर दण्डवत् प्रणाम करे।

तब वीरों के साथ वीरपान करके पूर्ण पात्र का हवन करे। स्वशक्ति आनन्दनिर्भर का निर्माण करके उसे मैथुन से सन्तुष्ट करे। तर्पण करे। शिवोऽहं की भावना करे। देवी-सहित देव को ज्योतिरूप में संहार मुद्रा से श्रीचक्र से उठाकर वाम नासा से अन्दर लाकर उसके तेज से परमज्योति चैतन्य ब्रह्म के तद्रूप होने का ध्यान करे। तदनन्तर इस श्लोक का पाठ करे—

अहमेव परो हंसः शिवः परमकारणाम्।
मत्प्राणे स तु पश्चात्मा लीनः सामरसीगतः।।

ऐसा ध्यान करके परमशिव होकर अपनी शक्ति के साथ विहार करे। बाहर वैष्णावाचार-परायण होकर कालयापन करे। तब श्रीचक्र को उठाकर मूल मन्त्र से धोकर रखे। 'ॐ जुं सः हूं ॐ स्वाहा' बोलकर निर्माल्य को ईशान दिशा में रख दे।

पटलोपसंहारः

इतीदं देवदेवस्य महामृत्युञ्जयस्य ते।
नित्यपूजासृतिः सम्यङ्निर्णीता कुलसुन्दरि॥

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं पद्धतिर्नित्यकर्मणः ।
वर्णिता नेत्रनाथस्य नाख्येया ब्रह्मवादिभिः ॥
सर्वतन्त्रैकसर्वस्वं रहस्यं पारलौकिकम् ।
पूजातत्त्वं मयाख्यातं गोपनीयं मुमुक्षुभिः ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये श्रीमहामृत्युञ्जयपूजापद्धति-निरूपणं नाम द्वाचत्वारिंशः पटलः ॥४२॥

पटलोपसंहार—हे कुलसुन्दरि! इस प्रकार देवदेव महामृत्युञ्जय की नित्य पूजा सृति का सम्यक् निर्णय पूरा हुआ। तुम गुह्य से भी गुह्य को गोपित करने वाली हो। नेत्रनाथ द्वारा वर्णित इस नित्य कर्मपद्धति को ब्रह्मवादियों को भी नहीं बतलाना चाहिये। यह सभी तन्त्रों का सर्वस्व, परलोक का रहस्य पूजातत्त्व है। मेरे द्वारा वर्णित यह गोपनीय है। मुमुक्षुओं से भी इसे गुप्त रखना चाहिये।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में श्रीमहा-मृत्युञ्जयपूजापद्धति निरूपण नामक द्वाचत्वारिंश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ त्रयश्चत्वारिंशः पटलः

मृत्युञ्जयकवचम्

कवचमाहात्म्यम्

श्रीभैरव उवाच

शृणुष्व परमेशानि कवचं मन्मुखोदितम्।
महामृत्युञ्जयस्यास्य न देयं परमाद्भुतम्॥१॥
यं धृत्वा यं पठित्वा च श्रुत्वा च कवचोत्तमम्।
त्रैलोक्याधिपतिर्भूत्वा सुखितोऽस्मि महेश्वरि॥२॥
तदेव वर्णयिष्यामि तव प्रीत्या वरानने।
तथापि परमं तत्त्वं न दातव्यं दुरात्मने॥३॥

कवच का माहात्म्य—श्री भैरव ने कहा कि हे परमेशानि! मेरे मुख से निःसृत महामृत्युञ्जय के परम अद्भुत कवच को सुनिये। इसे किसी को भी नहीं बताना चाहिये। हे महेश्वरि! जिस उत्तम कवच को धारण करके, इसका पाठ करके, इसका श्रवण करके मैं तीनों लोकों का अधिपति होकर सुखपूर्वक रहता हूँ। हे वरानने! तुम्हारी प्रीति के कारण उसी उत्तम कवच का वर्णन मैं करता हूँ। तुम भी इस परम तत्त्व को दुष्टों को मत बतलाना।।१-३।।

विनियोगः

अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयकवचस्य श्रीभैरव ऋषिः, गायत्र्यं छन्दः, श्रीमहामृत्युञ्जयो महारुद्रो देवता, ॐ बीजं, जुं शक्तिः, सः कीलकं, हमिति तत्त्वं, चतुर्वर्गसाधने मृत्युञ्जयकवचपाठे विनियोगः।

विनियोग—इस महामुत्युञ्जय कवच के श्रीभैरव ऋषि हैं, गायत्री छन्द है, श्रीमहामृत्युञ्जय महारुद्र देवता हैं, ॐ बीज है, जुं शक्ति है, सः कीलक है, हुं तत्त्व है। धर्म-अर्थ-काम-मोक्षरूप चतुर्वर्ग की साधना हेतु पाठ में इस कवच का विनियोग किया जाता है।

ध्यानम्

चन्द्रमण्डलमध्यस्थं रुद्रं भाले विचिन्त्य तम्।
तत्रस्थं चिन्तयेत् साध्यं मृत्युं प्राप्तोऽपि जीवति॥१॥

ध्यान—रुद्र के मस्तक पर शोभित चन्द्रमण्डल के मध्य में रुद्र के स्थित होने के रूप में चिन्तन करने से मृतक भी जीवित हो जाता है।।१।।

कवचम्

ॐजुंसः हौं शिरः पातु देवो मृत्युञ्जयो मम।
ॐश्रीं शिवो ललाटं में ॐहौं भ्रुवौ सदाशिवः ॥२॥
नीलकण्ठोऽवतान्नेत्रे कपर्दी मेऽवताच्छ्रुती।
त्रिलोचनोऽवताद् गण्डौ नासां मे त्रिपुरान्तकः ॥३॥
मुखं पीयूषघटभृदोष्ठौ मे कृत्तिकाम्बरः।
हनुं मे हाटकेशानो मुखं वटुकभैरवः ॥४॥

कवच—ॐ जुं सः हौं मृत्युञ्जय देव मेरे शिर की रक्षा करें। ॐ श्रीं शिव मेरे ललाट की रक्षा करें। ॐ हौं सदाशिव मेरे भ्रुवों की रक्षा करें। नीलकण्ठ नेत्रों की रक्षा करें। कपर्दी मेरे कानों की रक्षा करें। त्रिलोचन मेरे कपोलों की रक्षा करें। त्रिपुरान्तक नाक की रक्षा करें। पीयूष घटधारी मुख की और कृत्तिकाम्बर ओठों की रक्षा करें। हाटकेश ठुड्डी की और मुख की रक्षा वटुकभैरव करें।।२-४।।

कन्धरां कालमथनो गलं गणप्रियोऽवतु।
स्कन्धौ स्कन्दपिता पातु हस्तौ मे गिरिशोऽवतु ॥५॥
नखान् मे गिरिजानाथः पायादङ्गुलिसंयुतान्।
स्तनौ तारापतिः पातु वक्षः पशुपतिर्मम ॥६॥
कुक्षिं कुबेरवरदः पार्श्वौ मे मारशासनः।
शर्वः पातु तथा नाभिं शूली पृष्ठं ममावतु ॥७॥

कालमथन कन्धों की, गणप्रिय गले की रक्षा करें। स्कन्दपिता कन्धों की और गिरीश हाथों की रक्षा करें। गिरिजानाथ नखों सहित अँगुलियों की रक्षा करें। तारापति स्तनों की और पशुपति वक्ष की रक्षा करें। कुबेर वरद कुक्षि की एवं मारशासन पार्श्वों की रक्षा करें। शर्व मेरे नाभि की और शूली पीठ की रक्षा करें।।५-७।।

शिश्नं मे शङ्करः पातु गुह्यं गुह्यकवल्लभः।
कटिं कालान्तकः पायादूरू मेऽन्धकघातकः ॥८॥
जागरूकोऽवताज्जानू जङ्घे मे कालभैरवः।
गुल्फौ पायाज्जटाधारी पादौ मृत्युञ्जयोऽवतु ॥९॥
पादादिमूर्धपर्यन्तमघोरः पातु मे सदा।

शिरस: पादपर्यन्तं सद्योजातो ममावतु ॥१०॥
रक्षाहीनं नामहीनं वपु: पात्वमृतेश्वर: ।

शङ्कर मेरे शिश्न की और गुह्यकवल्लभ गुह्य की रक्षा करें। कालान्तक कमर की रक्षा करें। अन्धकपातक ऊरुओं की रक्षा करें। जागरूक जानुओं की रक्षा करें। कालभैरव जङ्घों की रक्षा करें। जटाधारी गुल्फों की और मृत्युञ्जय पैरों की रक्षा करें। पाँवों से लेकर मूर्धा तक अघोर मेरी सदा रक्षा करें। शिर से पैरों तक की रक्षा सद्योजात करें। रक्षाहीन और नामहीन शरीर की रक्षा अमृतेश्वर करें।।८-१०।।

पूर्वे बलविकरणो दक्षिणे कालशासन: ॥११॥
पश्चिमे पार्वतीनाथो ह्युत्तरे मां मनोन्मन: ।
ऐशान्यामीश्वर: पायादाग्नेय्याममग्निलोचन: ॥१२॥
नैर्ऋत्यां शम्भुरव्यान्मां वायव्यां वायुवाहन: ।
ऊर्ध्वे बलप्रमथन: पाताले परमेश्वर: ॥१३॥
दशदिक्षु सदा पातु महामृत्युञ्जयश्च माम् ।

पूर्व में बलविकरण और दक्षिण में कालशासन मेरी रक्षा करें। पश्चिम में पार्वतीनाथ और उत्तर में मेरी रक्षा मनोन्मन करें। ईशान में ईश्वर और आग्नेय में अग्निलोचन मेरी रक्षा करें। नैर्ऋत्य में अव्यय शम्भु और वायव्य में वायुवाहन रक्षा करें। ऊपर में बलप्रथमन और पाताल में परमेश्वर मेरी रक्षा करें। दशो दिशाओं में सर्वदा मेरी रक्षा महामृत्युञ्जय करें।।११-१३।।

रणे राजकुले द्यूते विषमे प्राणसंशये ॥१४॥
पायाद् ॐ जुं महारुद्रो देवदेवो दशाक्षर: ।
प्रभाते पातु मां ब्रह्मा मध्याह्ने भैरवोऽवतु ॥१५॥
सायं बलप्रमथनो निशायां नित्यचेतन: ।
अर्धरात्रे महादेवो निशान्ते मां महोमय: ॥१६॥
सर्वदा सर्वत: पातु ॐजुंस: हौं मृत्युञ्जय: ।

युद्ध में, राजदरबार में, जुए में, विषम प्राणसंशय में 'ॐ जुं महारुद्र देव देव' यह दशाक्षर मन्त्र मेरी रक्षा करे। प्रात:काल में मेरी रक्षा ब्रह्मा करें और मध्याह्न में भैरव करें। शाम में बलप्रमथन और रात में नित्य चेतन मेरी रक्षा करें। आधी रात में महादेव और निशान्त में मनोन्मन मेरी रक्षा करें। सदैव सभी ओर मेरी रक्षा ॐ जुं स: हौं मृत्युञ्जय करें।।१४-१६।।

फलश्रुतिः

इतीदं कवचं पुण्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ॥१७॥
सर्वमन्त्रमयं गुह्यं सर्वतन्त्रेषु गोपितम्।
पुण्यं पुण्यप्रदं दिव्यं देवदेवाधिदैवतम् ॥१८॥
य इदं च पठेन्मन्त्री कवचं वार्चयेत् ततः।
तस्य हस्ते महादेवि त्र्यम्बकस्याष्ट सिद्धयः ॥१९॥
रणे धृत्वा चरेद्युद्धं हत्वा शत्रूञ्जयं लभेत्।
जयं कृत्वा गृहं देवि संप्राप्स्यति सुखी पुनः ॥२०॥

फलश्रुति—यह पुनीत कवच तीनों लोकों में दुर्लभ है। सभी तन्त्रों में गोपित एवं सभी मन्त्रों से युक्त गुह्य है। यह पुनीत पुण्यप्रद दिव्य देवदेव अधिदैवत है। जो साधक इसका पाठ करता है या इससे अर्चन करता है, उसके हाथ में त्र्यम्बक की आठों सिद्धियाँ होती हैं। इसे धारण करके जो युद्ध करता है, वह शत्रु पर विजय प्राप्त करता है। विजय प्राप्त करके घर आकर फिर सुखी होता है।।१७-२०।।

महाभये महारोगे महामारीभये तथा।
दुर्भिक्षे शत्रुसंहारे पठेत् कवचमादरात् ॥२१॥
सर्वं तत् प्रशमं याति मृत्युञ्जयप्रसादतः।
धनं पुत्रान् सुखं लक्ष्मीमारोग्यं सर्वसंपदः ॥२२॥
प्राप्नोति साधकः सद्यो देवि सत्यं न संशयः।
इतीदं कवचं पुण्यं महामृत्युञ्जयस्य तु।
गोप्यं सिद्धिप्रदं गुह्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥२३॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये मृत्युञ्जयकवचनिरूपणं नाम त्रयश्चत्वारिंशः पटलः॥४३॥

महाभय में, महारोग में, महामारी के भय में, अकाल में, शत्रुसंहार में जो साधक इसका पाठ आदरपूर्वक करता है, मृत्युञ्जय की कृपा से उन सबों का प्रशमन हो जाता है। धन, पुत्र, सुख, लक्ष्मी, आरोग्य एवं सभी सम्पत्तियों को साधक शीघ्र प्राप्त करता है—यह सत्य है, शङ्काविहीन है। महामृत्युञ्जय का यह कवच पुनीत, गोप्य एवं सिद्धि-प्रदायक है। अपनी योनि के समान ही यह भी गोपनीय है।।२१-२३।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में मृत्युञ्जयकवच निरूपण नामक त्रयश्चत्वारिंश पटल पूर्ण हुआ।

•

अथ चतुश्चत्वारिंशः पटलः

महामृत्युञ्जयसहस्रनाम

श्रीभैरव उवाच

अधुना शृणु देवेशि सहस्राख्यस्तवोत्तमम्।
महामृत्युञ्जयस्यास्य सारात् सारोत्तमोत्तमम्॥१॥

सहस्रनाम-निरूपण—श्री भैरव ने कहा—हे देवेशि! अब आप उत्तम सहस्रनाम सुनिये। महामृत्युञ्जय का यह सहस्रनाम सारों का सार एवं उत्तमोत्तम है॥१॥

विनियोगः

अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य भैरव ऋषि, उष्णिक् छन्दः, श्रीमहामृत्युञ्जयो देवता, ॐ बीजं, जुं शक्तिः, सः कीलकं, पुरुषार्थसिद्धये सहस्रनामपाठे विनियोगः।

विनियोग—इस महामृत्युञ्जय-सहस्रनाम स्तोत्रमन्त्र के ऋषि भैरव हैं, छन्द उष्णिक् है, देवता महामृत्युञ्जय हैं, ॐ बीज है, जुं शक्ति है, सः कीलक है। धर्म-अर्थ-काम-मोक्षरूप पुरुषार्थचतुष्टय की सिद्धि के लिये इसका विनियोग किया जाता है।

ध्यानम्

उद्यच्चन्द्रसमानदीप्तिममृतानन्दैकहेतुं शिवं
ॐजुंसः भुवनैकसृष्टिप्रलयोद्भूत्येकरक्षाकरम्।
श्रीमत्तारदशार्णमण्डिततनुं त्र्यक्षं द्विबाहुं परं
श्रीमृत्युञ्जयमीड्यविक्रमगुणैः पूर्णं हृदब्जे भजे॥

ध्यान—शिव की दीप्ति उदित चन्द्र के समान है। वह अमृतानन्द का कारण है। ॐ जुं सः यह मन्त्र भुवनों की सृष्टि, रक्षा और प्रलय का कारण है। मन्त्र के दश अक्षरों से मण्डित उनका शरीर है। उनके तीन नेत्र और दो भुजाएँ हैं, पराक्रमशाली गुणों के कारण स्तुत्य श्रीमृत्युञ्जय का ध्यान हम अपने हृदय कमल में करते हैं।

सहस्रनाम

ॐजुंसःहौं महादेवो मन्त्रज्ञो मानदायकः।
मानी मनोरमाङ्गश्च मनस्वी मानवर्धनः॥१॥

मायाकर्ता मल्लरूपो मल्लो मारान्तको मुनिः ।
महेश्वरो महामान्यो मन्त्री मन्त्रिजनप्रियः ॥२॥
मारुतो मरुतां श्रेष्ठो मासिकः पक्षिकोऽमृतः ।
मातङ्गको मत्तचित्तो मत्तचिन्मत्तभावनः ॥३॥
मानवेष्टप्रदो मेषो मेनकापतिवल्लभः ।
मानकायो मानस्तेयी मारयुक्तो जितेन्द्रियः ॥४॥
जयो विजयदो जेता जयेशो जयवल्लभः ।
डामरेशो विरूपाक्षो विश्वभोक्ता विभावसुः ॥५॥
विश्वेशो विश्वनाथश्च विश्वसूर्विश्वनायकः ।
विनेता विनयी वादी वान्तदो वाग्भवो वटुः ॥६॥
स्थूलः सूक्ष्मोऽचलो लोलो लोलजिह्वः करालकः ।
विराधेयो विरागीनो विलासी लास्यलालसः ॥७॥
लोलाक्षो लोलधीर्धर्मी धनदो धनदार्चितः ।
धनी ध्येयोऽप्यध्येयश्च धर्म्यो धर्ममयो दयः ॥८॥
दयावान् देवजनको देवसेव्यो दयापतिः ।
डुलिचक्षुर्दरीवासो दम्भी देवमयात्मकः ॥९॥
कुरूपः कीर्तिदः कान्तः क्लीबोऽक्लीबात्मकः कुजः ।
बुधो विद्यामयः कामी कामकालान्धकान्तकः ॥१०॥
जीवो जीवप्रदः शुक्रः शुद्धः शर्मप्रदोऽनघः ।
शनैश्चरो वेगगति(१००)र्वाचालो राहुरव्ययः ॥११॥

सहस्रनाम—ॐ जुं सः हौं, महादेव, मन्त्रज्ञ, मानदायक, मानी, मनोरमाङ्ग, मनस्वी, मानवर्धन, मायाकर्त्ता, मल्लरूप, मारान्तक, मुनि, महेश्वर, महामान्य, मन्त्री, मन्त्रीजनप्रिय, मारुत, मरुतश्रेष्ठ, मासिक, पक्षिकोऽमृत, मातङ्गक, मत्तचित्त, मत्तचित्, मत्तभावन, मानवेष्टप्रद, मेष, मेनकापतिवल्लभ, मानकाय, मानस्तेयी, मारयुक्त, जितेन्द्रिय, जय, विजयद, जेता, जयेश, जयवल्लभ, डामरेश, विरूपाक्ष, विश्वभोक्ता, विभावसु, विश्वेश, विश्वनाथ, विश्वसूः, विनायक, विनेता, विनयी, वादी, वान्तद, वाग्भव, वटु, स्थूल, सूक्ष्म, अचल, लोल, लोलजिह्व, करालक, विराधेय, विरागीन, विलासी, लास्यलालस, लोलाक्ष, लोलधी, धर्मी, धनद, धनदार्चित, धनी, ध्येय, अध्येय, धर्म्य, धर्ममय, दय, दयावान, देवजनक, देवसेव्य, दयापति, डुलीचक्षु, दरीवास, दम्भी, देवमयात्मक, कुरूप, कीर्तिद, कान्त, क्लीब, अक्लीबात्मक, कुज,

बुध, विद्यामय, कामी, कामान्तक, कालान्तक, अन्धकान्तक, जीव, जीवप्रद, शुक्र, शुद्ध, शर्मप्रद, अनघ, शनैश्चर, वेगगति, वाचाल, राहु, अव्यय।।१-११।।

केतुः कारापतिः कालः सूर्योऽमितपराक्रमः ।
चन्द्रो भद्रप्रदो भास्वान् भाग्यदो भर्गरूपभृत् ।।१२।।
क्रूरो धूर्तो वियोगी च सङ्गी गङ्गाधरो गजः ।
गजाननप्रियो गीतो गानी स्नानार्चनप्रियः ।।१३।।
परमः पीवराङ्गश्च पार्वतीवल्लभो महान् ।
परात्मको विराड्वासो वानरोऽमितकर्मकृत् ।।१४।।
चिदानन्दी चारुरूपो गारुडो गरुडप्रियः ।
नन्दीश्वरो नयो नागो नागालङ्कारमण्डितः ।।१५।।
नागाहारो महानागो गोधरो गोपतिस्तपः ।
त्रिलोचनस्त्रिलोकेशस्त्रिमूर्तिस्त्रिपुरान्तकः ।।१६।।
त्रिधामयो लोकमयो लोकैकव्यसनापहः ।
व्यसनी तोषितः शम्भुस्त्रिधारूपस्त्रिवर्णभाक् ।।१७।।
त्रिज्योतिस्त्रिपुरीनाथस्त्रिधाशान्तस्त्रिधागतिः ।
त्रिधागुणी विश्वकर्ता विश्वभर्ताऽऽधिपूरुषः ।।१८।।
उमेशो वासुकिर्वीरो वैनतेयो विचारकृत् ।
विवेकाक्षो विशालाक्षोऽविधिर्विधिरनुत्तमः ।।१९।।
विद्यानिधिः सरोजाक्षो निःस्मरः स्मरनाशनः ।
स्मृतिमान् स्मृतिदः स्मार्तो ब्रह्मा ब्रह्मविदां वरः ।।२०।।
ब्राह्मव्रती ब्रह्मचारी चतुरश्चतुराननः ।
चलाचलोऽचलगतिर्वेगी वीराधिपो वरः ।।२१।।
सर्ववासः सर्वगतिः सर्वमान्यः सनातनः ।
सर्वव्यापी सर्वरूपः सागरश्च समेश्वरः(२००)।।२२।।

केतु, कारापति, काल, सूर्य, अमितपराक्रम, चन्द्र, भद्रप्रद, भास्वान, भाग्यद, भर्गरूपभृत्, क्रूर, धूर्त, वियोगी, सङ्गी, गङ्गाधर, गज, गजाननप्रिय, गीत, गानी, स्नानार्चनप्रिय, परम, पीवराङ्ग, पार्वतीवल्लभ, महान्, परात्मक, विराडवासी, वानर, अमितकर्मकृत्, चिदानन्दी, चारुरूप, गारुड़, गरुड़प्रिय, नन्दीश्वर, नय, नाग, नागा-लङ्कारमण्डित, नागहार, महानाग, गोधर, गोपति, तप, त्रिलोचन, त्रिलोकेश, त्रिमूर्ति, त्रिपुरान्तक, त्रिधमय, लोकमय, लोकैकव्यसनापह, व्यसनी, तोषित, शम्भु, त्रिधारूप,

त्रिवर्णभाक्, त्रिज्योति, त्रिपुरीनाथ, त्रिधाशान्त, त्रिधागति, त्रिधागुणी, विश्वकर्ता, विश्वभर्ता, अधिपूरुष, उमेश, वासुकी, वीर, वैनतेय, विचारकृत, विवेकाक्ष, विशालाक्ष, अविधि, विधि, अनुत्तम, विद्यानिधि, सरोजाक्ष, निःस्मर, स्मरनाशन, स्मृतिमान, स्मृतिद, स्मार्त, ब्रह्मा, ब्रह्मविदांवर, ब्राह्मव्रती, ब्रह्मचारी, चतुर, चतुरानन, चलाचल, अचलगति, वेगी, वीराधिप, वर, सर्ववास, सर्वगति, सर्वमान्य, सनातन, सर्वव्यापी, सर्वरूप, सागर, समेश्वर।।१२-२२।।

समनेत्रः समद्युतिः समकायः सरोवरः।
सरस्वान् सत्यवाक् सत्यः सत्यरूपः सुधीः सुखी ॥२३॥
सुराट् सत्यः सत्यमती रुद्रो रौद्रवपुर्वसुः।
वसुमान् वसुधानाथो वसुरूपो वसुप्रदः ॥२४॥
ईशानः सर्वदेवानामीशानः सर्वबोधिनाम्।
ईशोऽवशेषोऽवयवी शेषशायी श्रियः पतिः ॥२५॥
इन्द्रश्चन्द्रावतंसी च चराचरजगत्स्थितिः।
स्थिरः स्थाणुरणुः पीनः पीनवक्षाः परात्परः ॥२६॥
पीनरूपो जटाधारी जटाजूटसमाकुलः।
पशुरूपः पशुपतिः पशुज्ञानी पयोनिधिः ॥२७॥
वेद्यो वैद्यो वेदमयो विधिज्ञो विधिमान् मृडः।
शूली शुभङ्करः शोभ्यः शुभकर्ता शचीपतिः ॥२८॥
शशाङ्कधवलः स्वामी वज्री शङ्खी गदाधरः।
चतुर्भुजश्चाष्टभुजः सहस्रभुजमण्डितः ॥२९॥
स्रुवहस्तो दीर्घकेशो दीर्घो दम्भविवर्जितः।
देवो महोदधिर्दिव्यो दिव्यकीर्तिर्दिवाकरः ॥३०॥
उग्ररूप उग्रपतिरुग्रवक्षास्तपोमयः।
तपस्वी जटिलस्तापी तापहा तापवर्जितः ॥३१॥
हविर्हरो हयपतिर्हयदो हरिमण्डितः।
हरिवाही महौजस्को नित्यो नित्यात्मकोऽनलः ॥३२॥
संमानी संसृतिर्हारी सर्गी संनिधिरन्वयः।
विद्याधरो विमानी च वैमानिकवरप्रदः ॥३३॥

समनेत्र, समद्युति, समकाय, सरोवर, सरस्वान, सत्यवाक्, सत्य, सत्यरूप, सुधी, सुखी, सुराट्, सत्य, सत्यमती, रुद्र, रौद्रवपु, वसु, वसुमान, वसुधानाथ, वसुरूप,

वसुप्रद, ईशान, सर्वदेवेशान, सर्वबोधि, ईश, अवशेष, अवयवी, शेषशायी, श्रीपति, इन्द्र, चन्द्रावतंसी, चराचरजगत्स्थिति, स्थिर, स्थाणु, अणु, पीन, पीनवक्ष, परात्पर, पीनरूप, जटाधारी, जटाजूटसमाकुल, पशुरूप, पशुपति, पशुज्ञानी, पयोनिधि, वेद्य, वैद्य, वेदमय, विधिज्ञ, विधिमान, मृड, शूली, शुभङ्कर, शोभ्य, शुभकर्त्ता, शचीपति, शशाङ्कधवल, स्वामी, वज्री, शङ्खी, गदाधर, चतुर्भज, अष्टभुज, सहस्रभुज- मण्डित, स्रुवहस्त, दीर्घकेश, दीर्घ, दम्भविवर्जित, देव, महोदधि, दिव्य, दिव्यकीर्ति, दिवाकर, उग्ररूप, उग्रपति, उग्रवक्ष, तपोमय, तपस्वी, जटिल, तापी, तापहा, तापवर्जित, हवि, हर, हयपति, हयद, हरिमण्डित, हरिवाही, महौजस्क, नित्य, नित्यात्मक, अनल, समानी, संसृतिहारी, सर्गी, सन्निधिरन्वय, विद्याधर, विमानी, वैमानिक वरप्रद।।२३-३३।।

वाचस्पति(३००)र्वसासारो वामाचारी बलन्धरः ।
वाग्भवो वासवो वायुर्वासनाबीजमण्डितः ॥३४॥
वासी कोलश्रुतिर्दक्षो दक्षयज्ञविनाशनः ।
दाक्षो दौर्भाग्यहा दैत्यमर्दनो भोगवर्धनः ॥३५॥
भोगी रोगहरो हेयो हारी हरिविभूषणः ।
बहुरूपो बहुपतिर्बहुवित्तो विचक्षणः ॥३६॥
नृत्तकृच्चित्तसंतोषो नृत्तगीतविशारदः ।
शरद्वर्णविभूषाढ्यो गलदग्धोऽघनाशनः ॥३७॥
नागी नागमयोऽनन्तोऽनन्तरूपः पिनाकभृत् ।
नटनो हाटकेशानो वरीयांश्च विवर्णभृत् ॥३८॥
झाङ्कारी टङ्कहस्तश्च पाशी शार्ङ्गी शशिप्रभः ।
सहस्ररूपो समगुः साधूनामभयप्रदः ॥३९॥
साधुसेव्यः साधूगतिः सेवाफलप्रदो विभुः ।
सुमहा मद्यपो मत्तो मत्तमूर्तिः सुमन्तकः ॥४०॥
कीली लीलाकरो लूतो भवबन्धैकमोचनः ।
रोचिष्णुर्विष्णुरच्युतश्चूतनो नूतनो नवः ॥४१॥
न्यग्रोधरूपो भयदो भयहाऽभीतिधारणः ।
धरणीधरसेव्यश्च धराधरसुतापतिः ॥४२॥
धराधरोऽन्धकरिपुर्विज्ञानी मोहवर्जितः ।
स्थाणुकेशो जटी ग्राम्यो ग्रामारामो रमाप्रियः ॥४३॥

प्रियकृत् प्रियरूपश्च विप्रयोगी प्रतापनः ।
प्रभाकरः प्रभादीप्तो मन्युमान् मानवेष्टदः ॥४४॥
तीक्ष्णबाहुस्तीक्ष्णकरस्तीक्ष्णांशुस्तीक्ष्णलोचनः ।
तीक्ष्णचित्तस्त्रयीरूपस्त्रयीमूर्तिस्त्रयीतनुः ॥४५॥

वाचस्पति, वसासार, वामाचारी, बलन्धर, वाग्भव, वासव, वायु, वासनाबीज-मण्डित, वासी, कोलश्रुति, दक्ष, दक्षयज्ञविनाशन, दाक्ष, दौर्भाग्यहा, दैत्यमर्दन, भोग-वर्धन, भोगी, रोगहर, हेय, हारी, हरिविभूषण, बहुरूप, बहुपति, बहुवित्त, विचक्षण, नृत्तकृत्, चित्तसन्तोष, नृत्तगीतविशारद, शरद्वर्णविभूषाढ्य, गलदग्ध, अघनाशन, नागी, नागमय, अनन्त, अनन्तरूप, पिनाकभृत्, नटन, हाटकेश, ईशान, वरीयान, विवर्णभृत्, झाङ्कारी, टङ्कहस्त, पाशी, शार्ङ्गी, शशिप्रभ, सहस्त्ररूप, समगु, साधूनामभयप्रद, साधुसेव्य, साधुगति, सेवाफलप्रद, विभु, सुमहा, मद्यप, मत्त, मत्तमूर्ति, सुमन्तक, कीली, लीलाकर, लान्त, भवबन्धैकमोचन, रोचिष्णु, विष्णु, अच्युत, चूतन, नूतन, नव, न्यग्रोधरूप, भयद, भयहा, अभीतिधारण, धरणीधरसेव्य, धराधरसुतापति, धराधर, अन्धकरिपु, विज्ञानी, मोहवर्जित, स्थाणुकेश, जटी, ग्राम्य, ग्रामराम, रमाप्रिय, प्रिय-कृत्, प्रियरूप, विप्रयोगी, प्रतापन, प्रभाकर, प्रभादीप्त, मन्युमान, मानवेष्टद, तीक्ष्णबाहु, तीक्ष्यकर, तीक्ष्णांशु, तीक्ष्णलोचन, तीक्ष्णचित्त, त्रयीरूप, त्रयीमूर्ति, त्रयीतनु।।३४-४५।।

हविर्भुग् हविषां ज्योतिर्हालाहलो(४००)हलीपतिः ।
हविष्मल्लोचनो हालामयो हरितरूपभृत् ॥४६॥
प्रदिमाऽऽम्रमयो वृक्षो हुताशो हुतभुग् गुणी ।
गुणज्ञो गरुडो गानतत्परो विक्रमी क्रमी ॥४७॥
क्रमेश्वरः क्रमकरः क्रमिकृत् क्लान्तमानसः ।
महातेजा महामारो मोहितो मोहवल्लभः ॥४८॥
महस्वी त्रिदशो बालो बालापतिरघापहः ।
बाल्यो रिपुहरो हाही गाविर्गविमतोऽगुणः ॥४९॥
सगुणो वित्तराड् वीर्यो विरोचनो विभावसुः ।
मालामयो माधवश्च विकर्तनो विकत्थनः ॥५०॥
मानकृन्मुक्तिदोऽतुल्यो मुख्यः शत्रुभयङ्करः ।
हिरण्यरेताः सुभगः सतीनाथः सिरापतिः ॥५१॥
मेढ्री मैनाकभगिनीपतिरुत्तमरूपभृत् ।
आदित्यो दितिजेशानो दितिपुत्रक्षयङ्करः ॥५२॥

वसुदेवो महाभाग्यो विश्वाससुर्वसुप्रियः ।
समुद्रोऽमिततेजाश्च खगेन्द्रो विशिखी शिखी ॥५३॥
गरुत्मान् वज्रहस्तश्च पौलोमीनाथ ईश्वरः ।
यज्ञपेयो वाजपेयः शतक्रतुः शताननः ॥५४॥
प्रतिष्ठस्तीव्रविस्रम्भी गम्भीरो भाववर्धनः ।
गायिष्ठो मधुरालापो मधुमत्तश्च माधवः ॥५५॥
मायात्मा भोगिनां त्राता नाकिनामिष्टदायकः ।
नाकीन्द्रो जनको जन्यः स्तम्भनो रम्भनाशनः ॥५६॥
शङ्कर ईश्वर ईशः शर्वरीपतिशेखरः ।
लिङ्गाध्यक्षः सुराध्यक्षो वेदाध्यक्षो विचारकः ॥५७॥

हविर्भुक्, हविषां ज्योति, हालाहल, हलीपति, हविष्मल्लोचन, हालामय, हरितरूपभृत्, म्रदिम, आम्रमय, वृक्ष, हुताश, हुतभुक्, गुणी, गुणज्ञ, गरुड़, गानतत्पर, विक्रमी, क्रमी, क्रमेश्वर, क्रमकर, क्रमिकृत्, क्लान्तमानस, महातेज, महाभार, मोहित, मोहवल्लभ, महस्वी, त्रिदश, बाल, बालापति, अघापह, बाल्य, रिपुहर, हाही, गावि, गविमत, अगुण, सगुण, वित्तराड्, वीर्यविरोचन, विभावसु, मालामय, माधव, विकर्तन, विकत्थन, मानकृत, मुक्तिद, अतुल्य, मुख्य, शत्रुभयङ्कर, हिरण्यरेता, सुभग, सतीनाथ, सिरापति, मेढ्री, मैनाकभगिनीपति, उत्तमरूपभृत्, आदित्य, दितिजेशान, दितिपुत्रक्षयङ्कर, वसुदेव, महाभाग्य, विश्वावसु, वसुप्रिय, समुद्र, अमिततेज, खगेन्द्र, विशिखी, शिखी, गरुत्मान्, वज्रहस्त, पौलोमीनाथ, ईश्वर, यज्ञपेय, वाजपेय, शतक्रतु, शतानन, प्रतिष्ठ, तीव्रविस्रम्भी, गम्भीर, भाववर्धन, गायिष्ठ, मधुरालाप, मधुमत्त, माधव, मायात्मा, भोगिनांत्राता, नाकिनाम् इष्टदायक, नाकीन्द्र, जनक, जन्य, स्तम्भन, रम्भनाशन, शङ्कर, ईश्वर, ईश, शर्वरीपतिशेखर, लिङ्गाध्यक्ष, सुराध्यक्ष, वेदाध्यक्ष, विचारक।।४६-५७।।

भर्गो(५००)ऽनर्घ्यो नरेशानो नरवाहनसेवितः ।
चतुरो भविता भावी भावदो भवभीतिहा ॥५८॥
भूतेशो महितो रामो विरामो रात्रिवल्लभः ;
मङ्गलो धरणीपुत्रो धन्यो बुद्धिविवर्धनः ॥५९॥
जयी जीवेवश्वरो जारो जाठरो जह्नुतापनः ।
जह्नुकन्याधरः कल्पो वत्सरो मासरूपधृत् ॥६०॥
ऋतुर्ऋभूसुताध्यक्षो विहारी विहगाधिपः ।

शुक्लाम्बरो नीलकण्ठः शुक्लो भृगुसुतो भगः ॥६१॥
शान्तः शिवप्रदोऽभेद्योऽभेदकृच्छान्तकृत् पतिः ।
नाथो दान्तो भिक्षुरूपो दातृश्रेष्ठो विशांपतिः ॥६२॥
कुमारः क्रोधनः क्रोधी विरोधी विग्रही रसः ।
नीरसः सरसः सिद्धो वृषणी वृषघातनः ॥६३॥
पञ्चास्यः षण्मुखश्चैव विमुखः सुमुखीप्रियः ।
दुर्मुखो दुर्जयो दुःखी सुखी सुखविलासदः ॥६४॥
पात्री पौत्री पवित्रश्च भूतात्मा पूतनान्तकः ।
अक्षरं परमं तत्त्वं बलवान् बलघातनः ॥६५॥
भल्ली भौलिर्भवाभावो भावाभावविमोचनः ।
नारायणो मुक्तकेशो दिग्देवो धर्मनायकः ॥६६॥
कारामोक्षप्रदोऽजेयो महाङ्गः सामगायनः ।
तत्सङ्गमो नामकारी चारी स्मरनिसूदनः ॥६७॥
कृष्णः कृष्णाम्बरः स्तुत्यस्तारावर्णस्त्रपाकुलः ।
त्रपावान् दुर्गतित्राता दुर्गमो दुर्गघातनः(६००)॥६८॥

भर्ग, अनर्घ्य, नरेशान, नरवाहनसेवित, चतुर, भविता, भावी, भावद, भवभीतिहा, भूतेश, महित, राम, विराम, रात्रिवल्लभ, मङ्गल, धरणीपुत्र, धन्य, बुद्धिविवर्धन, जयी, जीवेश्वर, जार, जाठर, जह्नुतापन, जह्नुकन्याधर, कल्प, वत्सर, मासरूपधृत्, ऋतु, ऋभूसुताध्यक्ष, विहारी, विहगाधिप, शुक्लाम्बर, नीलकण्ठ, शुक्ल, भृगुसुत, भग, शान्त, शिवप्रद, अभेद्य, अभेदकृत्, शान्तकृत्, पति, नाथ, दान्त, भिक्षुरूप, दातृश्रेष्ठ, विशांपति, कुमार, क्रोधन, क्रोधी, विरोधी, विग्रही, रस, नीरस, सरस, सिद्ध, वृषणी, वृषघातन, पञ्चास्य, षण्मुख, विमुख, सुमुखीप्रिय, दुर्मुख, दुःखी, सुखी, सुखविलासद, पात्री, पौत्री, पवित्र, भूतात्मा, पूतनान्तक, अक्षर, परमतत्त्व, बलवान, बलघातन, भल्ली, भौलि, भवाभाव, भावाभावविमोचन, नारायण, मुक्तकेश, दिग्देव, धर्मनायक, कारामोक्षप्रद, अजेय, महाङ्ग, सामगायन, तत्सङ्गम, नामकारी, चारी, स्मरनिसूदन, कृष्ण, कृष्णाम्बर, स्तुत्य, तारावर्ण, त्रपाकुल, त्रपावान, दुर्गतित्राता, दुर्गम, दुर्ग-घातन।।५८-६८।।

महापादो विपादश्च विपदां नाशको नरः ।
महाबाहुर्महोरस्को महानन्दप्रदायकः ॥६९॥
महानेत्रो महादाता नानाशास्त्रविचक्षणः ।

महामूर्धा महादन्तो महाकर्णो महोरगः ॥७०॥
महाचक्षुर्महानासो महाग्रीवो दिगालयः ।
दिग्वासा दितिजेशानो मुण्डी मुण्डाक्षसूत्रभृत् ॥७१॥
श्मशाननिलयोऽरागी महाकटिरनूतनः ।
पुराणपुरुषोऽपारः परमात्मा महाकरः ॥७२॥
महालस्यो महाकेशो महोष्ठो मोहनो विराट् ।
महामुखो महाजङ्घो मण्डली कुण्डली नटः ॥७३॥
असपत्नः पत्रकरः पात्रहस्तश्च पाटवः ।
लालसः सालसः सालः कल्पवृक्षश्च कम्पितः ॥७४॥
कम्पहा कल्पनाहारी महाकेतुः कठोरकः ।
अनलः पवनः पाठः पीठस्थः पीठरूपकः ॥७५॥
पाठीनः कुलिशी पीनो मेरुधामा महागुणी ।
महातूणीरसंयुक्तो देवदानवदर्पहा ॥७६॥
अथर्वशीर्षः सोम्यास्यः ऋक्सहस्रामितेक्षणः ।
यजुःसाममुखो गुह्यो यजुर्वेदविचक्षणः ॥७७॥
याज्ञिको यज्ञरूपश्च यज्ञज्ञो धरणीपतिः ।
जङ्गमी भङ्गदो भाषादक्षोऽभिगमदर्शनः ॥७८॥
अगम्यः सुगमः खर्वः खेटी खेटाननो नयः ।
अमोघार्थः सिन्धुपतिः सैन्धवः सानुमध्यगः ॥७९॥
प्रतापी प्रजयी प्रातर्मध्याह्नसायमध्वरः ।
त्रिकालज्ञः सुगणकः पुष्करस्थः परोपकृत् ॥८०॥
उपकर्तापहर्ता च घृणी रणजयप्रदः (७००) ।

महापाद, विपाद, विपन्नाशक, नर, महाबाहु, महोरस्क, महानन्दप्रदायक, महानेत्र, महादाता, नानाशास्त्रविचक्षण, महामूर्धा, महादन्त, महाकर्ण, महोरग, महाचक्षु, महानास, महाग्रीव, दिगालय, दिग्वासा, दितिजेशान, मुण्डी, मुण्डाक्षसूत्रभृत्, श्मशान-निलय, अरागी, महाकटि, अनूतन, पुराणपुरुष, अपार, परमात्मा, महाकर, महालस्य, महाकेश, महोष्ठ, मोहन, विराट, महामुख, महाजङ्घ, मण्डली, कुण्डली, नट, असपत्न, पत्रकर, पात्रहस्त, पाटव, लालस, सालस, साल, कल्पवृक्ष, कम्पित, कम्पहा, कल्पनाहारी, महाकेतु, कठोरक, अनल, पवन, पाठ, पीठस्थ, पीठरूप, पाठीन, कुलिशी, पीन, मेरुधाम, महागुणी, महातूणीरसंयुक्त, देवदानवदर्पहा, अथर्व-

शीर्ष, सोम्यास्य, ऋक्सहस्रामितेक्षण, यजु:साममुख, गुह्य, यजुर्वेदविचक्षण, याज्ञिक, यज्ञरूप, यज्ञज्ञ, धरणीपति, जङ्गमी, भङ्गद, भाषादक्ष, अभिगमदर्शन, अगम्य, सुगम, खर्व, खेटी, खेटानन, नय, अमोघार्थ, सिन्धुपति, सैन्धव, सानुमध्यग, प्रतापी, प्रजयी, प्रातर्मध्याह्नसायमध्वर, त्रिकालज्ञ, सुगणक, पुष्करस्थ, परोपकृत्, उपकर्ता, अपहर्ता, घृणि, रणजयप्रद।।६९-८१।।

धर्मी चर्माम्बरश्चारुरूपश्चारुविभूषणः ॥८१॥
नक्तञ्चरः कालवशी वशी वशिवरोऽवशः ।
वश्यो वश्यकरो भस्मशायी भस्मविलेपनः ॥८२॥
भस्माङ्गी मलिनाङ्गश्च मालामण्डितमूर्धजः ।
गणकार्यः कुलाचारः सर्वाचारः सखा समः ॥८३॥
साकारो गोत्रभिद् गोप्ता भीमरूपो भयानकः ।
अरुणश्चैकचिन्त्यश्च त्रिशङ्कुः शङ्कुधारणः ॥८४॥
आश्रमी ब्राह्मणो वज्री क्षत्रियः कार्यहेतुकः ।
वैश्यः शूद्रः कपोतस्थः त्वष्टा तुष्टो रुषाकुलः ॥८५॥
रोगी रोगापहः शूरः कपिलः कपिनायकः ।
पिनाकी चाष्टमूर्तिश्च क्षितिमान् धृतिमांस्तथा ॥८६॥
जलमूर्तिर्वायुमूर्तिर्हुताशः सोममूर्तिमान् ।
सूर्यदेवो यजमान आकाशः परमेश्वरः ॥८७॥
भवहा भवमूर्तिश्च भूतात्मा भूतभावनः ।
भवः शर्वस्तथा रुद्रः पशुनाशश्च शङ्करः ॥८८॥
गिरिजो गिरिजानाथो गिरीन्द्रश्च महेश्वरः ।
गिरीशः खण्डहस्तश्च महानुग्रो गणेश्वरः ॥८९॥
भीमः कपर्दी भीतिज्ञः खण्डपश्चण्डविक्रमः ।
खण्डभृत् खण्डपरशुः कृत्तिवासा विषापहः ॥९०॥
कङ्कालः कलनाकारः श्रीकण्ठो नीललोहितः ।
गणेश्वरो गुणी नन्दी धर्मराजो दुरन्तकः ॥९१॥
भृङ्गिरीटी रसासारो दयालू रूपमण्डितः ।
अमृतः कालरुद्रश्च कालाग्निः शशिशेखरः(८००)॥९२॥

धर्मी, चर्माम्बर, चारुरूप, चारुविभूषण, नक्तञ्चर, कालवशी, वशिवर, अवश, वश्य, वश्यकर, भस्मशायी, भस्मविलेपन, भस्माङ्गी, मलिनाङ्ग, मालामण्डितमूर्धज,

गणकार्य, कुलाचार, सर्वाचार, सखा, सम, साकार, गोत्रभिद्, गोप्ता, भीमरूप, भयानक, अरुण, एकचिन्त्य, त्रिशङ्कु, शङ्कुधारण, आश्रमी, ब्राह्मण, वज्री, क्षत्रिय, कार्यहेतुक, वैश्य, शूद्र, कपोत, त्वष्टा, तुष्ट, रुषाकुल, रोगी, रोगापह, शूर, कपिल, कपिनायक, पिनाकी, अष्टमूर्ति, क्षितिमान, धृतिमान, जलमूर्ति, वायुमूर्ति, हुताश, सोममूर्ति, सूर्यदेव, यजमान, आकाश, परमेश्वर, भवहा, भवमूर्ति, भूतात्मा, भूतभावन, भव, शर्व, रुद्र, पशुनाथ, शङ्कर, गिरिजा, गिरिजानाथ, गिरीन्द्र, महेश्वर, गिरीश, खण्डहस्त, महानुग्र, गणेश्वर, भीम, कपर्दी, भीतिज्ञ, खण्डप, चण्डविक्रम, खण्डभृत्, खण्डपरशु, कृत्तिवासा, विषापह, कङ्काल, कलनाकार, श्रीकण्ठ, नीललोहित, गणेश्वर, गुणी, नन्दी, धर्मराज, दुरन्तक, भृङ्गिरीटी, रसासार, दयालु, रूपमण्डित, अमृत, कालारुद्र, कालाग्नि, शशिशेखर।।८२-९२।।

सद्योजातः सुर्णमुञ्जमेखली दुर्निमित्तहृत्।
दुःस्वप्नहृत् प्रसहनो गुणिनादप्रतिष्ठितः ॥९३॥
शुक्लस्त्रिशुक्लः सम्पन्नः शुचिर्भूतनिषेवितः।
यज्ञरूपो यज्ञमुखो यजमानेष्टदः शुचिः ॥९४॥
धृतिमान् मतिमान् दक्षो दक्षयज्ञविघातकः।
नागहारी भस्मधारी भूतिभूषितविग्रहः ॥९५॥
कपाली कुण्डली भर्गः भक्तार्तिभञ्जनो विभुः।
वृषध्वजो वृषारूढो धर्मवृषविवर्धकः ॥९६॥
महाबलः सर्वतीर्थः सर्वलक्षणलक्षितः।
सहस्रबाहुः सर्वाङ्गः शरण्यः सर्वलोककृत् ॥९७॥
पवित्रस्त्रिककुन्मन्त्रः कनिष्ठः कृष्णपिङ्गलः।
ब्रह्मदण्डविनिर्माता शतघ्नीपाशशक्तिमान् ॥९८॥
पद्मगर्भो महागर्भो ब्रह्मगर्भो जलोद्भवः।
देवासुरविनिर्माता देवासुरपरायणः ॥९९॥
देवासुरगुरुर्देवो देवासुरनमस्कृतः।
गुहप्रियो गणसेव्यः पवित्रः सर्वपावनः ॥१००॥
ललाटाक्षो विश्वदेवो दमनः श्वेतपिङ्गलः।
विमुक्तिर्मुक्तितेजस्को भक्तानां परमा गतिः ॥१०१॥
देवातिदेवो देवर्षिर्देवासुरवरप्रदः।
कैलासगिरिवासी च हिमवद्गिरिसंश्रयः ॥१०२॥

नाथपूज्यः सिद्धनुत्यो नवनाथसमर्चितः ।
कपर्दी कल्पकृद् रुद्रः सुमना धर्मवत्सलः ॥१०३॥
वृषाकपिः कल्पकर्ता नियतात्मा निराकुलः ।
नीलकण्ठो धनाध्यक्षो नाथः प्रमथनायकः ॥१०४॥
अनादिरन्तरहितो भूतिदो भूतिविग्रहः ।
सेनाकल्पो महाकल्पो योगो युगकरो हरिः ॥१०५॥
युगरूपो महारूपो महागीतो महागुणः ।
विसर्गो लिङ्गरूपश्च पवित्रः पापनाशनः(९००)॥१०६॥

सद्योजात, सुर्णमुञ्ज, मेखली, दुर्निमित्तहृत्, दुःस्वप्नहृत्, प्रसहन, गुणिनाद-प्रतिष्ठित, शुक्ल, त्रिशुक्ल, सम्पन्न, शुचि, भूतनिषेवित, यज्ञरूप, यज्ञमुख, यजमानेष्टद, शुचि, धृतिमान, मतिमान्, दक्ष, दक्षयज्ञविघातक, नागहारी, भस्मधारी, भूतिभूषितविग्रह, कपाली, कुण्डली, भर्ग, भक्तार्तिभञ्जन, विभु, वृषध्वज, वृषारूढ, धर्मवृषविवर्धक, महाबल, सर्वलक्षणलक्षित, सहस्रबाहु, सर्वाङ्ग, शरण्य, सर्वलोककृत्, पवित्र, त्रिककुत्, मन्त्र, कनिष्ठ, कृष्णपिङ्गल, ब्रह्मदण्डविनिर्माता, शतघ्नीपाशशक्तिमान, पद्मगर्भ, महागर्भ, ब्रह्मगर्भ, जलोद्भव, देवासुरविनिर्माता, देवासुरपरायण, देवासुरगुरुदेव, देवासुरनमस्कृत, गुहप्रिय, गणसेव्य, पवित्र, सर्वपावन, ललाटाक्ष, विश्वदेव, दमन, श्वेतपिङ्गल, विमुक्ति, मुक्तितेजस्क, भक्तानां परमागति, देवातिदेव, देवर्षि, देवासुरवरप्रद, कैलाशगिरिवासी, हिमवद्गिरिसंश्रय, नाथपूज्य, सिद्धनुत्य, नवनाथसमर्चित, कपर्दी, कल्पकृत्, रुद्र, सुमना, धर्मवत्सल, वृषाकपि, कल्पकर्ता, नियतात्मा, निराकुल, नीलकण्ठ, धनाध्यक्ष, नाथप्रमथनायक, अनादि, अन्तरहित, भूतिद, भूतिविग्रह, सेनाकल्प, महाकल्प, योग, युगकर, हरि, युगरूप, महारूप, महागीत, महागुण, विसर्ग, लिङ्गरूप, पवित्र, पापनाशन।।९३-१०६।।

ईड्यो महेश्वरः शम्भुर्देवसिंहो नरर्षभः ।
विबुधोऽग्रवरः सूक्ष्मः सर्वदेवस्तपोमयः ॥१०७॥
सुयुक्तः शोभनो वज्री देवानां प्रभवोऽव्ययः ।
गुहः कान्तो निजसर्गः पवित्रः सर्वपावनः ॥१०८॥
शृङ्गी शृङ्गप्रियो बभ्रू राजराजो निरामयः ।
देवासुरगणाध्यक्षो नियमेन्द्रियवर्धनः ॥१०९॥
त्रिपुरान्तकः श्रीकण्ठस्त्रिनेत्रः पञ्चवक्त्रकः ।
कालहृत् केवलात्मा च ऋग्यजुःसामवेदवान् ॥११०॥

ईशानः सर्वभूतानामीश्वरः सर्वरक्षसाम्।
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिस्तथा ॥१११॥
ब्रह्मा शिवः सदानन्दी सदानन्तः सदाशिवः।
मे-अस्तुरूपश्चार्वङ्गो गायत्रीरूपधारणः ॥११२॥
अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यश्च।
सर्वतः शर्वसर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः ॥११३॥
वामदेवस्तथा ज्येष्ठः श्रेष्ठः कालः करालकः।
महाकालो भैरवेशो वेशी कलविकरणः ॥११४॥
बलविकरणो बालो बलप्रमथनस्तथा।
सर्वभूतादिदमनो देवदेवो मनोन्मनः ॥११५॥
सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमः।
भवे भवे नातिभवे भजस्व मां भवोद्भवः ॥११६॥
भावनो भवनो भाव्यो बलकारी परं पदम्।
परः शिव परो ध्येयः परं ज्ञानं परात्परः ॥११७॥
पारावारः पलाशी च मांसाशी वैष्णवोत्तमः।
ॐऐंह्लींश्रींह्सौः देवो ॐश्रींहौं भैरवोत्तमः ॥११८॥
ॐह्रां नमः शिवायेति मन्त्रो वटुर्वरायुधः।
ॐह्रीं सदाशिवः ॐह्रीं आपदुद्धारणो मनुः ॥११९॥
ॐह्रीं महाकरालास्यः ॐह्रीं वटुकभैरवः।
भगवांस्त्र्यम्बक ॐह्रीं ॐह्रीं चन्द्रार्धशेखरः ॥१२०॥
ॐह्रीं सञ्जटिलो धूम्रो ॐह्रीं त्रिपुरघातनः।
ह्रांह्रींह्रुं हरिवामाङ्गः ॐह्रींह्रूंह्रीं त्रिलोचनः ॥१२१॥
ॐ वेदरूपो वेदज्ञ ऋग्यजुःसाममूर्तिमान्।
रुद्रो घोररवोऽघोरो ॐ क्ष्म्यूं अघोरभैरवः ॥१२२॥
ॐजुंसः पीयूषसक्तोऽमृताध्यक्षोऽमृतालसः।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ॥१२३॥
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।
ॐहौंजुंसः ॐभूर्भुवः स्वः ॐजुंसः मृत्युञ्जयः॥१२४॥

ईड्य, महेश्वर, शम्भु, देवसिंह, नरर्षभ, विबुध, अग्रवर, सूक्ष्म, सर्वदेव, तपोमय, सुयुक्त, शोभन, वज्री, देवप्रभव, अव्यय, गुह, कान्त, निजसर्ग, पवित्र, सर्वपावन,

शृङ्गी, शृङ्गप्रिय, वभ्रू, राजराज, निरामय, देवासुरगणाध्यक्ष, नियमेन्द्रियवर्धन, त्रिपुरान्तक, श्रीकण्ठ, त्रिनेत्र, पञ्चवक्त्र, कालहृत्, केवलात्मा, ऋग्यजु-साम-वेदवान, ईशान, सर्वभूतनामीश्वर, सर्वरक्षसामीश्वर, ब्रह्माधिपति, ब्रह्मपति, ब्रह्मणोऽधिपति, ब्रह्मा, शिव, सदानन्दी, सदानन्त, सदाशिव, मे अस्तुरूप, चार्वाङ्ग, गायत्रीरूपधारण, अघोरेभ्योऽथघोरेभ्य, घोरघोरतेरभ्यः, सर्वतः शर्वसर्वेभ्यः, नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः, वामदेव, ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, काल, कराल, महाकाल, भैरवेश, वेशी, कलविकरण, बलविकरण, बाल, बलप्रमथन, सर्वभूतादिदमन, देवदेव, मनोन्मन, सद्योजातं प्रपद्यामि, सद्योजाताय वै नमः, भवे भवे नातिभवे, भवस्व मां भवोद्भव, भावन, भवन, भाव्य, बलकारी, परं पद, परःशिव, परध्येय, परज्ञान, परात्पर, पारावार, पलाशी, मांसाशी, वैष्णवोत्तम, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः देव, ॐ श्रीं हौं भैरवोत्तम, ॐ ह्रां नमः शिवाय मन्त्र, वटुर्वरायुध, ॐ ह्रीं सदाशिव, ॐ ह्रीं आपदुद्धारण मन्त्र, ॐ ह्रीं महाकरालास्य, ॐ ह्रीं वटुकभैरव, भगवान्, त्र्यम्बक, ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं चन्द्रार्धशेखर, ॐ ह्रीं सञ्जटिल, धूम्र, ॐ ह्रीं त्रिपुरघातन, ह्रां ह्रीं हुं हरिवामाङ्ग, ॐ ह्रीं हूं ह्रीं त्रिलोचन, ॐ वेदरूप, वेदज्ञ, ऋग्यजुः-साममूर्तिमान, रुद्र, घोरख, अघोर, ॐ क्ष्म्यूं अघोरभैरव, ॐ जुं सः, पीयूषसक्त, अमृताध्यक्ष, अमृतालस, ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्युर्मुक्षीय मामृतात्, ॐ हौः जुं सः, ॐ भुर्भुवःस्वः, ॐ जुं सः मृत्युञ्जय।।१०७-१२४।।

सहस्रनाममाहात्म्यम्

इदं नाम्नां सहस्रं तु रहस्यं परमाद्भुतम्।
सर्वस्वं नाकिनां देवि जन्तूनां भुवि कथा॥१२५॥
तव भक्त्या मयाख्यातं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्।
गोप्यं सहस्रनामेदं साक्षादमृतरूपकम्॥१२६॥
यः पठेत् पाठयेद्वापि श्रापयेच्छृणुयात् तथा।
मृत्युञ्जयस्य देवस्य फलं तस्य शिवे शृणु॥१२७॥

माहात्म्य—यह सहस्रनाम रहस्य परम अद्भुत है। स्वर्गवासियों का सर्वस्व है तो संसार के लोगों का तो क्या कहना? तुम्हारी भक्ति के कारण इसका वर्णन मैंने किया है। यह तीनों लोकों में दुर्लभ है। यह गोप्य सहस्रनाम साक्षात् अमृतरूप है। मृत्युञ्जय देव के इस सहस्रनाम का जो पाठ करता है या पाठ करवाता है, सुनाता है और सुनता है, उसके फल का वर्णन सुनो।।१२५-१२७।।

लक्ष्म्या कृष्णो धिया जीवो प्रतापेन दिवाकरः।
तेजसा वह्निदेवस्तु कवित्वे चैव भार्गवः॥१२८॥

शौर्येण हरिसङ्काशो नीत्या द्रुहिणसन्निभः ।
ईश्वरत्वेन देवेशि मत्समः किमतः परम् ॥१२९॥

वह व्यक्ति लक्ष्मी के समान धनी, कृष्ण जैसा बुद्धिमान और वह व्यक्ति सूर्य के समान प्रतापी होता है। अग्नि जैसा तेजस्वी, शुक्र के समान कवि, शौर्य में विष्णुतुल्य, द्रुहिण के समान नीतिज्ञ एवं ईश्वरत्व में वह मेरे समान होता है। इससे श्रेष्ठ और क्या हो सकता है?॥१२८-१२९॥

यः पठेदर्धरात्रे च साधको धैर्यसंयुतः ।
पठेत् सहस्रनामेदं सिद्धिमाप्नोति साधकः ॥१३०॥
चतुष्पथे चैकलिङ्गे मरुदेशे वनेऽजने ।
श्मशाने प्रान्तरे दुर्गे पाठात् सिद्धिर्न संशयः ॥१३१॥

जो साधक धैर्यपूर्वक आधी रात में इसका पाठ करता है, उसे सिद्धि मिल जाती है। चौराहे पर, एकलिङ्ग के समीप, मरुभूमि में, निर्जन जंगल में, श्मशान में, प्रान्तर में या दुर्ग में जो इसका पाठ करता है, उसे सिद्धि मिलने में कोई शङ्का नहीं करनी चाहिये।।१३०-१३१।।

नौकायां चौरसङ्घे च सङ्कटे प्राणसंक्षये ।
यत्र यत्र भये प्राप्ते विषवह्निभयादिषु ॥१३२॥
पठेत् सहस्रनामाशु मुच्यते नात्र संशयः ।
भौमावस्यां निशीथे च गत्वा प्रेतालयं सुधीः ॥१३३॥
पठित्वा स भवेद् देवि साक्षादिन्द्रोऽर्चितः सुरैः ।
शनौ दर्शदिने देवि निशायां सरितस्तटे ॥१३४॥
पठेन्नामसहस्रं वै जपेदष्टोत्तरं शतम् ।
सुदर्शनो भवेदाशु मृत्युञ्जयप्रसादतः ॥१३५॥

नौका डूबने के भय में, चोरसमूह में, प्राण जाने-योग्य संकट में, जहाँ-जहाँ भय हो, विषभय हो, अग्निभय हो, इन समस्त भयों से इस सहस्रनाम के पाठ से छुटकारा मिल जाता है। मङ्गलकारी अमावस्या के निशीथ काल में श्मशान में जाकर जो साधक इसका पाठ करता है, वह देवताओं द्वारा अर्चित साक्षात् इन्द्र होता है। शनिवारी अमावस्या की रात में नदी के किनारे जो इस सहस्रनाम का पाठ करके १०८ बार मन्त्र का जप करता है, वह मृत्युञ्जय की कृपा से देखने में सुन्दर होता है।।१३२-१३५।।

दिगम्बरो मुक्तकेशः साधको दशधा पठेत्।
इह लोके भवेद्राजा परे मुक्तिर्भविष्यति ॥१३६॥
इदं रहस्यं परमं भक्त्या तव मयोदितम्।
मन्त्रगर्भं मनुमयं न चाख्येयं दुरात्मने ॥१३७॥

जो साधक नङ्गे वदन केश खोलकर इसका दश पाठ करता है, वह संसार में राजा के समान होता है और परलोक में मोक्ष प्राप्त करता है। हे देवि! तुम्हारी परम भक्ति की वजह से इसके रहस्य का मैंने उद्घाटन किया है। यह मन्त्रगर्भ और मन्त्रमय है। दुष्टात्मा को इसे नहीं बतलाना चाहिये।।१३६-१३७।।

नो दद्यात् परशिष्येभ्यः पुत्रेभ्योऽपि विशेषतः।
रहस्यं मम सर्वस्वं गोप्यं गुप्ततरं कलौ ॥१३८॥
षणमुखस्यापि नो वाच्यं गोपनीयं तथात्मनः।
दुर्जनाद् रक्षणीयं च पठनीयमहर्निशम्।
श्रोतव्यं साधकमुखाद्रक्षणीयं स्वपुत्रवत् ॥१३९॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये मृत्युञ्जयसहस्रनामनिरूपणं नाम चतुश्चत्वारिंशः पटलः॥४४॥

यदि अपना पुत्र भी परशिष्य हो तो उसे भी इसे नहीं बतलाना चाहिये। कलियुग में मेरा सर्वस्व यह रहस्य गोप्य से भी गुप्ततर है। षड़ानन को भी इसे नहीं बतलाना चाहिये। आत्मीय जनों से भी इसे गुप्त रखना चाहिये। दुर्जनों से इसकी रक्षा करनी चाहिये। बराबर इसका पाठ करना चाहिये। इसे साधकों के मुख से सुनना चाहिये और पुत्रवत् इसकी रक्षा करनी चाहिये।।१३८-१३९।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में मृत्युञ्जयसहस्रनाम निरूपण नामक चतुश्चत्वारिंश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ पञ्चचत्वारिंशः पटलः

मृत्युञ्जयस्तोत्रम्

स्तोत्रमाहात्म्यम्

श्रीभैरव उवाच

देवि वक्ष्यामि ते स्तोत्रं सर्वसिद्धिप्रदायकम्।
मूलमन्त्रैकसर्वस्वं रक्षणीयं प्रयत्नतः ॥१॥
दीक्षाकालं च पूजायां जपान्ते च पठेच्छिवे।
विसर्जने तथाह्वाने स दीक्षाफलमप्नुयात् ॥२॥

मृत्युञ्जय स्तोत्र और माहात्म्य—श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! अब मैं मूल मन्त्र के सर्वस्वभूत सर्वसिद्धिप्रदायक, यत्नपूर्वक रक्षणीय स्तोत्र का वर्णन करता हूँ। दीक्षाकाल में, पूजा में, जप के अन्त में, विजर्सन में, आवाहन में इसका पाठ करने से साधक को दीक्षा का फल प्राप्त होता है।।१-२।।

विनियोगः

अस्य वै स्तोत्रराजस्य ऋषिर्भैरव ईश्वरि।
गायत्र्यं छन्द इत्युक्तं महामृत्युञ्जयः शिवे ॥३॥
देवता प्रणवो बीजं शक्तिः शक्तिः स्मृता शिवे।
हृज्जं कीलकमित्युक्तं सूर्यो दिग्बन्धनं तथा।
भोगापवर्गसिद्ध्यर्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ॥४॥

विनियोग—हे ईश्वरि! इस स्तोत्रराज के ऋषि भैरव एवं छन्द गायत्री कहे गये हैं। हे शिवे! इसके देवता महामृत्युञ्जय हैं। बीज प्रणव (ॐ), शक्ति सः एवं जुं कीलक कहा गया है। सूर्य से इसका दिग्बन्धन किया जाता है। भोग एवं अपवर्ग भी सिद्धि के लिये पाठ में इसका विनियोग किया जाता है।।३-४।।

ध्यानम्

चन्द्रार्काग्निविलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तःस्थितं
मुद्रापाशसुधाक्षसूत्रविलसत्पाणिं हिमांशुप्रभम्।
कोटीरेन्दुगलत्सुधाप्लुततनुं हारादिभूषोज्ज्वलं
कान्त्या विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयं भावये ॥५॥

पीयूषांशुसुधामणिः करतले पीयूषकुम्भं वहन्
पीयूषद्युतिसंपुटान्तरगतः पीयूषधाराधरः ।
मां पीयूषमयूखसुन्दरवपुः पीयूषलक्ष्मीसखः
पीयूषद्रववर्षणोऽप्यहरहः प्रीणातु मृत्युञ्जयः ॥६॥
देवं दिनेशाग्निशशाङ्कनेत्रं पीयूषपात्रं कलशं दधानम् ।
दोर्भ्यां सुधांशुद्युतिमिन्दुचूडं नमामि मृत्युञ्जयमादिदेवम् ॥७॥

ध्यान—विश्वमोहन पशुपति मृत्युञ्जय के चेहरे पर मुस्कान है। चन्द्र-सूर्य-अग्नि उनके तीन नेत्र हैं। दो हाथों में कमल और दूसरे हाथों में मुद्रा, पाश, सुधाकलश और अक्षसूत्र है। चन्द्रमा के समान उनकी प्रभा है। करोड़ चन्द्रों से गिरते हुए अमृत से उनका शरीर तर है। हार आदि भूषण उज्ज्वल हैं। मोहनी कान्ति है। अमृत प्रभायुक्त सुधामणि करतल में है। अमृत कलश लिये हुए हैं। पीयूष द्युति-सम्पुटित करतल में अमृत-धाराधारी हैं। पीयूषमयूख सुन्दर शरीर, पीयूषलक्ष्मीसखा निरन्तर पीयूषवर्षी मृत्युञ्जय मुझ पर प्रसन्न हों। देव के नेत्र सूर्य-चन्द्र-अग्नि हैं। हाथ में अमृतकलश है। भुजाओं पर स्थित चन्द्रचूड़ा से सुधाकिरणें छिटक रही हैं। इस प्रकार के आदिदेव मृत्युञ्जय को मैं प्रणाम करता हूँ।।५-७।।

स्तोत्रम्

चन्द्रमण्डलमध्यस्थं रुद्रं बालेन्दुशेखरम् ।
भद्रासनं स्मरेद्रात्रौ मृत्युं प्राप्तोऽपि जीवति ॥८॥
चन्द्रमण्डलमध्यस्थं रुद्रं भालेऽतिविस्तृते ।
तत्रस्थं चिन्तयेत् साध्यं मृत्युं प्राप्तोऽपि जीवति ॥९॥
मात्राद्यं मातृकामौलिवेदकल्पतरोः फलम् ।
यो जपेत् स भवेद्विश्ववैभवास्पदमीश्वरि ॥१०॥
हृज्जबीजं कुलाचारविचारकुशलः शिवः ।
यो जपेत् तस्य वक्त्राब्जे नरीनर्त्ति हि भारती ॥११॥

स्तोत्र—रात में चन्द्रमण्डल के मध्य में वालेन्दुशेखर रुद्र का भद्रासन में विराजमान रूप का ध्यान करने से मृतक भी जीवित हो उठता है। वेद कल्पवृक्ष का फल, मातृका मौलि आद्यबीज ॐ का जो जप करता है, वह विश्व के समस्त वैभव का अधिपति हो जाता है। कुलाचार-विचारनिपुण जो साधक 'जुं' का जप करता है। उसके मुखकमल में सरस्वती नर्तनरत रहती हैं।।८-११।।

सविसर्गं शक्तिबीजं यो जपेत् साधकः शिव।
स भवेदचिरादेव विश्वैश्वर्यस्य भाजनम् ॥१२॥
देवेशाकाशबीजं ते बिन्दुबिम्बेन्दुमण्डितम्।
चिन्तयन् यो भवेच्चित्ते स शिवाद्वयतां लभेत् ॥१३॥
सविसर्गं भृगुं भर्ग सर्गप्रलयकारणम्।
निसर्गतो भजेद्योऽन्तर्लीयते स परे पदे ॥१४॥

जो साधक शक्तिबीज 'सः' का जप करता है, वह अल्पकाल में विश्व के समस्त ऐश्वर्य का स्वामी हो जाता है। जो साधक देवेश के 'हौं' बीज का जप करता है और हृदय में शिव का चिन्तन करता है, वह शिवस्वरूप हो जाता है। सृष्टि-प्रलयकारक भर्ग 'सः' का जो जप करता है, वह परम पद में लीन हो जाता है।।१२-१४।।

लक्ष्मीशब्दाक्षरं बिन्दुभूषणं यो जपेत् तव।
करे लक्ष्मीर्मुखे वाणी तस्य शम्भो रणे जयः ॥१५॥
पालयेति युगं देव यो जपेद्वीरसन्निधौ।
स सार्वभौमसाम्राज्यं भजेदन्ते सलोकताम् ॥१६॥
शरदं वरदां वीरसाधनीं सविसर्गकाम्।
जपेद्यः शरदम्भोदधवलं तद्यशो भ्रमेत् ॥१७॥
आकाशबीजं साकाशं जपेद्यः कुशसंस्तरे।
स कौलिकशिरोरत्नरञ्जिताङ्घ्रियुगो भवेत् ॥१८॥

'सं' का जप जो साधक करता है, उसके हाथ में लक्ष्मी एवं मुख में सरस्वती का वास होता है, युद्ध में उसकी विजय होती है। जो वीर साधक देव की सन्निधि में 'पालय-पालय' का जप करता है, उसे सार्वभौम साम्राज्य प्राप्त होता है और अन्त में वह शिव-लोक प्राप्त करता है। वरदा वीरसाधनी 'सः' का जो जप करता है, उसकी कीर्ति शरत्कालीन श्वेत मेघ के समान भ्रमण करती है। कुशासन पर बैठकर जो 'हौं' का जप करता है, वह कौलिकों का शिरमौर होता है और सबका प्रणम्य हो जाता है।।१५-१८।।

शङ्काबीजं सरेफं ते शम्भो पद्मासने जपेत्।
कङ्कालमालाभरणो भविता भैरवोपमः ॥१९॥
हज्जबीजं जगद्बीजं तेजोरूपं च यो जपेत्।
तस्मै दास्यसि भोः शम्भो निजं धाम सनातनम् ॥२०॥
ॐकारं साकारं गिरिश तव मन्त्राञ्चलगतं
जपेद् यो हृत्पद्मे निरुपमपरानन्दमुदितः।

स साम्राज्यं भूमौ भजति रजनीनायककला-
लसन्मौलिः प्रान्ते व्रजति शिवसायुज्यपदवीम् ॥२१॥

कङ्कालमालाधारी पद्मासनस्थ शिव का ध्यान करते हुये जो 'सः' का जप करता है, वह भैरवतुल्य हो जाता है। ज्योतिर्मय जगद्बीज 'जुं' का जो जप करता है, उसे शिव जी अपने सनातन धाम में वास देते हैं। अपने हृदयकमल में निरुपम परानन्द में आनन्दित मन्त्राञ्चलगत 'हौं' का जप जो साधक करता है और चन्द्रशेखर का ध्यान करता है, वह पृथ्वी पर साम्राज्य प्राप्त करता है और अन्त में शिवसायुज्य प्राप्त करता है।।१९-२१।।

बिन्दुभूषणरकोणरसार-सारणस्फुरदजारणवृत्ते ।
भूगृहाढ्य इति चक्रमण्डले त्वां निषण्णमुषसि स्मराम्यहम् ॥२२॥
नानाविधानार्घ्यविभूषणाढ्यं निःशेषपीयूषमयूखबिम्बे ।
निषण्णमीशानमशेषशेषवाणीतनुं मृत्युहरं नमामि ॥२३॥

हे देवि! बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल, तीन वृत्त, भूपुर से युक्त श्रीचक्र में उषाकाल में जो तुम्हारा ध्यान करता है, उसे मैं स्मरण करता हूँ। नानाविध विभूषणों से समन्वित, निःशेष पियूष मुखबिम्ब में अवस्थित ईशान के अशेष-शेष वाणी के शरीरधारी मृत्यु का हरण करने वाले मृत्युञ्जय को मैं प्रणाम करता हूँ।।२२-२३।।

इति स्तोत्रं दिव्यं सकलमनुराजैकनिकषं
पठेद्यः पूजान्ते शिव शिवगृहे वार्चनविधौ ।
रणे जित्वा वैरीन् भजति नृपलक्ष्मीं स्वमहसा
भवेदन्ते वीरः सकलसुरसेव्यः शिवसमः ॥२४॥

सभी मन्त्रराजों के कसौटी स्वरूप इस दिव्य स्तोत्र का पाठ जो पूजा के अन्त में शिवमन्दिर में अर्चनविधि से करता है, वह युद्ध में वैरियों को जीतकर राज्यलक्ष्मी से युक्त होता है। वह वीर साधक अन्त में सभी देवताओं के सेव्य शिवतुल्य होता है।

फलश्रुतिः

इतीदं परमं स्तोत्रं महामृत्युञ्जयप्रियम् ।
पठेद्वा पाठयेन्नित्यं सर्वस्वं देवदुर्लभम् ॥२५॥
अदेयं परमं तत्त्वं महापातकनाशनम् ।
महामन्त्रमयं दिव्यं साधनैर्धनसाधनम् ॥२६॥
त्रैलोक्यसारभूतं च त्रैलोक्याभयदायकम् ।
पठेन्निशीथे मन्त्री तु सद्यः सिद्धिर्भवेत् कलौ ॥२७॥

फलश्रुति—यह स्तोत्र महामृत्युञ्जय को परम प्रिय है। जो इसका नित्य पाठ करता है या पाठ करवाता है, वह देवदुर्लभ सभी वस्तुओं को प्राप्त कर लेता है। यह परम तत्त्व अदेय है। महापापों का विनाशक है। महा मन्त्रमय है, दिव्य है। धन-प्राप्ति का साधन है। यह तीनों लोंकों का सार है। तीनों लोकों में अभयदायक है। साधक यदि निशीथ में इसका पाठ करे तो कलियुग में उसे शीघ्र सिद्धि मिलती है।।२५-२७।।

चतुष्पथेऽर्धरात्रे तु ब्राह्मये वापि मुहूर्तके।
पठित्वा कौलिको देवि भवेद् भैरवसन्निभः ॥२८॥
इतीदं मम सर्वस्वं रहस्यं परमाद्भुतम्।
यस्य कस्य न वक्तव्यमित्याज्ञा पारमेश्वरी ॥२९॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये मृत्युञ्जयस्तोत्रनिरूपणं नाम पञ्चचत्वारिंशः पटलः॥४५॥

आधी रात में चौराहे पर या ब्राह्म मुहूर्त में जो कौलिक इसका पाठ करता है, वह भैरवतुल्य हो जाता है। यह परम अद्भुत रहस्य मेरा सर्वस्व है। हे परमेश्वरि! मेरा आदेश है कि इसे जिस-किसी को नहीं बतलाना चाहिये।।२२-२९।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में मृत्युञ्जयस्तोत्र निरूपणं नामक पञ्चचत्वारिंश पटल पूर्ण हुआ।

●

समाप्तमिदं मृत्युञ्जयपञ्चाङ्गम्

श्रीदुर्गापञ्चाङ्गम्

अथ षट्चत्वारिंशः पटलः

श्रीदुर्गापटलम्

दुर्गापञ्चाङ्गावतारः

श्रीदेव्युवाच

भगवन् सर्वतत्त्वज्ञ साधकानां जयावह।
यत् पुरा सूचितं देव दुर्गापञ्चाङ्गमुत्तमम्॥१॥
सर्वस्वं सर्वदेवानां रहस्यं सर्वमन्त्रिणाम्।
तदद्य कृपया ब्रूहि यद्यस्ति मयि ते दया॥२॥

श्रीदुर्गा पञ्चाङ्ग—श्री देवी ने कहा—भगवन्! आप सभी तत्त्वों के ज्ञाता और साधकों को जय देने वाले हैं। आपने पहले जिस दुर्गा-पञ्चाङ्ग का जिक्र किया था, जो सभी देवों का सर्वस्व है, सभी साधकों के लिये रहस्य है; यदि मुझपर आपकी दया हो तो कृपया आज उसी को सुनाइये।।१-२।।

श्रीभैरव उवाच

एतद् गुह्यतमं देवि पञ्चाङ्गं तत्त्वलक्षणम्।
दुर्गायाः सारसर्वस्वं न कस्य कथितं मया॥३॥
तव स्नेहात् प्रवक्ष्यामि दुर्गापञ्चाङ्गमीश्वरि।
गुह्यं गोप्यतमं दिव्यं न देयं ब्रह्मवादिभिः॥४॥

श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! तत्त्वलक्षण से युक्त यह पञ्चाङ्ग गुह्यतम है। दुर्गा के सार का सर्वस्व है। इसे मैंने किसी से नहीं कहा है। हे ईश्वरि! तुम्हारे स्नेहवश इस दुर्गा-पञ्चाङ्ग का वर्णन करता हूँ। यह गुह्य, गोप्यतम, दिव्य है और ब्रह्मवादियों से भी कहने के लायक नहीं है।।३-४।।

या देवी दैत्यदमनी दुर्गेत्यष्टाक्षरा शिवा।
देवैराराधिता पूर्वं ब्रह्माच्युतपुरःसरैः॥५॥
पुरन्दरहितार्थाय वधार्थाय सुरद्विषाम्।
सैवं सृजति भूतानि राजसी परमेश्वरी॥६॥

सात्त्विकी रक्षति प्रान्ते संहरिष्यति तामसी।
इत्थं गुणत्रयीरूपा सृष्टिस्थितिलयात्मिका ॥७॥
अष्टाक्षरी महाविद्या संख्यातीता परात्मिका।
तस्याः पञ्चाङ्गमधुना रहस्यं त्रिदिवौकसाम् ॥८॥
वक्ष्यामि परमप्रीत्या न चाख्येयं दुरात्मने।
पटलं तव वक्ष्यामि दुर्गायास्तत्त्वमुत्तमम् ॥९॥
येन श्रवणमात्रेण कोटिपूजाफलं लभेत्।

दैत्य-दमनी दुर्गा देवी का अष्टाक्षर मन्त्र पूर्वकाल में ब्रह्मा, विष्णु और देवताओं द्वारा आराधित है। यह राजसी परमेश्वरी इन्द्र की भलाई और देवताओं के वैरियों के विनाश के लिये रूप धारण करती है। सात्विकी रूप से सृष्टि की रक्षा करती है और तामसी रूप से संहार करती है। यह त्रिगुणात्मिका देवी सृष्टि, स्थिति और प्रलय करती है। यह अष्टाक्षरी महाविद्या संख्यातीता और परात्मिका है। उसी देवी का पञ्चाङ्ग वर्तमान में देवों के लिये भी रहस्य बना हुआ है। उसी दुर्गापञ्चाङ्ग को तुम्हारे स्नेहवश मैं कहता हूँ। दुष्टों के सामने इसे नहीं कहना चाहिये। सर्वप्रथम दुर्गा के उत्तम तत्त्वरूप पटल का वर्णन करता हूँ, जिसके श्रवणमात्र से ही करोड़ पूजा का फल प्राप्त होता है।।५-९।।

दुर्गामन्त्रोद्धारः

दुर्गाया देवि वक्ष्यामि मन्त्रोद्धारं पराश्रयम्।
सर्वतन्त्रेष्वविख्यातं सर्वकामफलप्रदम् ॥१०॥
तारं माया चाक्रिकं चक्रिदूर्वा वायव्यार्णं विश्वमन्ते भवानि ।
दुर्गायास्ते वर्णितो मूलविद्यामन्त्रोद्धारो गोपितोऽष्टाक्षरोऽयम् ॥११॥
नास्यान्तरायबाहुल्यं नाप्यमित्रादिदूषणम्।
नो वा प्रयाससंयोगो नाचारयुगविप्लवः ॥१२॥
साक्षात् सिद्धिप्रदो मन्त्रो दुर्गायाः कलिनाशनः।
अष्टाक्षरोऽष्टसिद्धीशो गोपनीयो दिगम्बरैः ॥१३॥

दुर्गामन्त्रोद्धार—हे देवि! समस्त तन्त्रों में गुप्त रूप से विद्यमान एवं समस्त कामनाओं को प्रदान करने वाले पराश्रय दुर्गा के मन्त्रोद्धार का मैं निरूपण करता हूँ। तार = ॐ, माया = ह्रीं, चक्री = दुं, चक्रिदूर्वा वायव्यार्ण = दुर्गाय, विश्वं = नमः के योग से मन्त्रस्पष्ट होता है—ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः। यह दुर्गा की मूल विद्या है। इस

अष्टाक्षर मन्त्र का उद्धार गोपित है। इस मन्त्र की साधना में अन्तराय की बहुलता नहीं होनी चाहिये। इसमें अरिदोष विचारणीय नहीं है। न प्रयास का संयोग है, न आचार युग-विप्लव है। दुर्गा का यह मन्त्र साक्षात् सिद्धिदायक है और कलि का विनाशक है। इसके आठ अक्षर अष्ट सिद्धियों के स्वामी हैं और दिगम्बरों से गोपनीय हैं।।१०-१३।।

दुर्गामन्त्रपुरश्चर्याविधिः

महाचीनक्रमस्थानां साधकानां जयावहः।
मन्त्रराजो महादेवि सद्यो भोगापवर्गदः ॥१४॥
वर्णलक्षं पुरश्चर्या तदर्धं वा महेश्वरि।
एकलक्षावधिं कुर्यान्नातो न्यूनं कदाचन ॥१५॥
मूलोत्कीलनसिद्धं तु सञ्जीवनसुसंस्कृतम्।
पुरश्चर्यां चरेत् पश्चात् संपुटाढ्यं चरेन्मनुम् ॥१६॥
ततो मन्त्रं जपेन्नित्यं दुर्गायास्त्वष्टसिद्धिदम्।
यं जप्त्वा साधको भूमौ विचरेद्भैरवो यथा ॥१७॥

पुरश्चरण-विधि—महाचीन क्रमाचारी साधकों के लिये यह जयप्रद है। हे महा-देवि! यह मन्त्रराज तत्काल भोग-अपवर्गप्रदायक है। वर्ण लक्ष के अनुसार पुरश्चरण के लिये इसका जप आठ लाख या उसका आधा चार लाख या एक लाख करना चाहिये। इससे कम कदापि नहीं करना चाहिये। मूल मन्त्र को उत्कीलन और सञ्जीवन से सुसंस्कृत करके पुरश्चरण करना चाहिये। इसके बाद इसे सम्पुट से सुशोभित करना चाहिये। इसके बाद दुर्गा के अष्ट सिद्धिदायक मन्त्र का जप नित्य करना चाहिये। इसके जप से साधक पृथ्वी पर भैरव के समान विचरण करता है।।१४-१७।।

दुर्गामन्त्रर्ष्यादयः

ऋषिरस्य स्मृतो देवि मन्त्रस्याद्यो महेश्वरः।
छन्दोऽनुष्टुब् देवता च श्रीदुर्गाष्टाक्षरा स्मृता ॥१८॥
चाक्रिकं बीजमीशानि माया शक्तिरिति स्मृता।
तारं कीलकमाशानां विश्वं बन्धनमीश्वरि ॥१९॥
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः।

विनियोग—हे देवि! इस मन्त्र के ऋषि आद्य महेश्वर, छन्द अनुष्टुप्, देवता श्रीदुर्गा, बीज दुं, शक्ति ह्रीं एवं कीलक ॐ है। नमः से इसका बन्धन किया जाता है

एवं धर्म-अर्थ-काम-मोक्षरूप पुरुषार्थचतुष्टय की प्राप्ति-हेतु इसका विनियोग किया जाता है।।१८-१९।।

तारमायाक्षरैर्देवि न्यासं षड्दीर्घभागिभि: ॥२०॥
निहत्य षड्रिपून् देवि ध्यायेद् दुर्गां कुलेश्वरीम्।

ॐ ह्रीं के षडदीर्घ से इसका न्यास करे; जैसे—ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नम:। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नम:। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नम:। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नम:। ॐ ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नम:। ॐ ह्र: करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:।

तत्पश्चात् षडङ्ग न्यास कर; जैसे—ॐ ह्रां हृदयाय नम:। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुं। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्र: अस्त्राय फट्। काम-क्रोधादि षड्रिपुओं का विनाश करके दुर्गा देवी का ध्यान करे।।२०।।

ध्यानम्

दूर्वानिभां त्रिनयनां विलसत्किरीटां
शङ्खाब्जखड्गशरखेटकशूलचापान् ।
संतर्जनीं च दधतीं महिषासनस्थां
दुर्गां नवारकुलपीठगतां भजेऽहम् ॥२१॥

ध्यान—कुलेश्वरी दुर्गा का वर्ण दूर्वा के समान है। उनके तीन नेत्र हैं एवं माथे पर किरीट शोभित है। आठ हाथ हैं। उनमें शङ्ख, कमल, खड्ग, वाण, खेट, शूल, धनुष और सन्तर्जनी है। महिषासन पर शोभित हैं। दुर्गा नवयोन्यात्मक पीठ पर स्थित हैं। उनके इस रूप का ध्यान मैं करता हूँ।।२१।।

दुर्गायन्त्रम्

यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि दुर्गाया: कुलमन्दिरम्।
सर्वसिद्धिप्रदं चक्रं सर्वाशापरिपूरकम् ॥२२॥
बिन्दुत्रिकोणं रसकोणबिम्बं वृत्ताष्टपत्राञ्चितवह्निवृत्तम्।
धरागृहोद्भासितामिन्दुचूडे दुर्गाश्रयं यन्त्रमिदं प्रदिष्टम् ॥२३॥

यन्त्रोद्धार—अब मैं कुलमन्दिर दुर्गायन्त्र के उद्धार का वर्णन करता हूँ। यह चक्र सभी सिद्धियों का दाता और सभी आशाओं को पूरा करने वाला है। इस यन्त्र में बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल, वृत्तत्रय और भूपुर का अङ्कन होता है। यह यन्त्र चन्द्रचूड़ दुर्गा का आश्रय कहा गया है।।२२-२३।।

दुर्गायन्त्रम्
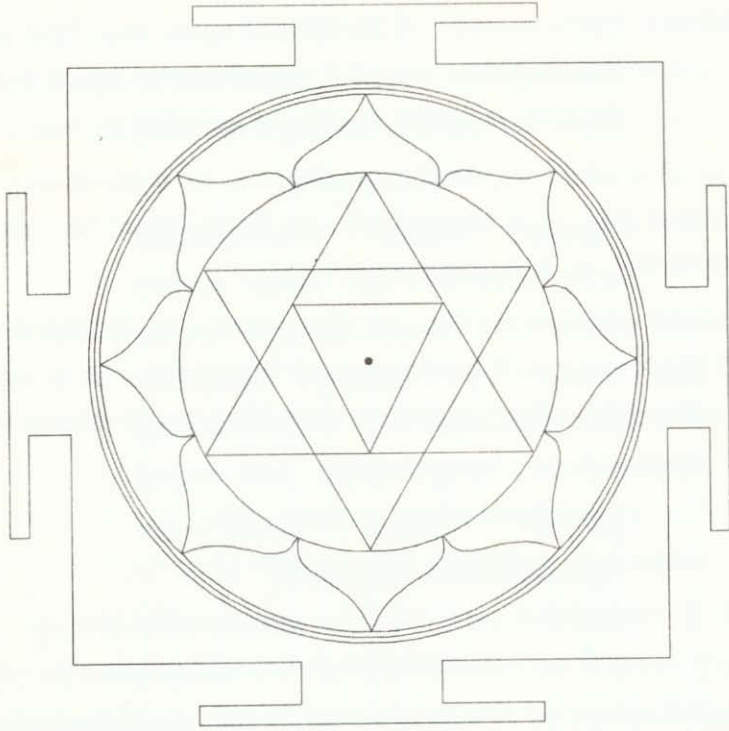
दुर्गालयाङ्गम्

लयाङ्गमस्य यन्त्रस्य सर्वतन्त्रेषु गोपितम्।
येनोच्चारणमात्रेण कोटियज्ञफलं लभेत्॥२४॥
गणेशं च कुमारं च पुष्पदन्तं विकर्त्तनम्।
चतुर्द्वारिषु देवेशि पूजयेत् साधकेश्वरः॥२५॥
ब्राह्मी नारायणी देवि चामुण्डाप्यपराजिता।
माहेश्वरी च कौमारी वाराही नारसिंहिका॥२६॥

लयाङ्गपूजन—इस यन्त्र का लयाङ्ग सभी तन्त्रों में गोपित है। इसके उच्चारणमात्र से करोड़ यज्ञ का फल प्राप्त होता है। हे देवेशि! भूपुर के चारो द्वारों पर गणेश, कुमार, पुष्पदन्त एवं विकर्तन की पूजा करे। अष्टदल में ब्राह्मी, नारायणी, चामुण्ड, अपराजिता, माहेश्वरी, कौमारी, वाराही एवं नारसिंही का पूजन करे।।२४-२६।।

पूज्या वसुदले देवि भैरवांश्चाष्ट पार्वति।
असिताङ्गो रुरुश्चण्डः क्रोधोन्मत्तकपालिकाः॥२७॥

भीषणश्चैव संहारो वामावर्तेन साधकैः ।
पूज्याः पृथक् पृथग् देवि गन्धपुष्पाक्षतैः शिवे ॥२८॥
दत्त्वा पुष्पाञ्जलिं चक्रे मूलमुच्चार्य साधकः ।
पूजयेत् पद्मकिञ्जल्कैः षडश्रे षट् कुलाम्बिकाः ॥२९॥
शैलपुत्रीं स्ववामाग्रात् पूजयेद् ब्रह्मचारिणीम् ।
चण्डघण्टां च कूष्माण्डां स्कन्दमातरमीश्वरि ॥३०॥
कात्यायनीं च संपूज्य दूर्वागन्धाक्षतैः परम् ।
पुनः पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा श्रीचक्रे परमार्थदे ॥३१॥
पूजयेद् देवतास्तिस्रः कुलस्थास्त्रिपुराम्बिकाः ।
कालरात्री महागौरी देवदूतीति पार्वति ॥३२॥

अष्टदल के अग्रभाग में भैरवाष्टक की पूजा करे। ये हैं—असिताङ्ग, रुरु, चण्ड, क्रोध, उन्मत्त, कपाली, भीषण और संहारभैरव। इनका पूजन वामावर्त से करे। इनका पूजन पृथक्-पृथक् गन्धाक्षत-पुष्पों से करे। चक्र में पुष्पाञ्जलि देकर मूलमन्त्र का उच्चारण करे। षट्कोण में छः कुलदेवियों का पूजन करे। ये छः देवियाँ हैं—शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता और कात्यायनी। इनका पूजन अपने वामाग्र से प्रारम्भ करके इन्हें दूर्वा-गन्ध-अक्षत अर्पण करे। फिर यन्त्र पर पुष्पाञ्जलि देकर त्रिपुराम्बिका कुलस्थ परमार्थप्रद तीन देवताओं का पूजन त्रिकोण के कोनों में करे। ये हैं—कालरात्रि, महागौरी और देवदूती।।२७-३२।।

त्रिकोणाग्राच्छिवे पूज्याः सिन्दूराक्षतपुष्पकैः ।
दूर्वादलाञ्जलिं दत्त्वा यन्त्रराजेऽष्टसिद्धिदे ॥३३॥
पूजयेदम्बिकां दुर्गामष्टाक्षरविभूषणाम् ।
बिन्दौ देवीमष्टभुजां विद्यामष्टाक्षरीं शिवे ॥३४॥
नीलकण्ठं शिवं बिन्दौ पूजयेज्जगदम्बिकाम् ।
तत्रायुधानि देवेशि पूजयेदष्ट साधकः ॥३५॥
शङ्खं पद्ममसिं बाणान् धनुः खेटकमीश्वरि ।
शूलं संतर्जनीं दिव्यां नानापुष्पैः समर्चयेत् ॥३६॥
देवदेव्यौ बिन्दुपीठे पूजयेत् सर्वसिद्धये ।

इनका पूजन सिन्दूर, अक्षत, पुष्प से करे। इष्ट-सिद्धि के लिये दूर्वादल की अञ्जलि यन्त्र पर देवे। तब बिन्दु में आठ भुजी आठ मन्त्राक्षरों से विभूषित जगदम्बिका दुर्गा का पूजन करे। बिन्दु में ही नीलकण्ठ शिव का पूजन करे। तब साधक देवी के आठ आयुधों

का पूजन करे। आठ आयुध हैं—शङ्ख, पद्म, तलवार, वाण, धनुष, मूशल, त्रिशूल एवं सन्तर्जनी। इनका अर्चन विविध सुन्दर फूलों से करे। बिन्दुपीठ में देव और देवी का पूजन करे। इससे सभी प्रकार की सिद्धियाँ मिलती हैं।।२७-३६।।

दुर्गामन्त्रस्याष्टौ प्रयोगाः

अथ वक्ष्ये महादेवि प्रयोगानष्ट सिद्धये ॥३७॥
यान् विधाय कलौ मन्त्री भवेत् कल्पद्रुमोपमः ।
स्तम्भनं मोहनं चैव मारणाकर्षणे ततः ॥३८॥
वशीकारं तथोच्चाटं शान्तिकं पौष्टिकं तथा ।
एषां साधनमाचक्षे प्रयोगाणां महेश्वरि ॥३९॥
महाचीनक्रमस्थानां साधकानां हिताय च ।

आठ प्रयोग—हे महादेवि! सिद्धि के लिये अब दुर्गामन्त्र के आठ प्रयोगों का वर्णन करता हूँ, जिसकी साधना करके साधक कलियुग में कल्पवृक्ष के समान हो जाता है। वे आठ प्रयोग हैं—स्तम्भन, मोहन, मारण, आकर्षण, वशीकरण, उच्चाटन, शान्ति और पुष्टि। हे महेश्वरि! इनके साधन और प्रयोग का वर्णन करता हूँ। इससे महाचीनाचारी साधकों का हितसाधन होता है।।३७-३९।।

स्तम्भनम्

अयुतं प्रजपेन्मूलं श्मशाने निशि साधकः ॥४०॥
हुनेद् दशांशतः सर्पिर्यवान्मांसासृगच्युतान् ।
स्तम्भनं जायते क्षिप्रं वादिकामिजनाम्भसाम् ॥४१॥

स्तम्भन—रात में श्मशान में साधक दश हजार मन्त्र का जप करे। जप का दशांश एक हजार हवन गोघृत, यव, रुधिर एवं चूते हुए मांस से करे। इससे वैरी, कामीजन और बादलों का शीघ्र स्तम्भन होता है।।४०-४१।।

मोहनम्

अयुतं प्रजपेद् देवि वटे रुद्राक्षमालया ।
होमो दशांशतः कार्यो घृतपद्माक्षपङ्कजैः ॥४२॥
आरग्वधैः सुधामूलैर्मोहनं जायते क्षणात् ।
देवानां दानवानां च का कथाल्पधियां नृणाम् ॥४३॥

मोहन—वटवृक्ष के नीचे रुद्राक्ष की माला से दश हजार जप करे। तदनन्तर घी, पद्माक्ष, कमल, आरग्वध (सेमल) और गिलोय की जड़ से एक हजार हवन करने से

क्षण भर में ही देव और दैत्यों का भी जब मोहन हो जाता है तो अल्प बुद्धि वाले मनुष्यों के बारे में तो कहना ही क्या है।।४२-४३।।

मारणम्

अयुतं प्रजपेन्मूलं वने साधकसत्तमः।
वेतसीमूलगो वापि हुनेत् तत्र दशांशतः ॥४४॥
घृतपायसशम्बूकान् रिपुर्मृत्युमुखं व्रजेत्।

मारण—श्रेष्ठ साधक जङ्गल में मूल मन्त्र का जप दश हजार करे या यह जप वेंत के मूल में करे। पुनः एक हजार हवन घी, पायस और घोंघा से करे। इससे शत्रु मृत्यु के मुख में चला जाता है।।४४।।

आकर्षणम्

अयुतं प्रजपेद्रात्रौ शून्यागारे कुलेश्वरि ॥४५॥
होमो दशांशतः कार्यो घृतव्योषशटीशरैः।
कपिबीजैरपि प्रातर्भवेदाकर्षणं स्त्रियाम् ॥४६॥

आकर्षण—सूने घर में रात में दश हजार जप करे। एक हजार हवन घी, काली मिर्च, पीपल, सोंठ, कचूर, खश और करञ्जबीज से करे। ऐसा करने से प्रातः स्त्रियों का आकर्षण होता है।।४५-४६।।

वशीकरणम्

अयुतं प्रजपेन्मूलं चत्वरे त्वरितं हुनेत्।
आज्याब्जक्षुरपाषाण्डरक्तपुष्पाणि पार्वति ॥४७॥
शक्रोऽपि वशतामेति किं पुनः क्षुद्रभूमिपः।

वशीकरण—चतुर्मास में दश हजार जप करे। एक हजार हवन गोघृत, कमल, पशु-खुर के टुकड़ों एवं लाल फूलों से करे। इससे इन्द्र भी वश में हो जाता है तब क्षुद्र भूपालों के बारे में तो कहना ही क्या है।।४७।।

उच्चाटनम्

अयुतं प्रजपेन्मूलं साधकोऽश्वत्थमूलगः ॥४८॥
हुनेदाज्यं दशांशेन केशं स्त्रीणां त्वचं कणाः।
रिपुमुच्चाटयेत् शीघ्रं यदि शक्रसमो भवेत् ॥४९॥

उच्चाटन—पीपल की जड़ के निकट बैठकर दश हजार मन्त्र का जप करे। एक

हजार हवन गोघृत, स्त्रियों के केश एवं त्वक्-चूर्ण से करे। इससे इन्द्र के समान बलवान शत्रु का भी उच्चाटन हो जाता है।।४८-४९।।

शान्तिः

अयुतं प्रजपेन्मूलं सुरद्रुमतले हुनेत्।
घृताक्तकुक्कुटाङ्गानि नानापुष्पाणि साधकः ॥५०॥
रोगोपद्रवकालस्य सद्यः शान्तिर्भविष्यति।

शान्ति—देववृक्ष के नीचे बैठकर दश हजार मन्त्र-जप करे। तत्पश्चात् साधक घृत में भीगे कुक्कुट के अङ्गों और विविध फूलों से दशांश हवन करे। इससे तुरन्त रोगोपद्रव काल की शान्ति होती है।।५०।।

पुष्टिः

अयुतं प्रजपेन्मूलं लीलोपवनमण्डले ॥५१॥
होमो दशांशतः कार्यो घृतमीनाजमस्तकैः।
पादैरष्टभिरीशानि सद्यः पुष्टिः प्रजायते ॥५२॥

पुष्टि—लीला उपवनमण्डल में मूल मन्त्र का जप दश हजार करे। एक हजार हवन घी एवं मत्स्यमुण्ड से मन्त्र के आठों पदों से अलग-अलग करे। हे ईशानि! इससे शीघ्र ही पुष्टि प्राप्त होती है।।५१-६२।।

पटलोपसंहारः

इत्येष पटलो दिव्यो मन्त्रसर्वस्वरूपवान्।
दुर्गारहस्यभूतोऽपि गोपनीयो मुमुक्षुभिः ॥५३॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये दुर्गापटलनिरूपणं नाम षट्चत्वारिंशः पटलः॥४६॥

यह पटल दिव्य मन्त्रसर्वस्व का स्वरूप है एवं दुर्गा का रहस्यस्वरूप है। यह सर्वथा गोपनीय है और मुमुक्षुओं को भी देय नहीं है।।५३।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में दुर्गापटल निरूपण नामक षट्चत्वारिंश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ सप्तचत्वारिंशः पटलः

दुर्गापूजापद्धतिः

श्रीभैरव उवाच

श्रृणु पार्वति वक्ष्यामि पद्धतिं गद्यरूपिणीम्।
यस्याः श्रवणमात्रेण कोटियज्ञफलं लभेत्॥१॥

दुर्गा पद्धति—श्री भैरव ने कहा कि हे पार्वति! सुनो, अब मैं गद्यरूपिणी दुर्गा-पद्धति को कहता हूँ, जिसके सुनने से ही करोड़ यज्ञ का फल प्राप्त होता है॥१॥

ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय, बद्धपद्मासनः स्वशिरःस्थसहस्राराधोमुखकमल-कर्णिकान्तर्गतं निजगुरुं श्वेतवर्णं श्वेतालङ्कारालंकृतं द्विभुजं स्वशक्त्या श्वेताम्बरभूषितया वामाङ्के सहितं ध्यात्वा, मानसैरुपचारैः संपूज्य दण्डवत् प्रणमेत्।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुः साक्षान्महेश्वरः।
गुरुरेव जगत् सर्वं तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

इति नत्वा तदाज्ञां गृहीत्वा बहिरागत्य मलमूत्रादि संत्यज्य, वर्णोक्तं शौचं विधाय नद्यादौ गत्वा सुकूर्चं द्वादशाङ्गुलं दन्तधावनं कुर्यात्। 'ॐक्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः' इति दन्तान् विशोध्य, चाक्रिकबीजेन गडूषषट्कं विधाय, प्रणवेन मुखं त्रिः प्रोक्ष्य 'ॐह्रां मणिधरि वज्रिणि शिखापरिसरे रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा' इति शिखां बद्ध्वा तत्त्वत्रये-णाचम्य मूलेन प्राणायामं विधाय, मलापकर्षणं स्नानं कृत्वा मन्त्रस्नानं चरेत्।

ब्राह्म मुहूर्त में उठकर, पद्मासन में बैठकर अपने शिर में स्थित अधोमुख सहस्त्रदल कमल की कर्णिका में अपने गुरु का ध्यान करे। उनके वस्त्र श्वेत हैं। श्वेत अलङ्कारों से

अलंकृत हैं। उनके दो हाथ हैं। श्वेत वस्त्रधारिणी उनकी शक्ति उनके वामाङ्ग में है। इस प्रकार का ध्यान करके मानसोपचारों से उनका पूजन करके दण्डवत् प्रणाम करे और निम्नांकित स्तोत्रों का पाठ करे—

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुः साक्षान्महेश्वरः।
गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

इस प्रकार प्रणाम करके उनसे आज्ञा लेकर घर से बाहर जाकर मल-मूत्र का त्याग करे। वर्णोक्त शौच क्रिया करे। नदी आदि जलाशय पर जाकर 'हूं' मन्त्रोचारणपूर्वक बारह अँगुल के दतुवन से दन्तशोधन करे।

दतुवन करने के बाद 'दुं' से छः कुल्ला करे। 'ॐ' कहकर मुख-प्रक्षालन तीन बार करे। 'ॐ ह्रां मणिधरि वज्रिणि शिखापरिसरे रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा' से शिखा बाँधे। आत्मतत्त्वाय नमः, विद्यातत्त्वाय नमः, शिवतत्त्वाय नमः से आचमन करके मूल मन्त्र से प्राणायाम करे। मलापकर्षण स्नान करे। मन्त्र-स्नान करे।

ततो मूलेन मृदमानीय जलं प्रोक्षयेत्। मन्त्रमृदा सूर्यमण्डलं विचिन्त्य 'गङ्गे च यमुने चेति' तीर्थान्यावाह्य जले यन्त्रं विभाव्य सनीलकण्ठां दुर्गामावाहयेत्। तत्र षडङ्गं विधाय देवीं सशिवां ध्यात्वा, मूलं यथा-शक्त्या जप्त्वा त्रिर्निमज्ज्योन्मज्जेत्। तत्र कुम्भमुद्रां बद्ध्वा स्वमूर्ध्नि देवदेव्यौ जलेन स्नपयित्वा 'ॐह्रांह्रींसः मार्तण्डभैरवाय प्रकाशशक्ति-सहिताय एष तेऽर्घो नमः'। इति सूर्यायार्घ्यत्रयं दत्त्वा वासोऽन्यत् परिधाप्य, तत्त्वत्रयेणाचम्य त्रिः प्राणायामं विधाय, पूर्वसंध्यां कृत्वा, षडङ्गं कृत्वा, चुलकेन जलमादाय तत्त्वमुद्रयाच्छाद्य यंरंलंवंहं इति त्रिरभिमन्त्र्य मूलमुच्चरंस्तद्गलितोदकबिन्दुभिः सप्तधा स्वशिरस्यभ्युक्ष्य, सव्यहस्ते शेषमुदकं धृत्वा इडयान्तर्नीत्वा देहान्तः पापं प्रक्षाल्य पिङ्गलया विरेच्य, पुरःकल्पितवज्रशिलायां वामतः फडिति निक्षिपेत्। इत्यघमर्षणं विधाय पूर्ववदाचम्य, जले यन्त्रं ध्यात्वा मूलं यथाशक्त्या जप्त्वा, मूलविद्यान्ते साङ्गे सवाहने सायुधे सपरिच्छदे श्रीनीलकण्ठसहिते मातर्दुर्गे तृप्यतामित्यष्टवारं संतर्प्य नीलकण्ठं त्रिः संतर्प्य, एकैकाञ्जलिना परि-

वारदेवताः संतर्प्य, देवदेव्यौ हृदि ध्यात्वा, जले चतुरश्रं विलिख्य, तत्रेशानादिक्रमेण गुरुपङ्क्तिं संतर्प्य देवीं गायत्रीं जपेत्। ॐह्रींदुं दुर्गायै विद्महे अष्टाक्षरायै धीमहि तन्नः चण्डी प्रचोदयात्। इति यथाशक्त्या प्रजप्य गायत्र्यानया देवदेवयोरर्घ्यत्रयं दत्त्वा जपं समर्प्य, यागमण्डपमागच्छेदिति सन्ध्याविधिः।

तब मूल मन्त्र बोलकर मिट्टी लेकर जल से प्रोक्षण करे। मिट्टी को मन्त्रित करे। उसमें सूर्यमण्डल का चिन्तन करे। 'गङ्गे च यमुने चैव' से तीर्थों का आवाहन करे। जल में यन्त्र की कल्पना करके उसमें नीलकण्ठ के सहित दुर्गा का आवाहन करे। तब षडङ्ग न्यास करके शिवसहित देवी का ध्यान करे। मूलमन्त्र का यथाशक्ति जप करके तीन बार जल में डुबकी लगाये। कुम्भमुद्रा से अपने मूर्धा पर देव-देवी को जल से स्नान कराये। तब 'ॐ ह्रां ह्रीं सः मार्तण्डभैरवाय प्रकाशशक्तिसहिताय एष ते अर्घो नमः' बोलते हुए सूर्य को तीन बार अर्घ्य प्रदान करे। दूसरा वस्त्र धारण करे। तत्त्वत्रय से आचमन करे। तीन प्राणायाम करे। पूर्व सन्ध्या करके षडङ्ग न्यास करे। चुल्लू में जल लेकर तत्त्वमुद्रा से आच्छादन करे। 'यं रं लं वं हं' के तीन जप से अभिमन्त्रित करे। मूल मन्त्र का उच्चारण करते हुए चुल्लू से गिरते जल की बूँदों से अपने शिर का अभ्युक्षण सात बार करे। शेष जल बाँयें हाथ में लेकर इड़ा नाडी से श्वास द्वारा हृदय के भीतर खींचकर देह के अन्दर के पाप का प्रक्षालन करे। पिङ्गला नाड़ी से उसका विरेचन करे। दाँयीं हथेली में लेकर अपने सामने कल्पित वज्रशिला पर 'फट्' कहते हुए पटक दे।

इस प्रकार अघमर्षण करके पूर्ववत् आचमन करे। जल में यन्त्र का ध्यान करके मूल मन्त्र का यथाशक्ति जप करे। मूल मन्त्र बोलकर यह बोले—साङ्गे सवाहने सायुधे सपरिच्छदे श्रीनीलकण्ठसहिते मातर्दुर्गे तृप्यताम्। इस मन्त्र से आठ बार तर्पण करे। नीलकण्ठ का तर्पण तीन बार करे। देव-देवी का हृदय में ध्यान करे। जल में चतुरस्र अंकित करके उसमें ईशान आदि के क्रम से गुरुपंक्ति का तर्पण करे। गायत्री का जप करे—'ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै विद्महे अष्टाक्षरायै धीमहि तन्नः चण्डी प्रचोदयात्'। यथाशक्ति जप के बाद इस गायत्री से देवदेव को तीन अर्घ्य प्रदान करे। जप को समर्पित करे। तब यागमण्डप के पास आये। यही सन्ध्याविधि है।

ततो गृहमागत्य पादौ प्रक्षाल्य द्वारदेवताः पूजयेत्। ॐगांगूं गणेशाय नमः पूर्वे। ॐक्षांह्रीं वटुकाय नमो दक्षिणे। ॐक्षांक्षैं क्षेत्रपालाय नमः पश्चिमे। ॐयांयूं योगिनीभ्यो नमः उत्तरे। गं गङ्गायै नमो देहल्यां। यां यमुनायै नमः अधः। सौः सरस्वत्यै नमो मध्ये। इति संपूज्य, गृहान्तः

प्रविश्य यथार्हमासनं शोधयेत्। आं आसनशोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवा, आसनमन्त्रणे विनियोगः। ॐप्रीं पृथिव्यै नमः।

महि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥
ॐध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे ।
ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विश्वामसि ॥

ॐआं आधारशक्तये नमः। मं मूलप्रकृत्यै नमः। अं अनन्ताय नमः। पं पद्माय नमः। प्रीं पद्मनालाय नमः। तत्रोपविश्य तालत्रयं कुर्यात्।

घर पर आकर पैरों को धोकर द्वारदेवता का पूजन करे। पूरब में 'ॐ गां गूं गणेशाय नमः' से गणेश का पूजन करे। दक्षिण में 'ॐ क्षां ह्रीं वटुकाय नमः' से वटुक का पूजन करे। 'ॐ क्षां क्षैं क्षेत्रपालाय नमः' से क्षेत्रपाल का पूजन पश्चिम में करे। 'ॐ यां यूं योगिनीभ्यो नमः' से योगिनियों का पूजन उत्तर में करे। 'ॐ गङ्गायै नमः' से देहली में, 'यां यमुनायै नमः' से द्वार के नीचले भाग में, 'सौं सरस्वत्यै नमः' से सरस्वती का मध्य में पूजन करे। इस प्रकार पूजन के बाद गृह में प्रवेश करे। यथोपचित आसन का शोधन करे।

आं आसनशोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसनमन्त्रणे विनियोगः। ॐ प्रीं पृथिव्ये नमः।

महि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।
ॐ ध्रुवा द्यौः ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे।
ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विश्वामसि।।

ॐ आं आधारशक्तये नमः। मं मूल प्रकृत्यै नमः। अं अनन्ताय नमः। पं पद्माय नमः। प्रीं पद्मनालाय नमः। तब बैठकर तीन ताली बजाये।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

इति तालत्रयं दत्त्वा, वामपार्ष्णिघातत्रयेण विघ्नानुत्सार्य नाराचमुद्रां प्रदर्श्य गुरुं प्रणमेत्। गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुरिति, अज्ञानतिमिरान्धस्येति, अखण्डमण्डलाकारमिति च पठित्वा, श्रीगुरवे नमः स्ववामे। गुं गुरुभ्यो नमः। परमगुरुभ्यो नमः। परापरगुरुभ्यो नमः। परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः इति गन्धाक्षतैरभ्यर्च्य न्यासपूर्वं संकल्पं कुर्यात्।

अस्य श्रीदुर्गादेवी (योगपीठपूजा) मन्त्रस्य महेश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीदुर्गा देवता, दुं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकं, नमः इति दिग्बन्धः, धर्मार्थकाममोक्षार्थे दुर्गापूजायां विनियोगः।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता।
ये भूता विघ्न कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

यह बोलते हुये तीन ताली बजाकर बाँयीं एँड़ी से पृथ्वी पर तीन आघात करे। विघ्नोत्सारण करके नाराच मुद्रा दिखावे। तब गुरु को प्रणाम करे। प्रणाममन्त्र है—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

अपने वाम भाग में—गुं गुरुभ्यो नमः। परमगुरुभ्यो नमः। परापरगुरुभ्यो नमः। परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः से गुरुपंक्ति की पूजा गन्धाक्षत-पुष्प से करे। तब योगपीठ का पूजन कर सङ्कल्प इस प्रकार करे—

अस्य श्रीदुर्गायोगपीठपूजामन्त्रस्य महेश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीदुर्गा देवता, दुं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकं, नमः दिग्बन्धः, धर्मार्थकाममोक्षार्थे दुर्गापूजायां विनियोगः। इसके बाद इस प्रकार न्यास करे।

अथ न्यासः। महेश्वरऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे। श्रीदुर्गादेवतायै नमो हृदि। दुं बीजाय नमो नाभौ। ह्रीं शक्तये नमो गुह्ये। ॐ कीलकाय नमः पादयोः। नमो दिग्बन्धः इति सर्वाङ्गेषु। ॐह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐह्रः करतलकर-पृष्ठाभ्यां नमः इति करन्यासः। एवं हृदादिषडङ्गन्यासः।

अथ मूलन्यासः। ॐनमः शिरसि। ह्रीं मुखे। दुं वक्षसि। दुं भुजयोः। गाँ नाभौ। यैं पृष्ठे। नं जान्वोः। मः पादयोः इति त्रिर्व्यापयेत्। ॐ आत्म-तत्त्वाय नमः शिरसि। ह्रीं विद्यातत्त्वाय नमो मुखे। दुं शिवतत्त्वाय नमो हृदये। ॐ गुरुतत्त्वाय नमो नाभौ। ॐह्रीं शक्तितत्त्वाय नमो जङ्घयोः।

ॐदुं शिवशक्तितत्त्वाय नमः पादयोः। ॐ अंआंकंखंगंघंङंइंईं हृदयाय नमः। ह्रीं उंऊंचंछंजंझंञंऋंॠं शिरसे स्वाहा। दुं लृंटंठंडंढंणंलॄं शिखायै वषट्। ॐ एंतंथंदंधंनंऐं कवचाय हुं। ह्रीं ॐपंफंबंभंमंऔं नेत्रेभ्यो वौषट्। दुं अंयंरंलंवंशंषंसंहंळंक्षःअः अस्त्राय फट् इति हृदयादिन्यासः । एवं करन्यासः। इति शुद्धमातृकान्यासः।

ऋष्यादि न्यास—महेश्वरऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। श्रीदुर्गा-देवतायै नमः हृदये। दुं बीजाय नमः नाभौ। ह्रीं शक्तये नमः गुह्ये। ॐ कीलकाय नमः पादयोः। नमो दिग्बन्धः।

करन्यास—ॐ ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास—ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुं। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

मूल मन्त्रन्यास—ॐ नमः शिरसि। ह्रीं नमः मुखे। दुं नमः वक्षसि। ॐ दुं नमः भुजयोः। ॐ र्गां नमः नाभौ। ॐ यैं नमः पृष्ठे। ॐ नं नमः जान्वोः। ॐ मः नमः पादयोः। तीन बार व्यापक न्यास करे।

तत्त्वन्यास—ॐ आत्मतत्त्वाय नमः शिरसि। ह्रीं विद्यातत्त्वाय नमः मुखे। दुं शिवतत्त्वाय नमः हृदये। ॐ गुरुतत्त्वाय नमः नाभौ। ॐ ह्रीं शक्तितत्त्वाय नमः जङ्घयोः। ॐ दुं शिवशक्तितत्त्वाय नमः पादयोः। ॐ अं आं कं खं गं घं ङं इं ईं हृदयाय नमः। ह्रीं उं ऊं चं छं जं झं ञं ऋं ॠं शिरसे स्वाहा। दुं लृं टं ठं डं ढं णं लॄं शिखायै वषट्। ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुं। ह्रीं ओं पं फं बं भं मं औं नेत्राभ्यां वौषट्। दुं अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षः अः अस्त्राय फट्। इसी प्रकार करन्यास करे।

अथ मूलमातृकान्यासः। अं नमः शिरसि। आं नमो मुखवृत्ते। इं दक्षनेत्रे। ईं वामनेत्रे। उं दक्षकर्णे। ऊं वामकर्णे। ऋं दक्षगण्डे। ॠं वामगण्डे। लृं दक्षनासापुटे। लॄं वामनासापुटे। एं ऊर्ध्वोष्ठे। ऐं अधरोष्ठे। ओं ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ। औं अधोदन्तपंक्तौ। अं ललाटे। अः जिह्वायाम्। कं नमो दक्षबाहुमूले। खं कूर्परे। गं मणिबन्धे। घं अङ्गुलिमूले। ङं अङ्गुल्यग्रे। चं वामबाहुमूले। छं कूर्परे। जं मणिबन्धे। झं अङ्गुलिमूले। ञं अङ्गुल्यग्रे। टं नमो दक्षपादमूले। ठं जानुनि। डं गुल्फे। ढं अङ्गुलिमूले। णं अङ्गुल्यग्रे। तं

वामपादमूले। थं जानुनि। दं गुल्फे। धं अङ्गुलिमूले। नं अङ्गुल्यग्रे। पं दक्षपार्श्वे। फं वामपार्श्वे। बं पृष्ठे। भं नाभौ। मं जठरे। यं हृदि। रं दक्षांसे। लं ककुदि। वं वामांसे। शं हृदादिदक्षहस्ताग्रान्तं। षं हृदादिवामहस्ताग्रान्तं। सं हृदादिदक्षपादाग्रान्तं। हं हृदादिवामपादाग्रान्तं। ळं पादादिशिरःपर्यन्तम्। क्षः नमः शिरसः पादपर्यन्तमिति त्रिर्व्यापयेत्।

मूल मातृकान्यास—अं नमः शिरसि। आं नमः मुखवृत्ते। इं नमः दक्षनेत्रे। ईं नमः वामनेत्रे। उं नमः दक्षकर्णे। ऊं नमः वामकर्णे। ऋं नमः दक्षगण्डे। ॠं नमः वामगण्डे। ऌं नमः दक्षनासापुटे। ॡं नमः वामनसापुटे। एं नमः उर्ध्व ओष्ठे। ऐं नमः अधरोष्ठे। ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ औं। नमः अधोदन्तपंक्तौ। अं नमः ललाटे। अः नमः मुखे। कं नमः दक्षबाहुमूले। खं नमः कूर्परे। गं नमः मणिबन्धे। घं नमः अंगुलिमूले। ङं नमः अङ्गुल्यग्रे। चं नमः वामबाहुमूले। छं नमः कूर्परे। जं नमः मणिबन्धे। झं नमः अङ्गुलिमूले। ञं नमः अङ्गुल्यग्रे। टं नमः दक्षपादमूले। ठं नमः जानुनि। डं नमः गुल्फे। ढं नमः अङ्गुलिमूले। णं नमः अङ्गुल्यग्रे। तं नमः वामपादमूले। थं नमः जानुनि। दं नमः गुल्फे। धं नमः अङ्गुलिमूले। नं नमः अङ्गुल्यग्रे। पं नमः दक्षपार्श्वे। फं नमः वामपार्श्वे। बं नमः पृष्ठे। भं नमः नाभौ। मं नमः जठरे। यं नमः हृदि। रं नमः दक्षांसे। लं नमः ककुदि। वं नमः वामांसे। शं नमः हृदादिदक्षहस्ताग्रान्तम्। षं नमः हृदादिवामहस्ताग्रान्तम्। सं नमः हृदादिदक्षपादाग्रान्तम्। हं नमः हृदादिवामपादाग्रान्तम्। ळं नमः पादादि शिरःपर्यन्तम्। क्षं नमः शिरसः पादपर्यन्तम्।

एवं न्यासं विधाय पूर्ववत् षडङ्गं कृत्वा प्रणवेन प्राणायामत्रयं विधाय (पूरकं १२ कुम्भकं १६ रेचकं ३२) ॐह्रीं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, ॐह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा, ॐह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा इति त्रिराचम्य, प्राणायामयोगेन भूतशुद्धिं कुर्यात्।

ॐहूं आकुञ्चेन सुषुम्नावर्त्मना प्रदीपकलिकाकारं तेजो ब्रह्मपथान्तर्नीत्वा परमशिवे समानीय, तत्र सुधावृष्ट्या कुलगुरून् ध्यात्वा तथैव संतर्प्य, पुनस्तेनैव मार्गेण षट्चक्रकुलं भित्त्वा तत्तेजः स्वस्थानमानीय, यमिति वायुबीजेन षोडशधा जप्तेन वामकुक्षिगतं पापपुरुषं कृष्णवर्णं रक्तश्मश्रुलमङ्गुष्ठमात्राकारं ध्यात्वा शोषयेत्। रमिति वह्निबीजेन षोडशधा जप्तेन तं दाहयेत्। वमित्यमृतबीजेन षोडशधा जप्तेन गलच्चन्द्रामृतवृष्ट्याप्लावयेत्। लमितीन्द्रबीजेन षोडशवारजप्तेन (पिण्डीभूतं स्वात्मकं ध्यात्वा, हमित्याकाशबीजेन सकृज्जप्तेन) स्वात्मानं दिव्यदेहं

विभावयेदिति भूतशुद्धिं कृत्वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्। ॐह्रींदुंआंक्रों सोहं हंसः मम प्राणा इह प्राणाः, एवं ९ँ मम जीव इह स्थितः, ९ँ मम सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि, ९ँ मम वाङ्मनश्चक्षुस्त्वक्श्रोत्रजिह्वाघ्राण-प्राणा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा, इति प्राणप्रतिष्ठाक्रमः।

इस प्रकार न्यास करके पूर्ववत् षडङ्ग करके 'ॐ' से तीन प्राणायाम—पूरक १२, कुम्भक १६ एवं रेचक ३२ करे। इसके बाद तत्त्वशोधन करे। जैसे ॐ ह्रीं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐ ह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। तीन आचमन करके प्राणायामयोग से भूतशुद्धि करे।

'ॐ हूं' से मूलाधार को आकुञ्चित करे। सुषुम्ना मार्ग से दीपशिखाकृति तेजरूप को ब्रह्मरन्ध्र में लाकर परमशिव के साथ मिला दे। वहाँ कुलगुरु का ध्यान करके सुधावृष्टि से तर्पित करे। फिर उसी प्रकार षट्चक्र कुलों का भेदन करते हुए उस तेज को मूलाधार में प्रतिष्ठित करे। वायुबीज 'यं' के सोलह जप से वाम कुक्षिगत काले वर्ण, लाल दाढीयुक्त अङ्गुष्ठाकार पापपुरुष का ध्यान करके उसका शोषण करे। अग्निबीज 'रं' के सोलह जप से उसे जला दे। अमृतबीज 'वं' के सोलह जप से चन्द्रमा से झरते हुए अमृतवृष्टि से प्लावित करे। इन्द्रबीज 'लं' के सोलह जप से अपने शरीर को पिण्डीकृत करे। आकाशबीज 'हं' के जप से अपने दिव्य देह को फिर उत्पन्न समझे। इस प्रकार की भूतशुद्धि के बाद प्राणप्रतिष्ठा करे। प्राणप्रतिष्ठा का मन्त्र यह है—

ॐ ह्रीं दुं आं क्रों सोहं हसः प्राणा इह प्राणा। ॐ ह्रीं दुं आं क्रों हंसः सोहं मम जीव इह स्थितः। ॐ ह्रीं दुं आं क्रों हंसः सोहं मम सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितः। ॐ ह्रीं दुं आं क्रों मम वाङ्मन-चक्षु-श्रोत्र-त्वक्-जिह्वा-घ्राण-प्राणा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

एवं प्राणान् संस्थाप्य पूर्ववत् षडङ्गं विधायाचम्य मूलदेवीं ध्यायेत्—

भूगेहनागदलवृत्तरसाररारबिन्दुस्थसन्महिषपीठगतां भवानीम्।
दूर्वादलाग्रसदृशच्छविमष्टबाहुं दुर्गां भजे त्रिनयनां विलसत्त्रिबीजाम्॥

इति ध्यात्वा मूलाङ्गन्यासौ विधाय, श्रीचक्रं चतुर्द्वारं त्रिवृत्तं साष्टदलं वृत्तं षडश्रं त्रिकोणबिन्दुं विचिन्त्य वा अष्टगन्धेन विलिख्य वा विभाव्य पीठ-पूजां कुर्यात्। ॐह्रीं मण्डूकाय नमः। २ँ कालाग्निरुद्राय नमः। २ँ मूलप्रकृत्यै नमः। २ँ आधारशक्त्यै नमः। २ँ कूर्माय नमः। २ँ अनन्ताय०। २ँ वराहाय०। २ँ पृथिव्यै० इत्युपर्युपरि संपूज्य, २ँ सुधार्णवाय नमः मध्ये। २ँ नवरत्नविराजितनवखण्डमयद्वीपाय नमः। २ँ

पद्मरागखण्डाय नमः। रँ स्वर्णगिरये०। रँ नन्दनोद्यानाय०। रँ कल्पवनाय०। रँ पद्मवनाय०। रँ विचित्ररत्नखचितभूमिकायै०। रँ चिन्तामणिमण्डपाय०। रँ नवरत्नखचितरत्नमयवेदिकायै०। रँ रत्नसिंहासनाय०। तन्मध्ये रँ सहस्रारपद्माय०। रँ प्रकृतिमयपत्रेभ्यो०। रँ विकृतिमयकेसरेभ्यो०। तन्मध्ये रँ अष्टबीजविभूषितकर्णिकायै०। तत्पार्श्वे रँ धर्माय०। रँ ज्ञानाय०। रँ वैराग्याय०। रँ ऐश्वर्याय०। वामतः रँ अधर्माय०। रँ अज्ञानाय०। रँ अवैराग्याय०। रँ अनैश्वर्याय०। मध्ये रँ सं सत्त्वाय०। रँ रं रजसे०। रँ तं तमसे०। मूलविद्यामुच्चार्य महिषासनाय नमः। मूलमुच्चार्य मातृकाः प्रोच्चार्य श्रीयोगपीठाय नमः इत्यभ्यर्च्य पात्रार्चनं कुर्यात्।

इस प्रकार प्राणप्रतिष्ठा करके पूर्ववत् षडङ्ग न्यास करे। तीन आचमन करके मूल देवी का ध्यान करे।

भूगेहनागदलवृत्तरसारसारबिन्दुस्थसन्महिषपीठगतां भवानीम्।
दूर्वादलाग्रसदृशच्छविमष्टबाहुं दुर्गां भजे त्रिनयनां विलसत्त्रिबीजाम्।।

आशय यह है कि भूपुर, अष्टदल, वृत्त, षट्कोण, त्रिकोण के मध्य बिन्दु में महिष की पीठ पर स्थित भवानी की छवि दूर्वादल के अग्रभाग के समान है। उनकी आठ भुजाएँ हैं, तीन नेत्र हैं। तीन बीजों में विलसित दुर्गा का मैं भजन करता हूँ।

इस प्रकार ध्यान करके मूल मन्त्र के वर्णों से पूर्ववर्णित विधि से न्यास करे। चार द्वारयुक्त भूपुर, वृत्तत्रय, अष्टदल, षट्कोण, त्रिकोण, बिन्दु से युक्त श्रीचक्र का चिन्तन करके या अष्टगन्ध से अंकन करके या भावना करके पीठपूजा करे। जैसे—ॐ ह्रीं मण्डूकाय नमः। ॐ ह्रीं कालाग्निरुद्राय नमः। ॐ ह्रीं मूलप्रकृत्यै नमः। ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं कूर्माय नमः। ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः। ॐ ह्रीं वराहाय नमः। ॐ ह्रीं पृथिव्यै नमः। यन्त्र पर इनका पूजन करे।

इसके बाद इस प्रकार पूजा करे। जैसे—मध्य में ॐ ह्रीं सुधार्णवाय नमः। ॐ ह्रीं नवरत्नविराजितनवखण्डमयद्वीपाय नमः। ॐ ह्रीं स्वर्णगिरये नमः। ॐ ह्रीं नन्दनोद्यानाय नमः। ॐ ह्रीं कल्पवनाय नमः। ॐ ह्रीं पद्मवनाय नमः। ॐ ह्रीं विचित्ररत्नखचितभूमिकायै नमः। ॐ ह्रीं चिन्तामणिमण्डपाय नमः। ॐ ह्रीं नवरत्नखचित-रत्नमयवेदिकायै नमः। ॐ ह्रीं रत्नसिंहासनाय नमः। सिंहासनमध्ये—ॐ ह्रीं सहस्रदलपद्माय नमः। ॐ ह्रीं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः। ॐ ह्रीं विकृतिमयकेसरेभ्यो नमः।

तन्मध्ये—ॐ ह्रीं अष्टबीजविभूषितकर्णिकाय नमः। तत्पार्श्वे ॐ ह्रीं धर्माय नमः। ॐ ह्रीं ज्ञानाय नमः। ॐ ह्रीं वैराग्याय नमः। ॐ ह्रीं ऐश्वर्याय नमः। वामतः ॐ ह्रीं अधर्माय नमः। ॐ ह्रीं अज्ञानाय नमः। ॐ ह्रीं अवैराग्याय नमः। ॐ ह्रीं अनैश्वर्याय नमः।

मध्ये ॐ ह्रीं सं सत्त्वाय नमः। ॐ ह्रीं रं रजसे नमः। ॐ ह्रीं तं तमसे नमः ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः महिषासनाय नमः। ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं श्रीयोगपीठाय नमः।

इस प्रकार योगपीठ का अर्चन करके पात्रार्चन करे।

ततः स्वदेहं गन्धादिना संपूज्य, तत्र स्ववामे वृत्तत्रिकोणचतुरश्रमण्डलं विधाय मूलेनाभ्यर्च्य, मूलं दुर्गासामान्यार्घ्याय नमः। रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः इत्याधारे, तन्मण्डलं षडङ्गेनाभ्यर्च्य, तत्रास्त्रक्षालितं शङ्खं संस्थाप्य, शङ्खे अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः इति संपूज्य, विलोममातृकया संपूर्य, सौः सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः इत्यभ्यर्च्य, मूलाष्टाभिमन्त्रितं कृत्वा 'गङ्गे च यमुने चैव' इत्यादिना तीर्थमावाह्य, शुद्धं भावयेदिति सामान्यार्घ्यविधिः।

अपने देह की गन्धादि से पूजा करके अपने बाँयें भाग में त्रिकोण, वृत्त, चतुरस्र मण्डल बनाकर मूल मन्त्र से पूजन करे। ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः दुर्गासामान्यार्घ्याय नमः। रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः से आधार की पूजा करे। उस मण्डल में षडङ्ग मन्त्र से पूजन करे। उस आधार पर धोकर शङ्ख रखे। शङ्ख में 'अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' से पूजन करे। क्षं से अं तक की मातृकाओं का विलोम रूप में उच्चारण करके उसमें जल भरे। जल में 'सौः सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः' से पूजा करे। मूल मन्त्र के आठ बार उच्चारण से अभिमन्त्रित करे 'गङ्गे च यमुने चैव' से तीर्थों का आवाहन करे। इसके बाद उसके शुद्ध होने की भावना करे। इस प्रकार सामान्यार्घ्य स्थापन विधि पूर्ण होती है।

सामान्यार्घ्यस्य वामे त्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुरश्रं मण्डलं विधाय तन्मण्डलं षडङ्गेनाभ्यर्च्य, मूलमुच्चार्य, श्रीदुर्गाकलशमण्डलाय नमः। ततः पूर्ववत् मूलेनाभ्यर्च्य तत्रास्त्रक्षालितां त्रिपादिकां संस्थाप्य, रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः इत्यभ्यर्च्य, तत्रास्त्रक्षालितं कलशं संस्थाप्य अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः इत्यक्षतपुष्पैरभ्यर्च्य, तत्राना-

मिकाङ्गुष्ठाभ्याममृतधारापातेन कलशमापूर्य, सौः सोममण्डलाय षोडश-कलात्मने नमः इत्यभ्यर्च्य, ॐह्रींदांदींदूंदैंदौंदः दुंअं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय २ शुक्रशापं मोचय २ ॐह्रींदुं सुरादेव्यै वौषट् इति सप्तधाभिमन्त्र्य, दुंह्रींॐ हसक्षमलवरयऊं आनन्दभैरवाय वौषट् इति सप्तधाभिमन्त्र्य, ॐह्रींदुं आनन्दभैरवसुरादेवीपादुकाभ्यो नमः इति संपूज्य, धेनुयोनिमुद्रे प्रदर्श्य,

ॐसूर्यमण्डलसम्भूते वरुणालयसम्भवे ।
अमाबीजयमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम् ॥
एकमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम् ।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम् ॥
पवमानः परानन्दः पवमानः परो रसः ।
पवमानं परं ज्ञानं तेन त्वां पावयाम्यहम् ॥
वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि ।
तेन सत्येन ते देवि ब्रह्महत्यां व्यपोहतु ॥
कृष्णशापविनिर्मुक्ता त्वं मुक्ता ब्रह्मशापतः ।
विमुक्ता मुनिशापेन पवित्रा भव सर्वदा ॥

इति कलशं संपूज्य धेनुयोनिमत्स्यमुद्राः प्रदर्श्य गरुडमुद्रयाच्छादयेदिति द्रव्यशुद्धिः।

सामान्यार्घ्य पात्र के वाम भाग में त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, चतुरस्र मण्डल बनाकर उस मण्डल का पूजन षडङ्ग मन्त्र से करे—'ॐ ह्रीं दुं दुर्गाय नमः। श्री दुर्गाकलश-मण्डलाय नमः' का उच्चारण करे। मूल मन्त्र से उसका पूजन करे। फट् मन्त्र से आधार को धोकर स्थापित करे। 'रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः' से अर्चन करे। उस मण्डल पर 'फट्' से कलश को धोकर रखे। उसका पूजन अक्षत-पुष्प से 'अं अर्क-मण्डलाय द्वादशकलात्मने नम' मन्त्रोच्चारण करते हुए करे। उसमें अनामिका एवं अङ्गुष्ठ के योग से अमृतधारापात से कलश को जल से भर दे। 'सौः सोममण्डलाय षोड़शकलात्मने नमः' से अर्चन करे। उसे मन्त्र से अभिमन्त्रित करे; जैसे—ॐ ह्रीं दां दीं दूं दैं दौं दः दुं अं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं श्रावय श्रावय शुक्रशापं मोचय मोचय ॐ ह्रीं दुं सुरादेव्यै वौषट्। इस मन्त्र का पाठ सात बार करे। तब ॐ ह्रीं दुं आनन्दभैरवसुरादेवीपादुकाभ्यां नमः से पूजन करे। धेनुमुद्रा एवं योनिमुद्रा दिखाये।

ॐ सूर्यमण्डलसम्भूते वरुणालयसम्भवे।
अमाबीजमये देवि शुक्रशापाद् विमुच्यताम्।।
एकमेव परब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम्।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम्।।
पवमानः परानन्दः पवमानः परो रसः।
पवमानं परं ज्ञानं तेन त्वां पावयाम्यहम्।।
वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि।
तेन सत्येन ते देवि ब्रह्महत्यां व्यपोहतु।।
कृष्णशापनिर्मुक्ता त्वं मुक्ता ब्रह्मशापतः।
विमुक्ता रुद्रशापेन पवित्रा भव सर्वदा।।

इस प्रकार कलश का पूजन करके धेनु-योनि-मत्स्यमुद्रा दिखाये। गरुड़मुद्रा से आच्छादन करे। इस प्रकार द्रव्यशुद्धि सम्पन्न होती है।

ॐह्रींदुं कृतावतारो हरिणा कलिना पीडितं जगत्।
बलिना निगृहीतं तु कौलिकानां हिताय च॥
श्रीदुर्गापरितोषार्थं स्वयं मीनोऽभवत् प्रभुः।
इति मुद्रात्रयं प्रदर्श्य शुद्धिं शोधयेत्।

ॐह्रींदुं छागलादिगवान्तादिकृतरूपाय वै नमः।
बल्यर्थं देवदेव्योश्च पवित्रीभव साम्प्रतम्।
मूलं त्रिधा जप्त्वा मुद्रात्रयं दर्शयेदिति।
ॐह्रींदुं श्रीदुर्गार्चनकाले तु यानि यानीह सांप्रतम्।
वस्तूनि सौरभेयानि पवित्राणीह सिद्धये॥
इति मूलं त्रिधा जपन् मुद्रात्रयं सर्वस्योपरि दर्शयेदिति कलशादिविधिः।

मीनशोधन—

ॐ ह्रीं दुं कृतावतारो हरिणा कलिना पीड़ितं जगत्।
बलिना निगृहीतं तु कौलिकानां हिताय च।
श्रीदुर्गापरिशोषार्थं स्वयं मीनोऽभवत् प्रभुः।।

इस मन्त्र को पढ़कर धेनु, योनि और मत्स्य मुद्रा दिखावे। तब शुद्धि शोधन करे—

मांसशोधन—

ॐ ह्रीं दुं छागलादिगवान्तादिकृतरूपाय वै नमः।
बल्यर्थं देवदेव्योश्च पवित्रीभव साम्प्रतम्।।

मूल मन्त्र तीन बार जप कर धेनु, योनि, मत्स्यमुद्रा दिखाये।

सभी सामग्री शोधन—

ॐ ह्रीं दुं श्रीदुर्गाचनकाले तु यानि यानीह साम्प्रतम्।
वस्तूनि सुरदेयानि पवित्राणीह सिद्धये।।

मूल मन्त्र का तीन जप करके धेनु, योनि, मत्स्यमुद्रा दिखाये। इस प्रकार कलश-स्थापनविधि पूर्ण होती है।

ततो मूलेनानन्दभैरवाङ्कोपविष्टां नीलकण्ठेशीं श्रीदेवीं ध्यात्वा मूलेनावाह्य श्रीचक्रमर्चयेत्। तत्र मूलेन पाद्यार्घ्याचमनीयादि परिकल्पयेत्। मूलेन देवदेव्योर्मधुपर्काचमनीयादि निवेदयेत्। मूलेन नैवेद्यं निवेद्य आचमनीयं नमः इति निवेद्य, गण्डूषत्रयं निवेद्य, मूलेन ताम्बूलादि समर्पयेत्।

श्रीचक्रार्चन—मूल मन्त्र 'ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः' से आनन्दभैरव की गोद में बैठी नीलकण्ठेशी देवी का ध्यान करे। मूलमन्त्र 'ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः दुर्गाम् आवाहयामि' से आवाहन करे। तब श्रीचक्र का अर्चन करे। जैसे—ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः पाद्यं समर्पयामि। ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः अर्घ्यं सर्मपयामि। ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः आचमनीयं समर्पयामि। ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः देवदेव्यौ मधुपर्कं समर्पयामि। ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः देवदेव्यौ आचमनीयं समर्पयामि। ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः देवदेव्यौ गन्धं समर्पयामि। ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः देवदेव्यौ वस्त्रोपवस्त्रालङ्कारानि समर्पयामि। ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः देवदेव्यौ पुष्पं समर्पयामि। ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः देवदेव्यौ धूपं आघ्रापयामि। ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः देवदेव्यौ दीपं दर्शयामि। ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः देवदेव्यौ नैवेद्यं निवेदयामि। ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः देवदेव्यौ आचमनीयं समर्पयामि। ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः देवदेव्यौ गण्डूषत्रयं समर्पयामि। ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः देवदेव्यौ ताम्बूलादिसर्वोपचारान् सर्मपयामि।

योनि मुद्रा से प्रणाम करे।

ततो मूलषडङ्गं विधाय चतुरश्रं पूजयेत्। ॐह्रींदुं सर्वसि-द्धिप्रदाय चक्राय नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा, ॐह्रींदुंगं गणेशाय नमः पूर्वे । ३ँ हौं कुमाराय नमः दक्षिणे। ३ँ प्रीं पुष्पदन्ताय नमः पश्चिमे। ३ँ वैं विकर्तनाय नमः उत्तरे इति गन्धाक्षतपुष्पैरभ्यर्च्य प्रथमावरणम्।

प्रथम आवरण—मूल मन्त्र से षडङ्ग करके भूपुर में पूजन करे। पहले ॐ ह्रीं

दुं दुर्गायै नमः सर्वसिद्धिप्रदाय चक्राय नमः से पुष्पाञ्जलि देवे। भूपुर में पूर्व में—ॐ ह्रीं दुं गं गणेशाय नमः। दक्षिण में—ॐ ह्रीं दुं हौं कुमाराय नमः। पश्चिम में—ॐ ह्रीं दुं प्रीं पुष्पदन्ताय नमः। उत्तर में—ॐ ह्रीं दुं वैं विकर्तनाय नमः। सबों को गन्धाक्षत-पुष्प समर्पित करे। इसके पश्चात् निम्न मन्त्र से पुष्पाञ्जलि समर्पित करे—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।

३ँ असिताङ्गभैरवयुतब्राह्मीश्रीपादु०।३ँ रुरुभैरवयुतनारायणीश्रीपा०। ३ँ चण्डभैरवयुतचामुण्डाश्रीपा०। ३ँ क्रोधेशभैरवयुतापराजिताश्रीपा०। ३ँ उन्मत्तभैरवयुतवाराहीश्रीपा०। ३ँ कपालिभैरवयुतकौमारीश्रीपा०। ३ँ भीषणभैरवयुतवाराहीश्रीपा०। ३ँ संहारभैरवयुतनारसिंहीश्रीपादु० इति वामावर्तेन गन्धाक्षतपुष्पैरभ्यर्चयेत्। इति द्वितीयावरणम्।

द्वितीय आवरण—अष्टदल में—ॐ ह्रीं दुं असिताङ्गयुतब्राह्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं रुरुभैरवयुतनारायणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं चण्डभैरवयुतचामुण्डाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं क्रोधेशयुता-पराजिताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं उन्मत्तयुतमाहेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं कपालीयुतकौमारीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं भीषणभैरवयुतवाराहीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं संहार-भैरवयुतनारसिंहीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इनका पूजन वामावर्त क्रम से गन्धा-क्षत-पुष्प से करे। निम्न मन्त्र से पुष्पाञ्जलि समर्पित करे—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।

तत्पश्चात् योनिमुद्रा से प्रणाम करे।

ॐह्रींदुं सर्वाशापूरकचक्राय नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा षट्कोणं पूज-येत्। ॐह्रींदुं शैलपुत्रीश्रीपा०। ३ँ ब्रह्मचारिणीश्री०। ३ँ चण्ड-घण्टाश्री०। ३ँ कूष्माण्डाश्री०। ३ँ स्कन्दमातृश्री०। ३ँ कात्यायनीश्री० इति वामावर्तेन संपूजयेत्। इति तृतीयावरणम्।

तृतीय आवरण—षट्कोण में—ॐ ह्रीं दुं सर्वाशापरिपूरकचक्राय नमः से पुष्पाञ्जलि देकर पूजा करे। ॐ ह्रीं दुं शैलपुत्रीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं ब्रह्मचारिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं चन्द्रघण्टाश्रीपादुकां

पूजयामि तर्पयामि नमः। ३ॐ ह्रीं दुं कूष्माण्डाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ३ॐ ह्रीं दुं स्कन्दमातृश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ३ॐ ह्रीं दुं कात्यायनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। वातावर्त क्रम से पूजा करे। पूजा समर्पण करे; जैसे—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।।

पुष्पाञ्जलि प्रदान कर योनि मुद्रा से प्रणाम करे।

ॐह्रींदुं सौभाग्यप्रदाय चक्राय नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा त्रिकोणं पूजयेत्। ३ँ कालरात्रीश्रीपा०। ३ँ महागौरीश्री०। ३ँ देवदूतीश्री०। इति अग्रेशानाग्नेयतोऽभ्यर्चयेत्। इति चतुर्थावरणम्।

चतुर्थ आवरण—त्रिकोण में—३ॐ ह्रीं दुं सौभाग्यप्रदाय चक्राय नमः से पुष्पाञ्जलि देकर पूजा करे। अग्रकोण में—३ॐ ह्रीं दुं कालरात्रिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ईशान कोण में—३ॐ ह्रीं दुं महागौरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। आग्नेय कोण में—३ॐ ह्रीं दुं देवदूतीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि देकर योनिमुद्रा से प्रणाम करे।

ॐह्रींदुं अष्टसिद्धिप्रदाय चक्राय नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा मूलमुच्चार्य श्रीनीलकण्ठश्रीदुर्गाश्रीपा० इति सप्तवारं बिन्दौ अभ्यर्चयेत्। इति पञ्चमावरणम्।

बिन्दूपरि मूलं अम्बिकाश्रीपा०। ३ँ अष्टाक्षराश्रीपा०। ३ँ अष्टभुजाश्री०। ३ँ नीलकण्ठश्रीपा०। ३ँ जगदम्बिकाश्री० इत्यभ्यर्चयेत्। इति षष्ठा-वरणम्।

पञ्चम आवरण—बिन्दु में—३ॐ ह्रीं दुं अष्टसिद्धिप्रदाय चक्राय नमः से पुष्पाञ्जलि देकर पूजा करे। ३ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः श्रीनीलकण्ठश्रीदुर्गाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः से सात बार पूजन करे।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि देकर योनिमुद्रा से प्रणाम करे।

षष्ठ आवरण—बिन्दु में ही—३ॐ ह्रीं दुं अम्बिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि

नमः। ॐ ह्रीं दुं अष्टाक्षराश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं अष्टभुजाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं नीलकण्ठश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं जगदम्बिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम्।।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि देकर योनिमुद्रा से प्रणाम करे।

बिन्दूपरि मू० शङ्खाय नमः। पद्माय०। खड्गाय०। बाणेभ्यो०। धनुषे०। खेटकाय०। शूलाय०। तर्जन्यै नमः। मूलविद्यां त्रिरुच्चार्य श्रीनीलकण्ठश्रीदुर्गाश्रीपा० पू० त० इति मूलेन गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्याचमनीयताम्बूलच्छत्रचामरारात्रिकादीन् समर्पयेदिति सप्तमावरणम्।

सप्तम आवरण—बिन्दु में ही—ॐ ह्रीं दुं शङ्खाय नमः शङ्खश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं पद्माय नमः पद्मश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं खड्गाय नमः खड्गश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं वाणेभ्यो नमः वाणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं खेटकाय नमः खेटकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं धनुषाय नमः धनुषश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं शूलाय नमः शूलश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्रीं दुं तर्जन्यै नमः तर्जनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। 'ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः' तीन बार कहकर श्रीनीलकण्ठश्रीदुर्गाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्।।

उक्त मन्त्र बोलकर पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।

मूल मन्त्र से गन्धाक्षत पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमनीय, ताम्बूल, छत्र, चामर, आरती आदि समर्पित करे।

तत्र मूलेन बलिं निवेद्य सौः सर्वविघ्नकृद्भ्यो भूतेभ्यो नमः स्वाहा। यांयींयूं योगिनीगणेभ्यो नमः स्वाहा। वांवीं देवीपुत्रवटुकनाथ कपिलजटाभारभास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख एह्येहि इमं बलिं यथोपचितं गृह्ण २ स्वाहा। क्षांक्षीं क्षेत्रपालाय नमः इति बलिं दत्त्वा, सङ्कल्पपूर्वं न्यासादि विधाय देव्यग्रे मालामादाय यथाशक्ति मूलविद्यां जप्त्वा 'गुह्याती'ति जपं समर्प्य, देव्यग्रे कवचसहस्रनामस्तवपाठं विधाय तदपि देवदेव्योः समर्प्य

प्रातः प्रभृति सायान्तं सायादि प्रातरन्ततः।
यत्करोमि जगन्मातस्तदस्तु तव पूजनम्॥

इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा योनिमुद्रया प्रणम्य, संहारमुद्रया देवदेव्यौ हृदि विसृज्य स्वयमपि सदाशिवो भूत्वा स्वशक्त्या सह पात्रार्पणं विधाय सुखं विहरेदिति।

बलि—इनको बलि इस प्रकार देनी चाहिये—ॐ ह्रीं दुं सौः सर्वविघ्नकृद्भ्यो भूतेभ्यो नमः स्वाहा। ॐ ह्रीं दुं यां यीं यूं योगिनीगणेभ्यो नमः स्वाहा। ॐ ह्रीं दुं वां वीं देवीपुत्रवटुकनाथ कपिलजटाभार भास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख एह्येहि इमं बलिं यथोपचितं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। ॐ ह्रीं दुं क्षां क्षीं क्षेत्रपालाय नमः।

इस प्रकार बलि देकर संकल्प करे। न्यासादि करे। देवी के आगे माला लेकर मूल विद्या का जप यथाशक्ति करे। 'गुह्यातिगुह्य' मन्त्रोच्चारणपूर्वक जप देवी को समर्पित करे। देवी के आगे कवच, सहस्रनाम, स्तोत्र का पाठ करे। तदनन्तर पाठों को देवी के कर-कमलों में समर्पित करे एवं निम्न मन्त्र का पाठ करे—

प्रातःप्रभृति सायान्तं सायादि प्रातरन्ततः।
यत्करोमि जगन्मातः तदस्तु तव पूजनम्।।

पुष्पाञ्जलि प्रदान करे। योनिमुद्रा से प्रणाम करे। संहारमुद्रा से देव-देवी को अपने हृदय में ले आये। तब स्वयं सदाशिव होकर अपनी शक्ति के साथ पात्रार्पण करके चिर काल तक सुखपूर्वक विहार करे।

पटलोपसंहारः

इति श्रीनित्यपूजायाः पद्धतिं गुह्यगोपिताम्।
श्रीदुर्गासारसम्भूतां गोपयेत् साधकेश्वरि॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये श्रीदुर्गापद्धतिनिरूपणं नाम सप्तचत्वारिंशः पटलः॥४७॥

हे साधकेश्वरि! श्री नित्य पूजा पद्धति गुह्य और गोप्य है। श्री दुर्गासार समुत्पन्न है। अतः इसे गुप्त रखे।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में श्रीदुर्गापद्धति निरूपण नामक सप्तचत्वारिंश पटल पूर्ण हुआ।

•

अथाष्टाचत्वारिंशः पटलः

दुर्गाकवचम्

कवचमाहात्म्यम्

श्रीभैरव उवाच

अधुना देवि वक्ष्यामि कवचं मन्त्रगर्भकम्।
दुर्गायाः सारसर्वस्वं कवचेश्वरसंज्ञकम्॥१॥
परमार्थप्रदं दिव्यं महापातकनाशनम्।
योगिप्रियं योगगम्यं देवानामपि दुर्लभम्॥२॥
विनानेन न मन्त्रस्य सिद्धिर्देवि कलौ भवेत्।

कवच-माहात्म्य—श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! अब मैं श्रीदुर्गा के मन्त्रगर्भ कवच का वर्णन करता हूँ। यह दुर्गासार-सर्वस्व है। इसे कवचेश्वर कहते हैं। यह नित्य परमार्थ-प्रदायक है। महापापों का विनाशक है। योगियों को प्रिय है, योगगम्य है। देवों को भी दुर्लभ है। कलियुग में इसके बिना मन्त्रसिद्धि नहीं मिलती।।१-२।।

धारणादस्य देवेशि शिवस्त्रैलोक्यनायकः॥३॥
भैरवो भैरवेशानो विष्णुर्नारायणो बली।
ब्रह्मा पार्वति लोकेशो विघ्नध्वंसी गजाननः॥४॥
सेनानीश्च महासेनो जिष्णुर्लोकर्षभः प्रिये।
सूर्यस्तमोपहश्चैव चन्द्रोऽमृतनिधिस्तथा॥५॥
बहुनोक्तेन किं देवि दुर्गाकवचधारणात्।
मर्त्योऽप्यमरतां याति साधको मन्त्रसाधकः॥६॥

इसे धारण करके ही शिव तीनों लोकों के नायक हैं। हे पार्वति! भैरव, भैरवेशानी, विष्णु एवं नारायण बल सम्पन्न हुये हैं। ब्रह्मा लोकेश हुये हैं एवं गजानन विघ्नों के विनाशक हुये हैं। कार्त्तिकेय सेनानायक हुये हैं एवं विजयी होकर लोकपूजित हुये हैं। अन्धकार दूर करने वाले सूर्य और चन्द्रमा अमृत के भण्डार हुये हैं। बहुत कहने से क्या लाभ? हे देवि! इस दुर्गा-कवच को धारण करने से मरणधर्मा साधक भी अमरता प्राप्त करता है।।३-६।।

ऋष्यादिकथनम्

कवचास्यास्य देवेशि ऋषिः प्रोक्तो महेश्वरः।
छन्दोऽनुष्टुप् प्रिये दुर्गा देवताष्टाक्षरा स्मृता ॥७॥
चक्रिबीजं च बीजं स्यान्माया शक्तिरितीरिता।
तारं कीलकमीशानि दिग्बन्धो वर्णितोऽश्मरी।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोग इति स्मृतः ॥८॥

ऋषि आदि—हे देवेशि! इस कवच के ऋषि महेश्वर कहे गये हैं। इसका छन्द अनुष्टुप् है और अष्टाक्षरा दुर्गा देवता कहे गये हैं। दुं इसका बीज है और ह्रीं शक्ति कही गई है। ॐ से इसका कीलक होता है एवं नमः से दिग्बन्धन किया जाता है। धर्म-अर्थ-काम एवं मोक्ष की प्राप्ति हेतु इसका विनियोग किया जाता है।।७-८।।

विनियोगः

अस्य श्रीदुर्गाकवचस्य महेश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः श्रीदुर्गा देवता, दुं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकं चतुर्वर्गसिद्धये पाठे विनियोगः। नम इति दिग्बन्धः।

ध्यानम्

दूर्वानिभां त्रिनयनां विलसत्किरीटां शङ्खाब्जखड्गशरखेटकशूलचापान्।
संतर्जनीं च दधतीं महिषासनस्थां दुर्गां नवारकुलपीठगतां भजेऽहम्॥

ध्यान—श्रीदुर्गा का वर्ण दूर्वा के समान है। तीन नेत्र हैं। माथे पर किरीट शोभित है। हाथों में शङ्ख, पद्म, खड्ग, वाण, मुशल, त्रिशूल, धनुष और तर्जनी है। महिष के आसन पर आसीन हैं। नवयोनि पीठगत दुर्गा का हम ध्यान करते हैं।

कवचम्

ॐ मे पातु शिरो दुर्गा ह्रीं मे पातु ललाटकम्।
दुं नेत्रेऽष्टाक्षरा पातु चक्री पातु श्रुती मम ॥९॥
मठं गण्डौ च मे पातु देवेशी रक्तकुण्डला।
वायुर्नासां सदा पातु रक्तबीजनिसूदिनी ॥१०॥
लवणं पातु मे चोष्ठौ चामुण्डा चण्डघातिनी।
भेकीबीजं सदा पातु दन्तान् मे रक्तदन्तिका ॥११॥
ॐह्रींश्रीं पातु मे कण्ठं नीलकण्ठाङ्कवासिनी।
ॐऐंक्लीं पातु मे स्कन्धौ स्कन्दमाता महेश्वरी ॥१२॥

कवच—ॐ दुर्गा मेरे शिर की और ह्रीं मेरे ललाट की रक्षा करें। दुं अष्टाक्षरा मन्त्र

मेरे नेत्र की रक्षा करे। मेरे कानों की रक्षा दुं करे। गां देवेशी रक्तकुण्डला मेरे कपोलों की रक्षा करे। यैं रक्तबीजनिसूदिनी मेरे नासा की रक्षा सर्वदा करे। नं चामुण्डा चण्डघातिनी मेरे ओठों की रक्षा करें। मः बीज रक्तदंतिका मेरे दाँतों की रक्षा सर्वदा करे। ॐ ह्रीं श्रीं मेरे कण्ठ की रक्षा नीलकण्ठाङ्कवासिनी करे। ॐ ऐं क्लीं स्कन्दमाता महेश्वरी मेरे कन्धों की रक्षा करे।।९-१२।।

ॐसौःक्लीं मे पातु बाहू देवेशी बगलामुखी।
ऐंश्रींह्रीं पातु मे हस्तौ शिवाशतनिनादिनी ॥१३॥
सौःऐंह्रीं पातु मे वक्षो देवता विन्ध्यवासिनी।
ॐह्रींश्रींक्लीं पातु कुक्षिं मम मातङ्गिनी परा ॥१४॥
श्रींह्रींऐं पातु मे पार्श्वौ हिमाचलनिवासिनी।
ॐस्त्रींहूंऐं पातु पृष्ठं मम दुर्गतिहारिणी ॥१५॥

ॐ सौः क्लीं देवेशी बगलामुखी मेरे बाहुओं की रक्षा करे। ऐं श्रीं ह्रीं शिवाशतनिनादिनी मेरे हाथों की रक्षा करे। सौः ऐं ह्रीं देवी विन्ध्यवासिनी मेरे वक्ष की रक्षा करे। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं परा मातङ्गिनी मेरी कुक्षि की रक्षा करे। श्रीं ह्रीं ऐं हिमाचलनिवासिनी मेरे पार्श्वों की रक्षा करें। ॐ स्त्रीं हूं ऐं दुर्गतिहारिणी मेरे पीठ की रक्षा करे।।१३-१५।।

ॐक्रींहूं पातु मे नाभिं देवी नारायणी सदा।
ॐऐंक्लींसौः सदा पातु कटिं कात्यायनी मम ॥१६॥
ॐह्रींश्रींह्रीं पातु शिश्नं देवी श्रीभगमालिनी।
ऐंसौःक्लींसौः पातु गुह्यं गुह्यकेश्वरपूजिता ॥१७॥
ॐऐंह्रींश्रीह्सौः पायादूरू मम मनोन्मना।
ॐजुंसःसौः पातु जानू जगदीश्वरपूजिता ॥१८॥

ॐ क्रीं हूं देवी नारायणी सर्वदा मेरी नाभि की रक्षा करें। ॐ ऐं क्लीं सौः कात्यायनी सर्वदा मेरे कमर की रक्षा करें। ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीभगमालिनी देवी मेरे लिङ्ग की रक्षा करें।ऐं सौं क्लीं सौः गुह्यकेश्वरपूजिता मेरे गुह्य की रक्षा करे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः मनोन्मना मेरे ऊरू की रक्षा करे। ॐ जुं सः सौः जगदीश्वरपूजिता मेरे जानुओं की रक्षा करे।।१६-१८।।

ॐऐंक्लीं मे पातु जङ्घे मेरुपर्वतवासिनी।
ॐह्रींश्रींगीं सदा पातु गुल्फौ मम गणेश्वरी ॥१९॥
ॐह्रींदुं पातु मे पादौ पार्वती षोडशाक्षरी।
पूर्वे मां पातु ब्रह्माणी वह्नौ मां वैष्णवी तथा ॥२०॥

दक्षिणे चण्डिका पातु नैर्ऋत्ये नारसिंहिका।
पश्चिमे पातु वाराही वायव्ये माऽपराजिता॥२१॥
उत्तरे पातु कौमारी चैशान्यां शाम्भवी तथा।
ऊर्ध्वं दुर्गा सदा पातु पात्वधस्ताच्छिवा सदा॥२२॥

ॐ ऐं क्लीं मेरु पर्वतवासिनी मेरे जङ्घों की रक्षा करें। ॐ ह्रीं श्रीं गीं गणेश्वरी मेरे गुल्फों की रक्षा करे। ॐ ह्रीं श्री दुं षोड़शाक्षरी पार्वती मेरे पैरों की रक्षा करें। पूर्व में मेरी रक्षा ब्राह्मी करे। अग्निकोण में वैष्णवी रक्षा करे। दक्षिण में मेरी रक्षा चण्डिका और नैर्ऋत्य में नारसिंही करे। पश्चिम में वाराही और वायव्य में अपराजिता मेरी रक्षा करे। उत्तर में कौमारी और ईशान में शाम्भवी मेरी रक्षा करे। ऊपर में दुर्गा और नीचे में शिवा मेरी रक्षा करे।।१९-२२।।

प्रभाते त्रिपुरा पातु मध्याह्ने मां महेश्वरी।
सायं सरस्वती पातु निशीथे च्छिन्नमस्तका॥२३॥
निशान्ते भैरवी पातु सर्वदा भद्रकालिका।
अग्नेरम्बा च मां पातु जलान्मां जगदम्बिका॥२४॥
वायोर्मां पातु वाग्देवी वनाद् वनजलोचना।
सिंहात् सिंहासना पातु सर्पात् सर्पान्तकासना॥२५॥

प्रभात में त्रिपुरा और मध्याह्न में महेश्वरी मेरी रक्षा करें। शाम में सरस्वती और निशीथ में छिन्नमस्तिका मेरी रक्षा करें। निशान्त में भैरवी और भद्रकालिका मेरी रक्षा सर्वदा करें। अग्नि में अम्बा और जल में जगदम्बिका मेरी रक्षा करें। वायु से वाग्देवी रक्षा करें और वन में वनजलोचना रक्षा करें। सिंहासना सिंह से और सर्पान्तकासना सर्पों से मेरी रक्षा करें।।१३-२५।।

रोगान्मां राजमातङ्गी भूताद् भूतेशवल्लभा।
यक्षेभ्यो यक्षिणी पातु रक्षोभ्यो राक्षसान्तका॥२६॥
भूतप्रेतपिशाचेभ्यः सुमुखी पातु मां सदा।
सर्वत्र सर्वदा पातु ॐह्रीं दुर्गा नवाक्षरा॥२७॥

राजमातङ्गी रोगों से और भूतेशवल्लभा भूतों से मेरी रक्षा करें। यक्षिणी यक्षों से और राक्षसों से राक्षसान्तका मेरी रक्षा करें। भूत, प्रेत, पिशाचों से मेरी रक्षा सुमुखी सदैव करें। सर्वत्र सर्वदा मेरी रक्षा ॐ ह्रीं दुर्गा नवाक्षरा करे।।२६-२७।।

फलश्रुतिः

इतीदं कवचं गुह्यं दुर्गासर्वस्वमुत्तमम्।
मन्त्रगर्भं महेशानि कवचेश्वरसंज्ञकम्॥२८॥

वित्तदं पुण्यदं पुण्यं वर्म सिद्धिप्रदं कलौ।
अष्टसिद्धिप्रदं गोप्यं परापररहस्यकम् ॥२९॥
श्रेयस्करं मनुमयं रोगनाशकरं परम्।
महापातककोटिघ्नं मानदं च यशस्करम् ॥३०॥
अश्वमेधसहस्रस्य फलदं परमार्थदम्।
अत्यन्तगोप्यं देवेशि कवचं मन्त्रसिद्धिदम् ॥३१॥
पठनात् सिद्धिदं लोके धारणान्मुक्तिदं शिवे।

फलश्रुति—यह उत्तम कवच गुह्य और दुर्गा-सर्वस्व है। हे महेशानि! इस मन्त्र-गर्भित कवच को कवचेश्वर कहते हैं। कलियुग में यह कवच धनद, पुण्यद, पुण्य और सिद्धिप्रदायक है। यह परापर रहस्य, गोप्य और अष्ट सिद्धियों का दाता है। परम श्रेयष्कर, मन्त्रमय और रोगों का विनाशक है। करोड़ों महापापों का विनाशक, मानप्रद और यशदायक है। एक हजार अश्वमेध यज्ञों के फल के साथ परमार्थदायक है। इसके पाठ से संसार में सिद्धि मिलती है। हे शिवे! इसके धारण करने से मोक्ष प्राप्त होता है।।२८-३१।।

रवौ भूर्जे लिखेद् धीमान् कृत्वा कर्माह्निकं प्रिये ॥३२॥
श्रीचक्राग्रेऽष्टगन्धेन साधको मन्त्रसिद्धये।
लिखित्वा धारयेद् बाहौ गुटिकां पुण्यवर्धिनीम् ॥३३॥
किं किं न साधयेल्लोके गुटिका वर्मणोऽचिरात्।

रविवार में दैनिक क्रियाकर्म करके बुद्धिमान साधक अष्टगन्ध से भोजपत्र पर श्रीचक्र के सामने इसे लिखे तो उसे सिद्धि प्राप्त होती है। लिखकर गुटिका बनाकर बाँह में इसे धारण करने से पुण्य की वृद्धि होती है। संसार में इस कवच की गुटिका से क्या-क्या नहीं प्राप्त किया जा सकता है?।।३२-३३।।

गुटिकां धारयेन्मूर्ध्नि राजानं वशमानयेत् ॥३४॥
धनार्थी धारयेत् कण्ठे पुत्रार्थी कुक्षिमण्डले।
तामेवं धारयेद् देवि लिखित्वा भूर्जपत्रके ॥३५॥
श्वेतसूत्रेण संवेष्ट्य लाक्षया परिवेष्टयेत्।
सुवर्णेनाथ संवेष्ट्य धारयेद् रक्तरज्जुना ॥३६॥
गुटिका कामदा देवि देवानामपि दुर्लभा।
कवचस्यास्य गुटिका धृता मुक्तिप्रदायिनी ॥३७॥

गुटिका को मूर्धा में धारण करने से राजा वश में होते हैं। धन-प्राप्ति के लिये इसे

कण्ठ में और पुत्र-प्राप्ति के लिये कुक्षिमण्डल में धारण करना चाहिये। इसे उसी प्रकार भोजपत्र पर लिखकर गुटिका बनाकर श्वेत सूत्र से लपेटे। तब लाह से परिवेष्टित करे अथवा सोने के ताबीज में भरे। लाल धागे में धारण करे। यह गुटिका मनोरथों को पूरा करती है। देवों को भी यह दुर्लभ है। इस कवच की गुटिका को धारण करने से मुक्ति-लाभ होता है।।३४-३७।।

कवचस्यास्य देवेशि वर्णितुं नैव शक्यते।
महिमा च महादेवि जिह्वाकोटिशतैरपि ॥३८॥
अदातव्यमिदं वर्म मन्त्रगर्भं रहस्यकम्।
अवक्तव्यं महापुण्यं सर्वसारस्वतप्रदम् ॥३९॥
अदीक्षिताय नो दद्यात् कुचैलाय दुरात्मने।
अन्यशिष्याय दुष्टाय निन्दकाय कुलार्थिनाम् ॥४०॥

हे देवेशि! इस कवच की महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता है। इसकी महिमा का वर्णन सौ करोड़ जीभों से भी नहीं किया जा सकता। यह मन्त्रगर्भित कवच-रहस्य किसी को भी नहीं देना चाहिये। सर्व सारस्वत क्षमताओं तथा पुण्यों के प्रदायक इस कवच को किसी से नहीं कहना चाहिये। अदीक्षित, कुचैल दुष्ट, दूसरे के शिष्य, कौलिकों के निन्दक एवं दुष्टों को इसे नहीं बताना चाहिये।।३८-४०।।

दीक्षिताय कुलीनाय गुरुभक्तिरताय च।
शान्ताय कुलसक्ताय शाक्ताय कुलकामिने।
इदं वर्म शिवे दत्त्वा कुलभागी भवेन्नरः ॥४१॥
इदं रहस्यं परमं दुर्गाकवचमुत्तमम्।
गुह्यं गोप्यतमं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥४२॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये दुर्गाकवचनिरूपणं नामाष्टाचत्वारिंशः पटलः॥४८॥

कुलाचार में दीक्षित, गुरु-भक्तिरत, शान्त, कुलासक्त, कुलकामी शाक्त को ही यह कवच देना चाहिये। इन्हें कवच देकर मनुष्य कुलभागी होता है। यह उत्तम दुर्गा- कवच परम रहस्यमय है। यह गुह्य, गोप्यतम, गोप्य है और अपनी योनि के समान गोपनीय है।।४१-४२।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में दुर्गाकवच निरूपण नामक अष्टचत्वारिंश पटल पूर्ण हुआ।

●

अथैकोनपञ्चाशत्तमः पटलः

दुर्गासहस्रनाम

सहस्रनाममाहात्म्यम्

श्रीभैरव उवाच

अधुना श्रृणु वक्ष्यामि दुर्गासर्वस्वमीश्वरि।
रहस्यं मम देवानां दुर्लभं जन्मिनामपि ॥१॥
श्रीदुर्गातत्त्वमुद्दिष्टसारं त्रैलोक्यकारणम्।
मन्त्रनामसहस्रं च दुर्गायाः पुण्यदं परम् ॥२॥
यं पठित्वा शिवे धृत्वा देवीनामसहस्रकम्।
इह भोगी परत्रापि जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥३॥
इदं नामसहस्रं ते मन्त्रगर्भं रहस्यकम्।
अश्वमेधायुतात् पुण्यं लोके सौभाग्यवर्धनम् ॥४॥
श्रेयस्करं विश्ववन्द्यं सर्वदेवनमस्कृतम्।
गुह्यं गोप्यतमं देवि पठनात् सिद्धिदायकम् ॥५॥

सहस्रनाममाहात्म्य—हे देवि! सुनो, अब मैं दुर्गासर्वस्व का वर्णन करता हूँ, जो देवों के लिये रहस्यमय है और मनुष्यों के लिये दुर्लभ है। यह श्री दुर्गातत्त्व का सार, त्रैलोक्य का कारण, दुर्गा मन्त्रगर्भित सहस्रनाम श्रेष्ठ पुण्यप्रद है। इसका साधक संसार में सभी सुखों को भोगकर परलोक में जीवन्मुक्त होता है। यह मन्त्रगर्भित सहस्रनाम रहस्य दश हजार अश्वमेध यज्ञ का पुण्यफल देने वाला एवं सौभाग्यवर्धक है। यह विश्ववन्द्य, श्रेयष्कर और सभी देवों द्वारा नमस्कृत है। यह गुह्य एवं गोप्यतम है। हे देवि! इसके पाठ से सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।।१-५।।

सहस्रनामविनियोगः

अस्य श्रीदुर्गानामसहस्रपाठस्य श्रीमहेश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीदुर्गा देवता, दुं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकं, धर्मार्थकाममोक्षार्थे सहस्र-नामपाठे विनियोगः।

विनियोग—इस दुर्गासहस्रनाम पाठ के श्रीमहेश्वर ऋषि, अनुष्टप् छन्द, श्रीदुर्गा

देवता, दुं बीज, ह्रीं शक्ति एवं ॐ कीलक है। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति हेतु इसका सहस्त्रनाम-पाठ में विनियोग किया जाता है।

ध्यानम्

दूर्वानिभां त्रिनयनां विलसत्किरीटां शङ्खाब्जखड्गशरखेटकशूलचापान्।
संतर्जनीं च दधती महिषासनस्थां दुर्गां नवारकुलपीठगतां भजेऽहम्॥

ध्यान—श्रीदुर्गा का वर्ण दूर्वा के समान है। तीन नेत्र हैं। माथे पर किरीट शोभित है। हाथों में शङ्ख, पद्म, खड्ग, वाण, मुशल, त्रिशूल, धनुष और तर्जनी है। महिष के आसन पर आसीन हैं। नवयोनि पीठगत दुर्गा का हम ध्यान करते हैं।

सहस्त्रनाम

ॐ ह्रींदुं जगदम्बा भा भद्रिका भद्रकालिका।
प्रचण्डा चण्डिका चण्डी चण्डमुण्डनिसूदिनी॥६॥
अनसूया तुटिस्तारा कृत्तिका कुब्जिका लया।
प्रलया स्थितिः संभूतिर्विभूतिर्भयनाशिनी॥७॥
महामाया महाविद्या मूलविद्या चिदीश्वरी।
मदालसा मदोत्तुङ्गा मदिरा मदनप्रिया॥८॥
आलिर्व्यालप्रसूः पुण्या पवित्रा परमेश्वरी।
आदिदेवी कला कान्ता त्रिपुरा जगदीश्वरी॥९॥
मनोन्मना महालक्ष्मीः सिद्धलक्ष्मीः सरस्वती।
सरित्कादम्बरी गोधा गुह्यकाली गणेश्वरी॥१०॥
गणाम्बिका जया तापी तपना तापहारिणी।
तपोमयी दुरालम्बा दुष्टग्रहनिवारिणी॥११॥
दुःखहा सुखदा साध्वी परमामृतसूः सुरा।
सुधा सुधांशुनिलया प्रलयानलसन्निभा॥१२॥
समस्ता सम्पदम्भोजनिलया कर्णिकालया।
विद्येश्वरी विश्वमयी विराट् छन्दो गतिर्मतिः॥१३॥
भूतिदा दाम्भिकी दोला लोपामुद्रा पटीयसी।
गरिष्ठारिष्टहाऽदुष्टा कृषा काशी कुलाकुला॥१४॥
अकुलस्था पदन्यासा न्यासरूपा विरूपिणी।
विरूपाक्षी कोटराक्षी कुलकान्तापराजिता॥१५॥

अजिता कुलिका लम्पा लम्पटा त्रिपुरेश्वरी।
त्रितयी(१००)वेदविन्यासा संन्यासा सुमतिर्भया ॥१६॥

सहस्रनाम—ॐ ह्रीं दुं जगदम्बा, भा भद्रिका, भद्रकालिका, प्रचण्डा, चण्डिका, चण्डी, चण्डमुण्डनिसूदिनी, अनसूया, तुटि, तारा, कृत्तिका, कुब्जिका, लया, प्रलया, स्थिति, सम्भूति, विभूति, भयनाशिनी, महामाया, महाविद्या, मूलविद्या, चिदीश्वरी, मदालसा, मदोत्तुङ्गा, मदिरा, मदनप्रिया, आलि, व्यालप्रसू, पुण्या, पवित्रा, परमेश्वरी, आदिदेवी, कला, कान्ता, त्रिपुरा, जगदीश्वरी, मनोन्मना, महालक्ष्मी, सिद्धलक्ष्मी, सरस्वती, सरित्कादम्बरी, गोधा, गुह्यकाली, गणेश्वरी, गणाम्बिका, जया, तापी, तपना, तापहारिणी, तपोमयी, दुरालम्बा, दुष्टग्रह-निवारिणी, दु:खहा, सुखदा, साध्वी, परमामृतसू, सुरा, सुधा, सुधांशुनिलया, प्रलयानलसन्निभा, समस्ता, सम्पदम्भोजनिलया, कर्णिकालया, विद्येश्वरी, विश्वमयी, विराट, छन्द, गति, मति, भूतिदा, दाम्भिकी, दोला, लोपामुद्रा, पटीयसी, गरिष्ठा-रिष्टहा, अदुष्टा, कृषा, काशी, कुलाकुला, अकुलस्था, पदन्यासा, न्यासरूपा, विरूपिणी, विरूपाक्षी, कोटराक्षी, कुलकान्ता, अपराजिता, अजिता, कुलिका, लम्पा, लम्पटा, त्रिपुरेश्वरी, त्रितयी, वेदविन्यासा, संन्यासा, सुमति, भया।।६-१६।।

अभया स्वर्मुखा देवी महौषधिरलम्बुसा।
चपला चन्द्रिका चण्डा चण्डमुण्डनिसूदिनी ॥१७॥
चापलाक्षी मदाविष्टा मदिरारुणलोचना।
पुरी त्रिपुरसू रास्ना रसा रामा मनोहरा ॥१८॥
संध्या संध्याभ्रशीला च शाला श्यामपयोधरा।
शशाङ्कमुकुटा श्यामा सुरा सुन्दरलोचना ॥१९॥
विषमाक्षी विशालाक्षी वाशा वागीश्वरी शिला।
मन:शिला च कस्तूरी मृगनाभिर्मृगेक्षणा ॥२०॥
मृगारिवाहना माध्वी मानदा मत्तभाषिणी।
नारसिंही वामदेवी वामा वामश्रुतिप्रिया ॥२१॥
पुण्या पुण्यगति: पुण्या पुत्री पुण्यजनप्रिया।
चामुण्डा चोग्रचण्डा च महाचण्डाऽतमाऽतमा: ॥२२॥
तमस्विनी प्रभा ज्योत्स्ना महज्ज्योति:स्वरूपिणी।
सुरूपा सद्गति: साध्वी सदसद्रूपराजिता ॥२३॥
सृष्टि: स्थिति: क्षेमकरी क्षमा क्षामोन्नतस्तनी।

क्षोणी क्षयकरी क्षीणा शर्वस्था शिववल्लभा ॥२४॥
दन्तुरा दाडिमप्रीतिर्दया दाम्भिकसूदिनी ।
राक्षसी डाकिनी योग्या योगिनी योगवल्लभा ॥२५॥
कबन्धा कन्धरा कृष्णा कृत्तिका कण्ठकान्तका ।
कलङ्करहिता काली कम्पा काश्मीरवल्लभा ॥२६॥
काशी कीर्तिप्रदा काञ्ची काश्मीरी कोकिलस्वना ।
प्रभावती(२००)महारौद्री रुद्रपत्नी रुजापहा ॥२७॥

अभया, स्वर्मुखा, देवी, महौषधि, अलम्बुषा, चपला, चन्द्रिका, चण्डा, चण्ड-मुण्डनिसूदिनी, चापलाक्षी, मदाविष्टा, मदिरारुणलोचना, पुरी, त्रिपुरसू, रास्ना, रसा, रामा, मनोरमा, सन्ध्या, सन्ध्याभ्रशीला, शाला, श्यामपयोधरा, शशांकमुकुटा, श्यामा, सुरा, सुन्दरलोचना, विषमाक्षी, विशालाक्षी, वाशा, वागीश्वरी, शिला, मनःशिला, कस्तूरी, मृगनाभि, मृगेक्षणा, मृगारिवाहना, माध्वी, मानदा, मत्तभाषिणी, नारसिंही, वामदेवी, वामा, वामश्रुतिप्रिया, पुण्या, पुण्यगति, पुण्या, पुत्री, पुण्यजनप्रिया, चामुण्डा, उग्रचण्डा, महाचण्डा, अतमा, तमा, तमस्विनी, प्रभा, ज्योत्स्ना, महज्ज्योतिस्वरूपिणी, सुरूपा, सद्गति, साध्वी, सदसद्रूपराजिता, सृष्टि, स्थिति, क्षेमकरी, क्षमा, क्षामोन्नतस्तनी, क्षोणी, क्षयकरी, क्षीणा, शर्वस्था, शिववल्लभा, दन्तुरा, दाड़िमप्रीति, दया, दाम्भिकसूदिनी, राक्षसी, डाकिनी, योग्या, योगिनी, योगवल्लभा, कबन्धा, कन्धरा, कृष्णा, कृत्तिका, कण्ठकान्तका, कलङ्करहिता, काली, कम्पा, काश्मीरवल्लभा, काशी, कीर्तिप्रदा, काञ्ची, काश्मीरी, कोकिलस्वना, प्रभावती, महारौद्री, रुद्रपत्नी, रुजापहा।।१७-२७।।

रतिः स्तुतिस्तरीस्तुर्या तोतुलाऽतलवासिनी ।
तपःप्रिया शरच्छ्रेष्ठा पङ्गुपुत्री यमस्वसा ॥२८॥
यामी यमान्तका याम्या यमुना स्वर्नदी तडित् ।
नारायणी विश्वमाता भवानी पापनाशिनी ॥२९॥
विगता विगतप्रश्ना कृष्णा कृष्टासिधारिणी ।
वारी वारा वरधरा वरदा वीरसूदिनी ॥३०॥
वीरसूर्वामनाकारा दीर्घसूत्रा दयावती ।
दरी धनप्रदा धात्री धात्रीवल्ली महोदरी ॥३१॥
गणेश्वरी गया काञ्ची काञ्चीकिङ्किणिघण्टिका ।
माया मायावती मत्ता प्रमत्ता प्रवरेश्वरी ॥३२॥

पौरन्दरी शची शीता शीतातपस्वभावजा ।
स्वाभाविकगुणा गण्या गाम्भीर्यगुणभूषणा ॥३३॥
सूतिः सूर्यकला सुप्ता सप्तसप्तिस्वरूपिणी ।
तेजस्विनी सदानन्दा सभासन्तोषवर्धिनी ॥३४॥
तर्पणा कर्षणा होता सङ्कल्पा शुभमन्त्रिका ।
दर्भा द्रोणिकला श्रान्ता समिद्धा सुरवेदिका ॥३५॥
धूम्राहुतिश्चरमतिश्चामीकररुचिश्चिता ।
चिन्तानलेश्वरी नेलाकरा नीलसरस्वती ॥३६॥
अपर्णा सुफला यज्ञा सभया निर्भयाभया ।
भीमस्वना भर्गशिखा भास्वती भाकरा विभा ॥३७॥
विभावरी नदी नन्द्या नन्द्यावर्तप्रवर्तिनी ।
पृथ्वीधरा विश्वधरा(३००)विश्वगर्भा प्रवर्तिका ॥३८॥

रति, स्तुति, तरी, तुर्या, तोतुला, अतलवासिनी, तपःप्रिया, शरच्छ्रेष्ठा, पङ्कुपुत्री, यमस्वसा, यामी, यमान्तका, याम्या, यमुना, स्वर्नदी, तड़ित्, नारायणी, विश्वमाता, भवानी, पापनाशिनी, विगता, विगतप्रश्ना, कृष्णा, कृष्टासिधारिणी, वारी, वारा, वरधरा, वरदा, वीरसूदिनी, वीरसूः, वामनाकारा, दीर्घसूत्रा, दयावती, दरी, धनप्रदा, धात्री, धात्रीवल्ली, महोदरी, गणेश्वरी, गया, काञ्ची, काञ्चीकिङ्किणीघण्टिका, माया, मायावती, मत्ता, प्रमत्ता, प्रवरेश्वरी, पौरन्दरीद्ध शची, शीता, शीतातपस्वभावजा, स्वाभाविकगुणा, गण्या, गाम्भीर्यगुणभूषणा, सूति, सूर्यकला, सुप्ता, सप्तसप्तिस्वरूपिणी, तेजस्विनी, सदानन्दा, सभासन्तोषवर्धिनी, तर्पणा, कर्षणा, होता, सङ्कल्पा, शुभमन्त्रिका, दर्भा, द्रोणिकला, श्रान्ता, समिद्धा, सुरवेदिका, धूम्राहुति, चरमति, चामीकररुचि, चित्ता, चिन्तानलेश्वरी, नेलाकाला, नीलसरस्वती, अपर्णा, सुफला, यज्ञा, सभया, निर्भया, अभया, भीमस्वना, भर्गशिखा, भास्वती, भाकरा, विभा, विभावरी, नदी, नन्द्या, नन्द्यावर्तप्रवर्तिनी, पृथ्वीधरा, विश्वधरा, विश्वगर्भा, प्रवर्तिका।।२८-३८।।

विश्वमाया विश्वमाला विश्वम्भरविलासिनी ।
उरगेशा पद्मनागा पद्मनाभप्रसूः प्रजा ॥३९॥
तोरणा तुलसी दीक्षा दक्षा दाक्षायणी द्युतिः ।
संपुटा शयना शय्या शासना शमनान्तका ॥४०॥
श्यामाकवर्णा शार्दूली शम्पा शीलांशुवल्लभा ।

स्तुत्या प्रणीता नियतिः कम्पना कम्पहारिणी ॥४१॥
चम्पकाभा चरा चीना दीना दीनजनप्रिया।
वसुन्धरा वासवेशी वसुनाथा वटेश्वरी ॥४२॥
समुद्रा सङ्गमा पूर्णाऽन्तराला तरुवासिनी।
पार्वती पामरी मान्या माननीया मधुप्रिया ॥४३॥
माधवी मधुपानस्था मन्दिरा मन्दुरा मृगी।
मोमुषा रूरुषा रेवा रेवती रमणी रमा ॥४४॥
ऋद्धिहस्ता सिद्धिहस्ता अन्नपूर्णा महेश्वरी।
अन्नरूपा जगज्ज्योतिः समस्तासुरघातिनी ॥४५॥
गारुडी गगनालम्बा लम्बमानकचप्रिया।
पीताम्बरा पीतपुष्पा पूतना गीतवल्लभा ॥४६॥
बलाका जगदन्ता च जरा जयवरप्रदा।
प्रीतिः कठोरवदना करालरदना रसा ॥४७॥
जिह्वाहस्ता च बगला प्रणया विनयप्रदा।
किरी करालवपुषी शेमुषी मक्षिका मषी ॥४८॥
उत्तीर्णा तर्णिका तीक्ष्णा श्लक्ष्णा कामेश्वरी शिवा।
शिवपत्नी सरोजाक्षी पद्महस्ता(४००)सरस्वती ॥४९॥

विश्वमाया, विश्वमाला, विश्वम्भरविलासिनी, उरगेशा, पद्मनागा, पद्मनाभप्रसूः, प्रजा, तोरणा, तुलसी, दीक्षा, दक्षा, दाक्षायणी, द्युतिः, सम्पुटा, शयना, शय्या, शासना, शमनान्तका, श्यामाकवर्णा, शार्दूली, शम्पा, शीलांशुवल्लभा, स्तुत्या, प्रणीता, नियति, कम्पना, कम्पहारिणी, चम्पकाभा, चरा, चीना, अदीना, दीनजन-प्रिया, वसुन्धरा, वासवेशी, वसुनाथा, वटेश्वरी, समुद्रा, सङ्गमा, पूर्णा, अन्तराला, तरुवासिनी, पार्वती, पामरी, मान्या, माननीया, मधुप्रिया, माधवी, मधुपानस्था, मन्दिरा, मन्दुरा, मृगी, मोमुषा, रूरुषा, रेवा, रेवती, रमणी, रमा, ऋद्धिहस्ता, सिद्धिहस्ता, अन्नपूर्णा, महेश्वरी, अन्नरूपा, जगज्ज्योति, समस्तासुरघातिनी, गारुड़ी, गगनालम्बा, लम्बमानकचप्रिया, पीताम्बरा, पीतपुष्पा, पूतना, गीतवल्लभा, बलाका, जगदन्ता, जरा, जयवरप्रदा, प्रीति, कठोरवदना, करालरदना, रसा, जिह्वाहस्ता, बगला, प्रणया, विनयप्रदा, किरी, करालवपुषी, शेमुषी, मक्षिका, मषी, उत्तीर्णा, तर्णिका, तीक्ष्णा, श्लक्ष्णा, कामेश्वरी, शिवा, शिवपत्नी, सरोजाक्षी, पद्महस्ता, सरस्वती।।३९-४९।।

कमलाक्षी कमलजा करवालविहारिणी ।
कविपूज्या कविगतिः कविरूपा कविप्रिया ॥५०॥
कदली कदलीरूपा कदलीवनवासिनी ।
कलप्रीता कलहदा कलहा कलहातुरा ॥५१॥
कस्तूरीमृगसंस्था च कस्तूरीमृगरूपिणी ।
कठोरा करमाला च कठोरकुचधारिणी ॥५२॥
यज्ञमाता यज्ञभोक्त्री यज्ञेशी यज्ञसम्भवा ।
यज्ञसिद्धिः क्रियासिद्धिर्यज्ञाङ्गी यज्ञरक्षिका ॥५३॥
वैष्णवी विष्णुरूपा च विष्णुमातृस्वरूपिणी ।
विष्णुमाया विशालाक्षी विशालनयनोज्ज्वला ॥५४॥
शिवमाता शिवाख्या च शिवदा शिवरूपिणी ।
गायत्री चैव सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मरूपिणी ॥५५॥
दुर्गस्था दुर्गरूपा च दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ।
माहेश्वरी च सर्वाद्या शर्वाणी सर्वमङ्गला ॥५६॥
सूर्यकोटिसहस्राभा चन्द्रकोटिनिभानना ।
समुद्रकोटिगम्भीरा वायुकोटिमहाबला ॥५७॥
सोमसूर्याग्निमध्यस्था मणिमण्डलवासिनी ।
द्वादशारसरोजस्था सूर्यमण्डलवासिनी ॥५८॥
अकलङ्कशशाङ्काभा षोडशारनिवासिनी ।
हृत्पद्मनिलयाऽभीमा महाभैरवनादिनी ॥५९॥
वर्णाढ्या वर्णरहिता पञ्चाशद्वर्णभेदिनी ।
भवानी भूतिदा भूतिर्भूतिदात्री च भैरवी ॥६०॥
भैरवाचारनिरता भूतभैरवसेविता ।
कामेश्वरी कामरूपा कामतापविमोचिनी ॥६१॥
गणेशजननी देवी गणेशवरदायिनी ।
गतिदा गतिहा गीता गौतमी गुरुसेविता ॥६२॥
दीनदुःखहरा दीनतापनिर्मूलकारिणी ।
दयाशीला दयासारा दयासागरसंस्थिता ॥६३॥
नृत्यप्रिया नृत्यरता नर्तकी नर्तकप्रिया ।
नारायणी नरेन्द्रस्था नरमुण्डास्थिमालिनी ॥६४॥
भैरवी भैरवाराध्या भीमा भीमवरप्रदा (५००) ।

कमलाक्षी, कमलजा, करवालविहारिणी, कविपूज्या, कविगति, कविरूपा, कविप्रिया, कदली, कदलीरूपा, कदलीवनवासिनी, कलप्रीता, कलहदा, कलहा, कलहातुरा, कस्तूरीमृगसंस्था, कस्तूरीमृगरूपिणी, कठोरा, करमाला, कठोरकुच-धारिणी, यज्ञमाता, यज्ञभोक्त्री, यज्ञेशी, यज्ञसम्भवा, यज्ञसिद्धि, क्रियासिद्धि, यज्ञाङ्गी, यज्ञरक्षिका, वैष्णवी, विष्णुरूपा, विष्णुमातृस्वरूपिणी, विष्णुमाया, विशालाक्षी, विशालनयनोज्ज्वला, शिवमाता, शिवाख्या, शिवदा, शिवरूपिणी, गायत्री, सावित्री, ब्रह्माणी, ब्रह्मरूपिणी, दुर्गस्था, दुर्गरूपाणी, दुर्गा, दुर्गतिनाशिनी, माहेश्वरी, सर्वाद्या, शर्वाणी, सर्वमङ्गला, सूर्यकोटिसहस्राभा, चन्द्रकोटिनिभानना, समुद्रकोटिगम्भीरा, वायुकोटिमहाबला, सोमसूर्याग्निमध्यस्था, मणिमण्डलवासिनी, द्वादशारसरोजस्था, सूर्यमण्डलवासिनी, अकलङ्कशशाङ्काभा, षोडशारनिवासिनी, हृत्पद्मनिलया, अभीमा, महाभैरवनादिनी, वर्णाढ्या, वर्णरहिता, पञ्चाशद्वर्णभेदिनी, भवानी, भूतिदा, भूति, भूतिदात्री, भैरवी, भैरवाचारनिरता, भूतभैरवसेविता, कामे-श्वरी, कामरूपा, कामतापविमोचिनी, गणेशजननी, देवी, गणेशवरदायिनी, गतिदा, गतिहा, गीता, गौतमी, गुरुसेविता, दीनदुःखहरा, दीनतापनिर्मूलकारिणी, दया-शीला, दयासारा, दयासागरसंस्थिता, नृत्यप्रिया, नृत्यरता, नर्तकी, नर्तकप्रिया, नारायणी, नरेन्द्रस्था, नरमुण्डास्थिमालिनी, भैरवी, भैरवाराध्या, भीमा, भीम-वरप्रदा।।५०-६४।।

भुवना भुवनाराध्या भवानी भूतिवर्धिनी ॥६५॥
महिषासुरहन्त्री च रक्तबीजविनाशिनी।
धनुर्बाणधरा नित्या धूम्रलोचननाशिनी ॥६६॥
कुलीना कुलमार्गस्था कुलमार्गप्रकाशिनी।
पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्या पञ्चाशन्मुण्डमालिका ॥६७॥
षडङ्गयुवतीपूज्या षडङ्गरूपवर्जिता।
कालमाता कालरात्रिः काली कमलवासिनी ॥६८॥
कमला कान्तिरूपा च कामराजेश्वरी क्रिया।
माया मतिर्महामाया भयदा भयहारिका ॥६९॥
नारी नारायणी गण्या नारायणगृहप्रिया।
मदिरापानसन्तुष्टा मदिरामोदधारिणी ॥७०॥
तथ्या पथ्या कृती रथ्या रथस्था विततस्वरा।
महती रागिणी भार्गी शुचिहासा हरीश्वरी ॥७१॥

हरिद्रत्नांशुलसिता लक्ष्मीनायकसुन्दरी।
अम्बालिकाम्बा देवेशी अनघाग्निशिखा श्रुतिः ॥७२॥
अलसाल्पगतिश्चान्त्यानन्तानन्तगुणाश्रया ।
आद्या चादित्यसङ्काशा आदित्यकुलसुन्दरी ॥७३॥
आत्मरूपाधिशमनी आदिमायादिदेवता।
इन्द्रप्रसूरिनद्योतिरिनाग्निशशिलोचना ॥७४॥
इन्द्रावरजसंस्तुत्या इला चेक्षुरसप्रिया।
ईश्वरी ईशवनिता ईशा केशववल्लभा ॥७५॥
उमा उर्वी उरुभुजा उत्तुङ्गा चोक्षवाहना।
उत्तङ्का चोत्तमा ध्येया उल्लासा चोरुगर्विणी ॥७६॥
ऊष्मा ऊणा च गुर्वङ्गी ऊर्ध्वाक्षी ऊर्ध्वमस्तका।
ऋद्धिर्ऋचा ऋवर्णेशी ऋणहर्त्री ऋवान्तकी ॥७७॥
ॠढिजा चारुवस्त्रा च ॠणिवासा महालया।

भुवना, भुवनाराध्या, भवानी, भूतिवर्धिनी, महिषासुरहन्त्री, रक्तबीजविनाशिनी, धनुर्वाणधरा, नित्या, धूम्रलोचननाशिनी, कुलीना, कुलमार्गस्था, कुलमार्गप्रकाशिनी, पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्या, पञ्चाशन्मुण्डमालिका, षडङ्गयुवतीपूज्या, षडङ्गरूपवर्जिता, कालमाता, कालरात्रि, काली, कमलवासिनी, कमला, कान्तिरूपा, कामराजेश्वरी, क्रिया, माया, मति, महामाया, भयदा, भयहारिका, नारी, नारायणी, गण्या, नारायणगृहप्रिया, मदिरापानसन्तुष्टा, मदिरामोदधारिणी, तथ्या, पथ्या, कृती, रथ्या, रथस्था, विततस्वरा, महती, रागिणी, भार्गी, शुचिहासा, हरीश्वरी, हरिद्रत्नांशुलसिता, लक्ष्मी, नायकसुन्दरी, अम्बालिका, अम्बा, देवेशी, अनघाग्निशिखा, श्रुति, अलसा, अल्पगति, अन्त्या, अनन्ता, अनन्तगुणाश्रया, आद्या, आदित्यसङ्काशा, आदित्यकुलसुन्दरी, आत्मरूपा, अधिशमनी, आदिमाया, आदिदेवता, इन्द्रप्रसू, इनद्योति, इनाग्नि, शशिलोचना, इन्द्रावरजसंस्तुत्या, इला, इक्षुरसप्रिया, ईश्वरी, ईशवनिता, ईशा, केशववल्लभा, उमा, उर्वी, उरुभुजा, उत्तुङ्गा, उक्षवाहना, उत्तङ्का, उत्तमा, ध्येया, उल्लासा, उरुगर्विणी, ऊष्मा, ऊणा, गुर्वङ्गी, ऊर्ध्वाक्षी, ऊर्ध्वमस्तका, ऋद्धि, ऋचा, ऋवर्णेशी, ऋणहन्त्री, ऋवान्तकी, ॠढिजा, चारुवस्त्रा, ॠणिवासा, महालया।।६५-७७।।

लृकारा लृक्कुरा लीना लृकारा वरधारिणी ॥७८॥
एणाङ्कमुकुटा चेहा चारुचन्द्रकला कला।

ऐकारगतिरैश्वर्यदायिनी चैश्वरी गतिः ॥७९॥
ॐकारा बीजरूपा च औत्रिकी वेत्रधारिणी।
अम्बिका लम्पिका पम्पा अःस्वरोद्गाररूपिणी ॥८०॥
काली च भद्रकाली च कालिका कालवल्लभा।
कदम्बनिलया कन्था काञ्चीमण्डनमण्डिता ॥८१॥
कलङ्करहिता कूर्मा काञ्चनाभा करीरगा।
कनकाचलवासा च कारुण्याकुलमानसा ॥८२॥
कुलस्था कौलिनी कुल्या कुरुकुल्ला कपालिनी।
कपालकुलनिर्विण्णा क्लींकारा कञ्जलोचना ॥८३॥
खञ्जनाक्षी खड्गधरा खेटकायुधभूषणा।
खर्पराढ्या च खलहा खेटिनी खेचरी खगा ॥८४॥
खगायुधा खगगतिः खकाराक्षरभूषणा।
गणाध्यक्षा गजगतिर्गणेशजननी गदा ॥८५॥
गोधा गदाधरा प्राज्या गगनेशी मही मला।
घुर्घुरा घटभूर्घूका घुसृणाभा गणेश्वरी ॥८६॥
घनसारप्रिया साम्या घवर्णकृतभूषणा।
ङान्ता ङवर्णमुकुटा कवर्गकृतभूषणा ॥८७॥
चान्द्री चान्द्रिस्तुता चार्वी चन्द्रिका चण्डनिःस्वना।
चञ्चरीकस्वना देवी चञ्चच्चामीकराङ्गदा ॥८८॥
छत्रिका छुरिका छञ्छा छत्रचामरभूषणा।
ञंकारी जलजिह्वा च जृम्भिका जलयोगिनी ॥८९॥
जटाजूटधरा जातिर्जातीपुष्पसमानना।
जलेश्वरी जगद्ध्येया जानकी जननी जटा ॥९०॥
झञ्झा झरी झरत्कारी झरत्काञ्चीरकिङ्किणी।

ऌकारा, ऌक्कुरा, लीना, ॡकारा, वरधारिणी, एणांकमुकुटा, इहा, चारु-चन्द्रकला, कला, ऐकारगति, ऐश्वर्यदायिनी, ईश्वरी गति, ॐकारा, बीजरूपा, औत्रिकी, वेत्रधारिणी, अम्बिका, लम्पिका, पम्पा, अःस्वरोद्गाररूपिणी, काली, भद्र-काली, कालिका, कालवल्लभा, कदम्बनिलया, कन्था, काञ्चीमण्डनमण्डिता, कल-ङ्करहिता, कूर्मा, काञ्चनाभा, करीरगा, कनकाचलवासा, कारुण्याकुलमानसा, कुल-स्था, कौलिनी, कुल्या, कुरुकुल्ला, कपालिनी, कपालकुलनिर्विण्णा, क्लीङ्कारा,

कञ्जलोचना, खञ्जनाक्षी, खड्गधरा, खेटकायुधभूषणा, खर्पराढ्या, खलहा, खेटिनी, खेचरी, खगा, खगायुधा, खगगति, खकाराक्षरभूषणा, गणाध्यक्षा, गजगति, गणेशजननी, गदा, गोधा, गदाधरा, प्राज्या, गगनेशी, मही, मला, घुर्घुरा, घटभू, घूका, घुसृणाभा, गणेश्वरी, घनसारप्रिया, साम्या, घवर्णकृतभूषणा, ङान्ता, ङवर्ण-मुकुटा, कवर्गकृतभूषणा, चान्द्री, चान्द्रिस्तुता, चार्वी, चन्द्रिका, चण्डनिःस्वना, चञ्चरीकस्वना, देवी, चामीकराङ्गदा, चञ्चा, छत्रिका, छुरिका, छंछा, छत्रचामरभूषणा, जङ्कारी, जलजिह्वा, जृम्भिका, जलयोगिनी, जटाजूटधरा, जाति, जातीपुष्पसमानना, जलेश्वरी, जगद्ध्येया, जानकी, जननी, जटा, झंझा, झरी, झरत्कारी।।७८-९०।।

झिण्टिका झम्पकृद् झम्पा झम्पत्रासनिवारिणी ॥९१॥
ञाणुरूपा ञङ्कहस्ता ञवर्णाक्षरसंमता ।
टङ्कायुधा महातथ्या टङ्कारकरुणा टसी ॥९२॥
ठकुरा ठत्करा ठानी डिण्डीरवसना ढला ।
ढण्ढानिलमयी ढण्डा ढणत्कारकरा ढसा ॥९३॥
णान्ता णीलायुधा नम्रा णवर्णाक्षरभूषणा ।
तरुणी तुन्दिला तोन्दा तामसी तामसप्रिया ॥९४॥
ताम्रानना ताम्रकरा ताम्राम्बरधरा तुला ।
तापत्रयहरा तापी तैलासक्ता तिलोत्तमा ॥९५॥
स्थाणुपत्नी स्थली स्थूला स्थितिः स्थैर्यधरा स्थुला ।
दन्तिनी दन्तुरा दार्वी देवकी देवनायिका ॥९६॥
दमिनी शमिनी दण्ड्या दण्डहस्ता दुरानतिः ।
दुर्वारा दुर्गतिर्द्राक्षी द्राक्षा द्राविडवासिनी ॥९७॥
दूरस्था दुन्दुभिध्वाना दरदा दरनाशिनी ।
दुःखघ्नी द्रुतगाऽदुष्टा दया दाम्भिक्यनाशिनी ॥९८॥
धर्म्या धर्मप्रसूर्धन्या धनदा धातृवल्लभा ।
धनुर्धरा धनुर्वल्ली धानुष्कवरदायिनी ॥९९॥
धूमाली धूम्रवदना धूमश्रीर्धूम्रलोचना ।
नलिनी नर्तकी नान्ता नङ्गा नलिनलोचना ॥१००॥
निर्मला निगमाचारा निम्नगा नगजा निमिः ।
नीलग्रीवा निरीहा च नीपोपवनवासिनी ॥१०१॥
निरञ्जना जनी जन्या(८००)निद्रालुर्नीरवासिनी ।

झिण्टिका, झम्पकृत्, झम्पा, झम्पत्रासनिवारिणी, ञाणुरूपा, ञङ्कहस्ता, ञवर्णाक्षरसंमता, टङ्कायुधा, महातथ्या, टङ्कारकरुणा, टसी, ठकुरा, ठत्करा, ठानी, डिण्डीरवसना, कुला, ढण्ढानिलमयी, ढण्डा, ढणत्कारकरा, ढसा, णान्ता, णीलायुधा, नम्रा, णवर्णाक्षरभूषणा, तरुणी, तुन्दिला, तोन्दा, तामसी, तामसप्रिया, ताम्रानना, ताम्रकरा, ताम्राम्बरधरा, तुला, तापत्रयहरा, तापी, तैलासक्ता, तिलोत्तमा, स्थाणुपत्नी, स्थली, स्थूला, स्थिति, स्थैर्यधरा, स्थुला, दन्तिनी, दन्तुरा, दार्वी, देवकी, देवनायिका, दामिनी, शमिनी, दण्ड्या, दण्डहस्ता, दुरानति, दुर्वारा, दुगति, द्राक्षी, द्राक्षा, द्राविड़वासिनी, दूरस्था, दुन्दुभिध्वाना, दरदा, दर नाशिनी, दु:खघ्नी, द्रुतगा, अदुष्टा, दया, दाम्भिक्यनाशिनी, धर्म्या, धर्मप्रसू, धन्या, धनदा, धातृवल्लभा, धनुर्धरा, धनुर्वल्ली, धानुष्कवरदायिनी, धूमाली, धूम्रवदना, धूमश्री, धूम्रलोचना, नलिनी, नर्तकी, नान्ता, नङ्गा, नलिनलोचना, निर्मला, निगमाचारा, निम्नगा, नगजा, निमि, नीलग्रीवा, निरीहा, नीपोपवनवासिनी, निरञ्जना, जनी, जन्या, निद्रालु, नीरवासिनी।।९१-१०१।।

नटिनी नाट्यनिरता नवनीतप्रियाऽनिला ।।१०२।।
नारायणी निराकारा निर्लेपा नित्यवल्लभा ।
पद्मावती पद्मकरा पुत्रदा पुत्रवत्सला ।।१०३।।
परोत्तरा पुरी पाठा पीनश्रोत्रा पुलोमजा ।
पुष्पिणी पुस्तककरा पटु: पाठीनवाहना ।।१०४।।
पापघ्नी शम्पिनी पाली पल्ली परमसुन्दरी ।
पिशाची च पिशाचघ्नी पानपात्रधरा पुटा ।।१०५।।
पूर्णिमा पञ्चमी पौत्री पुरूरववरप्रदा ।
पञ्चयज्ञा पञ्चशरी पञ्चाशतिमनुप्रिया ।।१०६।।
पाञ्चाली पञ्चमुद्रा च पूजा पूर्णमनोरथा ।
फलिनी फलदात्री च फल्गुहस्ता फणिप्रिया ।।१०७।।
फिरङ्गहा स्फीतमति: स्फीति: स्फीतिमती स्फुरा ।
बलमाया बलस्तुत्या बिल्वसेना बलाबला ।।१०८।।
बगलेश्वरपूज्या च बलिनी बलवर्धिनी ।
बुद्धमाता बौद्धमतिर्बद्धा बन्धनमोचिनी ।।१०९।।
भगिनी भगमाला च भगलिङ्गामृतद्रवा ।
भीमेश्वरी च भेरुण्डा भगेशी भगसर्पिणी ।।११०।।

भगलिङ्गस्थिता भग्या भाग्यदा भगमालिनी।
मत्ता मनोहरा मीना मैनाकजननी मुरी ॥१११॥
मुरली मानवी होत्री महस्विजनमोहिता।
मत्तमातङ्गगा माद्री मरालगतिरञ्चला ॥११२॥
यक्षेश्वरेश्वरी यज्ञा यजुर्वेदप्रियाश्रिता।
यशोवती यतिस्था च यतात्मा यतिवल्लभा ॥११३॥
यवनी यौवनस्था च यवा यक्षजनाश्रया।
यज्ञसूत्रप्रदा ज्येष्ठा यज्ञभू(९००)र्यूपमूलिनी ॥११४॥

नटिनी, नाट्यनिरता, नवनीतप्रिया, अनिला, नारायणी, निराकारा, निर्लेपा, नित्यवल्लभा, पद्मावती, पद्मकरा, पुत्रदा, पुत्रवत्सला, परा, उत्तरा, पुरी, पाठा, पीनश्रोत्रा, पुलोमजा, पुष्पिणी, पुस्तककरा, पटु, पाठीनवाहना, पापघ्नी, शम्पिनी, पाली, पल्ली, परमसुन्दरी, पिशाची, पिशाचघ्नी, पानपात्रधरा, पुटा, पूर्णिमा, पञ्चमी, पौत्री, पुरूरववरप्रदा, पञ्चयज्ञा, पञ्चशरी, पञ्चाशतिमनुप्रिया, पाञ्चाली, पञ्चमुद्रा, पूजा, पूर्णमनोरथा, फलिनी, फलदात्री, फल्गुहस्ता, फणिप्रिया, फिरङ्गहा, स्फीतमति, स्फीति, स्फीतिमती, स्फुरा, बलमाया, बलस्तुत्या, बिल्वसेना, बला-बला, बगलेश्वरपूजिता, बलिनी, बलवर्धिनी, बुद्धमाता, बौद्धमति बद्धा, बन्धन-मोचिनी, भगिनी, भगमाला, भगलिङ्गामृतद्रवा, भीमेश्वरी, भेरुण्डा, भगेशी, भग-सर्पिणी, भगलिङ्गस्था, भग्या, भाग्यदा, भगमालिनी, मत्ता, मनोहरा, मीना, मैनाक-जननी, मुरी, मुरली, मानवी, होत्री, महस्विजनमोदिता, मत्तमातङ्गगा, माद्री, मराल-गतिरञ्चला, यज्ञेश्वरेश्वरी, यज्ञा, यजुर्वेदप्रियाश्रिता, यशोवती, यतिस्था, यतात्मा, यतिवल्लभा, यवनी, यौवनस्था, यवा, यक्षजनाश्रया, यज्ञसूत्रप्रदा, ज्येष्ठा, यज्ञभू, यूपमूलिनी।।१०२-११४।।

रञ्जिता राजपत्नी च रासूयफलप्रदा।
रजोवती रजश्चित्रा राज्यदा राज्यवर्धिनी ॥११५॥
राज्ञी रात्रिञ्चरेशानी रोगघ्नी त्रिपुरेश्वरी।
लुलिता लतिका लाप्या लोपा ललनलालसा ॥११६॥
लाटीरद्रुमवासा च पाटीरद्रुमवर्तिनी।
लङ्का ललज्जटाजूटा लङ्घिता लोकसुन्दरी ॥११७॥
लोकेशवरदा लेया लयकर्त्री महालया।
वेदिर्विलग्ना वाणी च वीणा वेणुर्वनेश्वरी ॥११८॥

वन्दमाना ववर्णाढ्या वाराही वीरमातृका।
शङ्खिनी शङ्खवलया शङ्खायुधधरा शमा ॥११९॥
शशिमण्डलमध्यस्था शीतलाम्बुनिवासिनी।
श्मशानस्था महाघोरा श्मशाननिलनेश्वरी ॥१२०॥
सिन्धुः सूत्रधरा सत्रा समस्तकुलचारिणी।
सप्तमी सात्त्विकी सत्त्वा सत्रस्थाऽसुरसूदिनी ॥१२१॥
सुरेश्वरी सम्पदाद्या समस्ताचलचारिणी।
समदा संमितिः संमा सवना सवनेश्वरी ॥१२२॥
हंसी हरप्रिया हास्या हरिनेत्रा हराम्बिका।
हेषा हटेश्वरी हेरा हलिनी हलदायिनी ॥१२३॥
हेहा हाहारवा हाला हालाहलहताशया।
क्षमा क्षेमप्रदा क्षामा क्षौमाम्बरधरा क्षया ॥१२४॥
क्षितिः क्षीरप्रिया लक्ष्मीः क्षितिभृत्तनया क्षुधा।
क्षत्रियी ब्राह्मणी क्षेत्रा क्षपा क्षःबीजमण्डिता ॥१२५॥
ळंक्षःबीजस्वरूपा च क्षकाराक्षरमातृका।
दुर्गन्धनाशिनी दूर्वा दुर्गमा दुर्गवासिनी ॥१२६॥
दुर्गा दुर्गार्तिशमनी ॐह्रींदुंबीजमण्डिता (१०००)।

रञ्जिता, राजपत्नी, राजसूयफलप्रदा, रजोवती, रजश्चित्रा, राज्यदा, राज्यवर्धिनी, राज्ञी, रात्रिंचरेशानी, रोगघ्नी, त्रिपुरेश्वरी, लुलिता, लतिका, लाप्या, लोपा, ललन-लालसा, लाटीरद्रुमवासा, पाटीरद्रुमवर्तिनी, लङ्का, ललज्जटाजूटा, लङ्घिता, लोक-सुन्दरी, लोकेशवरदा, लेया, लयकर्त्री, महालया, वेदिविलग्ना, वाणी, वीणा, वेणु, वनेश्वरी, वन्दमाना, ववर्णाढ्या, वाराही, वीरमातृका, शङ्खिनी, शङ्खवलया, शङ्खायुधधरा, शमा, शशिमण्डलमध्यस्था, शीतलाम्बुनिवासिनी, श्मशानस्था, महाघोरा, श्मशाननिलनेश्वरी, सिन्धु सूत्रधरा, सत्रा, समस्तकुलचारिणी, सप्तमी, सात्विकी, सत्त्वा, सत्रस्था, असुरसूदिनी, सुरेश्वरी, सम्पदाद्या, समस्ताचलचारिणी, समदा, संमिति, संमा, सवना, सवनेश्वरी, हंसी, हरप्रिया, हास्या, हरिनेत्रा, हराम्बिका, हेषा, हटेश्वरी, हेरा, हलिनी, हलदायिनी, हेहा, हाहारवा, हाला, हालाहलहताशया, क्षमा, क्षेमप्रदा, क्षामा, क्षौमाम्बरधरा, क्षया, क्षिति, क्षीरप्रिया, लक्ष्मी, क्षितिभृत्तनया, क्षुधा, क्षत्रियी, ब्राह्मणी, क्षेत्रा, क्षपा, क्षःबीजमण्डिता, ळंक्षःबीजस्वरूपा, क्षकाराक्षरमातृका, दुर्गन्धनाशिनी, दूर्वा, दुर्गमा, दुर्गवासिनी, दुर्गा, दुर्गार्ति शमनी, ॐ ह्रीं दुं बीजमण्डिता।।११५-१२६।।

फलश्रुतिः

इति नामसहस्त्रं तु मन्त्रगर्भं महाफलम् ॥१२७॥
दुर्गाया दुर्गतिहरं सर्वदेवनमस्कृतम् ।
सर्वमन्त्रमयं दिव्यं देवदानवपूजितम् ॥१२८॥
श्रेयस्करं महापुण्यं महापातकनाशनम् ।
यः पठेत् पाठयेद्वापि शृणोति श्रावयेदपि ॥१२९॥
स महापातकैर्मुक्तो देवदानवसेवितः ।
इह लोके श्रियं भुक्त्वा परत्र त्रिदिवं व्रजेत् ॥१३०॥

फलश्रुति—दुर्गा का यह मन्त्रगर्भित सहस्रनाम महाफलदायक है। यह दुर्गतिहर है। सभी देव इसे नमस्कार करते हैं। यह सर्वमन्त्रमय, दिव्य, देव-दानवपूजित है। श्रेयष्कर, महापुण्यप्रद एवं महापापों का विनाशक है। जो इसका पाठ स्वयं करता है या दूसरे से पाठ करवाता है, जो इसे सुनता है या सुनवाता है, वह महापापों से मुक्त होकर देव-दानव-सेवित होता है। संसार के समस्त वैभव का भोग करके अन्त में स्वर्ग में वास करता है।।१२७-१३०।।

दुर्गानामसहस्त्रं तु मूलमन्त्रैकसाधनम् ।
अर्धरात्रे पठेद्वीरो मधुरस्मयसेवितः ॥१३१॥
त्रिवारं वर्मपूर्वं तु भवेद्वागीशसन्निभः ।
यः पठेद् देवि मध्याह्ने स्त्रीयुतो मुक्तकुन्तलः ॥१३२॥
तस्य वैरिकुलं त्रस्येद् दर्शनाद् दैत्यसूदिनि ।
दहनादिव देवेशि पतङ्गकुलमद्रिजे ॥१३३॥
यः पठेद्वेतसीमूले सायं पूजितभैरवः ।
तस्यास्यकुहराद् वाणी निःसरेद्गद्यपद्यभाक् ॥१३४॥

दुर्गानामसहस्र मूल मन्त्र का साधन है। मधुरस्मय सेवित जो वीर आधी रात में कवच का पाठ करके इसका तीन पाठ करता है, वह वागीश्वर के समान हो जाता है। जो स्त्री के साथ खुले केश होकर मध्याह्न में इसका पाठ करता है, उसके शत्रु दैत्यमर्दिनी के दर्शन से वैसे ही भयभीत होते हैं, जैसे फतिङ्गे अग्नि से भयभीत होते हैं। सायंकाल में भैरव की पूजा करके अतसी-मूल में जो इसका पाठ करता है, उसके मुखकुहर से गद्य-पद्यमयी वाणी धाराप्रवाह निकलती है।।१३१-१३४।।

यः पठेत् सततं देवि शयने स्त्रीरताकुलः ।
स भवेद्वैरिविध्वंसी धनेन धनदोपमः ॥१३५॥

वाग्भिर्वागीशसदृशः कवित्वेन सितोपमः।
तेजसा सूर्यसङ्काशो यशसा शशिसन्निभः ॥१३६॥
बलेन वायुतुल्योऽपि लक्ष्म्या गीर्वाणनायकः।
देवि किं बहुनोक्तेन स भवेद्भैरवोपमः ॥१३७॥

जो प्रत्येक रात में सोने के समय स्त्रीरताकुल होकर इसका पाठ करता है, वह कुबेर के समान धनी होता है। वागीश के समान वक्ता, शुक्र के समान कवि, सूर्य के समान तेजस्वी, चन्द्रमा जैसा यशस्वी, वायुतुल्य बलवान, लक्ष्मी से गीर्वाण-नायक होता है। हे देवि! बहुत क्या कहें, वह भैरवतुल्य होता है।।१३५-१३७।।

स्तम्भनाकर्षणोच्चाट-वशीकरणक्षमः ।
रवौ भूर्जे लिखेद् देवि निशीथे वाष्टगन्धकैः ॥१३८॥
सस्तन्यरेतोराजस्कैः साधको मन्त्रसाधकः।
लिखित्वा वेष्टयेन्नामसहस्रमणिमीश्वरि ॥१३९॥
श्वेतसूत्रेण संवेष्ट्य लाक्षया परिवेष्टयेत्।
सुवर्णरजताद्यैश्च वेष्टयेत् पीतसूत्रकैः ॥१४०॥
सम्पूज्य गुटिकां देवि शुभेऽह्नि साधकोत्तमः।

इस सहस्रनाम के पाठ से साधक स्तम्भन, आकर्षण, उच्चाटन, वशीकरण में सक्षम होता है। रविवार की रात में भोजपत्र पर अष्टगन्ध, स्त्रीस्तन के दूध, वीर्य, रज से मन्त्र लिखकर इस सहस्रनाममणि को श्वेत सूत्र से वेष्टित करके लाह से वेष्टित करे। सोना-चाँदी के ताबीज में भरने के लिये इसे पीले सूत्र से लपेटे। शुभ दिन में इस गुटिका का पूजन करे।।१३८-१४०।।

धारयेन्मूर्ध्नि वा बाहौ गुटिकां कामदायिनीम् ॥१४१॥
रणे रिपून् विजित्याशु कल्याणी गृहमाविशेत्।
वन्ध्या वामभुजे धृत्वा कृत्वा साधकपूजनम् ॥१४२॥
पुत्रान् लभेन्महादेवि साक्षाद्वैश्रवणोपमान्।
गुटिकैषा महादिव्या गोप्या कामफलप्रदा ॥१४३॥

मूर्धा में या बाँह में इसे धारण करे। यह गुटिका कामदायिनी है। इस गुटिका को धारण करके साधक यदि युद्ध में जाय तो शत्रु को जीतकर वापस अपने घर आ जाता है। इसका पूजन करके कोई बाँझ स्त्री यदि वाम भुजा में धारण करे तो उसे कुबेर के समान पुत्र प्राप्त होता है। यह गुटिका महा दिव्य, गोप्य और काम-फलदायिनी है।।१३९-१४३।।

साधकैः सततं पूज्या साक्षाद् दुर्गास्वरूपिणी।
योऽर्चयेत् साधको दुर्गां गुटिकां धारयेत् प्रिये ॥१४४॥
पठेद्वर्म शिवे मन्त्रनामसाहस्त्रिकीं पराम्।
अङ्गस्तोत्रं फलं तस्य देवि वक्ष्येऽधुना शृणु ॥१४५॥
वने राजकुले वापि दुर्भिक्षे शत्रुसङ्कटे।
अरण्ये प्रान्तरे दुर्गे श्मशाने सिन्धुसङ्कटे ॥१४६॥
वात्ये यक्षपिशाचादिभूतप्रेतभये तथा।
वीरो विगतभीर्देवि सर्वत्र विजयी भवेत् ॥१४७॥

साक्षात् दुर्गास्वरूपिणी इस गुटिका का पूजन साधक बराबर करे। जो साधक दुर्गा का अर्चन करता है, इस गुटिका को धारण करता है, कवच का पाठ करता है, सहस्रनाम का पाठ करता है और स्तोत्र का पाठ करता है; उसके फल का अब वर्णन करता हूँ। हे देवि! सुनो; वन में, राजदरबार में, अकाल में, शत्रुसंकट में, जङ्गल में प्रान्तर में, किला में, श्मशान में, समुद्री संकट में, तूफान में वह भयरहित होता है। सर्वत्र विजयी होता है।।१४४-१४७।।

स्तम्भयेद्वातसूर्याम्बुचन्द्रादीन् साधकोत्तमः।
मोहयेत् त्रिजगत् सद्यः कान्ताश्चाकर्षयेद् ध्रुवम् ॥१४८॥
मारयेदखिलाञ्छत्रूनुच्चाटयति वैरिणः।
वशयेद् देवताः सद्यः कं पुनर्मानवांश्छिवे ॥१४९॥
शमयेदखिलान् रोगान् महोत्पातानुपद्रवान्।
किं किं न लभते वीरो दुर्गापञ्चाङ्गपूजनात् ॥१५०॥

वह उत्तम साधक वायु, सूर्य, जल और चन्द्रादि को स्तम्भित कर सकता है। तीनों लोकों को मोहित कर सकता है। सुन्दरियों को आकर्षित कर सकता है। सभी शत्रुओं का संहार कर सकता है। सभी वैरियों का उच्चाटन कर सकता है। शीघ्र ही देवताओं को वश में कर सकता है। तब मनुष्यों की क्या हस्ति है, जो उसके वश में न हों। वह सभी रोगों का शमन करता है, वह महा उत्पातों और उपद्रवों का शमन करता है। दुर्गापञ्चाङ्ग के पूजन से वीर साधक क्या नहीं प्राप्त कर सकता है अर्थात् सब कुछ प्राप्त कर सकता है।।१४८-१५०।।

इदं रहस्यं दुर्गाया अष्टाक्षर्या महेश्वरि।
सर्वस्वं सारतत्त्वं च मूलविद्यामयं परम् ॥१५१॥

महाचीनक्रमस्थानां साधकानां यशस्करम्।
पठेत् संपूजयेद् देव्या मन्त्रनामसहस्त्रकम्॥१५२॥
इदं सारं हि तन्त्राणां तत्त्वानां तत्त्वमुत्तमम्।
दुर्गानामसहस्त्रं तु तव भक्त्या प्रकाशितम्॥१५३॥
अभक्ताय न दातव्यं गोप्तव्यं पशुसङ्कटे।
अभक्तेभ्योऽपि पुत्रेभ्यो दत्त्वा नरकमाप्नुयात्॥१५४॥

हे महेश्वरि! अष्टाक्षरा दुर्गामन्त्र का यह रहस्यसर्वस्व है, सारतत्त्व है, मूल विद्यामय है। महाचीनाचारी साधकों के लिये यह यशस्कर है। देवी का पूजन करके मन्त्रनामसहस्त्र का पाठ करना चाहिये। यह तन्त्रों का सार है। तत्त्वों में उत्तम तत्त्व है। तुम्हारी भक्ति के कारण ही इस दुर्गानामसहस्त्र का प्रकाशन मैंने किया है। इसे अभक्तों को नहीं देना चाहिये। पशुसाधकों के निकट इसे गुप्त रखे। अभक्त पुत्र को भी इसे देने से नरकगामी होना पड़ता है।।१५१-१५४।।

दीक्षिताय कुलीनाय गुरुभक्तिरताय च।
शान्ताय भक्तियुक्ताय देयं नामसहस्त्रकम्॥१५५॥
विना दानं न गृह्णीयान्न दद्याद् दक्षिणां विना।
दत्त्वा गृहीत्वाप्युभयोः सिद्धिहानिर्भवेद् ध्रुवम्॥१५६॥
इदं नामसहस्त्रं ते गुप्तं गोप्यतमं शिवे।
तत्त्वं भक्त्या मयाख्यातं गोपनीयं स्वयोनिवत्॥१५७॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये दुर्गासहस्त्रनामनिरूपणं नामैकोनपञ्चाशत्तमः पटलः॥४९॥

दीक्षित, कुलीन, गुरुभक्ति में रत, शान्त, भक्त को ही यह सहस्त्रनाम देना चाहिये। शिष्य बिना दान के इसे ग्रहण न करे। गुरु बिना दक्षिणा लिये इसे शिष्य को न दे। विना दक्षिणा लिये देना और विना दान किये लेना दोनों ही सिद्धि के लिये हानिकारक हैं। यह सहस्त्रनाम गुप्त, गोप्यतम है। तुम्हारी भक्तिवश इसका वर्णन मैंने किया है। इसे अपनी योनि के समान ही गुप्त रखना चाहिये।।१५५-१५७।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में दुर्गासहस्त्रनाम निरूपण नामक एकोनपञ्चाशत्तम पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ पञ्चाशत्तमः पटलः

श्रीदुर्गामूलमन्त्रस्तोत्रम्

स्तोत्रमाहात्म्यम्

श्रीभैरव उवाच

अधुना देवि वक्ष्यामि दुर्गास्तोत्रं मनोहरम्।
मूलमन्त्रमयं दिव्यं सर्वसारस्वतप्रदम्॥१॥
दुःखार्तिशमनं पुण्यं साधकानां जयप्रदम्।
दुर्गाया अङ्गभूतं तु स्तोत्रराजं परात्परम्॥२॥

दुर्गास्तोत्र-माहात्म्य—श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! अब मैं मनोहर दुर्गास्तोत्र का वर्णन करता हूँ। यह मूल मन्त्रमय, दिव्य और सभी सारस्वत गुणों का प्रदायक है। यह दुःखार्ति का नाशक, पुण्यप्रद और साधकों के लिये जयप्रद है। दुर्गापञ्चाङ्ग का अङ्गभूत यह स्तोत्रराज पर से भी पर है।।१-२।।

दुर्गास्तोत्रर्ष्यादिकथनम्

श्रीदुर्गास्तोत्रराजस्य ऋषिर्देवो महेश्वरः।
छन्दोऽनुष्टुब् देवता च श्रीदुर्गाष्टाक्षरा शिवे॥३॥
दुं बीजं च परा शक्तिर्विश्वं कीलकमद्रिजे।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः॥४॥

विनियोगः

अस्य श्रीदुर्गास्तोत्रराजस्य श्रीमहेश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीदुर्गाष्टाक्षरा देवता, दुं बीजं, ह्रीं शक्तिः, नमः कीलकम्, धर्मार्थकामामोक्षार्थे पाठे विनियोगः।

इस श्रीदुर्गास्तोत्रराज के ऋषि महेश्वर कहे गये हैं, छन्द अनुष्टप् है एवं श्रीदुर्गाष्टक्षरा देवता कहे गये हैं। हे शिवे! इसका बीज 'दुं' है, शक्ति 'ह्रीं' है, कीलक 'नमः' है एवं धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष की प्राप्ति हेतु इसका विनियोग कहा गया है।।३-४।।

ध्यानम्

दूर्वानिभां त्रिनयनां विलसत्किरीटां
शङ्खाब्जखड्गशरखेटकशूलचापान् ।

सन्तर्जनीं च दधतीं महिषासनस्थां
दुर्गां नवारकुलपीठगतां भजेऽहम् ॥५॥

ध्यान—श्री दुर्गा का वर्ण दूर्वा के समान है। तीन नेत्र हैं। माथे पर किरीट शोभित है। आठ हाथों में—शङ्ख, कमल, खड्ग, बाण, खेटक, शूल, धनुष और तर्जनी हैं। वे महिष के आसन पर विराजित हैं। यह दुर्गा नवयोन्यात्मक मण्डल में स्थित हैं। इनका ध्यान मैं करता हूँ।।५।।

स्तोत्रम्

तारं हारं मन्त्रमालासु बीजं ध्यायेदन्तर्योऽम्ब लम्बालकान्तः ।
तस्य स्मारं स्मारमङ्घ्रिद्वयीं द्राग् रम्भायाति स्वर्गता कामवश्या ॥६॥
मायां जपेद्यस्तव मन्त्रमध्ये दुर्गे सदा दुर्गतिखेदखिन्नः ।
भवेत् स भूमौ नृपमौलिमालामाणिक्यनिर्घृष्टपदारविन्द ॥७॥
चाक्रिकं यदि जपेत्तवाम्बिके चक्रमध्यगत ईश्वरेश्वरि ।
साधको भवति चक्रवर्तिनां नायको नयविलासकोविदः ॥८॥
चक्रिबीजमपरं स्मरेच्छिवे योऽरिवर्गविहिताहितव्यथः ।
आजिमण्डलगतो जयेद्रिपून् वाजिवारणरथाश्रितो नरः ॥९॥

मन्त्रमाला के हार 'ॐ' बीज का हृदय में ध्यान जो दुर्गा की कान्ति के रूप में करता है, उसके चरणकमलों का बार-बार यदि स्मरण करता है तो स्वर्ग से रम्भा अप्सरा भी कामातुर होकर उसके पास आ जाती है। दुर्गति-खेद से खिन्न साधक दुर्गामन्त्र के मध्य में स्थित 'ह्रीं' का जप यदि स्तोत्र में करता है तो वह भूपाल हो जाता है। उसके पावों में माणिक्यमाला मौलिधारी राजा लोग प्रणाम करते हैं। चक्रमध्यगत ईश्वरेश्वरी अम्बिका के 'दुं' बीज का जो साधक जप करता है, वह चक्रवर्ती राजाओं का नायक होता है और नयविलासकोविद होता है। जो दुर्गा-मन्त्र के प्रथम अक्षर 'दुं' का जप करता है, वह शत्रुओं के द्वारा किए गये अहित से यदि व्यथित हो तो वह घोड़े-हाथी-रथ से युक्त शत्रु को भी जीत लेता है।।६-९।।

दूर्वाबीजं यो जपेत् प्रेतभूमौ सायं मायाभस्मना लिप्तकायः ।
गीर्वाणानां नायको देवि मन्त्री भूत्वा राज्यं प्राज्यमाढ्यं करोति ॥१०॥
वायव्यबीजं यदि साधको जपेत् प्रियाकुचद्वन्द्वविमर्दनक्षमः ।
समस्तकान्ताजननेत्रवागुराविलासहंसो भविता स पार्वति ॥११॥
विश्वं विश्वेश्वरि यदि जपेत् कामकेलीकलान्ते
रात्रौ मात्राक्षरविलसितन्यास ईशानिवासः ।

तस्य स्मेराननसरसिजा भ्राजमानाङ्गलक्ष्मी-
र्वश्यावश्यं सुरपुरवधूमौलिमालौर्वशी सा ॥१२॥

जो साधक शाम में श्मशान में 'ह्रीं' से भस्म लगाकर 'गौं' बीज का जप करता है, वह देवताओं का नायक होकर अपने राज्य को अत्यन्त सम्पन्न बनाता है। जो साधक प्रिया के कुचों का मर्दन करते हुए 'यैं' बीज का जप करता है, वह सभी रमणियों के नत्रों में प्रीति विलास करने वाला हंस होता है। रात में मैथुन के बाद मन्त्रवर्णों से न्यास करके जो 'नमः' का जप करता है, उसके मुस्कानयुत मुख में ईश का निवास होता है और उसके वश में स्मेरानना कमलासना लक्ष्मी होती है। उसके वश में स्वर्ग की अप्सराओं में श्रेष्ठ उर्वशी भी हो जाती है।।१०-१२।।

भूगेहाञ्चितवह्निवृत्तविलसन्नागारवृत्ताञ्चितद्व्यग्न्या-
रोल्लसिताग्निकोणविलसच्छ्रीबिन्दुपीठस्थिताम् ।
ध्यायेच्चेतसि शर्वपत्नि भवतीं माध्वीरसाघूर्णितां
यो मन्त्री स भविष्यति स्मरसमः स्त्रीणां धरण्यां दिवि ॥१३॥

भूपुर, वृत्तत्रय, अष्टदल, षट्कोण, त्रिकोण के मध्य बिन्दु में स्थित माध्वी मद्यपान से चञ्चल आँखों वाली शर्वपत्नी का ध्यान जो साधक करता है, वह पृथ्वी पर रमणियों के लिये कामदेव के समान होता है।।१३।।

दुर्गास्तवं मनुमयं मनुराजमौलिमाणिक्यमुत्तमशिवाङ्गरहस्यभूतम् ।
प्रातः पठेद्यदि जपावसरेऽर्चनायां भूमौ भवेत्स नृपतिर्दिवि देवनाथः ॥१४॥

यह मन्त्रमय दुर्गास्तोत्र दुर्गापञ्चाङ्गरहस्य की मौलि के श्रेष्ठ माणिक्यतुल्य मन्त्रराज है। प्रातःकाल अर्चन-जप के अवसर पर जो साधक इसका पाठ करता है, वह पृथ्वी पर नरेश और स्वर्ग में देवपति होता है।।१४।।

फलश्रुतिः

इति स्तोत्रं महापुण्यं पञ्चाङ्गैकशिरोमणिम् ।
यः पठेदर्धरात्रे तु तस्य वश्यं जगत्रयम् ॥१५॥
इदं पञ्चाङ्गमखिलं श्रीदुर्गाया रहस्यकम् ।
सर्वसिद्धिप्रदं गुह्यं सर्वाशापरिपूरकम् ॥१६॥
गुह्यं मन्त्ररहस्यं तु तव भक्त्या प्रकाशितम् ।
अभक्तायाप्रदातव्यमित्याज्ञा पारमेश्वरी ॥१७॥

फलश्रुति—यह महा पुनीत स्तोत्र पञ्चाङ्ग का शिरोमणि है। जो इसका पाठ आधी

रात में करता है, उसके वश में तीनों लोक होता है। यह पञ्चाङ्ग दुर्गारहस्य का सर्वस्व है। यह सभी सिद्धियों का दाता, गुह्य और सभी आशाओं को पूरा करने वाला है। इस गुह्य मन्त्ररहस्य को तुम्हारी भक्ति के वश में होकर मैंने प्रकाशित किया है। हे परमेश्वरि! मेरा आदेश है कि अभक्तों को इसे न दिया जाय।।१५-१७।।

श्रीदेव्युवाच

भगवन् भवतानेन कथनेन महेश्वर।
श्रीपञ्चाङ्गस्य दुर्गाया ह्यद्य क्रीतास्म्यहं परम्॥१८॥

श्री देवी ने कहा कि हे भगवन्! इस दुर्गा पञ्चाङ्ग रहस्य के कथन से मैं आपकी खरीदी हुई दासी हो गयी।।१८।।

श्रीभैरव उवाच

इदं रहस्यं परमं दुर्गासर्वस्वमुत्तमम्।
पञ्चाङ्गं वर्णितं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत्॥१९॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये दुर्गास्तोत्रनिरूपणं
नाम पञ्चाशत्तमः पटलः॥५०॥

श्री भैरव ने कहा कि यह दुर्गारहस्य श्रेष्ठ है, दुर्गासर्वस्व है। यह पञ्चाङ्ग गोप्य है और इसे अपनी योनि के समान गुप्त रखना चाहिये।।१९।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में दुर्गास्तोत्र निरूपण नामक पञ्चाशत्तम पटल पूर्ण हुआ।

•

समाप्तमिदं दुर्गापञ्चाङ्गम्

अथैकपञ्चाशत्तमः पटलः

दुर्गारहस्यम्

दुर्गारहस्यप्रस्तावः

श्रीशैलराजशिखरे नानाद्रुमसमाकुले ।
वसन्तलक्ष्मीनिलये समासीनमुमापतिम् ॥१॥
एकदा देवमीशानं शशिशेखरमीश्वरम् ।
उमाश्रितार्धवपुषं देवदानवसेवितम् ॥२॥
ध्यानासक्ताक्षित्रितयं जटाजूटलतारुणम् ।
भस्माङ्गरागधवलं नारायणनमस्कृतम् ॥३॥
ब्रह्मादिदेवप्रणतं गान्धर्वजनवन्दितम् ।
यक्षराक्षसनागेन्द्रनगेन्द्रकुलपूजितम् ॥४॥

दुर्गारहस्य-प्रस्ताव—श्री शैलराज का शिखर विविध वृक्षों से शोभित है। वह वसन्त ऋतु और लक्ष्मी का आवास है। उसी शिखर पर उमापति शिव विराजमान हैं। एक समय देव ईशान, शशिशेखर, ईश्वर उमा के साथ बैठे थे। देव-दानव सेवा में लगे थे। उनके तीनों नेत्र ध्यान में उन्मीलित थे। मस्तक पर जटाजूट अरुण-लतातुल्य था। भस्म के अङ्गराग से शरीर श्वेत वर्ण का था। नारायण नमस्कार कर रहे थे। ब्रह्मादि देवता प्रणत थे। गन्धर्वगण वन्दना कर रहे थे। यक्ष, राक्षस, नाग, नगेन्द्र सभी उनकी पूजा कर रहे थे।।१-४।।

भैरवं भैरवाकारं गिरीशं परमेश्वरम् ।
उत्थाय विनता भूत्वा पर्यपृच्छत पार्वती ॥५॥
भगवन् सर्वलोकेश सर्वलोकनमस्कृत ।
गुणातीत गुणाध्यक्ष भूतेश्वर महेश्वर ॥६॥
सृजत्यवति नित्यान्ते संहरत्यमितं जगत् ।
चराचरं भवानेव किं पुनर्जपसि प्रभो ॥७॥
किं ध्यायसि महादेव सततं भक्तवत्सल ।
वद शीघ्रं दयाम्भोधे यद्यहं प्रेयसी तव ॥८॥

आसन से उठकर प्रणाम करके भैरवाकार भैरव गिरीश परमेश्वर से पार्वती ने पूछा—हे भगवन्! आप सभी लोकों के ईश्वर हैं। सभी लोक आपको प्रणाम करते हैं। आप गुणातीत और गुणों के अध्यक्ष हैं। भूतों के स्वामी महेश्वर हैं। आप जगत् की सृष्टि, स्थिति और संहार करते हैं। चराचर जगत् की सृष्टि भी आप ही करते हैं तब आप किसका जप करते हैं? हे भक्तवत्सल महादेव! आप किसका ध्यान करते हैं? दया के सागर यदि मैं आपको प्रिय हूँ तो यह मुझे शीघ्र बतलाइये।।५-८।।

श्रीभैरव उवाच

देवि किं ते प्रवक्ष्यामि रहस्यमिदमद्भुतम्।
सर्वस्वं सारभूतं मे सर्वेषां तत्त्वमुत्तमम्॥९॥
लक्षवारसहस्राणि वारितासि पुनः पुनः।
स्त्रीस्वभावान्महादेवि पुनस्त्वं परिपृच्छसि॥१०॥
अद्य भक्त्या तव स्नेहाद्वक्ष्यामि परमाद्भुतम्।
देवीरहस्यतन्त्राख्यं तन्त्रराजं महेश्वरि॥११॥
सर्वागमैकमुकुटं सर्वसारमयं ध्रुवम्।
सर्वमन्त्रमयं दिव्यं पटलैर्दशभिर्युतम्॥१२॥

श्री भैरव ने कहा—हे देवि! मैं कैसे कहूँ। वह अद्भुत रहस्य है, सर्वस्व सारभूत है। सभी तत्त्वों में उत्तम है। लाखों बार मेरे मना करने पर भी स्त्रीस्वभाववश फिर वही प्रश्न कर रही हो। लेकिन तुम्हारी भक्ति से विवश मैं परम अद्भुत देवीरहस्यतन्त्र नामक तन्त्रराज का वर्णन करता हूँ। यह तन्त्र सभी आगमों का मुकुट है। निश्चित ही यह सर्व-सारमय, एवं सर्वमन्त्रमय है। यह तन्त्रराज दिव्य दश पटलों में विभक्त है।।९-१२।।

अनुक्रमणिकां दिव्यां शृणु तन्त्रस्य पार्वति।
यस्याः श्रवणमात्रेण कोटिपूजाफलं लभेत्॥१३॥
श्रीविद्यानिर्णयो देवि मन्त्रसाधनकोऽपरः।
शिवमन्त्रप्रकाशाख्यो दीक्षाविधिरनुत्तमः॥१४॥
पुरश्चर्याविधिर्देवि पञ्चरत्नेश्वरीक्रमः।
होमसाधनकश्चैव चक्रपूजाविधिः परः॥१५॥
आचारनिर्णयो देवि दशमो दशमीविधिः।

हे देवी पार्वति! अब इस तन्त्र की दिव्य अनुक्रमणिका का वर्णन सुनो; जिसके श्रवणमात्र से ही करोड़ पूजा करने का फल प्राप्त हो जाता है। इन दश पटलों में पहले

में श्रीविद्या का निर्णय, दूसरे में मन्त्र-साधन, तीसरे में शिवमन्त्रप्रकाश, चौथे में उत्तम दीक्षा की विधि, पाँचवें में पुरश्चरण विधि, छठे में पञ्चरत्नेश्वरी क्रम, सातवें में हवन-विधान, आठवें में चक्रपूजनविधि, नवें में आचार-निर्णय एवं दसवें में दशमी-विधि वर्णित है।।१३-१५।।

दुर्गाभुवननिर्णयः

तत्रादौ देवि वक्ष्येऽहं दुर्गाभुवनमद्भुतम् ॥१६॥
जयं नाम महादिव्यं बहुविस्तारविस्तृतम् ।
नानारत्नसमाकीर्णं सूर्यकोटिसमप्रभम् ॥१७॥
इन्द्रगोपकवर्णं च चन्द्रकोटिमनोहरम् ।
अप्रमेयमसंख्येयमगम्यं सर्ववादिनाम् ॥१८॥
इदं दिव्यं जयं नाम भुवनं परमेश्वरि ।
तत्रैव वसते दुर्गा नवरूपात्मिका परा ॥१९॥
या देवदेवी वरदा सर्वलोकैकसुन्दरी ।
या दुर्गेति स्मृता लोके ब्रह्माण्डोदरवर्तिनी ॥२०॥
विष्णुना तपसा पूर्वमाराध्य परमेश्वरीम् ।
महिषस्यासुरेन्द्रस्य वधार्थायावतारिता ॥२१॥
योगमाया महामाया सर्वदा परमेश्वरी ।
तामेवाहर्निशं ध्याये श्रीविद्यां परमां जपे ॥२२॥

दुर्गाभुवननिर्णय—सबसे पहले मैं अद्भुत दुर्गाभुवन का वर्णन करता हूँ। हे परमेश्वरि! जय नामक दुर्गाभुवन महादिव्य एवं बहुत विस्तार में विस्तृत है। भाँति-भाँति के रत्नों से समाकीर्ण करोड़ों सूर्य की प्रभा से युक्त है। इन्द्रगोप वर्ण का यह भुवन करोड़ों चन्द्रमा से मनोहर है। यह मापयोग्य नहीं है, गिनती करने लायक नहीं है, सभी वादियों से अगम्य है। 'जय' नामक यह भुवन दिव्य है। इसी भुवन में नव रूपात्मिका परा दुर्गा का निवास है। यह देवदेवी वरदायिनी सभी लोकों की एकमात्र सुन्दरी है। इस ब्रह्माण्डोदरवर्त्तिनी देवी को संसार में 'दुर्गा' कहते हैं। इस परमेश्वरी का आराधन विष्णु ने तप के द्वारा किया था। दानवेन्द्र महिषासुर के वध के लिये इन्होंने अवतार ग्रहण किया था। दिन-रात मैं इन्हीं योगमाया महामाया परमेश्वरी का ध्यान करता हूँ और इन्हीं की परमा विद्या का जप करता हूँ।।१७-२२।।

दुर्गागुप्तविद्यानिर्णयः

तामद्याहं प्रवक्ष्यामि विद्याचरणदायिनीम् ।
यां श्रुत्वा स शिवो जातः पञ्चनादात्मकः शिवः ॥२३॥

यदाभूद्धरिहीना सा दुर्गा निष्कलरूपिणी।
साक्षाद्भुवनरूपापि महाज्योतिःस्वरूपिणी ॥२४॥
तदा शहककाले तु ज्योतीरूपो महेश्वरि।
शिवः प्रभामण्डलतो निर्गतोऽचेतनो विभुः ॥२५॥
अश्रृणोन्नादमाधारं जगतां बीजमुत्तमम्।
अपि संस्मर मायां त्वं सृष्टोऽग्रमनुनायकः ॥२६॥
इति श्रुत्वा परानादं तारमित्यभिधीयते।
शिवो जजाप सहसा बीजं त्रिजगतां शिवे ॥२७॥

दुर्गा गुप्तविद्या-निरूपण—उस देवीचरण को प्राप्त कराने वाली विद्या का वर्णन आज मैं करता हूँ। इसे सुनकर मनुष्य पञ्चनादात्मक शिवतुल्य हो जाता है। यद्यपि वह देवी साक्षात् भुवनरूपा है, तथापि भुवनों से परे वह निष्कलरूपिणी महाज्योतिस्वरूपा है। हे महेश्वरि! सृष्टिकाल में ज्योतिरूप शिव के प्रभामण्डल से चेतन विभु रूप में निर्गत हुई और शिव ने जगत् के आधार उत्तम नादबीज का श्रवण किया। तब देवी ने कहा तुम अब ॐ का स्मरण करो। यह मन्त्रनायक है और यही पहले बना है। तब शिव ने 'ॐ' नामक परानाद को सुना। तीनों लोकों के बीज का जप किया॥२३-२७॥

तेन मायेतिशब्दं स शुश्राव गगनात्ततः।
दुमं भज महेशान सदानन्दालयं परम् ॥२८॥
बिन्दुनादमयो देवः शिवोऽभूत् परमेश्वरः।
ततो नादं स शुश्राव दुष्टवर्णविवर्जितम् ॥२९॥
दुर्गां भजेति स शिवः पञ्चनादात्मकोऽभवत्।
ततो जप्त्वा परां विद्यामसृजज्जगदम्बिके ॥३०॥
आदौ वायुं शिवः सृष्ट्वा ततः सृष्टिर्यथेच्छया।
इच्छामात्रं शिवे विश्वं विश्वेश्वरि चराचरम् ॥३१॥
ससर्ज लवमात्रं स शितिकण्ठः शिवः शिवे।

उसी 'ॐ' से उत्पन्न 'ह्रीं' शब्द को आकाश से ध्वनित शिव ने श्रवण किया। तब शिव ने श्रेष्ठ सदानन्द निलय 'दुं' का स्मरण किया। बिन्दु-नादमय इसके जप से शिव परमेश्वर हो गये। तब शिव ने दुष्ट वर्णविवर्जित नाद का श्रवण किया। दुर्गा नाम के भजन से शिव पञ्चनादात्मक हो गये। तब पराविद्या का जप करके जगत् की उन्होंने सृष्टि की। सबसे पहले शिव ने वायु को बनाया। तब इच्छा के अनुसार इच्छामात्र से चराचरों से पूर्ण विश्व का निर्माण नीलकण्ठ शिव ने क्षणमात्र में किया।

यह गुप्त विद्या मुझे गुरु की पादसेवा से प्राप्त हुई है। यह गुप्त विद्या स्पष्ट है—ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः।।२८-३१।।

दुर्गाभुवनार्चाप्रशंसा

इतीमां गुप्तविद्यां तु लब्ध्वा गुरुपदार्चनात् ।।३२।।
किं किं न साधयेल्लोके साधको मन्त्रसाधकः ।
वस्त्रं वह्निं च कामं च धनं वृत्तं च साधकः ।।३३।।
वशीकुर्याद्यथाबुद्ध्या येन तुर्याकुलं भवेत् ।
श्रीचक्रमिदमाधारं देव्या विभवकारणम् ।।३४।।
गुह्यं सर्वस्वमम्बायाः पूज्यं साधकसत्तमैः ।
चक्रं लिखेन्महादेवि पूज्यमब्जार्कयोर्दलैः ।।३५।।
येन देवी महामाया श्रीदुर्गाशु प्रसीदति ।
चक्रे सम्पूजयेद्यस्तु नीलाभां दाहनीं द्युतिम् ।।३६।।
वह्नीन्दुसूर्याम्बरजं मण्डलाकारमर्चयेत् ।
लसन्मुकुटरोचिष्णुः स भवेत् साधकोत्तमः ।।३७।।

दुर्गाभुवनार्चा-प्रशंसा—इस संसार में साधक इस मन्त्र की साधना से क्या-क्या नहीं प्राप्त कर सकता है? अर्थात् सब कुछ—वस्त्र, वह्नि, काम, धन, वृत्त आदि प्राप्त कर सकता है। अपनी बुद्धिबोध के अनुसार इससे चौथा पद-समाधि प्राप्त कर सकता है। श्रीदेवी का यह चक्र वैभवकारक आधार है। वह साधकसत्तम का पूज्य, गुह्य एवं अम्बा का सर्वस्व है। इसके चक्र को अङ्कित करके कमल और मदार के दलों से पूजन करना चाहिये। इस प्रकार के पूजन से महामाया श्रीदुर्गा प्रसन्न होती हैं। चक्र में पूजन के समय देवी का ध्यान नीलाभ अग्निज्योति के रूप में करना चाहिये। सूर्य, चन्द्र, अग्नि की रश्मिमण्डल के आकार में चमकीले शोभित मुकट वाली देवी का अर्चन करे। इससे साधक साधकों में श्रेष्ठ होता है।।३३-३७।।

तस्य शङ्खनिभा कीर्तिर्भ्रमते भुवनत्रये ।
ससुरासुरगन्धर्वं वशं याति महेश्वरि ।।३८।।
शरासवरसानन्दमयो भूत्वा जपेन्मनुम् ।
खेटकास्तस्य तुष्यन्ति साधकस्याङ्गपूजनात् ।।३९।।
तस्य रोगा विनश्यन्ति सर्वे शूलादयोऽचिरात् ।
तर्जनीं तस्य वीक्ष्यापि रिपवो यान्ति विद्रुताः ।।४०।।

तस्य गेहे धनं गावो महिष्या विष्टरं गजाः ।
दुर्गा रत्नवती भूमिस्तस्य पीठं मनोहरम् ॥४१॥

उस साधक की शङ्ख–जैसी धवल कीर्ति तीनों लोकों में भ्रमण करती है। उसके वश में देव-दैत्य-गन्धर्व आदि होते हैं। मैथुन और मद्य के रस से आनन्दित होकर जप करे। साधक जब अङ्गपूजन करता है तब खेटक सन्तुष्ट होते हैं और अल्प काल में ही उसके रागजनित पीड़ा का विनाश हो जाता है। उसकी तर्जनी अङ्गुली को देखते ही शत्रु तुरन्त भाग जाते हैं। उस साधक के घर में धन, गाय, भैंस, विस्तर और हाथी सहित रत्नवती मनोहर भूमि होती है।।३८-४१।।

साधकस्य भवेदेवं सम्पत्तिर्बहुधार्चनात् ।
एवं ध्यायेन्महादेवीं दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम् ॥४२॥
ध्यानेन येन देवेन्द्रो भविष्यति हि साधकः ।
इतीदं देवि तत्त्वं ते कथितं परमाद्भुतम् ।
अवक्तव्यमदातव्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥४३॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये मन्त्रविद्यानिरूपणं
नामैकपञ्चाशत्तमः पटलः॥५१॥

अर्चन करने से साधक को बहुत प्रकार की सम्पत्ति प्राप्त होती है। इस प्रकार का ध्यान दुर्गतिनाशिनी महादेवी दुर्गा का करना चाहिये। इस प्रकार के ध्यान से साधक देवेन्द्र हो जाता है। इस प्रकार इस परम अद्भुत तत्त्व का कथन समाप्त हुआ। यह न किसी से कहने के योग्य है और न ही किसी को बतलाने के योग्य है। अपितु यह अपनी योनि के समान गुप्त रखने योग्य है।।४२-४३।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में मन्त्रविद्या निरूपण नामक एकपञ्चाशत्तम पटल पूर्ण हुआ।

•

अथ द्विपञ्चाशत्तमः पटलः

दुर्गामन्त्रसाधनम्

मन्त्रसाधनरहस्यम्

श्रीभैरव उवाच

मन्त्रसाधनकं वक्ष्ये रहस्यं सर्वमन्त्रिणाम्।
येन साधनमात्रेण मन्त्रः सिद्धिमुपैष्यति ॥१॥
विनोत्कीलनमन्त्रेण न मन्त्रः सिद्धिदायकः।
विना सञ्जीवनेनापि सम्पुटेन विना शिवे ॥२॥
विश्वमादौ मनोर्दद्यात् तारं दद्यात् तथाञ्चले।
मनुरुत्कीलनाख्योऽयं सर्वसिद्धिप्रदः शिवे ॥३॥

मन्त्रसाधन-रहस्य—सभी मन्त्रसाधकों के हितार्थ मन्त्रसाधनरहस्य का अब मैं वर्णन करता हूँ, जिसके अनुसार साधना करने से ही मन्त्र सिद्ध होते हैं। हे शिवे! उत्कीलन के बिना कोई मन्त्र सिद्धिदायक नहीं होता। बिना सञ्जीवन और बिना सम्पुटन के भी मन्त्र सिद्ध नहीं होते। मन्त्र के प्रारम्भ में 'नमः' और अन्त में 'ॐ' लगाकर जप करने से मन्त्र का उत्कीलन होता है और सभी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।।१-३।।

दुर्गामन्त्रसञ्जीवनम्

चाक्रिकं नाम बीजं तु दद्यादादौ मनोः शिवे।
तदग्रे नाम विन्यस्य तारमाये तदग्रतः ॥४॥
मनोरन्तेऽश्मरीं दद्यान्मनुः सञ्जीवनाभिधः।
ततः सिद्धमनुं देवि जपेन्मान्त्रिकसत्तमः ॥५॥

दुर्गा मन्त्र-सञ्जीवन—दुर्गा अष्टाक्षर मन्त्रवर्णों में से 'दुं' के बाद 'दुर्गा' लगाकर उसके बाद 'ॐ ह्रीं' लगाकर और मन्त्र के अन्त में 'नमः' लगाने से मन्त्र का सञ्जीवन होता है। सञ्जीवित मन्त्र का रूप ऐसा होता है—दुं दुर्गायै ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः। इस प्रकार के सिद्ध मन्त्र का ही जप साधक को करना चाहिये।।१-५।।

दुर्गामन्त्रसम्पुटीकरणम्

यथाशक्त्या ततो दद्यात् सम्पुटं साधकोत्तमः।

तारं परां चक्रिबीजं विश्वमन्तेऽभिधं न्यसेत् ॥६॥
सम्पुटाख्योऽस्त्ययं मन्त्रः सर्वाशापूरकः स्मृतः ।
एवं संस्कृतमीशानि मनुं देव्या जपेत् सदा ॥७॥
सर्वसिद्धिमावाप्नोति साधको मन्त्रसाधकः ।
इतीदं मन्त्रतत्त्वं ते साधनाख्यं महेश्वरि ।
गुह्यातिगुह्यगुप्तं च गोप्तव्यं साधकोत्तमैः ॥८॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये मन्त्रसाधननिरूपणं नाम द्विपञ्चाशत्तमः पटलः॥५२॥

दुर्गामन्त्र-सम्पुटीकरण—इसके बाद साधक मन्त्र को सम्पुटित करके जप करे। अष्टाक्षर मन्त्र के पहले 'ॐ ह्रीं दुं' लगाकर अन्त में 'दुर्गा' लगाने से यह सम्पुटित होता है। सम्पुटित मन्त्र का रूप है—ॐ ह्रीं दुं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः दुर्गायै। सम्पुटित मन्त्र के जप से साधक की सभी आशायें पूरी होती हैं। हे ईशानि! इस संस्कृत मन्त्र का जप साधक को करना चाहिये। ऐसा करने से साधक को सभी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। साधना के गुह्यातिगुह्य, गुप्त, गोप्तव्य मन्त्रतत्त्व का वर्णन पूरा हुआ। इसे गुप्त रखना चाहिये।।६-८।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में मन्त्रसाधन निरूपण नामक द्विपञ्चाशत्तम पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ त्रिपञ्चाशत्तमः पटलः

शिवविद्या

शिवविद्यानिर्णयः

श्रीभैरव उवाच

अधुना शिवविद्यां ते वक्ष्यामि परमार्थदाम्।
सर्वविद्यामयीं साध्यां सर्वतन्त्रेषु गोपिताम्॥१॥
केवलं यो जपेच्छाक्तं मनुं शैवं तु नो जपेत्।
जन्मकोटिषु जप्तोऽपि न मनुः सिद्धिभाग्भवेत्॥२॥
यस्या देव्यास्तु यो देवः शिवस्तस्याः शिवो भवेत्।
तेन विद्या महादेवि कलौ सिद्ध्यति सत्वरम्॥३॥

शिवविद्या-निर्णय—श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! अब मैं परमार्थदायक शिवविद्या को कहता हूँ। यह विद्या सर्वसिद्धिमयी, साध्य और सभी तन्त्रों में गोपित है। जो केवल शक्तिमन्त्र का जप करता है, शिवमन्त्र का जप नहीं करता, उसे करोड़ों जन्मों तक जप करने से भी सिद्धि नहीं मिलती। जैसे देवियाँ होती हैं, वैसे ही उनके शिव भी होते हैं। शिव के साथ विद्या के जप से कलियुग में शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त हो जाती है।।१-३।।

कस्याः देव्याः कः शिवः

कालिकाया महाकालः सुमुख्या अमृतेश्वरः।
कामेश्वरस्त्रिकूटायाः शिव इत्येवमीश्वरि॥४॥
छिन्नायाः कालरुद्रस्तु शारदायाः शिवः शिवः।
श्रीभैरवः कालरात्र्याः शिव इत्येवमीश्वरि॥५॥
ज्वालामुख्या महादेवो वाग्देव्या विजयेश्वरः।
ईश्वरो भुवनेश्वर्य्याः शिव इत्येवमीश्वरि॥६॥
विश्वनाथस्तु पार्वत्या राज्ञ्या भूतेश्वरः शिवः।
भीडायास्तु विरूपाक्षः शिव इत्येवमीश्वरि॥७॥
नीलकण्ठस्तु दुर्गायाः शिव इत्येवमीश्वरि।
शिलाया वामदेवस्तु शिवः प्रोक्तः सुरेश्वरि॥८॥

सद्योजातस्तु तारायाः शिव इत्येवमीश्वरि।
अद्य दुर्गाशिवस्यादौ वक्ष्ये मूलमनुं परम्॥९॥
यं जप्त्वा परमेशानि विद्या सिद्ध्यति सत्वरम्।

किस देवी के कौन शिव—कालिका के शिव महाकाल हैं, सुमुखी के शिव अमृतेश्वर हैं। हे ईश्वरि! त्रिकूटा पञ्चदशी ललिता मन्त्र के शिव कामेश्वर हैं। छिन्नमस्ता के शिव कालरुद्र हैं। शारदा के शिव शंकर हैं। कालरात्रि के शिव श्रीभैरव हैं। ज्वालामुखी के शिव महादेव हैं। वाग्देवता के शिव विजयेश्वर हैं। भुवनेश्वरी के शिव ईश्वर हैं। पार्वती के शिव विश्वनाथ हैं, राज्ञी के शिव भूतेश्वर हैं। भीड़ा के शिव विरूपाक्ष हैं। दुर्गा के शिव नीलकण्ठ हैं। शिला के शिव वामदेव हैं। तारा के शिव सद्योजात हैं। अब मैं आदिदुर्गा के शिव के मूल मन्त्र को कहता हूँ। इस श्रेष्ठ मन्त्र के जप से विद्या तत्काल सिद्ध होती है।।४-९।।

नीलकण्ठमन्त्रर्ष्यादिकथनम्

श्रीनीलकण्ठमन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिरीश्वरः॥१०॥
ऋषिश्छन्दो मयानुष्टुब् वर्णितो वीरवन्दिते।
दुर्गेश्वरो नीलकण्ठो देवता कथितो मया॥११॥
हरितं बीजमीशानि तारं शक्तिः स्मृता शिवे।
कीलकं विश्वमाख्यातं नियोगो मनुसिद्धये॥१२॥

विनियोग—हे वीरवन्दिते! मेरे द्वारा इस श्रीनीलकण्ठ मन्त्र के ऋषि दक्षिणामूर्ति ईश्वर एवं छन्द अनुष्टुप् कहे गये हैं। दुर्गेश्वर नीलकण्ठ इसके देवता कहे गये हैं। हे शिवे! इसका बीज ह्सौः एवं शक्ति ॐ कहा गया है। कीलक नमः कहा गया है एवं मन्त्रसिद्धि हेतु इसका विनियोग कहा गया है।।१०-१२।।

न्यासः

तारचन्द्रकडिम्बाद्यैः षड्दीर्घैर्न्यासमाचरेत्।
ध्यानमस्य शिवस्याद्य श्रुत्वा गुप्ततमं कुरु॥१३॥

न्यास—ॐ सः ह्सौः के षड्दीर्घ रूप से करन्यास करे। अङ्ग न्यास करे। इस आद्या शिव का ध्यान सुनकर उसे गुप्त रखना चाहिये।।१३।।

नीलकण्ठध्यानम्

बन्धूककाञ्चननिभं रुचिराक्षमालां पाशाङ्कुशौ वरमभीतिममुं दधानम्।
हस्तैः शशाङ्कशकलाभरणं त्रिनेत्रं श्रीनीलकण्ठमुमया श्रितमाश्रयामि॥१४॥

ध्यान—बन्धूकपुष्प और सोने के समान वर्ण है। सुन्दर अक्षमाला है। हाथों में पाश, अङ्कुश, वर और अभय है। हाथों में चन्द्रखण्ड का आभूषण है। तीन नेत्र हैं। उन उमा के साथ नीलकण्ठ का मैं आश्रय ग्रहण करता हूँ।।१४।।

नीलकण्ठमन्त्रोद्धारः

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि सर्वसिद्धिमयं परम्।
दुर्गारहस्यभूतं च शृणु पार्वति सत्वरम्॥१५॥
प्रणवं हरितं व्योषं नीलकण्ठाय चाश्मरी।
दुर्गेशनीलकण्ठस्य मन्त्रोद्धारो दशाक्षरः॥१६॥

नीलकण्ठमन्त्र—सर्वसिद्धिमय परम मन्त्र के उद्धार का अब मैं वर्णन करता हूँ। यह दुर्गारहस्य का अङ्ग है। हे पार्वति! सत्वर सुनो। प्रणव = ॐ = हरित् = ह्सौः, व्योष = ह्रां, नीलकण्ठाय, अश्मरी = नमः के योग से यह मन्त्र बनता है। मन्त्र स्पष्ट है—ॐ ह्सौः ह्रां नीलकण्ठाय नमः। इसमें दश अक्षर हैं। यही दुर्गेश नीलकण्ठ का मन्त्र है।।१५-१६।।

अनेन मन्त्रराजेन जप्तमात्रेण पार्वति।
दुर्गायाः परमा विद्या कलौ सिद्ध्यति सत्वरम्॥१७॥
इतीदं गुह्यगुप्तातिगुह्यं सर्वस्वमीश्वरि।
रहस्यं नीलकण्ठस्य गोपनीयं मुमुक्षुभिः॥१८॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये शिवविद्यानिरूपणं
नाम त्रिपञ्चाशत्तमः पटलः॥५३॥

हे पार्वति! इस मन्त्रराज के जपमात्र से ही कलियुग में दुर्गा की परमा विद्या शीघ्र सिद्ध होती है। यह गुह्यातिगुह्य सर्वस्व है। हे ईश्वरि! नीलकण्ठ का रहस्य मुमुक्षु से भी गुप्त रखना चाहिये।।१५-१८।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में शिवविद्या
निरूपण नामक त्रिपञ्चाशत्तम पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ चतुष्पञ्चाशत्तमः पटलः

दीक्षाविधिः

दीक्षाविधिनिरूपणम्

श्रीभैरव उवाच

दीक्षाविधिं प्रवक्ष्यामि साधकानां हितेच्छया।
विधाय विधिवद् दीक्षां पशुत्वात् स विमुच्यते ॥१॥
दीयते परमा सिद्धिः क्षीयते कर्मवासना।
आप्यते परमं धाम तेन दीक्षा स्मृता शिवे ॥२॥
ब्रह्मादिकीटपर्यन्तं जगत् सर्वं महेश्वरि।
पशुत्वान्मोहितं देव्या तस्माद् दीक्षां चरेत् कलौ ॥३॥
श्रीदेव्याः सेवया देवि चक्रार्चनपुरःसरम्।
साधकः पशुभावेन मुक्तो ज्ञानं भजेत् ततः ॥४॥

दीक्षाविधि-निरूपण—श्रीभैरव ने कहा कि साधकों के हित की इच्छा से अब मैं दीक्षाविधि का वर्णन करता हूँ। विधिवत् दीक्षा प्राप्त करके साधक पशुत्व से विमुक्त हो जाता है। इसे दीक्षा इसलिये कहा जाता है कि यह परमा सिद्धि देती है। कर्मवासना का नाश करती है। परम धाम को प्राप्त कराती है। ब्रह्म से कीट तक जगत् में सभी पशुत्व से मोहित हैं। इसलिये कलियुग में दीक्षाकार्य अवश्य करना चाहिये। श्रीचक्रार्चन करके श्रीदेवी की सेवा में निरत साधक पशुभाव से मुक्त होकर साधक ज्ञानलाभ करता है और तत्पश्चात् भजन करता है।।१-४।।

दीक्षाप्रशंसा

दीक्षितो याति चरणं दीक्षाहीनो भवेत् पशुः।
दीक्षितस्तु भवेज्ज्ञानी पशुभावोज्झितो विभुः ॥५॥
सर्वपातकमुक्तो हि लभेत् स परमां गतिम्।
यस्य दीक्षा शिवे नास्ति जीवनान्तं च जन्मिनः ॥६॥
स जातु नोत्तरेद् देवि निरयाम्बुनिधेः क्वचित्।
दीक्षाहीनस्य देवेशि पशोः कुत्सितजन्मनः ॥७॥

पापौघोऽन्तिकमायाति पुण्यं दूरं पलायते।
तस्माद्यत्नेन दीक्षैषा ग्राह्या कृतिभिरुत्तमैः ॥८॥

दीक्षा-प्रशंसा—दीक्षित देवी के चरणों में लीन होता है और दीक्षाहीन सांसारिक पाशों से बँधा पशु होता है। दीक्षित ज्ञानी होता है और पशुभाव से मुक्त होकर विभु होता है। दीक्षित सभी पापों से मुक्त होकर परमगति-लाभ करता है। जिसकी दीक्षा नहीं होती, वह पुनर्जन्म ग्रहण करता है। दीक्षाविहीन नरक में जाता है और नरकसागर के जल को पार नहीं कर पाता है। दीक्षाहीन मरने के बाद कुत्सित पशुयोनि में जन्म लेता है। पापों का समूह उसे घेर लेता है और पुण्य उससे दूर भागते हैं। इसीलिये यह दीक्षाग्रहण का कार्य उत्तम माना गया है।।५-८।।

बाल्ये वा यौवने वापि वार्धक्येऽपि सुरेश्वरि।
अन्यथा निरयी पापी पितॄन् स्वान्निरयं नयेत् ॥९॥
अन्ते पशुमनुष्यः सन् पशुयोनिं व्रजेच्छिवे।
पूर्वपुण्यार्जितां प्राप्य वासनां परमार्थदाम् ॥१०॥
गुरुं कुलीनं तन्त्रज्ञं सर्वाङ्गैः सुमनोहरम्।
लब्ध्वा भक्त्या प्रणम्यादौ तोषयित्वा विशेषतः ॥११॥
प्रणामैर्वन्दनैर्देवि दक्षिणाम्बरपूर्वकम्।
सिद्धसाध्यारिनिर्णीतां दीक्षां देव्या यथाविधि ॥१२॥
गृह्णीयात् परया भक्त्या साधको येन जायते।
गुरुश्च शिष्यं रम्याङ्गं सर्वाङ्गैः सुमनोहरम् ॥१३॥
गुरुभक्तिरतं बालं कुलीनं गर्भदीक्षितम्।
देवीभक्तिरतं भक्तं पापभीतं कृतात्मकम् ॥१४॥
दृष्ट्वा दीक्षां परां दद्यात् कृतभागी भवेत्ततः।

बाल्यावस्था, युवावस्था या वृद्धावस्था में भी जो इसे ग्रहण नहीं करता, वह नारकी पापी अपने पितरों को भी नरक में धकेल देता है। अन्त में पाशबद्ध मनुष्य पशुयोनि में जन्म लेता है। पूर्वजन्मों के पुण्य के प्रभाव से ही उसमें परमार्थ प्रदान करने वाली वासना रहती है। कुलीन, तन्त्रज्ञ, साङ्गोपाङ्ग सुन्दर गुरु को देखकर पहले उसे भक्तिसहित प्रणाम करे और विशेष प्रकार से सन्तुष्ट करे। इसके लिये गुरु को प्रणाम करे, वन्दना करे, दक्षिणा वस्त्र आदि प्रदान करे। तदनन्तर सिद्ध, साध्य, अरि का निर्णय करके यथाविधि मन्त्रदीक्षा ग्रहण करे। जो साधक परम भक्ति से दीक्षा ग्रहण करता है, वह सर्गाङ्ग रमणीक एवं मनोहर हो जाता है। गुरुभक्ति में रत बालक, कुलीन,

गर्भदीक्षित, देवीभक्तिनिरत, भक्त, पाप से भयभीत, कृतात्मक को जानकर जो दीक्षा देता है, वह गुरु कृतभागी होता है।।९-१४।।

दीक्षाकालनिर्णयविषयकप्रश्नः

श्रीदेव्युवाच

भगवन् करुणाम्भोधे साधकानां हितेच्छया।
कदा दीक्षा परा ग्राह्या साधकैस्तद्वदस्व मे ॥१५॥

दीक्षाकाल-विषयक प्रश्न—श्री देवी ने कहा कि हे भगवन् करुणासागर! साधकों के हित के लिये यह बतलाइये कि साधक को परा दीक्षा कब ग्रहण करनी चाहिये।।१५।।

दीक्षाकालनिर्णयः

श्रीभैरव उवाच

सुदिने शुभनक्षत्रे सङ्क्रान्तावयनद्वये।
नवरात्रिदिने पित्रोः श्राद्धे स्वजनिवासरे ॥१६॥
नववर्षदिने देवि त्तन्द्रसूर्योपरागके।
शिवरात्र्यां स्वजन्मर्क्षे दीक्षां कुर्याद्विचक्षणः ॥१७॥

दीक्षाकालनिर्णय—श्री भैरव ने कहा कि शुभ दिन, शुभ नक्षत्र, संक्रान्ति, उत्तरायण, दक्षिणायन, नवरात्रि-दिन, पितरों के श्राद्धदिवस, अपने जन्मदिन, नव-वर्षदिवस, चन्द्र-सूर्यग्रहण, शिवरात, अपने जन्मनक्षत्र में बुद्धिमान द्वारा दीक्षा ग्रहण करना चाहिये।।१६-१७।।

गुरोर्दीक्षादानम्

तत्रादौ शुभनक्षत्रे स्नात्वा संपूज्य भैरवम्।
गत्वा नदीतटं देवि तथा देवालयं क्वचित् ॥१८॥
देवताग्रे गुरुं नत्वा नत्वा सन्तोषहेतवे।
द्वीपं वोपवनं पुण्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥१९॥
देवतायतनं वापि प्राप्याशु प्रणमेत् ततः।
तत्रादावासनं देवि संशोध्य गुरुमर्चयेत् ॥२०॥
भूतान्निःसार्य देवेशि स्वाङ्गन्यासं चरेत् ततः।
प्राङ्मुखो गुरुरासीनश्चोत्तराभिमुखं शिशुम् ॥२१॥

गुरु द्वारा दीक्षा-दान—पहले शुभ नक्षत्र में स्नान करके भैरव का पूजन करने के पश्चात् तब नदी के किनारे या देवालय में जाकर देवता के आगे गुरु को प्रणाम करे।

गुरु के सन्तोष के लिये उसे बार-बार प्रणाम करे। अथवा द्वीप या परम पुण्य देवों को भी दुर्लभ देवालय या वापी मिलने पर शीघ्र ही उसे प्रणाम करे। वहाँ स्थानशोधन करके गुरु का अर्चन करे। भूतोत्सारण करके अपने अङ्गों में न्यास करे। गुरु स्वयं उत्तरमुख बैठकर शिष्य को पूर्व मुख बैठाये॥१८-२१॥

संस्थाप्य विधिवद् देवि देवीं स्मृत्वा परामयः।
देवताग्रे पराप्रीत्यै दीक्षां दद्याद्यथाविधि ॥२२॥
कर्णमूले महाविद्यां श्रीविद्यां साधकेश्वरः।
आनन्दसक्तहृदयः शनैस्त्रिस्त्रिः समर्पयेत् ॥२३॥
गणेशस्य च गायत्र्यास्ततो मृत्युञ्जयस्य च।
इष्टदेव्याः शिवस्यापि ततो विद्यां समर्पयेत् ॥२४॥

विधिवत् देव-देवी का स्मरण करके देवीमय हो जाये। देवता के सामने यथाविधि दीक्षा प्रदान करे। साधकोत्तम के कान में गुरु धीरे से श्रीविद्या को तीन बार सुनाये और समर्पित करे। गुरु इस समय स्वयं आनन्दित रहे। पहले गणेश, तब गायत्री, तब मृत्युञ्जय, तब इष्टदेवी के मन्त्रों को शिष्य के कान में तीन-तीन बार कहकर अन्त में शिवविद्या समर्पण करे।।२२-२४।।

शिष्यो दीक्षां तु संप्राप्य गुरुमभ्यर्च्य शक्तितः।
तोषयित्वा प्रणामैश्च दक्षिणाभिः शुभाम्बरैः ॥२५॥
तदाज्ञां सहसादाय पूजायै परमेश्वरि।
यन्त्रं मन्त्रं च मालां च पञ्चाङ्गं .परमेश्वरि ॥२६॥
पुनर्जातु शिवे शिष्यो गुरवेऽपि न दर्शयेत्।
इति दीक्षाविधेः सारभूतं गुह्यं रहस्यकम्।
गुह्यातिगुह्यगुप्तं तु न प्रकाश्यं मुमुक्षुभिः ॥२७॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये दीक्षानिरूपणं नाम चतुष्पञ्चाशत्तमः पटलः॥५४॥

दीक्षा-प्राप्ति के बाद शिष्य अपनी शक्ति के अनुसार गुरु का अर्चन करे। गुरु को प्रणाम से, दक्षिणा से, शुभ वस्त्रों से सन्तुष्ट करे। इसके बाद गुरु की आज्ञा लेकर यन्त्र, मन्त्र, माला एवं पञ्चाङ्ग गुरु से प्राप्त करे। इन सभी चीजों को लेने के पश्चात् शिष्य उन्हें पुनः गुरु को भी न दिखावे। इस प्रकार दीक्षाविधि का सार, गुह्य रहस्य का वर्णन पूरा हुआ। यह गुह्याति-गुह्य है और मोक्षार्थियों के लिये भी अप्रकाश्य है।।२५-२७।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में दीक्षा निरूपण नामक चतुष्पञ्चाशत्तम पटल पूर्ण हुआ।

अथ पञ्चपञ्चाशत्तमः पटलः

पुरश्चर्याविधिः

मन्त्रराजपुरश्चरणक्रमः

श्रीभैरव उवाच

अधुना मन्त्रराजस्य पुरश्चरणमुत्तमम्।
वक्ष्ये सिद्धिप्रदो येन मन्त्रः कल्पद्रुमो भवेत्॥१॥
एकदा सुदिने देवि सुनक्षत्रे सुपर्वणि।
पुरश्चरणकर्मादौ आरभेत् साधकोत्तमः॥२॥
वर्णलक्षं जपेन्मन्त्रं तदर्धं वा महेश्वरि।
एकलक्षावधिं कुर्यान्नातो न्यूनं कदाचन॥३॥
लक्षसंख्या प्रकर्तव्या साधकैश्चेन्न शक्यते।
एकलक्षं प्रजप्तव्यं नातो न्यूनं कदाचन॥४॥

मन्त्रराज पुरश्चरण-क्रम—अब मैं मन्त्रराज के उत्तम पुरश्चरण का वर्णन करता हूँ, जिसके करने से मन्त्र कल्पवृक्ष के समान सिद्धिप्रद होता है। किसी समय शुभ दिन, शुभ नक्षत्र, सौर पर्व के अवसर पर साधक पुरश्चरण क्रिया का प्रारम्भ करे। मन्त्र के प्रत्येक वर्ण पर एक-एक लाख जप करे या उसका आधा जप करे। अथवा सबका एक-एक लाख जप करे। यदि सभी वर्णों का एक-एक लाख जप करने में साधक समर्थ न हो तो समस्त मन्त्र का एक लाख जप साधक कर सकता है। इससे कम जप कदापि नहीं करना चाहिये।।१-४।।

श्रीदेव्युवाच

लक्षजप्तो मनुर्देव यदि कल्पद्रुमो भवेत्।
तदा किं साधको लोके लक्षतत्त्वं वदस्व मे॥५॥
कस्य हस्तेन मन्त्रस्य पुरश्चरणकक्रियाम्।
कारयेत् साधकश्चैतत् संशयं छिन्धि धूर्जटे॥६॥

श्रीदेवी ने कहा कि हे देव! यदि एक लाख जप करने से यह मन्त्र कल्पवृक्ष के तुल्य होता है तब इसके बाद साधक क्या करे। इस लक्षतत्त्व को मुझे बतलाइये। किसके द्वारा यह पुरश्चरण करवाना चाहिये, जिससे यह मन्त्र कल्पवृक्ष के समान होता है। इस शङ्का का समाधान आप करें।।५-६।।

पुरश्चरणं गुरुहस्तेन कारयितव्यम्

श्रीभैरव उवाच

साधु पृष्टं त्वया देवि शृणु वक्ष्यामि पार्वति।
न कदाचित् स्वयं कुर्यादादौ मन्त्रपुरस्क्रियाम्॥७॥
गुरुहस्तेन देवेशि साधकस्य करेण वा।
कुर्यान्मन्त्रवरस्यास्य पुरश्चरणकक्रियाम्॥८॥
जीवहीनो यथा देहो सर्वकर्मसु न क्षमः।
पुरश्चरणहीनोऽपि न मन्त्रः फलदायकः॥९॥

हे पार्वति! अच्छा प्रश्न किया है। सुनो, मैं उत्तर बतलाता हूँ, पहले-पहल पुरश्चरण क्रिया अपने से नहीं करनी चाहिये। पहले यह क्रिया गुरु के द्वारा या किसी साधक द्वारा करवानी चाहिये। तब यह श्रेष्ठ मन्त्र कल्पवृक्ष-सदृश होता है। जैसे जीवहीन देह कोई काम करने लायक नहीं होता, वैसे ही पुरश्चरण के बिना कोई मन्त्र फलदायक नहीं होता।।७-९।।

मन्त्रदशांशतो होमादीनि

जपाद् दशांशतो होमस्तद्दशांशेन तर्पणम्।
मार्जनं तद्दशांशेन तद्दशांशेन भोजनम्॥१०॥

जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश ब्राह्मणभोजन पुरश्चरण के आवश्यक अङ्ग कहे गये हैं।।१०।।

मन्त्रस्यादौ प्रमादाच्चेत् स्वयं कुर्यात् पुरस्क्रियाम्।
तदा जाप्यं भवेद् व्यर्थं क्षेत्रेष्विव घृतं यथा॥११॥
तस्माच्च गुरुहस्तेन साधकस्य करेण वा।
पुरश्चर्यां स्वमन्त्रस्य कारयेत् साधकोत्तमः॥१२॥
पुरश्चरणसङ्कल्पं दत्त्वादौ गुरवे शिवे।
जपं यथाविधिं कुर्याद् गुरुः कुलमनोः प्रिये॥१३॥
गुरोः पादप्रसादेन पुरश्चर्याफलं शिवे।
गृह्णीयात् साधको देवि गुरुं सन्तोषयेत् ततः॥१४॥

प्रमादवश यदि साधक पहला पुरश्चरण स्वयं करता है तो उसका जप वैसे ही व्यर्थ होता है, जैसे पृथ्वी पर घी का गिरना। इसलिये पुरश्चरण गुरु के द्वारा या किसी उत्तम साधक द्वारा ही करवावे। प्रारम्भ में पुरश्चरण हेतु संकल्प गुरु को समर्पित करे।

तब यथाविधि गुरु मन्त्र का जप करे। गुरु के पादप्रसाद से पुरश्चरण का फल साधक ग्रहण करे। इसके बाद गुरु को सन्तुष्ट करे।।११-१४।।

येन मन्त्रः कलौ शीघ्रमिष्टसिद्धिप्रदो भवेत्।
दक्षिणाभिः शुभैर्वस्त्रैर्यथाविभवमात्मनः ॥१५॥
ततः स्वयं पुरश्चर्या बह्वीः कुर्यात्तु साधकः।
पर्वताग्रे नदीतीरे देवतायतने तथा ॥१६॥
एकान्ते च शुचौ देशे जपेन्नियतमानसः।
ब्रह्मचर्यधरो वीरो मिताहारो जितेन्द्रियः ॥१७॥

इस प्रकार कलियुग में मन्त्र इष्टसिद्धिप्रदायक शीघ्र होता है। गुरु को अपने वैभव के अनुसार दक्षिणा और वस्त्रादि देकर प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करे। इसके बाद साधक स्वयं बहुत से पुरश्चरण करे। यह पुरश्चरण पर्वत के आगे, नदी के किनारे या देवालय में करे। एकान्त पवित्र देश में नियत मन से जप करे। पुरश्चरण काल में वीर साधक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करे। मिताहारी और जितेन्द्रिय रहे।।१५-१७।।

अनृतं मत्सरं दम्भं त्यजेत् प्रतिग्रहं तथा।
पुरश्चरणकाले तु तद्धोमावसरे तथा ॥१८॥
मूलं जप्त्वैकलक्षं तु कृत्वा होमं दशांशतः।
साधकैः क्षत्रियेणापि दशांशं होममाचरेत् ॥१९॥
तर्पयेत् सुहितो देवीं भोजयेत् साधकांस्ततः।
पुरश्चर्याविधिश्चैष वर्णितः कुलसुन्दरि ॥२०॥

अनृत, मत्सर, दम्भ और प्रतिग्रह का त्याग जप और हवन के अवसर पर करे। एक लाख मूल मन्त्र का जप करके उसका दशांश अर्थात् दश हजार हवन करे। क्षत्रिय साधक भी दशांश हवन करे। हवन का दशांश तर्पण करे और उसके बाद साधकों को भोजन कराये। हे कुलसुन्दरि! इस प्रकार यह पुरश्चरण की विधि का वर्णन किया गया।।१८-२०।।

पुरश्चरणप्रकारान्तराणि

अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते।
अष्टम्यां वा चतुर्दश्यां पक्षयोरुभयोरपि ॥२१॥
सूर्योदयात् समारभ्य यावत् सूर्योदयो भवेत्।
तावज्जप्त्वा निरातङ्को मन्त्रः कल्पद्रुमो भवेत् ॥२२॥

पुरश्चरण के अन्य प्रकार—अब अन्य प्रकार के पुरश्चरण को कहता हूँ। दोनों पक्षों की अष्टमी या चतुर्दशी तिथियों में सूर्योदय से लेकर अगले सूर्योदय तक मन्त्र का जप निर्भय होकर करे तो मन्त्र कल्पद्रुमसदृश होता है।।२१-२२।।

चन्द्रसूर्यग्रहे वापि ग्रासावधि विमुक्तितः।
यावत् संख्यामनुर्जप्तस्तावद्धोमादिकं चरेत्॥२३॥
सर्वसिद्धीश्वरो मन्त्रो भवेत् साधकवन्दिते।
शरत्काले रवौ देवि जपेन्मन्त्रं यथाविधि॥२४॥
निशीथे रचयेद्धोमं क्षत्रन्यस्ताहुतिं शिवे।
तत्क्षणात् साधको देवि क्षत्रियोऽपि शुभं लभेत्॥२५॥

चन्द्र या सूर्यग्रहण की ग्रास अवधि से मोक्षकाल तक जितना जप करे, उतना ही हवन करे। हे साधकवन्दिते! इससे मन्त्र सिद्धीश्वर होता है। शरत्काल के रविवार में यथाविधि मन्त्र का जप करे। निशीथकाल में होम की रचना कर हस्त न्यस्ताहुति प्रदान करे। उस क्षण से क्षत्रिय साधक भी शुभता लाभ करता है।।२३-२५।।

अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते।
गुरुमानीय संस्थाप्य देवतापूजनं चरेत्॥२६॥
वस्त्रालङ्कारहेमाद्यैः सन्तोष्य गुरुमेव च।
तत्सुतं तत्सुतां चैव तस्य पत्नीं तथैव च॥२७॥
पूजयित्वा मनुं जप्त्वा सर्वसिद्धीश्वरो भवेत्।

अथवा अन्य प्रकार के पुरश्चरण को कहता हूँ। गुरु को लाकर आसन पर बैठाकर देवता का पूजन करे। गुरु को वस्त्र, अलंकार, स्वर्णादि देकर सन्तुष्ट करे। गुरु के न होने पर उसके पुत्र या उसकी पुत्री या उसकी पत्नी का पूजन करके मन्त्र का जप करे। इससे साधक सिद्धियों का स्वामी हो जाता है।।२६-२७।।

अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते॥२८॥
सहस्रारे गुरोः पादपद्मं ध्यात्वा प्रपूज्य च।
केवलं देवभावेन सर्वसिद्धीश्वरो भवेत्॥२९॥
गुरवे दक्षिणां दद्याद् यथाविभवमात्मनः।
गुरोरनुज्ञामात्रेण दुष्टमन्त्रोऽपि सिद्ध्यति॥३०॥

अथवा अन्य प्रकार से पुरश्चरण करे। सहस्रार में गुरु के पादपद्मों का ध्यान करके पूजन करे। केवल देवीभाव से पूजन करे। इससे साधक सभी सिद्धियों का स्वामी होता

है। अपने वैभव के अनुसार गुरु को दक्षिणा प्रदान करे। गुरु की अनुज्ञामात्र से दुष्ट मन्त्र भी सिद्ध होते हैं।।२८-३०।।

पटलोपसंहारः

इत्येष पटलो गुह्यो मन्त्रसारमयो ध्रुवः ।
अप्रकाश्यो न दातव्यो नाख्येयो ब्रह्मवादिभिः ॥३१॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये पुरश्चर्याविधिनिरूपणं नाम पञ्चपञ्चाशत्तमः पटलः॥५५॥

यह पटल मन्त्रसारमय है—यह निश्चित है। इसे ब्रह्मवादियों को भी न तो बतलाना चाहिये, न देना चाहिये और न ही उनसे कहना चाहिये।।३१।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में पुरश्चर्याविधि निरूपण नामक पञ्चपञ्चाशत्तम पटल पूर्ण हुआ।

•

अथ षट्पञ्चाशत्तमः पटलः

पञ्चरत्नेश्वरीविद्या

पञ्चरत्नेश्वरीविधिनिर्णयः

श्रीभैरव उवाच

अधुना देवि वक्ष्येऽहं पञ्चरत्नेश्वरीविधिम् ।
येन श्रवणमात्रेण विद्या सिद्ध्यति सत्वरम् ॥१॥
विना पञ्चरत्नेश्वरीमन्त्रजाप्यं
न सिद्धिर्भवेत् साधकस्योत्तमस्य ।
ततः पूजयेद् दीक्षितः श्रीगुरुं स्वं
समस्ताष्टसिद्धीश्वरं देवदेवि ॥२॥
दुर्गायाः परमं तत्त्वं पञ्चरत्नेश्वरीमयम् ।
शृणुष्वावहितो भूत्वा येन मुक्तिर्भवेत् कलौ ॥३॥
श्रीदुर्गा शारदा शारी सुमुखी बगलामुखी ।
पञ्चरत्नेश्वरी विद्या दुर्गायाः कथिता मया ॥४॥

पञ्चरत्नेश्वरीविधि-निर्णय—श्री भैरव ने कहा कि हे देवि! अब मैं पञ्चरत्नेश्वरी विधि का वर्णन करता हूँ, जिसके सुनने-मात्र ही से तत्काल विद्या सिद्ध होती है। बिना पञ्चरत्नेश्वरी-मन्त्रजप के उत्तम साधक को भी सिद्धि नहीं मिलती। इसलिये अपने दीक्षागुरु की पूजा करके समस्त अष्टसिद्धीश्वर देव-देवी का पूजन करे। पञ्चरत्नेश्वरी-विधि दुर्गा का परमतत्त्व है। सावधान चित्त होकर इसे सुनो। इससे कलियुग में मुक्ति प्राप्त होती है। मैंने पहले ही कहा है कि दुर्गा, शारदा, शारिका, सुमुखी और बगलामुखी—ये पाँच दुर्गा की पञ्चरत्नेश्वरी विद्यायें हैं।।१-४।।

पञ्चरत्नेश्वरीविद्याजापेन वर्णलक्षपुरश्चर्याफलम्

सुदिने देवि दुर्गायाः पञ्चरत्नेश्वरीं जपेत् ।
वर्णलक्षपुरश्चर्याफलमाप्नोति साधकः ॥५॥
साधकेषु चतुर्ष्वेवं श्रीदुर्गासाधकः शिवे ।
श्रीगुरुं वन्दनैः स्तुत्या तोषयित्वा धनैरपि ॥६॥
दीक्षामन्येषु शिष्येषु दापयेत् साधकोत्तमः ।

येन मन्त्रो हि दुर्गायाः सद्यः स्फुरति भारती ॥७॥
पञ्चस्वपि महादेवि साधकेषु कलौ युगे।
पञ्चरत्नेश्वरीं दत्त्वा पुरश्चर्याफलं लभेत् ॥८॥

पञ्चरत्नेश्वरी विद्याजप से वर्णलक्ष पुरश्चरण का फल—शुभ दिन में दुर्गा की पञ्चरत्नेश्वरी विद्या का जप करे। इससे साधक को वर्णलक्षजप पुरश्चरण का फल मिलता है। चार साधकों में दुर्गासाधक भी एक है। श्रीगुरु को वन्दना, स्तुति, धन से सन्तुष्ट करे। तब गुरु शिष्य को दीक्षामन्त्र प्रदान करे। इसी दुर्गामन्त्र से भारती का स्फुरण होता है। कलियुग में पञ्चरत्नेश्वरी विद्या देने से गुरु को पुरश्चरण का फल प्राप्त होता है।।५-८।।

श्रीदुर्गोपासकश्चैकः शारदोपासकः परः।
शारिकोपासकस्त्वन्यो मातङ्ग्यास्त्वपरः शिवे ॥९॥
पञ्चमो बगलामुख्याश्चैकत्र मिलिताश्च ते।
पूजयेयुर्गुरुं देवि पञ्चरत्नेश्वरीं जपेत् ॥१०॥
अन्योन्यं साधकाः पञ्च श्रीगुरोः पुरतः शिवे।
पुरश्चर्याफलं सिद्धं प्रार्थयेयुर्गुरोस्ततः ॥११॥
एवं सिद्धमनुर्लोके सर्वसिद्धिं प्रयच्छति।

उपासकों में श्रीदुर्गोपासक पहला है। दूसरा शारदोपासक है। तीसरा शारिकोपासक है, चौथा मातङ्गी का उपासक है एवं पाँचवाँ बगलामुखी का उपासक है। ये सभी एकत्र सम्मिलित होकर एक होते हैं। गुरु का पूजन करके पञ्चरत्नेश्वरी का जप करे। पाँचों के पृथक्-पृथक् साधक गुरु के सामने पुरश्चरण के फल की सिद्धि के लिये गुरु से प्रार्थना करें। इस प्रकार से सिद्ध मन्त्र संसार में सभी सिद्धियों को देने वाला होता है।।९-११।।

दुर्गामन्त्रोद्धारः

तारं माया चाक्रिकं चक्रिदूर्वावायव्याढ्यं विश्वमन्ते भवानि।
दुर्गायास्ते वर्णितो मूलविद्यामन्त्रोद्धारो गोपितोऽष्टाक्षरोऽयम् ॥१२॥

दुर्गामन्त्रोद्धार—तार = ॐ, माया = ह्रीं, चाक्रिकं = दुं, चक्रिदूर्वावायव्याढ्यं = दुर्गायै, विश्व = नमः के योग से बना मन्त्र स्पष्ट है—ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै मनः। इस प्रकार इस गोपित दुर्गा अष्टाक्षर मन्त्र के उद्धार का वर्णन तुम्हारे लिये किया गया। यह दुर्गा की मूल विद्या है।।१२।।

शारदामन्त्रोद्धारः

तारं माया कामराजश्च शक्तिः स्तम्भं तस्माद्भगवत्यै च नाम।
भूतिस्तस्मादञ्चले ठद्वयं स्यात् प्रोक्तं मुक्त्यै शारदामन्त्र एषः ॥१३॥

शारदामन्त्रोद्धार— तार = ॐ, माया = ह्रीं, कामराज = क्लीं, शक्ति = सौः, स्तम्भ = नमो भगवत्यै, नाम = शारदायै, ठद्वयं = स्वाहा के योग से मन्त्र स्पष्ट है—ॐ ह्रीं क्लीं सौः नमो भगवत्यै शारदायै ह्रीं स्वाहा। यह शारदा-मन्त्र मोक्षदायक कहा गया है।।१३।।

शारिकामन्त्रोद्धारः

तारं परा मातटसिन्धुरार्णाः खं शर्म तन्मध्यगतं च नाम।
अन्तेऽश्मरी पार्वति शारिकायास्त्रयोदशार्णो मनुरस्ति गोप्यः ॥१४॥

शारिका-मन्त्रोद्धार—तार = ॐ, परा = ह्रीं, मा = श्रीं, तट = हूं, सिन्धूर = फ्रां, खं = आं, शर्म = सौः, शरिकायै, अश्मरी = नमः के योग से मन्त्र स्पष्ट होता है— ॐ ह्रीं श्रीं हूं क्रां आं सौः शारिकायै नमः। इस मन्त्र में तेरह अक्षर हैं। यह मन्त्र गोपनीय है।।१४।।

सुमुखीमन्त्रोद्धारः

वाक् काममुच्छिष्टपदं विभाव्य चण्डालिनी वै सुमुखी च देवि।
महापिशाची सकलात्रयाब्जं वनं मनुः स्यात् सुमुखीप्रियोऽयम् ॥१५॥

सुमुखी-मन्त्रोद्धार—वाक् = ऐं, काम = क्लीं, उच्छिष्टचण्डालिनि, सुमुखि देवि महापिशाचि, सकलात्रय = ह्रीं ह्रीं ह्रीं, अब्ज = ऐं, वनं = नमः के योग्य से मन्त्र स्पष्ट है—ऐं क्लीं उच्छिष्टचण्डालिनि सुमखि देवि महापिशाचि ह्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं नमः। यह मन्त्र सुमुखी को प्रिय है।।१५।।

बगलामन्त्रोद्धारः

तारं मठं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय द्विः।
पदं जिह्वां कीलय द्विर्मठं वा तारं नीरं ब्रह्मणोऽस्त्यस्त्रविद्या ॥१६॥

बगलामुखी-मन्त्रोद्धार—ॐ ग्लौं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय ग्लौं ॐ स्वाहा। यह मन्त्रस्पष्ट तार = ॐ, मठं = ग्लौं, बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय, मठं = ग्लौं, तारं = ॐ, नीरं = स्वाहा के योग से होता है। यह ब्रह्मास्त्र विद्या है।।१६।।

पटलोपसंहारः

इत्येषा गुप्तविद्येयं प्रभावसहिता कलौ।
पञ्चरत्नेश्वरी ग्राह्या पुरश्चरणसिद्धये ॥१७॥
इतीदं तत्त्वमीशानि पुरश्चर्यारहस्यकम्।
अनन्तफलदं गुह्यं गोपनीयं मुमुक्षुभिः ॥१८॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये पञ्चरत्नेश्वरीविद्यानिरूपणं नाम षट्पञ्चाशत्तमः पटलः॥५६॥

इन गुप्त विद्याओं को प्रभावसहित कलियुग में ग्रहण करने से पुरश्चरण सिद्ध होता है। हे ईशानि! पुरश्चरणरहस्य का यह तत्त्व अनन्त फलप्रद, गुह्य और गोपनीय है। इसे मुमुक्षुओं को भी नहीं बतलाना चाहिये।।१७-१८।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में पञ्चरत्नेश्वरीविद्या निरूपण नामक षट्पञ्चाशत्तम पटल पूर्ण हुआ।

●

अथ सप्तपञ्चाशत्तमः पटलः

होमविधिः

रात्रिजपविधिः

श्रीभैरव उवाच

अथ होमविधिं वक्ष्ये सर्वतन्त्रेषु गोपितम्।
दुर्गारहस्यकं सारं मन्त्रराजस्य पार्वति ॥१॥
ध्यात्वा देवीं परां दुर्गां गुरुं ध्यात्वा सशक्तिकम्।
जपेच्छ्रीचक्रपुरतो निशीथे मन्त्रमीश्वरि ॥२॥
अयुतं लक्षमेकं वा दशांशं होममाचरेत्।
कोटिलक्षप्रजप्तस्य मन्त्रस्य सुरसुन्दरि ॥३॥
विना दशांशहोमेन न तत्फलमवाप्नुयात्।
विना श्मशानगमनं नित्यहोमजपादयः ॥४॥

रात्रिजपविधि—श्री भैरव ने कहा कि हे पार्वति! अब मैं सभी तन्त्रों में गोपित, दुर्गामन्त्रराज रहस्य के सारभूत हवन-विधान का वर्णन करता हूँ। परा दुर्गा देवी और गुरु का ध्यान करके श्रीचक्र के आगे निशीथ में दश हजार मन्त्र का जप करे या एक लाख जप करे। इसका दशांश हवन करे। हे सुरसुन्दरि! करोड़ लक्ष जप करने पर भी बिना दशांश हवन के उसका फल नहीं मिलता है। भैरवशाप के प्रभाव से श्मशान गये बिना नित्य जप-हवन से भी कलियुग में सिद्धि नहीं मिलती।।१-४।।

होमादिदशांशनिर्णयः

न सिद्ध्यन्ति वरारोहे कलौ भैरवशापतः।
घृतपायसमृद्वीका-गुडपुष्पसिताशरैः ॥५॥
होमो दशांशतः कार्यो जपस्य सुरवन्दिते।
पञ्चामृतेन देवेशि तद्दशांशेन तर्पयेत् ॥६॥
तर्पयित्वा दशांशेन पञ्चामृतमुखं सुधीः।
तद्दशांशेन देवेशि ह्यष्टगन्धेन मार्जयेत् ॥७॥
भोजयित्वा दशांशेन दीक्षितांश्च द्विजोत्तमान्।
ततो देवि पुरश्चर्याफलमाप्नोति साधकः ॥८॥
अन्यथा सिद्धिहानिः स्याज्जप्तस्यापि मनोः सदा।

होमादि दशांश-निर्णय—हे सुरवन्दिने! घी, पायस, किसमिस, गुड़, पुष्प, सिता और श्वेत चन्दन के मिश्रण से जप का दशांश हवन करे। हवन का दशांश तर्पण पञ्चामृत से करे। तर्पण का दशांश मार्जन अष्टगन्ध से करे। उसका दशांश ब्राह्मण-भोजन कराये। ऐसा करने पर ही साधक को पुरश्चरण का फल प्राप्त होता है। ऐसा नहीं करके सदा मन्त्र जपते रहने से सिद्धि की हानि होती है।।५-८।।

श्रीदेव्युवाच

यस्य नो भवति शक्तिर्होमं कर्तुं दशांशतः।
स कथं क्रियते होमं तद्वदस्व महेश्वर॥९॥

श्री देवी ने कहा कि हे महेश्वर! जिसमें दशांश हवन करने की शक्ति न हो वह हवन कैसे करेगा? इसे स्पष्ट कीजिये।।९।।

होमाशक्तस्य श्मशानसाधनयुक्तिः

श्रीभैरव उवाच

यस्य होमं शिवे कर्तुं शक्तिर्नास्ति दशांशतः।
तस्य युक्तिं ब्रवीम्यद्य कौलिकानां हिताय च॥१०॥
शुभेऽह्नि सायं देवेशि गत्वोपवनमण्डलम्।
श्मशानं सम्मुखं धृत्वा पृष्ठे वा परमेश्वरि॥११॥
श्मशानं प्रणमेद्भक्त्या साधकः साधकैः समम्।
ज्वालाकरालवदने कल्पान्तदहनप्रिये॥१२॥
प्राणिप्राणालयोद्भूते चिते मेऽनुग्रहं कुरु।
इति नत्वा महादेवि ज्ञात्वा दिग्भूतभैरवान्॥१३॥
निवसेत् तत्र रात्रौ तु कुर्याद्धोमं कुलेश्वरि।

होम में अशक्त होने पर श्मशान-साधन-विधि—श्री भैरव ने कहा कि हे शिवे! जिसमें दशांश हवन करने की शक्ति नहीं है, उसकी युक्ति कौलिकों के हित के लिये मैं कहता हूँ। शुभ दिन में सायंकाल में श्मशान के सामने उपवन मण्डल में जाये। श्मशान की ओर मुख या पृष्ठ रखकर साधक भक्तिपूर्वक प्रणाम करे और प्रार्थना करे—

ज्वालाकरालवदने कल्पान्तदहनप्रिये।
प्राणिप्राणलयोद्भूते चिते मेऽनुग्रहं कुरु।।

करालज्वाला मुख वाली, कल्पान्तदहनप्रिये! प्राणियों के प्राणों के लय होने से उत्पन्न चिते! तुम मुझपर कृपा करो हे महादेवि! इस प्रकार प्रणाम करके सभी दिशाओं में भूत-भैरवों को उपस्थित जानकर रात्रि में वहीं निवास करे एवं हवन करे।।१०-१३।।

श्मशानार्चनम्

ऐशान्यां दिशि देवेशि श्रीचक्रं तु विभावयेत् ॥१४॥
संपूज्य विधिवन्मन्त्रैर्दिक्पालांस्तत्र पार्वति ।
गणेशं पूजयेत्तत्र पूजयेत् कुलयोगिनीः ॥१५॥
तत्पूर्वतः खनेत् कुण्डं हुनेदाज्यं च विद्यया ।
त्रिकोणं कुण्डमीशानि हस्ताधोगाधमद्रिजे ॥१६॥
हस्तैकविस्तृतं विश्वक् तस्मिंश्चक्रं विभावयेत् ।
बिन्दुं त्रिकोणं षट्कोणं वसुपत्रं त्रिवर्तुलम् ॥१७॥
भूगृहाङ्कं मयाख्यातं वह्निचक्रं कुलार्चिते ।
गणेशधर्मवरुणाः कुबेरसहितास्ततः ॥१८॥
पूजनीया विशेषेण गन्धाक्षतप्रसूनकैः ।
ब्राह्मयादिमातरः पूज्या असिताद्याश्च भैरवाः ॥१९॥
वसुपत्रेषु संपूज्या वह्निचक्रे महेश्वरि ।
माया च मोहिनी चैव तृतीया च मनोन्मना ॥२०॥
मुक्तकेशी च मातङ्गी मदिराक्षी षडश्रके ।
त्रिकोणे यमुना गङ्गा संपूज्या च सरस्वती ॥२१॥
बिन्दौ दुर्गा च संपूज्या गन्धपुष्पाक्षतैः शिवे ।
बिन्दावरणिमामन्त्र्य मूलमन्त्रेण मान्त्रिकः ॥२२॥

श्मशान-पूजन—हे देवि! ईशान दिशा में श्रीचक्र अंकित करे। विधिवत् मन्त्रों से दिक्पालों की पूजा करे। गणेश और योगिनी का पूजन करे। उसके पूर्व भाग में कुण्ड निर्मित कर मूल विद्या से गाय के घी से हवन करे। एक हाथ लम्बी और एक हाथ गहरा त्रिकोण कुण्ड बनावे। कुण्ड में चक्र अंकित करे। बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, वृत्तत्रय और भूपुर से अग्निचक्र बनता है। उसमें गणेश, धर्मराज, वरुण और कुबेर का पूजन गन्धाक्षत-पुष्प से करे। ब्राह्मी आदि मातृकाओं का पूजन असिताङ्गादि भैरवों के साथ करे। इनका पूजन अग्निचक्र के आठ दलों में करे। षट्कोण में माया, मोहिनी, मनोन्मना, मुक्तकेशी, मातङ्गी और मदिराक्षी का पूजन करे। त्रिकोण में गङ्गा, यमुना, सरस्वती का

पूजन करे। बिन्दु में दुर्गा का पूजन गन्धाक्षत, पुष्प से करे। हे शिवे! बिन्दु के आवरणदेवताओं का पूजन मूल मन्त्र से मान्त्रिक को करना चाहिये।।१४-२२।।

वह्निमावाह्य मूलेन तदावाहनमुद्रया।
ॐरूंरामग्नये स्वाहा मन्त्रेणेति सुरेश्वरि ।।२३।।
वह्निं मूलेन संस्कृत्य कृत्वाज्यं घृतमीश्वरि।
दशांशहोमसङ्कल्पं कुर्यान्मन्त्रस्य साधकः ।।२४।।
मालया दहने दद्यादाहुतीनां शतत्रयम्।
आहुतीः क्षत्रियन्यस्तास्तत्र वह्नौ हुनेत् प्रिये ।।२५।।
पुष्पैः फलैराज्यमिश्रैस्ततो दद्याद् बलिं प्रिये।
मकारैः पञ्चभिर्देवि पुनर्जप्त्वा च पूर्ववत् ।।२६।।
आहुतीनां शतं दद्यादष्टोत्तरमधोमुखः।
ततः साधकचक्रस्य क्षत्रियस्य च पार्वति ।।२७।।
पूजां विधाय चक्रेऽस्मिंस्तोषयेन्नुतिभिर्गुरुम्।
आशीर्भिर्वर्धयेत् क्षत्रं येनाशु क्षोणिपो भवेत् ।।२८।।
क्षत्रियोऽपि वदेत् तत्र पुरश्चर्याफलं मनोः।
लभस्व साधकश्रेष्ठं ततः पूर्णाहुतिं हुनेत् ।।२९।।

आवाहन मुद्रा द्वारा मूल मन्त्र से अग्नि का आवाहन करे। अग्नि का संस्कार 'ॐ रूं रां अग्नये स्वाहा' मन्त्र से करे। घी को भी संस्कृत करे। मूल मन्त्रजप के दशांश हवन का संकल्प करे। प्रज्ज्वलित अग्नि में माला से तीन सौ आहुतियाँ डाले। क्षत्रिय या अन्य सभी इसी प्रकार हवन फूल-फल में आज्य मिश्रित करके करें। हवन के बाद बलि प्रदान करे। फिर पूर्ववत् जप करके पञ्चमकारों से एक सौ आठ आहुति अधोमुख रूप में डाले। चक्र का क्षत्रिय साधक पूजा करे। अपने गुरु को सन्तुष्ट करे। प्रणाम करे। गुरु के आशीर्वाद से क्षत्रिय के क्षेत्र की वृद्धि होती है और वह क्षोणिपति होता है। क्षत्रिय गुरु से अपने पुरश्चरण-फल को बताये और गुरु कहे कि साधकश्रेष्ठ! इच्छित फल-लाभ करो। तब पूर्णाहुति प्रदान करे।।२३-२९।।

ततो वर्म पठेद् देवि येन देवीमयो भवेत्।
ततो देवीं च सशिवां मन्त्री संहारमुद्रया ।।३०।।
साधकांस्तर्पयित्वादौ भक्ष्यपानादिभिः प्रिये।
विसृज्य साधकान् देवीं सशिवां सपरिच्छदाम्।

पुरश्चर्याफलं प्राप्य साधको मुक्तिभाग् भवेत् ॥३१॥

इसके बाद कवच का पाठ करे। इससे साधक देवीमय होता है। इसके बाद साधक देवी और साधकों को भक्ष्य-पान अदि से तर्पित करे। साधकों और देवी को परिच्छदों सहित विसर्जित् करे। पुरश्चरण का फल प्राप्त करके साधक मोक्ष का भाजन होता है।।३०-३१।।

पटलोपसंहारः

इत्येष पटलो दिव्यो मन्त्रपूजामयो ध्रुवः ।
सर्वतत्त्वैकनिलयो गोपनीयो मुमुक्षुभिः ॥३२॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये होमविधिनिरूपणं
नाम सप्तपञ्चाशत्तमः पटलः॥५७॥

यह पटल दिव्य और मन्त्र-पूजामय है। सभी तत्त्वों का आलय है एवं मुमुक्षुओं से भी गोपनीय है।।३२।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में होमविधि
निरूपण नामक सप्तपञ्चाशत्तम पटल पूर्ण हुआ।

●

अथाष्टापञ्चाशत्तमः पटलः

चक्रपूजा

चक्रार्चनम्

श्रीभैरव उवाच

अधुना चक्रपूजां ते वक्ष्यामि नगनन्दिनि।
येन दुर्गा कलौ शीघ्रं वरदा भवति प्रिये ॥१॥

चक्रपूजा—श्री भैरव बोले—हे पार्वति! अब मैं चक्रपूजा का कथन करता हूँ, जिससे कलियुग में दुर्गा शीघ्र वरदायिनी होती है।।१।।

चक्रार्चने साधकनिर्णयः

एकादशावधि देवि साधकाः परमार्थदाः।
एकादशापि चक्रे तु वर्णिताः साधकाः शुभाः ॥२॥
उत्तमा नव देवेशि मध्यमाः पञ्च साधकाः।
अधमास्तु त्रयो देवि न पुज्याश्चक्रमध्यगाः ॥३॥
विना चक्रार्चनं नैव नित्यपूजाजपादयः।
फलदा योगिनीशापात् तस्माच्चक्रं प्रपूजयेत् ॥४॥

चक्रार्चन में साधक-निर्णय—चक्र में सम्मिलित ग्यारह साधक परमार्थदायक होते हैं। नव साधक उत्तम और पाँच साधक मध्यम होते हैं। पूजाचक्र में तीन साधक अधम होते हैं। बिना चक्रार्चन के नित्य पूजा, जप आदि फलदायक नहीं होते। ऐसा शाप योगिनियों ने दिया है। इसलिये चक्रपूजन अवश्य करना चाहिये।।२-४।।

चक्रार्चनकालः आसनार्चान्ते कुम्भस्थापनञ्च

कुहूपूर्णेन्दुसंक्रान्ति-चतुर्दश्यष्टमीषु च।
नवम्यां मङ्गले मन्दे चक्रपूजा शुभप्रदा ॥५॥
साधकाश्च सुतीर्थ्याश्च मिलिताः शिवमन्दिरे।
देवतायतने वापि शून्ये शृङ्गाटकेऽथ वा ॥६॥
दिग्भूतभैरवान् देवि विचार्य पुरसाधकः।
उपविश्यासने देवि संशोध्य वीरमण्डले ॥७॥

साधकानुपविश्यात्र कुर्यात् संकल्पमादरात्।
न्यासं विधाय सर्वाङ्गे भूतशुद्ध्यादिकं चरेत्॥८॥
तत्र प्राणान् प्रतिष्ठाप्य श्रीचक्रं पूजयेच्छिवे।
आत्मश्रीचक्रयोर्मध्ये कुम्भस्थापनमाचरेत्॥९॥

चक्रार्चन का काल एवं स्थान—अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, चतुर्दशी, अष्टमी, नवमी में मंगलवार या शनिवार हो तो चक्रपूजा शुभकारक होती है। सुतीर्थ मिलने पर शिवमन्दिर में या देवालय में या शून्य चौराहे पर दिग्भूत भैरवों का विचार करके साधक आसन का शोधन करके वीरमण्डल में साधकों को बैठाये एवं स्वयं भी बैठे। तदनन्तर सङ्कल्प, न्यास करके सर्वाङ्ग में भूतशुद्धि आदि करे। तब प्राणप्रतिष्ठा करके श्रीचक्र का पूजन करे। अपने और श्रीचक्र के बीच में कलश का स्थापन करे।।५-९।।

कुम्भार्चाक्रमः

गौडी माध्वी तथा पैष्टी चासवं पूजयेच्छिवे।
एतेषां रसमादाय तत्त्वतो भैरवार्चने॥१०॥
आनन्दरसपूजायां तुष्यते परमेश्वरी।
विप्राश्च क्षत्रिया वैश्याः शूद्राः पूज्याश्च पार्वति॥११॥
गौडी विप्रेषु शुभदा माध्वी क्षत्रेषु चोत्तमा।
वैश्येषु शुभदा पैष्टी शूद्रेषु शुभमासवम्॥१२॥
ब्रह्मक्षत्रियवैश्यानामानन्दस्तु शुभावहः।
आसवं दूरतस्त्याज्यं साधकैस्तु मुमुक्षुभिः॥१३॥

कलश-अर्चनक्रम—कलश में गौड़ी, माध्वी और पैष्टी आसव भरकर उसका पूजन करे। भैरव-अर्चन में ये आवश्यक तत्त्व हैं। आनन्द रस द्वारा पूजन करने से परमेश्वरी सन्तुष्ट होती है। मण्डल में विप्रा, क्षत्रिया, वैश्या और शूद्रा सभी पूज्य हैं। गौड़ी विप्रों के लिये शुभद है। माध्वी क्षत्रियों के लिये उत्तम है। पैष्टी वैश्यों के लिये शुभद है तथा शूद्रों के लिये आसव शुभ होता है। ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य के लिये आनन्द शुभावह है। मोक्ष के इच्छुक साधकों के लिये आसव दूर से ही त्याज्य है।।१०-१३।।

अभावे तु सुरानन्दरसानां परमेश्वरि।
मधुना पूजयेद् देवि देवमानन्दभैरवम्॥१४॥

द्रव्यं संशोध्य देवेशि मकारान् पञ्च शोधयेत्।
श्रीचक्राग्रेऽर्चयेत् तत्र साधकान् भैरवागमे ॥१५॥
तत्र संपूज्य यन्त्रेशं देवमावाह्य भैरवम्।
योगिनीः पूजयेत् तत्र वटुकं पूजयेत् ततः ॥१६॥
गणेशं क्षेत्रपालांश्च पूजयेच्चक्रनायिकाम्।
सन्तर्प्य देवान् पितृंश्च मुनीन् वेदान् महेश्वरि ॥१७॥
श्रीचक्राग्रे जपेन्मूलं पठेत् कवचमीश्वरि।
मन्त्रनामसहस्रं च स्तोत्रं पुण्यं पठेत्ततः ॥१८॥

रसानन्द रसों के अभाव में मधु से पूजन देव, देवी और आनन्दभैरव का करे। हे देवि! द्रव्यों का शोधन करके पञ्च मकारों का शोधन करे। श्रीचक्र के आगे साधकों का अर्चन करे। इस पूजा के बाद यन्त्र में यन्त्रेश देव का आवाहन करे। तब भैरव, योगिनी, वटुक, गणेश एवं क्षेत्रपाल का पूजन करे। तब चक्रनायिकाओं का पूजन करे। हे महेश्वरि! देवताओं, पितरों, मुनियों, वेदों का तर्पण करने के पश्चात् श्रीचक्र के आगे मूलमन्त्र का जप करके कवच का पाठ करे। तदनन्तर मन्त्रनामसहस्र और पवित्र स्तोत्र का पाठ करे।।१४-१८।।

बलिदानानन्तरं तर्पणम्

ततो देव्यै बलिं दत्त्वा साधकांस्तर्पयेच्छिवे।
भैरवांस्तर्पयेच्चाष्टौ दीक्षितांस्तर्पयेत्ततः ॥१९॥

बलि-तर्पण—तदनन्तर देवी को बलि प्रदान करे। साधकों का तर्पण करे। आठों भैरवों का तर्पण करे। दीक्षितों का तर्पण करे।।१९।।

पात्रार्चनम्

उत्तमं नव पात्राणि पञ्च पात्राणि मध्यमम्।
अधमं त्रीणि पात्राणि चैकपात्रं न पूजयेत् ॥२०॥
प्रवृत्ते भैरवे तन्त्रे सर्वे वर्णा द्विजातयः।
निवृत्ते भैरवे तन्त्रे सर्वे वर्णाः पृथक् पृथक् ॥२१॥

पात्र-अर्चन—अर्चन के क्रम में नव पात्र उत्तम, पाँच पात्र मध्यम एवं तीन पात्र अधम माने गये हैं। एक पात्र से पूजन कभी नहीं करना चाहिये। भैरव तन्त्र में प्रवृत्त होने पर सभी वर्ण द्विज हो जाते हैं एवं चक्रार्चन के बाद सभी पुनः अ़लग-अलग वर्ण के हो जाते हैं।।२०-२१।।

कन्यापूजनम्

नव कन्याः समभ्यर्च्य वीरेशो भैरवार्चने।
रेतसा तर्पयेद् देवीं कुलकोटिं समुद्धरेत्॥२२॥
शक्त्युच्छिष्टं पिबेद् द्रव्यं वीरोच्छिष्टं तु चर्वणम्।
मकारपञ्चसंयुक्तं कुर्याच्छ्रीचक्रमण्डलम्॥२३॥
स्वगुरुं पूजयेत् तत्र तर्पयेच्छक्तितः परम्।
तोषयित्वा गुरुं देवि दक्षिणाभिश्च वन्दनैः।
तदाज्ञां शिरसादाय कुर्यादानन्दमात्मनः॥२४॥

कन्या-पूजन—भैरवार्चन में वीरेश नव कन्याओं का अर्चन करे। वीर्य से देवी का तर्पण करके करोड़ों कुल का उद्धार करे। शक्ति का जूठा मद्यपान करे। वीर के जूठे मुद्रादि का चर्वण करे। श्रीचक्रमण्डल को पञ्च मकार से युक्त करे। तब शक्ति के अनुसार अपने गुरु का पूजन करे। वन्दना और दक्षिणा से गुरु को सन्तुष्ट करे। तत्पश्चात् उनकी आज्ञा शिरोधार्य कर आनन्दपूर्वक विहार करे।।२२-२४।।

वामे रामा रमणकुशला दक्षिणे चालिपात्र-
मग्रे मुद्रा चणकवटुकौ सूकरस्योष्णशुद्धिः।
तन्त्री वीणा सरसमधुरा सद्गुरोः सत्कथायां
वामाचारः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः॥२५॥

रमणकुशला रमणी बाँयें भाग में, दाँयें हाथ में मद्यपात्र, आगे चना के बड़े का मुद्रा, सूकर की उष्ण शुद्धि, तन्त्री वीणा, सरस मधुर, सद्गुरु की सत्कथा से युक्त यह वामाचार परम गहन है और योगियों द्वारा भी अगम्य है।।२५।।

पटलोपसंहारः

इतीदं चक्रसर्वस्वं गुह्यं तत्त्वात्मकं परम्।
तव भक्त्या मयाख्यातं गोपनीयं मुमुक्षुभिः॥२६॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये चक्रपूजा-
निरूपणमष्टापञ्चाशत्तमः पटलः॥५८॥

यह चक्रसर्वस्व है। यह गुह्य और परम तत्त्वात्मक है। हे देवि! तुम्हारी भक्ति के कारण मैंने इसका वर्णन किया है। यह मुमुक्षुओं के लिये भी गोपनीय है।।२६।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में चक्रपूजा निरूपण नामक अष्टापञ्चाशत्तम पटल पूर्ण हुआ।

•

अथैकोनषष्टितमः पटलः

आचारनिरूपणम्

दुर्गातत्त्वनिरूपणम्

श्रीभैरव उवाच

अधुना देवि वक्ष्यामि दुर्गायास्तत्त्वमुत्तमम्।
आचाराणां विधिं येन कलौ दुर्गा प्रसीदति ॥१॥
द्वौ मार्गौ चागमे स्यातां वामाचारस्तु दक्षिणः।
तयोस्तत्त्वं कुलाचारः शृणु तेषां विधिं शिवे ॥२॥
साधको दीक्षितो भूत्वा केन सिद्धिमवाप्नुयात्।
तद्वदामि तव स्नेहान्न चाख्येयं दुरात्मने ॥३॥
त्रीणि बीजानि दुर्गायास्तदाचारास्त्रयः स्मृताः।
प्रथमो दक्षिणाचारो वामाचारो द्वितीयकः ॥४॥
तृतीयस्तु कुलाचारो विधिं तेषां शृणु प्रिये।

दुर्गातत्त्व-निरूपण—श्रीभैरव ने कहा कि हे देवि! अब मैं दुर्गा के उत्तम तत्त्वों का निरूपण करता हूँ। उन आचारों की विधि को भी कहता हूँ, जिसके करने से कलियुग में दुर्गा प्रसन्न होती है। आगमों में वामाचार और दक्षिणाचार दो मार्ग कहे गये हैं। उनके तत्त्वभूत कुलाचार की विधि का मैं वर्णन करता हूँ, हे शिवे! तुम सुनो। दीक्षित होकर साधक किस प्रकार सिद्धि प्राप्त करे, उसे मैं तुम्हारे स्नेहवश बतलाता हूँ। इसे दुरात्माओं को नहीं बतलाना चाहिये।

दुर्गामन्त्र में तीन बीज 'ॐ ह्रीं दुं' हैं। उसी के अनुसार आचार भी तीन हैं। उनमें पहला दक्षिणाचार है, दूसरा वामाचार है एवं तीसरा कुलाचार है। हे प्रिये! अब उनकी विधि सुनो।।१-५।।

दक्षिणाचारनिर्णयः

प्रभाते स्नानसन्ध्यादि मध्याह्ने जपमीश्वरि ॥५॥
और्णमासनमाख्यातं भक्ष्यं पायसशर्कराः।

माला रुद्राक्षसंभूता पात्रं पाषाणसंभवम् ॥६॥
भोगः स्वकीयकान्ताभिर्दक्षिणाचार इत्ययम् ।
द्रव्येण मधुना देवि सिद्धिहानिकरो मतः ॥७॥

दक्षिणाचार-निर्णय—प्रभात में स्नान-सन्ध्यादि, मध्याह्न में जप, ऊन का आसन, भोजन में पायस एवं शक्कर, रुद्राक्ष की माला, पत्थरनिर्मित पात्र और अपनी पत्नी के साथ भोग—इन्हीं को दक्षिणाचार कहते हैं। इस मार्ग के साधक द्वारा मद्यपान करने से सिद्धि में हानि होती है।।५-७।।

वामाचारनिर्णयः

वामाचारं प्रवक्ष्यामि श्रीदुर्गासाधनं परम् ।
यं विधाय कलौ शीघ्रं मान्त्रिकः सिद्धिभाग्भवेत् ॥८॥
माला नृदन्तसंभूता पात्रे पाषाणमुण्डकम् ।
आसनं सिंहचर्मादि कङ्कणं स्त्रीकचोद्भवम् ॥९॥
द्रव्यमासवतत्त्वाढ्यं भक्ष्यं मांसादिकं शिवे ।
चर्वणं बालमत्स्यादि मुद्रा वीणारवः कथा ॥१०॥
मैथुनं वरकान्ताभिः सर्ववर्णसमानतः ।
वामाचार इति प्रोक्तः सर्वसिद्धिप्रदः शिवे ॥११॥
अन्यथा सिद्धिहानिः स्यान्मन्त्रस्यास्य महेश्वरि ।
तस्माद्वामं भजेन्नित्यं वाम एव परा गतिः ॥१२॥
दक्षिणं च कुलं चैव वीरैः साधकसत्तमैः ।
त्याज्यं दूरात् कलौ देवि वाममेव भजेत् कलौ ॥१३॥

वामाचार—अब दुर्गा-साधना में श्रेष्ठ वामाचार को कहता हूँ, जिसके आचरण से कलियुग में साधक को शीघ्र सिद्धि मिलती है। वामाचारी की माला मनुष्य के दाँतों की, पात्र पत्थर का या कपाल का, आसन सिंहचर्म का, स्त्री-केशों का कङ्गन, द्रव्य आसव तत्त्वाढ्य एवं भोजन मांसादि के होते हैं। छोटी मछली चर्वण मुद्रा, वीणावादन, कथा एवं सुन्दर रमणियों के साथ मैथुन—यही आचार है। इसमें सभी वर्ण की स्त्रियाँ एक समान होती हैं। इसे ही वामाचार कहते हैं।

यह सभी सिद्धियों का प्रदाता है। जो इस वामाचार का पालन नहीं करता, उसके सिद्धि की हानि होती है। इसलिये वामाचार का नित्य स्मरण करना चाहिये। यह परागति

है। श्रेष्ठ वीर साधक को दक्षिणाचार और कुलाचार का दूर ही से त्याग कर देना चाहिये। कलियुग में वाम मार्ग का ही अनुसरण करना चाहिये।।८-१३।।

कुलाचारनिर्णयः

कुलाचारं प्रवक्ष्यामि सेव्यं योगिभिरुत्तमैः।
कुलस्त्रियं कुलगुरुं कुलदेवीं महेश्वरि ॥१४॥
नित्यं यत् पूजयेदित्थं स कुलाचार उच्यते।
कुलस्त्रियं शिवे ज्ञात्वा नुत्वा नुत्वा महेश्वरि ॥१५॥
हठादानीय संपूज्य तथा भोगं विधाय च।
रेतसा तर्पयेद् देवीं श्रीदुर्गां चक्रनायिकाम् ॥१६॥
नीलकण्ठं च विधिना जपं कुर्याद्विशेषतः।
तत्पूर्वकं चरेद्धोमं कुलकान्तां विभूषयेत् ॥१७॥
पानैः पेयैस्तथा भक्ष्यैः सन्तर्प्य कुलयोषितम्।
प्रत्यहं वै चरेदेवं कुलाचार इति स्मृतः ॥१८॥

कुलाचार—उत्तम योगियों द्वारा सेवन करने लायक कुलाचार का मैं अब वर्णन करता हूँ। कुलाचार उसी को कहते हैं, जिसमें कुलगुरु, कुलस्त्रियों और कुलदेवी की पूजा नित्य होती है। साधक यदि यह जान जाय कि अमुक कुलस्त्री है तो उसे बार-बार प्रणाम करना चाहिये। उसे लाकर पूजन करे और उसके साथ सम्भोग करके चक्रनायिका दुर्गा का तर्पण वीर्य से करे। नीलकण्ठ का पूजन भी विधिवत् करे। विशेष करके जप करे। इसके बाद हवन करे। कुलकान्ता का शृङ्गार करके मद्यपान, अन्य पेय-भक्ष्य आदि से उसे तृप्त करे। प्रतिदिन इस प्रकार के क्रियमाण आचार को ही कुलाचार कहते हैं।।१४-१८।।

कुलाचारपरत्वेन मुक्तिप्राप्तिः

इत्याचारपरः श्रीमान् कुलस्त्रीगुरुपूजकः।
वामाचारपरो मन्त्री मुक्तिभाग् भविता ध्रुवम् ॥१९॥

इस श्रेष्ठ आचार में कुलस्त्री एवं कुलगुरु का पूजक श्रीमान् होता है। वामाचार-परायण साधक निश्चित रूप से मोक्ष का भाजन होता है।।१९।।

पटलोपसंहारः

इत्येष पटलो गुह्यो देव्याश्चाचारवल्लभः।

अथ षष्टितमः पटलः

दशमीविधिः

श्रीदुर्गारहस्यभूतं गुरुपूजनम्

श्रीभैरव उवाच

अधुना कथयिष्यामि श्रीदुर्गाया रहस्यकम्।
तत्त्वं मन्त्रस्य देवेशि दशमीपूजनं परम् ॥१॥
दीक्षागुरुः शिवे यस्तु दशमी स प्रकीर्तितः।
पूजनं तस्य वक्ष्यामि सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ॥२॥
दीक्षां गृहीत्वा विधिवद् गुरोः कुलविचक्षणात्।
तदाज्ञां शिरसादाय साधयेत् स्वमनुं ततः ॥३॥

दीक्षागुरु-पूजन—भैरव ने कहा कि हे देवेशि! अब मैं श्री दुर्गारहस्यभूत मन्त्र के तत्त्वस्वरूप दशमी-पूजन का वर्णन करूँगा। हे शिवे! जो दीक्षागुरु होता है। उसी को दशमी कहते हैं। सभी तन्त्रों में गोपित गुरुपूजन का वर्णन अब मैं करता हूँ। कुलाचार-ज्ञानी गुरु से विधिवत् दीक्षा लेकर उनकी आज्ञा शिर पर धारण करके प्राप्त मन्त्र की साधना करे।।१-३।।

गुरुपूजनस्थानानि

एकदा पुण्यदिवसे मुहूर्ते शुभदे तथा।
गुरुमानीय देवेशि शून्यगेहे चतुष्पथे ॥४॥
श्मशाने वा वने वापि स्वगृहे वापि पार्वति।
तत्र भूमौ लिखेद्यन्त्रं यथावद् वर्ण्यते मया ॥५॥

गुरुपूजन-स्थान—हे देवेशि! किसी पुण्यदिवस में शुभ मुहूर्त में गुरु को शून्य गृह, चौराहा, श्मशान, जङ्गल या अपने घर में सादर लाकर बैठाने के पश्चात् भूमि पर आगे वर्णित यन्त्र का अङ्कन यथावत् करे।।४-५।।

गुरुपूजनयन्त्रम्

बिन्दुत्रिकोणं वसुकोणबिम्बं वृत्ताष्टपत्रं शिखिवृत्तयुक्तम्।
धरागृहं वह्नितुटीभिरीढ्यं यन्त्रं गुरोर्देवि मया प्रदिष्टम् ॥६॥

अदातव्योऽप्यभक्तेभ्यो न प्रकाश्यो मुमुक्षुभिः ॥२०॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये आचारनिरूपणं नामैकोनषष्टितमः पटलः॥५९॥

यह पटल गुह्य देव्याचारवल्लभ है। अभक्तों को इसे नहीं बतलाना चाहिये और मुमुक्षुओं के सामने भी इसे प्रकाशित नहीं करना चाहिये।।२०।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में आचार निरूपण नामक एकोनषष्टितम पटल पूर्ण हुआ।

●

गुरुपूजन यन्त्र—हे देवि! बिन्दु, त्रिकोण, अष्टकोण, अष्टदल, वृत्तत्रय, तीन रेखायुक्त भूपुर के योग से गुरुपूजन यन्त्र बनता है।।६।।

गुरुपूजनयन्त्र
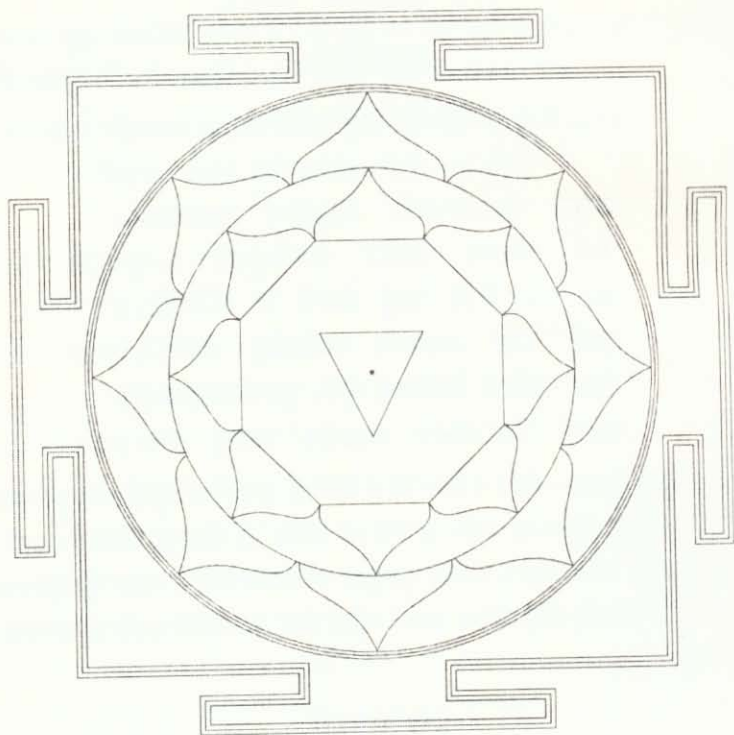
यन्त्रपूजनम्

सिन्दूरेण विलिख्यातः पूजयेच्चक्रमीश्वरि ।
गणेशधर्मवरुणाः कुबेरसहिताः शिवे ॥७॥
पूज्या द्वाःस्थाः सुपुष्पैश्च गन्धाक्षतपुरःसरैः ।
असिताङ्गो रुरुश्चण्डो क्रोधेशोन्मत्तभैरवौ ॥८॥
कपाली भीषणो देवि संहारोऽर्च्योऽष्टपत्रके ।

यन्त्र-पूजन—इस चक्र को सिन्दूर से अंकित करे। भूपुर के चारो द्वारों पर गन्धाक्षतपुष्प से गणेश, धर्म, वरुण और कुबेर का पूजन करे। अष्टकोण में असि-ताङ्ग, रुरु, चण्ड, क्रोधेश, उन्मत्त, कपाली, भीषण और संहारभैरवों का पूजन करे।।७-८।।

गुरुपूजनयन्त्रे गुरुपूजनम्

परमानन्दनाथं च प्रकाशानन्दनाथकम् ॥९॥
श्रीभोगानन्दनाथं च समयानन्दनाथकम् ।
भुवनानन्दनाथं च सुमनानन्दनाथकम् ॥१०॥
गगनानन्दनाथं च श्रीविश्वानन्दनाथकम् ।
अष्टौ कुलगुरून् देवि पूजयेद् वसुपत्रके ॥११॥
मदनानन्दनाथं च श्रीलीलानन्दनाथकम् ।
महेश्वरानन्दनाथं पूजयेद्वै त्रिकोणके ॥१२॥
बिन्दौ गुरुं च संपूज्य गन्धाक्षतप्रसूनकैः ।
तत्र बिन्दौ गुरुं देवि स्थापयेद् भक्तिपूर्वकम् ॥१३॥
सम्पूजयेत् स्वमूलेन दक्षिणां कालिकां यजेत् ।
महाकालं यजेत् तत्र कामं कामेश्वरीं तथा ॥१४॥

यन्त्र में गुरु पूजन—अष्टदल में परमानन्दनाथ, प्रकाशानन्दनाथ, भोगानन्दनाथ, समयानन्दनाथ, भुवनानन्दनाथ, स्वात्मानन्दनाथ, गगनानन्दनाथ और विश्वानन्दनाथ—इन आठ कुलगुरुओं का पूजन करे। त्रिकोण में मदनानन्दनाथ, लीलानन्दनाथ एवं महेश्वरानन्दनाथ का पूजन करे।

बिन्दु में अपने गुरु का पूजन गन्धाक्षत-पुष्प से करे। हे देवि! गुरु का स्थापन भी बिन्दु में करे और भक्तिपूर्वक उनका पूजन करे। वहीं पर अपने मूलमन्त्र से दक्षिणा कालिका का पूजन करे। महाकाल का पूजन करे। कामदेव और कामेश्वरी का पूजन करे।।९-१४।।

गुरुं च परमं देवि परापरगुरुं तथा ।
परमेष्ठिगुरुं चैव स्वगुरोर्मूर्ध्नि पूजयेत् ॥१५॥
संपूज्य विविधैः पुष्पैर्माल्यैराभरणोत्तमैः ।
दक्षिणाभिर्महेशानि भक्ष्यैर्भोज्यैश्च लेह्यकैः ॥१६॥
चोष्यैः पेयैश्च खाद्यैश्च बलिं दत्त्वा च तर्पयेत् ।
आनन्दरससंपूर्णं गुरुं दृष्ट्वा महेश्वरि ॥१७॥
ततो देवि गुरुं नत्वा प्रार्थयेत् स्वमनोरथम् ।
य एवं पूजयेद् देवि स्वगुरुं पुण्यवासरे ॥१८॥
स एव भैरवः साक्षाद्विचरेद् भुवनत्रये ।

गुरु, परमगुरु, परापरगुरु और परमेष्ठिगुरु का पूजन मूर्धा में करे। विविध पुष्पों, माला, उत्तम आभरणों, भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, चोष्य, पेय, खाद्य एवं दक्षिणा से इन सबों का पूजन करे। बलि देकर तर्पण करे। ऐसा माने कि गुरु आनन्दरस से पूर्ण हैं। हे महेश्वरि! तब गुरु को प्रणाम करके उनसे अपने मनोरथ को बताये। पुण्य वासर में जो इस प्रकार गुरु का पूजन करता है, वह साक्षात् भैरव होकर तीनों लोकों में विचरण करता है।।१५-१८।।

गुरुप्रार्थनास्तुतिः

गुरुरेव परो मन्त्रो गुरुरेव परो जपः ॥१९॥
गुरुरेव परा विद्या नास्ति किञ्चिद्गुरुं विना।
यस्य तुष्टो गुरुर्देवि तस्य तुष्टा महेश्वरी ॥२०॥
येन सन्तोषितो देवि गुरुः स हि सदाशिवः।
यत्र दृष्ट्यापि वै ब्रूयाद्गुरुस्तत्र समाचरेत् ॥२१॥
पुण्यं वापुण्यमीशानि त्याज्यं ग्राह्यं कुलार्चिते।
गुरुर्वदति यत् सद्यस्तत् कुर्यात् साधकोत्तमः ॥२२॥
विना गुरूपदेशेन न सिद्ध्यति कलौ मनुः।
तस्माद् गुरुं भजेद् भक्त्या तोषयेत् सततं गुरुम् ॥२३॥
गुरोर्यत्र परीवादो निन्दा यत्र प्रवर्तते।
कर्णौ तत्र पिधातव्यौ नो वा दूरं पलायनम् ॥२४॥
गुरुर्देवि परो धर्मो गुरुरेव परा गतिः।
गुरुमभ्यर्चयेन्नित्यं येन देवी प्रसीदति ॥२५॥

गुरुप्रार्थना-स्तुति—गुरु ही परम मन्त्र है। गुरु ही परम जप है। गुरु ही परा विद्या है। गुरु के बिना कुछ भी नहीं है। जिससे गुरु सन्तुष्ट है, उससे देवी भी सन्तुष्ट रहती है। जिससे गुरु सन्तुष्ट हो, वह साधक सदाशिव है। जहाँ गुरु की आज्ञा न हो, वहाँ कोई कार्य न करे। पुण्य या अपुण्य का त्याग या ग्रहण गुरु की आज्ञा के बिना न करे। श्रेष्ठ साधक गुरु के कथनानुसार कार्य करे। बिना गुरु के उपदेश के कलियुग में मन्त्र सिद्ध नहीं होते। इसलिये भक्तिपूर्वक गुरु का भजन करे और सदैव गुरु को सन्तुष्ट रखे। जहाँ गुरु के विरुद्ध वचन हो या जहाँ गुरु की निन्दा हो, उसे कानों में न जाने दे। अपितु वहाँ से दूर चला जाय। हे देवि! गुरु ही परम धर्म है, गुरु ही परम गति है, नित्य गुरु के पूजन से देवी प्रसन्न होती हैं।।१९-२५।।

इतीदं दशमीतत्त्वं सर्वागमरहस्यकम्।
सारात्सारतरं देवि गोपनीयं मुमुक्षुभिः ॥२६॥

इतीद परमं तत्त्वं तत्त्वं सर्वस्वमुत्तमम्।
दुर्गारहस्यसाराढ्यं गुह्यं गोप्यं च साधकैः ॥२७॥
इति देवीरहस्याख्यस्तन्त्रोऽयं तन्त्रसागरः।
सर्वस्वं मे रहस्यं मे सर्वागमनिधिः परः ॥२८॥
श्रीदुर्गायास्तत्त्वभूतो मन्त्रराजमयो ध्रुवः।
सिद्धिप्रदो महादेवि पूजनीयोऽस्ति साधकैः ॥२९॥

इस प्रकार का यह दशमी तत्त्व सभी आगमों का रहस्य है। यह सारों का सार है। मुमुक्षुओं के लिये भी गोपनीय है। यह परम तत्त्व सभी तत्त्वों में उत्तम है। दुर्गारहस्य से पूर्ण यह साधकों के द्वारा गुह्य और गोपनीय है। यह देवीरहस्य नामक तन्त्र तन्त्रसागर है। यह मेरा सर्वस्व रहस्य है। यह सभी आगमों का भण्डार है। यह दुर्गातत्त्व का मन्त्रराज है। हे महादेवि! यह सिद्धिप्रद है और साधकों के द्वारा सदा-सर्वदा पूजनीय है।।२६-२९।।

देवीरहस्य श्रवण कृतज्ञत्वम्

श्रीदेव्युवाच

भगवन् भवता भक्त्या प्रसादोऽयं मयि कृतः।
यत्त्वया वर्णितस्तन्त्रः श्रीदुर्गायाः कुलेश्वर ॥३०॥
क्रीतास्मि तव दास्यस्मि भक्तास्मि त्रिपुरान्तक।
सर्वथा रक्षणीयास्मि किमन्यत् कथयामि ते ॥३१॥

श्री देवी ने कहा—भगवन्! मैंने आपकी जो भक्ति की, उसका ही यह प्रसाद है कि आपने दुर्गातन्त्र का वर्णन मुझसे किया। हे त्रिपुरान्तक! अब मैं आपकी क्रीतदासी एवं भक्त हूँ। आपके द्वारा सर्वथा रक्षणीया हूँ। इससे अधिक आपसे मैं और क्या कहूँ।।३०-३१।।

श्रीभैरव उवाच

इदं देवीरहस्याख्यं तन्त्रराजं महेश्वरि।
अदातव्यमभक्तेभ्यो दुरात्मभ्यो महेश्वरि ॥३२॥
स्वपुत्रेभ्योऽन्यशिष्येभ्यो न देयं तु मुमुक्षुभिः।
इदं हि सारं तन्त्राणां तत्त्वं सर्वस्वमुत्तमम्।
रहस्यं देवि दुर्गाया गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥३३॥

इति श्रीरुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत श्रीदेवीरहस्ये दशमीविधि-
निरूपणं नाम षष्टितमः पटलः॥६०॥

श्री भैरव ने कहा कि हे महेश्वरि! यह देवीरहस्य तन्त्रराज है। अभक्तों के लिये अदातव्य है। दुरात्माओं को भी इसे देना नहीं चाहिये और अपने दुष्ट पुत्र तथा दूसरे के शिष्य को भी नहीं देना चाहिये। मुमुक्षुओं को भी यह देय नहीं है। यह सभी तन्त्रों का सार है। तत्त्वों का सर्वस्व है। इस दुर्गारहस्य को अपनी योनि के समान गुप्त रखना चाहिये।।३२-३३।।

इस प्रकार रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्रीदेवीरहस्य की भाषा टीका में दशमीविधि निरूपणं नामक षष्टितम पटल पूर्ण हुआ।

•

पञ्चाङ्कनन्दशशि(१९९५)संमितवैक्रमेऽब्दे देवीरहस्यकमशेषसुतन्त्रसारम्।
श्रीरुद्रयामलमहाब्धिमहार्घरत्नंसंस्कृत्य शुद्धिपदपाठसुमेलनाद्यैः ॥१॥
प्राचीनहस्तलिखितानपि जीर्णभूयो ग्रन्थान् प्रयत्नवशतोऽनुविधृत्य लब्धान्।
औदार्यवीर्यसुभगत्वगुणस्फुरच्छ्रीराजाधिराजहरिसिंहनृपानुशिष्ट्या ॥२॥
उच्चैःपदाधिकृतिभाजनकाकजातिश्रीरामचन्द्रविबुधाधिकृतिप्रबन्धे ।
सम्पाद्य सूरिशिवनाथसहायभाजा प्राकाशि शास्त्रिहरभट्टविपश्चितेदम् ॥३॥

•

समाप्तमिदं चेदं देवीरहस्यतन्त्रम्